

সাহিত্য-পরিষদ্রাত্বাবদী---লং ৫০

শ্রীপ্রাপদকল্পতরু

অর্থাহ

পদকর্জা বৈশ্ববদানের সঞ্চলিত দার্গ্নশতাধিক বৈশ্বব পদকর্জ্ব-গণের তিন সহজ্যের অধিক দানাবাধি এবং সম্পাদকের সংগ্রহীত ও পরিশিন্টে মুক্তিত প্রোয় এক সহয় গদাবাদ, শন্দবোৰ, পদস্কী, ভূমিকা ইত্যাধি-সম্বাদিত পদসংগ্রহ।



দ্বিভীয় খণ্ড

(ভূতীয় শাৰা)

শ্রীসভীশচন্দ্র রায় এম্ এ সম্পাদিত

কলিকাতা

২৪০া১ অপান সারকুলার রোড, বস্টার-গাহিত্য-পরিষণ মন্দির হইতে

শ্ৰীবাসক্ষণ সিংহ কৰ্ত্তক

প্রকাশিত।

26.em

205

Barrior;

8-108.0

Ban 294.5512 P1235

Printed by

P. C. Mittra, at the Visyakosha-Press

9. Visrakosha Lane, Bagbazar, CALCUTTA.

THE ASIATIC SOCIETY
CALCUTTA 700016

Acc. No. 63733

SL. NO- 065406

লিঅ**ন্ত**-স্থাতী তৃতীয় শাখা

প্রথম পল্লব		विवन	পৃষ্ঠাৰ
		हिकिश्मरस्य द्वरण क्रिक्टरका व्यवस्ताना	5.3
(अधःरमोजा)		वाक्षिकरत्रत्र त्यत्न व्यक्षक्षत्र चत्रश्लोका	*97
নিধৰ পৃথ	A	চতুৰ্থ পল্লব	
इवरदर्शका,— अस्मीत रुष	•	-	
ध्यस्त्रोका,—शिवणानन्तरः	\$	(अष्टराष्ट्रीका-मरञ्जान)	
वक्रध्योका मध्याम-क्रम क्रिटमीक्रम		श्रिक्ष है (काल श्रीवांत्र अध्यक्त वांवा	43.5
धक्रमु हो, श्रीप्राधात छेकि	8	্বসুনা-কৃলে যাধবী-কৃত্তে জীৱাধার অভিদার	40
গ্রীকৃষ্ণের প্রকৃষ্ণি	ŧ	শ্রীরাধারুকের সংখা গ	ነ ግ ፡፡
গোৰ্ডন-কুলে জীক্বকেছ স্থিত জীক্ষাধার বিশ্ব	¥	পঞ্চম পদ্ধব	
্য (স্বয়ংদোত্য)		(त्रभांसभ)	
ं (जयस्तीका)		दर्गान्न,	40
	٥.	নীৰাধাৰুঞ্চের নদাল্য	28
चंद्रश्यमेत्छ। वियाजिनाय,जीटगोयवस		সারী ও শুক্ষের উক্তি	84
শ্ৰীরাধার দ্বিবাভিসার	:3	শ্ৰীয়াধা,—পাণীনভৰ্কা	82
দিবাভিসারে শ্রীরাধা ও শ্রীক্তকের উক্তি-প্রত্যুক্তি		গ্ৰীৱাধাঞ্জেৰ নিজ দক্ষিৰে গমন	. 63
क्रिक्क कर्ज्य के द्वानांत्र वर्षा दवान के विवासकरण		যষ্ঠ পল্লৰ	
উন্ধি-প্রভাকি	18	•	
বীরাধান্তকের কুঞ্জপুছে দিশন	30	(ब्रटमामभाव)	
		इत्नावनाम,	*9
্তৃতীয় পল্লব		नवीत स्वरहे जित्राधात्र इत्नास्त्रात्र	34
(वस्यमं ।		নসোৰগানাছৰাপ,—জীগোনচক্ৰ	86
पररायेका, जीक्षीतस्य	>5	শ্ৰীরাধার প্রতি সধীর প্রশ্ন	¢*
पश्रातीका, श्रीनकात्रम्बद्ध	74	শীরাধার সদোদগার	45
নাগিভানীর বেশে কীরুক্তের স্বর্থনীতঃ		चश्च-वरमामात्र,शिर्मात्रक्य	***
गाणिनीय त्यान कैंग्राह्म प्रशास	. 25	अक्षांबर अधवरमान्त्रांब	48
unishs cure Brown special		পুরক জীয়াধার অভি স্থীয়-বার	×
द्यानिनीय त्यान विकृत्कत वृत्रप्रकोका	3.0	- Aniain neathailm	*1
Adjagla care gracial analysis			. 65
-			. #3 w / 27

e .

	4		
(449 mg	1*	विषष् भू	ঠাণ
ইয়াখার অন্যাল্যাধান্তরাগ	45	শ্ৰীকাণাৰ কপাছবাধ	3 6 6
स्मन्त्र ब्रामानमा श्रीस्त्रात्र, — वित्ती र ज्ञा	4 4	পুনক্ষ স্থাপুরাগজীলৌরচ্ড (নবদীণ-নাগরী	ীয়
प्रमण्ड मैं संभाग करमास्थाव	10	উ ন্দি)	223
द्रम्क बद्रमानाव—मणीव केविन	12	প্ৰশ্ন শ্ৰীৱাধাৰ জপান্তৰাপ	223
प्रजन्म प्रारम्भाषां ब्रुल्ल देशालो ब्रहस	80	on material polices	
গুনশ্চ রগোধধার, —স্থীর ইক্রি	k2	यक्षण अस्त	
नुनन्छ स्टामानाच,—-दोशांच विक्र	₽8	(আফোনাপুরাগ)	
ক্ৰিৰাধাৰ স্বপ্ন-বলোক্যাত	9'6	東行學引起到日间市 对举行之回年(《出门事)	534
সঞ্স প্রব		শ্বাফেপাধুবারশ্রীগোক্তম	
(পরিজন্বান রাগ)		क्षेत्ररक्षय थालि श्रीदाबार बारणरणांक	>>
		শ্ৰীকুজেৰ প্ৰাজ্যা ৰূ	72
व्यक्तिश्राम्बाग्,- चिर्ताशस्य	: ৩	युन्धः केलाहाक सहस्यात्राहितः	> ₹.
শ্ৰীরাঘার গৌরী-কাশখন গ্রে নিজুতে অভিনার	y	ीकृरकार भूत्रभीत आंक औरनोत्रहरकत	
শিকুল-শশিকে জীলাগার যেনর বিসন	28	mitchesonitime	38
क्यों श्राम्य		নীঞ্জের মুৰলীর প্রতি ই রাধার আলেশোভি	
(মণুমাণ ২ কুছে মিলন)		শীৰাগাৰু জ্বুক মধীয় নিকটে শীক্তকা সুম্বনীৰ	
नवकील नामकीत छोक, धेरशक्ष्य	3.5	চ'হজ-বৰ্ণন	74
ন্ধীর শহিত শ্রীয়াধার উক্তি-প্রাক্তা	56	क्षेरमोत्रहरसन्न सिरम्ब अधि मारकरमाहित	73
শীরাধার জ্যোংশাভিনার	. 94	श्रिश्रांक निरामक व्यक्ति कांग्लिक	20
দ্বাধা-সুখ্রের তীর-নিকুল্লে শ্রীক্সফের সহিত		সনাগৰের প্রতি গ্রীগৌরচজের আফেপোঞ্চি	20
প্রিরাধান বিশ্বন	2/5	গ্ৰাগণের প্রতি জীবাধার প্রক্ষেপোতি	24
শীমাৰাস্কুটেম্ব পরশ্বর নামুরাপ উক্তি প্রকৃতি	46	দৃতীর প্রজি খ্রীরাধার আবেংশাকি	2.5
শীৰাবাঞ্চকেৰ সংখ্যাপ	> •	বিধাতার প্রতি শ্রীরাধার আক্ষেপোঞ্জি	>4
खैरानाइएकत २७/८७ मृद्धः।	> >>	ক্ষর্পের প্রতি শীরাধার আক্ষেণোক্তি	3.0
নবম প্রান		ীরাধা কর্ত্ত স্থীর নিক টে কলপে র	
(८ अय-देविका)		চরিত্র-বর্গন	29
८वाय-टेनडिका,क्वीरशोत्रकता	208	असमनामित्र अधि औरमोत्रव्यक्त चार्करमाचि	F >8
बीबाधात क्यान-दिग्छा,मधीत देखि	260	ভদননাদির প্রতি শীরাধার আন্দেশোকি	>3
विश्वास द्यान े विश्वा	5+6	স্টালার সাহত অসাধার ভাক-অস্থাক	>8
		সধীয় নিকট জীয়াধায় থেগোঞ্চি	> 8
নশ্য প্রব		তোমের অতি শ্রীরাধার আনেংশাব্দি	>8
(রূপানুরাগ)		भूमण अस्तान,विश्नोबध्य	
जाहरायत गण्य के अकात-एक (Citie)	***	क्रिशांशक्ष्य विश्वत्कत्र देवद्वतः वर्षाः स्था	. ięs

	e	19	
ं वस्य	গৃঠাত	विषय '	शंक
াববন ভোষ-বিচার,—সংখীপণের প্রস্পত্ন উজি	348	প্রীরাধার জিমিরাভিসার ও সিকুরে শ্রীস্থকের	
नुसन्द्र बहुज्ञान, जीरनोबहस्र	Suc	স্হিত বিধন	2.4
প্রক্রমান প্রক্রমান প্রক্রমান	_	গুৰুত দিনাৰতে জীয়াধার অভিসাম	805
नुबक्त व्यष्ट्यात्र जैदनोत्रहः	313	পুনল্ড জীয়াধার ক্যোথাডিগার	\$3.
वेद्राधांत्र तरमांशाचारक व्यक्तान	244		
্লক শ্ৰীনাৰাৰ ৰকেপান্ত্ৰাগ	396	· ১৬ুর্দাশ পারব	
ाशी कर्जुक जीताथा-इटफेड कुटक मटकनन	७७७	(ऋटगोशांग)	
দ্রাদশ পর্য		कर्णाज्ञाम,—शिलीत्रहरू	*5*
(অভিদাবাসুরাপ)		ন্ধীর প্রাধানিশয়ক স্কলোক্সান ক্রেন্ডারনে স্থীকন্তৃত জীরাধার অভিনারেটিড	₹5 8 5
भक्तिभावाष्ट्रश्चन,श्चिरगोप्रधन्त	P-45	ुद्रम्-ग्रहन	420
Calula Singilunia	**	জীয়াধার ঋতিসার	æ
MERS-मृद्धाः श्रीकृतकार केंद्रको	>66	মাজসাম কালে প্ৰীৱাধাৰ প্ৰতি স্থীৰ উদ্ভি	229
কুল্লে শ্ৰীরাধার আগমন ত প্রকলেই নিক্ট	न(बंद	কুল্পে শ্রীকুক্ষের সহিত শ্রীস্তাধার মিলন 🕾	23%
(ऋम-वर्गन	अंचंद	রপোল্লানে শ্রীরাধার সবিত শ্রীক্তকের উচ্চি-	
मध्या भ	39.	প্ৰভূ)(জ	
जित्रांगम शहर		ন েজ্য প	रर≯
(শন্তিসাবোৎকণ্ঠা)		भूतक प्रत्याक्षाम्,—-शिःषोद्धवः	२२२
শ্ভিনারোৎকর্তা, শ্রীপৌরচন্ত	285	শ্রীকুম্বের রূপ	 २२७
শ্ৰীরাধার অভিসাম্যেৎকণ্ঠা	\$ \$ \$	শ্রীক্রফের কুলে অভিসার	****
জীৱাধ্য নিকুজে অভিসায	>>8	ভাকৃষ্ণের প্রতি প্রীরাধ্যর আর্থানুকীর উলিং	# ₹₹#
শ্ৰীৰাধাৰ অন্ত শ্ৰীকৃত্তেৰ উংকণ্ঠা	374	প্রিকৃঞ্চের কুঞ্জে প্রীরাধার ক্ষতিসার	₹₹#
अश्रीशङ्का मिक्ट मिन् न	.00	জীৱাধাক্য কৰু মিলন	24*
দিনান্তরে শ্রীরাধার ছবিনাভিগার	>34	পুনন্দ শ্ৰীৱাধার অভিসার অভিসারিকা শ্ৰীৱাধার প্রতি শ্ৰীকক্ষের উচ্চি	
জীয়াৰাৰ বৰ্ধাকালোচিত দিবাভিসাৰ			ર રા
জীৱাৰার শীক্তকালোচিত দিবাতিসার	7 7 7 7	সম্ভোগ	
পুনত জীবাধার বর্ষাকালোচিত অভিনার	, 25V	शक्तम ा श ङ्गत	,
প্রিকৃত্যে নিকট নথী কর্তৃক প্রীয়াধার প ক্লো-বর্ত্তি	ভিশার- ১৯৯	Company Come Comes report	
	`₹•1		२ ३३
Bemalanus Baiais aniwais	\$ W	্ৰীরাধা ও শীহুকের সধীগণ সহ বাস-জীকা	
Plant Balance Contract Contract	TO CANADA	বিপরীত-সভোগ	. 499
SET BUILT SHATTERE TON	***	अक्रांगरनाहित सन्	4.00

বংশ পল্লব

(सिक्त मान्	[4/] siBi4		
(काम उत्मापनीय)		🦡 (প্রকারান্তর বাৎসলা-রস্)	
विवर	श्रीका	विराग	পৃঠাক
श्राम-प्रत्मान्यान, — श्रीरभोत्रहतः	285	প্রকারাত্তর বাৎস্প্য-রস,জীপৌরচজ্ঞ	262
ল্ৰীৰ লাছত আপোন্ধৰ-ক্ৰমে শ্ৰীৰাধ্যৰ বাস-		बिकृत्यः व नवनी- २ वन भीना	240
sentella.	ės	भाकाहेबी भौगाश्रीरगोबहत	হৰ্ত
क्षान-स्टमानगाद्र,—खीटगीव्रहत्व	269	विक्रुअवनदारमद शांक्षांह्रेमी जीना	•
স্থাপণের নিকট শ্রীঞ্চকের বাস-রগোণগার		वरमहाबनापि नौन।— श्रीटनोबन्ध	२ १ इ
कुलारकरी कर्कक बांधाकूख-छीत्र-निक्रक		শ্রীক্ষাক্তর বংগচারণাদি দীলা	tu
শ্ৰীরাধাক্তকের সংগ্রেশন	₹81	একবিংশ পদ্ধব	
লগ-লৌড়া,	*	(भवा तम (शकिनीयः)	
श्रीशक्तक औराधाकरकत अन-क्रीफ़ा	*8*	বোঠ-পদন — শ্রীগৌরচক্র	292
নুপ্তদশ পাল্লব		बिकृ रक्षत्र (शर्छ-भवन	*
		শ্রীক্ষের পোষ্ঠ-দীশা	2/12
(अव्यक्ति क्या माना)		क्रिक्टका त्रथांत्रस्य महिक वन-टकांकन	268
শ্ৰীক্ষরৈভচন্তের ক্ষ-দীলা	२,€●	क्षिक के कर-त्यां क्यांत त्यां करेंदि	
জীনিত্যানক্ষ্যক্রের ক্ম-দীলা	263	শেত্যাশ্ৰম	₹}र १
এ তিভয়ন্ত্র শব্দ শীলা	₹#8	দাবিংশ প্লব	
অফ্টাদশ পল্লব		(প্রকারান্তর স্বা-বাৎস্কা)
(গ্রিকুঞ্জের জন্ম-লীলা)	٦	(गांकविशांतामि,—जीतगीताव्य	5 2.
रवृत्तिष श्रीरभेद्रध्य	269	क्षिक्रक अर्थां के -विश्वां	
क्रिक्त अम्-जीवा (नत्यारम्)		ঞ্জিঞ্জৰ্ক ৰাজিক-পদ্মীৰ আন-ভোলন	345
জীপাধিকার জন্মোৎসব	205	প্ৰীকৃষ্ণের স্থাপণ সঙ্গে বন-বিহার	165
		ত্ৰয়োবিংশ পৰ্মৰ	. ,
छनविश्म शहर		(त्यावक्न-जीमा)	` \ \ .
(কৌমারোচিভ বাৎসল্য)		त्नावक्रम-वाबा, श्रीरशोबहत्त	445
क्रीमात-कारणाठिक वांश्नमा,—श्रीरणोत्रहत		अञ्चरका शावक्त-शावन गीगा	•••
विक्रकविश्वक (क्षीयात्र-कार्रणाष्ट्रिक रा ध्या	म २५०	Бक् रिवरण शहर	1. 五菱橡胶
क्रिक्रक क्रमांक्त्र मीना		A	
ক্রোমার-পোগত-কালোচিত বাংরকা,	Bright St.	(শৰৎকাণীয় স্থায়াস)	
्रत् विक्लोडस्स १ वर्ष अस्ति।	-	स्कृत-विलोगस्य	A STATE OF THE STA
and a second	S Market	विकास गुरुती सानि असल समन्त्राचि	
A PICARI		गर्ग-द्रानिक विकित	

	yšt u	विवय १	#ret
বিষয় ভাৰ-শরীকার্থ গোণীগণের প্রতি শ্রীকৃষ্ণের	,	Bomoge Battin am-cate	-88
स्थित- गुर्वाकाच (मानाशस्त्र स्थाउ व्यक्तरम	2.5	প্ৰীৱাৰার প্ৰতি শ্ৰীকৃষ্ণের পরিহাস	986
ক্লাক পরিহাস-উক্তি	5.9	প্রকৃষ্ণের প্রতি প্রীয়াধার ভর্গন-উল্ভি	•
खर् अवरेष रंगानीशरणत रेगरणांखि	•	গ্ৰীৱাধাৰ প্ৰতি শ্ৰীক্ষকের সরস প্ৰাস্থাতি	487
গোপীগৰের সহিত জ্রীক্ষকের মহারাস	9	म्बीत ग्रह्म श्रीवाशांत शांवर्षन-कृत्व श्रामा	087
রাস-মধ্য কৃতি প্রীরাধার সহিত প্রীকৃষ্ণের		ভদ্ৰশ্বে শ্ৰীকৃঞ্চের তথায় গমন ও শ্ৰীরাধার	
শান্তপান দ কাত্যা ত্ৰৰ-গোপীগণকৰ্ত্ক		স্থিত মিল্ন	
कुक्शारवरन	Ook	পোষ্ঠগমন সমতে প্রীক্তকের রূপ-দর্শনে জীরাধার	
आधार्य अक्रवन्छः छात्राव निक्छे हरेए		উ ি	_
श्रिक्षा वार्षान । श्रीयांगा प्रश्चि		मुटक्क-मूत्रणी योगम,	∞€ >
গোপীগণের বিশন	3.3	(शार्क श्रेक्टाक नाइक-मुत्रनी योगन	
श्रीवाधात महिन्छ भवन शांभीभागत (यह	19	श्वाह श्वाहराम्य मार्क अनुवास साम	.8
গ্ৰীক্ষেত্ৰ সমুনা-পূপিনে বংশী-বাদন	3> •	•	વાર
শীকৃষ্ণের সহিত পোপীশবের মিশন	933	গ্ৰমন	264
अवाधा ६ लांगीनन नय श्रीकृत्कत वान-नृष्ण	972	প্রীরাণার প্রতি শ্রীকৃষ্ণের পরিহাস-বাক্য	*
রাসাবসানে শ্রীয়াধাকুকের অল-কেলি	950	শীকুঞ্জের রূপোমাণ	4)69
শ্ৰীরাধাকুক্ষের কুঞ্জে ভোকনাদিশীশা		ভৎপ্রবণে শ্রীক্সফের প্রতি শ্রীরাণার স্কৃতিম	
भूतक होत.—चिरशेष्ठ डा	. ৩১৭	ভৎ সমা-বাক্য	068
श्रम्क खिशशंक्रतकत जान-गौना	410	শ্ৰীকৃষ্ণ ও জীৱাধার পরম্পান্তের প্রতি	
দ্বালাত্তে সম্ভাগ	@ {¶	ः - नाष्ट्रवारगासि	966
পঞ্চবিংশ পল্লব	•	ক্ৰৰ-মূপে শ্ৰীৱাধাকক্ষেত্ৰ বিশন	969
	•	अकारायम मान-दक्ति	
(গোষ্ঠ-বিহার ও দান-লীলা)		মধুৰাৰ গোৰণ-বিক্ৰৰ ছলে বড়াইৰ সহিত	
(गार्ड-विकास,—-श्रीरगोत्रक त	05F	শ্ৰীৰাধার শভিদার	987
बिक्टक य (शांक-विद्यात	450	প্ৰথে শ্ৰীকৃষ্ণ-বাধাৰ সপৰিহান উক্ষি-প্ৰত্যুক্তি	*63
ব্রীরাধার গোর্চ-নিকুলে ছিবাভিদার	૭૭૨	গ্রীরাগারুফের নির্জন-কুঞ্চে গোণনে দিলন	980
ন্ধাপ্তকে ছলমাপুর্ক্তক সংক্ষত-কুলে এবাধ	taï	क्रियोखात्र श्रमण्ड मान-८क्लि	
া পহিত 📆 মুক্তের বিশাল		(शांत्रज-स्टिंग क्रांच क्रीवांचाव व्यक्तिगांव	348
केस्य-त्यांक वर्षाय-विकृतका सुक्षांत्रका	008	বড়াইর ও শীক্ষকের সপরিধাস উচ্চি প্রাকৃতি	· vie
		প্রকৃত্ব ও জীবাধার সপরিকাস উক্তি প্রভাৱি	
प्रशिक-निकानगढत	001		
विकास त्यां विकास	***		940
गातमीमा शिर्माशस्य	,	ं करकारन क्षेत्राशंक्राकत विनन	438
THE STATE OF STATE OF	A STATE OF THE STA	जिल्ला र विशेशिक नवामात्रव थाकि माय-	•
Aug 14 hanses		Section 4	,

4 ,		14		
, t ₂	দ্ড়∫বংশ পল্লব		বিষয়	yida
	(শৌকা-বিলাস)		अकाताकत दशकि-लीका श्रीरमीवहस्त	6>2
	रिश्व	गुडे [#	শ্ৰীক্ষকের ত্ৰম-বৃৰভিপদের সন্থিত কোরি-গীলা	8++
	त्मेणा-विवास, किटगोत्रहत्र	953	প্রীকৃষ্ণের অংক নিজ প্রতিবিশ্ব-দূর্ণনে অঞ্চ না	
	ৰান্য-গ্ৰহান্ত শ্ৰীয়াগাকুকের নোকা-বিলাগ		ক্ৰমে শ্ৰীৱাধাৰ মান	8.5
	স্থীগৰ দকে শ্ৰীকাধার মানস-গলা-ভারে গ্র	व "	্ণীকর্ত্ব শীরাধার ভ্রমাণনতনে মান্-ভঞ্জ	•
	নাবিক-ক্ষণী শ্ৰীক্ষকের নৌকায় স্থী/াণ স্ছ	,	প্রাথাক্তবেক কাল পেলা শীলাধার অভিসংলোপক)	8.0
	শ্রীধানার আংরোহণ	29%	भागपात्र भारतस्थारकन्नाः श्रीदाशांत विशिद्ध भाषामात	8 * 4
	नवीत उत्रक सर्पत्न खेडागांत कानक।	,5	জীবার্যার ব্যাহন আন্তর্গার জীবার্যা ও দ্রাগার সহ জীক্ষাফার ব্যার-বিহার	8+4
* .	নাবিকের পাৰত শ্রীসাধার ন'বরিধাস উক্তি-		व्यक्तांत्रा क रचाया नर व्यक्तव्यक्त चगवनवराह	8•9
	প্রত্যুক্ত	-593	मधीत भरण श्रीकाशोच बभूगा-कृत-मिक्टम	,^
	यम्नाद (नो ०)-विद्याल—ॐटशोद ाल	546	प्रशास गरम अवस्थात वर्ष्यमान्यूयलम् प्रशास व्यक्तिमहेत	9 = 1>
	স্থীগণ সংখ্ জীকাধার বৃত্তি কুলে গ্ৰহন	19	শীস্থাকে প্রতি দুভার বৈশরীভারশোচিত	3 4 9
	ঞ্জিকের নৌকার স্থীগৰ সহ জীরাবার		Gia	6 · *
	व्यादश्रम्	400	প্রী ক্ষাক্রের প্রেক্তান্তর	G + #
i	ৰমুনার তর্মজ দর্শনে শ্রীরাধার আশস্ক।	292	শ্রীরাধাকুকের নিতুলে যিশ্স	822
	ৰড়াইর প্রাক্ত শ্রীরাগার ক্লমেন তৎসনা ও নে	काय	भूतक बामको-पूर्विश्व दुन्धा-विभिन्न जीतावृदक	
	धै द्रापाकृत्कृत्र मिलन		भिमन	338
	भूनक मिनाक्ष्य (नीकानवर्गात	647	শীয়কের বাংকা শীলাধার নিকট দুকার গৰন,	
			উতি ও গ্রীরাধার অভিসার	8>€
	সপ্তবিংশ পল্লৰ		भी बांधांकृटम ्ब सिमन	*
	(रमसु-लीवा)		वामकी वान-वीमा—आमोबहन	859
	रनक गाँगा, चीरत्रोत्रहत्त	48-5	ীরাধার বাসশ্বী পুর্বিনার কুম্বা-বিশিয়ে অভিসা	4 ,
	জীয়াধা ও স্থীগৰ সহ জীকুক্ষেত্ৰ বসন্ত-লীলা		खेराध ७ अवत्रवर्तिन नाम खेक्टफर बानही-	
	वभक्क-वर्गम	4	· রাসংকৃষ্ণি	*>>
	रहादि-गौना,धिरनोवन्त	344	নাস-বিহামে মধ্যীগণের প্রতি শীক্তকের নির্বিদ	14
	औश्रांबाकृत्कप्र त्वादि-भौगा	011	ব্যবহার দর্শনে অভিনানে জীরাধার আহান	840
	त्यान-शोना— शिर्शोत्रहत्त	640	ওম্পনি শ্রীকৃষ্ণের অস্তাপ ও থেলেকি	***
	विवादां गरिष शिक्षक तान-नीवा	900	नवीत पूर्व क्रिशंशत केरबन गारेवा क्रियांबात	2
	दाप्ति-बरमानगात — शैरमोत्रक्ट	494	्रिक्षे विकृत्कत्र भगन	***
; 4	विश्वाबाद व्यक्ति नवीशर्यत्र भनाद वक्षमादिवत्रक	ā · · · · ·	শীকুকের দর্শনে শীক্ষাধার শাসভ্যাপ	
	The second secon	***	विश्वविद्यस्य प्रशासन	
	The state of the s	ale vie	The state of the s	4/4
	क्षेत्राच्या प्रत्य जीवासाव व्यवस्थात		न्त्रच त्रानची-प्राननांना केलोसब्ब	

विवय	পৃষ্ঠাৰ	ত্ৰিংশ পল্লৰ	
শ্ৰীধাৰাক্তকেয় বিলন ও বাস-কেলি	846	(ঝুলন-ধাত্ৰা)	
नरकान	054	विषय	পৃষ্ঠাত
इन- दर्शन,—क्रेटब्रोड्स	802	चुन्न,चीरशोबहत्त	88>
नवीशन मह श्रीवाशकायम् भूमा-कण्यकोश		जीवाशंकरकम यूनन-गीगा	883
ज्लोफ़ा सुब	*	विनावत्व कृतव,श्रीत्वीवहत्त	888
প্রীরাধান্তকের সুগ-দোল-বিশাল	8.9₹	क्रिमासदा जीवाधाज्ञतकत्र यूगन	884
भाषनी-विकास,चैटगीइहञ्ज	840	একতিংশ পল্লয	
জিয়াধাক্ত ক্ষেত্ৰ মাধ্বী-বিশাস	26		
.		(अञ्चित्वक-मीमा)	
স্ফীবিংশ পল্লৰ		औराम পভিডের हेटन शिरगोरहरखद	
(হান-যাত্র।)		অভি বেক	810
वास-गावा,—औश्योदहन्त	103	अविका मन्द्र श्रीत्रीवाम में खेर कर ग्रह	
লীক্ষকের স্বাল-বাজা	808	ীগোৱাৰ ও শ্ৰীনিভ্যানদেৱ অভিধেক	862
शिक्तराव (तरवन शान-गाम	50°	ত্ৰীগৌচন্দেৰ অবভাৱের পূৰ্ব্বে অভিষেক	8€3
क्षाचार्थः । च ६१६वज्ञ च १००-च १००। इ.स.च्या		দেবগুণ লং খুৱপভিকর্ক জীক্তাকর	
উন্তিশে পল্লব		শ ণ্ডিৰেক	8 2 8
		শ্ৰীরাধার অভিযেক	15
(রথক্তা)		हानक अव्यक्तिन्त्रा डेननत्व वीश्वरक्तव	
क्षिमद्रांध त्रस्यत त्रवाद्य भावित्रमध्य गर		थ िकटव क	846
শীগোমচন্দ্রের নৃত্য	ଶଦଃ	গ্ৰন্থকাৰের গ্রাপনা	

শ্রীশ্রীপদকণপতর

(তৃতীয় শাখা)

শ্রীগোরচন্দ্র কামোদ।

কলিযুগ-মত্ত-মতঙ্গজ-মরদনেং কুমতি-করিণি ছুরু গেল। পামর তুরগত নাম-মোতিঃ শত-দাম কণ্ঠ ভরি দেল। অপরুপ গৌর বিরা**জ** । শ্রীনবদ্বীপ-নগর-গিরি-কন্দরে উয়ল কেশরি-রাজ॥ ধ্রু॥ সংকীর্দ্তন-রণণ লক্ষতি শুনইতে ছরিত দীপি-গণ ভাগি । ভয়ে আকুল অণিমাদি মৃগীকুল পুণবভ^৮ গরব তেয়াগি॥ ভ্যাগ যাগ যম তিরিপি বরত সম শশণ জন্মকি জরি যাতি। বলরাম দাস কহ অতয়ে সে জ্বগ মাহ হরি-ধনি>> শবদ খেয়াতি ॥১॥৬১৭॥ পাঠান্তর

)। देहा श्र-त्र-ना श्रुचित ১०৯১ সংখ্যক शय । १। 'यजक्षत-मञ्जलत' व्हाल 'यजक्ष यस यहात' क, মতক্ষমবদনে প-র-সা। ৩। 'দূর' ক, চ। । । 'মোতিম' ক। ৫। 'বন' ক, ঘ, চ; 'বনহ' । ৬। 'বীপগণ' ক, খ, চ, প-র-সা। १। 'ভাগ' ক। ৮। 'পূমবত' ক; 'পূমরত' ধ, ঘ, চ; 'পধরত' প-র-সা। ৯। 'তেয়াগ' ক। ১০। 'সম' চ; 'শশি' ক। ১১। 'হরি' ক, চ, (পাঠাস্তর—'ধনি')।

টাকা

>--২। "কলিযুগ" ইত্যাদি। কলিযুগরাপ (মন)-মন্ত মাতঞ্জের মর্জন অর্থাৎ বিনাশ হেডু (তদাপ্রিত) কুবৃদ্ধিরূপ হস্তিনী দূরে পলারন করিল। (স্ত্রী-জাতি অবধ্য বলিয়া পরিত্যক্ত হইল, ইহাপ্ত ব্যঞ্জিত হইতেছে)।

৩—৪। "পামর" ইত্যাদি। (শ্রীগৌরাঙ্গ)
নাম-রূপ (অমূল্য গজদস্ত-জাত) মৃক্তাসমূহের মালা
অধম ও দরিদ্র ব্যক্তিদিগকে কণ্ঠ ভরিয়া দিলেন।

৫—१। "অপকৃপ" ইত্যাদি। অপূর্ব শ্রীগোরাল বিরাজ করিতেছেন। (বোধ হইতেছে বেন) শ্রীনব্দীপ নগরের পর্বত-শুহার অর্থাৎ পর্বত-চূড়ার প্রায় সমুদ্র মন্দিরের গর্ভে সিংহ-শ্রেষ্ঠ উদিত হইয়াছেন।

৮—>>। "সংকীর্ত্তন" ইত্যাদি। সংকীর্ত্তনরপ বুদ্ধের হন্ধার শুনিয়া পাপরূপ (হিংল্র প্রাণী) নৈকড়ে বাব সকল (সিংহের ভ্রের) পলায়ন করিল। (বোল্যেব্রা) অণিমা প্রভৃতি (নিরীহ প্রাণিস্করণ) মৃগীসমূহ ভয়ে আংক্ল (হইল); পুণাবান্ বাকি (পুণ্য-কার্য্য-জনিত) গর্কা পরিত্যাগ করিল।

১২—১৫। "ত্যাগ" ইত্যাদি। দান, যজ্ঞ, সংযম, তীর্থ ও ব্রতস্থরপ (ক্ষুদ্র প্রাণী) শশক ও শৃগাল (সকল) জালাতন হইল। (পদকর্ত্তা) বল-রাম দাস কহিতেছেন,—এই জ্বন্তই ত জগতের মধ্যে (শ্রীগোরাঙ্গের উদয়ে) হরিধ্বনি শব্দ (এক অর্থে — 'হরি' 'হরি' শব্দ, অপর অর্থে 'সিংহ' 'সিংহ' শব্দ) প্রচারিত হইরাছে। ('হরি' শব্দের 'রুক্ত' ও 'সিংহ' উভর অর্থই প্রসিদ্ধ বটে; এই পদে বলরাম দাস শ্রীগোরাক্ষ-লীলার সহিত সিংহ-লীলার সাদ্ভা প্রদর্শিত করিরাছেন)। তুলনা কর্মন,—

"হরিঃ পুরটস্থন্দরছাতিঃ কদশ্বনশীপিতঃ। সদা হৃদয়কন্দরে কুরতুবঃ শচীনন্দনঃ॥" —বিদশ্বমাধ্ব নাটক।

শ্রীরাগ 13

নিতাই গুণমণি মোর নিতাই গুণমণি। আনিয়াং প্রেমের বন্যা ভাসাইলেও অবনী॥ প্রেমের বন্ধা লইয়া নিতাইঃ আইলা গৌড়দেশে।

ভূবিল ভকত সব দীন-হীন ভাসে ॥
দীন-হীন পতিত পামর নাহি বাছে ।
ব্রহ্মার ত্বল্ল প্রথম সভাকারে যাচে ॥
আবদ্ধ করুণা-সিন্ধু কাটিয়া মুহানং ।
ঘরে ঘরে বুলে প্রেম-অমিয়ার বান ॥
লোচন বোলে আমার নিতাই যেবা
নাহি মানে ।

আনল জালি দিয়ে তার মাঝ মুখখানে• ॥২॥৬১৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৯২ সংখ্যক পদ। ২। 'অমিয়া' চ। ৩। 'ভাগাইয়া' ক; 'ভাষা-

ইল' প-র-সা। ৪। 'নিতাই আইলা' স্থলে 'আইলা নিতাই' ক, থ। ৫। 'জুহান' প-র-সা। ৬। 'আনল আবলি' ইত্যাদি স্থলে 'আনল আবিয়া দি' ইত্যাদি ঘ; 'আনল আবিয়ে তার মুধ মাঝ ধানে' প-র-সা।

টীকা

৭ — ৮। "আবদ্ধ" ইত্যাদি। (শ্রীভগবানের)
করুণারূপ সমুদ্ধ আবদ্ধ অর্থাৎ নিরুদ্ধ (ছিল);
(নিভাই) উহার মুহান অর্থাৎ জল-নির্গমের প্রণাশী
কাটিয়া (দিলেন)। (তথন) প্রেম-রূপ অমৃতের
বক্তা ঘরে ঘরে বেড়াইতে লাগিল অর্থাৎ সমস্ত
দেশ প্লাবিত করিয়া ফেলিল।

অথ সম্ভোগরদস্য স্বয়ংদে ত্যং* তন্তাবযুক্তঃ শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

कारमाम । ३

দেখ দেখং গৌরচন্দ্র বর-রঙ্গী।
কামিনি-কাম মনহিঁ মন সঞ্চক
তৈছন ললিত ত্রিভঙ্গী॥ গ্রন্থ॥
স্মিত-যুত বয়ন কমল অতি স্থন্দর
শোভা বর্মণ না হোয়।
কত কত চাঁদ মলিন ভেল রুপণ হৈরি
কোটি মদন পুন রোয়॥

• 'স্বাংদোতা'—'স্বাং দৃত' বা 'স্বাং দৃতী' শব্দের উত্তর ভাবার্থে 'ষ্ণ' প্রতার হারা 'স্বাংদোতা' শব্দটি সিদ্ধ হইরাছে। প্রীরূপ গোস্বামী "উচ্ছল-নাল-মণি" গ্রহে লিথিয়াছেন,—"অত্যোৎস্থক্য-ক্রটদ্রীড়া বা চ রাগাতিমোহিতা। স্বাংদ্তী ততঃ স্থতা ॥" অর্থাৎ যে নামিকা অত্যন্ত ওৎস্ক্রা হেছু বিগতলক্ষা ও অনুরাগে বিমোহিতা হইরা নিকে নারকের নিকট মনের ভাব ইলিতে প্রাকাশ করে, তাহাকে 'স্বাংদৃতী' বলা হয়।

চামরি-চা্মর লাধে স্থকুঞ্জিত
কুঞ্জিত কেশক বন্ধ।
পস্থহিঁ পদ্ম চলত অতি মন্থর
মদগজ-দমনকঃ ছাদ ॥
আন উপদেশে কহতং করি চাতুরি
মধুর মধুর পরিহাস।
নিজ অভিযোগ করত পুরুব মত
ভণ রাধামোহন দাস ॥৩॥৬১৯॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপ্থির ১০৯৩ সংখ্যক পদ।
২। 'দেখ দেখ' ফ্লে 'দেখ' ক, চ, প-র-সা।
৩। 'ক্লপ' ক, চ, প-র-সা। 'ক্লপ' পাঠে
ছক্ষংপতন অনিবার্থ্য। ৪। 'গ্রমনক' ক, চ;
'দেশনকি' প-র-সা। ৫। 'বোলত' ক, খ, ঘ, চ।
টীকা

> — ত। "দেখ দেখ" ইত্যাদি। রাধামোহন ঠাকুর স্ফুক্ত "দেখ দেখ" ইত্যাদি পংক্রিক্রের অর্থ লিখিয়া-ছেন — "কামিস্তাঃ শ্রীরাধায়াঃ কামস্ত কামক্রীড়াদি-কারণক্রপক্ত প্রেম্বস্তা মনস্তেব সঞ্চরণাৎ তদ্ধাবা-ক্রম্বস্তু স্বস্তু মনসি স্বত্রাং সঞ্চরণাৎ তদ্ধাপং ললিত-ভাবৰিশিষ্টভলিযুক্তং পশ্র পশ্র। তথাহি—

বিশ্বাসভিদিরদানাং ক্রবিলাসমনোহর।।
স্থকুমারা ভবেদ্যত্ত ললিভং ভছ্নীরিভম্॥'
পক্ষে শ্রীনব্দীপকামিনীনাং সর্ব্বাসাং মনসি মনসি
প্রতিমনসি কামসঞ্চারকং ললিভং স্থক্সরং বিশিষ্টং
ভলি যক্ত তং পশ্রা।" অর্থাৎ (এক অর্থে)
শ্রীগৌরাম্বকে দেও; (ভাঁহার) চিত্তে কামিনীর
অর্থাৎ শ্রীরাধার কাম, কি না—কাম-ক্রীড়ার মূলীভূত
প্রেম সঞ্চরণ করিভেছে; (ভজ্জ্ঞা) ভাঁহারও
সেইরূপ স্থললিভ অলভলী হইরাছে। (শ্রীগৌরাল
শ্রীরাধার ভাবে বিভাবিভ বলিরা, ভাঁহার পক্ষে
শ্রীরাধার ভাবে বিভাবিভ বলিরা, ভাঁহার পক্ষে
শ্রীরাধার ভাবে বিভাবিভ বলিরা, ভাঁহার পক্ষে

দর্শনে নব্দীপ-নাগরীদিগের সকলের মনেই কাম--ভাব সঞ্চারিত হইতেছে।

৪—१। "শ্বিভ্যুত" ইত্যাদি। "হাশ্বযুক্ত
বদন-কমল" বাক্য দারা পদকর্ত্তা ব্রাইতেছেন
যে, প্রীগৌরাঙ্গের মুখ-পদ্ম সাধারণ পদ্মের স্থায়
রক্ষনীতে মুদিত ও মান-কান্তি না হইয়া দিবারাত্র
সমভাবে বিক্ষিত থাকে; স্থতরাং প্রীগৌরাঙ্গের
মুখপদ্মরূপ অসাধারণ পদ্ম-দর্শনে চন্দ্র লক্ষা কিংবা
ভয় হেতু মলিন হইতেছে; (অভ্যুত নবীন কাম-দর্শনে) কোটি কোটি কাম রোদন করিতেছে।

১২ — ১৫। "আন উপদেশে" ইত্যাদি। রাধামোহন ঠাকুর "আন উপদেশে" ইত্যাদি পংক্তিগুলির
অর্থ লিথিয়াছেন — "অন্তব্যপদেশেন চাতুর্যোণ শক্ষোঅর্থ বিব্যান্তক্যাদিন। পরিহাসং বিতনোতি। অতঃ
পূর্ব্ববিতারোচিত-বাচিকান্ধিক-চাকুষা দ-জনিতান্তিযোগং করোতি।" অর্থাৎ প্রীগোরাক অন্ত ছবে
কৌশল করিয়া, মধুর পরিহাস ব্যক্ত করিভেছেন;
(অতএব) রাধানোহন বলিতেছেন যে, প্রীগোরাক
পূর্ববিৎ সর্থাং প্রীক্ষাবভারের স্থায় নিক্ত অভিযোগ
কি না — বাক্য, অকভন্নী, নয়নভঙ্কী ইত্যাদি আরা
প্রশক্ষেতি বাক্ত করিতেছেন।

বেলোরার।১

হাতি অমুরাগং ভরল মন উৎস্ক
টুটল ধৈরজ লাজ।
তমু অমুলেপন সম্বক পরিজন
তেজল যত কিছু সাজ॥
দেখ রাই চলত অতিং মন্দ।

নিজ অভিযোগ করত অতি নিশ্চয়
বুঝিয়েং কাজকং বন্ধ॥
মুখ জিভে শ্রাদ-স্থাকর তমু-ক্রচিকবলিত-কাঞ্চন-দণ্ড।
নায়ন তিখন শার ফুলশার-মদহর
ভাঞ্জু মদন-ধমু-খণ্ড॥

• ঐছন ভাতি ভাবিনি ভালে ভেটল মনমথ-মনমথ পাশে। অফুভব লাগি গুপতহিঁ° সথি চৰু কহু রাধামোহন দাসে॥৪॥৬২•॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুধির ১০>৪ সংথ্যক পদ।
২। 'অফুরাগে' প-র-সা। ৩। 'প্তি' চ।
৪। 'বুঝিয়া' ক, প-র-সা; 'বুঝিয়ে'ঝ। ৫।
'কাজকি'প-র-সা। ৩। 'লিতি' প-র-সা। ৭।
'গোপতহি'প-র-সা।

টীকা

e—१। "দেখ" ইত্যাদি। (কোনও স্থী অপর স্থীকে সম্বোধন করিয়া বলিতেছেন) দেখ, রাধা অভিশয় ধীরগমনে চলিতেছে; (সে) নিজে অভিযোগ অর্থাৎ বাক্য ও অঙ্গভঙ্গী ধারা কৌশলে প্রাণ্ডেছিত প্রকাশ করিতেছে; (অভএব) অভিনিশ্চিতভাবে (ভদ্মারা তাহার স্বয়ংদৌতারূপ) কার্য্যের অফুবন্ধ ব্রিতে পারিতেছি।

৮—১১। "মুখ" ইত্যাদি। (শ্রীরাধার) মুখ—
ক্ষিত হইয়াছে শরতের অধাকর যৎকর্তৃক অর্থাৎ
শারদচক্রবিজয়ী; (তাঁহার) দেহ-কায়ি—কবলিত
হইয়াছে কাঞ্চনদণ্ড যৎকর্তৃক অর্থাৎ অর্থ-ষ্টের
শোভাহারিনী; (তাঁহার) নয়ন অর্থাৎ নয়নের
কটাক্ষ পুষ্পাশরের গর্অ-হারক তীক্ষ শরস্বরূপ;
(তাঁহার) ক্র কন্দর্পের (ত্রিজ্বনবিজয়ী) ধহুর
একাংশ কিংবা কন্দর্পান্তরের (গর্বের) খণ্ডনকারী। "ফুলশর-মদহর" বিশেবণের হারা পদকর্তা
ব্রাইতেছেন যে, কন্দর্প পুষ্পাময় শর হারা ত্রিভ্বন
জয় করিয়া, মনে মনে যে বিজয়-গর্ব জয়ুত্বব করিতেন, শ্রীরাধার নীলোৎপলবৎ নয়নের অুতীক্ষ
অপাল-লৃষ্টি হারা সেই গর্ম নিরাক্বত হইয়াছে।

शाननी ।> মুরলী - মিলিভ অধর নব পল্লব গায়ত কত কত রাগ। কুলবতি হোই মন্দির ছোড়ি আয়লু সহইং না পারি বিরাগ॥ মাধব তোহে কি শিখায়ব গান। গৌরি আলাপি শ্যাম নট সঞ্চরু তবঙ তুহুঁ বিদগধ জান ॥ ধ্রু ॥ মুরলি ছোড়ি অছু মধুর আলাপবি তেসর জন জনি জান। কণ্ঠহি কণ্ঠ মেলি অব সম্বিধ্যে যতি খণে গোড স্কঠান ১০॥ নিরজন>> জানি হৃদয়ে অবধার্রি>২ ঐছন গুণবতি-ভাস১৩। গুণিজন-লাজ যৈতে নাহি হোয়ত কহতহি^{১৪} গোবিন্দ দাস ॥৫॥৬২১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৯।২০৭ সংখ্যক ও পার পুথির ২০০ সংখ্যক পদ। ২। 'মুক্লনী' চ। ৩। 'গাওত' থ, পার-সা। ৪। 'কহই' থ। । 'নঠ' পার সা। ৬। 'জব' পার-সা। ৭। 'তেসর' ইত্যাদি প্রলে 'সো ('তে' ২০৭ পদ, পার-সা) সব নাহিক জান' পার-সা। 'তে সব জন নাহি আন' ক; 'তে সব জন নীক জান' চ। ৮। 'সমুবরে' চ; 'সমুবহ' পার-সা। ৯। 'বতি থানে' স্থলে 'তৈথনো' পার-সা; 'যত থানে' পার। ১০। 'হঠাম' ক, খ, চ, পার। ১১। 'নিক জান' পার-সা। ১২। 'অবধারিয়া' পার-সা। ১৩। 'ভাস' (পারত' পার-সা।

টাকা

>--৪। "মুরণী" ইত্যাদি। (প্রীরাধা প্লিষ্ট ও ইন্দিতপুর্ণ বাংক্য প্রীকৃষ্ণকে কহিতেছেন) মুরণী- সংবৃক্ত (তোমার) নব পল্লবরূপ অধর কত কত রাগ (এক অর্থে—মলার মালবাদি রাগ, অন্ত অর্থে— অন্তরাগ) গাহিতেছে অর্থাৎ প্রকাশ করিতেছে; কুলবতী হইরা, (আমি) মন্দির ছাড়িয়া আসি-রাছি; (কেন না) বিরাগ (এক অর্থে—রাগ-রাগিণীর ব্যক্তিক্রম, অন্য অর্থে— উদাসীন্য) সহিতে পারি না।

ে । "মাধব" ইত্যাদি। হে মাধব!
তোমাকে কি গান শিথাইব ? গোরী (রাগিণী)
আলাপ করিয়া (তৎপরে) শ্রাম ও নট (রাগিণীর)
সঞ্চার অর্থাৎ বিস্তার করিবে; তবে জানিব, তুমি
অভিজ্ঞ বটে। (অপর অর্থে) হে মাধব!
তোমাকে রদ-রীতি কি শিথাইব ? হে নট অর্থাৎ
নটবর শ্রাম! (তুমি) গোরী অর্থাৎ গোরাদ্দী
(আমার সহিত্ত) (রদ)-আলাপ করিয়া সঞ্চার
অর্থাৎ আনন্দের বিস্তার করিবে; তবে তোমাকে
রদিক বিশ্বা জানিব।

৮—১১। "মুরলি" ইত্যাদি। মুরলী পরিত্যাপ করিয়া এইরপ স্থমধুর আলাপ (এক অর্থে—রাগালাপ, অস্ত অর্থে—রাগালাপ) করিবে, যেন তৃতীয় ব্যক্তি জানিতে না পারে! (সেইরূপ করিলে) কঠে কঠ মিলাইয়া দেখিব, যতক্ষণে স্থন্দর হয়! (এক অর্থে—তোমার স্থরের সহিত আমার স্থর মিলাইয়া যতক্ষণ না স্থন্দররূপে রাগালাপ অভ্যপ্ত হয়, ততক্ষণ চেটা করিব। অতা অর্থে—গলায় গলায় লাগিয়া দেখিব, যতক্ষণ পর্যায় স্থ্যোদর না হয়।)

১২—১৩। "নিরন্ধন" ইত্যাদি। রাধামোধন ঠাকুর 'ঐছন গুণৰভিভাস' পাঠ গ্রহণ করিয়া, অর্থ লিধিরাছেন,—'এডাদৃশগুণবতীভাসঃ কান্তিরূপাঃ অসান্' অর্থাৎ এডাদৃশ গুণবতী আমাদিগের (গৌরবে বছবচন) কান্তিসমূহ বক্ষে ধারণ করিবে। আমাদিগের বোধ হয়, পদকর্ত্তা 'বাক্য' ও 'কান্তি' উভয় অর্থ প্রকাশ করার জন্তুই প্লিষ্ট 'ভাস' শব্দের প্রয়োগ করিয়াছেন। গান্ধার ৷১

রাগ তালং ছহু হৃদয়ে ধয়ল তুহুঁ
জানলু বচনক রীতে।
গ্রাম তিন স্বর বহুবিধ পরকার
জানসি কত কত নীতে॥
গুণবতি অতয়ে নিবেদিয়ে ভোয়।
মধুর আলাপ শিখায়বি নিরজনে
নিজ জন জানিয়াও মোয়॥ গ্রন্থা।
মুরলি ছোড়ি হাম নিকটিছি বৈঠব
শীখবং সুমধুর গান।
গৌরি শ্রাম নট তব নহ ছরঘট
হোয়ব মিলন-সন্ধান॥
মুখহিঁ মুখহিঁ যব তুহুঁ শিখায়বি
হৃদয়ে ধরব তবঙ হাম।
ভণ রাধামোহন বচন-রচন পুন

পাঠান্তর

ভালে সে জানয়ে শ্রাম ॥৬॥৬২২॥

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৯৫ সংখ্যক পদ।

হ। 'তান' প-র-সা। ৩। 'জন জানিয়া' ফলে
'জনে জানিয়ে' প-র-সা। ৪। 'শিখব' ক, থ,
প-র-সা, 'সীখব' ঘ। ৫। 'মুখহি' মুখহি ' ফুলে 'মুখহি' মুখ' ক, থ; 'শুখহি শুখহি' প-র-সা।

। 'তব' ক, থ পুথিতে নাই।

টাকা

১-৪। "রাগ" ইতাদি। (শ্রীরাধার প্রতি
শ্রীক্ষয়ের প্রিষ্ট প্রত্যান্তর) তুমি রাগ (এক অর্থে—
রাগ-রাগিনী, অন্ত অর্থে—অমুরাগ) ও ভাল (এক
অর্থে—সঙ্গীতের কাল-পরিমাণজ্ঞাপক রূপক প্রভৃতি
ভাল, অন্ত অর্থে—ভাল-ফল-বৃগল্মরূপ তানদ্র)
ক্লান্তে ধারণ করিয়াছ—(ভোমার) কথার ভাবে
ক্লানিলাম; তুমি (সঙ্গীতের) তিন গ্রাম, বছবিধ
শ্বর এবং কভ প্রকার শ্বর-নীতি (অন্ত অর্থে—মং-

ব্দৰ্ভক সম্ভোগের উপযোগী ও মুরলী-গীতির নিবারক বছবিধ বিলাস) জ্ঞাত আছে।

৫— १। "গুণবতি" ইত্যাদি। ছে সঙ্গীতকুশলে! (অপর অর্থে—হে বিলাস-নিপুণে!)
তাই তোমার নিকট নিবেদন করিতেছি; আমাকে
আপনার জন জানিয়া নির্জ্জনে স্নমধুর আলাপ
(এক অর্থে—রাগাণাপ, অপর অর্থে—রসাণাপ)
শিধাইবে!

৮—১>। "মুবলি" ইত্যাদি। আমি মুরনী পরিত্যাগ করিরা, (তোমার) নিকটে বসিব;—
(তোমার নিকট) স্থমধুর গান শিক্ষা করিব;
গৌরী, শ্রাম, নট (প্রভৃতি রাগিণী) তোমার পক্ষে ছর্ঘট অর্থাৎ হংসাধ্য নহে। (অপর অর্থে) হে
গৌরি! নট অর্থাৎ নটবর শ্রাম তোমার পক্ষে ছ্প্রাপ্য নহে। (এই প্রকারে) মিলন-সন্ধান অর্থাৎ (এক অর্থে) বহু রাগ-রাগিণীর সম্মেলন-সংসাধন, (অপর অর্থে) সঙ্গম-সিদ্ধি ছইবে।

১২—১৫। "মুখহি'" ইত্যাদি। তুমি যথন
মুখে মুখে শিখাইবে, তথন (তোমার সঙ্গীত-উপদেশ)
হাদরে ধারণ করিব; (অক্ত অর্থে) তুমি যথন আমার
মুখে মুখ দিয়া (মুখচুখন) শিখাইবে, তথন (তাহার
প্রতিদানে) আমি তোমাকে বক্ষে ধারণ করিব।
রাধামোহন বলিতেছেন, শ্রাম বাক্য-রচন ভালক্রণে
জানেন।

বরাড়ী।১

মনমথ-মকর ডরহিঁ ডর-কাতর
মঝু মানস-বাব কাঁপেং।
তুয়া হিয়েও হার-তটিনিও-তট কুচ-ঘটও
উছলি পড়ল দেইও ঝাঁপেও।
স্থানরি সম্বরু কুটিল কটাখ।
কলসিক মীন্ধ বড়সি কিয়েও ডারসি
এ ক্ষতি কঠিনও বিপাক ॥এ৫০১ ॥

পুন দেই কাঁপ'ং পড়ল যব ২০ আকুল
নাজি-সরোবর মাহ।
তাহিঁ রোমাবলি-ভুজগি'ই-সক্স ভয়ে
ত্রিবলি-বেণি অবগাহ॥
তাহি ফিরত কত কতক্ত্র' মনোরথ'ই
দৈবকি ২৭ গতি নাহি জান।
কিকিণি জালে পড়ত ভেল ২৮ সংশ্য়
গোবিন্দ দাস রস গান॥৭॥৬২৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা পর-সাপুথির :৮২ সংখ্যক ও প-র
পুথির ২৪।৩ সংখ্যক পদ। 'বরাড়ী' ছলে 'কামোদ'
প-র। ২। 'কাঁপি' প-র-সা। ৩। 'হিয়া' প-র-সা।
৪। 'তটনি' খ। ৫। 'ঘটে' খ, ছ। ৬। 'তহি'
প-র-সা; 'তহি' প-র। ৭। 'বাঁপি' প-র-সা। ৮।
'মীনে' প-র। ৯। 'অব' প-র-সা, প-র। ১০।
'এ অতি কঠিন' হলে 'এ তুয়া কোন' প-র সা; 'ইহ
অতি কঠিন' বেলে 'এ তুয়া কোন' প-র সা; 'ইহ
অতি কঠিন' প-র। ১১। ক, খও প-র পুথিতে
'ধু' নাই। ১২। 'ঝাঁপি' প-র-সা। ১৩। 'অব'
প-র। ১৪। 'ভুজফ' প-র-সা। ১৫। 'কত
কতহু' হলে 'কতহুঁ কত' ঘ; 'কত শতহি' প-র।
১৬। 'মনমধ' খ, ছ। ১৭। 'দৈবক' ক, চ, প-র-সা, প-র। ১৮। 'পড়ত ভেল' ছলে 'পড়ল
ভেল' ঘ, চ; 'পড়ল সব' প-র-সা; 'পড়ল হব'
প-র।

টীকা

১—৪। "মনমণ" ইত্যাদি। (শ্রীকৃষ্ণ চাটু-বাক্যে শ্রীরাধাকে বলিতেছেন), আমার চিত্তরূপ মীন মন্মথের (বাহন-রূপ) মকরের ভরে ভরাজুর হইরা কাঁপিতেছিল; তোমার বক্ষের (মুক্তা)-হাররূপ তরন্ধিনীর তীরে (তোমার) কুচরূপ কল্সী দেখিরা উন্নদিত হইরা (জীবন রক্ষার অঞ্চ) ঝাঁপ দিলা (উহার মধ্যে) পড়িল।

শেশ । "প্লারি" ইভাানি। হে আ্লারি!
(পুনি) কুটিল কটাক সম্বরণ কর;

কাসীর

(মধ্য-ছিত) মীনের উপর (বঙ্কিম কটাক্ষরপ) ৰড়শী নিক্ষেপ করিতেছ,—ইহা অতি দারুণ কর্মফল অর্থাৎ হরদৃষ্ট বটে ।

৮—১১। "পুন" ইতাদি। (কটাক্ষরপ বড়্নীর ভয়ে) অস্থির হইয়া (আমার চিত্তরূপ মীন) পুনরার যথন (ভোমার) নাভি-রূপ সরোবরের মধ্যে পতিত হইল, (ভখন) সেথানে (ভোমার) রোমাবলী-রূপ কাল-ভুজ্জীর সঙ্গ-ভয়ে জিবলী-রূপ (স্কীর্ণ) জল-প্রণালীর মধ্যে নিম্ম হইল।

১২—১ং। "তাহি" ইত্যাদি। সেথানে বিচরণ করিতে করিতে (তাহার) কতই (মুধ)-বাসনা (হইতে লাগিল); (কিন্তু) দৈবের (বিচিত্র) গতি (কেহ) জানিতে পারে মা; (সেই জক্ত সেতোমার) কিন্ধণীজালে (এক অর্থে—কিন্ধিণী-সমূহে, অন্থ অর্থে—কিট্ড্রণ কিন্ধিণীক্রপ মংক্ত ধরার 'জাল' নামক যন্ত্রে) পতিত হওয়া মাত্র (জীবন)-সংশব্ধ হইল। গোবিন্দদাস (এই) রহস্ত গান করিতেছেন।

প্রক্ষিপ্ত পদ।

এীরাগ।>

মদন-কিরাত-কুস্থম-শর দারুণং
বুন্দাবন-বন মাঝ।
তেত্রিঃ আকুল হরি তোহারি শরণঃ করি
পরিহরি পোরুষ লাজ॥
স্থন্দরিং তুয়া দিঠি অথির সন্ধান।
মনমথ মারিতেও জোড়ি নয়ন-শর
হানল হামারি পরাণ ॥ধ্রু॥
ছহাঁ শরে জর জর জাবন অন্তর
কীয়ে করব নাহি জান।
নিজ যশ চাইদ রাই অবং দেয়বি
স্থেধর স্থধারস-পান্তঃ॥

মণিময়-হার-তরক্ষিণি-ভীরহি
কুচ-কনকাচল-ছায়।
ঐছে তপত জনে ১০ গোপতে রাথবি তবংং
গোবিন্দ দাস যশ্য গায়॥

পঠিশস্তর

১। हेहा প-द्र-मा পूषिद्र ১৮১।२७१ मःश्रांक छ প-त्र পृथित २ 813 मध्याक भार । এই भाषि भाषका-তক্ষ এন্থে অন্তন্ত হা হইগেও এ স্থলে ইহা প্রক্রিপ্ত বলিয়াই বোধ হয়; কারণ, এই পদটি গণনা করিলে তৃতীয় শাধার ১ম পল্লবের পদসংখ্যা ১০টি खल ১১টि इंदेश পড়ে। প্রাচীনতর **খ**, ঘও চ পুথিতে এই পদটি নাই; কিন্তু পদামূতসমূদ্র ও পদ-রত্বাকর গ্রন্থে এই পদটি অয়ংদৌত্য-পদাবলির অন্ত র্গত করা হইয়াছে এবং এই পদটি পদকরতক গ্রন্থে व्यक्त पृष्टे इस मा-वह क्या व्यक्तिश्च हरेता व मृत्न মুদ্রিত হইল। ২। 'কুন্থম-শর দারুণ' স্থলে 'কুন্থম-শরে জর জর'ক। ৩। 'ডেহি' ক। ৪। 'মরণ' প-র-সা। ৫। 'এ ধনি' প-র। ৬। 'মারুড' প-র-সা। ৭। 'ভুহ' প-র-সা। ৮। 'যশ চাই' স্থলে ''জন চাহি' প-র-সা। ৯। 'মোহে' প-র। ১ । 'मान' প-র। ১১। 'क्वन' প-র-সা, প-র। ১২। 'রাথবি তব' ফলে 'রাথ বরু' প-র-সা; 'রাখু বর' প-র। ১৩। 'গুণ' ক ; 'রদ' (পাঠান্তর — প-র-সা)।

টাকা

 (অভিন-লক্ষ্যভা হেডু) আমার ফ্রন্তর বাণাবাভ করিলে !

৮—১১। "গুরুঁল ইত্যাদি। (মন্মথের প্রপাণর ও তোমার দৃষ্টি-শর) উভর শরে (আমার হৃদর
ও প্রাণ জর্জনিত; কি করিব বুঝিতে পারি না;
(আশ্রেড জনকে অকারণে বধ করিলে অধ্যাতি
হুম বলিয়া) এখন নিজের যশের দিকে চাহিয়া,
(আমাকে বাঁচাইবার জন্ত) অধ্রামৃতের পান দান
করিবে।

১২ — ১৫। "মণিময়" ইত্যাদি। (দাহ-পীড়িত জনের শৈত্য-সেবন সমূচিত বলিয়া) তোমার মণি-হার-রূপ তরজিণীর তীরে, তোমার কনক-গিরিরপ কুচযুগলের ছায়াতে এইরপ দাহার্ত জনকে শুপ্তভাবে
রাখিবে; তাহা ছইলে পদক্র্তা গোবিন্দদাস তোমার
যশ গাছিবে।

তথা রাপ।১

কনক-লতাং কিয়ে বিকশলং পত্নমিনি
কিয়ে মহি বিজুরি উজোর।
কুপ্প-কুটিরে কিয়ে উয়লং হিমকর
হেরইতে আয়লুঁ ভোর॥
স্থানর তোহারি চরিত বিপরীতে।
কাজর-গরলহি ভরল নয়ন-শর
হানলি অন্তর চীতে॥ ধ্রু৬॥
ভব অগেয়ানে কয়লি তুহুঁ ঐছন
অব স্পুরুষ বধ জান।
উচ কুচ-চুম্বকণ সরস পরশ দেই
উদ্ঘাট্ছ দিঠি-বাণ॥
আশা-পাশ হাসি দরশায়সি কিতি বাবে সামার পালটি নাহি আয়ত
গোবিক্ষদাস পরমাণ ৮ ॥৮॥৬২৪॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৮৪ সংখ্যক ও প-র পুথির ২৪।৫ সংখ্যক পদ। ২। 'কনকলভার' প-র-সা; 'কলকলভারে' প-র। ৩। 'বিকসিল' চ। ৪। 'কিরে উরল' হুলে 'উরল কিরে' প-র। ৫। 'ভৈ গেফ্' ক; 'ভৈ গেল' প-র-সা। ৬। ক, ঘ, চ পুথিতে 'ঐ' নাই। १। 'আপেয়ান' ক। ৮। 'পাথর' ক; 'কঞ্ক' থ, ঘ, চ। ৯। 'পাশে' প-র-সা। ১০। 'হাসি দরশায়িস' হুলে 'হাস দরশায়ই' ঘ, চ, প-র-সা। ১১। 'কভি থেণে ইভ্যাদি হুলে 'কভি থেণে বর্ধবি পরাণ' থ, ঘ, চ; 'কভি থণে ধরবি পরাণ' ক। ১২। 'বিষ্টন' ক, থ, চ, প-র-সা। ১০। 'রস গান' প-র।

টাকা

>--৪। "কনক-লতা" ইত্যাদি। শ্বৰ্ণ-লতিকায় (ইংা) কি বিকশিত পদ্ম ? কিংবা মহী-তলে দীপ্তিময় বিহাৎ ? কিংবা কুঞ্জ-গৃহে চক্স উদিত হইয়াছে ? (আমি) মুগ্ধ হইয়া দেখিতে আসিলাম।

৫—१। "প্রন্ধরি" ইত্যাদি। হে অ্ন্দরি! ভোমার চরিত্র বিপরীত! (ভূমি) কজ্মলরপ বিষে পরিপূর্ণ (ভোমার) নয়ন-(কটাক্ষ)রূপ শর (আমার) হৃদয় ও প্রাণে আবাত করিলে!

৮—১১। "তব" ইত্যাদি। তথন তুমি অজ্ঞানে অর্থাৎ না বুঝিয়া ঐকপ (কার্য্য) করিলে, (কিন্তু) এখন (উহার ফলে) স্থপুরুষের বধ হুণানিতে পারিতেছ; (উহার প্রতিকার জন্তু) তোমার উন্নত কুচ-রূপ চুখক পাধরের অ্থকর স্পর্শ দান করিয়। (আমার বক্ষঃ-প্রবিষ্ট) দৃষ্টি-বাণ উদ্ঘাটন কর। (চুখক গোহকে আকর্ষণ করিয়া থাকে; স্থতরাং তান-রূপ চুখকের স্পর্শে বক্ষঃ-প্রবিষ্ট দৃষ্টি-রূপ বাণ নির্গত করা শ্রীক্ষকের জীবন-রক্ষার একমাত্র সন্ত্পার বটে। এ স্থলে রূপক্ষ্পক কার্যানিক অলকারের বারা শ্রীক্ষকের সজ্যোগায়কুল প্রিয়ালিকন-লাল্যা ব্যক্তিত হইতেছে)।

১২—১৫। "আশা-পাশ" ইত্যাদি। (ভূমি) ঈষৎ হাক্ত করিয়া, (দৃষ্টি-শরে জর্জারিত আমাকে) আশা-রূপ ফাঁদ দেখাইতেছ; (কিন্তু কেবল আশার জীবন-রক্ষা হয় না; তাই বল) কতক্ষণে (আমার) জীবন রক্ষা করিবে ? বিঘটণ অর্থাৎ বিনষ্ট সময় ফিরিয়া আসে না অর্থাৎ স্থযোগ এক-বার নষ্ট হইলে আর ফিরিয়া পাওয়। যায় না,---গোবিন্দদাস (ইছার) প্রমাণ অর্থাৎ গোবিন্দদাস ইহার সভ্যতা উত্তমরূপে জানেন। °

(क्षांत्र।)

গিরিবর-কুঞ্চে চললি ছুহুঁ নিরজনে উজ্জ্বল-সমরক লাগি। নিজ অভিযোগ-বচনক কৌশলে মনহিঁ মনোভব জাগি॥ সজনি আজু পর্ম রস ভেল। অভিনব রাগং ভুরক্স-মনোরথে তুহুঁক ঘটন পুন ভেল। ধ্ৰু। অওজগণ পুন ভেল রণ-বাদক কোকিলগণ সর-শৃঙ্গ। ভেরি-ভূরি-কুল বাজাওত শিখিগণ বির পন গাওত ভূক ॥ ভাঙু কামান কটাথ তিখিন শর অদভুত পুলক কচুকা। অত্য শেল ভেল ঘান পরশুকুল স্বর-ভেদ মদন-বন্ধক॥ এছন সাজ মদন-রণ-পণ্ডিত युवाव १० यूगल किटनात । ভণ রাধামোহন দরশন ক্রিয়ে উহ>> লীলা হোয়ৰ মোর ॥৯॥৬২৫॥

পঠিস্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১০৯৬ সংখ্যক পদ।

২। 'অভিনৰ রাগ' স্থলে 'অতি অমুরাগ' ক। ৩। 'অব' ক, খ। ৪। 'শিখিগণ' হলে 'স্থী-গণ'ক, প-র-সা। ৫। 'বীরপন'ক, থ, প-র-সা। ७। 'डिथन' क, थ। १। 'कक्क' क, थ; 'কচ্ক'চ। ৮। 'শ্ৰেণী' ক; 'শ্ৰণী' প-র-সা। ন। 'পর মুকুলা' ক ; 'পরশু কুলা' ঘ, চ। ১•। 'জুঝব'চ; 'য়ুঝব'ক। ১১। 'ভুহু' প-র-স।।

টাকা

১—৪। "গিরিবর" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা ও 🖺 ক্বফ) উভয়ে নিৰ্জ্জন : গোবৰ্দ্ধন) পৰ্ব্বতের **কুঞে** স্থরত-বুদ্দের জন্ত গমন করিলেন; (তাঁহাদিগের) হৃদয়ে নিজ নিজ প্রণয়েঞ্চিত-স্চক বাক্যের কৌশলে मनन উদ্দীপিত হই।

 শ-৭। "সম্ক্রি" ইত্যাদি। হে স্থি! আজ অপুর্ব আনন্দ হইল! নব অমুরাগ ও (বেগাতি-শ্যা হেতু) তুরক্ষরপ মনোরথ হারা পুনরায় (এীরাধা ও এইক্ষ) উভয়ের (মিলন) সজ্বটন रहेग ।

'৮—১১। "অওজ' ইত্যাদি। (নিকুঞ্চ-স্থিত) পক্ষিণণ (স্থারত যুদ্ধের) রণ বাদক ২ইল অর্থাৎ উহাবা কল নাদ খারা জীরাধাক্তফের কাম-ভাব অধিকত্তর উদ্দীপিত করিয়া স্থরত-যুদ্ধের সাহাধ্যকারী হইল; (সেইরূপ) কোকিলগণ স্বর শুক্ষ স্বরূপ হইল; ম্যুরগণ (ভীত্র কেকা-নাদে) তুরী-ভেরী বাজাইল; ভূলগণ (গুঞ্জন-শব্দে) উভয়ের বীর্ত্ব গান করিতে লাগিল।

১২—: **৫। "ভাঙ্" ইত্যাদি।** (উভয়ের স্থরত-যুক্ষে) ক্র ধন্ন স্থরূপ, কটাক্ষ ভীক্ষ শরস্বরূপ, রোমাঞ্চ অস্তুত বর্মস্বরূপ, অশ্রু-(ধারা) শেল-অস্ত্র-স্বরূপ, ঘর্ম (নিন্দুসমূহ) পরশু-স্বরূপ ও (রুসাতিশব্যে) স্বর-ভেদ অর্থাৎ ভগ্ন কণ্ঠ-স্বর কন্দর্পের বন্দৃক স্বরূপ रहेग।

১৬—.৯। "এছন" ইত্যাদি। পারদশী কিশোর ও কিশোরী উভরে ঐরপ সাব্দে যুদ্ধ করিবে; (স্থী-স্থানীয়) রাধামোধন কহিতে-ছেন--- ঐ লীলা আমার দর্শন হঠবে কি ?

ভধা রাগ ৷১

স্থি অনুমানে জানিয়ে কাজ। জয় জয় কিঞ্জিনি তুহুঁ নৃপুর-মণি কঙ্কণ রণ-রব॰ বাজ ॥ ধ্রু ॥ নিবিড় আলিগন ভুজে ভুজে বন্ধন প্রতি অপ জনু ভট বীর। কীয়ে পরস্পর করু পরিরম্ভন कानिया नमत अधीत॥ কল্প বলয়া সঘন সম বোল ১ চুম্বন যুগ যুগ থোর। বুঝলুঁ মদন পরাভব পায়লং জীতল যুগল-কিশোব॥ সৌরভে মাতি ভ্রমরকুল ধায়ত ছোড়ল কুন্তম-বিলাস। নিজ অভিযোগ হোয়ত পুন ঐছন কহ রাধামোহন দাস ১০ ০০ ৬২৬॥ এতদগীতং সম্ভোগ-রাব্রোপযুক্তম্। ইতি প্রথম-পল্লবঃ।

পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৯৭ সংখ্যক পদ।
২। 'ফানিরে' প-স ফলে 'বুঝল' ক, থ, ঘ, চ,
প-র-সা। ৩। 'রগ-রব' ফলে 'রব রব' থ। ৪।
'বুঝল' ক, চ, প র-সা। ৫। 'পাওল' ক; 'মানল'
খ, ঘ। ৩। 'ধারল' প-র-সা।

টাকা

্—>৫। "স্থি" ইত্যাদি। রাধামোহন ঠাকুর তাঁহার এই স্বর্গতি পদের ব্যাধ্যা করিতে বাইয়া লিথিয়াছেন—"ততো নিকুশ্ধ বাজে পূর্ব্বগীডোক্ত 'স্থি অনুষানে জানিরে কাশ' ইত্যাদিনা পুলারত যুদ্ধ মণে কৌশলং জনাত্তিকং বর্ণয়তি সর্বালানি সেনাগণানি। পরস্পরং যুদ্ধনৈপুণ্যাদিকং ছুই্বা আলিজনং কুর্বজ্ঞাবিব তৌ। স্থগমজাৎ রহস্তত্থা-চ্চান্তেয়ামর্থোন কুতঃ।" অর্থাৎ নিক্জের বাহিরে থাকিয়া কোনও সধী অপর স্থীর নিকট জীরাধা-ক্ষের রতি-রণের বর্ণনা করিতে যাইয়া জীরাধা-ক্ষের সমস্ত অল্জালিকে দৈল্লসাণ্যকণে বণিত করিতেছেন। উহারা যেন পরস্পরের যুদ্ধনৈপুণ্য দোলয়া আননেশ পরস্পরকে আলিজন করিয়া রাহয়াছে। স্থবোধ্য ও গোপনীয় ব্লিয়া অক্সাক্ত বাক্যের ব্যাথ্যা করা হইল না।

অত্র রাধামাধব বৈঠলি ইত্যাদি পদং গেয়ম্। অথ স্বয়ংদোত্যং দিবায়াং যথা। তদুচিত-দিবাভিসার:। ভত্নচিত-দ্রীগোরচন্দ্রঃ। गांदक 15 লাখবান হেম চম্পক জিনি গোৱা তমু-লাবণি অবনি উজোর। চন্দ্ৰ-চরচিত মালতি-মণ্ডিত হেরইতে আঁখি ভেল ভোর॥ মাঝ দিনহিঁ আজু গৌর কিশোর। বসনহি ঝাঁপি নিজ আপদং মন্তক যায়ত হুরধুনি-ওর॰॥ ঞ ॥ বাম নয়নেঃ ঘন চাহত দশ দিশ বাম পদ আগু সঞ্চার। বাম ভুজহি কাংে বসন আগোরইং গজ-গতি চলু অমিবার । গদ গদ শবদে করত হরিকীর্ত্তন व्ययूगानि गुथ-मंगि ছाटम । রাধামোহন দাস না বুঝয়ে ও রস निकरमाय छाविया कारन्य ॥১॥५२१॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১০৯৮ সংখ্যক পদ।
২। 'কাপাদ' ছ, চ, প-র-সা। ৩। 'রোর' ঘ, চ;
'কোর' ক। 'রোর' পাঠের 'য়'কারের বিন্দৃটি
লিশিকর-প্রমাদে পরিভ্যক্ত হইয়া 'বোর' এবং পরে
'বোর'ই 'জোর' পাঠে পরিণত হইয়াছে। ৪।
'নরন' ঘ, চ। ৫। 'আগোরহি' চ, প-র-সা।
৬। 'বৃথিরে' ঘ; 'বৃথিয়ে' চ। १। 'য়ো' চ;
'য়ো' পর-সা।

ी का

ধ—৭। "মাঝ" ইত্যাদি। আজ মধ্যাক্ষেই
প্রীগোরাক্ষ বদন দারা নিজের চরণ ছইতে মন্তক
পর্যান্ত আবৃত করিয়া গঙ্গার তীরে যাইতেছেন।
(দিবাভিদারিকা শ্রীরাধার ভাবে বিভাবিত হইয়া
শ্রীগোরাক্ষ শ্রীরাধার অভিসারাভিনয় প্রদর্শিত
করিতেছেন)।

বরাড়ী ।>

দেব-আরাধন-ছলেই চলু গোরীই।
সক্ষহি সম-বয় নবিন কিশোরী॥
চন্দন কুকুম আর ফুল-মাল।
লেয়ল বছ উপারর রসাল॥
চলু বয়-নাগরি সক্ষব মাহ।
সচকিত নয়নে দীগা দশ চাহ॥
ঐছন সময়ে নিবিড় বন মাঝ।
মীললাই একলে বিদাগধ-রাজ॥
হেরি স্থাদনি অতি হর্ষিত ভেলি।
কছ কবিশোধর তুহুঁ জন কেলি॥২॥৬২৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১০৯৯ সংখ্যক পদ। ২। 'আরাধন ছলে' ছলে 'আরাধনে' ক, খ, প্রুলা। ৩। 'পৌরি' চা ৪। 'দিগ' ক,

প-র-সা। ৫। 'সমর' প-র-সা। ৬। 'মিলল' ক, প-র-সা।

थानगी ।>

কাননে কুন্থম তোড়িসি কাছেং গোরি।
কুন্থমহিঁ নির্মিত সব তকুং তোরি ॥
জ্ঞানন হেম-সরোক্ষং ভাস।
সোরভে শ্যাম-ভ্রমর মিলু পাশ ॥
নয়নয়ুগল নিলং উত্তলল জোর।
সহলে শোহায়লং ভ্রাবণক ওর ॥
অপরুণং তিল-ফুল স্থললিত নাসা।
প্রিমলে জিতলং অমর-তক্র-বাস ॥
বান্ধুলি-মিলিত অধর ঘাহাঁ হাসং।
মুকুলিত কুন্দ-কুমুদ্ধং পরকাশ ॥
সব তকু ফুটল চম্পক-গোরংং।
পাণিক তল থল-কমল উজোরংং॥
গোবিন্দ্দাস অতথে অনুমান।
পুজহ গশুপতি নিজ তকু দান ॥০॥৬২৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৮০ সংখ্যক ও প-র প্থির ২৪।২ সংখ্যক পদ। ২। 'তোড়িদি কাহে' হলে 'কাহে তোড়িদি' প-র-সা। ৩। 'কুস্থমহ' প-র-সা, 'কুস্থমত' প-র। ৪। 'নিরমিত সব তমু' হলে 'সব তমু নিরমিত' ক, প-র-সা, প-র। ৫। 'নীল' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'সহজে শোহায়ল' হলে 'সহজ শোহায়ল' ব; 'সহজে শোহায়ল' চ; 'সহজে সোহায়ল্' প-র-সা। ৭। 'অপরপ' ক, চ। ৮। 'অপরপ' করা। ৭। 'অপরপ' ক, চ। ৮। 'অপরপ তিল-স্বল' ইত্যাদি হলে 'স্লালত কিংশুক কোরক নাস' পর-সা। প্রাচীন কবিগণ শুক-চঞ্র সহিত নাদিকাকে উপমিত্ত করিয়াছেন; কিংশুকের সহিত শুক্-মুখের উপমাত্ত করিয়াছেন; কিংশুকের সহিত

কিংশুকৈ: শুক্মুথচ্ছবিভিন্ন দঝং, কিং ক্লিকারকুষ্টমন্ ক্তং মনোইজ:।"—ঋতুসংহার। স্থতরাং
কিংশুক-কোরকের সহিত নাসিকার উপমা অভিনব
কুইলেও অসমীচীন নহে। ৯। 'জীতল' ঘ;
'জিনল'প-র-সা। ১০। 'বাল্পুলি-মিলিত' ইত্যাদি
স্থলে 'বাল্ধলি অধর মিলিত' ইত্যাদি ঘ; 'বাল্পলি
অধর মিলত ষত হাস'প-র-সা; 'বাল্পলি বল্প অধরে
মধু হাস' প-র। ১১। 'মুকুলিত কুন্দ' ইত্যাদি
স্থলে 'দশনহি কুন্দ কুসুম পরকাশ' ক; 'দশনহি
কুন্দ কুমুদ পরকাশ' ক, প-র। ১২। 'সব তন্ত্ ইত্যাদি স্থলে 'সব তন্ত্ ফুটল' ইত্যাদি চ; 'সব তন্ত্ স্কুটল চম্পক্দল গোর'ঘ; 'সব তন্ত্ ফুট চম্পক সম
গোরা' ক; 'সব তন্ত্ ফুটল চম্পক গোরি' প-র-সা।
১৩। 'উফোরি'প-র-সা।

টীকা

১-->৪। "কাননে" ইত্যাদি। (ঐক্সফকে দেৰিয়া এীরাধা ভাব-দঙ্গোপন জন্ম ছল করিয়া ফুল তুলিতে প্রবৃত্ত হইলে, শ্রীকৃষ্ণ তাঁহাকে রুসিকতা করিয়া বলিতেছেন) হে গৌরাঙ্গি! তুমি কি জন্ম কাননে কুসুম চয়ন করিতেছ ? ভোমার সকল অঙ্গই কুম্ম ছারা নির্মিত বটে ৷ (তোমার) বদন স্থর্ণ-পদ্মের কান্তিযুক্ত; (উহার) সৌরভে খ্রাম ভ্রমর (এক অর্থে—ক্লফাবর্ণ ভ্রমর; অন্য অর্থে ঐক্লফ্র-রূপ অমর) পার্খে আসিয়া মিলিত হইয়াছে। (তোমার) নয়নবয় নীল উৎপল-যুগলম্বরণ; (উহা) খাভাবিক সৌন্দর্যো । নীলোৎপল-কর্ণভূষণের ন্যায়) ভোমার কর্ণের প্রাস্ত শোভিত করিল। (ভোমার) স্থাঠিত নাদা অলৌকিক তিল-মূল স্বরূপ; (উহার) সৌরভে পারিস্বাত-তঙ্গর স্থগন্ধকে পরাজিত করিল। (শ্রীরাধার নিশাদ-বায়ু পারিকাত পুষ্প হইতেও অধিক শ্বন্তি,-এতদ্বারা ইহাই ব্যঞ্জিত হইতেছে।) (তোমার) বাদ্দলি-পূল্প-সংযুক্ত (আরক্তিম) অধর বেখানে হাদিতেছে, (পেখানেই) মৃকুলিত কুলা ও কুমুদ পুষ্প প্ৰাকৃটিত হইরা উঠিতেছে.! (ভোমার) সকল অব্দ প্রকৃটিত চম্পাকের ন্যার অ্পৌর; কর-

ভল স্থল-পলোর স্থায় উজ্জ্বল। অভ এব (স্থী স্থানীয়) গোবিন্দাস অস্থান স্থারা স্থির করিতে ছেন—,পুস্থাময়ী ভোমার অন্ত পুস্প আহরণ নিপ্রার্থা জন!) তুমি (পুস্থাময়) নিজ্ঞ দেহ দান করিয় পশুপতিকে (এক অর্থে—শিবকে, অন্ত অর্থে— ব্রজের গো-রক্ষক ক্লাফকে) পুজা কর।

ভূপানী।১

পতি অতি তুরমতি ক্লবতি নারী।
স্বামি-বরত পুনং ছোড়িং না পারি॥
তেঁঃ রুপ যৌবন একু নহ উনং।
বিদেশধ নাহ না হোয় বিনি পূণ্ণ॥
এ হরি সভয়ে দেখায়বিং পস্থ।
পূজব পশুপতি গোরি একস্তুদ ॥ধ্রু॥
সহজে বধু-জন গতি মতি-হীনং।
ঘর সঞ্জে বাহির পস্থ না চীনংং॥
না মিলল কোই বনহিঁ বন আন।
অমুসরিংংমুরলি আয়লুঁ এহিংং ঠাম॥
আয়লুঁ দূর পুরব নিজ সাধেংং।
একলি বোলিংং করহ জনি বাধেংং॥
তুহুঁ যৈছে গোরিংং আরাধলি কানংং।
গোবিন্দ দাস তাহেংদ পরমাণ॥৪॥৬৩০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-দা পুথির ১৯৩।২০৯ সংখ্যক ও
প-র পৃথির ২০৷২ সংখ্যক পদ। 'বড়ারি' প-র।
২। 'হাম' প-র-দা। ৩। 'লেই' প-র-দা। ৪।
'তে' ক, ৬, ঘ, চ, প-র-দা। ৫। 'একু নহ
উন' স্থলে 'এক নহে উন' ক, ৬, চ, প-র-দা।
৬। 'হোয় বিনি পূণ' স্থলে 'হোয়ে বিপূন' ক;
'হোয়ে বিনি পূন' প-র, প-র-দা ১৯৩; 'হোয়ভ
পূন' প-র-দা ২৩৯; 'হোয়ে নিপূন' च; 'হোয়ে

নিপুন'চ। ৭। 'দেখায়দি' প-র-সা। ৮। 'একান্ড' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৯। 'গতি-মতি-হীন' স্থলে 'মতি অতি হীন' প-র-সা, প-র। ১০। 'পছ না চীন' স্থলে 'পছ না চিন' ক, খ, প-র-সা। 'পথ নাচি চিছু' প-র। ১১। 'আঞ্চমরি' প-র-সা। ১২। 'তুয়া' প-র। ১৩। 'নিজ সাধে' স্থলে 'মন সাধে' প-র-সা; 'নিজ সাধ' প-র। ১৪। 'বলি' ক; 'জানি' প-র। ১৫। 'বাদ' প-র। ১৬। 'গৌর' ঘ। ১৭। 'ভোন' প-র-সা। ১৮। 'তোহে' খ। 'তাহে আছে' প-র-সা।

টাকা

১—২। "পত্তি" ইত্যাদি। (খ্রীরাধা খ্রীক্তফের রিদিকতার উত্তরে ইন্সিতপূর্ণ বাক্যে কহিতেছেন)— আমার স্বামী অভিশন্ধ অল্লবৃদ্ধি; আমি কুলবতী নারী,—(তাই, পাতিব্রত্য ত্যাগ করিতে পারি না'। (ব্যঙ্গনাগম্য অর্থ) আমার পতি অর্থাৎ পালন-কর্ত্তা (প্রিয়তম নতে) নিতান্ত অস্বদৃদ্ধি; আমি কুলাঙ্গনা; (স্থতরাং) পতিকুলের ও পিতৃকুলের ভয়ে আমাকে (বাহ্নিক) পাতিব্রত্য প্রকাশ করিতে ইইতেছে।

৩—৪। "তেঁ রূপ যৌবন" ইত্যাদি। ভাহাতে আবার (আমার) রূপ কিংব' যৌবন একটিও কম নছে! (কিন্তু তাহা হইলে কি হইবে ?) রুদিক আমী বিনা পুণ্যে হয় না। (ব্যঞ্জনা-গ্রমা অর্থ) আমার হার স্থলারী ও সুবতি নারিক। অরুদিক আমীতে সম্ভৱ পাকিতে পারে না; স্তরাং রূপ-বৌবনসম্পার স্থরদিক নারক পাইলে বে তাহার প্রতি অসুরক্ত হইবে, তাহাতে সন্দেহ কি আছে ?

৫—৬। "এ হরি" ইত্যাদি। হে হরি ! অতএব ডুমি আমাকে পথ দেখাইয়া দিবে; আমি
একান্তে অর্থাৎ নির্জ্জনে পশুপতি মহাদেব ও গৌরী
পার্ক্তীকে (আমীর স্থবুদ্ধি ও রূপগুণ বৃদ্ধির অস্তু)
আর্চনা করিব। (ব্যশ্রনা-গমা অর্থ) হে আমার
ক্রাদির সহিত চিত্তের অপহারক। তাই
ভূমি আমাকে (অভিসার-বোগ্য ক্রের) পথ দেখা-

ইয়া দিবে; গৌরাঙ্গী আমি (ব্রজের) পশুপালক তোমাকে নির্জ্জনে ভন্ধনা করিব।

৭— •। "সহজে" ইত্যাদি। বধ্দনেরা খভাবতঃ গতি-বৃদ্ধি-হীন হইয়া থাকে; (তাহারা) ঘর হইতে বাহিরে (যাতায়াত করার) পথ চিনে না; (তাহাতে আবার) বনে বনে (ঘুরিয়া) অঞ্জ লোকের দেখা পাইলাম না; (কেবল) তোমার বংশীধ্বনির অফুসরশ করিয়া এই ছানে আসিলাম। (ব্যক্তনাসমা অর্থ) এই বনভূমিতে লোকের গতায়াত নাই; তোমার বংশী নীরব হইলে উহার শব্দ শুনিয়া যদি কাহারও এথানে আগার আশহা থাকিত, তাহাও আর থাকিবে না; আমি তোমার বংশীরবে মোহিত ও আরু ই হইয়া তোমার নিকট আসিঢাছি; স্বতরাং তুমি আমার সহদ্ধে যাহা ইচ্ছা, তাহাই করিতে পার।

১১—১২। "আয়নুঁ" ইত্যাদি।(পুর্ব্বোক্ত বাক্য দাবা মনের গৃঢ় ভাব যদি প্রকাশ না পাইরা থাকে, এই আশকার অন্থরাগ ও উৎকণ্ঠার আভিশয়ে বিগত্তলজ্জা শ্রীরাধা অধিকতর স্পট্ট ইক্সিত করিয়া বলিতেছেন)—নিজের মনোবাসনা পূর্ণ করিব বলিয়া অনেক দূরে আসিয়াছি; আমি একাকিনী বলিয়া দেখিও যেন, (আমার ইচ্ছায়) বাধা না জন্মাও! (বাঞ্জনা-গম্য অর্থ—সেবার অন্ত অদুরাগতা অন্থরাগবতী নায়িকাকে নির্জ্জনে পাইয়া যে তাহার বাসনা পূর্ণ না করে, ডাহার তার অর্সিক ও অন্তবৃদ্ধি পুরুষ নায়কার প্রশেষভাজন হইতে পারে না।)

১৩—১৪। "তুহ্" ইত্যাদি। (সধীষানীর গোবিন্দদাস এই স্বধ্বদৌত্যের অবসানে শ্রীরাধাক্তক্ষের গুড় সংস্থাগ-লীলা ইলিতে বর্ণনা করিতে ঘাইরা শ্রীরাধাকে রসিকতা সহকারে বলিতেছেন)— হে গৌরি! তুমি যেরপে শ্রীক্তফের সেবা করিলে, সে বিষয়ে গোবিন্দদাসই প্রমাণ অর্থাৎ সাক্ষী বটে! পদকর্তার এই উব্জির তাৎপর্য্য বোধ হর এই বে, বে স্থেল নারক-নারিকা অনিষ্ক্রিভভাবে সংস্থাগ-

কেলিতে প্রবৃদ্ধ হয়, সে হলে উহাতে পূজা বা পরি-চর্ব্যার ভাব অপেকা প্রভিদ্দিতা বা কলহের ভাবই সমধিক দৃষ্ট হইয়া থাকে; স্থতরাং উহাকে সেবা না বলিয়া ভাহার বিপরীভই বলা সঙ্গত। তুলনা কক্সন—"কলহরূপং স্থ্রতমাচক্ষতে" ইত্যাদি— বাৎস্থায়ন-কাম-স্ত্র।

"দোর্জ্যাং সংঘমিত: পরোধরভরেণাপীড়িত: পাণিবৈ-রাবিদ্ধো দশনৈ: ক্ষতাধরপুট: শ্রোণীতটেনাংত:। হত্তেনানমিত: কচেহধরপুধাপানেন সম্মোহিত: কান্ত: কামপি তৃপ্তিমাপ তদহো কামশুবামা গতি:॥"

—গীতগোবিন্দ, ১২শ দর্গ।

অথ বজু-রোধনম্।

वहां हो।

ন কুরু কদর্থনমত্র স্বব্যাং ।
মামবলোক্য সতীমশরণ্যাং ॥
চঞ্চল মুঞ্চ পটাঞ্চলভাগং ।
করবান্তধুনা ভাক্ষর-যাগং ॥ ধ্রু॰ ॥
ন রচয় গোকুল-বীর বিলম্বং ।
বিদধে বিধুমুখ বিনভি-কদন্বং ॥
রহসি বিভেমি বিলোল-দৃগন্তং ।
বীক্ষ্য সনাতন দেব ভবন্তং ॥१॥৬৩১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০০০ সংখ্যক পদ। ২। 'শরণ্যাং'ক, খ, ঘ। ৩। ক, চওপ-র-সা পুথিতে 'ঞ' চিহু নাই। ৪। 'বিবিদ্ধে' প-র-সা।

টাক1

১-৩। "নে"তি। অপরণ্যাং (অসহায়াং)
স্তীং (পতিত্রতাং) মাং অত্ত (অস্মিন্) সরণ্যাং
(বর্জানি) অবলোক্য (দৃষ্ট্বা) কদর্থনং (কুৎসনং
লাখনামিতি ভাবঃ) ন কুক্ব। একাকিস্তাঃ কুনাক্নারাঃ দুরাধ্বসমনং বস্তুপি অভিসারাভাশকাং জন-

রতি তথাপাসহায়াগ্র মম গরিষ্ঠপ্রয়োজনামুরোধাৎ প্রথমনং নাজ্ঞা শঙ্কনীয়মিতার্থঃ।

৩—৪। "চঞ্চলে"ভি। ছে চঞ্চল! ঐক্ষণ!
মম পটাঞ্চল-ভাগং (পট্টবসন প্রান্তঃ) মুঞ্চ (ত্যজ্ঞ)।
অহং অধুনা (ইদানীং) ভাত্মর-যাগং (স্ব্যুপুজনং)
করবাণি। স্ব্যুপুজনার্থং স্ব্যুমন্দিরং প্রমিব্যামীতি
ভাবঃ।

শেশত। "নে"তি। হে গোকুলবীর ! (প্রবীরভাব গোকুলৈক-রক্ষক !) বিলম্বং (মন স্থ্যপুজারাং
কালহানিং) ন রচয় (জনয়)। হে বিধুমুধ (চজ্রবদন) অহং তৃভ্যং বিনতিকদম্বং (প্রাণামসমূহং)
বিদ্ধে।

৭—৮। "রহসী"তি। হে সনাতন দেব! ভববং রহসি (নিভ্তে) বিলোলদৃগত্তং (চঞ্চলা-পান্ধং) বীক্ষ্য (দৃষ্ট্ৰা) বিভেমি (ভীতাম্মি) নির্বিক্ষারভ ভগবতঃ কিমপি কারণং হিছা বিকার-ভাবঃ ন শুভাবহ ইত্যর্থ:।

অহ্বাদ

>--- । অসহায়া পতিব্রতা আমাকে এথানে পথে দেখিয়া কুৎসা করিও না।

৩—৪। হে চঞ্চশা আমার পট্টবসনপ্রাস্ত পরিত্যাগ কর; আমি এখন স্থ্য-পূকা করিব।

৫—৬। হে গোকুলবীর ! আমার কালহানি করিও না; হে চক্রবদন! ভোমাকে আমি শত শঙ প্রণাম করিতেছি।

৭-৮। হে সনাতন দেব ! তোমাকে নির্জ্জনে বিলোল-কটাক-যুক্ত দেখিয়া আমার ভর পাইতেছে।

ভাৎপর্য্য

প্রথম ছই পংক্তির ভাবার্থ এই বে, বদিও একা কিনী:কোন বুবভিকে দুর পথে গমন করিতে দেখিলে, ভাহার চরিত্র সহদ্ধে মনে আশহা অক্সিতে পারে, কিন্ত বিশেব প্রয়োজনে সহারহীনা সভী নারীও পর্থগমন করিয়া থাকেন; স্কুডরাং কেবল একাকী পর্থগমন করা হইতেই অন্চর্গিতের অনুমান সক্ষ নহে। ৭।৮ পংক্তির ভাবার্থ এই বে, যিনি সনাতন দেবতা অর্থাৎ নির্বিকারাত্মক ভগবান, তিনি অপজ্ঞানের মঙ্গলার্থে কোন সময়ে স্বেক্ছার বিকার-ভাব অবল্বন করিলেও তাঁহার পক্ষে অন-শৃত্ত হলে নিপ্রাের্জনে বিলোল কটাক্ষ প্রভৃতি অন্তাব হারা বিকার-ভাব প্রকাশ করা অতি আশ্রহাজনক বটে,—মৃত্রাং না জানি, অকস্মাৎ জগতের কি এক বিলাট উপস্থিত হইল, ইহা মনে করিয়া দর্শকের মনে ভরের সঞ্চার হওয়া স্বাভাবিক। 'ন ক্ষ কদর্থনং' ইত্যাদি বাক্যগুলির সরল অর্থ ছাড়া স্থ্যীজনবাধ্য অপর গৃঢ় বাঙ্গার্থ আছে; সেই ব্যঙ্গার্থের ইঙ্গিতে প্রারাধা শ্রীকৃষ্ণকে স্বেজ্বামুক্সপ কার্য্য করিতেই প্রোৎসাাহত করিতেছেন।

সৌরাষ্ট্রী ;>

পুলকমুপৈতি ভয়াশ্মন গাত্রং।
হসসি তথাপি মদাদতিমাত্রং ॥
বারয় তূর্ণমিমং সুস্থি কৃষ্ণং।
অসুচিত-কর্মনি নির্ম্মিত-তৃষ্ণং ॥ ধ্রুত ॥
জানে ভবতীমেব বিপক্ষাং।
মাপনীতা যদনকক্ষাংগ॥
অস্ত সনাতনমতিমুখহেতুং।
ন পরিছরিধ্যে বিধি-কৃত-সেতুং ॥৬॥৬৩২॥

পাঠান্তর

১। ইহা পর সা পুৰির ১১০১ সংখ্যক পদ।
২। 'তৃৰ্মিরং' দ। ০। ক, চ ৪ প-র-সা পুৰিতে
'ঐ' নাই। ৪। 'বদবনকক্ষাং' ধ; 'বছকুলকক্ষাং'
ক, চ, প-র-সা।

बिका

১-২। "পুলক"মিতি। "রহদি বিভেনী"ত্যাদি শ্রীরাধাবাক্যং শ্রুদা শ্বরমানং শ্রীক্ষকং প্রতি শ্রীরাধা পুনরাহ 'পুলকষ্টপতী'ত্যাদি। ভরাৎ (শ্বনিষ্টা-শক্ষা) মন গান্তং পূলকং (রোমাকং) উটপতি

(প্রাপ্রোভি) (রাগাভিরেকাৎ জাভরোমানীতাপি ব্যঞ্জাতে)। তথাপি দ্বং মদাৎ (রূপ্যোবনরোর্গ্র্বাৎ) অভিমাতং হসদি।

৩—৪। "বারয়ে" তি। হে সঝি । বং অফ্রচিত্তকর্মণি (পরালনাধর্যপদ্ধণে অধর্মকার্য্যে)
নির্মিত্তৃক্ষং (সঞ্জাতস্পৃহং) ইমং পুরোবর্ত্তিনং ক্রমণং
তুর্গং (শীঘ্রং) বারম যথায়ং কিমপি বিসদৃশং
নাচরতীতি ভাবঃ।

৫ – ৬। "জানে" ইতি। সথীং কিমপ্যুত্তরমকুর্বতীং প্রমুদিতাঞ্চ দৃষ্ট্র শ্রীরাধা তাং গর্হয়তী
বদতি 'জানে' ইত্যাদি। ভবতীমেব (ছামেব) মম
বিপক্ষাং (বৈরিণীং) জানে (অবগচ্ছামি) বং
(যক্ষাৎ / ছং মাং বনকক্ষাং (বিপিনপ্রদেশং) উপনীতা (প্রাপিতা) অসীতি শেষঃ।

৭—৮। "অন্তে"তি। অদ্য সনাতনং (চিরন্তনং) অতিস্থাহেতুং (অত্যন্তস্থাকারণং) বিধিক্বতসেতুং (বিধাত্কতনিয়মং প্রাণা ত্যমেহিপি সতীত্বং
রক্ষণীয়মিতি সনাতনধর্মবিধানং ইতি ভাবঃ) ন
পরিহরিষ্যে (ন ত্যক্ষ্যামি) ক্ষণিক স্থালবলোভেনেতি শেষঃ।

অহুবাদ

১—২। হে কৃষ্ণ ! আমার গাতে ভরে রোমো-দগম হইভেছে,— তথাপি ভূমি গর্ক হেতু অভিশর হাস্ত করিতেছ।

৩—8। হে স্থি । তুমি অফুচিত কার্য্যে ক্লাততৃষ্ণ এই ক্লফকে সম্বর নিবারণ কর।

e—৬। তোমাকেই আমার শব্দ বণিয়া জানি-তেছি; বেহেতু তুমিই আমাকে এই বনস্থ্নিতে আনিয়াছ!

৭—৮। অন্য আমি প্রভৃত স্থপের নিদান বিধাতৃক্বত সনাতন নিয়ম পরিত্যাগ করিব না।

ভাৎপর্য্য

৭৮ পংক্তির সরল ভাবার্থ এই যে, ত্রী জাতির স্তীত্ব রক্ষা বিধাতার ক্বত সনাতন নিরম বটে, ক্ষণিক স্থালাভের প্রাত্যাশার অশেষ হৃথের নিদান সতীত্বধর্ম পরিত্যাগ করা নিতান্ত মৃঢ়তার কার্য। পূর্বপদের স্থার এই পদের "পূলকমূপৈতি" ইত্যাদি
বাক্যেরও গূঢ় ব্যঙ্গার্থ আছে; ঐ ব্যঙ্গার্থের ইন্সিতে
শ্রীরাধা শ্রীক্ষফকে যথেচছ কার্য্যে প্রোৎসাহিত
করিতেছেন।

थाननी ।>

সুন্দরি কাহে কংসি কেন বাণি।
মোহে পরশবি অব নিজজনং জানি॥
সব ছোড়ি আয়লু তোহারি লাগিয়া।
পুরহ আশ অধর-স্থা দিয়া॥
এত কহি চুফ্যে চিবুক্ত ধরিয়া।
ঠমকিত ঝাঁপয়ে মুখ গটাঞ্চল দিয়া॥
করে ধরি গিরিধর আয়লত নিকুঞ্জে।
রচিত কুস্থম-শেজ মধুকর গুঞ্জে॥
বৈঠল ছুহুঁ জন পুরল মন আশ।
নির্ধয়ে ছুহুঁ রূপ জগলাথ দাসত ॥৭॥৬৩৩॥

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১∙২ সংখ্যক পদ। ২। 'নিরজন' প-র-সা। ৩। 'চিকুর' ঘ। ৪। 'চমকি' প-র-সা। ৫। 'আংওল' থ,ঘ। ৬। 'বহুনাথ দাস'ক,চ,প-র-সা।

পাঠান্তর

भारत ।

অপর ব দিনহি কুঞ্জ-মণি-মণ্ড পে
শিতগং পবন বহ মন্দ।
ভিজ-কুল-নাদ স্থাদন বৈছন
মনমধ-যক্তক ছন্দ॥
জয় রাধামাধব মেলি।
দুহাঁক প্রেম-লব কো করু অনুভব
ববহাঁ স্থাত-রস-কেলি ঃধ্যঃ

তহিঁ পুন অতিশয় নাগরি আগরি সত্যে সে নিমিলিত-আঁখি। আনন্দ-সিন্ধু-নিবেশহিঁ মাহিত দেয়ই প্রতি**অঙ্গ সাখি**॥ তহিঁ অতি স্থাতল জানন্দ-নিরঝর পুলক ভরল সব অঙ্গ। চীত-পুতলি জমু কাঁপয়ে ঘন ঘন অদভুত পুন সর-ভঙ্গ॥ অনধিন দেহ-দও পরি শোভিত মুকুতা সম স্বেদ-বিন্দু। বিগলিত অঙ্গ রাগ মণি-ভূষণ কঞ্ক অরুণ নিবি-বন্ধ॥ যাকর পরিমলে মাতল থাবর তাহে কিয়ে জঙ্গম লেখি১১। রাধামোহন-পহু-চিতে নিতি জাগই জমু উহ পাথর-রেখি>২॥৮॥৬৩৪॥ ইঙ)নস্তরং সম্ভোগ-পদং যথাসম্ভবং গেয়ম্। ইত্যাদি স্বঃং-দৌত্যম্। ইতি দ্বিতীয়-পল্লব:।

পাঠান্তর

১। 'অপক্র' প-স হলে 'অপক্রপ' ঘ, 'অপরূপ' ক, ঝ, চ। ২। 'নীতল' ক। ৩। 'তৈছন'
ক, ঘ, চ। ৪। 'জয় জয়' ক, চ। ৫। 'এেম
নব' ক, ঘ, চ। ৬। 'নাগরি আগরি' ছলে 'নাগর
আগরি' ক, ঘ, ৮। 'তহি অতি হ্নভল' ছলে
'তহি অতি মিনিত' ঝ। ৯। 'অনধিন' প-স ছলে
'জনধি' ঘ, চ, 'জনধী' ধ। .০। 'আধ' ক, ধ;
'আর' ঘ, চ। ১১। 'বেশ' খ। ১২। 'রেশ'।

টীকা

>—৪। "অপক্ষৰ" ইত্যাদি। দিবাভাগে অপূর্ব ক্ষেত্র মণিগৃহে শীতল প্যন মক্ষ মন্দ বহিতেছে; পক্ষিগণের শব্দ যেন মন্মথের যন্ত্রের স্থবাভের ভার।

শেলনের জয় হউক; যথন (উভয়ের) স্থরত রসকেলি (নির্বাহিত হয়), তথন উভয়ের প্রেমানন্দের
কণামাত্রও কে অম্বর্ভ করিতে পারে

৮—>>। "তহিঁ" ইত্যাদি। তাহাতে আবার (উভ্রের মধ্যে) নায়িকা অতিশয় রসে পরিপূর্ণা; তাই তিনি নিমীলিতনয়না; (বেন) তিনি আনন্দ-ক্লপ সমুদ্রের রসাস্বাদনে বিমোহিত হইয়াছেন— (তাঁহার) প্রত্যেক অঙ্গ ইহা সাক্ষ্য দিতেছে!

১২—১৫। "তহিঁ" ইত্যাদি। তাহাতে অতি
কুণীতল আনন্দ-জ্বল অর্থাৎ সাহিক-ভাব-জনিত
ঘর্মজন ঝরিতেছে; সকল অঙ্গ পুলকে পরিপূর্ণ
ইউয়াছে; (বোধ হইতেছে) যেন চিত্র-লিধিত
প্রতিমূর্তি; সকল অঙ্গ ঘন ঘন কম্পিত হইতেছে
এবং অন্তুত শ্বর-ভঙ্গ প্রেকাশ পাইতেছে)।

১৬—১৯। "অনধিন" ইত্যাদি। (রসাতি-শব্যে) অনারত দেহ-যঞ্চির উপরে মুক্তার স্থায় খেদ-কণা শোভিত হইরাছে; অঙ্গ-রাগ, মণি-আভরণ, কাঁচুলী ও কটি-বদন-গ্রন্থি খালিত হইরাছে।

২০—২০। "বাকর" ইত্যাদি। বেই সজোগের পরিমলে অর্থাৎ সজোগ-বিমর্দ-জনত সৌরভে (গিরি, তক প্রভৃতি) দ্বিতিশীল পদার্থ পর্যান্ত (জানন্দে) উন্মত্ত হইরাছে, তাহাতে পশু-পক্ষী প্রভৃতি গতিশীল প্রাণীদিগকে কি লিখিব ? অর্থাৎ গতিশীল প্রাণীদিগর কথা কি বলিব ? পদক্তা রাখানোহনের প্রস্কৃ শ্রীক্বক্ষের চিত্তে উহা প্রস্তরে (অন্ধিত) রেখার লাড্য জাগরিত রহিরাছে।

পুনশ্চ প্রকারান্তরং।
তছচিত-শ্রীগোরচন্দ্রঃ।
ধাননা।
ভাব ভবে গরগর চিত্রং।
খেণে উঠে খেণে বৈসে না পায় সম্বিতং॥

অতি রসে নাহি বান্ধে থেছ।
সোঙরি সোঙরি কান্দে পুরুব স্থনেহণ ॥
নাচে পক্ত গোরা নট-রাজ।
কি লাগি গোকুল-পতি সংকীর্ত্তন মাঝ ॥ এক ॥
নিজ্প পর কিছুই না জানে।
দীন ইান উত্তম অধম নাহি মানে ॥
প্রিয়-গদাধর-করদ ধরি।
মরম-কথাটি কহে ফুকরি ফুকরি॥
ডগমগ আনন্দ-হিলোলে ।
লোলিয়া লোলিয়া পড়ে পভিত্তের>>
কোলে॥

গোরা-রদে সব রসময় । না দরবে ১৯ বলরাম পাধাণ ক্রদয় ॥১॥৬৩৫॥

পাঠান্তর

)। ইহাপ-র-সাপুথির ১১১২ ও প-র পুৰির ২১।৬১ সংখ্যক পদ। এই পদটি পদকলতক্র তৃতীয় শাখার ১১শ পলবে ৯০৯ সংখ্যক পদরাপে পুনরুদ্ধৃত হইয়াছে। ২। 'চীত' ঘ, চ। ৩। পায় স্থিত' স্থলে 'পান সন্বিত' ক, চ; 'পায় সন্বীত' হ। ৪। 'हर्ति' क, थ, घ, ह (७०६ मःश्रोक भन)। १। 'श्रूरमह' क, ४, ६, १-ब-मा; 'मिरनइ' भ-त्र। ७। भ-ब-मा ছাড়া অভাত পুৰিতে 'ঞ' নাই। १। 'নিজ পর' ইভ্যাদি পংক্তিশ্ব ক, ধ, ঘ, চ পুণির ৬৩৫ সংখ্যক পদে ও প-র-সা পুথিতে নাই। ৯০৯ সংখ্যক পদে 'দীনহীন উত্তৰ অধম' ইত্যাদি স্থলে ক প্ৰভৃতি পুথিতে 'উত্তম অধম' ইত্যাদি পাঠ আছে। ৮। 'করে' চ। ১। 'আনন্দ-হিলোলে' স্থলে 'প্রেম-हिर्लाल' क, थ, घ, ठ शूथि, > > मश्थाक भए। > । 'লোলিয়া লোলিয়া' স্থলে 'ঢ়লিয়া ঢ়লিয়া' খ ৯০৯ পদ ; 'চলিয়া ঢলিয়া' প-র। ১১। 'ভকতের' क. ब, घ, ह পूबि (> > সংখ্যক সংখ্যক পদ), প-র। ১২। 'গোরা' ইত্যাদি ছলে 'এ রসে জগত াস্থিত । রসময়' ক, ধ, ব, চ পুথি (১০৯ সংখ্যক পদ), 'ও I ASIATIG SOCIETY, CALCUTTA

(37330ate, 8:12.93,

রুসে অংগত রুসুখয় প-র। ১৩। 'বিদরে' ঘ,চ; 'দরুপে' প-র-সা।

এীনিত্যানন্দচন্দ্রস্থা

काटमान ।

২৯ন - গঞ্জন লোচন রঞ্জন গতি অতি ললিত স্বঠান। পুন উঠি গরজত চলত খলত পুন চাহনি বক্ষ নয়ান ॥ গৌর গৌর বলি ঘন দেই করভালি কঞ্চ-নয়নে বহে লোর। প্রেমেড অবশ হৈয়া পতিতেবে নির্থিয়া আইস আইস বলি দেই কোর॥ হুহুকার ঘন ঘন মালদাট পুন পুন কত কত ভাব বিথার। কদন্ব-কেশর জন্ম পুলকে পুরল তমু

ভাইয়ার ভাবে যেন মাণ্ডোয়ার ॥

আগম-নিগম-পর বেদ-বিধি-অগোচর

তাহা কৈল পতিতেরে দান।

ক্রে আত্মারাম দাসে না পাইলুঁ॰ কুপা-লেশে

রহি গেলু পাষাণ সমান॥২॥৬৩৬॥

পাঠাম্বর

১। 'অংখনগঞ্জন' ক। ২। 'প্রেমেডে' ক, চ। ৩। 'পাইয়া' ক, চ'।

তথা সম্ভোগস্থ স্বয়ংদৌত্যং প্রকারান্তরং যথা।

बाननी ।>

ধরি নাপিতানী-বেশ মহলেতে পরবেশ বিখানে বসিয়া আছে রাই।
হাতে দেই দরপণী খোলে নখরঞ্জনী
বোলে বৈদ দেই কামাই॥

বসিলা যে রসবতী নারী। থুলিল কনক বাটী অ।নিল বিমল ঘটী ঢালিল স্থবাসিত বারি॥ ধ্রু॰॥ करत नथ-त्रक्षनी চাঁচয়ে নখের কণি শোভিত করল যেন চাঁদে। নাপিতানী একে শ্রামা পুনীর অধিক ঝামাণ বুলাইছে মনের আনন্দে॥ ঘসিয়া ঘসিয়া পায় আলতা লাগায় ভায় নির্থি নির্থি অবিরাম। রচয়ে বিচিত্র করি চরণ হৃদয়ে ধরি তলে লেথে আপনার নাম॥ নাপিতানী বলে ধনি দেখহ চরণখানিদ ভাল মন্দ করহ বিচার। (मिश्र स्वयमनी कटर कि नाम लिशिना उटर পরিচয় দেহ আপনার॥ নাপিভানী কহে ধনি শ্যাম নাম ধরি আমি বসতি এ' তোমার নগরে। বিজ চণ্ডীদাসে কয় এহ নাপিতানী নয় কামাইলা>> যাহ নিজ ঘরে ॥৩॥৬৩৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১১৪ সংথ্যক পদ।

২। 'দিয়া' ক, ঝ, ড়, ঢ় ; 'দেয়' দৌ: পুথি। ৩।
'দিয়া' ক, ঝ, ড়, চ। ৪। 'আনিল বিমল ঘটা'
স্থলে 'আনিয়া' ইউ্যাদি ক, ঝ, ড়, চ ; 'আনিল
কনক ঘটা' দৌ: পুথি। ৫। ক, ঝ পুথিতে 'ঞা'
নাই। ৬। 'ঘেন চাঁদে' স্থলে 'নথচাঁদে' দৌ: পুথি।
অতঃপর দৌ: পুথিতে নিয়লিখিত অতিরিক্ত পাঠ
দৃষ্ট হয় ; বখা,—

'অন্সে উন্স পায় বুম নাগে আথো গায় হাত দেয় নাপিতানীয় কাছে॥'

1 'নাণিতানী' ইত্যাদি ছলে 'নাণিতানী
 একে স্থানা ছনীর পুত্নী বানা' ক, ব, ব, চ।

'নাপিতানী' ইত্যাদি পংক্তি ছয়টির পরিবর্থে দৌঃ পুৰির পাঠ; বথা,---ননির সমান রামা 'নাপি চানী বলে খ্রামা ৰোণাবে মনের আকুতে। আলতা লাগাএ ভার অসিতে ঘসিতে পায় বচএ যে মনোহর বীতে॥ চরণ উপরে ধরি বচএ বিচিত্র করি তলে লিখে নাম আপনার।' ৮। 'নাপিতানী বলে ধনি' ইত্যাদি পংক্তি চারিট প-র-সা পুথিতে নাই। ১। 'দেখি স্থাননী কছে' ইত্যাদি পংক্তি ছয়টির পরিবর্ত্তে দৌঃ পুথির পাঠ: যথা.---'ভুনি নাপিডানী-বাণী দেখিএ চরণধানি হেটে দেখে খ্রামের নাম। চাহে নাণিতানী পানে বঝিয়া আপন মনে বলে কহ আপনার নাম॥ জগত মোহিবার তরে ভাষা নাম কছে তারে ফিরি আমি নগরে নগরে। নাপিতানী নহে চণ্ডীদাসে কভে কামাইলে যায় আপনার বরে॥ ১०। '(व' क. थ. প-त्र मा। ১১। 'कामहित्म' 41

টীকা

৮—১১। "করে" ইত্যাদি। (নাপিতানী)
করে নধরঞ্জনী অর্থাং নরুন্ (ধরিয়া) নধের কোণা
চাঁছিতেছে; (উহাকে) চক্রের স্থায় শোভার্ক করিল। নাপিতানী একে যুবতী, (তাহাতে আবার) মনের উল্লাসে নবনীত অপেক্ষা অধিক (কোমল-ভাবে) ঝামা ঘর্ষণ করিতেছে। (এ ফ্লে 'স্থামা' শব্দের 'স্থাম-বর্ণা' অর্থ স্থসন্থত নহে। দৌঃ পুথির পাঠে 'স্থামা' নাপিতানীর নাম বলিয়া উক্ত হইছাছে; কিন্তু সৃদ্ধিত পাঠে সেইরূপ অর্থপ্ত সংলগ্ন হরু না; স্করোং অগত্যা 'শ্রামা' শব্দের অর্থ 'বুবতী' করা হইয়াছে। তুলনা করুন—"তথী শ্রামা শিধ্রি দশ্লনা প্রক্রিখবের্জি"—বেশ্বুত্ত)

क्रहिनी ।)

নাপিতানী কছে শুন গোং সই । অনাথী জনের⁸ বেতন কই^e ॥ কহ তুমি যাই রাইয়ের কাছে। বেওন লাগি সে বসিয়া আছে । যদি করে তবে নিকটে যাই। যে ধন দেন তা সাক্ষাতে পাই॥ e্যনি সখী কহে রাইয়ের^৬ কাছে। নাপিতানী বসি আছুয়ে নাছে। রাই কংে তবে আনহ তায়। কতেক বেতন আমারে চায়। স্থী যাই তবে ডাকয়ে গাইস। আসিয়া রাইয়ের নিকটে বৈস 🛭 আসি নাপিতানী কহয়ে ভায়। বেতন কেন না দেহ আমায়॥ বাই করে কিবা হইবে তোর। সে কহে বেতনেশ নাহিক ওর॥ হাসিয়া কহয়ে স্থন্দরী রাই। তেন নাপিতানী দেখিয়ে নাই॥ এমতে ধন ১০ যে কর্যাছ কত। সে কহে ভুবনে আছুয়ে যত। এক ধন আছে ভোমার ঠাঞি। সে ধন পাইলে ঘরকে যাই॥ कार्य कनक-कनम व्याटि । মণিময় হার তাহার কাছে # ভাগার পরশ-রতন দেই। দরিদ্র-জনারে কিনিয়া লেহ ॥ श्रामिया कराय श्रुमात्री (गात्री। ভালে > নাপিতানী পরাণ-চোরী > । পরশ-রতন পাইবা বনে। এখন[>] ठलह निक खब्दन ॥

চণ্ডীদাসে কহে না কর লাজ। নাপিতানী নহে রসিক-রাজ ॥৪॥৬৩৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১১৫ সংখ্যক পদ।
২। 'লো' দৌ: পুথি। ৩। 'সোই' ए। ৪।
'লোকের' ক, থ, প-র-সা। ৫। 'কোই' ए। ৬।
'রাইক' ক। १। 'আমার' ক, থ; 'আমার' প-র-সা। ৮। 'বেতন' ক, থ, প-র-সা। ৯। 'দেথি
বে' ক; 'দেথিএ' প-র-সা। ১০। 'ধনে' ক।
১১। 'ভাল' ক, প-র-সা। ১২। 'পরাণচ্রি'
প-র-সা। ১৩। 'এখনে' ক; 'এখনি' ए। দৌ:
পুথিতে সম্পূর্ণ পদটির নিম্নলিথিত রূপান্তর দৃষ্ট
হয়, বংগ,—

'নাপিতানী বলে শুন লো সই। অনাথিনি লোকের সাক্ষাতে পাই॥ मुखी यारे करह त्राहेरवत्र कारह । বেতন লাগিয়া নাপিতানী আইছে॥ ক্হিল বোল্ই আন্ত তাএ। কতেক বেতন নাপিতানী চাএ॥ ক্ষেৰলি (?) বলিয়া ডাকএ আইস। ব্লাই বলে অই ছলিচাএ বৈস॥ বসিল ছবিনী নাপিতানী স্থামা। ক্ছএ বেডন দেছএ বামা॥ কতেক বেতন হইবে তোর। আমার বেতনের নাহিক ওর॥ হাসিরা কহই স্নলরী রাই। **এ**मन इसिनी (मसिक नाहे॥ এত ধন ভূমি করিয়াছ কত। ভূবন ভরিয়া আছএ বৃত্ত । এক ধন আছে তোমার ঠাই। সে ধন পাইলে খরেতে যাই ॥ मत्रां कति एक मित्रदार धन। ্চাহিলে না দেএ ফুপীন জন।

কুচবুগ-গিরি মোর মনছিত।
ইহা দিয়া মোরে করছ হিত ॥
আর বে বেতন না হএ মোর।
পরশ-রতন পাইএ যে তোর ॥
হাসিয়া বোলএ রসবতি গোরি।
ভালে সে নাপিতানি পরাণচুরি॥
চঞ্জীদাসে কহে না কর লাজ।
নাপিতানী কহে (१) রসিকরাজ ॥
টীকা

১৫—১৬। "রাই কছে" ইত্যাদি। রাই কহিলেন—'তোর (বেতন) কত হইবে ?' সেই (নাপিতানী) কহিল—'(আমার) বেতনে সীমানাই!'

১৯—২০। "এমতে ধন" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা বলিলেন)—এই প্রকারে অর্থাৎ সামান্ত কার্য্যের প্রতিদানে অসীম ধন লইয়া, কত ধন সঞ্জিত করিয়াছ ? সেই নাপিতানী কহিল, ভূবনে যত আছে অর্থাৎ ভূবনে যত ধন আছে, সকলই আমি সঞ্জিত করিয়াছ। (কপট নাপিতানীর পরিহাস-উক্তি সতা বলিয়া প্রমাণিত করার উদ্দেশ্রেই পদ-কর্ম্বা কৌশবে এই বাক্য সন্ধিবেশিত করিয়াছেন)।

২৫—২৬। "তাহার" ইত্যাদি। তাহার অর্থাৎ সেই কুচরূপ স্থবর্গ-কলসের স্পর্শ-রত্ম (এব অর্থে—পরশ পাধর, অন্ত অর্থে উৎক্কট্ট স্পর্শ) আমাকে দান কর; ('লাতো লাতো তু যৎ শ্রেষ্ঠা তন্ত্রত্মদিহ কথ্যতে।') দরিদ্র জনকে (স্পর্শ-রত্মদান রূপ অপরিশোধ্য মূল্য হারা) ক্রম্ম করিয়া লগু।

২৯—৩ । "পরশ-রতন" ইত্যাদি। (ত্রীরাধা ছল্প-বেশিনী নাপিতানীর কৌশলমর বাক্যের কৌশলমর বাক্যের কৌশলমর উদ্ধর দিতে যাইয়া বলিতেছেন)—বনে ম্পর্শ-রত্ম পাইবে, এখন নিজ্প-গৃহে যাও। 'বনে ম্পর্শ-রত্ম পাইবে' এই প্লিষ্ট বাক্যের একটি অর্থ এই বে, পরশ পাথর প্রহে খাকে না; উহা ক্লাচিং কোন সৌতাগ্যবান্ ব্যক্তি বনেই প্রাপ্ত ইয়া খাকে; স্থতরাং পরশ পাথর কামনা করিলে তাহার

জক্ত বনে বাইরা অমুসন্ধান করিও। অপর গৃচ অর্থ এই বে, শ্রেষ্ঠ স্পর্শ অর্থাৎ আলিজন বনে (সক্তেত-কুঞ্জে) পাইবে। উভয় অর্থেই অস্থানে বুণা বাজ্ঞার কালহরণ না করিরা, স্পর্শ-রত্ম লাভের উদ্দেশ্যে গৃহে যাইরা বন গমনের উচ্ছোগ করাই একাক্ত করিবা—ইহা বুঝা যাইতেছে।

তথা রাগ ।১

এক দিন মনে রভস-কাজ। মাল্যানী^২ হইলা রসিক-রাজ ॥ ফুল-মালা গাঁথি ঝুলাই হাতে । क निरंत क निरंत⁸ कुकरत्र शर्थ ॥ তুরিতে আইলা ভামুর বাড়ী। রাই কহে কত লইবে কড়ি॥ মাল্যানী লইয়া নিভুতে বসি। মালা মূল করে ঈষত হাসি॥ মাল্যানী কহয়ে সাজাই আগে। পাছে দিবা কড়ি যতেক লাগে॥ এত কহি মালা পরায় গলে। वनन पूचन कत्राय इटन ॥ वृतिया नागती धतिला करत । এত টাটপনা আসিয়া ঘরে॥ নাগর কহয়ে নহি যে পর। চণ্ডীদাস কহে কি কর ভর ॥१॥৬৩৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১১১৬ সংখ্যক পদ।

২। 'মাল্যামি' প-র-সা। ৩। 'ঝুলায়ে' क;
'ঝুলাইয়া' च, চ। ৪। 'কে নিবে কে নিবে'
ছলে 'কে নিবি কে নিবি' প-র-সা। ৫।
'লইয়া' ছলে 'হইয়া' প-র-সা। ৩। ন 'য়ৢয়' च।
१। 'সাজাইয়া' খ; 'সাজাইয়ে' ক, च, চ।

৮। 'পরায়ে' क, খ, घ, চ। २। 'করেন' क। ১॰। 'নহি যে' ऋলে 'নহিম্নে' क, খ, घ, চ।

वाना शननी।> গোকুল নগরে ইন্দ্ৰ-পূজা করে দেখি আইল যত নারা। নগর ভিতরে মহা কলরবং নাগর হইলাও পদারী॥ মেলিলা তখন (नाकान-नाकान⁸ দেখিয়া গাহকীগণ। কহয়ে পদারে বহু দ্রব্য আছে যে চাহে নিতে যে ধন"॥ মণিময় মাল মুকুতা প্ৰবাল পোতিক মাণিক যত্ত্য। আনিল ১২ যতনে वद्य मिन मरनभ्भ তোমাদের অভিমত্ত ।। খন্তিকা পুতিয়া মুকুতা ঝুলাঞা>ঃ কহে গাহকিনী আগে । শুনি গাহকিনা আসিয়া>৬ আপনি (पाकान निकटि लाट्ग ॥ স্থমধুর বাণী वल (म (माकानी কিসের লইবে ছড়া। মুকুতা-মাল লইবা ভাল> कि एवं लोशित्व वीष्रीभ ॥ र्श्वन नात्रीगन र्वामरम वहन গাহকী নহিয়ে' মোরা। কিবা ভাগ্যে মেনেং (मशाह्र जनाम এমন ধন যে তোরা॥ নিল এক মাল যুবতী রসাল पिल এक मश्री-शरल^{२०}।

আনন্দ বাঢ়িলং

পরিমাণ হৈল^{২৪}

কতেক লইবে বলে।

আর এক জনে সাধ করি ২৬ মনে লইল সোণার স্থূট। लाहे हिल्रिश यात्र বেডনং৮ না দেয় পসারী ধরিল কুচ। ফিরাফিরিং করে কুচ নাহি ছাড়ে°• कटर मुला (पर (भांत्रः)। সঘন ৩২ বদন করয়ে চুম্বন এমতি^{৩৩} ক**জি** সে ভোর॥ কাড়াকাড়ি ঘন না মানে বচনঙ অরাজক হৈল পার।। যাহার বন° কাটে সেই জন র**ক্ষক হইব^{৩৬} কারা**॥ রজকীণ সঞ্চতি চণ্ডীদাস গীতি त्रिल यानम वर्षे। (मोकान-माकान^e देश्ल ममाधान সকল গেল যে লুটে ৮৬॥৬৪০॥ পাঠান্তর

১। ইहा প-त-मा পুथित ১১১१ मःश्राक श्रम। २। 'महा कनवर अरम 'कनवर करव' (मो: श्रीध। ৩। 'নাগর হইলা' ছলে 'আনন্দে বদিলা' দৌ: পুৰি। ৪। 'দোকান-দাকান' স্থলে 'দোকানি पाकान' प्रो: श्वा e। '(प्रतिश' क, च; 'मिनिना' भ-त्र-मा, त्मोः भूषि। ७। 'भमात्री' ক। 'কহরে পদারে' স্থলে 'আমার দোকানে' भी: श्री । १। 'मिवा' घ, ठ। ৮। 'त्व bice' ইত্যাদি স্থলে 'বে নিতে চাহ বে ধন' ক ; 'বেবা চাহ य्वा धन' मोः পृथि। । 'পৃতিকার' मोः পুৰি। ১ । 'পোতিক' ইত্যাদি স্থলে 'আর বেবা हांहे वर्ज (मो: श्र्वि। >>। 'वह मिन मतन' ऋत्न 'वहपूत हत्न' (मो: পूबि। >२। 'व्याहेनाहि' (मो: পুৰি। ১৩। 'তোমাদের অভিমত' স্থলে 'তোমা সভার বেই মত' দৌ: পুথি। ১৪ 'ধস্কিকা প্তিরা' ইত্যাদি বলে 'এডুকা' ইত্যাদি প-র-সা; 'ৰস্তিকা পুভিন্না মতি' ইত্যাদি দৌঃ পুথি। ১৫। 'কৰে গাছকিনী আগে' হলে 'কহয়ে গাহকী আগে' ক, খ, ঘ, চ; 'কহই গ্রাহকি আগে' দৌঃ পুথি। ১৬। 'আইসে' দৌ: পুথি। ১৭। 'মুকুতা-মান' ইত্যাদি স্থলে 'মুকুভার মালা লইবা ভোমরা' দৌঃ পুথি। ১৮। 'বাড়া' ক, চ, প-র-সা. পুৰি। ১৯। 'নহি যে' দৌ: পুৰি। ২০। 'ভागा' क। २०। '(वरन' त्नी: श्रुवि। २२। '(मिथिष्ट' क, ठ; '(मिथिष्ट' थ, घ, भ-त-मा; 'দেখিয়াছ' দৌ: পুথি। ২৩। 'দিল এক' ইত্যাদি ऋल 'मिल य मथीत शाल' मो: भूथि। २8। 'टेहरन' (मी: भूबि। २६। 'वाड़िन' थ, भ-त्र-मा: 'वाड़ित्ल' त्नीः शूथि। २७। 'माथ कवि' ऋत्न 'शांत कति' त्नीः शूथि। २१। 'मेरे हिन' ऋत्न 'লইয়া' নৌ: পুথি। ২৮। 'মূল্য' দৌ: পুথি। 'ফেরাফিরি' ক। ৩ । 'কুচ' ইত্যাদি श्रुत्म 'कूट्ट धन्नि द्यारम' त्मीः भूषि। ७১। 'कर्ड मुना' इंड्रांनि ऋल '(वंडन त्वहें त्य त्मांत्र' त्नीः পুৰি। ৩২। 'সঘনে' প-র-সা; 'ঘন যে' দৌঃ পুথি। ৩০। 'এমনি' দৌ: পুথি। ৩৪। 'কাডি' ইত্যাদি স্থলে 'কাঢ়াকাঢ়ি' ইত্যাদি ক, খ; 'ডাকা-**ডांकि क**रत वहन ना जरते 'तो: श्रूथि। ७०। 'त्य वन' क ; 'এ वन' थ। ७७। 'त्रक्क हहेव' ऋत्त 'त्रक्षक हरेरव' क; 'त्रका रय कत्रिव' ली: शृथि। ৩१। 'वाक्षि' हो: भूष। अ। 'हाकानि (माकान' (मो: श्रवि।

টাকা

২১—২৪। "শুনি" ইত্যাদি। (ছল্পবেশী পদারীর বাক্য) শুনিয়া নারীগণ বলিল—'আমরা গ্রাহকী নহি'; (তাহাতে অসন্তই হইরা পদারী পরিহাদ করিয়া বলিল)—না জানি কোন্ ভাগ্যে ভোমরা জল্মের মধ্যে এরপ ধন দেখিতে গাইরাছ! (তাই জনর্থক গোল্যোগ করিতেছ!) মুবতীরা স্বভাবতঃ অনস্কার-প্রিয়, তাহাতে এইরূপ পরিহাদ-বাধ্য কে সন্ধ ক্রিতে পারে!

মুভরাং ছল্পবেশী পদারীর কৌশল সফল হইল সভাকার জয় এবং 'যুবতী রসাল নিল এক মাল দিল এক त्रशी-शल।" हेजानि।

७:--७२। "नहे" देजामि। 'नहे हिन यात्र' ইত্যাদি বাক্যের তাৎপর্য্য এই ষে, স্মৃচ-গৃহিতী ছন্ম-বেশী শ্রীকৃষ্ণকে চিনিতে পারিয়া, তাঁহার সহিত রুসের ঝগড়া বাঁধাইবার জন্ত বিস্মৃতির ছল করিয়া इंटिর মূল্য ना निम्नारे চिनम्ना यारेटिक । अथवा এক্লপ অর্থ ও হইতে পারে যে, যেরূপ সচরাচর ঘটিয়া থাকে, সুচগৃহিত্তী আনন্দবিহবল হইয়া বিশ্বতিবশতঃ কিংবা স্থ'চটি স্থীকে দেখাইয়া পছনদ করাইবার জন্মই মূল্য না দিয়া চলিয়া যাইতেছিল। 'ফিরাফিরি করে' ইত্যাদি পরবর্ত্তী বাক্যগুলি দেখিলে প্রথমোক্ত অর্থই সমীচীন বলিয়া বোধ হয়।

সিক্ড়া।>

দেয়াসিনীং বেশে মহলে প্রবেশে রাধিকাণ দেখিবার তরে। স্থ্রক্ত' চন্দ্র কপালে লেপন कु छन कार्ति अरत ॥ নাগর সাজিও বাম করে ধরে । পিন্ধিয়া বিভূতি শাজিল মূরতি ক্রদ্রাক্ষ জগয়ে করে ॥ঞ॥>• ত্রঙ্গপুর সেবি करह खग्न (मवी গোকুল-রক্ষণ নিতি। গোপ গোয়ালিনী স্বভগ-দাইনী১১ পুদ্ধ দেবী ১২ ভগৰতী ১০ ॥ আশীর্বাদ শুনি গোপের রমণী' व्यादेगांश्य (प्रग्नांत्रिनो काट्य । জিজ্ঞাসা করয়ে যত মনে লয়ে> বলে গোপ ভাল আছে ।।

भे क इर्रिश्न कर् মনে ভয় না ভাবিবে। ভোমাদের পতি হুন্দর হুম্ভি১৯ সভাকার ভাল হবেং∙॥ সঙ্গেতে কুটিল। আসিয়া জটিলা পড়য়ে চবণ ধরি। পতির মঞ্চল আমার বধুর বর দেহ কুপা করিং ॥ **छ**नि (मधांत्रिनी হর্ষিত বাণী জটিলা সমুখে কয়। বর ধে লাইবে ভাগই হইবে নিকটে আনিতে হয়ংং॥ জটিলা২০ যাইয়া আনিল ধরিয়াং আপন বধূর হাতে। বসিলা হরিষে দেয়াসিনী পাশে ঘুচাঞা বদন মাথেং ॥ দেখিং৬ দেয়াসিনী বোলে শুভবাণী नव *ञ्लक*न-यूक्तर । গন্ধৰ্ব-পাৰনী **জগদান**िमनो२५ রাধা নাম ভামুস্তা॥ ধরি ধনী-হাতে মনের আকুতেং নিরখে বদন তার। দেখিতে দেখিতে আনন্দিত চিতে भनन क्रिल क्रांत्र ।। ফুলটি তুলিয়া°ং माकिंि थूलिया॰ वास्त्रन नागत्रीत्रॐ চুলে। मक्**नि**° शाहरवः আনন্দে থাকিবে কলক নহিবে কুলে॥ करह भीत्रि भीति १ শুনিয়া স্থলবী 🛰 এ কথা কহবি মোয়খ। বেপাটি ঘূচয়ে** আমার হৃদয়ে তবে সে জানিয়ে তোয়॥

একটি শপতি রাখহ যবভি দেখিতে বাসিয়ে ভয় । প্রাণ-পতি ⁸⁾ সনে বাদ্ধ্যাছ পরাণেঃ ইহাই দেবতা কয়80॥ হাসিয়া নাগরী চাহে ফিরি ফিরি (नग्रां निनो चत्र (कांथा। আমার⁸⁸ ঘর হয়ে যে নগর কহিব বিরল । কথা।। সকেত বুঝিয়া ন্য়ান ফিরাইয়াঃ তাক করে এক দিঠে8৮। নির্খি বদন চিহ্নিল তখন শ্রাম নাগর টাটে।। शीत्रि शीति⁸³ कति বসন সম্বরি यन्दित हिलला लाखा। হ্ববৃদ্ধি যে হয় **हशीला**दश क्य (वक्ख ना करत्र कार्फ ॥५॥५८)॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১১১৮ সংখ্যক পদ।

২। 'দেয়াশিনী' ক; 'দিয়াসিনি' থ। ৩। 'দেয়াদিনী' ইত্যাদি হলে 'ধরি দেয়াসিনি-বেশ মহলে করে
পরবেশ' দৌ: পুৰি। ৪। 'রাধিকার' দৌ: পুৰি।
৫। 'রাকা যে' দৌ: পুৰি। ৩। 'সাজী' ক।
৭। 'নাগর' ইত্যাদি হলে 'সাজী ধরি বাম করে'
দৌ: পুৰি। ৮। 'পিছিয়া বিভৃতি' হলে 'পিছি
রাকা ধুতি' দৌ: পুৰি। ৯। 'সাজিল মুরতি'
হলে 'সাজল মুরতি' ক, চ; 'সাজিল মুরতি'
হলে 'সাজল মুরতি' ক, চ; 'সাজিল মুরতি' দৌ:
পুৰি। ১০। ক, দ, চ ও দৌ: পুৰিতে 'স্কু' নাই।
১১। 'স্কুগদারিনী' ক; 'শুভদাইনি' দৌ: পুৰি।
১২। 'পুরু' দৌ: পুৰি। ১৩। 'কছে জয় দেনী'
ইত্যাদি কলিটির পরিবর্দ্ধে নৌ: পুৰির পাঠ বথা—
'জয় জয় গোকুলরক্ষক দেবতী।

লয় লয় গোপুলয়ক্ক বেবভা। গোপগোপিনি গুভদাইনি পূজ পূজ ভগবতী ॥' ১৪। 'গোপিনী' দৌ: পুথি। ১৫। 'বিদিলা'
দৌ: পুথি। ১৬। 'হরে' ধ, प। ১৭। 'বলে গোপ'
ইত্যাদি স্থলে 'গোপেরা কেমন আছে' দৌ: পুথি।
১৮। 'হরে' प, চ। ১৯। 'সুন্দর মতি'
ক, ঘ, চ; 'সুন্দরহ মতি' প-র-সা; 'সুন্দর মেতি'
দৌ: পুথি। ২০। 'সভাকার' ইত্যাদি স্থলে
'সভার ভাল বে হবে' দৌ: পুথি। ২১। 'সক্লেজে
কুটিলা' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি দৌ: পুথিতে নাই।
২২। 'শুনি দেয়াসিনী' ইত্যাদি পংক্তি চারিটির
পরিবর্ত্তে দৌ: পুথির পাঠ যথা,—

'আনার বধ্র বোলহ স্থীর দেবতা কি সব কয়। বর যে লইবে ভাল যে হইবে নিকটে আসিতে হয়॥"

২০। 'আপনে' দৌ: পূথি। ২৪। 'ধরিল' প-র-সা। ২৫। 'বসিলা হরিষে' ইত্যাদি পংক্তিশবের পরিবর্ক্তে দৌ: পূথির পাঠ যথা,—

'আংসিয়া বসিলা দেয়াসিনি দেখিলা বসন ঘুচিয়া মাথে॥''

২৬। 'আনন্দে' দৌঃ পুথি। ২৭। 'সব স্থলকণমূতা' হলে 'হলকণ দেখি মাধ'' দৌ: পুথি। ২৮। 'জগতানন্দিনী' ঘ, চ, প-র-সা; 'জগত-তারিণী' দৌ: পুথি। কোন লিপিকর 'জগদানন্দিনী' শব্দের 'গ' অক্ষরটি ভূলে 'স' লিখায় 'জসদা-নন্দিনী' ও উহাই কোন পণ্ডিতক্ষম্ভ লিপিকর-কৰ্ত্তক সংশোধিত (?) হইয়া বটতলার মুদ্রিত গ্রন্থ ও তদুমুবারী অধিকাংশ চণ্ডীদাসের মুদ্রিত পদাবলীতে হাক্তজনক 'যশোদানন্দিনী' পাঠের উৎপত্তি করিয়াছে। কোন কোন টীকাকার বিশোদার जानिमनी जर्थाए जानमपात्रिनी' এই রূপ जर्थ করিবা 'বলোদানন্দিনী' পাঠের অর্থ-সঙ্গতি রক্ষা করার চেষ্টা क्त्रिवाद्यतः किस यिनि सगर्छत्र साननात्रिनी, ভাঁহাকে যশোদার আনন্দদারিনী বলিয়া বর্ণিড করার কোনই সার্থকতা দেখা বার না; স্থতরাং 'बर्लाकानिक्जी' भाक खममूनक वनिवार विरवहनारव।

২৯ ৷ 'মনের আকুতে' স্থলে 'মনেরানন্দেতে' 'ধরি ধনী হাতে' ইত্যাদি স্থলে 'মনের অক্ষেরত (?) দিয়াসিনি কৌতুকে' पो: श्रुथि। ७०। 'यमन' हेलामि ऋषा 'यमन কেবল বিকার' দৌঃ পৃথি। ৩১। 'ধরিয়া' দৌঃ পুৰি। ৩২। 'পাড়িয়া' দৌঃ পুৰি। ৩৩। 'নাগরী' क, थ, त्नोः शृथि। ७८। 'प्रकन' भन्त-मा। ७६। 'সকলি পাইবে' স্থলে 'কুশল হইবে' দৌঃ প্ৰথি। ७५। 'कामिनो' (मो: পूथि। ७१। 'करह' इंछापि च्रत्न 'वरण मधुत्र वांनी' रहाः शृक्षि। ७৮। 'ध कथा' हेजामि ऋरन 'এमिक इहेरव सोम्र' मी: श्री । ৩৯। 'আমার হৃদয়ে' ইত্যাদি স্থলে 'আমার হৃদয় त्वशां चूहित्व' त्मीः भूषि। 8 । '(मिथिएक) वानित्य ज्या श्राम 'कहिएज वानित्य ज्या क, भीः পুথি; 'দেখিতে বাসহ ভন্ন' ধ, ব, চ, প-র-সা। ৪১। 'পরপতি' ক, দৌ: পুথি। শ্রীরাধা 'পর-পতির' সহিত প্রণয়-বন্ধন করিয়াছেন, এইরূপ কথা বলিয়া তাঁহাকে অপ্রতিভ করা চড়ুর-শিরোমণি শ্রীক্বঞ্চের পক্ষে সম্ভবপর বোধ হয় না; স্থতরাং 'প্রাণপতি সনে' ইত্যাদি লেষপূর্ণ পাঠই সমীচীন। ৪২। 'বানিঃগছ পরাণে স্থলে 'বেঁধেছ পরাণে' ক ; 'বান্ধিয়াছ মনে' **খ,** ঘ, চ, প-র-সা। ৪৩। 'ইহাই দেবতা কয়' স্থল 'স্বরূপে কহিবি মোর' দৌঃ পুথি। 'आमारनत' तोः श्रवि। 8 र । 'वित्र**रम**' (मोः পুথি। ৪৬। 'করিয়া' প-র-সা; 'কানিয়া' দৌঃ পুথি। ৪৭। 'ফিরিয়া' ক। ৪৮। 'ডাক করে' रेजािन ऋत्न 'जात्क ह्रात वक मिर्क' मो: श्री। ৪৯। 'ধির ধির' দৌ: পুথি। ৫০। 'বেকড' ইত্যাদি স্থলে 'বেকত করয়ে কাঞ্জে' ক; 'বেকত ना करत लारकत मारवा' लोः পूथि।

টাকা

১৮—৫)। "একটি শপতি" ইত্যাদি। ছে ব্বতি! তুমি আমার একটি শপথ (অর্থাৎ সত্য কথা বলিবার জন্ত দিব্য) পালন কর; তুমি প্রাণ-পতির সহিত্ত প্রাণ বাধিরাছ, অর্থাৎ প্রেম-বন্ধনে বাঁধা পড়িরাছ,—ইহাই আমার দেবতা কহিতেছেন।
('প্রাণ-পতি' শক্ষটি প্লিষ্ট, ইহার সরল অর্থ—প্রাণনাথ বা আমী; কিন্ত ইহার গৃঢ় অর্থ জনবেশার"
অর্থাৎ যিনি কেবল পালনকর্তা বলিয়া পতি
নহেন, কিন্তু প্রিয়তম বলিয়া জীবন ও মৃত্যুর
মালিক। 'আর্য্যা সপ্রশান্তী' প্রভৃতি কোন কোন
ব্যঞ্জনা-প্রধান কাব্যে পরকীয়া-নায়িকার বর্ণনপ্রসক্তে
প্রসক্তে প্রিয়' শক্ষটি প্রেমাম্পদক্তে বুরাইতে
প্রায় সর্ব্বদা প্রযুক্ত হইয়াছে।)

সিক্তা।১

देशा विश्विनीर নাগর আপনি কৌতুক করিব॰ মনে। हुश ८य ह**म्म**न আমলকী বৰ্ত্তৰণ যতন করিয়া আনে 🛭 কেশর যাবক কম্বনী দ্রাবকৎ व्यानिन (त्रगात क्रफ्॰। সোন্ধা হৃকুকুম কপুর চন্দন আনিল মুথা শিকড় ॥ থালিতে করিয়া আনিল ভরিয়া উপরে বসন > দিয়া। মিছামিছি১১ করি ফিরে বাড়া বাড়ী ভাত্মর ছয়ার দিয়া^{১২} 🛭 চুবক্ত লইবে১৪ ফুকরি ১৫ কছরে আইল দাসী> যে তবে। व्यांत्रि (महभ्र राज মোদের ১৭ মহলে व्यत्नक निष्ड (य) वर्ष ॥ আইলা লইয়াং থালিতে ধরিয়াং ষেখানে নাগরী বসি। কর্ রচন চুয়া স্কুচন্দন বেণ্যানী মনেতে পুসি ॥

লইনে কতেক চন্দন চুবক জানিতে চাহিয়ে আমি। বেতন সে দিবংঃ मकृति लहे्वः যতেক আনহ^২ তুমি॥ **जिल (यर्ष मार्ष** আমলকী হাতে ঘসিতে লাগিল কেশ। শ্রম যে হইল খসিতে খসিতে नागती भारेल द्वम ॥ স্থ্যমধুরং বাণী কহে সে বেণ্যানীংদ চুয়া মাখিবার তরে। চুল যে ছাড়িয়াং হাত নামাইয়া माथायु॰ कामयु॰> शटत ॥ হইলা আগরিণ্ পরশে নাগরী পড়িয়া বেণ্যানী কোরে। অতি মুখ হৈলত निम्म (य व्यादेन সব শ্রম গেল দূরে ॥ (वगानी वरन গেল সে বেলে য**িতে চাহিয়ে ঘরে**। উঠিলা নাগরী বগন সম্বরি কহে কি লাগিবে **মো**রে । বট আনিবারে कशिल मशीदत श्वियां नागत-तारक। আর ধন নিব৽৽ ক্ৰেনা লইৰ ना कहि (लामांत्रभ लाट्य ॥ কি আছে শ্মন কহ না কেনে শুনিতে চাহিয়ে আমি। থাকিলে পাইবে নতুবাণ্ণ যাইবে থির হৈয়া কহ ভূমি³। হিয়ার ভিতরে*> ৰেণ্যানী কংয়ে বড় ধন আছে সেহ। কুপা বে করিয়া বাস উবারিয়া त्म थन जामादन तरह ।

বুঝিল চাভুরী তখন নাগরী হাসিয়া॰ আপন মনে। হইল এমন গন্ধের বেডন कीवन रयोवन छोटन ॥ বুঝিলাম কান কর সমাধান আর না বলিহ মোরে। এতেক গুণে মারহ প্রাণে কেবা শিখাইল ভোৱে। আশ যে করি পরের নারী मन्द्रां व्यापन मत्न। কোণা বা হৈয়াছে কেবা বা পাইয়াছে ना दिश्या दकान श्राद्यक्ष ॥ চণ্ডীদাসে কয় কত ঠাঞি হয় যাহাতে যাহাতে বনে। ८यो वन- धरन কিবা বা মানে (मॅाभर्यः प्र প्रार्व श्रार्वः ॥৮।७८२॥

পাঠান্তর

১। इंहा भ-त-मा পूथित ১১:२ मःशाक भा। २। 'देहला विविक्ती' ऋत्म 'इहेमा वाश्वानि' त्मीः পুৰি। ৩। 'করিবার' দৌ: পুৰি। ৪। 'উবর্তন' (मोः श्रृथि। <। '(मोत्रव' (मोः श्रृथि। ७। '(वनात्र</p> कफ्' ऋत्न '(वानाक कफ्' त्नोः পूथि। १। 'मथ्मा' প-র-সা। ৮। 'সোধা' ইত্যাদি পংক্তিবর হলে— 'সোদ্ধা যে শুনি কৃষ্ণের বাথানি व्यानिन (मथित्र कन।' त्नीः श्र्व। ৯। 'छानिया' भ-त-मा। ১०। 'छित्र (होत ?) (व' (मो: श्रवि। >>। 'मिहामिहा' (मो: श्रवि। ১২। 'ভাতুর ছ্যার দিয়া' খলে 'ভাতুর ছ্যারে तिशा क, ब, च, ह। >०। 'हुश (व' मोः পूबि। >81 'महेरब' क। >e। 'छाकिबा' स्मोः পুথ। ১৬। 'স্থী' দৌ: পুথ। ১৭। 'আমার' तोः श्रुव। **२৮। 'कांत्र त्वर' व्**रत 'त्वर वानि' (मो: श्रुवि। ১৯। 'मिरक (व' व्यत्म 'न**रे**एक'

न-त-ना, त्नोः शूषि। २०। 'नहेबा' त्नोः शूषि।
२১। 'इनिया' त्नोः शूषि। २२। 'इवा च्रुक्तन्ने'
इत्न 'इता त्य इन्सन्ने' त्नोः शूषि। २०। 'नहेद्व'
त्नोः शूषि। २८। 'ति क्ति' च्रुट्न 'त्य क्तिद्व'
त्नोः शूषि। २८। 'हाहित्व' त्नोः शूषि। २७।
'त्व' च्रुट्न 'विन त्य त्म' क; 'वानिक क्नि' त्नोः
शूषि। २१। 'मधूत्र' थ, घ, ठ; 'मधूत्रम' भ-त-ना।
२৮। च्रुट्ट त्मे त्नो त्यो च्रुट्ट च्रुट्ट मावितात उद्व'
११क्टिवित शूर्त्य निम्ननिविष्ठ च्युटितिक भःकिक्षिन मृष्टे
इत्र, यथा—

'ৰসিতে জানিএ আমি ভালে।

যদি মোরে বল আমলকি বসিয়া

থানিক মাথিএ চুলে॥

ডাকিলা আপনি ৰসিলা বাস্তানি'

২৯। 'ঝাড়িয়া' দৌ: পুৰি। ৩০। 'মাথায়'

ক। ৩১। 'হৃদ্দেম' প-র-সা; 'কুচের' দৌ:
পুৰি। ৩২। 'পাগলি' দৌ: পুৰি; 'পাগন্নি' প্র:
পুরি। ৩২। 'অতি' ইত্যাদি হুলে 'মুঝ যে
পাইল' দৌ:, প্র: পুৰি। ৩৪। 'বরে' দৌ: পুরি।

৩৫। 'হাসিলা' দৌ: পুরি। ৩৬। 'কংহ' ইত্যাদির
হুলে দৌ: পুরির পাঠ বথা.—

'ইহা বে লাগএ আর বে চাহিএ' ৩৭। 'তোমারে' ব, দৌঃ পুঝি । ৩৮। 'কি আছে' স্থলে 'বে থাকে' দৌঃ পুঝি । ৩৯। 'নহিলে' প-র-সা। ৪০। 'কহ না' ইত্যাদি পংক্তি চারিটির স্থলে দৌঃ পুঝি ও প্রঃ পুঝির পাঠ বথা,—

'কহ না কেনে কি আছে মনে
শুনিতে চাহিরে তারে।
হিরার বদনে রাখ্যাছ কে ধনে
দে ধন কেহ কে মোরে॥'

३১। 'বেণ্যানী কহরে' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি দৌ: পুৰি ও প্রঃ পুথিতে নাই। ৪২। 'হাসিলা' দৌ: ও প্রঃ পুৰি। ৪৩। 'গল্পের বেতন' ইত্যাদি হলে 'আমদক্তি বেতন চাহে বেবা ধন' দৌ:

ও **গ্রঃ** পুথি। ৪৪। 'কারণ' প-র-সা। 'কর সমাধান' ইত্যাদি পংক্তি চারিটির স্বলে---

'কর সমাধান বুঝিয়া জেন বেকত হএ পাছে ধরে।

রেতেক ধনে চাহে জে পরাধে

ধন্দ জে লাগএ মোরে ॥'—দৌ: পুথি। ৪৫। 'মারহ' খ; 'মরএ' দৌ: পুথি। ৪৬। 'কোথা' ইত্যাদি পংক্তি ছুইটির পরিবর্ত্তে—

'কে কোথা পাইছে কেবা দেখিয়াছে হইয়াছে কোন বা স্থানে।'—দৌ: পুথি। ৪৭। 'সোঁপে' ক, চ। ৪৮। 'চণ্ডীদাসে কর' ইত্যাদি কলিটির স্থাল—

'চগুলাসে কএ কত ঠাঞি হয়ে

জাহার জেমন মোনে।
বৌবন ছার কে করে বিচার

সপএ আপন প্রাণে॥'—দৌঃ পুথি।

টীকা

en— e । "কর সমাধান" ইত্যাদি। হে
কৃষ্ণ ! (ডোমার চাতুরী) বুঝির'ছি; (এখন)
কান্ত; কর; আমাকে আর (এরপ কথা) বলিও
না; তুমি এই সকল ওণে (নারিকাগণকে ডোমার
অমুরাগিণী করিয়া) প্রাণে মার; (এইরপ মোহিনী
বিভা) ডোমাকে কে শিক্ষা দিল ?

•>-- • । "পরের নারী" ইত্যাদি। (কামুক পুরুষ) পরের রমণীর আশা করিরা (আশা-পূর্ণ না হওয়ার) নিজের মনে (ভাবিয়া) মরে; (এই-রূপ ছ্রাকাজ্ঞার সকলতা) কোথায় হইয়াছে? কোন্ ব্যক্তি পাইয়াছে? কোন স্থানেই (এরশ) দেখি নাই!

৬৫—৬৮। "চণ্ডীদাদে" ইত্যাদি। (শ্রীরাধার পূর্ব্বোক্ত বাক্যের উত্তরে) চণ্ডীদাদ বনিতেছেন— (হইবে না কেন?) বাহার সহিত বাহার বিশ হর, (এরপ) কত স্থানে হইতেছে; বৌবন-ধন বারা কিংবা সন্ধান বারা কি প্রারোজন ? সে (প্রেমাম্পাদের) ক্রামের উদ্দেশ্যে (নিক্ষের) ক্রাম্বকে অর্পন করে। নৌ: পুথির 'বৌবন ছার' ইত্যাদি পাঠের অর্থও প্রায় এইরূপ; তবে উহার অবয় আরও স্থানাট।

ৰয়াড়ী।১

বাদিয়ার বেশ ধরি বেড়ায় সেং বাড়ী বাড়ী আইলেন ভাগুর মহলে। বাহির করে সাপিনী খুলি হাঁড়ির চাকুনিং লইয়া এক করিলেন গলে"॥ विष्टती विन (मेरे कत्र)। দেখিতে আইলা খেলা শুনিয়া যতেক বালা খেলাইছে মাল্ম পুরন্দর॥ গ্রন্থ। जानिनीदत्र (पग्न थांवे जानिनोत्र वार्ट (कांने) म छ कत्रि উঠে ধরি ফণা >>। নাগিনী>২ ফিরিয়া চায় অঙ্গুলী মুড়িয়া যায় ছোয়ে যাই > বাদিয়ার দাপনা ॥ খেলা দেখি গোপীগণ বড আনন্দিত মন কহে তুমি থাক কোন স্থানে। থাকি বনের ভিতরে, নাগ-দমন বোলে ১৪ মোরে মোর নাম জানে সব জনে '।। বস্ত্রু শাগিবার ভরে, আইলু ১৭ ভোমাদের ১৮ ঘরে বস্ত্র > দৈহ আনিয়া আপনি। ভাল একখানি পাব্ ছিডা বস্ত্র শ্ নাহি লব দেখি দেহ^{২২} শ্রীঅক্সের খানি^{২৩}॥ বছমূল্য নিতে ১৪ চাও বটের ভিখারি হও নহিলে শোভিত^{২৫} নহে বটে^{২৬}। বনে থাক সাপ ধর তেনা পরিধান কর সদাই বেড়াও নদীতটে॥ বাছা^{২৭} কহে ধীরে ধীরে, তোমার বস্ত্র^{২৮} নিব শিরে মনে মোর হবে বড় হুখ। ভোমার সম করিতে অভিনাষ হয় চিতে ছুমি যদি না বাসহ ছুখং ॥

চুপ কর্যা থাক বাছা যা পাও তা লও সাধ্যা ও জরমে জরমে যাহ ও ঘরে ও ।

চুরি দারি নাছি করি জিখ ও মাগি পেট ভরি
আমি ভয় করিব কাহারে ॥
তোমা লৈয়া করি ক্রীড়া, তুমি কেন মান ও প্রীড়া ও স্থী কর এ চুথিয়া জনে ।
বিজ চণ্ডীদাসে কয় ও বাদিয়া যে এই নয় ও বুথিয়া দেখহ ও আপন মনে ॥ ১॥৬৪৩॥

পাঠান্তর

)। ইहा প-র-সাপুথির ১১२ • সংখ্যক পদ। २। '(क' (मो: পूणि। ७। 'आहेमा व' (मो: প-র-সা। ৪। 'খুলি হাঁড়ির ঢাকুনি' স্থলে 'খুলি হাঁড়ি ঢাকুনি' ক; 'থোলে হাঁড়ি व्याशिन' तमोः श्रूथि। ४। 'तम माशिनी' क, ४, ६। e। 'नहेम्रा' हेन्सान ऋत्न 'जूनिमा नहेन এक গলে' ক, প-র-সা। १। 'দেই কর' ছলে 'দেছ वत्र' (मो: পুथि। ৮। '(মানে' (मो: পুथि। ३। 'लाना' (मो: श्रुवि। >०। বাঢ়ে কোপ' ছলে 'সাপিনী বাঢ়ায় কোপ' ক: 'সাপিনীর বাড়ে কোপ' চ; 'নাগিনি হয় বড় কোপা' দৌ: পুথি। ১১। 'দণ্ড' ইত্যাদি ছলে 'উঠে দশু ধরিয়া যে ফণা' দৌ: পুবি; চণ্ডীদাসের মুদ্রিত সংশ্বরণসমূহে লিপিকরপ্রমাদ হেতু 'দঙ্গ' স্থলে 'দন্ত' পাঠ স্থষ্ট হইয়াছে। (সাঃ পঃ পত্রিকার २०म ভাগের ১১২ পৃষ্ঠার পাঠ-বিচার জইবা) ১২। 'जानिन' (मो: পूथि। ১৩। 'ह्हास बाहे' ऋत्न '(छा: (सव' (सो: श्वि। >8। '(वारम सादत' श्राम '(वारम' क, थ। ১৫। 'नर्स करन' मोः श्रुचि । ३७। 'वजन' क, च, च, ठ, श-ब्र-जा।)१। 'আইলাম' প-র-সা; 'আদিলাম' ছৌ: পুর্বি। ১৮। '(छात्र' (मो: श्रृचि। ১৯। 'वह्र' भ-द्र-मा। २०। 'वस्त' श-क्रमा। २२। 'छान' इंख्यानि दरन 'ভान स्टेरन नहेश काव' हो। श्री। হং। 'দের' ক। ২৩। 'দেখি দেহ' ইত্যাদি
হলে 'দেহ ডোমার অঙ্গের এক খানি' দোঃ পুথি।
২৪। 'নিডে' ছলে 'বস্ত্র' দোঃ পুথি। ২৫।
'শোভিডে' থ, ঘ, চ, প-র-সা। ২৬। 'নহিলে'
ইত্যাদি ছলে 'নহিলে শোভিত চার বটে'
ক; 'নহিলে শোভিতে চার বটে' থ, ঘ, চ,
প-র-সা। দোঃ পুথির পাঠ ব্যতীত কোন পাঠেই
অর্থবোধ হয় না; হত্রাং ঐ পুথি অধিক প্রাচীন না
হইলেও অগত্যা সেই পুথির পাঠই মূলে গৃহীত
হইল। ২৭। 'বাদিরা' প-র-সা। ২৮। 'বস্ত্র'
প-র-সা। ২৯। 'বাদ্বা কহে' ইত্যাদি কলিটির
পরিবর্জে দোঃ পুথির পাঠ ষ্ণা;—

'তোমার বস্ত্র শিরে করি আনন্দিত হবো বড়ি বহুত বাসিএ মনে স্থুধ।

আপনার হাতে ধরি বন্ধ বান্ধো শিরোপরি মনে কিছু না ভাবিহ গুধ॥'

৩০। 'হ্ৰধ্যা' দৌ: পুথি। ৩১। 'যাও' ক,
দৌ: পুথি। ৩২। 'ভরমে' ইত্যাদি হলে 'ভরমেতে যাহ নিজ ঘরে' প-র-সা। ৩০। 'ভিক্ষা'
ক, দৌ: পুথি; 'ভিক' প-র-সা। ৩৪। 'পাও'
প-র-সা। ৩৫। 'ভূমি কেন' ইত্যাদি হলে
'মনে কেন দেও পীড়া' দৌ: পুথি। ৩৬। 'কহে'
দৌ: পুথি। ৩৭। 'নহে' দৌ: পুথি। ৩৮।
'বুৰিয়া দেথহ' ছলে 'বুৰি কাজ কর' দৌ: পুথি।

চীকা

১৪ — ১৫। "থাকি" ইত্যাদি। (বাদিয়ার বেশধারী প্রীক্ষক স্থীদিগের প্রশ্নের উত্তরে প্রেষপূর্ণ ভাষার কহিতেছেন) আমি বনের ভিতর থাকি; (এক অর্থে— বন-প্রির বিলয়া বনে অর্থাৎ বৃন্দাবনে বাস করি) আমাকে লোকে নাগ-দমন বলে; (এক অর্থে— 'নাগ-দমন' বলিয়া ডাকে; অপর অর্থে ফালিয়-নাগের দমনকারী বলিয়া বোষণা করে); আমার নাম সকলেই জানে; (এক অর্থে— আমি সকলের বাড়ীভেই সংগ্ থেণাইতে বাই বলিয়া

আমাকে সকলেই চিনে, অপর অর্থে—আমি অগদীখর বলিয়া, আমার 'হরি', 'ক্লফ' প্রভৃতি নাম সকলেরই স্থবিদিত আছে।)

২০—২১। "বটের ভিপারি" ইত্যাদি।
বাদিয়ার বেশধারী ক্রফ সথীর নিজ্প সিধের
বল্পধানা প্রার্থনা করায়, উহা তাহার নিতাম্ভ
ধৃষ্টতা বিদিয়া স্থী তাহাকে তিরস্কার করিয়া বিলতেছেন) তুমি কড়ার ভিপারী বটে; (কিন্তু) বহুমূল্য বস্তু লইতে চাহিতেছ; (তাহা) না হইলে
কি কড়িতে (কর্ত্তায় ৭মী) শোভা পাইত না অর্থাৎ
কড়ি ভোমার পক্ষে মানাইত না ? 'নহিলে
শোভিতে চায় বটে' পাঠ গ্রহণ ক্ষিলে কোন সদর্থ
হয় না; তবে 'চায়' শক্ষটির হলে 'চায়', 'চাইয়া'
পাঠ কর্মনা করিলে, উহার অর্থ এইক্সপ হইত যে—
তাহা না হইলে তুমি কড়ি চাহিয়া শোভা পাইত।

২৮—২ন। "চুপ কর্যা" ইত্যাদি। (বাদিয়ার ধৃষ্টভাপূর্ণ বাক্যের উত্তরে সধী তিরস্কার করিরা বলিতেছেন) বাদিয়া! চুপ করিরা থাক; (ছেঁড়া বস্ত্র প্রভৃতি) যাহা পাও, তাহাই ধোসামুদী করিরা শগু (এবং) মানে মানে গৃহে যাও।

৩০—৩১। "চুরি দারি" ইত্যাদি। (বাদিরা স্থীর ভিরস্কারের উত্তরে বলিভেছে) আমি চুরি-দারি করি না; ভিক্ষা মাগিরা উদর পূর্ণ করি; (তবে) আমি কাহাকে ভর করিব? অর্থাৎ কি জন্ম উচিত কথা বলিতে কাল্ক হইব?

ভাটিয়ারি।১

গোকুল নগরে প্রতি ঘরে ঘরেই বেড়াই° চিকিছা° করি। বে রোগ যাহার দেখি এক বারুং ভাল যে করিতে পারি॥ भिरत भित्र-भंल পিরিডির শ্বরণ হৈয়া থাকে যে রোগীর[।]। আঁখি নাহি মেলেদ বচন না চলে তাহারে পিয়াই নীরু ॥ এ কথা শুনিয়া বাহির হইয়া কহে এক সখী ধাই। রোগী আছে জ্বরে আমাদের ঘরে দেখ একবার যাই॥ এই বাডী হৈতে আসিছি তুরিতে কহে হেথা থাক বসি। সাজ সাজিতে চলিলা নিভুতে মনের হরিষে ভাসি ।। আপন বসন ঘুচাঞা তখন লেপয়ে ১ কেশর মাটী। ভকলবি^{১২} ছান্দে বসন পিন্ধে मरक हलरग्रे शिष मरनाश्त्र यूनि कारक। শিক্ড-নিক্র ভাহার ভিতর যতন করিয়া বান্ধে॥ ধ্রু॥ शुहादेश लाटक हिकिङ्क-नाटकः विमला दांगीत्र कारह। নিরুপে বদন যুচাঞা বসন রোগ যে ইহার আছে॥ বাম হাথে ধরি অঙ্গুলি মুড়ি ১৬ रमर्थ थाकू किया यग्र । পিরিভি-বিষে জার্যাছে ইহারে ১৭ পরাণ রছে না রর ১৮ ॥ উঠে अत्र मृष् হাসিয়া>> নাগরী खान (य किशा वरते। বল কি খাইলে হইব সবলে (वशिधि दक्ष्मरन इटि ।

ঔষধ হয়

এখনি খাওয়াইয়া যাইতামং ।
ভাল যে হইত
ত্বর যে যাইত
যদি সে সময় পাইতাম ॥
ভখন নাগরী
বুঝিলা চাতুরী
টীট নাগর-রাজ ।
বাশুলী নিকটে চণ্ডীদাস রটে
এমনং কাহার কাজ ॥১০॥৬৪০॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১২২১ সংখ্যক পদ।
২। 'ফিরি' দৌ: পুথি। ৩। 'বেড়ারে'
ধ, ঘ, 'বেড়ার' চ। ৪। 'চিকিৎসা' ক, ঘ, দৌ:
পুথি। ৫। 'বে রোগ' ইত্যাদি স্থলে 'জার জে
কথার বেদনা সারএ' দৌ: পুথি। ৩। 'শিরে'
ইত্যাদি স্থলে 'সির:শুল জ্বর পিরিতি রসের' দৌ:
পুথি। ৭। 'বে রোগীর' স্থলে 'বেবা নর' দৌ:
পুথি। ৮। 'বচন' ইত্যাদি স্থলে 'আঁথি নাহি
মেলে অন্তর যে জলে' দৌ: পুথি। ১। অতঃপর
দৌ: পুথিতে নিম্নলিথিত অতিরিক্ত কলিগুলি দৃষ্ট
হয়; যথা,—

'কেবল একান্ত ধ্যন্তরি। নাহি জানে বিধি এমন মহোযধি পিয়াইলে জায় জরি॥ এক জনে তথা छनिएन व कथा कहिला बाहेब काटह। ও্টব্যধি থাও ভাগ জে হও বট দিহ তাহে পাছে ॥ পরের মুথে ভনিয়া স্থাৰ रविष्ठ देशन मन। कृषि (व कार्रेश আনহ ধাইরা (मिथ्र क्मन सन॥' >। 'এ কথা ভনিয়া' ইত্যাদি আটটি পংক্ষির পরিবর্জে দৌঃ পুথিতে নিম্নলিখিত পংক্তিগুলি মৃষ্ট শব্দ হইতে গৃহীত; উহা মুসলমানী বাদালার অভাপি हम ; स्था,---

'ৰাহির হইয়া বোলএ চাহিয়া কেমনে গেলা রে ভাই। কুগি আছে ভৱে चार्यात्मत्र चटत দেখ একবার জাই। ভাসিলা সাগৱে ভনিয়া নাগৱে আপনার মনে খুসি। এই বাড়ি হৈতে আসিএ তুরিতে এইখানে রহ বসি॥

সাৰ জে সাজিতে চলিলা ভুরিতে বেজার হইবে মনে। চণ্ডীদাসে কছে ধাতুজ্ঞান হএ

তবে দে চিকিৎসা জানে ॥' দৌ: পুথিতে 'আপন বসন' ইত্যাদি অবশিষ্ট অংশ শ্বতন্ত্র পদরূপে লিখিত হইয়াছে: ক্রিজ্ব রচনা দর্শনে উহা 'গোকুল নগরে' ইত্যাদি পদের শেষাংশ বলিয়াই প্রতীত হয়। ১১। 'লেপিলা' দৌ: পুথি। ১২। 'তকল্লকি' ক; 'তগল্গভি' দৌ: পুথি। 'চলিলা' দৌ: পুথি। ১৪। 'চিকিছক-সাজে' श्राम 'ठिकिक्टांत्र कांट्स' क। >१। 'नांशवित्र' एगे: পুথি। ১৬। 'অঙ্গুলি মৃড়ি' স্থলে 'অঙ্গুলিতে জুড়ি' প-র-সা। ১৭। 'পিরিভি-বিষে' ইত্যাদি স্থলে 'পিরিতি বিষেরে জারিছে ইহারে' প-র-দা। ১৮। 'পরাণ' ইত্যাদি স্থলে 'পরাণ রহে কি না রর' ক: পিরাণ রয় কি না রয় প-র-সা। ১৯। 'ভনিয়' लोः পृथि। २०। 'डेठि' क, थः, 'त्रार्ट' भ-त्र-मा। २३। 'योजाम' क, ४। २२। 'निहत्न' (पी: शृथि ।

है का

निष्मत वनन चूनिया (अष्म) कूँ कूम-मश्युक श्रीत মাটা লেপন করে; আড়ৰরপূর্ণ ভঙ্গীতে বসন পরিধান করে (এবং) হাটিয়া (আহ্বান-কারিণীর) मल हरन। ('अक्झिव' मस्टि आहरी 'उक्हूक्' ব্যবদ্বত হইয়া থাকে)।

ভৰা দ্বাপ 15

রসিক নাগর সাজি বাজিকর সঙ্গেত স্থাবল স্থা। मिष् मुड़ा देनका টোলক বাজাইয়া ভামুপুরে দিলা দেখা। ধুলা মাখি গায় क्र्रभुभ जुलाय নটপটি পাগ শিরে। ত্ববল স্থার কান্ধে দিয়া ভার नामाहेला शीरत शीरत ॥ কুহক লাগাইয়া युनि (य थुनिश মুকুতা কাহির করে। উগারে বদনে বহুমূল্য ধনে वार्ष भव थरत थरत ॥ পেটে গুয়া দিয়া বাঁশেতে চড়িয়া সুরয়ে কভেক পাকে। দড়া বান্ধি তায়ু हैं। हैं। हैं। हैं। वाय স্থতা উগাইয়ে নাকে॥ সব গোপীগণে দেখিতে যতনে সঙ্গে রসবতী রাই। আমার মহলে আইস আইস বলে সভাই দেখিতে চাই ॥ শুনি বাজিকর চলে ভার ঘর नहेश जकन जारकः। निद्रत श्रम विश्रा পড়ে উল্টিয়া त्राहिरप्रत याजिना मारवा । কতেক কুছক দেখার কৌতুক

शिद्य दाँ हैं हैं हैं। इंग्रिक करना

বাজিকর-শিরে কেলে ॥

বিচিত্র বসন

धनी शंति मन

আর ধন চায় বসন না লয় कर्ट श्वमनी-भारम। হেম-ঘট আছে হিয়ার মাঝেদ षिया शृत **अ**जिलारम ॥ বুঝিলা চাতুরী শুনিয়া নাগরী চমকিত হৈলা মনে। না দেখিয়ে আর হেন বাজিকর কত টীটপনা জানে। যমুনার কূলে স্থাবতরু-মূলে সকল সাধিবা তথা। চলিলা ভুরিতে এ উদ্ধৰ সাথে वृक्षिया मह्ह ७-कथा ॥>>॥७४৫॥ ইতি তৃতীয়-পল্লবঃ। এভানি গীভানি সর্ব্বকালোচি হানি। পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১২২ সংথ্যক পদ। ২। 'ঝুলুপ'থ। ৩।'দড়ী'ক। ৪।'হাটি হাট' ঘ৷ ৫৷ 'সাক্ষ'থ। ৬৷ 'মাঝ'থ। ৭৷'হাটি হাটি'খ। ৮৷ 'নাঝারে'ক।

পুনশ্চ প্রকারাস্তরং। দিনাস্তে জ্রীকৃফে চ সঙ্গেতঃ। এবং স্বয়ংদোত্যং যথা।

हेमनक्नार्थ ।>

মঝু মুখ বিমল-কমল-বর-পরিমণেং
কানেশুঁ তুহুঁ অতিও ভোর।
বামিক নিরড়ে কতহুঁ কর কলরব
না কানি কৈছে দিলং ভোর॥
তুরে রহুং খ্যাম শুমর-বর-রায়।
বামিক সেবন করইতে ঐছন
কানি করহ অস্তরায়॥ এং॥

এতছঁ তিয়াসে হোত ধব আকুল
কী কল মন্দিরে গুঞ্জা।
তাহিঁ চলহ যাহাঁ কুস্থম বিধারল
মঞ্জুল মাধবি-কুঞ্জা।
এতছাঁ সঙ্কেত কয়ল বব কামিনি
কান্যু চললাও সোই ঠাম।
গোপ-গোঙার ভ্রমর বলি খোজত
গোবিন্দ দাস রস গান্ত ॥১॥৬৪৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৪|১১২৩ সংখ্যক পদ। 'ইমন কল্যাণ' স্থলে 'কল্যানী' খ, প-র-সা। ২। 'মুখ-বিমল' ইত্যাদি স্থলে 'মুখ-কমল-বিমল-রস-পরিমলে' ক, খ, ঘ, চ। ৩। 'নিখি' প-র-সা। ৪। 'দিন' খ, চ, প-র-সা। ৫। 'রহ'ক। ৬। 'হোরত' প-র-সা। ৭। 'কি' ক। ৮। 'খুলো' খ। ৯। 'কুলো'খ। ১০। 'চলত' প-র-সা। ১১। 'রস গান' স্থলে 'পরমাণ'খ।

টীকা।

১—१। "মঝু" ইত্যাদি। রাধানোহন ঠাকুর
লিথিরাছেন,—'অথ শ্রীনতী বাটীনিকটে শ্রমরংধনিনা
কতসক্তের শ্রীকৃষ্ণং প্রতি মঝু মুথ-বিমল-কমল-বরপরিমল ইত্যাদিকং সক্তেমাহ'। অর্থাৎ একদা
শ্রীকৃষ্ণ শ্রীরাধার বাটীর নিকটে বাইরা শ্রমরের স্থার
শুঞ্জন-শন্ধ করিয়া সক্তে জানাইলে শ্রীরাধা 'মঝু
মুখ' ইত্যাদি বাক্যে ঐ সক্তের প্রত্যুদ্ধরে সক্তে
করিরাছিলেন। 'মঝু মুখ' ইত্যাদি পংক্তিশুলির
ব্যাধ্যা করিতে জব-পংক্তিশুলির ব্যাধ্যা আগে করা
স্থবিধাজনক। শ্রীরাধা কৃষ্ণ-শ্রমরছলে শ্রীকৃষ্ণকে
সবোধন করিয়া বুলিতেছেন,—'হে শ্রাম শ্রমর-রাল!
ভূমি দূরে থাক; স্বামীর সেবা করিবার কালে এইরূপ প্রতিবন্ধকতা করিও না। আমি জানিরাছি বে,
আমার মুধরণ বিমল কমল-বরের সৌরক্তে ভূমি
নিতান্ত মোহিত; (ভাই বলিরা) স্থানীর নিকটে

কত কলধ্বনি করিতেছ ? না জানি তোমার দিল অর্থাৎ প্রাণের বাসনা কিরূপ ! (শ্রীকৃষ্ণ সঙ্কেত-ত্তক ক্রমর-গুঞ্জন করার সময়ে শ্রীরাধার পতি ফাগরিত থাকার, শ্রীকৃষ্ণকে কৌশলে সতর্ক করার উদ্দেশ্তে শ্রীরাধা এই সঙ্কেত করিতেছেন)।

৮—১১। "এতছ" ইত্যাদি। যদি এতই
ছুফার অর্থাৎ মধুপানের পিপাসার অস্থির হইরা
থাক, (তাহা হইলে) মন্দিরে গুঞ্জন করিয়া ফল
কি ? সেই স্থলে যাও—বেথানে স্থলর মাধবীলতার কুঞ্জ কুম্ম-রাশি বিস্তার করিয়াছে! (এই
বাক্যের ধ্বনি এই বে, তুমি নির্জ্জন মাধবীকুঞ্জে
অভিদারে গমন কর, আমিও সত্বেই স্থ্যোগমতে তথার যাইতেছি!)

১২-->৫। "এতহ" ইত্যাদি। নাম্বিকা (শ্রীরাধা) বর্থন এই সঙ্কেত করিলেন, তথন শ্রীকৃষ্ণ সেই স্থলে অর্থাৎ মাধবী-কুঞ্জে চলিলেন: (এীরাধার এই দক্ষেত-বাক্যের তাৎপর্য্য ব্রিতে না পারিয়া, প্রকৃত পক্ষেই একটি ভ্রমর জীরাধার মুখ-কমলের পরিমল দারা আক্রষ্ট হইয়া গ্রহে আসিয়া গুঞ্জন করিতেছে, মনে করিয়া ভ্রমর তাড়াইবার জন্ত) মূর্খ গোপ ভ্রমর (কোথায় গেল) বলিয়া খুঁজিতে লাগিল। গোবিন্দ-দাস এই রস গান করিভেছেন। ('বেই গোপ. সেই গোঙার, এইরূপ কর্ম্মধারর সমাস দারা 'গোপ-গোঙার' শব্দটি নিষ্ণায় হইয়াছে। 'গোঙার' শব্দের ব্যুৎপত্তিগত অর্থ 'গ্রামবাসী' : 'নাগরিক' বা 'নাগর' লোকের ভুলনার 'গ্রাম্য' বা 'গোঙার' লোক প্রায়শঃ निर्द्शिष इम्र विनम्ना 'र्शिक्षात्र' भटकत्र 'मूर्थ' व्यर्थ আসিয়াছে। আধুনিক বাশালায় 'গোঙার' হইতে আত 'গোঁৱার' শক্টি 'একগুঁৱে' অর্থেই ব্যবস্ত र्व।) शाविन्ननारम्य धरे भन्ति "उद्भवमत्मम" কাবোর নিম্নলিখিত প্লোকের মর্শ্বাসুবাদ; বথা,—

"নবজাভোক্ত-পরিমলোক্মন্ত সেবাস্থ্যদ্ধ পড়াঃ ক্ষাক্রমর কুক্বে কিন্তরামন্তরামন্। ভ্কাভিত্বং বদি কলকত ব্যপ্রচিত্তভাগের গলৈঃ গাড়ছবিষবিরলৈবাঁতি পুরাপকুঞ্ব ।" শপাপুজ্বিমিতি অস্তাং চক্সিকাবহুলারাং রক্সতাং ভস্ত জনৈর্জ্লিকাত্ম। অবির্গৈনিবিট্ড্রিভি ত্তা-বেশত্ম। স্কুভিত্বাৎ শৃকারোপ্যোগিত্বং চ।"

—বিখনাণ চক্র বর্ত্তি-ক্বত আনন্দচক্রিকা টীকা।

(क्षांत्र १३

গুরুজন পরিজন সব নি দং গেলে ।
তৈখনে সবহুঁ সখীগণ মেল ।
চাল্দনি রজনি হেরি ভেল জীত।
বেশ বনাওল তাহিঁ উচিত।
গোপতে চলল ধনি কোই না জান।
হেরই দশ দিশ চকিত-নয়ান।
গিমকর-কিরণহি ভেল বিধার।
মেলি চললি কোই লখই না পার।
কালিন্দি-কুলে যাহাঁ মাধবি-কুঞ্জ।
কুসুম বিধারণ অলিকুঞ্জ গুঞ্জ।
তাহিঁ মিললি ধনি মাধব পাশ।
বৈঠল তুহুঁ জন পুরল আশা। যা ৬৪৭॥

পাঠান্তর

ইহাপ-র-সাপুথির ১১২৪ সংখ্যক পদ।
 শিনদেশ ব, চ। ৩। 'গেলি' খ; 'গেলী' ঘ। ৪।
 'মেলি' খ; 'মেলী' ঘ।

নী ক্ৰা

৩—৪। "চান্দনি" ইত্যাদি। (স্থীগণ)
ক্যোৎসামনী রক্ষনী দেখিরা, (ক্যোৎসা রাত্রে কিরুপে
অভিনার করিবে, সেই চিস্তার) আশক্ষিত হইল
(এবং মনে সত্পার স্থির করিরা) ক্যোৎসার উপযুক্ত
(শুল্র) বেশ প্রস্তুত করিল।

৭—৮। "হিমকর" ইত্যাদি। চক্রের জ্যোৎকা (দশ দিকে) বিস্তারিত হইল; (শ্রীরাধা ও স্থীগণ) সেই জ্যোৎসার সহিত মিশিয়া চলিলেন,—কেইই (তাঁহাদিগকে) লক্ষ্য করিতে পারিল না। ভুলনা করুন,—

"মলিকাচিতধিশ্বল্লাশ্চাকচন্দনচর্চিতা:। অবিভাব্যাঃ স্থং বাস্তি চল্লিকাশভিদারিকা: ॥"

—সাহিত্যদর্পণ, ১০ম পরিচ্ছেদ।

তথা রাগ।১

দেখ রাধানাধব-মেলি।
মুক্তি মদন-রস-কেলি॥
ও নব জলধর-অজ।
ইহু থির-বিজুরি-তরজ॥
ও বর-মরকত ঠান।
ইহু কাঞ্চন দশবান॥
ও মত্ত মধুকর-রাজ।
ইহু নব পতুমিনি সাজ॥।
ও নব তরুণ-তমাল।
ত মুখ চান্দ উজোর।
ইহু দিঠি লুবধ চকোরং॥
অরুণ নিয়ত্তে পুণ্ণ চন্দ।

গোবিন্দ দাস রহুঁণ ধন্ধ।।।১৪৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুৰির ৩৪৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ও মুখ' ইত্যাদি লোকটি ক, খ, খ, চ পুথিতে নাই। ৩। 'পূন' ক, খ, খ, চ; 'পূর্ম' প-র-সা। ৪। 'প্রু' প-র-সা।

निका

>-- २ । "দেশ" ইত্যাদি। (হে স্থি!) শ্রীরাধা ও শ্রীকৃষ্ণের সন্মিলন দর্শন কর; (উহা) মুর্ত্তিমান কাম-কেলিম্বরূপ।

e->। "ও বর" ইত্যাদি। উনি (অর্থাৎ গ্রিক্ষ) উৎকৃষ্ট সরকতের শোভা-বিশিষ্ট; ইনি (অংথাং শ্রীরাধা) দশবান অংথাং উপর্যুপরি দশবার দাহ ধারা বিশুদ্ধ স্ববর্ণসর্প।

১৩--১৪। "অরুণ" ইত্যাদি। (পূর্ব পূর্ব শ্লোকের বর্ণিত নব-জ্বলধরের নিকট বিদ্যুৎ-ছটার, মরকত-মণির নিকট নির্ম্মণ অর্ণের, মধুকরের নিকট পল্মিনীর, তরুণ তমালের নিকট অর্ণ-যুথি-লতার ও চন্দ্রের নিকট অ্থা-লুক্ক চকোরের অব্যান অসম্ভব নহে, কিন্তু) অঞ্চণের নিকটে পূর্ণচন্দ্র অর্থাৎ শ্রীরাধার স্থ্যক্রপ সিন্দুর্বিন্দুর নিকটে শ্রীক্কচ্ছের চক্রক্রপ খেত-চন্দ্রন-বিন্দুর অব্থান দেখিয়া গোবিন্দ্র-দাস ভক্ক হটয়া রহিলেন।

মলার।১

ভুলে ভুলে রে দোহাঁর রূপে নয়ন ভুলে।
কনক-লতিকা রাই তমালের কোলে।
বাজই বনে বনে শুমই ছক্ত্র।
দোহাঁর কাকে শোভে দোহাঁর বাক্ত।
দীপ সমীপে যেন ইন্দ্রনীল-মণি।
জলদে জড়ায়ল যেন সৌদামিনী॥
ক্ষিতে ক্ষিল নহে কুন্দ্রন হেম।
ভূলনা দিবারে নাহি দোহাঁকার প্রেম ।
আলিজন দিয়া শ্রাম কিবা ধন মাগে॥
চান্দ উপরে চান্দ পিয়ে রস-স্থধা।
গোবিন্দ দাস কহেনা ভাজিল কুষা॥৪॥৬৪৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১২৫ সংখ্যক পদ। ২। 'তমাল' ক, ঘ। ৩-৪। 'ত্হাঁর' ক। ৫। 'কুন্দল' প-র-সা। ৬। 'দিবারে নাহি' ছলে 'দিবার নাহি' ক, চ; 'দিবারে নাই' খ, ঘ। १। 'ত্হাঁকার' ক; 'দোহাঁর' খ, ঘ; 'রাধাকাছর' প-র-সা।

টীকা

৭—৮। "ক্ষিতে" ইত্যাদি। (প্রীরাধাক্ষের প্রেমের সহিত তুলনা দিবার গন্ত)
বিশুদ্ধ অর্প কষ্ ক্রিতে (যাইয়া) কষ্ ক্রার
বোগ্য হইল না; উভয়ের প্রেমের তুলনা দিবার
(উপযুক্ত বস্তু) নাই।

এীরাগ।

আজি বড় শোভা রে মধুর রুন্দাবনে।
রাই কান্ম বসিলা রতন সিংহাসনে॥
হেম-নিরমিত বেদা মাণিকের গাঁথনা।
তার মাঝে রাই কান্ম চৌদিগে গোপিনা॥
একেক তরুর মূলে একেক অবলা।
মেঘে বেচল যেন বিজুরীক মালা॥
নব গোবোচনা গোরী কান্ম ইন্দীবর।
বিনোদিনা বিজুরী বিনোদ জলধর॥
কাঁচ বেড়া কাঞ্চনে কাঞ্চন বেড়া কাঁচে।
রাই কান্ম দুহুঁ তন্ম একই হইয়াছে ॥
রস-ভরে দুহুঁ জন হইলা বিভোর।
দাস অনস্থে কহে না পাইলুঁ ওর॥৫॥৬৫০॥

পাঠান্তর

১-২। 'বেঢ়া' ঘ। ৩। 'একই হইয়াছে' স্বলে 'এক হৈয়া আছে' ক।

ভৰা রাগ ৷১

কন্দৰ্প তাল।

রাই-অল-ছটার উদিত ভেল দশ দিশ
শ্রাম ভেল গৌর-আকার।
গৌর ভেল সধীগণ গৌর নিকুঞ্জ বন
রাই রূপে চৌদিগে পাধার।

গোর ভেল শুক সারী গৌর ভ্রমর ভ্রমরী গৌর পাখা ডাকে ডালে ডালে। গোর কোকিলগণ গৌর ভেল বুন্দাবন গৌর তরু গৌর ফল-ফুলে॥ গৌর যমুনা-জল গৌর ভেল জলচর গোর সারস চক্রবাক। গৌর আকাশ দেখি গৌর চান্দ তার সাধী গৌর ভারা বেড়ি লাখে লাখ ॥ গৌর অবনা হৈল গোরময় সব ভেল রাই রূপে চৌদিগ ঝাঁপিত। নরোত্তম দাস কয় অপরপ রূপ নয় ছহু তবু একই মিলিত ॥৬॥৬৫১॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সাপুথির ১১২**৬ সংখ্যক পদ।** ২। 'ছটায়ে' চ। ৩। 'রোপিড' প-র-সা। টীকা

্১—২। "রাই-অঙ্গ' ইত্যাদি। পদকর্ত্তা নবোত্তম দাস "রাই-অঞ্জ-ছটার" ইত্যাদি বাক্যের ইঙ্গিত বারা বুঝাইয়াছেন বে, এরাধার ভাব-কাস্তি-সম্বিত হইরা প্রীক্ষণ অতঃপর বে প্রীগোরাশ-রূপে প্রান্তভূতি হইবেন, এখানে তাহারই পূর্বাভাস স্থাতিত ইইয়াছে। তুশনা কন্ধন,—

"রাধা-ভাব-ছ্যাতি-স্থবলিতং নৌমি ক্বঞ্চস্বরূপম্।" — প্রীরূপগোস্বামীর কড্চা।

क्रम यहिनी।>

মলয়জ-মিলিত যমুনা-জল শীতলং বংশীবট নিরমাণ। নিকটহি নীপ কদপ্ব-ভক্ত কুত্মমিঙ কোকিলা ভ্রমরাণ করু গান॥ তার তলে তিরিভঙ্গ তরুণ-তমাল-তমুণ
বামে রসবতি রাই।

একে নব জলধর কোনের রতন মিশাই॥

হুছাঁ তমু এক মন নিবিড় আলিজন

হুছাঁ জন্য একই পরাণ।
বুহু রামানন্দ ভণে ভুলনা না হুয়ে মনে মনে ক্

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সা পুলির ৩২০।১১২৭ সংখ্যক ও প-র পুলির ৪২।৪৫ সংখ্যক পদ। 'করুণ হছিনী' শব্দ-বন্ধ প-র পুলিতে নাই। ২। 'স্থা-তল' খ, য়, চ, প-র; 'কুলতট' প-র-সা। ৩। 'কোকিলা ভ্রমর' য়; 'ভ্রমরা ভ্রমরি' প-র। ৪। 'তার' ইত্যাদি হলে 'তরুতলে ত্রিভলিম' প-র-সা। ৫। 'বেন' প-র-সা। ৬। 'রসবতী' ক। ৭। 'বামে' প-র-সা। ৮। 'কাঞ্চনে রতন' হলে 'কাঞ্চন বরণে' প-র-সা। ৯-১০। 'দোহ' প-র-সা। ১১। 'ভ্রম্থ' প-র। ১২। 'না হরে' হলে 'নহিল' প-র। ১০। 'বেনে' প-র-সা। (১১২৭ পদ)। 'ভূপনা' ইত্যাদি হলে 'হেনলর মেরর মনে' প-র-সা। ৩২৩ পদ)।

টাকা

৯—১২। "হছ" ইত্যাদি। ছইটি দেহ,
(কিন্তু)মন অর্থাৎ ইচ্ছা এক; গাঢ় আলিদনে
(আবদ্ধ) উভয়ের একই হাদয়; বহু রামানন্দ
কহিতেছেন—উভয়ের তুলনা মনে (উদিত) হয়
না; (ভ্ৰন-মোহন) পঞ্চ-বাণ অর্থাৎ কন্দর্প
(উভয়ের) রূপের নিকট তুচ্ছ।

বিহাগড়া ।১

রাই-কামু-পিরিতির বালাই লৈয়া মরি। ক্ষণে করে আলিক্সন ক্ষণে মুখ-চুম্বন ক্ষণে রাখে হিয়ার উপরি॥ আউলায়্যা২ চাঁচর কেশ করে বহুবিধ বেশ সিন্দুর চন্দন দেই ভালে। মুখচাঁদে দেখি ঘাম আকুল হইয়া শ্যাম মোছায়ই বসন-অঞ্লে॥ मामोगन-करत्र° रेश्टङ চামর লইয়া হাতে আপনে করয়ে মৃত্র বায়। দেখি রাই-মুখ-শশী স্থা ঝরে রাশি রাশি হেরি নাগর অনিমিখে চায়॥ ঐছন আরতি দেখি রাইথের সজল আঁখি বাহু পদারিয়া করে কোরে। ছুছ হিয়ায় ছুছ রাখি হুহু চুম্বে মুখ-শশী ত্বভূঁ-প্রেমে তুর্ভু ভেল ভোরে। শুতল কুমুম-শেজে নিকুঞ্জ-মন্দির মাঝে দোহেঁ দোহা বান্ধি ভুজ-পাশে। আর যত স্থাগণ সভে করে নিরীক্ষণ দূরে র**হুঁ নরোত্তম দাসে**॥৮॥৬৫**৩॥**

পাঠান্তর

১। ইহা প∶র-সা পুথির ১১২৮ সংখ্যক পদ। ২। 'আ'লুয়া' ক ; 'আ'লুয়া' খ, চ, প-র-সা ; 'আ'বাঞা' ঘ। ৩। 'ক'র'ক, ধ,প-র-সা।

श्रृहिनो ।>

অধরে অধর ছকু ধরি।
শুভিয়াকে কিশোর কিশোরী॥
শুকে ভুকে দোঁহে দোঁহা বাদি।
পবন পশিতে নাহি সাদিও॥
চিকুরে চিকুরে এক করি।
শুভিয়াকে তাহারি উপরি॥

রাই-কুচ হিয়ার মাঝারে।
পশিয়াছে শ্রাম-কলেবরে ॥
হিয়ার মাঝারে রৈল পশি ।
নীল-হেমগিরি মাঝে শশী ॥
বলয়া কিকিণী ভাহে লাগে।
ছুহুঁ তমু এক অমুরাগে ॥
চরণে চরণে একাকারে ।
কেবা ভাহা ছাড়াবারে পারে ॥
এক তমু ধরি যদি টানে।
ছুহুঁ ১০ তমু চলে ১০ ভার সনে ১২ ॥
শ্রীরূপমঞ্জরী দেখি হাসে ১০।
শ্রীগুণমঞ্জরী ভার পাশে ॥
অপরূপ ছুহুঁক বিলাসে।
এ যতুনন্দন রসে ভাসে ॥ ১॥৬৫৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪•২।১১২৯ সংখ্যক ও প-র পুথির ৩৯।৪২ সংখ্যক 'কিশোরা' প-র, প-র-সা। ৩। 'সদ্ধি' ক। অতঃপর প-র পুঝিতে 'রাই-কুচ' ইত্যাদি গ্রোক. তৎপরে 'বলয়া কিঙ্কিণী' ইত্যাদি শ্লোক ও তৎপরে 'চরণে চরণে' ইত্যাদি শ্লোক দৃষ্ট হয়। श्वात मावादा' ইত্যাদি স্থলে 'বদন ভ্ষণ পড়ে খদি' প-র-দা। ৫। 'নীল-হেমগিরি' স্থলে 'হেম নীলগিরি' প-র-সা (১১২৯ সং পদ)। ৬। 'বলয়া' ইত্যাদি স্থলে 'কুকুম চলদন ছত্ প-র। १। 'ছব্' ইত্যাদি হলে 'ছটি তমু একু' ইভ্যাদি প-র। ৮। 'এক করি' প-র। ৯। 'পারে' **হলে '**পারি' প-র। 'কেবা' ইত্যাদি হলে 'ৰূপ কেছ নারে লখিবারে' প-র-সা। ১০। 'ছটী' र्ग-त-र्मा; 'आत' १४-त । ১১। 'काहरम' १४-त । ১২। অভ:পর প-র প্রিতে নিম্নলিখিত শ্লোক पृष्ठे रमः स्था,--'व्यव देकद्य कहति बाहेति। हेश करि रात्र नरहती।" > १। 'खेक्रथमक्षती' रेखानि

পংক্তি চারিটির পরিবর্ত্তে প-র পুথিতে নিম্নণিথিত পংক্তি ছইটি দৃষ্ট হয়; যথা,—'ব্রীক্রপমঞ্চরী বৃদি পাশে। এ ষত্নন্দন রুদে ভাগে॥'

ी का

৯—১০। °হিয়ার° ইত্যাদি। (প্রীরাধার জন গাঢ় আলিকন হেতু প্রীক্তকের) হৃদয়ের মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া রহিল; (তাহাতে বোধ হইল, বেন) নীলকাস্ত-মণি ও স্থবর্ণের পর্বতের মধ্যদেশে (প্রীরাধার জন-রূপ) চক্ত-মগুল (বিরাজিত রহিয়াছে!)

क्षांत्र 12

দেখ না তুখানি অস জড়া।
নিকুঞ্জের মাঝেং তমালের গাছেও
কনক-লতায় বেড়া ॥ গ্রুছ ॥
আধ কপালেও চন্দনেরও চাঁদ
আধ কপালেও ভাতু।
আধ নয়ানেও কাজরেরও রেখা
আধ নয়ানে ইন্দ্রধসু ॥১০॥৬৫৫॥
ইতি চতুর্থ-পল্লবঃ।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১১৩০ সংখ্যক পদ। 'কেদার বিহাগড়া' ক, চ, প-র-সা। ২। 'মাঝ' প-র-সা। ৩। 'গাছ' প-র-সা। ৪। 'কপালে শোভে' ক, থ, ঘ, চ। ৫। 'চন্দন' क। । ৬। 'কপালে শোভে' ক, থ, ঘ, চ। १। 'নয়ানে শোভে' ক, থ, ঘ, চ। ৮। 'কাজর' ক, প-র-সা।

টাকা

পদক্ষত গ্রন্থর শেষে "অস্থাদ-প্রকরণে" বৈক্ষব-দাস পল্লব-সমূহের বর্ণনীয় বিষয়ের সংক্ষেপে উল্লেখ করিতে বাইয়া লিখিয়াছেন,—

> "একাদশ পদ তৃতীয়ে চতুৰ্বে সে দশ। স্বয়ংস্ভী সম্পন্ন সম্ভোগাধ্যান রস॥"

"সম্পন্ন" শক্টির সহিত আকার ও অর্থ-গত কিঞিৎ সাদৃষ্ঠ হেতৃই বোধ হয়, লিপিকরগণ প্রান্ধ সর্ক্তিই "সম্প্র-সম্ভোগ' শক্ষ-ব্রের পরিবর্ত্তে ভ্রমবশতঃ "সম্পূর্ণ সম্ভোগ" লিবিয়াছেন; উদ্ধৃত গ্রোকেও সকলগুলি পুথিতেই "সম্পূর্ণ সম্ভোগ" পাঠ দেখা যায়। অবিতীয় বৈষ্ণব রস-শাস্ত্রকার শ্রীরূপ গোঝামী তাঁহার স্থপ্রসিদ্ধ "উচ্ছল-নীল-নবি" গ্রন্থের "সম্ভোগ" প্রকরণে লিবিয়াছেন,—

"দর্শনালিক্সনাদীনামারুক্ল্যারিবেবরা। যুনোক্লাসমারোহন্ ভাব: সম্ভোগ ঈর্ব্যতে॥ মনীবিভিররং মুখ্যো গৌণস্তেতি বিধোদিত:।

ज्व म्थाः।

মুখো। জাগ্রদবস্থায়াং সম্ভোগঃ স চত্রবিধঃ। তান পুৰ্বাগতো মানাৎ প্ৰবাসন্বয়ত: ক্ৰমাৎ। জাতান্ সংক্ষিপ্ত-সংকীর্ণ-সম্পন্নজিমতো বিহু: ॥° অর্থাৎ নায়ক-নায়িকার সন্মিলনাত্মক সজোগ मुका अ (जीन-एक्ट्रन चिविध। जांधनवस्था दय मुका সম্ভোগ হয়, তাহা আবার চতুর্বিধ; উহা যথাক্রমে পুর্ব্বরণা, মান, অদুর প্রবাদ ও অদুর প্রবাদের পরে সজ্বটিত হইয়া থাকে এবং উহাদিগকে যথাক্রমে नःकिश्च, मःकीर्ग, मन्नात्र ও चिक्रमान् किःवा नमृक्ति-मान मरस्राभ वला इत्र ! व्यय्-(मोरकात रव नक्षन ৩ম শাখার ২ পৃঠার পাদ-টাকার উদ্ধৃত হইয়াছে, ভাষার আলোচনা করিলে বুঝা যাইবে যে, নামক-নায়িকা পরম্পরের অদর্শনে অতিশন্ধ উৎক্ষিত না হইলে স্বাভাবিক লজ্জাসকোচ পরিত্যাগ করিয়া স্বয়ং-দৌত্যে প্রবৃত্ত হয় না। স্তরাং স্বয়ং-দৌত্যের স্থলে বে অদুর-প্রবাদ-জনিত বিরহ বর্তমান রহিয়াছে, ইহা অবশ্রই স্বীকার করিতে হইবে; স্থতরাং স্বরং দৌতোর অত্তে সভাটত নারক-নারিকার স**ভো**গকে রস-শান্তাপুসারে 'সম্পন্ন সম্ভোগ' বলিয়া গণ্য করাই नशोहीन स्हेबाट्ड।

অথ রসালস।

তত্বচিত-শ্রীগোরচন্দ্র।

বিভাষ ৷১

শুভিয়াছে গোরাচাঁদ শয়ন-মন্দিরে।
বিচিত্র পালক্ষণ শেজ অতি মনোহরে ॥
আলগে স্বাশ-তমু গোরা নটরায়।
কি কহব অঙ্গ-শোভা কহনে না যায়॥
মেঘের বিজুরী কিবা ছানিয়া যতনে।
কত রস দিয়া বিদি কৈল নিরমাণে ॥
অতি মনোহর শেজ বিচিত্র বালিশে।
বাস্থাদেব ঘোষে দেখে শনের হরিষে॥১॥৬৫৬

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৩১ সংখ্যক পদ।
২। 'শুতিয়াছে গোরাটাদ' হলে 'শুতিয়া আছেন গোর' ঘ, চ। ৩। 'পালক' প-র-সা। ৪। 'আবেশে'ক, চ; 'অলসে' ঘ। ৫। 'কি কহব অক-শোভা' হলে 'কি কব অক্টের শোভা' প-র-সা। ৬। 'কয়'প-র-সা।

टेक बची 15

অকরণ পুন বাল অরণ
উদিত মুদিত কুমুদ-বদন
চমকি চুম্বি চঞ্চরি পদ্ধমিনিকং সদন সাজে।
কি জানি সজনি রজনি ভোরণ
যুখ্ ঘন ঘোষে ঘোরণ
গঙ্গ যামিনি জিত-দামিনি
কামিনি-কুল লাজে ॥
কুছকত হত-শোক কোক

শুক-শারিক-পিকুদ •কাকলি নিধুবন ভরু ওয়াজে । . গলিত, ললিত বসন সাজ মণিযুত বেণি-ফণি বিরাজ উচ-কোরক-রুচ-চোরক>ং কুচ-জোরক>৩ মাঝে॥ তড়িত-জড়িত কলদ ভাতি তুহে^{১৪} স্থাখে শুতি^{১৫} রহল মাতি জিনি ভাদর রস-বাদর পরমাদর শেজে। বরজ-কুলজ জলজ-নয়নি>৬ ঘুমল বিমল-কমল-বয়নি কৃত-নালিশ ভুজ বালিশ আলিস নাহিণ তেজে। ট্টল किर्य चून ध्यू छन কিয়ে রভি-রণে ভেল তুণ শুন্দ সমর মাঝ>> পডল লাজ রতি-পতি জয়ং ভাঙ্গে। বিপতি পড়ল যুবতি-বুন্দ গুরুগণ-গতি কহই২১ মন্দ জगनानम সরসংং-বিরুস রসবভি রসরাজে॥ ২॥৬৫৭॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুণির ১১৩২ সংখ্যক ও প-র পুথির ৩৯।৫২ সংখ্যক পদ। ২। 'পদমিনিক' প-র-সা। ৩। 'পোর' ক, থ, খ, প-র-সা; 'ঘোর' চ। ৪। 'ঘুঘু' ক, চ, প-র সা। ৫। 'ঘোবে ঘোর' ফলে 'ঘোষরে ঘোর' ক; 'ঘোবে ঘোর' চ; 'গভছ ঘোর' প-র-সা। ৬। 'গভো' প-র-সা। १। 'কুছরত' ক, খ; 'ফুকরত' প-র।৮। 'পিক' ক, খ, প-র-সা। ৯। 'ভরি' প-র-সা, প-র। ১০। 'গুলাকে' দ। ১১। 'ক্লিড' খ, ঘ, চ, প-র-সা। ১২। 'উচ-কোরক' ইত্যাদি স্থলে 'উচ
চোরক কৃচ জোরক' প-র। ১৩। 'কুচ কোরক'
পর। ১৪। 'দোহে' ক, ধ, দ, চ, প-র-সা।
১৫। 'স্থেপ শুকি' স্থলে 'স্থেপ' ক; 'শুভি স্থেপ'
প-র-সা। ১৬। 'বরজ-কুলজ' ইত্যাদি পংক্তি
চারিটি থ ও প-র-সা পুথিতে নাই। ১৭। 'নাহি
জো' প-র-সা। ১৮। 'কিয়ে রভি-রণে' ইত্যাদি
স্থলে 'রভিরণে পুন ভই তুণ শুন' প-র। ১৯।
'মাঝে' ধ। ২০। 'ভয়ে' খ, চ। ২১। 'শুক্রগণ' ইত্যাদি স্থলে 'শুক্রজনগণ কহব' প-র।
২২। 'হরস' প-র।

টীকা

১—৪। "অককণ" ইত্যাদি। নিষ্ঠুর নবীন অর্থাৎ প্রভাতকালীন স্থা উদিত (হইরাছে); কুমুদের মুদ্রিত অর্থাৎ সন্ধুচিত বদন (প্রেম-জ্ঞাপন জক্ষ) চমকিতভাবে চুম্বন করিয়া, (মধু-লুক) ভ্রমর পদ্মিনীর আলয়ে অর্থাৎ পদ্ম বনে বিরাজ করিতেছে। 'চমকি' শব্দের ধ্বনি ম্বারা পদ্মিনীর নিকট যাওয়ার জন্ম প্রমরের চঞ্চলতা ব্যক্তিত হইতেছে। অর্থবা মুদ্রিত হওয়ার কালে কুমুদ যদি ভ্রমরকে আটকাইয়া ফেলে, সেই আশক্ষায় ভ্রমর তাড়াতাড়ি প্রস্থান করিতেছে,—ইহাও বুঝা যাইতে পারে।

৫—৮। "কি জানি" ইত্যাদি। হে স্থি!
রক্ষনী ভোর (হইরাছে) জানিয়া কি ঘুখু-পক্ষী
ঘন ঘন গন্তীর ধ্বনি করিতেছে ? যামিনী গত
হইয়াছে; জিত-দামিনী অর্থাৎ অজ-কান্তি দারা
বিহ্যজ্জিয়িনী (অভিসারিকা) রম্নীগণ (লক্ষিত
হওয়ার আশকায়) লজ্জিত হইতেছে।

৯—১২। "কুহকত" ইত্যাদি। (চক্রবাকমিপুন বিধাতৃক্বত নিরমান্সনারে রঞ্জনীতে পরস্পর

হইতে বিযুক্ত থাকিয়া স্র্রোদেরে পুনরায় সম্মিলিত

হয় বলিয়া) বিগতশোক অর্থাৎ শোক-অবগানে
প্রক্ল চক্রবাক ডাকিতেছে; এখন সকল লোকই
ভাগিবে; শুক, শারিকা ও কোকিলের ক্লথবনি

ষারা নিধুবন আওয়াজ অর্থাৎ নিনাদে পরিপূর্ণ হইতেছে।

১৩—১৬। "গলিত" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা ও শ্রীক্ষের) স্থন্দর বদন অঙ্গ হইতে এই হইয়া (শ্বাার) শোভা পাইতেছে; (শ্রীরাধার) মণি-মুক্ত বেণীক্ষপ ফণী উন্নত (কমলের) কোরকের কাস্তি-অপহরণ-কারী কুচ-মুগলের মধ্যস্থলে বিরাজিত হইতেছে। 'মণিযুত' ইত্যাদি বাক্যের তাৎপর্য্য এই বে, শ্রীরাধার মণিগ্রাধিত উন্মুক্ত কুষ্ণ-বেণী উহার স্তন্দরের মধ্যে পতিত হওয়ায় বোধ হই-তেছে যেন, মণিধারী একটি কুফা-সর্প কমল-কোরক-দরের মধ্যে শোভা পাইতেছে। পদ্মবন সর্পের প্রির বাস-স্থল বলিয়া প্রাসিদ্ধ বটে। তুলনা কঞ্চন,—

> "উর পর সামরি বেণী। কমল-কোষ-পর কাবি নগেনী॥

> > —বিদ্যাপতি।

১৭—২০। 'বরকা' ইত্যাদি। বেজ-কুলজাতা জলজ-নরনা অর্থাৎ নীলোৎপল-নেত্রা পদ্মন্থী (শ্রীরাধা) মুমাইরাছেন; (তাঁহার) ক্ত-নালিশ (কৃত হইরাছে নালিশ থংকর্ত্ক) অর্থাৎ অভিযোগকারী ভূক বালিশ ও আলম্ভ অর্থাৎ বতি-বিমর্দ-জনিত অবসাদ পরিত্যাগ করিতেছে না। ('কৃত-নালিশ' শব্দের ঘারা ইহা ব্যক্তিত হইয়া, অবসাদ হেতু আলিজনের অসামর্থ্য প্রকাশ করিয়া শ্রীকৃষ্ণের নির্দিষ সন্তোগের প্রতি দোষারোপ করিতেছে।)

২১—২৪। "টুটল" ইত্যাদি। ঘুণ (কটি)
কি (কলপের) ধছন্ত পকে ছিন্ন করিনাছে ? কিংবা
রতি-বৃদ্ধে (কলপের) তৃণ শৃত্ত হইনাছে ? (প্ররতরূপ)
বৃদ্ধের মধ্যে রতি-পতি অর্থাৎ কলপ কিংবা স্থরতের
অধিষ্ঠাতৃ-দেবতা (নিরস্ত্র হওরার) লজ্জার পড়িল
এবং (পরাজিত হওরার) ভরে পলায়ন করিল।

২৫---২৮। "বিপতি" ইত্যাদি। (অভি-সারিক।) ব্বতী-সমূহ বিপদে পতিত হইল অর্থাৎ বাইবে, কি থাকিবে, ছির করিভে না পারিয়া ক্ষাক্ষরে পজিল; (তাহারা) গুরু-ক্ষনের গমনা-গমন স্বব্ধে চুপে চুপে বলাবলি ক্রিতে লাগিল কিংবা গুরুক্ষনের মন্দ চরিত্র স্বব্ধে বলাবলি ক্রিতে লাগিল। জগদানন্দ (বলিতেছেন) রস্বতী শ্রীরাধা ও রসরাক শ্রীক্রক্ষ সরস-বিরস্কর্থাৎ সানন্দের অবস্থার নিরানন্দ ইইলেন।

সারীশুকোক্তি যথা।

বিভাগ 13

রাই জাগ রাই জাগ শারী শুকং বলে।
কত নিদ্রা যাও কালামাণিকের কোলে॥
রজনী প্রভাত হৈল বলিয়ে তোমারে।
অরুণ-কিরণ দেখি প্রাণ কাঁপে ডরে॥
শারী বোলে শুন শুক গগনে উড়ি ডাক।
নব-জলধর আনি অরুণেরে চাক।
শুক বলে শুন শারি আমরা পশু পাখী।
জাগাইলে না জাগে রাই ধরম কর সাখী॥
বংশীবদনে বলে চাঁদ গেল নিজ ঠাঞি।
অরুণ-কিরণ হবে উঠি ঘরে যাই॥॥॥৫৫৮॥

পাঠাম্বর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১০০ সংখ্যক পদ।
২। 'শুক শারী' ক, খ। ৩। 'হইলে' ঘ।
৪। 'হেরি' ক, খ। ৫। 'রাই কাছু' প-র-সা।
৬। 'পশু-পাথী' স্থলে 'পোষা-পাথী' প-র-সা।
१। 'ধর্ম' প-র-সা। ৮। 'বংশীবদনে বলে' স্থলে
'বিভাপতি কংহ' ক, খ, ঘ, চ।

ৰঙ্গীয় বৈষ্ণৰ কৰিদিগের সৃষ্ণ নি বিদ্যাপতির পদাবলির ভাষা যে কারণেই হউক, অরাধিক পরি-মাণে বলীকৃত হইরা থাকিলেও প্রায় কোন স্থলেই এরপ থাঁটি বালালার রূপান্তরিত দেখা বার না। বিদ্যাপতি যে খাঁটি বালালার পদ রচনা করিবাছেন, ভাহারও কোন প্রমাণ নাই; সেরুপ করিলে অস্তঃ বলদেশে ভাঁহার সেই বালালা পদগুলি অধিক পরিমাণে পাওরা বাইবার কথা ছিল; কিন্তু এরূপ পদ ছই চারিটির অধিক পাওরা বার নাই। স্বভরাং প-র-না পুথির প্রমাণ অন্ত্সারে এই খাঁটি বালালা পদটি বংশীবদনের রচিত বলিয়া গ্রহণ করাই সঙ্গত বিবেচনা হয়। পদ-রদ-সার পুথির সক্ষণিয়িগুলিমানন্দ দাস এই পদটির ভাষা-দর্শনে শুধু অন্থ্যানের উপর নির্ভ্র করিয়া, ইহা বিদ্যাপতির রচনা নহে বলিয়া স্থির করিয়াছেন, এরূপ বোধ হয় না; কেন না, আমরা পদ-রদ-সার পুথিতে বিদ্যাপতির ভণিতাযুক্ত নিয়লিখিত নুতন খাঁটি বালালা পদটিও পাই-য়াছি; যথা,—

"ধিক্ ধিক্ নিঠুর কালিয়া
তানবি বচন মোর।
দেহের গঠন মনের মরম
এবে সে জানিলাম তোর॥
সে রাধা বিহনে শরনে সপনে
বদনে না ছিল আন।
যাহার চরিত্র পদাবলি করি
বালীতে করিছ গান॥"—ইত্যাদি

প-র-সা, ১০১০ সংখ্যক পদ।
স্থতরাং পদকল্লতকর ক, ও প্রভৃতি পৃথিগুলির
"বিদ্যাপতি কংক" স্থলে নিমানল দাস বে "বংশীবদনে
বলে" পাঠ গ্রহণ করিলাছেন, উহার মূল অবশ্রই
কোন প্রাচীন হস্তলিখিত পৃথি ছিল, এরপ অমুমান
কলাই সক্ষত বোধ হয়।

তথা রাগ।১

প্রাণনাথ কি আজু হটল।
কেমনে যাইব ঘরে নিশিং পোহাইল॥
মৃগমদ চন্দন বেশ গেল দুর।
নয়ানের কাজর গেল সিঁথার সিন্দুর॥
বতনে পরাহ মোরে নিজ অভরণ।
সল্পে লৈয়া চল মোরে বিজ্ঞান-লোচন॥

ভোমার পীত-বাস স্থামারে দাও পরি।
উভ করি বান্ধ চূড়া আউলায়া। কবরী ॥
তোমার গলের বনমালা দাও মোর গলে।
মোব প্রিয় স্থা কৈয় স্থাইলে গোকুলে ॥
বস্থ রামানন্দ ভণে এমন পিরিতি।
ব্যাস্থ-ইরিণে যেন তোমার বসতি ॥৪॥৮৫৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৩৪ সংখ্যক পদ।

২। 'রজনি' ঘ। ৩। 'দেহ' ক, খ, প-র-সা।

৪। 'এলাঞা' ক; 'এল্যায়া' থ; 'এল্যাইয়া'

য়, চ; 'আউলাই' প-র-সা। ৫। 'গলার' ক,

প-র-সা। ৬। 'দেও' ক, খ, প-র-সা। ৭।
'কইয়' ক; 'বৈল' প-র-সা। ৮। 'সোধাইলো'

য়, চ। ৯। 'বেন রাই' ক, খ, চ, প-র-সা।

ঢ়ীকা

>•। "মোর" ইত্যাদি। গোকুলে কেছ (এটিকে?) জিজ্ঞাদা করিলে, বলিও—(এটি) আমার প্রিয় দগা।

">—>২। "বেম্ব" ইত্যাদি। বন্ধ রামানন্দ বলেন—এরপ প্রেম (হে গ্রীরাধে!) ব্যান্থ ও হরিণ বেরপ এক স্থলে বসতি কন্দে—(গুরু জনের সৃহিত) তোমার বসতিও দেইরূপ! 'ব্যান্থ-হরিণে' শব্দটি ক্রিয়া-বিশেষণ; ইহা 'অহি-নকুল' ইত্যাদি শব্দের ক্রান্ত দেশসমাস শারা নিম্পন্ন হইরাছে।

তথা রাগ ।১

নিজ নিজ মন্দির

ছহুঁ ছুহাঁ বদন গনেহারি।

অন্তরে উয়ল

শেষন গলয়ে ঘন বারি॥

মাধব হামারি বিদায় পায়ে ভোরঃ।
ভোহারি প্রেম সঞ্জে

অব দরশন নাহি মোয়ং॥ এছ ॥

নেহারিতে তুত্ তুহাঁ কাতর নয়নে উপলল প্রেম-তরক। মুক্তছল রাই মুক়ছি পড় মাধৰ কবে হবে তাকর° সজ॥ ললিতা সুমুখি হুমুখি করি ফুকরভ রাইক কোরে আগোর। কামু করি ফুকরত সহচরি কাস চরকভ লোচন -লোর॥ কতি গেও>• অরুণ-কিরণ-ভয় দাঞ্ কতি গেও>> লোকক ভাত। অবভূ১২ নাহি সম্বল মাধব ঘোষ

উদভট মুগধ চরীত্যুও ॥৫॥৬৬০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১১৩৫।১৫৩৪ সংখ্যক পদ। ২। 'মন্দিরে' চ, প-র-সা। ৩। 'ছই ছইা বদন' হলে 'ছই' মুখচানন' ক; 'নোইে দোইার বদন' খ। ৪। 'ডোর' ক। ৫। 'নোর' ক। ৬। 'দোহেঁ দোইা' খ, ঘ, চ; 'ছছ দোহা' প-র-সা। ৭। 'সোরস' প-র-সা। ৮। 'ফুক-রই' প-র-সা। ৯। 'লোচনে' প-র-সা। ১০-১১। 'গিঙ' প-র-সা। ১২। 'এডেই' ক, খ, ঘ, চ। ১৩। 'চরিড' ক, খ, চ, প-র-সা।

টাকা

৫-- १। "মাধৰ" ইত্যাদি। (খ্রীরাধা কহি-

লেন) হে মাধব। তোমার চরণে আমার বিদার (চাহিতেছি); তোমার প্রেম হইতেই অর্থাৎ তোমার প্রেমের আকর্ষণেই (আমি) পুনরার (তোমার চরণের নিকট) চলিরা আসিব; এখন (তোমার চরণের) দর্শন আমার ভাগ্যে নাই। ১২—১৫। "ললিতা" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা ও শ্রীকৃষ্ণ উদ্ভরে মুদ্ধিত হইলেও) ললিতা শ্রীরাধাকে ক্রোড়ে জড়াইরা ধরিরা 'ক্ষরি! ক্ষম্বি।' বলিবা ডাকিতে লাগিলেন; (সেইরপ) শ্রীক্তকের সকে সমাগতা দৃতী 'কাম ! কাম !' বলিয়া ডাকিতে লাগিলেন; তাঁহাদিগের নমনের অঞ্চ-জন ধারা বহিয়া যাইতে লাগিল।

তথা রাগ ৷১

কত্ত্যতনে তুত্ निक निक मिलिएत বিমনহি করত পয়ান। তুত্ক নয়ন গল প্রেম-বিচেছদ-জল দারুণ দৈব বিহান ॥ দেখ রাধামাধ্ব-প্রেম। এছন ঘটন কতিছাঁ নাহি॰ হেরিয়ে যৈছন লাখবান তেম॥ এ ॥ পদ আধ চলত খলত পুন ফারতং কাতরে নেহারই মুখ। একই পরাণ দেহ পুন ভিন ভিন অত্যে সে মানয়ে**৬ দু**খ ॥ তিল এক বিব্নহ কলপ করি মানই গায়ই তুহুঁ পরসঞ্। ঐছে গান গুণ ভণ রাধামোহন

পাঠান্তর

যতনহ সো রস-ভঙ্গ ॥৬॥৬৬১॥

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১১৩৬ সংখ্যক পদ। ২। 'বিষ্টন'প-র-সা। ৩। 'না' ক,খ,প-র-সা। ৪।ক,খ,ঘ,চপুথিতে 'শ্রু' নাই। ৫। 'গিরভ' ক,খ; 'ফিরত'প-র-সা। ৬। 'মানিরে' খ।

है का

১২—১৫। "ভিল" ইত্যাদি। এক ভিলের
পরিমাণ বিরহকে কর অর্থাৎ বুগ-পরিমিত বলিরা
মনে করিতেছেন; উভরে (উভরের) প্রানদ অর্থাৎ
কাহিনী কীর্ত্তন করিতেছেন; রাধামোহন কছেন—
এক্রণ অংশ-কীর্তনে (সংশীদিগের) বত্বেই সেই রসের
ভদ্দ হইল।

বিভাব ।১

নিজ নেজি মস্পিতের করল পরান।
শারন করলং পুন কোই না জান।
জাকপট প্রেমাক° বন্ধ।
তুরজান-সকল-নেখন⁸ করু সান্ধ।
প্রাতর-উচিতি° করণ করু রাই।
তেজাল বিপরিতি° বসন তুমু লাই°॥৭॥৬৬২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৩৭ সংখ্যক পদ। ২। 'করণ' ক। ৩। 'প্রেমকি' প-র-সা। ৪। 'গ্র-জন-' ইভ্যাদি ক, চ; 'গ্র-জন-নয়ন-সকল' প-র-সা। ৫। 'প্রোভর-উদিত' ক; 'প্রাভ-উচিত' ধ। ৬। 'বিপরীত' ক, ধ। ৭। 'নাই' ক, চ।

ক পুথি ও তদম্বাদী বটতলার মুদ্রিত গ্রন্থে 'নিজ মন্দিরে ধনি' ইত্যাদি পরবর্তী পদটি এই পদের শেষাংশ-রূপে লিখিত হইয়াছে; উহা সঙ্গত বলিয়া বোধ হয় না; কারণ, পদ ছইটির বর্ণনীয় বিষয়ের মধ্যে পার্থক্য আছে; বিশেষতঃ 'নিজ মন্দিরে ধনি' ইত্যাদি পংক্তিগুলৈকে শ্বতন্ত্র পদ গণ্য না করিলে এই পল্লবের নির্দিষ্ট পদসংখ্যা হইতে একটি পদ কম পড়ে।

টাকা

৩—৪। "অকপট" ইত্যাদি। অক্তরিম প্রেমের বন্ধন (এই প্রকার) বে, (উহা) ছজ্জন-সমূহের নয়ন আরু করিরা রাথে অধাৎ অহ্বরাসের আজিশব্যে নারক ও নারিকা প্রেমার হইরা ছ্র্জ্জনগণ বে তাঁহা-দিগের গতিবিধি লক্ষ্য করিতেছে, তাহা অগুমারও আছে করে না। (বস্তুতঃ নারক ও নারিকা প্রেমার হইলেও, তাহাতে বথন তাঁহাদিগের অন্ধ্রনার হলৈও, তাহাতে বথন তাঁহাদিগের অন্ধ্রনার করেনা এবং বধন ছ্র্জ্জনেরা চন্দ্র সন্থেও তাঁহাদিগের গমনাগমনের কোন ব্যাঘাত জন্মেনা এবং বধন ছ্র্জ্জনেরা চন্দ্র সন্থেও তাঁহাদিগের গমনাগমনের কোন ব্যাঘাত জন্মাইতে পারে না, তথন প্রেমিক-মুগলকে আরু না বলিরা

ছৰ্জনগণকে প্ৰেমের শক্তি ছারা আৰু বলিরা বর্ণিত করিরা পদকর্তা ঐকান্তিক প্রেমের আচিন্তনীর মহিমাই ব্যক্ত করিয়াছেন)।

e—৬। "প্রাতর-" ইত্যাদি। (তথন) শ্রীরাধা প্রাতঃকালের উচিত কার্য্য সম্পন্ন করিলেন (এবং) অঙ্গে (নিজের) বস্ত্র ধারণ করিয়া, (রক্ষনীতে সম্ভোগ-অন্তে শীক্তম্বের সহিত পরিধের বল্লের পরি-বর্ত্তন হওয়ায়) বিপরীত অর্থাৎ পরিবর্দ্ধিত (পীত-বর্ণ) বন্ধ পরিত্যাগ করিলেন। 'বসন তমু লাই' বাক্যের ধ্বনি ধারা পদ-কর্ত্তা ইহাও বুঝাইতেছেন যে, ঐ পীত বসন শ্রীরাধার অঙ্গকান্তির সহিত মিশিরা যাওয়ার এতকণ জীরাধার অঙ্গে ঐ বসনের অভিছ বুঝা যায় নাই; এখন তিনি নিজের প্রিয় স্থনীল বসন ধারণ করায় বসনের অভিত পরিক্ট হইল। ঐ বাক্য ধারা ইহাও ব্যঞ্জিত হইতেছে বে, প্রীরাধা পীত বদনের পরিতাাগ ছারা নারীজাতির প্রধান ভূষণ লজ্জাকে রক্ষা করিয়া ও সুনীল-বসনের ধারণ হারা অপুর্ব ক্ষ-প্রীভির পারচয় দিয়া, তাঁহার ভাষ উত্তমা নামিকার উপযুক্ত প্রভাত-ক্লভাই সম্পন্ন ক্রিলেন।

धाननी ।>

নিজ মন্দিরে ধনি বৈঠলি স্থি মেলিং।
ক্ষত্তি পিয়া-গুণ রজনিক কেলি॥
ভাবে অবশ ধনি পুলকিত অক্স।
গদ-গদ কহে কড বচন-বিভজ্জ॥
নয়নে বহয়ে জল কাঁপয়ে শরীর।
ঘামে ভিগল সব অরুণিম চীর॥
কত কত ভাবং বিথারল রাই।
কহিতে না পারে ধনি প্রেম অবগাই॥
বৈরজ্জ ধরি ধনি কহয়ে বিলাস।
প্রেম-অনুক্রপ কহই কাসু দাস॥॥৮॥৬৬৩॥

इंडि शक्तम-शहरः।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৯৮ সংখ্যক পদ।
'ধাননী' হলে 'ঘথা' প-র-সা। ২। 'নিজ মন্দিরে
ধ'ন' ইত্যাদি পংক্তিটিতে ছইটি মাঝার আধিক্য
লক্ষিত হয়; 'নিজ' শক্ষটি পরিত্যাগ করিলে সহজেই
এই মাঝাধিক্য নিবারিত হইতে পারে; কিন্তু
সকলগুলি পুথিতেই 'নিজ মন্দিরে' ইত্যাদি পাঠ
ধাকার আমরা অগত্যা ধ্থাদৃষ্ট পাঠই গ্রহণ করিতে
বাধ্য হইয়াছি। ৩। 'কাঁপে' চ। ৪। 'ভাবে'
ব, ঘ।

টীকা

৫—৬। "নম্বনে" ইত্যাদি। (ঐীরাধার)
নম্মনে (সাত্মিক-ভারের বিকাশ হেতু) জলধারা
বহিতেছে, শরীর কম্পিত হইতেছে (এবং) ঘর্মাজলে লোহিতাভ বসন সিক্ত হইল। (ঐীরাধার
নীলাভ বসন ঘর্মা-জলাত্র হইয়া অক্সের সহিত মিশিরা
বাওয়ায় উাহার ভপ্ত-কাঞ্চন-বর্ণের প্রভাবে
লোহিতাভ প্রতীত হইতেছে—ব্বিতে হইবে)।

व्यथ तरमानगातः।

ভছ্চিত-পূৰ্ব্বাপর-কীর্ত্তনামুদারেণ শ্রীমদেগারচন্দ্রঃ।

বিভাব।>

মহাভুক্ত নাচত চৈতন্ম রায়।
কৈ জানে কত কত ভাব শত শত
সোণার বরণ গোরা-গায় ॥ গ্রু ॥
প্রেনে চর চর অঙ্গ নিরমল
পুলক-অঙ্কুর-শোভা ।
ভার কি কহব অশেব অনুভব
হেরইতে জগ-মন-লোভা ॥

শুনিয়াও নিজ-গুণ নাম-কীর্ত্তন বিভার নটন-বিভাল ।

নদিয়া-পুর-লোক পাসরিল তুখ শোক
ভাসল ২ প্রেম-ভরঙ্গ > ॥

রভন বিতরণ প্রেম-রস বরিখণ ২২
অখিল ভুবন সিঞ্চিত ১৩ ।

ভৈত্যদাস গানে ২৪ অতুল প্রেম-দানে ২৫
মুঞ্জি সে ২৬ হইলুঁ বঞ্চিত ॥১॥৬৬৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৩৯ সংখ্যক ও

প-র পুথির ১৩।২০ সংখ্যক পদ। ২। 'মহাপ্রভূ' প-র-সা। ৩। 'গোরা-গার' হুলে 'গার' প-র। ৪। 'অঙ্কুর' হুলে 'অঙ্কের' প-র। ৫। 'অশেষ অফুডব' হুলে 'অশেষামুভাব' প-র-সা; 'বিশেষ অফুডব' প-র। ৬। 'গুনি' ক। ৭। 'সংকীর্ত্তন' প-র। ৮। 'বিভোর' ইত্যাদি হুলে 'লুটত বিভোর অঙ্কে' প-র। ৯। 'নিদরা-পূর-লোক' হুলে 'নিদরার সব লোক' প-র। ১০। 'ডুবল' প-র। ১১। 'ভাসল' ইত্যাদি হুলে 'ভাসল প্রেম-ভরক্লে' প-র। ১২। 'রতন' ইত্যাদি হুলে প-র পুথির পাঠ ষ্থা,—

'করুণা নির্থনে অমিয়া বরিধনে'। ১৩। 'সঞ্চিত'

প-র-সা। ১৪। 'বাফ্লেব বোব' প·র। ১৫। 'অভূল' ইত্যাদি স্থানে 'আওল প্রেমদানে' কঃ

'আতুল' ইত্যাদি চ; 'তুলনা নাহিক আনে' প-র।

১৬। 'মূঞি সে' স্থলে 'মূঞি মাজ' প-র।

তথা স্থাপ ।১

অবতার ভাল গোরাস অবতার কৈলাই ভাল।
জগাই মাধাই নাচে বড় ঠাকুরাল।
চাঁদ নাচে স্কুল্ল নাচে আর নাচে ভারা।
পাতালের বাস্থিকি নাচে বলেই গোরা গোরাই।
নাচয়ে ভক্তগণ হইয়া বিভোরা।
নাচে অকিঞান যত প্রেমে মাতোরারা।

জড় অন্ধ আঙুর উদ্ধারে পতিত। বাস্থ ঘোষে কছে মুঞি ইইলুঁ বঞ্চিত॥২॥৬৬৫॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১১৪০ সংখ্যক পদ। ২। 'কৈল' ক। ৩। 'বলি' ক; 'বোলে' চ। ৪। 'গোরা গোরা' হুলে 'গোরা' ধ। ৫। 'অডুর' ঘ,চ; 'অডুরাদি' প-র-সা।

धाननी ।>

কছ কহ স্থল্দরি রজনি-বিলাস। কৈছনে নাহ পুরল তুয়া আশং॥ কত্ত্ত্যভনে বিভি করি অমুমান। নাগর নাগরি করুত নির্মাণ ॥ অধিল ভূবন মাহা ভুছ বর-নারি। আজুক রজনি কিয়ে কয়ল মুবারি⁸। পিয়াক পিরিতি হাম কহই না পার । লাখ বদন বিহি না দিল হামার ॥ আপনক গজ-মোত্তি-হার উতারি"। যভনে পরায়ল ১০ ককে ভামারি॥ করে ধরি পিয়া বৈসায়ল নিজ কোর । স্থান্ধি চন্দন অকে লেপল মোর। ফুয়ল কবরি বান্ধয়ে অমুপাম। ভাহে বেড়ি^{১৩} দেয়ল^{১৪} চম্পক-দাম॥ মধুর মধুর দিঠে হেরই কান। আনন্দ-জলে পরিপুরল নয়ান[ে] ॥ ভণয়ে বিস্থাপতি ভাব-তরঙ্গ' এবে কছি শুন স্থি সোপরসঙ্গণ ॥৩॥৬৬৬॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১৪ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৩।৪৪ সংখ্যক পদ। 'ধাননী' হলে 'বিভাব' প-র। ২। 'কৈছনে' ইত্যাদি পংক্তির স্থলে 'কৈছে পুরণি ভূছা নাহক আন' ধ, ব, প-র-সা। 'পিরাক পিরিতি হাম কহই না পার' ইত্যাদি উদ্ভর দর্শনে 'কৈছনে নাহ পুরল' ইত্যাদি প্রশ্নই সসকত হয়; স্তরাং ক, চ ও প-র পুথির পাঠই শুদ্ধ বলিয়া গুহীত হইহাছে। ৩। 'কয়ল' ক, খ, খ, চ। ৪। 'আজুক' ইত্যাদি স্থলে 'প্ৰপুক্ৰ নাহ তোছে মিলল মুরারি' ক, (পাঠান্তর—চ)। 'কতত্ যতনে' ইত্যাদি পংক্তিচতুষ্ট্য পার পুথিতে নাই। ক পুথিতে অতঃপর 'শ্রীরাধিকার উক্তি যথা' লিথিয়া 'পিয়াক পিরিভি' ইত্যাদি বাকি অংশটিকে একটি স্বত্ত্র পদ-রূপে সরিবেশিত করা হইয়াছে; কিন্তু পদাস্ত-সমুদ্রের টাকায় রাধামোহদ ঠাকুর লিথিয়াছেন,— "পুনন্তজ্ৰদকণনাবহিত্থামবল্যা 'অধিল জুবন মাহা তৃত্ব বর নারি' ইত্যাদি চরণত্তমেশ পুন: পৃচ্ছতি ততঃ শ্ৰীমতী 'পিয়াক পিরিতি হাম কহই না পারি' ইত্যাদি-না প্রত্যুত্তরং করোতি।" ইহা দারা ও ক পুণি ছাঙা অন্তান্ত পুথির প্রমাণামুদারে 'পিয়াক পিরিডি' ইত্যাদি পংক্তিগুলি এই পদটিরই শেষাংশ বলিয়া काना बाहेरजहा । । 'कहिरज' क, थ। ।। 'পারি' প-র। १। 'বয়ন' প-র-সা, প-র। 🗷। 'হামারি' প-র; 'আমার' ব, চ। । 'আপনক' ইত্যাদি হুলে পর-দা ও প-র পুথির পাঠ যথা,—'আপন মালতী মালা হিয়াদে উভারি।' ১০। 'পড़াওল' क, थ, প-র। ১১। 'देरनात्रन' ইত্যাদি স্থলে 'মোর বসায়ল কোর' প-র-সা। ১৩। 'বেড়ি' 🕶। ১২। 'লেপই' প-র-সা। > । '(विष् (नम्रन' इटन '(विष्ममन' প-त्र-ना, প-র।১৫। 'আনন্দললে' ইত্যাদি স্থলে প-র-সা ও প-র পুথির পাঠ ধ্বা,—'দেখিতে দেখিতে মানে 'ভাব-তরল' স্থলে 'ইহ স্পন স্মান'। ১৬। त्रम मक्त' भ-त्र । ১१। 'এবে कहि' हेजानि च्रान প-স ও পার পৃথির পাঠ ষ্থা,—'ভূলল ধনি কহইতে নিশি রঙ্গ'।

शांकांत्र १३

চিরুণি করে ধরি কেশ-বেশ করি मिँथारय (एडे शिन्पुद्र । নাস-বেশ করি বসন পরাহই° পায়ে ধরি পরায়ে নুপুর॥ সই পিয়া-গুণ কহনে না যায় । দরিদ্রও হেম যেন িলেক না ছোডই রভদে রজনি গোঙায়॥ ধ্রু : সে মার প্রমঞ্জল আঁচরে মোছই (पट्टे वमनक वार्वे। চিবুক করে ধরি সঘনে নিরখই মুখ ভরিণ্ণ তান্ত্র খাওয়ায়॥ বৃন্দাবন ভরি রসের বাদর पिन त्रक्रनी[>] नाहि कान। কুপণ ধন সম তিলেক না ছোড়ই ক্ৰি শেখর ১৪ প্রমাণ ১৪॥ ১৬৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১২২ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৩৪৬ সংখ্যক পদ। 'গান্ধার' ফ্লে 'শীগান্ধার' প-র। ২। 'সিথায়ে দেই' ফ্লে 'সিথারে দেই' প-র। ৩। 'পরাইয়া' প-র-সা। ৪। 'সোই' ক, খ, ঘ, চ। ৫। 'কহনে না যায়' ফ্লে 'কহনে যায়' খ। 'সই পিয়া-গুণ' ইত্যাদি প্রকক্ষিটি প-র পুথিতে নাই। ৬। 'দারিজ্ল' খ, চ, প-র-সা। ৭। 'হাড়ই' ক; 'তেজই' প-র-সা। ৮। 'সো' ক, খ, ঘ, চ। ৯। অতঃপর প-র পুথিতে 'চিবুক করে ধরি' ইত্যাদি পংক্তি হয়টির পরিবর্জে পাঠ হথা,—

'মৃণাল চম্পাক- দাম সম তত্ত্ব হিরা বিজু শেকো না শোরার ॥ চিবুক করে ধরি মুখ নির্থিতে বে কিছু কর্বে মধুর।

± '

নিরস বরান হৈরি দিব্য দেই বন্ধ মুধ ভরি থাওরারে তাত্ম ॥'

ইহার পরে কিছু স্থান ভণিতার জ্ঞার কাঁকে রাধা হইরাছে। ১০। 'চিবুক' ইত্যাদি স্থলে প-র-সা প্থির পাঠ ষথা,—

'জধর নিরস গেরি দিব্য দেই বেরি বেরি'

>>। 'মুথ ভরি' স্থলে 'মুথে ভূলি' প-র-সা।

>>। 'বাদর' স্থলে 'বাদর করি' প-র-সা। ১৩।
'দিন রজনী' স্থলে 'দীন রজনি' ঘ। ১৪। 'কবিশেখর' স্থলে 'রার শেখর' প-র-সা।

কৌ রাগিণী।>

না পুচ না পুছ সথি পিয়াক পিরিতং।
পরাণ নিছনি দিলে না হয় উচিতং ॥
হিয়ার উপর হৈতে শেজে না ছোয়ায়ং ।
বুকে বুকে মুখে মুখে রজনি গোঙায় ॥
নিঁদের আলসেং যদি পাশ মোড়া দিয়ে ।
কি ভেলং কি ভেলং বলি চমকি উঠয়ে ॥
হিয়ায় হিয়ায় এক বয়ানে বয়ানে ।
নাসিকা নাসিকায়ং এক নয়ানে নয়ানেং ॥
ইপে যদি মুঞি ভেজি দীঘ নিশাসং ।
আকুল হইয়া পিয়া উঠয়ে তরাস ॥
এমতি বঞ্চিয়ে নিশি দোহেঁং এক মেলি।
ভ্ঞানদাস কহে এছে নিহি নিতি কেলি॥৫॥৬৬৮

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৪০ সংখ্যক পদ।
২। 'পিরীড' ক, খ, চ; 'পিরিডি' প-র-সা।
৩। 'উচিডি' প-র-সা। ৪। 'শোরার' ক;
'ছুরার' খ। ৫। 'ঝালিসে' খ, চ; 'অলসে'
প-র-সা। ৬-৭। 'হৈল' প-র-সা। ৮। 'বরার'
ক, চ, প-র-সা। ৯। 'নাসিফা' প-র-সা।
১০। 'নরার' ক, চ, প-র-সা। ১১। 'ডেজি

দীং নিশাস' ছলে 'তেজিয়ে দীরং নিশাস' ক। 'ইথে যদি' ইত্যাদি পংক্তিমর প-র-সা পুথিতে নাই। ১২। 'ছুহেঁ' ক; 'ছুহু' প-র-সা।

টাকা

৩-৪। "হিয়ার" ইত্যাদি। (আমাকে)
বুকের উপর হইতে (নামাইয়া) শ্ব্যায় স্পর্শ করায়
না; (আমার) বুকে (নিজের) বুক,- (আমার)
মুখে (নিজের) মুখ (রাখিয়া) রজনী বাপন করে।
(নিজিত হইলে সেই সময়টুকু ছাড়াছাড়ি হইবে বলিয়া
জালিয়া রজনী বাপন করে, ইহাই এই বাক্যের
তাৎপর্যা বটে)। তুলনা করুন,---

"কোরে আগোরি রাথই হিরা পর
পালকে পাশ না পাই।
ও স্থ্থ-সাগরে মদন-রস-ভরে
আগিয়া রজনি গোডাই॥"
—নরোত্তম দাস; ৬৬৯ সংখ্যক পদ।
"উর বিন্থ শেজ পরশ নাহি পাই।
চীবহি বিন্থ তামুশ নাহি খাই।"
—কবিরঞ্জন; ৬৮০ সংখ্যক পদ।

शवनी ।>

ज्ञानि वज़ हे विष्णध[®] कान। কহিল নহে সে প্রেম-আর্তি ক্ষিল হেম দশবান ॥ গ্ৰু॥ সমূখে রাখিয়াং মুখ আঁচরে মোগ্ই অলকা ভিলকা বনাই । বদন হেরি হেরি মদন-রসভবে व्यथदा व्यथत लोगोरे ॥ কোরে আগোরি রাখই হিয়া পর পালকে পাশ না পাই ।। ও স্থ্য-সাগরে মদন-রসম্ভরে ১২ আগিয়া র**জ**নি গোঙাই #

কেবল রসময় মধুর মূর তি
পিরিতিময় প্রতি অক।
নরোত্তম দাস কহ্ণ যাহার অনুভব
সেজানে ও রসরক্ষণ ॥ ৬ ॥ ৬ ৬৯॥

পাঠাৰত

)। ইহা প-র-সা পুথির ১১৪৪ সংখ্যক **ও** প-র প্রথির ১ গ৪৮ সংখ্যক পদ। 'ধাননী' কলে 'ऋइटे' প-র। २। 'महे গো' প-র। ৩। 'বিনদিয়া' প্রা ৪। 'কাহিনী' প্র-সা। ে। 'রাখি' প-র। ৬। 'মোছারই' খ। १। 'वनारम' প-त्र-मा : 'वनाम' भ-त्र । 🕨 । 'नागरम' প-द-मा ; 'गागाव' भ-त । । 'आरगावहे' भ-त-সা: 'আগরিয়া' পর। ১০। **'পলকে'** সা। ১১। 'পালকে' ইত্যাদি স্থলে 'শরন পাশ नाहि शांत्र' भ-त । ১২। 'अ ख्रथ-मांगद्व' ইত্যাদি স্থলে 'মদন-রসভরে ও অ্থ-সাগরে' প-র-সা; 'নবীন প্রেমভরে ও রদ-সাগরে' প-র। ১৩। 'পোহাই' প-র-সা: 'পোহার' প-র। ১৪। 'নরোত্তম' ইত্যাদি স্থলে 'কহই নরোন্তম' প-র; 'নরোন্তম' প-র-গ।। ১६। '(म कात्न' हैजानि ऋल '(महे भ व्याप ইছ রক' প-র।

বিশ্বড়া ।১

এমন পিরিতি কভু দেখি নাই শুনি²।
নিমিথে মানয়ে যুগ কোরে দূর মানি ॥
সমুথে রাখিয়া করে বসনের বা⁴।
মুখ ফিরাইলে⁸ তার ভরে কাঁপে গা⁴ ॥
একতমু হৈয়া মোরা রজনী গোন্তাই।
স্থথের সাগরে ভূবি অবধি না পাই ॥
রজনী প্রভাত হৈলে কাতর হিয়ায়।
দেহ ছাড়ি যেন মোর প্রাণ চলি যায়॥
সে কথা কহিতে সই⁸ বিদরে পরাণ।
চণ্ডীদাস করে ধনি সব পরমাণ ॥৭॥৬৭০)

পাঠাস্তর

১। ইছা প্র-দা পুথির ১১৪৫ সংখ্যক পদ।
২। 'দেখি' ইত্যাদি স্থলে 'নাহি দেখি শুনি' খ,
প-র-দা। ৩। 'বাও' প-র-দা। ৪। 'ফিরাইতে'
খ। ৫। 'গাও' প-র-দা। ৬। 'সোই'খ, চ।

কোরাগিণা ৷১

আমি ষাই ষাই বলিং বলে তিন বোলণ।
কত না চুম্বন দেই কত দেই কোল ॥
পদ-আধ যায় পিয়া চাহে পালটিয়া।
বয়ান নিরখে কত কাতর হইয়া ॥
করে কর ধরি পিয়া শপপি দেই 'মোরে ।
পুন দরশন লাগি কত চাটু বোলে ॥
নিগৃত পিরিতি পিয়ার আরতি বহু ।
চণ্ডীদাস কহে হিয়ার মাঝারে রহু ॥৮॥৬৭১॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পূথির ১১৪৬ সংখ্যক ও
প-র পূথির ১৩৪৫ সংখ্যক পদ। 'কৌ রাগিণী'
ছলে 'পঠমঞ্জরী' প-র। ২। 'পিরা' প-র-সা।
৩। 'আমি ষাই' ইত্যাদি স্থলে 'যাই ঘাই বলি
পিরা বলে তিন বোল' প-র। ৪। 'পদ আধ'
ইত্যাদি পংক্তিরর প-র পূথিতে 'পূন দরশন লাগি'
ইত্যাদি পংক্তির পরে সারিবেশি ০ ইইয়াছে। ৫।
'করে কর' ইত্যাদি স্থলে 'করে ধরি পিরা
সপতি দেই' প-র। ৬। 'মোর' খ, ঘ। ৭।
'কত চাটু বোলে' স্থলে 'পূন দেই কোরে' প-র।
৮। 'বছক' খ, ঘ। 'নিগুঢ়' ইত্যাদি স্থলে
'নিশুড়েছি পিরা মোরে আর্যতি করে বক্ত' প-র।
১। 'চণ্ডীদাস কছে' ইত্যাদি স্থলে 'চণ্ডীদাস কছে
পিরার পিরিতি হিরার রহ' প-র।

পিয়া-গুণ যে কহিলুঁ সেই ভাল আর কব না।*
গুণ কহিলে কি জানি হয় তেঞি কহিয়ে না॥
ইতাদি সম্পন্ন-সম্ভোগস্থ রসোদগারঃ।
এতদগীতং সর্ব্ব-কালোচিতং।
পুনশ্চ প্রকারাস্তরেণ যথা।

শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

অথ রদোদগারাত্মরাগঃ।

বিভাষ ৷১

পরশ-মণির সনে কি দিব তুলনা বেং পরণ ভোয়াইলে হয় সোণা। নাচিয়া গাইয়া রে আমার গৌরাঙ্গের গুণে রতন হইল কত জনা ॥ भठीत नन्धन वनमाली । তুলনা দিবার নাই এ তিন ভুবনে যার গোরা মোর পরাণ-পুতলী ॥ধ্রু॥ ७ हाँम कलको ८व॰ त्भी शक्ष-**ठाँदित क**ाँदिन এমন করিতে নারে আলো।। উদয় निष्ण-পুরে অকলক পূৰ্ণ-চাঁদি মনের আন্ধার দূরে গেলো॥ এফ গুণে স্থরতি স্থর-তরু সম নহে রে মাগিলে দে পায় কোনণ জন। না মাগিতে>২ অখিল ভূবন ভরি জনে জনে

যাচিচা দেওল ১০ প্রেম-ধন।

^{• &#}x27;পিরা-গুণ' ইত্যাদি পংক্তিমন প-র-সা পুথিতে নাই; এই পদটির অবশিষ্ঠ অংশ কোন পুথিতেই উক্ত হর নাই; স্থতরাং আমরা এ স্থলে উহা সরি বেশিত করিতে পারিলাম না।

[†] ক, ধ প্রভৃতি সকল পুথিতেই 'সম্পন্ন' ছবে 'সম্পূর্ণ' অশুদ্ধ পাঠ আছে। ৩৫৫ সংখ্যক পদে? টীকা জন্তব্য ।

গোরাচাঁদের ভূলনা গোরাচাঁদে গোসাঞি রে বিচার করিয়া দেখ সভে।

প্রমানদ্দের মনে এ বড় আকুভি রে গৌরাজের দয়া হবে কবে শ ॥ ৯॥৬৭২॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সা পুথির ১১৪৭ সংখ্যক ও প-র পুথির ২২।২৭ সংখ্যক পদ। ২। 'কি দিব' ইত্যাদি স্থলে 'তুলনা কি দিয়ে রে' প-র-স।। ৩। 'ঠেকিলে' প-র। ৪। 'পরশ-মনির সন্নে' ইত্যাদি কলিটির পূর্বে প-র পুথিতে নিম্নলিখিত অতিরিক্ত কলি দৃষ্ট হয়; ষথা—

'কেমনে পাসরিব গৌরাক্সচান্দের লীলা।
আমার গৌরাক্স-শুনে পশু পাথী আদি কান্দে
গলিয়া গলিয়া পড়ে শিলা॥'

e। 'শচীর নন্দন' ইত্যাদি ধুয়ার কলিটি প-র পুৰিতে নাই। ৬। 'ও চাঁদ কলফী রে' স্থলে 'চান্দ কলন্ধিত ভেল' পর। 'গৌরাঙ্গ টাদের ছান্দে' ইত্যাদি পংক্তি-চতুইর পার পুথিতে "বাচিয়া দেওণ প্রেমধন" পংক্তির পরে সলিবেশিত হইরাছে। १। 'আর' ক। 'আল' চ। ৮। 'কলানিধি' প-র। ১। 'গেল' ক, খ, চ, প-র সা, প-র। ১০। 'দে' প-র। 'দে গুণে স্থরভি' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি প-র পুথিতে 'পরশ-মণির সনে' ইত্যাদি কলিটির পরে সন্নিবেশিত হইগাছে। >> 1 'क्लांमा' भन्त्र। ১२। 'না মা:গতে' স্থাৰ 'অবাচিত্ত' প-র। ১০। 'বাচিয়া দেওল' ফ্লে 'আপনে দিলেন' প-র। ১৪। 'গোরাটাদের তুলন্' ইত্যাদি পংক্তি চারিটির পরিবর্ত্তে প-র পুথির পাঠ यथा :--

'গোরাজ-চান্দের ভাই ভুগনা দিবার নাই
কাদরে ভাবিরা সব দেখ।
নরনানক্ষের মনে অধিক আনন্দ রে
পোরা-জাব বিচারিয়া লেখ।'

নক।

১—৪। "পরশ-মণির" ইত্যাদি। পদ-কর্ম্বা
বিণিতেছেন,—ক্ষর্প-মণির সহিত শ্রীগোরাঙ্গের কি
তুলনা দিব ? ক্ষর্প-মণি (অন্ত কোন ধাতু পদার্থে)
ক্ষর্প করাইলে (উহা) স্থাপ হয়; (কিন্তু) আমার
শ্রীগোরাজের (অন্তুত) শক্তির প্রস্তাবে নাচিয়া
গাহিয়া কত (শত) নাক্তি রয় হইল। পরে উহা ধাতু
পরশ-পাণর পাওয়াই ছর্মট ; তার পরে উহা ধাতু
দ্রব্যে ক্ষর্প করান আবশ্রুক ; তাহা হইলে ঐ ধাতুদ্রব্য স্থাপ করান আবশ্রুক হইয়া যায় ; স্থাতরাং এ স্থান
পরশ-পাণর অপেক্ষা শ্রীগোরাজের উৎকর্ম বর্ণিত
ছওয়ায় "ব্যতিরেক" অলকার হটয়াছে।)

৮—১১। "গৌরালটাদের" ইত্যাদি। শ্রীগৌরালরূপ চন্দ্রের শোভায় (আকাশের) সেই চন্দ্র কলছযুক্ত (হইয়াছে); উহা এরপ আলো করিতে
পারে না; (কেন না, শ্রীগৌরাঙ্গের আবির্ভাবে)
নববীপ নগরে কলছ-বিহান পূর্ণচন্দ্রসমূদিত হরয়াছে;
(উহার প্রভাবে) দর্শকের মনের অন্ধলার বিদ্রিত
হইল। (আকাশের চন্দ্র কলছ-যুক্ত এবং ব্রাসরুদ্ধির অধীন; উহা মেব ইত্যাদির প্রতিবন্ধকতা না
থাকিলে বাহ্ অন্ধকারমাত্র দূর করিতে পারে; কিছ
অকলক পূর্ণচন্দ্র-অরপ শ্রীগৌরাঙ্গ তাঁহার আবির্ভাব
থারা দর্শকের মানসিক অন্ধকার পর্যন্ত বিদ্রিত
করিয়াছেন; স্মৃতরাং এ স্থনেও "ব্যতিরেক"
অলকার বুরিতে হইবে।)

১২—১৫। "এ গুণে" ইত্যাদি। এই গুণের তুগনার স্থান্ধ স্থা-তব্দ পারিলাভ (শ্রীগোরালের) তুগ্য নহে; কোন (পুণাবান্) ব্যক্তি (স্থর্গ বাইরা সেই করতক পারিলাতের নিকট) শুধু প্রার্থনা করিলেই (ধন ইত্যাদি) প্রাপ্ত হন; (কিন্তু) শ্রীগোরাল কেহ প্রার্থনা না করিলেও (অপূর্ব দয়া-গুণ (হতু) সমস্ত জগৎ ভরিরা (উত্তম-অধম না বাছিরা) সকল ব্যক্তিকে (নিজে) বাজ্ঞা করিরা থেমিরূপ অমৃল্য রত্ন বিভৱণ করিয়াছেন। (এ স্থলেও "বাতিয়েক" অংকার হইয়াছে।)

১৬—১৭। "গোরাচাঁদের" ইত্যাদি। শ্রীগোরা-ক্ষের তুলনা কেবল শ্রীগোরাক-এই বাক্য ধারা শ্রীগোরাক্ষের বিভায় ভুলনা-ডল নাই, ইহা প্রতি-পাদিত হওয়ায় "অনযয়" অলকার হং যাছে।

"উপমানোপমেগ্রমকস্থৈব তুনস্বয়:॥"

---সাহিতাদর্পণ, ১০ম পরিছেদ।

श्रीराजि । वजाकी।>

চলিতে না পার ব্যসের ভরে।
আলসং নয়ানং অলপং করেও।
ঘন ঘন তুমি বাহিরে যাও।
আন ছলে কড কথা বুঝাওং॥
না জানিয়ে কিবা অস্তরেশ স্থাকে।
আঁচরে কাঞ্চন ঝলকং মুখে॥
মরমে পিরিতি বেকত অক্টেং।
ভিলেক সোয়াথ না দেয় অনক্টেং।
ভাবে বেয়াকুলং ওর না পাও॥
কপোলে পুলক বেকত দেখি।
প্রেম কলেবর ততহিঁং সাখী॥
ভ্যানদাস রসং ভাবিয়াং গায়।
রসের বেভার লুকাংশ না যায়॥১০॥৬৭৩॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১৪৮ সংখ্যক ও প-র
পুথির ১৩।১৪ সংখ্যক পদ। ২। 'পারে' ক, খ।
৩। 'আসসে' প-র-সা, প-র। ৪। 'নরন'
চ। ৫। 'অসস' ক। ৬। 'ঝোরে' প-র-সা,
প-র। ৭। 'আন ছলে কত কথা বুঝাও' ইত্যাদি
ছয়টি পংক্ষি দ, চ পুথিতে নাই। ৮। 'আরর'

ক, প-র-সা। ১। 'ঝলকে' ক, ৬, প-র-সা।

১০। 'অস' ক, ৬, প-র-সা। ১১। 'অনক' ক,
৬, প-র-সা। ১২। 'কালার' ক, ৬, প-র-সা।

১০। 'বদন' ক। ১৪। 'ভাবে বেয়াক্ল' ছলে 'ভাবের আকৃল' প-র। ১৫। 'ভাহার' প-র-সা; 'সদত' প-র। ১৬। 'রস' শক্টি ঘ, চ পুথিতে নাই। ১৭। 'রস ভাবিয়া' ছলে 'অমুভবিয়া' প-র। ১৮। 'বুঝা' ৬; 'ছাপা' প-র।

ोका

৫—৬। "না জানিয়ে" ইত্যাদি। জানি না (তোমার) অন্তরে কি প্রথ (রহিনছে!) অঞ্চলে আন (বাঁধা আছে), (অর্থ-ধারীর) মুথে (উহার) দাপি (দেখা যায়!); অর্থাৎ কেহ যদি আঁচলের গাঁঠিতে অর্থ লুকাইয়া রাথে, তাহা হলৈও উহার মুখেব প্রফুলতাই দেই 'গুপু ধনের কথা ব্যক্ত করিয়া দেয়; এ ছলেও তোমার মুখের প্রফুলতাই তোমার অন্তরের 'গুপু প্রেম প্রকাশ করিয়া দিতেছে! তুলনা করুন,—

"আঁচরে কাঞ্চন ঝলকে দেখি।
প্রেম কলেবর দিয়াছে সাখী।।"
—বিজ্ঞাপতি; প-ক-ত— ২২৬ সংখ্যক পদ।
"এ তুয়াহাস মরম পরকাশই
প্রতি-অল-ভলিম সাখী।
গাঁঠিক হেম বদন মাহা ঝলকই
এত দিনে পেখলুঁ জাঁধি।"
—গেবিন্দাস; প-ক-ত; ২২৭ সংখ্যক পদ।

यहरे ।>

সুন্দরি বুঝিলুঁ ^২ ডোমার ভাব। প্রেম-রতন গোপতে পাইয়া ভাঁড়িলে কি হবে লাভ ॥ ধা ॥

আনের কথা আন ছলে কহ বেকত পিরিতি-রঙ্গ। অঙ্গ চল চল রসের বিলাদে রঞ্চিত প্রেম-তরক⁹ ॥ চলিতে না পার ভাবের ভরেদ বচন হইলা হারা: । নিকুঞ্জ-বনে কাসুর সনে রঙ্গেত ১১ হৈয়াছ ১২ ভোরা ॥ পুছিলে না কহ मरनत मत्रमः এবে ভেল বিপরীত। কি হ্বার বলিবে বলরাম কতে ভাবেতে মঞ্জিল চীত>* ॥১১॥৬৭৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১১৪৯ সংখ্যক ও
পর পুথির ১৩১৫ সংখ্যক পদ। 'ফুহই' ফলে
'ঐরাগ'প-র। ২। 'বুঝিল'ক। ৩। 'গুণত'
প-র। ৪। ক, খ, খ, চ পুথিতে 'ফ্র' নাই।
৫। 'ভক্লে' প-র। ৬। 'চলচল' ফলে 'চরচর'
প-র। ৭। 'প্রেম-ভরঙ্গ' ফলে 'রস-ভরক্লে' প-র।
৮। 'ভরেতে' ক, প-র। ৯। 'পারে' প-র।
১০। 'বচন হইলা হারা' শ্বলে 'চরণ হইল হারা'
ক, প-র-সা। ১১। 'রজেতে' ক, প-র।
১২। 'হৈয়াছে' ক, প-র। ১৩। 'পুছিলে'
ইত্যাদি ফলে 'পুছিলে মনের মরম না কহ' প-র-সা,
গ-র। ১৪। 'চিত'ক, প-র-সা, প-র।

विज्ञान ।>

কি পুছহং সথি প্রেমের° কথা। কহিতে না কানি কহিরে এখা°॥ পিয়ার পিরিতি কি না জান° তুমি। এত দিনে তাতে ঠেকিসুঁ আমি॥ যত যত শ্রাম বঁধুর গুণ।
সোঙরি পাজরে বিদাল ঘুণ।
দিবস রকনি কিতু না জানি।
মনে পড়ে চাঁদ-বদন খানি।
চণ্ডাদাস কছে রসের সারণ।
পিয়াব পিরিতি অনক্ষ পাথার॥১২॥১৭৫॥

পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫ • সংখ্যক পদ।
২। 'পুছ' ক, প-র-সা। ৩। 'ভাবের'
প-র-সা। ৪। 'কহিয়ে এথা' স্থলে 'কি হয়ে
এথা' ঝ, চ; 'কি হয় কথা' প-র-সা। ৫।
'কি না' স্থলে 'কি' প-র-সা। ৬। 'চণ্ডীদাস
কহে' ইত্যাদি পংক্তিদয় ক, ঝ, ঘ ও চ পুথিতে
নাই।

সিকুড়া।১

সইং নিরবধি কত পড়ে মনে। শ্যাম নন্ধু বিপু না রচে মোর ওসু সোয়াপ্ত নাহিক বাহি দিনে এয়া ধরিয়া আমাব করে বৈসায়**৬ আপন কোরে** श्रुन (मरे मिशारा मिन्दूत । তাম্বল সাজাঞা জোলে খাও খাও কত বোলে কত গুণ কহিব বন্ধুর॥ বেঢ়িয়া* মালতা ফুল ঝাড়িয়া বান্ধয়ে চুল বসন পরাই > আমা দেখে। দেখিয়া আমার মুখ না জান কি পায় হুখ রদের আবেশে করে বুকে। কাপে পত্ত পরহরি হিয়ার উপরে ধর্ম मृत्य मूथ पिया यन कार- । বিহি পোহাইলে১১ রাতি মোরেণ্ড ছাড়ি যাবাণ্ড কভি धत्रेषी³⁸ श्रीत्र³⁸ नाहि वाटक ॥১৩॥७१७॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১৫১ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৩।৪৭ সংখ্যক পদ। 'দিকুড়া' ছলে 'হুহই' প-র। ২। 'সোই' ঘ,চ। ৩। 'গ্রাম বকু'ছলে 'সে শ্রাম বকুরা' প-র। ৪। 'আমার' প-র। ৫। 'নাহি' প-র-সা। ৬। 'বসার' প-র-সা। । 'বেড়িয়া' ক, প-র-সা। ১০। 'পরার' ধ, ঘ; 'পরাঞা' প-র। ১১। 'পোহায়ল' প-র-সা। ১২৷ 'আমা' প-র-সা। ১৩। 'বাবে' প-র। ১৪। 'এত বলি' প-র। ১৫। 'গ্রিব' ক, প-র।

তথা বাগ।১

মরম কহিলুঁ মো পুনং ঠেকিলু সে জনার° পিরিতি-ফান্দে । ন্নাভি দিন চিতে ভাবিতে ভাবিতে তারে সে পরাণ কান্দে⁸ । বুকে বুকে মুখে **८**ोट्थ लागिया शाटक • তমু মোরে সতত হারায় ও° বুক চিরিয়া হিয়ার মাঝারে আমারে রাখিতে চায় দ হার নহোঁ পিয়া গলায় পরয়ে চন্দন নহোঁ । মাখে গায় ১১। অনেক যতনে রতন পাইয়া পুইতে সোয়ান্ত না পায়> । কপূর ভাস্থল আপনি সাজিয়া>৩ মোর মুখ ভরি দেয়। হাসিয়া হাসিয়া চিবুক ধরিয়া मूर्थ मूथ (महे) (नग्र ॥

সাজাঞা কাচাঞা ও বসন পরাঞা ও আনেশে লইয়া কোরে ও ।
দীপ লৈয়া হাতে সুখ নির্বিধিতে ও দিতিল নয়ান লোরে ও ॥
চরণে ধরিয়া যাবক রচইং অউলায়াং বান্ধয়ে কেশ।
বলরাম চিতে ভাবিতে ভাবিতে পাঁজর হইল শেষ ॥১৪॥৬৭৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫২ সংখ্যক ও প-র পুথির ১০। ২ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' স্থলে 'সুহই' ২। 'পুন' স্থলে 'পুনি' খ, প-র-সা। ৩।'সে জনার' স্থলে 'সে স্থাম' প-র-সা। ৪। এ স্থলে পূর পুথিতে 'শ্রু' চিহ্ন আছে। 'মরম কহিলু' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি প-র পুথিতে 'আমারে রাখিতে চায়' পংস্কির পরে সলিবেশিত হইয়াছে। ৫। 'চৌথে लाजिया थारक' ऋरन 'हिर्देश लाजि बारक' क ; 'हिरेदेश লাগিয়া থাকি' খ; 'চৌথে লাগিয়া রহি' প-র-সা। 'বুকে বুকে' ইত্যাদি পংক্তির পরিবর্ত্তে প-র প্রথির পাঠ ষথা,—'ৰুকে বুকে মূথে চথ্যে লাগিয়া থাকিয়ে গো'। ৬। 'তমু' ইত্যাদি স্থলে 'তমু পিয়া সদাই হারায়' প-র। ৭। 'এ' ধ, প-র-সা। ৮। 'আমারে রাখিতে চার' ছলে 'সদাই রাখিতে চার' ক; 'আমারে থুইতে চার' প-র। ৯-১০। 'নহে' क; 'ন হঙ' প-র-সা; 'নাহি' প-র। ১১। 'মাঝো' क। ১२। 'थूरेरल' हेज्यानि च्रल 'थूरेरज बेक्नि না পায়' ক**ৃ 'থুইতে অক্ত নাহি পায়' প**-র-সা I 'অনেক বতনে' ইত্যাদি পংক্তিবন্নের পরিবর্ত্তে প-র পুথির পাঠ বথা,—

'অতি অভিগাৰে মতি বেরাকুল
ধুইতে ধল না পার।'

:০। 'সাঞাইরা' ক, ধ; 'চিবাইরা' প-র-সা।
'কপুর ভাষ্ণ' ইড্যাদি পংক্তি-চ্ছুইর পার পুথিডে

নাই। ১৪। 'দিয়া' ক, প-র-সা। ১৫। 'সাজাঞা কাচাঞা' স্থলে 'সাজাইয়া কাচায়া' ৮; 'সাজায়া কাছায়া' প-র-সা। ১৬। 'পরায়া' প-র-সা। ১৭। 'আবেশে' ইত্যাদি স্থলে 'আবেরে বসায় কোরে' প-র। ১৮। 'মুথ নির্থিতে' স্থলে 'মুথানি দেথিতে' প-র। ১৮। 'মুথ নির্থিতে' স্থলে 'মুথানি দেথিতে' প-র। ১৯। 'নীরে' প-র-সা, প-র। ২০। 'রচয়ে' প-র-সা। ২১। 'আকাঞা' ক; 'আউলায়া' ড়; 'এল্যাঞা' ড়; 'এল্যাইয়া' চ; 'আলুই' প-র-সা; 'থসাঞা' প-র। 'চরলে ধরিয়া' ইত্যাদি পংক্তিম্বরের পরিবর্তের প-র পৃথির পাঠ যথা,—

'ম্থানি মোছাঞা পরায়ে সিন্দুর থসাঞা বাদ্ধয়ে কেশ।'

টাকা

৯—১২। "হার" ইত্যাদি। (আমি) হার নহি, (তথাপি) প্রিয়তম (আমাকে যেন) গলায় পরিধান করে; (অর্থাৎ আমার ভূজ-লতাদ্বর তাঁহার কঠে সংলগ্ন করাইয়া রাথে); আমি চলননহি, (তথাপি) সে আমাকে (যেন) গায় মাথে; (অর্থাৎ স্থান্ট আলিঙ্গনে আমার অজ্যের সহিত অঙ্গ মিশাইয়া রহে); (যেন দরিজ্ঞ) বহু চেষ্টাম্ব রক্ম পাইয়া উহাকে কোন স্থানে রাধিয়া শান্তি পাইতেছে না। ভূলনা কর্মন,—

"সই কি না সে বন্ধুর প্রোম। আ াথি পালটিতে নহে পরতীত যেন দরিজের হেম॥" —আনদাস; প-ক-ত; ৩৭৮ সংখ্যক পদ।

बाजा ।>

সইং কি না সে বন্ধুর° প্রেম। আঁখি পালটিতে নছে পরতীত। যেন দ্রিজের° ছেম॥ ঞু•॥

হিয়ায় হিয়ায় লাগিব লাগিয়াণ চন্দন না মাখেদ অঙ্গে। গায়ের ছায়া বায়ের দোসর সদাই ফিরু**য়ে সক্তে**^১ ॥ তিলে কত বেরিণ মুখানি হেরয়ে ১২ আঁচরে মোছায়ে ও ঘাম। কোরে থাকিতে কভ্ৰু দুর হেন মানয়ে ১৫ তেঞি সদাই লয়ে নাগ্ৰ্ণ ॥ জাগিতে ঘুয়াইতে ১৭ আন নাহি চিত্তে রসের পসার শ কাছে। জ্ঞানদাস কৰে এমন পিরিভি আর কি জগতে আছে ॥১৫।৬৭৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৫০ সংখ্যক ও প র পুৰির ১৩।৫৯ সংখ্যক পদ। 'শ্রীরাগ' স্বলে 'তুড়ী' প-র। ২। 'দোই' ব, চ। ৩। 'শাহুর' প-র-সা। ৪। 'নহে পরতীত' হলে 'নহে পরতীতে' ক; 'নহে প্রতিত' ব, চ; 'নাহি भ-त्र। १। 'मातिराखद' क, थ, भ-त्र। ७। क, ধ, ৰ, চ ও প-র প্থিতে 'গ্রু' নাই। প-র পুথিতে 'ভিলে কত বেরি' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি এই পদের প্রথমে সন্ধিবেশিত হইয়াছে। १। 'লাগিব লাগিচা' कुरल 'लांशियां विलया' भ-त्र। ।। 'ठन्सन मा भार्भ' ছলে 'চন্দন মাধ্যে' প-র-সা, 'চন্দন না পরে' প-র। ৯। 'বায়ের দোদর' ফ্লে 'রাইছের দোদর' ক, খঃ 'রাষের দোসর' च। ১০। 'সদাই' ইত্যাদি স্থলে 'द्रांष्ठि मिन थांटक मह्म' भ-द्र-मा, भ-द्र। >>। ১২। 'মুখানি হেররে' ছলে 'বার' প-র-সা। 'मूथ (नहांत्रदा' क ; 'मूथ नित्रथरत' श-त-मा ; 'मूरथ निविधिया' भ-व । ১৩ । 'यूहरे' भ-व ; 'स्पोह्रद' क । ১৪। 'থাকিতে কত' হলে 'থাকি কত' প-র-সা; 'থাকিতে' চ। ১৫। 'দুর ছেন মানমে' ছলে 'ছুৱে ছেন মানৱে' ক ¸ 'ছুৱ ছেন মানে' চ, প-র-সা ¸

'দূরে হেন বাসরে' প-র। ১৬। 'সদাই' ইন্ডাদি স্থলে 'সদাই লই নাম' ক; 'সদাই লইরে নাম' থ, ঘ; 'সদা লর নাম' গ-র-সা; 'সদাই করি নাম' প-র। ১৭। 'ঘুমাত্যে' প-র। ১৮। 'পসরা' ক।

টাকা

৪—१। °হিয়ায়৺ ইত্যাদি। (আণিঙ্গন-কালে) বক্ষে বক্ষে সংলগ্য ছইবে বলিয়া, (প্রিয়তম) আজে চন্দন মাথেল। (অর্পাৎ বক্ষে চন্দন মাথিলে আলিঙ্গন-কালে চন্দন মধ্যে থাকায় বক্ষের সহিত্
বক্ষ সংলগ্য ছইবে না মনে করিয়া বক্ষে চন্দনাম্বলেপন ধারণ করে না)। সে (আমার) গায়ের ছায়া ও (গায়ের) বাতাসের সহচর অর্থাৎ সাথী হইয়া সর্বাদা আমার সঙ্গে ভ্রমণ করে। তুলনা কর্মন,—

শ্ছারার ছারার লাগিব লাগির।
ফরের কতেক পাকে।
আমার অলের বাতাস যে দিগে
সে মুখে সে দিন থাকে।
—রারশেধর; প-ক-ত; ৬৭৯ সংখ্যক পদ।

ভধা রাগ ৷>

সই^২ পিরিতি পিয়া সে^০ জানে। যে দেখি যে শুনি চিতে অমুমানি निक्रनि पिरंग्र भन्नोर्ग ॥ध्या আগিলা খাটে মো° যদি সিনাড शिक्ति चारि (म मात्र^१। পরশ লাগিয়া মোর অকের জল বাহু পসারিয়া রয় ॥ नागिरवंश नागियाः वन्रात वन्न अक्ट त्र**क**रक³² (नग्र। মোর নামের আধ-১৩ আখর পাইলে ছরিব হইরা লের^{১৪} ॥

ছায়ায় ছায়ায় লাগিব লাগিয়া শ ফিরুরে কতেক পাকে । আমার শ সঙ্গের বাতাস যে দিগে শ সে মুখে সে দিন থাকে শ ॥ মনের আকুতি বেকভ করিভে কত না শ সন্ধান জানে । পায়ের সেবক রায় শেখর কিছু বুনে অমুমানে শ । ১ ৬ । ৬ ৭ ৯ ॥

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫৪ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৩।৬১ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' ছলে 'হুহুই' প-র। ু। 'সোই' ব, চ। ৩। 'পিরিডি भिन्ना (म' ऋ एवं 'भिन्ना (म भिन्निकि' भ-त-मा, भ-त्र। ৪। 'মু' প-র-সা। ৫। 'আগের' প-র। 🤛 'ঘাটেতে' প-র। ৭। 'পিছিলা' ইত্যাদি স্থযে 'পিছে ঘাটে পিয়া নায়' প-র। ৮। 'অক' প-র। ১। 'বাহু' ইত্যাদি স্থলে 'পাণারে সাতার বায়' প-র-সা ; 'বাহু পসংবিয়া ধায়' প-র । ১০ । 'লাগিব' প-র-সা, প-র। ১১। 'বলিয়া' প-র। ১২। 'একই द्रक्राक' ऋरम 'अक द्रक्राकरद्र' भ-द्र । ३०। 'मारमद्र व्याध कृतन 'नाम व्याधा अ-त । : 8। '(नव अ-त-ना, প-র। :৫। 'লাগিব লাগিয়া' স্থলে 'লাশিবে লাগিয়।' ক, চ; 'লাগিবার লাগি' প-র। ১৬। 'আমার'হুলে 'এ মোর' প-র। ১৭। 'যে দিগে' স্থলে 'লাগিয়া' প-র। ১৮। 'লে মুথে' ইত্যাদি ऋरम 'रम मिर्ल (म मिन थारक' थ, भ-त्र-मा; 'रम দিন সে স্থাৰ থাকে' প-র। ১৯। 'কন্ত না' স্থাল 'কতেক' প-র। ২•। 'পারের সেবক' ইত্যাদি পংক্তিৰর প-র পুথিতে নাই; উহার জম্ভ একটু জায়গা থালি রাথা হইয়াছে।

न का

>>--> । "ছারার" ইত্যাদি। (আষার) ছারা ও (তাহার) ছারা সংলগ্ন হইবে বলিরা, (সে) কড প্রকার চেষ্টার ছুরে; (অর্থাৎ আষার আল-ম্পর্ল ত দুরের কথা, আমার ছারার সহিত ভারার ছারা মিশ্রিত হইলেও সে আনন্দে অধীর হয় এবং সেই জ্লন্ত ছারার সহিত ছারা মিশাইতে নানা কৌশল অবলম্বন করে); আমার অলসংলগ্ন বায়ু ধে দিক হইতে প্রবাহিত হয়, সে সেই দিবস সেই বায়ুর দিকে মুথ করিয়া থাকে; (অর্থাৎ আমার আলসংলগ্ন বায়ুর স্পর্শেও সে কিয়ৎ পরিমাণে আমার আলিসনের অ্থ অফ্তব করে বলিয়া সেই বায়ুকে সাদরে আলিসন করে)। তুলনা করুন,—

"আলিক্ষ্যাস্ত গুণবণ্ড ময়া তে তুষারাদ্রিবা •াঃ পূর্বং স্পৃষ্টং যদি কিল ভবেদক্ষমেভিন্তবেতি।"

--- মেখদূত।

"বস্কু মন্থতে নন্থ তে তত্মসঞ্চত-প্রন-চলিতমপি রেণুং " — গীতগোবিন্দ :

ভিরোধা ধানশী।১

কি পুছিল রে স্থি কামুক নেহং।
এক জিউ বিহি সে গঢ়ক ভিন দেহ ॥
কহিল যে কাহিনি পুছে কত বেরি।
না জানি কি পায়ই দম্মু মুখ হেরি॥
বিনি মঝু দরশ পরশে নাহি জীব।
মো বিমু পিয়াসে পানি নাহি পীব॥
উর বিমু শেজ পরশ নাহি পাই › ।
চীবহি › বিমু তালুল নাহি খাই॥
ম্মক › আলসে যদি পালটিয়ে ৽ পাশ।
মান ভরে মাধব › উঠয়ে তরাস॥
আন সংগ্রেশ কাহিনি না সহে পরাণ।
আন সন্তাহণে হরয়ে ৽ গেয়ান॥
কহে ক্বিরঞ্জন শুন বর-নারি।
তোহারি পরশ-রসে › লুবধ মুরারি॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুণির ১১৫৫ সংখ্যক ও भ-त পूषित ১৩:8> সংখ্যক পদ। २। '(लह' क. চ, প-র-সা; 'নেহা' প-র। ৩। 'গড়ল'প র-সা। 81 '(म्ह्रा' भ-त्र: ६। 'क्हिट्म' क, ह। ७। 'যে কাহিনি' স্থলে 'কাহিনি রে' পার। ৭। 'পুছম্নে' প্-র-সা: 'পুছুই' প্-র। ৮। 'না জানি' ইত্যাদি ত্তলে 'না জানি কত হুথ পার' প-র-সা; 'কত সুখ পাওই' প-র। ৯। 'বিনি মঝু' ইত্যাদি স্থলে 'মঝু বিনে দরশে পরশে' ক, খ, চ; 'মো বিনে দরশে প্রশেষ ; 'বিনি মঝু দরশনে প্রশে প-র। ১০: 'উর বিমু' ইত্যাদি স্থলে 'উরহি বিমু স্থি শেজ না পাই' প-র। 'উর বিহু' ইত্যাদি পংক্তি-ৰ্ঘ পার পুথিতে 'মানভয়ে মাধ্ব উঠয়ে ভরাস' পংক্তির পরে সন্নিবেশিত হইয়াছে। ১১। 'চিবহি' क. भ त-मा; 'होबहिं' हा ১२। 'यूरमद' क, খ,চ, প-র-সা; 'ঘুমে' च। ১৩। 'পাণটি হঙ' ১৪। 'নাগর' প-র-সা। প-র-সা। ১৬। 'আন' ইত্যাদি স্থলে 'আন मुखारिया इत्रदार का २१। 'श्राम-त्राम' ऋला '(श्रम्भरन' १-त्र।

निक1

১১—১২। "আন" ইত্যাদি। (আমার) অস্তের সহিত কথোপকথন (তাঁহার) প্রাণে সহু হয় না; (আমি) অস্তুকে সন্তাহণ করিলে (তাঁহার) জ্ঞান বিশুপ্ত হয়। শ্রীরাধা ও শ্রীক্ষেরের পরস্পরের নিকট হল্লভতা হেতু অন্ত কার্য্যে ব্যয়িত তিলমাত্র সময়ও তাঁহারা অসহনীয় জ্ঞান করেন,—ইহাই 'আন সঞ্জে' ইত্যাদি শ্লোকের ভাবার্থ বটে; অস্তুধা নায়ক-শিরোমণি শ্রীক্ষয়ের কার্য্যে অধম-নামকোচিত সন্দেহ-ফনিত ইবার বর্ণনা রসাভাসের পরিপোষক হইয়া পড়ে শ্রীক্রপ গোস্থামী উজ্জ্বনীলমণি গ্রাছে শক্তুফের সহিত ব্রজ-স্থুন্গ্রীদিগের প্রেম-লীশার শ্রেণতা প্রমাণত করিতে বাইয়া ভরত মুনির নিয়-দিখিত বাক্য উচ্ত করিয়াছেন; ব্ধা,—

"বহু বার্গতে হত: খলু

যত্ত প্রচন্ত্রকামুক্তক।

যাচ মিণো হল্লভিতা

সামন্ত্রপরমার্ভি:।"

সুহই।১

ञवला कि जानि छन भरतः। রসিক-মুকুট-মণি নাগর হইয়া গো এত না আদর কেনে করে॥ধ্র॥ মোর অঙ্গ-সঙ্গ আশেও লালগা পাইয়াঃ বৈদেৎ রসে পত্ত বোলে জিলু জিলু। গণিয়া রাথিহ মনে নিজ অনুগত জনে এ তমু তোমারে দিলুঁ দিলুঁ॥ আউল্যাঞ্জা কৰ্মী-ভার্১১ বেশ করে বারে বার ২ বসন পরায় কু তুহলে ১৩। বসাঞা> স্থাপন উরে নূপুর পরায় খোরে চরণ পরশে কর-তলে^{১৫}॥ বঁধুয়া বলয়ে ধনি কালিয়া-কস্তুরী খানি ও রাঙ্গা চরণ-তলে>৬ মাখি। স্থীর স্মাজে ভোর ঘোষণা রহুক মোর নিগৃড় মরম তার । সাখী। বিদগধ শ্যাম-রায় বসনে করয়ে বায় আপনে যোগায় গুয়া-পাণ। **टगाविन्ममारमत** वागी अन ताथा वित्नामिनिभ তেএিঃ তুমি খ্যামের পরাণ ॥১৮॥৬৮১॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫৬ সংখ্যক ও প-র পুথির ১১৫৮ সংখ্যক পদ। 'স্থহই' হলে 'বিভাষ' প-র। ২। 'অবলা' ইভ্যাদি হলে 'সই অবলা কি গুণ জানি ধরে' প-র। ৩। 'রসে' থ, প-র। ৪। 'হইমা' প-র-সা। ৫। 'লালসা' ইভ্যাদি হলে 'জানক্ষসাগ্যে ভাসে' প-র। ৬। 'রসে পহঁ বোলে'

হলে 'বঁধুয়া বলে' ক, প-র-সা; 'হরিবে বোলরে' প-র। ৭। 'বুঝি' প-র। ৮। 'নিজ' ইত্যাদি হলে 'সধীর মাঝারে তোরে' হা ৯। 'গণিয়া' ইত্যাদি হলে 'গণিয়া রাঝিবে মনে' ক; 'গণিয়া লইবা মোরে' হ; 'গণিয়া রাঝিয় মনে' চ; 'গণিয়া লইবা মোরে' হ; 'গণিয়া লইবা মোরে' হ; 'ভাবিয়া লইছ্ মনে' প-র। ১০। 'এ তফ্ তোমারে' হলে 'বদ্ধরে আপনা' প-র। ১১। 'আউলাঞা' ইত্যাদি হলে 'আবাঞা কুম্বলভার' প-র। ১২। 'বার বার' প-র। ১৩। 'কত বাব' প-র। ১৪। 'বগাইয়া' প-র-সা। ১৫। 'কর-তলে' হলে 'শতবার' প-র। ১৬। 'চরমতলে' হলে 'ভাবে' থ, হ। ১৭। 'চরমতাব' হলে 'প্রেমের এই' প-র। ১৮। 'বিনদিনি' হ; 'ঠাকুরাণি' প-র।

টীকা

১২--১৫। "বঁধুয়া" ইত্যাদি। বন্ধু বলেন—
ফলরি ! কালো কস্তরীধানা (ধ্বনিগমা অর্থে—
আমার ক্লফ অল্থানা) (তোমার) ঐ আরক্তিম
চরণের ভলে বর্ষণ করিতে চাহি ! তোমার স্থীবর্গের মধ্যে (তোমার সেবক বলিয়া) আমার
খ্যাতি থাকুক; (আমার) গভীর মনোবাসনাই
আমার উক্তির প্রধাণ।

थानगी । ১

রাতি দিনেং চৌথে চৌথে বসিয়া সদাই দেখে ঘন ঘন মুখখানি মাজে।
উলটি পালটি চায় সোয়ান্ত নাহিক পারঃ
কত বাং আরতি হিয়ার মাঝে ॥
সই ও তুখ লাগিয়া আছে মনে ।
বারে বিদগধ-রায় বদিয়া জগতে গার
মোর আগে কিছুই না জানে ॥ধা॥

জ্বালিয়া উজ্জ্বল বাতি জ্বাগিয়া পোহায় রাতি
নি দ নাহি যায় পিয়া ঘূনে ।

ঘন ঘন করে কোলে খেণে করে উত্তরেলে তিলে শতবার মুখ চুমে ॥

খেণে বুকে খেণে পিঠে খেণে রাখে দিঠে দিঠে হিয়া হৈতে শেজে না ছোয়ায় >> ।

দরিদ্রের >২ ধন ছেন রাখিতে >০ না পায় স্থান >৪

অলে অলে সদাই ফিরায় ॥

ধরিয়া ছুখানি হাতে কখন ধরয়ে ২০ মাথে
থেণে ধরে ১০ হিয়ার উপরে ।

খেণে পুল্কিত হয় খেণে আঁখি মুদি রয়
বলরাম কি কহিতে পারে ॥১৯॥৬৮২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫৭ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৩৫৪ সংখ্যক পদ। 'ধানশী' ऋলে 'কামোদ করুণ' প-র। ২। 'রাত্যে দিনে' थ-त्र। ७। '(हारबा (हारबा' ह ; 'हरबा हरबा' প-র। ৪। 'দোয়াগু' ইত্যাদি স্থলে 'তভো স্বাস্ত নাহি পার' প-র। ে। 'না' প-র-সা। ৬। 'महे' ইত্যাদি স্থলে 'সোই ও মুখ লাগিয়াছে মনে' চ; 'সই অপরূপ লাগিয়াছে মনে' পর। ৭। 'জগত' প-র-সা। ৮। 'জাগিয়া পোহার' ছলে 'बांगि পোহাইল' क, ब, च, छ। ৯। 'निंम' हेजाानि স্থলে 'ভাত না ধার নিক্ষ না যার ঘুমে' প-র। >। 'থেপে' ইত্যাদি স্থলে 'প্রাণধন কত বলে' श-द्रा >>। '(भाषाव' का :२। 'लातिएकव' ष, हा ५७। 'बृहेरङ' भ-द्रा ४८। 'बान' भ-द्रा >e। 'क्थन धत्रात' ऋता 'क्हे कत्र नत्र' भ-ता ३७। 'ब्रांस' भ-दा

पूढ़ी।

নয়ানে নয়ানে থাকে রাভি দিনেং দেহিতে দেখিতে থাকেও। চিবুক ধরিয়া মুখানি তুলিয়া (मिश्रा (मिश्रा कात्मा সই কি ছার পরাণ ধরি। কি ভার আরভি কিবা সে পিরিভি জীতে কি পাসরিতে পারি ॥ধ্রু॰॥ নিশাস ছাড়িতে গুণে পরমাদে কাত্র হইয়া পুছে। বালাই লইয়া মো মরোঁ বলিয়া আপনা দিয়া কভ দনিছে॥ না জানি কি স্তুখে দাড়াঞা সমূৰে যোড় হাতে কিবা মাগে। ধে করয়ে চিতে কে যাবে প্রতীতে বলরাম চিতে >> জাগে ॥২০॥৬৮৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পূথির ১১৫৪ ও প-র পূথির ১৩.৫৫ সংখ্যক পদ। ২। 'রাত্যে দিনে' প-র। ৩। 'দেখিতে' ইত্যাদি স্থলে 'আ'থি পালটিতে সাধে' প-র। ৪। ক, খ, খ, চ পূথিতে 'শ্রু' নাই। ৫। 'পরমাদ' ঘ, চ, প-র। ৬। 'মো মর' ক; 'মু মর্রো' ঘ। ৭। 'বালাং' ইত্যাদি স্থলে 'ডোমার বালাই লঞা মরি ষাই' প-র। ৮। 'আপনা' ইত্যাদি স্থলে 'বলিয়া আপনা' প-র। ৮। 'দাঙাইয়া' প-র-সা। ১০। 'বে কর্মে' ইত্যাদি স্থলে 'তথন যে করে চিত, কে যাইবে পরতিত' প-র। ১০। 'বলরাম দাসের চিত্তে' প-র।

বিভাব ৷১

কিবা সে কহিব ক্রিছ ক্রিছ ক্রিছ ক্রিছ ক্রিছ ক্রিছ দিব বেণ্ট কিসে।
সমূপে রাখিরা মুধ নিরখন্নে দ্বাণ ক্রিছ বাসে ॥

পান সাজাইয়া আপনার হাতে মোর মুখ ভবি ' দেয়। মোর মুখেদ দিয়া আদর করিয়া মুখে মুখ দিয়া । নেয়। मद्त्राँ भद्रताँ १ महे १ वँभूत्र वालाहे लिशा । না জানি কেমনে আচুয়ে এখনে১২ মোরে কাছে না দেখিয়া ॥প্রু১৩॥ বদন মাজই করতলে ঘন বসন করয়ে ১৪ দুর। পরশিতে অক সকলি সোঁপিলুঁ ধৈরঞ্জ পাওল > চর ১৬॥ নানা স্থপ দিয়া মরম বান্ধল বচন ঠেলিতে ১৭ নারি। করে অনুমতি যখন১৮ যেমতি১৯ তখনং তেমতি করি॥ কথাটি কহিছে ভোর সঞ্জে স্থি সোয়ান্ত ন পাঙ্ং হিয়া। মরি যাই হেন্^{২২} বলরাম কহে পিরিতিং বালাই লৈয়া ॥২১॥৬৮৪॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫৯ সংখ্যক ও
প-র পুথির ১৩/৫৬ সংখ্যক পদ। ২। 'কিবা'
ইত্যাদি হলে 'কি জানি কহিতে' প-র। ৩। 'বা'
প-র। ৪। 'নিরধিয়া' ক। ৫। এ হলে ঘ,
চ পুথিতে 'ঞ্জ' চিক্ত আছে। ৬। 'আপন' থ, ঘ,
চ। ৭। 'মুখ ভরি' হলে 'মুখে তুলি' প-র।
৮। 'হাখে' থ, প-র। ৯। 'মুখে মুখ দিয়া'
ছলে 'নিজ মুখ তুলি' প-র। ১০। 'মরো মরো'
ক; 'মোরু মোরু' থ। ১১। 'সই' শব্দ প-র
পুথিতে নাই। ১২। 'আছরে এখনে' হলে
'আছরে বন্ধুয়া' ঘ; 'আছরে এখনা চ; 'আছে
এউক্লেণ প-র-সা। ১৩। 'না জানি' ইত্যাদি হলে
'লা জানি কি করিছে শ্রাণ বন্ধুয়া' প-র। ক,

খ, প-র-সা ও প-র পুথিতে 'শু' নাই; খ, চ পুথিতে পুনরায় 'শু' চিহ্ন আছে। ১৪। 'করই' প-র-সা। ১৫। 'হইল' প-র। ১৬। 'বুর' প-র-সা। ১৭। 'পেলিতে' প-র। ১৮। 'বথনে' ক, খ। ১৯। 'বেমন' প-র। ২০। 'তথনে' ক, খ; 'তথনি' প-র। ২১। 'পাএ' খ। ২২। 'মিরি' ইত্যাদি স্থলে 'মরিয়া যাই' প-র। ২০। 'পিরিতির' খ, প-র-সা, প-র।

টীকা

২০—> >। "তোর" ইত্যাদি। হে স্থি! তোর সঙ্গে (ছই একটি) কথা বলিতে বাইরাও প্রাণে শান্তি পাইতেছিনা; অর্থাৎ আমার প্রাণ সর্বাণ প্রিয়তমের চিন্তার এরপ বিভোর হইয়া আছে যে, উগকে ক্ষণকালের জ্বল্য বলপূর্বাক অন্ত্র কোন প্রীতিকর কর্ত্তব্য কার্য্যে নিয়োজিত করিলেও যেন সে অন্ত্র হইয়া পড়ে! পদ-কর্ত্তা বলরাম বলিতেছেন,—(এরাধার) এই প্রকার (অপূর্বা) প্রেমের বালাই লইয়া মরিতে ইচ্ছা হয়! 'তোর স্থেমের বালাই লইয়া মরিতে ইচ্ছা হয়! 'তোর স্থামের ও সর্বান্তর্মান বাহমার বাহমার,— পদকর্তা বলরাম ইহাই ইলিতে বুঝাইয়াছেন। তুলনা কর্মন,—

"সর্ব্ধধর্মান্ পরিত্যজ্য মামেকং শরণং ব্রজ।
অহং স্বাং সর্ব্বপাপেভ্যো মোক্ষরিষ্যামি মা গুচঃ॥"
—গীতার খ্রীভগবদাক্য।

সিমুড়া ।১

নিজ পরসক স্থপনে না করে
আনে না পাতরে কাণ।
দিঠে দিঠে রহে নিমিখ না বহেং
নিরখে মঝু বরান ॥

পিরিভি কিরিভি⁸ কি না॰ সে বন্ধুর কহিতে কহিব কী°। কত উঠে চিতে সে সব চরিতে পরাণ নিছনি দী⁹ ॥ পুলকে আকুল খেণে খেণে তমুদ তিলেক না ছাড়ে সঙ্গ। রুসের আলাপ হাসির মিশালে অমিয়া সিনায় অঙ্গ॥ এত করি মোরে কোরে আগোরয়ে রপ্রয়ে বেশ বিশেষ। ধনি ধনি সেহ জ্ঞানদাস কহে যাহে এ পিরিভি-লেশ ॥২২॥৬৮৫॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুথির ১১৬ সংখ্যক পদ।

২। 'রহে' ক, খ, च, চ। ৩। 'কি না সে' ফ্লে
'সই কি না সে' ক, খ; 'সোই কি না সে' च. চ;
'কিবা সে' প-র-সা। ৪। 'পিরিতিকি রীতি'
ক, খ। ৫। 'কি' ক, খ, च, প-র-সা। ৮। 'তবু'
প-র-সা। ৯। 'আগোরর' ক।

টা কা

> — 8। "নিজ" ইত্যাদি। (প্রির্থম) সংপ্রথ নিজের সম্বন্ধে কোন কথা বলেন না; অত্যের কথারও কাণ দেন না; তিনি (সর্কানা) আমার পানে তাকাইরা থাকেন; (তাঁহার) (নেত্রে) পলক চলে না; (ভুধু) আমার মূধ নিরীক্ষণ করেন।

ভাষিমারি ৷>

কত নাস-বেশং করি পরায় পাটের শাড়ী সাধে সাধে সমূপে হাটায়। দেখিয়া হাটন মোর হইয়া আনক্ষে ভোর দুই বাহু প্রসান্ধিয়া ধায় ।

সই তেঞি° সে হিয়ার মাঝে জাগে। কত কুলবতা যাবে হেরিয়া ঝুরিয়া মরে সেহা যোড হাথে মোর আগে ॥ এ। অভিরুদে গরগরি কাঁপে পত খরহরি আরতি করিয়া কোলে করে। নিবিড^১ আ**লিজনে** ঘন ঘন চুম্বনে ডুবাইল রসের সাগরে॥ চন্দন মাখায় ১১ গায় দেয়^{১২} বদনের বায় নিজ করে তামুল খাওয়ায়। বিনি কাজে কত পুছে কত না মুখানি মোছে হেন বাসে দেখিতে হারায়॥ তুমি মোর ধন প্রাণ্ণ তোমা বিনে নাহি আন কহে পিয়া গদগদ ভাষে। যতেক পিরিতি তার জগতে কি আছে আর कि विलिद्य वनतीय प्रांटम ॥२०॥७৮७॥

পাঠান্তর

্বা হহাপ-র-সাপুথির ১১৬১ সংখ্যক ও প-র
পুথির ১৩০০ সংখ্যক পদ। 'ভাটিয়ারি' ছলে
'হুহুই' প-র। ২। 'কত নাস-বেশ' ছলে 'কত
না বেশ' ঘ; 'নাসবেশ' ক, ঋ, প-র-সা।
০। 'পরামে' ঋ, প-র-সা। ৪। 'য়য়' প-র।
৫। 'তেই' প-র-সা; 'বছু' প-র। ৬। 'ছেরিয়া'
ইত্যাদি ছলে 'ধেয়নে ভাবিয়া মোরে' প-র।
৭। 'দেই' ক,ঝ,ঘ,চ। ৮। 'হাতে' ক,ঋ,
প-র-সা। ৯। 'কোরে' প-র-সা। ১০। 'ঘন খন'
প-র। ১১। 'লাগায়' প-র-সা; 'মাঝাইয়া' প-র।
১২। 'দেই' প-র। ১৩। 'বা সে' ঘ। ১৪। 'থোশধন' ক; 'জাতিপ্রাণ' প-র। ১৫। 'কি বলিবৈ'
ছলে 'ঋণ গায়' প-র।

শিশুকাল হৈতে
পরাণে পরাণে নেছাং।
না জানি কি লাগিও কো বিহি গঢ়লঃ
ভিন ভিন করি দেহাং॥
সই কিবা সে পিরিতি তার।
আলস করিয়া নারিং পাদরিতেং
কি দিয়া শেষিবং ধাব ॥ধ্রু॥
আমার অজের বরণ লাগিয়া
শীত বাদ পরে শ্রাম।

बाननी ।>

প্রোণের অধিক করের মুরগী লইতে আমার নাম॥

আমার অজের বরণ সৌরভ যখন যে দিগে পায়।

বাত প্রসারিয়া বাউল ছইয়া •
তথন • দেগে ধায়॥

লাখ^{১২} কামিনী^{১০} ভাবে রাতি দিনি^{১৪}
বে পদ সেবিতে চায়^{১৫}।
ভানদাস ক্রে^{১৬} আহীর-নাগরী^{১৭}

পিরিতে বাহ্মিলা ২ তায় ২ ॥২৪॥৬৮৭॥

<u> পাঠান্তর</u>

১। ইকাপ-র-সাপুথির ১:৩২ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৪।০ সংখ্যক পদ। 'ধানশী' হলে 'কুহই সিন্ধুড়া' প-র। ২। 'লেহা' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'কি লাগি' হলে 'কি খেনে' প-র। ৪। 'কো বিহি গঢ়গ' হলে 'বিধাতা কেমনে' প-র। 'না জানি' ইজ্যাদি হলে 'না জানি কো বিহি, কি লাগি গঢ়গ' প-র-সা। ৫। 'করি দেহা' হলে 'কৈল দেহা' প-র-সা, প-র। ৬। 'নারে' ক, চ। ৭। 'পাল দিতে' ক, চ। ৮। 'ক্ষিব' ক। ১। 'প্রাণের' ইজ্যাদি হলে 'পরাণ পুতলি, অধিক মুরলী' প-র। প-র পুথিতে 'পরাণ পুতলি' ইজ্যাদি পংক্তিম্বর পুরের্ক পুরের্ক

সন্ধিবেশিত হইরাছে। ১০। 'বাউল হইরা' হংল 'বাউর হইরা' প-র সা; 'বাছ পদারিরা' ইত্যাদি হলে 'বাউর হইরা, বাছ পদারিরা' প-র-দা। ১১। 'লেশে 'প-র-দা। ১২। 'লাখ যে' প-র-দা। ১৩। 'লিখিমী' প-র। ১৪। 'দিনে' খ। 'ভাবে রাতি দিনে' বাক্যটি প-র পুথিতে নাই। ১৫। 'বে পদ' ইত্যাদি হলে 'ভাবিরা না পার বাবে' প-র-সা, প-র। ১৬। 'জ্ঞানদাস কহে' হলে 'কহে চণ্ডীদানে' পর; 'কবিশেখরে কহে' সা-প, ২০১ সংখ্যক পুথি। এভব্তির এই পুথিতে সামান্ত সামান্ত অনেক পাঠ-ভেদ আছে, ভাহা এ হলে বাছল্য-ভরে উদ্ভূত হইল না। ১৭। 'আহীর' হলে 'আভির' প-র। ১৮। 'বার্ক্ল' ক, চ; 'বার্ক্লি' প-র-সা। ১৯। 'ভারে' প-র।

मिक्ज़ 1>

পুছদি রে দখিং পিয়ার কথা কি পরাণ নিছনি দিয়ে। গইড়ের° কুটাগাছি শিরে ঠেকাইয়া আলাই বালাই তার নিয়েণ ॥ধ্রু॥ মুখানি মোছাঞা হাত দিয়া দিয়া मोश निशा निशा गाँ। ক্তেক যতনে পাইয়া রতনে থুইতে ঠাঞি না' পায় ॥ কভ না আদরে इटमब वामदब निमशन देकल त्मादत । নিমিখ ভেজিলে िटन ना प्रिथित ভাসয়ে নয়ান-লোরে 🛭 সে হেন নাগর রদের সাগর গুপের নাহিক সামা। मान (गावि**टम**) কহল আনন্দে> **जूबि म् कान महिमा?? ॥२०॥७৮৮॥**

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্রথির ১১৬০ সংখ্যক পদ।

২। 'পিরার' ইত্যাদি স্থলে ক, খ, ব, চ প্রথির
পাঠ বথা—'এমন পিরার কথা কি পুছ্সি রে সথি।'

৩। 'নিছিয়া' খ, ঘ। ৪। 'গড়্যের' ক; 'গড়্যার'
প-র-সা। ৫। 'আলাই' ইত্যাদি পাঠ সকলগুলি
প্রিতে দৃষ্ট হউলেও উহা ছলোভক-দোখ-ছুট বলিরা
সম্ভবত: 'আলাই বালাই নিয়ে' শুদ্ধ পাঠ হইবে।
৬। 'মুছাইয়া' প-র-সা। ৭। 'লৈয়া লৈয়া' প-র-সা।
৮। 'নাহি' খ। ১। 'গোবিন্দা প-র-সা।
৮। 'নাহি' খ। ১। 'গোবিন্দা পে-র-সা।
৮। 'আনন্দ' প-র-সা। ১১। গোবিন্দাবের এই
পদ্টির প্রথম ছুইটি শ্লোকের সহিত বিভাগতির
'এমন পিরার কথা কি পুছ্সি রে স্থি' ইত্যাদি
পদের প্রথম ছুইটি শ্লোক অভিন্ন; বিভাপতির উক্ত
পদ্টি পদক্ষতক্ষর চতুর্ব শাধার সপ্রবিংশ প্রবে
উদ্ধুত হইয়াছে।

তথা রাপ ।১

যবে দেখা দেখি হয় ২ হেন তার মনে লয় ও
নয়ানে নয়ানে মোরে পিয়ে।
পিরিতি আরতি দেখি হেন মনে লয় স্থি
আমি তারে চাহিলে সে জিয়ে॥
আহা মরি মরি মুঞি কি কবং আরতি।
কি দিয়া শোধিবং শ্রাম বঁধুর পিরিতি॥গ্রা॥
রসিয়াও নাগর বে নিচুই ত্য়ারে সে
বিনা কাজে কত আইসে যায়।
ভ্যানদাস তবে কয় তোমার চিতেও যেবা লয়
ভাহা বা কহিবা তুমি কায়॥২১॥৬৮৯॥

পঠিক্সির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৮৪ সংখ্যক পদ। ২। 'হরে' ক, খ, চ। ৩। 'লরে' ক, খ, চ। ৪। 'করব' ক। ৫। 'কুধিব' ক, ঘ, চ। ৬। 'রসিক'ক। ৭। 'চরিভ'ক।

भाषात ।>

কামুর পিরিভি কাহারে কহিব তুমি সে বেদনা সই। সে রস -ধাধসে ধস-ধস হিয়া তেঞি সে তোমারে কই॥ ও নব নাগর রদের সাগর আগর° সকল গুণে। সে সব চরিতি আদর পিরিভি युतिया भित्रव (भारत) ॥ পিরিতি-বোলে কত নাছলে সে কি না সে আকুতি সাধে। মধুর ভাষিয়া' মান নাশিয়া शिक्षा मत्रम वाँरभ्भ ॥ করিয়া ভরিয়া ১৩ **म भारतभ्य कारलए** क वहरन वहन हिया। বিধু বিড়ম্বিয়া মধুর চুন্বিয়া পরাণ লইল পিয়া॥ কাঁচু'য়া • ফাঁড়িয়া সে রস লুটিয়া जुलिशं भर्भ जम् । ভরমে ১৬ কি কৈল ১৭ কমল-কোরক গুণেত ঘূণিভাগ তমু ॥ মুখের > মাধুরী ও দিঠি-চাতুরী লহরী কত বাং আর। युद्धि ना महरव्रश्र এ সুখ্য শুনিতে দাস গোবিন্দ ছার ॥২৭॥৬৯০॥

থাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পথির ১১৬৫ ও ১৪১৯ সংখ্যক পদ। এই পদটি তৃতীর শাধার একাদশ পরবে ১৮৮ সংখ্যক পদরূপে পুনরার উদ্ভ হইরাছে; উহাতে পাঠের কিঞ্জিৎ ব্যতিক্রম সৃষ্ট হর। ২। 'সে রস' হলে 'রসের' ক, খ, ঘ, চ (১৩৮ সংখ্যক পদ); 'সে সন্তা' প-র-সা (১৪১৯ সংখ্যক পদ)।

৩। 'আগোর' ক (১৯০ সংখ্যক পদ)। ৪। 'সে সব' ইত্যাদি পংক্তি হলে 'সে রস পিরিতি আদর আরিডি' ক, চ (১০৮ সংখ্যক পদ); 'সে স্ব পিরিতি আদর আরতি' ধ, ঘ (৯৩৮ সংখ্যক পদ)। e। 'বুৰিরে' প-র-সা (১১৯৫ সংখ্যক পদ)। 🖜। 'মরিরে' ক, চ (৬৯০ সংখ্যক পদ)। ৭। "মনে" ক (৬৯০ সংখ্যক পদ), প-র-সা (১১৬৫ मः थाक भन)। ४। 'त्वांन' क, ४, च, ठ (२०४ मः थाक श्रम)। २। 'हम' क, ह, (२०४ সংখ্যক পদ)। ১০। 'ভাখিয়া' ক (৯৩৮ সংখ্যক পদ)। ১১। 'পিরিতি-বোলে' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি ৬৯০ সংখ্যক পদে কোন পুথিতেই নাই; कि क ৯ ७ , मःथाक भाग मकन भूषिए उरे मृष्टे हन । ১২। 'মোর' ক। ১৩। 'ভাবিয়া' ক, চ (৬৯٠ সংখ্যক পদ)। ১৪। 'কাঁচুলী' ক (১০৮ সংখ্যক পদ)। ১৫। 'জুলিয়া' ব, চ; 'অলিমা' ক (৯৬৮ সংখ্যক পদ)। ১৬। 'ভরম' থ (৯৩৮ সংখ্যক পদ)। ১৭। 'হৈল' ক (৯০৮ সংখ্যক পদ)। ১৮। 'শুণেত ঘূণিত' স্থলে 'গুণিতে ঘূণিত' ক, খ; 'গুণেতে ঘূর্ণিত' প-র-সা। ১৯। 'রদের' প-র-সা (৯৩৮ সংখ্যক পদ)। ২০। 'কত বা' ফ্লে 'বহুদ্নে' ক, ব, ব, চ (৯০৮ সংখ্যক পদ) 'বহিয়া' প-র-সা (>८) नःश्राक भवे)। २>। 'व स्थ' व्राम 'त्र म्नन' श-म-ना (১৪১৯ সংখ্যক शन)। २२। 'यूदि ना मद्रस्त 'ऋरण 'सूद्रिणा मद्रस्त्र' প-द्र-मा; (১১৬৫ সংখ্যক পদ); 'ঝুরিরা মকক' ক, খ, ঘ, চ; (৯৩৮ नरभाक भन); भ-त्र-मा (১৪১৯ मःश्वाक भन)।

जिका

৯—১২। "পিরিভি"- ইত্যাদি। সেই প্রিরতম প্রেমপূর্ণ বাক্যে কত প্রকার কৌশলে (তাঁহার) কোন্ অভিলাব না নিদ্ধ করেন? (তিনি) মধুর সম্ভাবণ করিরা, (আনার) মান বিদ্রিত করিরা, হাজের মোহিনী শক্তি বারা কিংবা অবলীলাক্রমে (আমার) প্রাণকে (প্রেমের বন্ধনে) আবদ্ধ করেন।

১৩--১৬। "লে যোগে" ইভ্যাদি। সেই

প্ৰিৰ্ভম আমাকে ক্ৰোড়ে ব্সাইয়া, নিজের ক্ৰোড় পূর্ণ করিয়া অর্থাৎ আমাকে নিজের বাছ-পাখে पृष्कार अर्घा देशा विका, आमात मूर्य निरस्त मूर অর্পণ করিয়া, চক্রকে অসুকরণ করিয়া মধুর চুম্বন দিয়া, (ঐ সকল কাৰ্য্য দ্বারা) আমার প্রাণ (ভুলাইয়া) লইয়াছেন। (সংস্কৃতে 'বিড়ম্ব' ধাতুর প্রসিদ্ধ অর্থ 'অহকরণ করা'; যথা,—'পুগুরীকাত-বিকসংকাশচামরঃ। ঋতুবিভ্রন্মাদন পুনঃ প্রাণ তচিছুরম্।"—রঘুবংশ ৪।১৭; "বিভ্ছামানা नवकन्तरेनरस्य विवाह-ध्याक्रन रनाहन-श्रीः।"--- त्रचूदःम, ১০৷২৯ ; হৃতরাং 'মধুর চুম্বিয়া' ইত্যাদি বাক্যের তাৎপর্য্য এইরূপ হইতে পারে যে, চকোর ধেমন চত্তেরে হ্রধাপান করে, সেইরূপ আমার অধর-হ্রধা পান করিয়া। অথবা যদি 'বিভৃষিয়া' শব্দের আধুনিক 'ক্লেশ দিয়া' অৰ্থ ধরা যায়, তাখা হইলে উক্ত বাক্যের তাৎপর্য্য এইরূপ হইবে যে, 'চক্র ইহার নিকট কি ছার! এইরূপ আমার বদনের প্রশংদা বারা চজকে ক্লিষ্ট করিয়া, মধুর চুম্বন দিয়া' ইত্যাদি। প্রথমোক্ত অর্থই পদ-কর্তার অভিপ্রেত ব্লিয়া (वाथ इम्र।)

১৭— ২০। "কাঁচুলা" ইত্যাদি। সেই প্রিরতম (সভোগোৎকঠার আতিশব্য হেতু) আমার কাঁচুলি ছিল্ল করিলা, (কমল-কোরকবৎ জনবুগলের) রদ (এক অর্থে— মধু; অপর অর্থে— অথ) সূঠন অর্থাৎ বলপুর্বাক আত্মলাৎ করিলা মধু-পান-সূক্ক প্রমারের প্রার (অপর অর্থে— মছপের প্রার) মত্ত ইইলা (আমার জন-মুগলকে) কমল-কোরক মনে করিলা বাহা আচরণ করিলেন, (তাহা কি বলিব ?) তাহার গণে আমার দেহ পুণ-বিদ্ধ অর্থাৎ পুণ-বিদ্ধ বানা ইত্যাদির প্রার কর্জানিত হইলাছে। ('খুণিত' শব্দ জন্ম পক্ষেরিত' বুলিতে হইবে। 'অত্যত্ত কর্জানিত' বুলাইনার উল্লেক্টেই 'খুণিত' শব্দের প্রারাণ করার, এখানে উক্ক বাক্যার্থ-রূপ বন্ধ দারা বিদ্ধান্য করার ব্যালার ক্রান্তার বিশ্বান্য করার ক্রেমান্ত করার ব্যালার ক্রেমান্য করার ব্যালার ক্রান্য বন্ধ করার ব্যালার ক্রান্য বন্ধ করার ক্রেমান্য করার ক্রিমান্য করার ক্রেমান্য করার ক্রেমান্য করার ক্রেমান্য করার ক্রেমান্য করার ক্রিমান্য করার ক্রেমান্য করার ক্রেমান্য করার ক্রিমান্য করার ক্রেমান্য করার ক্রিমান্য করার ক্রেমান্য করার ক্রিমান্য করা

ভক্তরিত হইরাছে'— এই উপনা অণকার ব্যঞ্জিত
হইরা, উত্তম-কাব্যন্দের প্রধান্দক হইরাছে। ইহা
লক্ষণা-মূলক 'অত্যন্ত-তিরস্কৃত-বাচ্য' ব্যক্ষের স্থানর
উদাহরণ। 'ঘূর্ণিত' পাঠ গ্রহণ করিলে, কিংবা
'ঘূণিত' শক্টিকেই 'ঘূর্ণিত' শক্ষের অপভ্রংশজাত
করনা করিলে, উহার 'ঘূর্ণিত' অর্থাৎ 'মহ্নির' অর্থ
করিলেও করা ঘাইতে পারে; কিন্তু তাহাতে অর্থের
কোন গুরুত্ব পাকে না। তুলনা করুন,—
"যত রূপ তত্ত বেশ ভাবিতে পাঁজর শেষ"
—জ্ঞানদাস; প-ক-ত; ২৯২ সংখ্যক পদ।

धानभी ।>

হাসিয়া হাসিয়া মুখ নিরখয়েং মধুর কথাটি কয়। ছায়ার সহিতে ছায়া মিশাইতে পথের নিকটে রয় 🛭 আলো সই সে জন মানুষ নয়। তাহার সঙ্গে যে৽ পিরিতি করয়ে কি জানি কি তার হয়॥ ঞ⁸॥ সহজে রসের আকর পে সে যে ভাবের অঙ্কুর তায়। বাতাসে বসন উড়িতে আপন व्यक्त ८ठेकारेश याग्र ॥ চমক চলনি **७** गीम-रमान्नि व्रमगी-मानम-द्वात । সে পিয়া-পিরিতি জ্ঞানদাস কৰে মরমে পশিল তোর ॥২৮॥৬৯১॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৬৮ সংখ্যক পদ।
২। 'নির্থিরা' প-র-সা। ৩। 'সলে সে' প-র-সা।

। ক্ষড় প-র সাপুথিতে 'ঞ্চ' নাই। ৫।
'আকার' চ, প-র-সা। ৬। 'সেই' খ। ৭। 'ঠমক'
। ৮। 'সো' ক, খ, চ।

পঠমঞ্জী 13

একলা যাইতে যমুনা_ই-ঘাটে।
পদ-চিহ্ন মোর দেখিয়াও বাটে।
প্রতি পদ-চিহ্ন চুম্বয়ে কান।
তা দেখি আকুল বিকল প্রাণ।
লোকেঃ দেখিলে কি বলিবেও মোরে।
নাসা পরশিয়া রহিলুঁ দুরে।
হাসি হাসি পিয়া মিললঙ পাশ।
তা দেখি কাঁপয়ে গোবিন্দ দাস।।২৯॥৬৯২॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৬৭ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৪।২ সংখ্যক পদ। 'পঠনঞ্জী' স্থলে 'ধানত্রী' প-র। ২। 'ব্যুনার' ক। ৩। 'দেখিল' প-র। ৪। 'লোক' ক; 'লোকেতে' প-র। ৫। 'বিশিব' প-র। ৬। 'মিলিল' প-র-সা।

ভথা রাপ ৷১

দৈনান দোপরং সময়েও জানি।
তপ্তঃ পপে পিয়া ঢালয়ে পানি॥
কি কহিব সধি পিয়ার কথা।
কহিতে হৃদয়ে লাগয়ে বেথা॥ গ্রুণ ॥
তামুল ভথিয়াও দাঁড়াইণ পথে।
হেন বেলে পিয়াও পাতয়ে হাথেও ॥
লাজে হাম যদি মন্দিরে ঘাই।
পদ-চিহ্ন ভলে লুঠয়েও তাই॥
আমার অজের সৌরভ পাইলে।
ঘুরি ঘুরি জমু ভ্রমরা বুলে॥
গোবিন্দদাসের জীবন হেন।
পিরিতি বিষম মানহ কেন॥৩০॥৬৯৩॥
পাঠান্তর

১। ইংগ প-র-সাপুথির ১১৬৮ সংখ্যক পদ। ২। 'বোপোর' খ। ৩। 'সময়' খ,চ। ৪। 'তপক' ক, খ, ঘ, চ। ৫। প-র-সা পুথিতে 'ক' নাই। ৬। 'ভরিয়া' চ; 'ভথি যদি' প-র-সা। ৭। 'লাড়াইয়ে' ঘ; 'দাড়াইয়া' চ। ৮। 'হেন' ইত্যাদি ছলে 'অলথিতে আসি' প-র-সা। ১। 'লুট্রে' ক; 'লুটাই' প-র-সা।

গুণ কহিলে কি জানি হয়।
ক্ষিতে কহিতে অধির তমু
ধৈরজ নাহিক রয়॥ ইত্যাদি*
পুনশ্চ প্রকারান্তরং।
অথ স্বপ্নরদোদগারঃ।

बीरगोत्रहसः।

বিভাব 1>

করিব কি মুঞি করিব কি।
গোপতং গোরাপের প্রেমে ঠেকিয়াছি ॥ এ ॥
দীঘল দীঘল চাঁচর কেশ রসাল ছটি আঁথি।
রূপে গুণে প্রেমেণ ততু মাখা যেন দেখি ॥
আচন্দ্রতে আসিয়া ধরলণ মোর বুকণ।
স্থপনে দেখিলুঁ হাম গোরাচাঁদের মুখ ॥
বাপের কুলেরদ মুই কুলের ঝিয়ারী।
খণ্ডর-কুলের মুঞি কুলের বৌহারী ॥
পতিব্রতা মুঞি সে শভাইলুঁ পতির ২ কোলে।
সকল ভাসিয়া ২ গেল গোরা-প্রেম-জলে ।
কহরে নয়নানন্দ বুঝিলাম ইহা ।।
কোন পর হারে এখন নিবারিবা হিয়া ॥৩১॥৬৯৪॥

পাঠান্তর

১। हेहा अ-ब्र.मा भूभित ३) ५२ मश्श्रक ६ भ-व পুথির ১০। ১৯ সংখ্যক পদ। ২। 'গুপত' প-র-সা 'গোপত' ইত্যাদি পংক্তির হলে প-র পুৰির পা বথা---'গোরাঙ্গচান্দের ভাবে পড়িয়াছি।' ৩। ব থ. ঘ. চ পুথিতে 'এ নাই। ৪। 'দিবল দিবল य. ह ; 'मोधन मोवल' इंछ्यामि भरक्षियम भ-त श्थिए नाहे। ৫। '(श्रम' घा ७। 'स्त्रिन' ৭। 'আচ্মিতে' ইত্যাদি পংক্তিম্বর প-র পুথিতে ভণিতার পূর্বে সন্নিবেশিত হইয়াছে। ৮। 'কুলে প-त्र। २। '(वाहाति' हः 'वस्त्राति' भ-त्र। ३० 'যে' প-র-সা। ১১। 'পতি' প-র-সা। 'ভাঙ্গিরা' ক, থ, প-র-সা। ১৩। 'গোরা-প্রেম জলে' হলে 'গো প্রেমজলে' ব; 'নরনের জলে প-র। ১৪। 'কহ নয়নানন্দ' ইত্যাদি ভণিতা পংক্তিদন্ন প-র পুথিতে নাই; উহার জন্ম এক ফাঁক আছে।

> বিভাষ ৷১ নবঘন-কিরণ-বরণ নব নাগর মন্দিরে আওল মোর। লোল নয়ন-কোণে মদন জাগায়লং মৃত্র মৃত্র হাসি বিভোর ॥ সজনি কি কহব রঙ্গনি-আনন্দ। স্বপন-বিলোকন কিয়ে ভেল দর্শন म्यू मत्न नागन धन्न ॥ अ ॥ উর পর কমল- পাণি অবলম্বনে দূরে করল আনোআন। নিবিছক বন্ধ-৮ বিমোচন নাগর कि कत्रण किष्ट्रे ना जान ॥ তৈখনে মদন কুত্ম-শর ছানল जन-जन जीवन भान। গোবিন্দ দাস কহ গৌরি-ভারাধ্য বিকল कि यादेख ভোরান ।৩২।১৯৫।

 ^{&#}x27;গুণ কহিলে কি লানি হয়' ইত্যাদি পদটয়
বাকি অংশ কোন প্রথিতেই উদ্বৃত হয় নাই; য়ৢতয়াং
ভাহা এ ছলে য়ুয়িত কয়া গেল না।

পঠিক্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১:৭০ সংখ্যক ও প-র
পুথির .৩,৪১ সংখ্যক পদ। 'বিভাষ' স্থলে 'ক রুণা'
প-র। ২। 'জাগাওল' ক; 'লাজাওল' প-র।
৩। 'সপন বিলোকনে' ঘ,চ, প-র। ৪। ঘ,চ
পুথিতে 'ঞ্চ' নাই। ৫। 'পাণি' প-র। ৬। 'ক্যল'
প-র। ৭। 'অবলশ্বন' প-র। ৮। 'নিবি নিবয়'
প-র। ৯। 'শ্রে' প-র। ১০। 'ভোমার' ঘ।
টীকা

৫—१। "সঙ্গন" ইত্যাদি। হে স্থি! বজনীর আনন্দ কি কহিব ? (তবে) উহা অপ্ল-দর্শন কিংবা (সাক্ষাৎ) দর্শন হইল—(সে বিষয়ে) আমার মনে গাঁধা লাগিল!

দ—১১। "উর" ইত্যাদি। (কিন্ধ সেই সন্দেহ অধিক ক্ষণ রহিল না;) নাগর (আমার) বক্ষের উপর (তাঁহার) পদ্ম-হস্ত অর্পণ করিয়া অন্তল্ডাব অর্থাৎ ইহা অপ্র-দর্শন, কি স্পরীরে মিলন—সেই সন্দেহ বিদ্বিত করিলেন; নাগর কটির বসন গ্রাপ্তির বিমোচন (এবং অক্সান্ত কার্য্য) কি করিলেন, (আমি) কিছুই টের পাইলাম না অর্থাৎ রুসাভিশ্যে আমি অচেতন হইয়া পাড়লাম। (ইহা ঘারা ইরাধার প্রগল্ভা-নারিকা-ভাব ব্যক্ত হইতেছে; যথা—"অ্রান্ধা গাড়তাক্ষণ্যা সমস্তরভকোবিদা। ভাবোক্ষতা দ্বব্রীড়া প্রগল্ভাক্রান্তনারকা॥" ইতি সাহিত্য-দর্শণ)।

ভথা বাগ।১

পরাণ-বন্ধুকেই স্থপনে দেখিলুঁ
বিসয়া শিয়রই পাশে।
নাসার বেশর পরশ করিয়া
স্থাত মধুরই হাসে॥
পিয়ল ইবরণ বসন খানিতে
মুখানি আমার মোছেই।
শিথান হইতে মাণাটি বাহুতেই
রাধিয়া শুক্তল কাছেই॥

মুখে মুগ দিয়া সমান হইয়া বধ্য করল কোরে ।। চরণ উপরে চরণ পসারি১১ পরাণ পাইলুঁ বোলে॥ অঙ্গ-পরিমল গুগন্ধি চন্দ্ৰ কুকুম কন্তুরী পাবা : পরশ করিতে রস উপজিল জাগিয়াং হইলু হারাত ॥ চকিতে> বাঁট্ৰ কপোত পাগীরে১৪ বাজিলে যেমন ১৬ হয়। **ह छोलामभ्य करह** এমতি হইলে আর কিফ পরান রয়ফ ॥৩৩॥৬৯৬॥

পাঠাশ্বর

়। ইহা প-র-সা পুণির ১ ৫৮ সংখ্যক ও প-র পুথিব ১ হা৪ সংখ্যক পদ। ২। বিশ্ববে প-র-সা। ০। 'নিউর' পর-দা। ৪। 'ঈষ্ঠ মধুর' স্থলে 'क्रेयम क्रेयम' প-র-সা; 'ইসত ইসত' প∹র। ৫। 'পিজ্ন' প-র-সা। চণ্ডাদাদের মুদ্রিত সংস্করণ-গুলিতে অশুদ্ধ 'পিঞ্চল' পাঠই গৃহাত হইমাছে। প্রীক্ষয়ের বসন পিঙ্গল-বর্ণ নঙ্গে; উহা পীত-বর্ণ। সংস্ত 'পীত' শক্ষের অপতংশ হ তে 'পিয়ল' শক্টি উৎপন্ন হটয়াছে। ৬। 'মৃছে' প-র-দা। ৭। 'শিথান' ইত্যাদি স্থলে প-র-দা পুথির পাঠ ষণা— 'वालिम উপরে মাথাটি পুইয়া'। ৮। 'রাখিয়া' ইত্যাদি স্থলৈ 'ওডল আমার কাছে' প-র-দা। ৯। 'সমুপ' প-त-मा। ১०: 'तकुश्च' हेडामि ऋत्म 'आमादि न्देश (कांत्न' श-ब-मा। ১)। 'ध्वम शर्माबि' স্থলে 'পদারি চরণ' ক, ধ, প-র দ । 😜 । 'জাগিতে' প্-র-সা। ১৩। এ স্থলে প-র-সা পুথিতে 'ఈ' 'পক্ষেরে' প-র। ১৫। চিহ্ন আছে। ⇒৪: 'চক্ষেত্র' প-র। ১৬। 'সেমত' প-র। ১৭। 'ধ্তনাথ' পর। পদরত্বাকর গ্রন্থের সম্বারিভা ক্মলাকাম্ভ এই প্রেসিদ্ধ পদটি যত্নাথ দাসের রচিত ৰলিয়া বিশেষ-ক্লপে জানিয়া শুনিয়াই ভণিতায় তাঁহার

নাম দিয়াছেন কিংবা অসন্তর্ক লিপিকর কর্ত্তক ভূলে বছনাথেব নাম লিখিত হই য়াছে, তাহা বুঝা যায় না। আমরা প্রাচানতর প্রথিগুলিন প্রমাণ সম্প্রারে ইছা চণ্ডীদাদেব হচিত বলিয়াই বিবেচনা করি। ১৮। 'আর কি' স্বলে 'তবে কি' প-র। ১৯। 'কপোত পাখীরে' ইন্ডাাদি গংক্তি চারিটির পরিবর্ত্তে প-র-দা প্রথিতে নিম্নলিখিত পাঠ দৃষ্ট হয়; যথা,—

"চণ্ডীদাসে বোদে ভান বিনোদিনি ভোৱে কি ব্যিব আর। মৃত্রি অভাগিনী জনম-ত্রথিনী পুন কি দেখিব আর।"

धानभी ।ऽ

বন্ধুর সক্ষেত্তে আজ্জ যাইতে নারিলুঁ গো পাপ নন দ্নী হেল বাধা। **ছখে**তেং হাপন ঘবে শুভিয়া রহিলুঁ গো িহি পূবাইল মন-সাধা ॥ সজনি সেও স্থথ কি কহিব অনেক। পিয়া হ্লাসি যেন মোরে নিকুঞ্জ-কামন ঘরে স্বপনে হইল পরতেক॥ বুকে বুকে মুখে মুখে নিবিড় মদন-ও্রখে কত না আরতি সে না কথা। ননদী-জনিত চুখ জাগরণে যত ছিল घूमाहेल राम भव रवशा ॥ কত না যতন করি বেশ বনাইলঙ গো এ রাস-বিলাস⁹ কৈল ক'ত। তাহা কি কহিব গো এক মুখে তোহে হাম রভস কোতুক যত যত॥ হেন কালে নিঁদ টুটি জাগিয়া বসিলুঁ দুগো अथन नातिलूँ त्विवादत्र। সেই ছইতে প্রাণ মোব আনছান করে গো বিন্দু পরবোধে বাবে বারে ॥৩৪॥৬৯৭॥ रेञानि अक्ष-तरमानभातः।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৭১ সংখ্যক পদ।
২। 'ছথিতে' ব, চ। ৩। 'গো' ক। ৪।
'হইফু'ক। ৫। 'গেল সব বেথা' হুলে 'গেলি
সব বেথা' থ, প-র-সা। ৬। 'বনাইলুঁ' থ।
গ। সকলগুলি পুথিতেই 'রাস-বিলাস' পাঠ
কাছে।৮।'বসিলাম' প-র-সা। ৯। 'আনচান'ক।

পুনশ্চ দিনান্তে প্রকারান্তরং যথা সখ্যক্তিঃ।

তথা রাগ।১

হেদে লো তোমাবে ভাল না দেখিয়ে আজি। কালা-মাণিকের বাভাদে এং বুঝি मिकल (भाकुल-त्रांकि ॥ १४०॥ ভাবে ভরল সকল অঙ্গ মুখে ত না সরে । আনেশে অবশ অথির চরণ **४३८१ ना याग्र शा**॥ তর তর রাঙ্গাণ নয়ন-যুগল সঘনে নিশ্বাগ ছাড়োও। পীন পয়োধর বসনে ঝাঁপিয়া অঞ্চল কেনে মোড়ো । পুছিলে মনের মরম না কহ মাথা তুলি নাহি চাও। যতুনাথ কছে এ দোষ বড়ই मद्भव मको ভাঁড়াও ।। १३ ॥७৯৮॥

পাঠান্তর

১। ই৹াপ-র-সাপৃথির ১১৭২ সংখ্যক পদ।
 ২। 'দে'ক। ৩। ক, খ, চ পৃথিতে 'ঞ্চ' নাই।
 ৪। 'মুখে ত না সরে' ছলে 'মুখে না নিছরে' প-র-সা। ৩। 'ছাড়া'ক।

৭। 'বসনে ঝাঁপিয়া' ছলে 'ঝাঁপিয়া ঝাপহ' প-র-সা। ৮। 'মোড়' ক। ৯। 'পহিলে' প-র-সা। ১০। 'ভাড়াও' ক, ঝ, ঘ, প-র-সা।

পঠমপ্ররী 13

শুন শুন আবে সধি আজুক রক্ষ।
রজনি গোঙায়লুং স্থপুরুখ সন্স॥
মদন-মনোহর স্থান্দর বেশ।
মন্দিরে মোর কয়ল পরবেশ॥
পাণি পাণি গহি বসাওল পাশ।
শশি কুমুদিনি জমু উপজল হাস॥
কাঁচুলি ফাঁড়িং কুচ-কুস্ত বিদার।
নিবি-বন্ধ ফুগইতে টুটল হার।
করে কর জোরি আলিক্ষন দেল।
হাদয়ক দারিদ তৈথনে গেল॥৩৬॥৬৯৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাগুথির ১১৭৩ সংখ্যক পদ। ২। 'গোভায়ণ' ক, প-র-সা। ৩। 'ফারি' ₹,চ।

ভণা রাগ ৷>

যব কাপু আওল মন্দির মাঝে।
আঁচেরে বদন আঁপায়লুং লাজে॥
করে কর বারি ফুয়ল চিরুও মোর।
পিয়া বড় চিঠিও কর রাখল আগোর ॥
কি কহব রে স্থি কামুক নেহাও।
ও স্থাধ মুগধ মঝু দেহা ॥ধু॥
প্রেম পরশ-রস কয়ল অপার।
কত পরথাপল পিরিভি-প্সার॥
চূপনে চূয়লা অধরক দাগ।
কি কহব সে সব সময় সোহাগ।

নিবিড়-আলিগনে বিগলিত স্বেদ। লুবধ মনোভব নহ° পরিচেছদ ; উপজল• আরতি কহন না যায়। জ্ঞানদাস কহ সাম কে>• পায়॥৩৭॥৭০০॥

পাঠাম্বর

১। ইঠা প-র-সা পুথির ১১৭৪ সংখ্যক পদ।

২: 'ঝাপাডলু' ক, খ; 'ঝাপায়ল' প-র-সা। ৩।
'চীর' ক। ৪: 'চাট' খ, চ, প-র-সা; 'টাট' ক।

৫। 'লেহা' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'চুম্বল' ক,
প-র-সা। ৭। 'নংগ' প-র সা। ৮। 'পরিছেল'
খ। ৯। 'উপঞ্জিল' ক, চ, প-র সা। ১০। 'সীম
কো' চ; 'স্মক' প-র-সা।

वैद्रांश ।>

রুপথ খেরি লোচন ভিরপিত ভেল।
গুণ শুনি শ্রবণ সফল ৈ গেল।
মনক মনোরথ মনমথ দেল।
চ দন-চাঁদেও চাঁত হবি নেলও।
এ স্থি এ স্থি আজুক রক।
শুধই স্থায় সিঁচিতেও ভেল অজা।
আরতি গুরুয়া পিরিভি নহ থোরও।
লাধ মুখে কহিতে না পাইয়েও ওর।
পরশা অবশ তরু বেশ নিরঝাস্পার্থ।
ঘামল সব তরু উপজল কম্পা।
সরস সম্ভাধন হাস গোনপাটা।
গোধুল অধ্রে অধ্রে লেইও বাঁটি॥
করে কত ভাতি কয়ল কভ রক।
ভাবন চহে তুর্ত-তনু আধ-আবে অকা।

পাঠা ধর

100119034

১। হকাগ-র-বাপুথির ১১৭৫ সংখ্যক প্রদা ২। কুপ'ক, খ, ৮, প-র-সা। 'কুপ' পাঠে হন্দোভল ঘটে; স্তরাং ঘ পুথির 'রুপ' পাঠই
সমীচীন। ছন্দের অসুরোধে দীর্ঘ অরের পরিবর্জে
লঘু অরের প্ররোগ পদাবলি-সাহিত্যে অনেক দেখা
যায়। ০। 'চন্দনে চান্দে' ঘ; 'চন্দন চন্দ' চ।
৪। 'চৌত হরি নেল' হুলে 'চিত রহি গেল' ক,
চ, প-র-সা। ৫। 'স্থায়ে সিঁচত' চ; 'স্থায়ে
শিচত' ঘ; 'স্থায় সচিত' প-র-সা। ৬। 'ঘোর'
প-র-সা। ৭। 'পারিরে' ক, চ; 'পায়ল' প-র-সা।
৮। 'নিরুষপে' ক। ৯। 'স্ভাবে' ঘ; 'সভাব
নহে' প-র-সা। ১০। 'লই' ক, চ।

বধা রাপ ৷১

পহিলহি পিরিতি নাহি পরকাশ।
দোতি শুভায়ল উনহিক পাশ ॥
ননদিনি নিঁদহি আপন ঘরে ভোর।
তৈথনে লেই গেও রসবতি চোর॥
কি কহব রে স্থি কেলি-বিলাস।
মদনমণিমন্দিরে কয়লু নিবাস॥
পহিলহি নিবিড় আলিঙ্গন দেল।
ছুহুঁ তমু পুল্কিত দিগুণ ছৈ গেল॥
প্রেম কয়ল কত বিদগধ-রাজ।
দেশনে দশনে ছুহুঁ ঘন ঘন বাজ॥
ছুহুঁ তমু লাগল ভালহি ভাল।
চন্দনে লাগল সিন্দুর-জাল॥
বেশ বসন ছুহুঁ আনহি ভেল।
জ্ঞানদাস কহ পুন কিয়ে কেলং॥

110011601

পাঠাশুর

১। এই পদটি ব পুথি ছাড়া মন্তান্ত পুৰিতে
নাই; অক্তান্ত পুথিতে 'সন্ধানি কি কহব রাইক সোহাপি' ইত্যাদি ৭১৬ সংখ্যক পদের পরে প্রক:-রাস্তর রমোদগারের গৌরচন্দ্র স্কর্ম বে—'আরে মোর গৌর কিশোর। ইত্যাদি' লিখিত হইরাছে, উহাকেই একটি পদ গণনা করিয়া ষষ্ঠ পল্লবের পদ-সংখ্যা পুরণ করিয়াছেন। স্ব পুথির উদ্ধৃত এই পদটি পদকলতক-এছের অস্ত কোনও স্থলে দৃষ্ট হয় না; কিন্তু 'আরে মোর গৌরকিশোর' পদটি ংয় শাধার ১৬শ পল্লবের প্রথমে সকল পুথিতেই উদ্ধৃত হইয়াছে; উহা ছাড়িয়া দিলে ১৬শ পল্লবের নির্দিষ্ট পদসংখ্যার পূরণ হয় না; এরপ অবস্থায় পুর্বোক্ত 'আরে মোর' ইত্যাদি পংক্ষিটিকে একটি স্বতন্ত্র পদ ध्विष्ठा यष्ठे श्रह्माद्व श्रम्भाश्या श्रुवन ना कविष्ठा 'পহিলহি পিরিতি' ইত্যাদি অভিনৰ পদ বারা ষষ্ঠ পলবের সংখ্যা পুরণ করাই সক্ষত ও বৈষ্ণবদানের অভিপ্রেত বলিয়া বোধ হয়। 'আরে মোর গৌর কিশোর' ইত্যাদি পদটি ৬৪ পল্লবে সম্পূর্ণ উদ্ধৃত না হইয়া, ১৬শ পল্লবে উহা সম্পূৰ্ণ উদ্ভ হওয়াও আমাদিগের উক্ত অন্মানের পোষকতা করিতেছে। ২। ব পুথিতে 'কেল' হুলে 'ভেল' পঠি আছে; উহাতে হীন-মিশন দোষ ঘটে বলিয়া অস্তু একখানা প্রাচান হস্তাল্থিত পুথির 'কেল' পাঠই সমাচীন বলিয়া গ্ৰহণ করা হইয়াছে।

जिका

৩—৪। "ননদিনি" ইত্যাদি। ননদী নিজের

বরে নিজায় ভোর ছিল, দেই সময়ে রদিকা (দৃতী)

চোর অর্থাৎ প্রাচ্ছর-কামুক শ্রীক্ষণকে (আমার

শ্যায়) কইয়া গেল।

৯—: •। "প্রেম" ইত্যাদি। রসিক-শিরোমণি
(শ্রীকৃষ্ণ) কত (প্রকারে) প্রেম-কেলি করিলেন!
(দংশনের প্রতিদন্দিতায়) উভয়ের দক্তে দক্তে খন
ঘন বাজিতে লাগিল অর্থাৎ এক জনের দক্তের সহিত
অক্ত জনের দক্তের সংঘর্ষণে শক্ষ উৎপন্ন হইতে
লাগিল। তুলনা করুন,—

"তলিরিতরোহপি শিহ্বরাকা দশনান্ ঘটরেৎ তালু শিহ্বাং চেতি শিহ্বাবুছম্।"

"এতেন বলাবদনগ্ৰদনগ্ৰহণং দানং চ ব্যাখ্যাতম্।"
— বাৎস্তায়ন-ক্ষত কামস্ত্ৰ।

রসোদগারামুরাগঃ। প্রকারান্তরং। ভত্র গৌরচন্দঃ।

वहरें 13

কহ না উপায় সথি কহ না উপায়।
নিরবধি হৃদয়ে জাগয়ে গোরা রায় ॥
পাসরা না যায় গোরাচাঁদের পিরিতি।
কি করিবং বিধি সে করিল কুলবতী ॥
কিবা সে মধুর বাণী অমিয়ার ধারা।
কিবা সে মোহন° রূপ সভী-মন-6োরা ॥
যন্ত কহে কি কহিব গোরা-গুণ যত।
বিকাইলুঁ° গোরা-প্রেমে এ জনমের মত ॥

10011081

পাঠান্তর

়। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৭৬ সংখ্যক পদ। ২। 'কহিব' খ। ৩। 'মধুর' প-র সা। ৪। 'বিকাইলাম' প-র-সা।

সখ্যক্তিঃ।

श्रामणी ।>

ঘন রসময় তমু অন্তর গহীন ।
নিমগণ কডছ রমণি-মন-মীন ॥
শ্রাবণে মকর গিমে কম্মু বিরাজ ।
হিয় মাহা লখিমি মিলিত মণি-রাজ ॥
এ সখি শ্যাম-সিন্ধু করি চোর ।
কৈছে ধরলি কুচ-কনয়-কটোর ॥ এ ॥
বছু মুখ চাঁদ স্থাময় হাস ।
গরলহি ভরল নয়ন-পরকাশ ॥
অধর পঞ্জার দশন মণিমোতি ।
রোচন-ভিলক মৈনাকক জোতি ॥

স্থবতরু-কুস্ম-স্থাদ্ধ নিবাস্ট্র।
চূড়া জলদ পিঞ্ধ্যু-ভাস ॥
গতি গজরাজ চরণ অরবিন্দ।
নখমণি-নীছনিট্র দাস গোবিন্দ ॥৪১॥৭০৪॥

পাঠান্তর

১! ইঙা পর-সা পুথির ১১ এ৭ সংখ্যক ও প-র পুথির ১ । ৭ সংখ্যক পদ। 'ধানন্দী' ছলে 'স্বৃহ্ই' প-র। ২। 'গহিন' ঘ! ৩। 'শ্রবন' ক, খ, চ. প-র-সা, প-র। ৪। 'ফণিরাজ' ক। শ্রবণে ম কর' ইত্যাদি কলিটির পরিবর্কে সা-প ১৮৪ সংখ্যক পুথির পাঠ ধথা,—

'মকর ছিলোপন শ্রবণক সীম।'

হিয় মাহা লখিমি ক স্বর গীম।'

৬। প-র ও সা-প ২০১ সংখ্যক পুথিতে 'এ
সখি' ইত্যাদি পংক্তিছর এই পদের প্রথমে সলিবেশিত

ইইয়াছে । १। 'ধয়ল' খ। ১। 'কুচ-কনয়কটোর' স্থলে 'কুচ কয়ল কঠোর' প-র-সা। ৯।
'গরলছ' ব, চ। ১০। 'পৌঙার' খ; 'পোয়ার'
সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি। ১১। 'বিলাদ' প-র।
২২। 'নিছনি' ক, খ, চ, প-র-সা, প-র।

ते का

১—১৪। সধী রসিকতা করিরা প্রীরাধাকে বিলিভেছেন—"খন-রসমর তমু" ইত্যাদি। বোধ-সৌকর্ব্যার্থে আগে "এ সিছি" ইত্যাদি ধ্ব কলিটির ব্যাধা। করা যাইতেছে,—হে সধি। তুমি খ্রাম-বিদ্ধুকে (এক অর্থে খ্রাম-রূপ সিদ্ধুকে; মণর অর্থে খ্রামনতা, ছবিগাহাতা প্রভৃতি গুণ হেতু সিদ্ধু তুল্য প্রীকৃষ্ণকে) চুরি করিরা কি প্রকারে (ভোমার) কুচ-রূপ খর্ণ-কটোরার ধারণ করিলে? (প্রীরাধা বে অক্সান্ত ব্রদ্ধানাদিণের প্রভাব হইতে শ্রীকৃষ্ণকে সম্পূর্ণ বিচ্ছিন্ন করিখা, তাঁহাকে নিজের জ্বন্ধ-সংলগ্ন করিরা রাধিনাছেন,—উহাই অভিশ্রোক্তি-অল্ডারের সাহাব্যে সধী সোণার কটোরার সমুদ্ধকে ভরিন্না

রাথা বলিয়া বণিত করায়—এ ছলে অভিশল্পেকি-মূলক বিষম অলম্বার ইইয়াছে। তুলনা কঞ্ন,—

"বিপুলেন সাগরশয়তা কৃক্ষিণা ভূবনানি বতা পপিরে যুগক্ষয়। মদবিভ্রমাসকলয়া পপে পুনঃ স পুরস্থিকৈতমধ্যৈকয়া দুশা॥"

— মাৰ, সাহিত্যদৰ্পণ-ধৃত।

ক্ৰিপ্তৰিতে মালা-ক্লপক অলকারের সাহায্যে স্থা ঐক্তফের সমুদ্রস্ক্রপতা প্রমাণিত क्तिर्ड्राह्म । "चन-त्रमम्ब" हेड्याह्म । 🖺 क्रस्थ्र एम्ह খন-রদময় (ফ্রঞ্চ-পক্ষে —খনাভূত রদের ধারা গঠিত অৰ্থাৎ আনন্দময়-বিগ্ৰহ ; সমুদ্ৰ-পক্ষে —মেঘ-জাত জলের মারা পরিপূর্ণ); (তাঁহার) অন্তর (ক্লফ্র-পক্ষে--হ্লার; সমুদ্র-পক্ষে--গর্ভ) গহান (ক্রফ পক্ষে--গভার অর্থাৎ ছবি গাস্থ; সমুদ্র-পক্ষে—গভার অর্থাৎ অগাধ); (উহাতে) কতই নারী-ছদয়-রূপ মৎস্ত নিমগ্ল হইয়া রহিয়াছে। (কোমল, লিগ্ন ও 'বুক ফাটেত মুধ ফোটে না' প্ৰবাদ হেতু ৰাক্য-শৃঞ্চ বলিয়া নারীর চিত্ত-বৃত্তিগুলির সম্বন্ধে মৎস্ত-কলনা সমীচীন হইরাছে)। ''শ্রবণে মকর' ইত্যাদি। (ममूर्फ (यमन, मिहेन्न) बीकृत्कत कर्ण व्यर्थार কর্ণের কুণ্ডলে মকর, গ্রাবার শব্দ অর্থাৎ শব্দের স্থার বেধাতার ও হানরে লক্ষার সহিত সংযুক্ত মণিশ্রেট (কৌজভ) বিরাশ করিতেছে। "বছু" ইত্যাদি। (বাঁহার) মুধ চন্দ্র ও হাজ কুধামর অর্থাৎ অমৃত-স্বরূপ (তাদাস্মো "নষট্" প্রভাষ) এবং (বাঁহার) নয়নের প্রকাশ অর্থাৎ দীপ্তি গরল থারা পরিপূর্ব। "व्यथत" हें ज्ञापि। (यांशांत्र) व्यथत अवान, पश्च মুক্তা-মাণ এবং গোরোচনা-তিলক (সমুদ্রগর্ভ-স্থিত) মৈনাকের কান্তিবশিষ্ট। "স্থরতক্র" ইত্যাদি। (বাঁহার) বাস-স্থণ (ঐ)-অব্দের সৌরভে) পারিকাত কুমুমের অগৰাবিশিঃ; (বাঁহার) চুড়ারূপে আছিত কেশ-রাজি জলধর ও (উহার) ময়ুর-পুছে (ইজ-) বহুকের কান্তিযুক্ত। "গতি" ইত্যাদি। (বাহার) ঐরাবত-পতি ভুলা, চরণ কম্প্রক্রণ,---

গোৰিন্দদান সেই প্রীক্তকের নথ-মণির নিছনি হইতে-ছেন। (লক্ষী, মণিশ্রেষ্ঠ কৌস্কত, চক্র, অমৃত, বিষ, ঐরাবত ও পারিজাত তক্র সমৃত্র-মন্থনে উভ্ত ও মৈনাক পর্বত ইক্রের ভবে সমৃত্রের গর্ভে বিলীন বলিয়া পৌরাণিক আধ্যায়িকা আছে।)

७वा वान ।>

কুটিল কটাখ-বিশিখ ঘন বরিখনে

হর করুং বিবিধ তরক।

নিজ তমু ঔষধি সরস পরশ-দধিলেশে থকিত ককু অক্স॥

হুন্দরিঃ পীতাম্বরি তুত্ঁ ভেলিং।
একলিং হিলোলিং শ্রাম-রস-সায়রুদ্দরকুঁ সার হরি লেলিং॥ ধ্রুঃ

হর-অবগাহ্ণ অন্তর মাহা মন্তর্পণ
মদন-কমঠ অবগাহিণ্ণ।
উচ-কুচ-মন্দর হার-ভুজগ-বর
মেলি মথন নিরবাহিণ্ণ॥

অধর হুধা পিয়-প্রেম লছ্মি হিয়াও

বাহিরে নখ পদ চন্দ।
প্রতি-তমু ভাবাং রতন পরিপুরলাং

গোবিন্দদাস রত্ত ধন্দ ॥৪২॥৭০৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৭৮ ও প-র পুথির ১৩৮ সংখ্যক পদ। ২। 'ছর করু' ছলে 'দুরে করি' ক, প-র-সা; 'ছর কর' ধ, সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি। ৩। 'করি' ক, সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি। ৩। 'করি' ক, বা, বা, চ, প-র-সা; 'এ ধনি' প-র; সা-প ১৮৪ সংখ্যক পুথির 'রুন্দরি' অথবা প-র পুথির 'এ ধনি' পাঠই সমীচীন; 'ছুন্দরি ধনি' পাঠে ছন্দোভদ্দ ঘটে। ৫। 'ভেলি' (সা-প ২০১, ১৮৪ সংখ্যক পুথি) ছলে 'ভেল' ক, ব, ব,

চ্ প র-সা, প-র। ७। 'একলি' (সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি) হলে 'এক' ক, ধ, ঘ, চ, প-র-সা, প-র। १। 'হিলোলি' (সা-প ১৮৪ সংখ্যক পুৰি) ন্ত্ৰে 'হিলোকে' ক. থ ইত্যাদি পুথি। ৮। 'দায়রে' क : 'मांगरव' थ । ३। 'लिनि' (मा-भ २०১। ১৮৪ সংখ্যক পুথি) হলে 'লেল' ক. খ ইত্যাদি পুথি। ১০। 'ছর অবগাহি' প-র। ১১। 'মহামন্তর' ৰ; 'মাহা মন্থন' সা প ১৮৪ সংখ্যক পুলি। ১২। 'অবগাহ' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা, প-র। ১৩। 'নিরবাহ' ক, ধ ইত্যাদি পূথি। ১৪। 'লখিমি হিয়' সা-প ২ • ১ সংখ্যক পুথি: 'ল্থিমা হয়' পর। ১৫। 'প্রতিতমু ভাব' স্থলে 'প্রীতি অমুভাব' ক: 'প্রতি অঙ্গ ভাব' প-র, সা-প ২•১৷১৮৪ সংখ্যক প্রথি। ১৬। 'পরিপুরিত' প-র, সা-প ১৮৪ সংখ্যক পুৰি; 'মৰি পুরল' সা-প ২০১ সংখ্যক পুৰি। ग्रेका

১—১৫। পুরাকালে দেব ও অকুরগণ পরস্পর বিবাদ হেতু সমুদ্র-মন্থনে অক্তকার্য্য হইলে, শ্রীকৃষ্ণ কৈটভী অর্থাৎ মোহিনীর ক্লপ ধারণ করিয়া श्रकोन्या (महे कार्यात्र निर्वाह करत्रन। এ श्रुरन শীরাধা বিপরীত সম্ভোগান্তে ভ্রম ও ব্যস্ততাবশত: ৺ফকের পীত বাদ পরিধান করিয়া স্থীদিগের নিকট উপস্থিত হইলে কোনও স্থী রসিক্তা ক্রিয়া পীতাম্বধারিণী শ্রীরাধাকে পুরাণোক্ত মোহিনীরূপে প্রতিপাদিত করিয়া তৎকর্ত্তক ক্লফ্ল-রস-সাগরের মন্থ্র-লীলা বৰিত করিয়াছেন। বোধ-সৌকর্য্যের জন্ত আগে 'অন্দরি' ইত্যাদি গ্রুব-কলিটির ব্যাথ্যা করা যাইতেছে। হে ফুক্সরি! ভূমি পীতাম্বরী (এক অর্থে—পীতবসন-ধারিণী ; অন্ত অর্থে—শ্রীকৃষ্ণ মণিণী) হইরাছ! (ভাই) ভূমি একাকিনী হইলেও শ্রাম-রস-সাগর (এক অর্থে--শ্রীক্বকের প্রেমরূপ শাগর ; অম্ব অর্থে—শ্রামল-কলপূর্ণ সমুদ্র) আন্দোলিত করিয়া (উহার) সকল সার পদার্থ হরণ করিয়া লইশ্বাছ। (শ্রীরাধা কি প্রকারে সমুদ্র-মন্থন করিলেন, উহি দেখাইবার বস বলিতেছেন—"কুটিল"

ইতাদি। শ্রীকৃষ্ণ পূর্ব অবভারে সেডু বন্ধনকালে তীক্ষ বাণ-বর্ধণে সাগরের তরঙ্গ নিবারিত ও সাগরকে নিশ্ল করিয়াছিলেন) তুমিও ঘন ঘন কুটিল কটাক্ষ-রূপ বাণ বর্ষণ ছারা (খ্রাম-রদ-সাগরের) নানা প্রকার তরক্ষ অর্থাৎ চাঞ্চল্য বিদ্রিত করিয়াছ এবং ভোমার নিজ দেহরপ মহৌষ্ধির রুস্বক্ত স্পর্শ-ক্রপ দধি-বিশু ধারা (উহাব) দেহ ওগিত করিয়াছ। (ছগ্ধকে স্তম্ভিত করার পক্ষে দ্ধিবিন্দুই মহৌষ্ধি বটে; এক্স ক্ষীরোদগর্ভে বাদ-কালে নিশ্চিতই দ্ধিবিন্দু-রূপ তাঁহার অঞ্চ-স্পর্শের মাহাত্মো ক্ষীরোদ-সাগরের হল স্তম্ভিত করিমাছিলেন ; প্রীরাধান্ত তাঁহাৰ অঙ্গ স্পৰ্শ হুখের আভিখ্য ছারা শ্রাম-রুদ-সাগরের নিশ্চলতা সম্পাদন করায় তাঁহার ক্লফক্লপতা থম'ণিও হইতেছে)। 'গুর-অবগাহ" ইত্যাদি। (খ্রাম-রদ সাগরের) তুরবগার (ক্লম্ব-পক্ষে---ছর্কোধ্য; সাগর-পক্ষে-- ছর্গম) অন্তরের মধ্যে (ক্লম্বঃ-भटक - क्वरबंद भट्या; मार्गद भटक--गर्डद मट्या) স্থির-গতি অর্থাৎ অবিচলিত মদন রূপ কৃষ্ম অবগাহন করিয়াছে; (উহা ' ভোমার কুচ-রূপ মন্দর পর্বত ও হার-রূপ সর্প-রাজ অনপ্রের স্থিত মিলিত হুইয়া मञ्चन-कार्या निर्काह कदियादाः "वधव्र" हेलामि । তোমার অধর (সমুদ্র-মন্থনোত্বত) এধা ; প্রিয়তমের প্রেমই ভোমার ক্রন্ত্ত (সমুদ্র মন্থনোডুত) লক্ষ্মী; (স্থ্যবের) বাহিরে (প্রিয়তমের প্রান্ত) নখ-চিক্ই (সমুদ-মন্ধনোডুত) চক্ত; তোমার প্রতিঅঙ্গ (সমুদ-মন্থনোডুত রন্ধ-রাজিশ্বরূপ) পুলক, কম্প প্রভৃতি ভাব-রূপ রত্বাবলি পরিপূর্ণ করিয়াছে; (नवी-वानीय) त्राविनमात्र (এই अपूर्व नौना-मर्नात) खक श्रेषा त्रहित्नन ।

রাধানোহন ঠাকুর এই পণটির এই সংক্ষিপ্ত ব্যাখ্যা নিধিরাছেন,—"কুটিন কটাথ ইত্যাদিনা হৃদর-রসোদ্যাটনার্বং পৃচ্ছতি। পূর্বং বস্ত্রব্যত্যরং শ্বরস্ত্রী হে পীতাধ্বি ইত্যাক:। পক্ষে নারারণ-ক্ষণাদি। কুটিন কটাথ ইত্যক্ত নিবিড় শ্রবর্থেণ তর্জন্বীকরণং পুরাণাত্তরনিধিতকরভেদক্ততেন সাম্যন্। তথা নিজ তমু ইত্যান্তপি পুরাণান্তরমতং। সম্বর মাহা অস্তরমধ্যে মছরঃ অভিস্থিতঃ মন্দরৈরচাল্যঃ মদন এব কমঠঃ।"

বিভাৰ ৷ ১

যো গিরি-গোচর বিশিনহিং সঞ্চরুত
কুশ-কটি কর শুবাগাই।
চন্দ্রক চারু শটাল-গরিমন্ডিত
অরুণ-কুটিল দিঠিত চাই॥
সুন্দরি ভালে কুছা ইরিণি-নয়ানি ।
সো চঞ্চল হরি হিয়া-পিঞ্জরুদ ভরি
কৈছনে ধয়লি দেয়ানি ॥ ৪৯০ ॥
কত বর-দন্তি ১০ করহি কর বারত ১২
দশনহি গও ১০ বিদারি।
বল কয়ে ১০ খর ইর নখর-শিখর ১০ সঞ্চে ১০
মাতিম বনহি বিথারি॥
অধর-মুধা দেই পুনহি জিয়ায়ই ১০
পুন নিরমদ করি তেজ।
গোবিন্দ্রদাস ভণ ভাক শয়ন ১৮ পুন
অহনিশি কিশলয় শেজ ॥৪০॥৭০ ২॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১৭৯ ও প-র পুথির ১০০৯ সংখ্যক পদ। 'বিভাষ' হুলে 'ইইরাগ' পর।
২। 'বিপিনছ' প-র-সা। ৩। 'সঞ্চর' সা-প ১৮৪
সংখ্যক পুথি। ৪। 'কক্ষ' ক। ৫। 'শটা'
(সা-প ১৮০ সংখ্যক পুথি) হুলে 'শঠা' ক, খ প্রভৃতি
পুথি। ৬। 'বিঠে' প-র-সা। ৭। 'হরিণ নয়ানী'
সা-প ১৮০ সংখ্যক পুথি; 'হরিণ নয়ানি' সা-প ১৮০ সংখ্যক পুথি; 'হরিণ নয়ানি' সা-প ১৮০ সংখ্যক পুথি; 'বরানি' সা-প ১৮৪
সংখ্যক পুথি। ৮। 'পঞ্চর' প-র-সা, প-র। ৯।
'সয়ানী' সা-প ১৮০ সংখ্যক পুথি; 'বয়ানি' সা-প ১৮৪
সংখ্যক পুথি। ১০। ক, ব, চ পুথিতে 'ঞা' চিক্ছ
নাই। ১১। 'দক্ষী' ক, খ, প-র-সা, প-র। ১২।

'বারই' সা-প ১৮ গ্ৰং ১ সং পুথি। ১৩। 'ৰঙ্গ প-র-সা। ১৪। 'ৰল করে' স্থলে 'ৰল করে' প-র; 'ৰল কএ' সা-প ১৮৪ সং পুথি। ১৫। 'নিকর' ক; 'দিধর' প-র। ১৬। 'ধরি' সা-প ১৮ গ্রং ১৭। 'জিয়ারত' প-র-মা। ১৮। 'স্থন' সা-প্রত সং পুথি।

ोक1

১-- १। "যো গিরি-গোচর-" ইত্যাদি। (স্থী পুনরায় প্রাধাকে রসিকতার সহিত বলিতেছেন) ক্লশ-কটি-বিশিষ্ট যে (প্রাণী) পর্বত, গোচারণ-ভূমি ও কাননে (শিকার আমুসন্ধান করিয়া সঞ্জ करत. - ह म क हांक (कुछ-शत्क - हम्रक बांबा हांक: সিংহ পক্ষে--চক্তকের ক্সাধ চাক ; চক্তক --ময়ুরপুচ্ছের চন্দ্রাকৃতি চিহ্ন) শটা দারা (কৃষ্ণ-পক্ষে--কৃষ্ণিং কেশ বারা, সিংহ পক্ষে--কেসর বারা) শোভিয (ষে) আরক্তিম বক্র দৃষ্টিতে নিরীক্ষণ করে,—বে স্করি ! ভূমি (অপুর্বা) হরিণ-নয়ন: (এক অর্থে मुश-नम्रना; व्यक्त व्यर्थ हिन्ती ; वरहे; (नकुरा) স্থ্রতত্ত্বা ভূমি সেই চঞ্চ হরিকে (এক অর্থে-কুষ্ণকে; অপর অর্থে—সিংহকে) কি প্রকারে ভ্ৰদ্য-পিশ্ৰৱে আৰম্ভ করিয়া রাখিলে ? এ ছলে 'যে গিরি-গোচর' ইত্যাদি বিশেষণ বাক্যের অর্থ ঘার শ্ৰীকৃষ্ণ ও সিংহ উভয়েবই প্ৰতীতি হওয়ায় পৰ্থ-শ্লেষ এবং জ্ব-কলিতে 'হরিপি-নয়ানি' ও 'হরি'— শিষ্ট শক্ষাৰয়ের প্রায়োগ বারা শক্ষা-শ্লেষ ও সেই উভয়বিধ শ্লেষ অলম্বাবের দারা অন্থ্রাণিত বিষ্ণ व्यवकात्र विवादम् ।)

৮—>>। "কত ব্রদ্ঝি" ইত্যাদি। কত ব্রদ্ঝী কেন্দ্র ক্ষাপক্ষে পক্ষে — স্থাদনা নাহিকা; সিংহ-পক্ষে — শ্রেষ্ঠ গল্প) কর ধারা (কৃষ্ণ-পক্ষে — হন্ত ধারা; সিংহ-পক্ষে শুশু ধারা) হন্ত নিবারিত করিলেও (সেই নিবারণ তুক্ত করিয়া) দন্ত ধারা (বর্ন দন্তীর) গশু বিদারণ করিয়াছে এবং ব্লপুর্বক্ তীক্ষ নথাগ্র হইতে মুক্তা-রালি বন-ভূমিতে বিকীর্ণ করিয়াছে। (কৃষ্ণ-পক্ষে শ্র্দশনা নাহিকার ছিল্ল-

মাণার মুক্তারাজি এবং সিংহ-পক্ষে গজের বিদারিত কুম্ব হইতে পতিত মুক্তারাজি বুরিতে হইবে)।

১২—১৫। "অধর-মুধা" ইত্যাদি। সেই ছরি—প্রীকৃষ্ণ ও সিংছ— তোমার নিকট পরাজিত হইরা নিমীলিত-নেত্র ও অচেতন হইরাছিল; কিন্তু (তোমার অপূর্ব্ধ মহিমা) তুমি সেই স্কৃত-প্রার্থ ছরিকে অধরাস্থত-দানে পুনবার সঞ্জীবিত করিরা, (তাহাকে প্রতিহিংসা-প্রবণ দেখিয়া, তাহার উপস্কুক্ত দান্তি স্বরূপ) তাহাকে পুনরার (সম্পূর্ণ) নিস্তেজ করিয়া ছাড়িয়া দিয়াছ! (সথী-স্থানীয়) গোবিন্দদাস বলিতেছেন—(সেই জ্লুই) সেই হরির এখন দিবারাত্র পলব-শ্বা। হইয়াছে! (প্রীকৃষ্ণ দিবারাত্র স্থ্নীতল পলব-শ্বান শ্রান হইয়া বিরহ-জনিত অক্ত-তাপের শান্তি করেন এবং রণ-ক্রিষ্ট সিংহ স্থকোমল পলব-শ্বনে শ্বান হইয়া রণ-ক্রান্তি নিবারণ করে—উভয়্ম অর্থই ব্যক্তিত হইতেছে)।

নিজেকিঃ।

কৌ রাগিণী ৷১

বেপুক ফুকেং বৃকেও মদনানল
কুল-ইন্ধন মাহা জারি।
দরশা পাণি ছকু পরশো সোহাগল
শ্রাম-জল জোরণ বারি ॥
সজনী কামু সে ছৈল সোণারও।
মকু মন-কাঞ্চন আপন প্রেম-মণি
কোরি পিন্ধায়ল হার ॥ গ্রা
মব অমুরাগ-রক্তে পুন রঞ্জল
মূল না জানই কোই।
গুরুজন-নয়ন-চৌর পরে ছাপিয়েদ
প্রাণ লাখা সম গোই ॥

যো রস-আগরি বিদগধ নাগরি
হেরতক্ত তাকর সাধ।
গোবিন্দদাস কহই সানে হেরিলে>
কানি ভোয়ে>> প্রমাদ ॥৪৪॥৭০৭॥

পাঠাছর

১। ইছাপ র-সা পুথিব ১১৮০ ও প-ব পুথির ১৩।০ সংখ্যক পদ। 'কৌ রাগিণী' স্থলে 'ধানত্রী' প-র। ২। 'ফুকে' (ধ পুণি) খলে অন্তান্ত পুণিতে 'ফুকে' গাঠ **আছে। ৩**। 'বৃকে' . ঘ পথি) স্থ**ল** ব্কে' চ; 'বুক' ক, থ, প-র-সা, প-র; 'বুকে' সা-প ১৮৪ সং পুথি। ৪। 'দরশ পাণি' ইত্যাদি স্থলে দিরশন পাণি' ইত্যাদি চ ; 'প্রশ গাণি' ইত্যাদি প-র সা। । । 'সোধাগন' च; 'সোহাগছ' দা-প ১৮৪ নং পুথি। ৬। 'ক্লোরল' ক, খ, ঘ; 'ক্লোবন' প-র-সা। १। 'সজনি' ইত্যাদি পংক্তিজন্ন প-র পুৰিতে সৰ্ব্বাগ্ৰে সন্ধিবেশিত চইন্নাছে। ৮। 'গুৰু-জন-নয়ন' ইত্যাদি স্থলে 'গুরুজন-নয়ন চোর ভয়ে ছাপিষে' প-র; 'শুরুজন চৌর নয়ন ভয়ে ছাপিয়ে' সা-প ২০১ সং পৃথি; 'শুরুজন চৌর নরন পরে চাপিয়ে' সা-প ১৮৪ সং পুথি। ১। 'প্ৰাণ লাখ' ऋरम 'প্রাণনাপ' क, ४, 5, প-র-সা। ১०। 'कहरे' ইত্যাদি স্থলে 'কছত আন ছেরণে' সা-প ২০১ সং পুथि; 'कर कान कन एर्गितन' भ-त । ১১। 'दर्गात' (সা-প ১৮৪।২০১ সং পুৰি) স্থলে 'হোয়ত'। টাকা

১—१। "বেণুক ফৃকে" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা
শ্রীক্সফোর প্রেম-লালাকে ধৃর্ত্ত অপকারের মণিহারগঠনরূপে বর্ণিত করিতেছেন) বেণুর ক্লফ-পক্ষে—
বংশীর; অর্ণকার-পক্ষে—বাঁশের চোলের) ফুৎকারে
স্থানরে কুল-ইন্ধনের (এক অর্থে—কুলরপ আলানি
কাঠের; অপর অর্থে—অর্ণকারের ব্যবহার্য্য
কুলগাছের কাঠের) মধ্যে মদনানল প্রেম্বানত
করিল; দৃষ্টি ও হল্প উভরের স্পার্শ হারা নোহাগকুক্তা (এক অর্থে—আদরহুক্ত; অভ অর্থে—অর্ণ

গালাইবার উপাদান 'সোহাগা' নামক পদার্থ দারা সংযুক্ত) করিল; (সন্থোগ-ক্লান্তি-জনিত) দর্শবিদ্ধল সংযোগ-বারি অর্থাৎ পাইনের জ্ল (হুইল)। হে স্থি! সেই শ্রীকৃষ্ণ ধূর্ম অর্থাকার; সে আমার মন-রূপ স্থাকে (অপ্রত্ত করিয়া) নিজের প্রেম-রূপ মণির সহিত সংযুক্ত করিয়া আমাকে হার পরিধান করাইল।

৮—১১। 'নব' ইত্যাদি। (উছাকে) আবাব সে অফ্রাগ-রূপ বং দিয়া রঞ্জিত কবিল; (ঐ রঞ্জিত জিনিষ্ট দেখিয়া) কেগ (প্রকৃত) মূল্য বুনিতে পারে না; (আমি আমার সেই রূপান্তরিত) হাদয়টিকে গুরুজনের নরন-রূপ চোবের নিক্ট (দ্রিজ্রের) শক্ষ মুধার ভাষ গোপন করিধা লুকাইয়া রাখিতেছি।

১০-১৫। "যো" ইতাদি। রসিকা যে নামিকা ব্লস-পরিপূর্ণা, (প্রীক্লফকে) দেখিতে যেন তাহারট বাহা হয়; (ভূক্ত ভোগী) গোবিন্দদাস কহিতে ছেন—(তাঁহাকে) অল্যে দেখিলে প্রমাদ হইবে, ইহা বেশ জানিতেছি!

শ্ৰীগান্ধার 1>

কাজর ভমরং ভিমির রুসু তুমু-রুচি
নিবসই কুঞ্জ-কুটীর।
বাঁশি-নিশাসে মধুর বিষণ উগরই
গতি অতি কুটিল স্থান ॥
সজনী কামু সে বরজ-ভুজজ।
সো মঝু হুদয়-চন্দন-রুহে লাগল
ভাগল ধরম-বিহঙ্গ ॥ প্রদ ॥
লোচন-কোণে পড়ত যব নাগরি
রুহই না পারই থারদ।
কুঞ্জিত অরুণ অধ্বে ধরি পীবইণ
কুলবতি-বরত-সমার ॥

এক অপরপ নয়ন-বিষ তাকর
মেটয়ে দশনক দংশে।
ও বিষ-ঔষধ বিষ অবধারল>>
গোবিন্দদাস পরশংসে॥ ৪৫॥৭০৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৮১ ও প-র পুথির ১৩৭০ সংখ্যক পদ। 'শ্রীগান্ধার' হলে 'শ্রীরাগ' প-র। ২। 'শ্রমর' থ, ব, চ; প-র। ৩। 'নিমানে' প-র-সা, প-র। ৪। 'রস' প-র। ৫। 'সজ্জনি' ক, চ, প-র-সা, প-ব। ৬। 'ভাঙ্গল' ঘ। ৭। 'পড়ল' সা-প ২০১ সং পুথি। ৮। 'শ্রির' পর; 'থির' ক, থ, প-র সা। ১। 'পিবই' ক, প র-সা, প-র। ১০। 'মিটই' প-র-সা; 'মিটরে' প-ব। ১১। 'ও বিষ'-ইভ্যাদি (প-র-সা পুথি) হলে 'বিষ ঔষধ বিষ অবধারণ' থ, ঘ, চ। 'বিষ ঔষধ এক ছল্ছ অবধারণ' পাঠান্ধর -- চ; 'বিষ ঔষধ বিষ অবধারণ' ক, প-র।

টাকা

৫— १। "সজনী" ইত্যাদি। ছে স্থি! সেই
নিক্ষা ব্রজের ভূজক (এক অর্থে— সর্প; অপর
অর্থে— লম্পট); সে আমার হৃদয়-রূপ চন্দনবুকে
লয় হইল; (ভাহাতে) ধর্ম-রূপ বিহল প্রায়ন
ক্রিল। (সাজ-রূপক অল্কার)।

১২ -১৫। "এক অপরপ" ইত্যাদি। (কিন্তু) একটি আশ্চর্যা --তাহার দৃষ্টি-জনিত বিধ তাহার দস্তের দংশনে বিনষ্ট হয়; ঐ দৃষ্টি)-বিষের ঔষধ (দস্তাঘাতজ্ঞনিত) বিধ (বিধাতা) বিধান করিয়াছেন; গোবিন্দদাস (বিধাতার এই বিধান তথা জীরাধার বৈদধ্যের) প্রশংসা করিতেছেন! थानगी ।>

পহিলহি কূলং ভূল সম উয়ল° যাকর বেণুক ফ্কে। ধরম-করম-মতি ভরম সরিখ (ভল নারি গারি সম দুখে। স**জনী কিয়ে° হা**ম করব উপায়। হেরইতে সো কামু আপনি আপন তনু কাহে করত অন্তরায় ॥ ধ্রু ॥ নয়নধি নিন্দউ নিন্দ নাহি হেরইণ হানল ফুলশর বাণ। যত্ত পরমাদ কহট না পারিয়ে (गारिक्मनाम शत्रभाव १०॥ १००॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১৮২ ও প-র পুথির ১৩।৭১ সংখ্যক পদ। 🗦 । 'কুল' ক, চ, প-র-সা, প-র। ৩। 'উয়ল'ক, চ, প-র-সা, পর। ৪। 'সরিথ' (প-র পুথি) স্থলে 'সরিক' সা-প ১৮२ मः পूथि; 'मृम्म' क, थ, घ, ठ, भ-त-मा। (। 'कि' क, চ। ७। 'আপনা' क, চ। १। 'নয়নহি' ইত্যাদি স্থলে 'নম্নহি নিন্দউ নম্ননে না হেরই' ক। ৮। কৈত' প্র। ১। 'পারহ' প্র-মা, প্র। ১০। ভালে জান' সা-প ১৮১ দং পুথি।

টাকা

১-- ৪। ''পহিলহি'' ইত্যাদি। বাঁহার বংশীর क् ९कारत व्यथ्यार कून कुनात जात्र छे किता रान,-ধর্ম-কর্মা শ্রমের স্থায় ও ছঃখ হেতু 'নারী' শক্ষটি গালির ভুল্য (প্রতীত) হইল ! (সংস্কৃত 'সদৃক্ষ' শব্দ **१हेट कांठ 'मांत्रव' भटक्त वार्ब--- म**तृन, जूना)।

<--- १। "সজনী" ইত্যাদি। হে স্থি। আমি কি উপায় করিব ? সেই ক্লফকে দেখিবার সময়ে নিজের দেহ কি জন্তু নিজের প্রতিবন্ধকতা করে ? তুলনা কল্পন,---

> "দরশনে লোর নয়নধুগ ঝাঁপি। করইতে কোর **হুহ ভুত্ত** কাঁপি॥

ত্র কর এ স্থি সো পরসঙ্গ। নামহি যাক অবশ করু অঙ্গ ॥ এ ॥ চেতন না রহ চুম্বন বেরি। কো জানে কৈছে রভদ-রদ-কেলি ॥" ইত্যাদি (शांविन्ममांत्र ; अ-क-छ, ১৫१ शृष्टी। ৮--১১। ''নয়নহি'' रेजामि। नम्रमदक (क्रुश-क्रभ (नथांत ज्रञ्ज) निन्ता कर्ति,—(त्रहे অভিমানে আমার নয়ন । নিজাকেও দেখে না অর্থাৎ নিদ্রাকে পরিত্যাগ করিলছে; (পুশা-শর কন্দৰ্পকে নিন্দা করি-সেই আক্রোশে) পূখা-শরণারী (পুষ্পারূপ) বাণ আবাত করিতেছে; ষত প্রমাদ (ঘটিয়াছে) বলিতে পারি না;---(স্থান্থানার) গোবিন্দদান (উহার) প্রমাণ।

202 13

হৃদয়-মন্দিরে মোর কাতু ঘুমাওল প্রেম-প্রহরি রন্থ জাগি। গুরুজন-গৌরব চৌব-স দুশং ভেল দুরহি হুরে রহু ভাগি n मजनो এত দিনে ভা**ञ्चल धम्म**े। কামু অণুরাগ-ুজ্ঞে গরাশল কুল-দাছুরি মতি মন্দ॥ ধ্রু॥ আপনক চরিত আপে নাহি সমুঝিয়ে আন করত (হায় খান। ভাবে ভরল মন পরিজন বাঁচিতে গৃহ-পতি শপতিক^৮ ঠান^৯ ॥ নয়নক নার পার নাহি বান্ধই১০ না জানিয়ে কিয়ে ভেল আখি। যত পরমাদ কহই নাহি পারিয়ে (गाविन्ममान এक माथी ॥८१॥१) •॥

পাঠান্তর

১। ইহা "-র-সা পুথির ১১৮০ ও প-র পুথির ১০/৬৯ সংখ্যক পদ। ২। 'সমদুশ' খ। ৩। 'ৰন্ধ' ক; 'দন্দ' চ, প-র-সা। ৪। 'করিতে' ক, ধ, ঘ, চ, প-র-সা। ৫। 'হয়ে' ক, ধ, ঘ, চ।
৩। '-হ্ন' প-র। ৭। 'পরিজন বাচিতে' ঘ;
'গুন্তন বাঢ়িতে' প-র-সা। ৮। 'শপতিক' হলে
আমাদিগের দৃষ্ট সকল পুথিতেই 'সপতিক' পাঠ
আছে। ১। 'ঠান' (সা-প ১৮৩ সং পুথি) হলে
'ঠাম' অস্তান্ত সমস্ত পুথি। ১০। 'নয়নক নীর'
ইত্যাদি (প-র পুথি) হলে 'নিন্দ্র্উ নিন্দ নয়নে
নাহি হেরিয়ে' অন্তান্ত পুথি।

টাকা

৮—১১। "আপনক" ইত্যাদি। নিজের আচরণ নিজেই বুঝিতে পারি না;—এক করিতে আর হইরা পড়ে; মন ভাবে পরিপূর্ণ; পরিজনদিগকে বঞ্চনা করিতে গৃহস্বামী শপথের স্থান (হইরাছেন); অর্থাৎ পরিজনদিগকে ভূলাইবার জস্তু গৃহস্বামীর দিব্য করি,—-তাঁহার সহিত অন্ত সংশ্রব নাই!

বিভাব ৷১

রজনী-কাহিনী কহিতে রমণী भूलाक भूतल (मडार। কনক-বরণী কি হৈল না জানি সোঙ্রি সে স্ব লেহা॰॥ অক্সের বসন थमर्य मचन नशास्त्र खत्रश्र दलात । বিষাদে বিকল বিছুরি প্রকল চরণ না চলে৬ থোর u क्षप्र-मन्प्रित পিরিভি-পালস্ক রসের বালিস ভায়। আরতি ভোষণি ভাহাতে অমনি শুতল রসিক রার॥

পিয়ার পিরিতি কহরে যুবতি
ধরিয়া সখীর করে।
শেখর সন্থরে কহরে রাধারে
দেখিবে নাগর-বরে॥ ৪৮॥৭১১॥

পাঠান্তর

)। देश श-त-मा श्रुषित ১১৪৮ मःशाक शह। २। '(मह' क। ७। '(मह' क; '(नहा' घ। ८। 'खतन' थ, श-त-मा। ८। 'विছ्ति' घ। ७। 'ना हरन' ऋरन 'नाहरत' थ।

यहरे ।)

কহিতে কামুর বিলাস-কথা। ছল-ছল ভেল নয়ান গ্রাতা । गम-गम करें ना मदत वानी। विवत्र एंडल कि रेडल कानि॥ भूलाक भूतन मकल (पर । खत्र बहेरल ना हरल रमह ॥ ঝর-ঝর বাহি॰ পড়য়ে ঘাম। খেণে পর-পর কম্পামান মুরছি পড়ল স্থীর গায়। হেরি সহচরী চমক পায় ॥ কোরে করিয়া রহল ভাই। খেণেকে চেতন⁹ পাওল রাই ॥ স্থী কহে বিপরীত সে দেখি। কহিতে এমন কোথা না লখি । আমরা পুছিয়েশ হুখের কথা। ইহাতে ভোহার কি ভেল বেখা। রাই কৰে মোর জীবন কামু। সে কথা' কহিতে অবশ তমু। শেশর কংয়ে রহিয়া ভাই। এমন প্রেমের বালাই বাই ॥৪১॥৭১২॥

পাঠান্তর

)। हेरा भ-त्र-मा श्रवित ১১৮৫ मःश्राक भए। ২। বিশ্বর' প-র-সা। ৩। 'নরন' ক, ধ, চ, প্র-সা। ৪। 'কঠে' ক, প্র-সা। ৫। 'বারি' च ; 'বহি' প-র-সা। 🗣। 'কম্পিডমান' ক, প-त्र-मा। १। 'मचिख' **প-त्र-मा। ৮। 'कहिटख'** क, ब, च, ठ। २। 'कहिर**ड' क, ब, ब, ठ। ১**०। 'बब' क, ४, ४, ४।

পুনশ্চ প্রকারান্তরং যথা।

রসোদগারাসুরাগঃ।

यहरे ।>

জাগি সুমায়লু পিয়ার পিরিভে না জানি বিহান নিশি। অঙ্গের° সৌরভ কাসুর সঙ্গের° ননদী পাওল আসি ॥ ননদী বলে গা ভোল বড়ুয়ার ঝি। সে হেন অক্সের এমন বিতথা **ट्रांटक** ना बिलाटव कि ॥ क्ष्य ॥ কেন তোর তমু হেন বিবরণ मिन ठाँदिय कना। मख कत्रिवरत মথিয়া পুইয়াছে শিরীষ-কুত্ম-মালা ॥ **८क मिटन एव (इत्र**° রক্ষের নৃপুর क पिटन अमन शंत्र। ভড়িভ বিনয়া 'বরণ বসন গুপতে আনিলি কার॥ নাছি পরকাশ আপাদমস্তক क भिर्म हन्मन हुना। ञ्जूष अश्दन ্রক ধরাইয়া কে" দিলৈ ভিশ্বিক গুয়া।

নাসার বেশর ভালে সে ভিলক **क पिर्टा अपन ছाट्मा ৰঞ্জন-ন**য়ানে অঞ্চন রঞ্জিত জ্ঞান পড়িল ধান্দে । ৫০। ৭১৩। পাঠান্তর

)। हेडा श-त-ना श्थित ১১৮७ मरबाक शहा ২। 'পিরীতি' ধ। ৩। 'অকের' প-র-সা। ৪। 'অল' প-র-সা। ৫। 'বিতডা' প-র-সা। ৬। 'পুঞা রে' क; 'পুরাছে' ধ, প-র-সা। १। (स्ट्रां ४, हा छा 'अरल्द्र' था २। 'कान' ইত্যাদি স্থলে 'আনদাস পড়ে ধান্দে' প-র-সা।

ভণা রাগ ৷১

ননদিং গো রহিতে নারিলুঁ ঘরে। ना प्रिचि ना क्षित এমন দেবভা यूवजो प्रिश्रा जुला॥ अ ॥ নিশির স্বপনে টাদ-উপরাগ **८** इतिरय मिल्लारत विन । হেনই সময়ে সে বনদেবতা মোরে গরাসল আসি॥ গরাস-ভরাসে আকুল হইয়া মুরছি পড়িলু ভূমে। তোর নাম ধরি কত না ডাকিলু শুনি না শুনিলি কাণে॥ সে বনদেবতা এ মোর বিতথা अनि চमकरम् विटिं ।° ननहीं চमकि **এ বোল শু**নিয়া ভ্রমিয়া বুলরে ভিতে। গোকুল-পতির মতি ভুলাইলা ঈষত আঁখির ঠারে। मननी भूगारेए জ্ঞানদাস কৰে किया भन्नभाष जात्म ॥৫১॥१১॥॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৮৭ সংখ্যক পদ।
২। 'ননদিনি' প-র-সা। ৩। 'চমকই' থ।
৪। অতংপর ক, ঘ ও চ পুথিতে নিম্নলিথিত
আতিরিক্ত পংক্তিগুলি দৃষ্ট হয়; যথা,—

'যুথতি দেখিয়া ফিনুরে হেরিয়া

এমতি তাহারি রিতে॥

যে জন হেরুয়ে সে বন্দেবতা

রহুয়ে তাহারি চিতে।'

প্রাচীনতম থ পূলিতে পংক্তিগুলি নাই এবং উচার সহিত পূর্ববিত্তী উক্তির সামঞ্জয়ত নাই;--স্তরাং উহা প্রক্ষিপ্ত বলিয়াই বোধ হয়।

দিনান্তরম্ম বার্তা।

মলাব ৷১

এ ঘোর রজনীং মেঘের ঘটা কেমনে আইল বাটে। বন্ধুয়া তিতিছে আজিনার কোণে⁸ দেখিয়া পরাণ ফাটে॥ সই কি আর বলিব তোরে। কোন পুণ্য ফলে সে হেন বন্ধুয়া আসিয়া মিলল মোরে ॥ গ্রন্থ ॥ नननी नाक्र १५ যুরে গুরুজন বিলম্বে বাহির হৈলু । আহাণ মরি মরি সঙ্কেত করিয়া কত না যন্ত্ৰণা>> দিলুঁ॥ বন্ধুর পিরিভি আরতি দেখিয়া^{১২} মোর মনে ১৫ হেন ১৪ করে। মাথায় করিয়া ৰুলক্ষের ডালি> जानल १० एकाई चरत ॥

আপনার তুখ করি মানে
আমার তুখের তুখী।
চণ্ডীদাস কচে^{১৭} বন্ধুর^{১৮} পিরিতি
শুনিয়া^{১৯} জগত স্থাী ॥৫২॥৭১৫॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১১৮৮ ও প-র পুণির ১ গতি সংখ্যক পদ। 'মল্লার' স্থলে 'বিভাষ' পর। ২। 'যমিনী' প্-র। ৩। 'ঘটা' (প-রপুণি) স্থল 'ছটা পিয়া' ক, খ, চ, প-র-সা; 'ঘট পিয়া' ঘ। 'পিয়া' শক্টি প-র পুথিতে নাই। ৪। 'কোণে' (প-র পুথি) হলে 'মাঝে' ক, ধ, च, ठ, প-র-সা। (। 'তিতিছে' (প-র পুণি) স্থলে 'ভিজিছে' क, थ, घ, ठ, भ-तः म। ७। 'बरनक' क, ४, ६, চ, প-র-সা। १। 'আসিয়া মিলল' স্থলে 'আনি মিলাওন' প-র। ৮। 'ঘরে' ইত্যাদি পংক্রির স্থলে -- 'নহি শ্বতম্ভর গুরুজনা ডব' প-র। ১। 'হৈরু' ক। ১০। 'হাহা' প-র। ১১। 'কত না মন্ত্রণা স্থলে 'এতেক যাতনা' প-র। ১>। 'দেখিতে' সা-প २०১ मर পুथि। ১০। 'मन' थ, भ-त्र। ১৪। 'द्यता' প-র। ১৫। 'ডালা' প-র সা। ১৬। 'আবঙনী' मा-भ २०) मर भूषि। ११। 'कब्र' भ-ब ১৮। 'কাহর' প-র। ১৯। 'গুনিতে' শা-গ २०५ मः भूषि।

দিনান্তরে স্থাক্তি:। ক্ষ্টা

সজনী কি কহিব রাইক সোহাগিং।

যাকর দেহলি বদরি-কোরে হরিং
রজনি পোহায়ল জাগি॥ গ্রু॥

কোকিলং সম হরি সক্ষেত রবইতে

হার থসাইতে রাধা।

কল্প ঝণকিতেং গুরুজন জাগল

পড়ি গেও দারুণ বাধা॥

ননদিনি বলেও ধনি কোণ বাহিরারত দ ভীত-পুতলি সম দেহা। লোরে মিটারল পীন পয়োধর-মৃগমদ-কুকুম-রেহা॥ বিঘটি মনোরথ আন চলল চহিল হৈরি তাহিঁ স্তুহাঁ সক্ষেত্ত রাখি। কুসুম-হার অরু মুকুলিত সরসিজ সং

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪৫৬।১১৮৯ সংখ্যক পদ। ২। 'সজনী' ইত্যাদি মণে 'ধনি ধনি গাইক সোহাগি' প-র-মা। ওঁ। 'ধরি' ক, চ। 'যাকৰ দেহলি' ইত্যাদি পংক্তি স্থলে 'যাকর দেহ নিরববি কোরে ধরি' চ। ৪। 'কোকিন' (ক পুপি) স্বে 'চাতক' থ, ঘ, চ, প-র-সা। ৫। 'ছনকিতে' थ। ७। 'ननमी शृह्दम्' भ-त-मा। १। '(क' ক. খ. প-র-সা! ৮। 'বাহিরাওড' ক, চ। ৯। 'মেটায়ল' অ, চ; 'পথাডল' প-র-সা ৪৫৬ সং পদ। ১০। 'চললি' ধ; 'চলত' প-র-সা। ১১। 'ভাছে' क; 'ভাহি' ঘ; 'এ' প-র-সা। ১২। 'কুফুম-ছার' ইত্যাদি (প-র সাপুথি) ফলে 'হার কুমুমিত স্রসিঞ্জুকুলিত' ক; 'মুকুলিত হার কুসুন সব সর্বিজ' খ, চ। 'কুসুম-হার' ইত্যাদি গংক্তিটি ঘ পুথিতে লিপিকর-প্রমাদে পরিতাক্ত रुहेश्राट्ड ।

ট কা

১—১১। "সঞ্জনী" ইত্যাদি। ছে সৰি!

শীরাধার সোভাগ্য কি বলিব ? শীক্ষণ্ঠ বাহার
বহিবাটী-ছিত বদরী-বৃক্ষের ক্রোড়ে (সমস্ত) রজনী
জাগিয়া পোহাইলেন! গোবিন্দদাস এই পদে
উজ্জলনীলমণি-গ্রত নিম্নলিখিত প্রাসিক শোকের
তাৎপর্য্যান্থবাদ করিয়াছেন; বধা,—

"সঙ্গেতীক্ষত-কোকিলাদি-নিনদং কংস্থিবঃ কুর্মতো
ঘারোন্ধোচন লোল-শুজ-বল্ম-বল্ম-কাশ্ং মৃতঃ শৃথতঃ।

কেয়ং কেয়মিতি প্রগণ্ড-জরতী বাক্যেন দুনামুনো রাণা-প্রাপ্নণ-কোল-কোলি-বিটপি-ক্রোডে গতা শর্করী॥" শ্ৰীমহিশ্বনাথ চক্ৰবন্তী ওঁংহার স্থপ্ৰসিদ্ধ "আমনদ-চক্তিকা" টাকায় এই পদের সমার্থক উদ্ধৃত শ্লোকের রস ভাবের বিশ্লেষণ করিয়া লিখিগছেন—"ভত্ত সঙ্কেতীক্তেতি বারোঝোচনেত্যাভ্যাং বয়োরপাৌং-ক প্রোনোলি দ্রান্ত প্রচল্প কামুকত্ব। প্রথমেন বিশেষণেন জ্রীরাধায়া: হর্ষোদয়: দ্বিতীয়েন শ্ৰীক্ষক্ত। পুনশ্চ কেয়ং কেয়মি তানেন হৰ্ষপ্ৰশ্ম-শঙ্কো-দ্ধৌ দ্যোরের ততশ্চ মিথো ছল্ল ভতা বছরার্ঘতেতি ভাভাঞি বিষাদৌৎকণ্ঠাচাপল্যাক্তিবৰ্দ্ধিতানি। মুহ-রিতি ক্তিপ্রক্ষণান্তবং পুনর্পি কোকিলাদি-নিনদ-খারোমোচন জরতীয়াক্যানি তথা তথা ভারবর্দ্ধ-কানি জ্জেয়ানি।" অর্থাৎ শ্রীক্লফের সঙ্কেত-স্চক क्वांकल-नाम e श्रीवाधाव धार्वाम्याहेन, — उ**ष्ठ**म কার্য্য ছারা উভয়ের উৎকণ্ঠা-জনিত রন্ধনি-জাগরণ ও প্রজন্ম অভিসার ব্যঞ্জিত হইতেছে। তাগতে আবার প্রথম কার্য্য বারা প্রধানত: শ্রীরাধার ও বিতীয় কার্য্য দ্বারা শ্রীক্রফের হর্ষোদয়,- · তৎপরে 'কে বাহির হয় ?' 'কে বাহির হয়?' ইত্যাদি কুটিলার বাক্যশ্রবণে উভয়েরই হর্ষ-প্রশম ও শঙ্কার উদয় হেতু (প্রেমোৎ-কর্ষের সারভূত) পরম্পর-এর্লভতা ও বছবিম্বতা,— এবং উহার হারা উভয়ের বিষাদ, উৎকণ্ঠা ও চিত্ত-চঞ্চলতার প্রাবল্য ব্যক্তি ১ইতেছে। মোকের) "মৃহঃ" ইত্যাদি বাক্যের **বা**রা স্টিত শ্রীক্ষের এইরূপ সঙ্কেত-শব্দ ও শ্রীরাধার দারোদ্যা-**छेटनत वातरवात विकल ध्यक्षात बाता शूट्यांक त्र**ग-ভাবের পৌন:পুত্ত ও অহুরক্ত প্রেমিকযুগলের তাদৃশ রঞ্নিধাপন বাঞ্জিত হইতেছে।

১২—১৫। "বিষ্টি" ইত্যাদি। মনোরথ ব্যর্থ ছইল; হরি তথায় পুষ্ঠার ও মুচ্লিত পদ্ম— ছইটি সঙ্কেত-চিক্ত রাখিয়া অক্তন্ত চলিলেন; গোবিন্দ-দাদ (ইহার) একমান্ত্র সাক্ষী রহিলেন। (পুষ্ণ-হারের পরিত্যাগ শারা উহার সন্তাপ-জনকতা হেডু উহার পরিবর্ধে জীরাধাকে বক্ষে ধারণের বাসনা ও মুকুলিত পদ্ম দারা রজনীতে পরবর্তী রাত্তে পুন: অভিসারের বাসনা ব্যঞ্জিত হইতেছে। এথানে স্ক্র ইক্সিত দারা বক্তব্য প্রকাশিত হওরায় "স্ক্র" নামক অবদার ঘটরাছে।)

> পুনশ্চ প্রকারান্তরেণ যথা। দিনান্তরে পরস্পরং সখ্যুক্তিঃ।

> > त्रमामगातः।

তছ্চি ছ-শ্রীগোরচন্দ্র:। [«]আবে মোর গোর কিশোর" ইত্যাদি পদং গেরম্ *।

সিম্বড়া ।১

আবহু রভস-রদং কয়লহি থাখস

কামর দৃক্ষর বেলি।
উলটল কবরি সন্থরি নাহি অন্থর

কহু কেবা গারি বা দেলি॥

স্থি হে কোন এতহু তুখ দেল।
বিকচ কমল ফুল লোচন ছল-ছলদ্

অব কাহে মৃদিত ডেল॥ গ্রু॥
তালুল অথরে সম্প্র স্বিদ্ধান কিবা দেল।
কুচ-ছিরিকল পর্স বিহ্ন কিয়ে বৈঠল তাহে অরুণ-রেখ ভেল॥

কাঞ্চর কপোল লোল অমিয়া-ফল
সিন্দুর স্থন্দর> বয়ানে।
ভাষানদাস কছ চলছ চলছ স্থি
রাইক মিলাহ>৮ সিনানে ॥৫৪॥৭১৭॥

পঠিক্তির

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১৯১ ও প-র পুথির ১০১৫ সংখ্যক পদ। ২। 'রছস' প-র-সা। ৩। 'ক্রল্ছ' ক, খ, খ, চ। ৪। 'ছ্ফ্র' ক, চ, প-র-সা, প-র; 'ছ্ফ্রি' খ। ৫। 'স্ম্বরি নহ' প-র-সা। ৬। 'ক্র্লে' প-র-সা। ৭। 'ক্র্রুন' প-র-সা। ৮। 'ক্রল্ল' ফ্লে 'ছ্ল্ড্ ভুল' প-র। ৯। 'মোদিত' খ, ঘ; 'মুদিত' ক, প-র-সা, প-র। ১০। 'মধ্ব' প-র। ১২। 'বিম্বফ্লে' ক, খ, প-র-সা, প-র। ১৩। 'পর' শক্ষটি প-র পুথিতে নাই। ১৪। 'ক্রিরে বৈঠল' ফ্লে 'বৈঠল কিবা' প-র। ১৫। 'স্লুরে স্ক্লর' হলে 'ব্রুল্ব কিবা' প-র। ১৫। 'স্লুর স্ক্লর' হলে 'ব্রুল্ব কিবা' প-র। ১৫। 'স্লুর স্ক্লর' হলে 'ব্রুল্ব স্ল্রে' খ, প-র-সা। ১৬। 'চল' ক। ১৭। 'স্লিব স্ক্রের' খ, প-র-সা। ১৬। 'চল' ক। ১৭। 'স্লিব স্ক্রের' খ, প-র-সা। ১৬। 'চল' ক।

है का

১--৪। "অবহঁ" ইত্যাদি। উদ্ভাপ-দথ দিপ্রহর বেলা,—এ সমরেও সম্ভোপ-লীলা বিশ্বর জন্মাইল; (প্রীরাধার) কবরী আপু-আপু,—বল্ল অসংরুড; (স্থি!) বল, কেহ বুঝি (প্রীরাধাকে) গালি দিরাছে?

১২—১৫। "কাজর" ইত্যাদি। (শ্রীরাধার)
বদনে গণ্ডে কাজল ও উজ্জন সিন্দুর,—(বেন)
চঞ্চল অর্থাৎ বাষ্-চালিত (সিন্দুরিরা) আম-ফল;
জানদান কহিতেছেন—গণি। চল,—(বিলম্ব করিও
না) শ্রীরাধাকে সানে লইরা যাও। ("লোল
অমিরা ফল" বাক্যের হারা পদকর্তা ব্রাইতেছেন
বে, (ভৃতীর কলির বর্ণিত) ভাস্ল-রঞ্জিত অধর-রূপ
বিষক্ষ ওক-পক্ষী দংশন করার ও কুচরুপ বিষ্কৃতে
পক্ষী ব্রিরা, (বাদু, হারা, পাচ্চুট্রা) উত্তুত্ব

 [&]quot;আরে মোর গৌর কিশোর" ইত্যাদি গৌরচন্ত্রপদটি অতঃপর তৃতীর শাধার বোড়শ পরবের প্রথম
ও ,, ১০৯২ সংখ্যক প্রকরেশ উভ্তে হইরাছে। এ
হলে ইহাকে গণনা করিলে ৩৫ পরবের প্রসংখ্যা
বাদ্ধিরা বার।

লোহিত-রেধাযুক্ত করার, সিন্দু এরা আম মনে করিরা প্রিরাধার গণ্ডেরও সেইরূপ লাঞ্চনা করার আশকা হইতেছে; অতএব কাজল ও সিন্দুরের চিক্ত্ বিদ্রিত করার জক্ত সম্বর স্নান বিধেয়। (প্রীরাধার নরনের কাজল ও ললাটের সিন্দুর তাঁহার নেও ও ললাটের চূম্বন দারা প্রীক্তফের অধরোঠে সংলগ্ন হইয়া পরে গও-চূম্বন্দারা প্রীরাধার গণ্ডে সংক্রমিত হইয়াছে —"কাজর কপোল"ইত্যাদি বাক্যের ইংই ব্যক্ষ্যার্থ।)

शननी ।>

সধি রাই কলাবতি কানেং।

কি ত্ত্ঁ মনোভব মন্থ ব্ঝাওল

কিয়ে ত্ত্ঁ আপন ফুজানেঃ। গ্রা
ছত্ঁ দিঠি-অঞ্চলং বচনা সমাপনা
চৌদিশো কত আছে আনে।
ছত্ঁ জন ব্ঝাল কেহো নাহি সম্ঝালন
ঐছন ত্তাঁ যে সিয়ানেং।
ভুজে ভুজে বান্ধি উরহি দরশায়ল
রমণী সম্ঝাল কাজে।
আনন-সরক্ত্ত করে পরশায়ল
সময় ব্ঝায়ল সাঝোং।
কর-কমনো ম্থা- কমল লুকায়ল
আন সম্ঝায়ল নাহংই।
ভ্যানদান কহ তক্তি উন নহ
তৈত্তে কয়ল নিরবাহ ॥৫৫॥৭১৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথি : ১১৯২ ও প-র পুথির
১৩২৬ সংখ্যক পদ। ২। কোন' ক। ৩।
কৈ ছহঁ' হলে এ ছহঁ' ক, ধ, ঘ, চ; এডহুঁ'
প-র-সা। ৪। 'হুজান' ক। ৫। 'চঞ্চল' ক, ধ।
। 'বচনে' প-র। ৭। 'চৌদেগে' প-র।
৮। 'কেহ' ক। ৯। 'হুঝল' প-র। ১০।
'নিনানে' ক, ধ, প-র-স, প-র। জ্ঞানদানের

পদাবলীর মুদ্রিত 'সিনানে' পাঠ এ হলে অর্থ-শৃস্ত। ১১। 'সাঁজে' থ, প-র-সা। ১২। 'আন সমুঝারল নাহ' হলে 'আলস বুঝারল' ব।

টীকা

— । "স্থি" ইত্যাদি। হে স্থি! শ্রীরাধা কলা-নিপুণা; শ্রীক্লমণ্ড (সেইরূপ কলা-নিপুণ); এই ছই জনকে কি মনোভব অর্থাৎ কন্দর্প মন ধারাই ব্যাইল? কিংবা এই ছই জন আপনা হটতেই প্রবিজ্ঞ ? (কন্দর্প সংকল্পম এবং উভয়ের চিন্তেই বিভ্যমান বলিয়া, উাহার প্রের্থা উভয়ের চিন্তেই বভ্যমান বলিয়া, উাহার প্রের্থা উভয়ের চিন্তেই বভ্যমান বলিয়া, গ্রীহার প্রের্থা উভয়ের হউক, কিংবা শ্রীরাধা ও শ্রীক্লম স্কর্ত্র বিভ্যাই হউক, কিংবা শ্রীরাধা ও শ্রীক্লম স্কর্ত্র বিভ্যাই হউক, তাঁহাদিগের উভয়ের মনোভাব উভয়ের অজ্ঞান্ত নাই—ইহাই 'স্থি" ইত্যাদি ধ্ববক্লির তাংপ্র্যাঃ)।

8— १। "গ্রন্থ" ইত্যাদি। উভয়ের নয়ন-প্রান্ত বাক্য সমাধা করিল গ্র্থাৎ নয়নের কটাক্ষ্ বাক্যের কার্য্য দিদ্ধ করিল; (কেন না) চতুদ্দিকে গ্রন্থ কত (ব্যাক্তি) রহিয়াছে। (ছুই জ্পনের নয়ন-ইলিড) ছুই জনে বুঝিলেন—(অঞ্চ) কেহ বুঝিল না; — ছুই জনেই ঐক্সপ চতুর।

৮—১১। "ভূজে" ইত্যাদি। (শ্রীক্ষণ)
বক্ষ: খবল (একটি) ভূজ ধারা (অপর) ভূজকে
বন্ধন করিয়া (শ্রীরাধাকে ইশারায়) দেখাইলেন;
নারিকা (শ্রীরাধা) কার্যা অর্থাৎ শ্রীক্ষণ্ণের সেই
কার্য্যের উদ্দেশ্য বুরিলেন। (শ্রীক্রণ্ণ আলিজনের
বাসনা প্রকাশ করিতেছেন—বুরিতে পারিলেন)।
তৎপরে শ্রীক্ষণ্ণ কর ধারা (নিজের) মুধ-পদ্মকে
(অরমাত্র) স্পৃষ্ট করিলেন; (তদ্ধারা) সদ্যা-কাল
বুঝাইলেন। (সন্ধ্যা-কালে স্থ্য দিক্চক্রবালের
নিক্টবন্তী হওয়ার তাঁহার কর পদ্মকে অরমাত্র স্পর্শ করিয়া থাকে; স্থতরাং শ্রীক্রণ্ণ কর ধারা মুধ-পদ্মকে
মর স্পর্শ করার ইলিতে সন্ধ্যা-কাল বুঝান হইল।
এই ইলিতের তাৎপর্য্য অধিকতর গুঢ় বলিয়া, অর্থপ্রতীতি নাও ইইতে পারে আশ্রা করিয়া পদকর্জা 'সময় বুঝারণ সাঁঝে' বাক্যটির প্রয়োগ করিয়া-ছেন)।

ং২ -- ব। "কং-কমলে" ইত্যাদি। (শ্রীকৃষ্ণ সম্প্রোগোৎকণ্ঠা হেতু সন্ধ্যা-কালে অভিসারের জন্ম প্রীরাধাকে হাঙ্গত করিলেও, শ্রীরাধাকে ইঙ্গিতের প্রত্যুক্তরে) নিজের কর-ছিত দীলা-কমলে (লজ্জা প্রকাশের ছল করিয়া) নিজের মুখ-কমল লু হাইলেন; (এবং ভদ্ধারা) নাথকে অক্স ব্রথাইলেন অর্থাৎ সন্ধ্যা অভিসারের উপযুক্ত সময় নহে,---বখন পদ্ম নিমালিত হইবে, সেই রজনী অভিসারের উপযুক্ত কাল—ইঙা বুঝাইলেন। (এই পদ্ধের ওম্ব ও হর্থ কলিতে "পুশ্ব" নামক অলকার হইয়াছে)। তুলনা কঞ্লন,—

"সক্ষেত্ত-কাল-মনসং বিটং জ্ঞাত্মা বিদগ্ধয়া। ১ দল্লেত্রার্পিতাকুতং লালা-পদাং নিমীলিতম্॥" – -সাহিত্য দুর্পণ, ১০ম পরিছেদ।

বরাড়ী।১

ছলে দ্বশারন উরজক ওর।
আপনি নেহারি হেরল মোহে থোর।
বিহুসি দশন আধ দরশন দেল।
ভুজে ভুজং বাজি অলপ চলি গেল।
কি কহব রে স্থি নারি স্থান।
হরখে বর্সে কভ মন্মথ-বাণ।
হরি কভ দূরসেঁ পালটি নেহারি।
তোড়ল কান্ড কুস্থম উঘারি।
বসনক ওর ঝাঁপল ভবং গোরি।
লীলা-কমলে মুখ রোপলি থোরিও।
বৈদগধি বিবিধ পসারল যেহ।
কোনং মুগধ ভাহে ধরুও নিজ্ঞানেই।
ধনি ধনি তাক ধাক ইহু নারিও।
ভ্যান্দাস কৃষ্ণ ধনি জনা চারি। ৫৬॥৭১৯॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১৯ছ ও প-র পুথির ১৩)২৭ সংখ্যক পদ। ২। 'ভূজে' ক, ধ, প-র-সা। ৩। 'ঝাঁপল তব' হুলে 'উঝারল' প-র। ৪। 'ঘোরি' প-র-সা। ৫। 'কোন' (সা-প ২০১ সং পুথি) হুলে কাহু' ক, থ, ঘ, চ, প-র; 'কাম' প-র-সা। ৬। 'ধর' প-র। ৭। 'ধনি ধনি' ইত্যাদি পংক্তি হুলে 'ধন্ত সে জনা যাহার বর নারা।' প-র।

টাকা

১১—১২। "বৈদগধি" ইত্যাদি। (জীরাধা) নানাবিধ যে বৈদয়ী বিস্তার করিলেন, (রুসজ্জের ত কথাই নাই) কোন্ মুগ্ধ মর্থাৎ অর্থাক তাহাতে নিম্নের শ্রীর ধারণ করিতে পারে ?

১৩০—১৪। "ধনি ধনি" ইত্যানি। ইনি বাহার নারী, তাঁহার ধন্ত ধন্ত অর্থাৎ শত ধন্ত! জ্ঞানদাদ কহিতেছেন—(কেবল তিনি ধন্ত নহেন;) জনা চারি লোক ধন্ত! (অর্থাৎ এই নামিকা-শিরোমণির পিতা, মাতা, স্থামা ও প্রণম-ভাজন— চারি জনকেই ধক্ত বলিতে ইইবে)।

युष्ट्डे । ১

স্থিং—বড় অপরপ ভোলত।
রাই—যমুনা সিনানে গেলি ॥
কামুণ দরশন ভেল ।
কি তুহুঁ ইপিত কেলং ॥
বুঝিয়া সে সব রীত।
সভে গেল আন ভীতং ॥
যব হোতং নিরক্তনে।
পৈঠলিদ নিকুঞ্জ-বনে ॥
কি তুহুঁ কয়লি নেহ।
ক্কান কি বুঝিব ধেহং ॥ ৫৭॥৭২০॥

পাঠান্তর

১। হহা প-র ট্রাঁস্থির ১১৯৪ ও প-র প্থির ১৩।২৯ সংখ্যক পদ। ২। 'দেখি' ছ। ১। 'কেলি' প-র। ৪। 'কামুক' থ। ৫। 'কি ছহ' ইত্যাদি (প-র পুথি) ছলে 'কিষে ইন্দিড ছহুঁ কেল' থ, ছ; 'কিষে ইন্দিড কেল' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'সতে গেল' হত্যাদি ছলে 'সডে ভেল আন-দিড' প-র। ৭। 'হৈতে' প-র। ৮। 'পেসলি' প-র। ৯। 'জ্ঞান' ইত্যাদি ছলে 'জ্ঞানদাস কি বুঝিব গেহ' ক, প-র সা; 'জ্ঞান কি বুঝাব থেহ' ধ, ছ, চ; 'জ্ঞানদাস তব গেহ' প-র।

বড়ারী।১

নাহি উঠল ভিরেং রাই কমল-মুখি
সমুথে হেরল° বর-কান।
গুরু-জন সজে লাজেও ধনি নত-মুখি
কৈছনে হেরব বয়ান॥
সথি হেং অপরুপত চাতুরি গোরি।
সব জন তেজি আগুসরি ফুকরই
আড়ে বদনত তহিঁত ফেরি॥ প্রু॥
তঁহিং পুন মোতি-হার টুটি পেললং
কহত হার টুটি গেল।
সব জন এক এক চুনি সঞ্চরণ
শ্রাম দরশং ধনি কেল॥
নয়ন-চকোর কামু-মুখ শশি-বরং
করল অমিয়াং রস পান।
স্কুঁ দোহা দরশনে রসক্রঁ পসারল
বিভাপতি ভালে জান॥৫৮॥৭২১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৯৫ ও প-র পুথির ১৩০০ সংখ্যক পদ। 'বরাড়ী' হলে 'সিকুড়া' প-র। ২। 'ভীরে' ক। 'ভীরে' পাঠে ছন্দো-ডল ক্ষনিবার্য। ০। 'দেবরে' প-র। ৪।

'লাক' च। ৫। 'এ স্থি' প-র। ৬ 'অপরপ' ক, চ, প-র-সা। १। 'আগ' প-র। ৮। 'বদনে' ক, প-র সা। । । 'তহি' च; 'ডাহি' চ। ১•। 'তহি' च; 'ডাহি' চ। ১১। 'ফেলল' ক, প-র-সা; 'ডারল' প-র। ১২। 'সব জন' ইতাাদি ছলে 'সব জন ক্ষণ্ট বদনে তহিঁ স্ফার্ক' প-র। ১০। 'দরশন' চ। ১৪। 'শশধ্রে' প-র। ১৫। 'অমৃত' ক।

ভূপানী।১

কি কহব রাইক চারত অপার।

ঐছনং কতিছাঁ না হেরিয়ে আর॥

গুরুজন সনে আজুং চলটাতে বাট।

অস্তরে উপজল কামুক নাট॥

পুলকে পুরল তমু ঝর ঝব ঘাম।

অবশ হইয়া কহে কামু কামু নাম॥

ননদি কহয়ে তহিঁ কামু কাহা হেরি।

ভামু ভামু করিয়া কহবে পুন বেরি॥

অতিশয় ভাপে তমুতে বহে ঘাম।

ভাহে পুন পুন শে কহলুঁ ভামু নাম॥

গুরুজন শুনি তব নিশ্বদ তেল।

ভারাদাস চাতুরি উপদেশ কেল॥৫৯%৭২২॥

পাঠাওর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৯৬ ধংশ্যক পদ। ২। 'ইছে' ক, চা ৩। 'আকি' ক। ৪। কির্দু'ণ।

অথ র**েশাদ**গারঃ প্রকালান্তরং যথা। শ্রীমহাপ্রভুঃ।

বিভাষ 1১

আজুক প্রেমক নাহিক ওর। স্বপন্ধি শুভূলুঁথ গৌরক কোর॥ পত্ত-মুখ হেরইতে পড়লহি ভোর।

চরকি চরকি বহে লোচনে লোর।

উচ-কুচ কাজেরে হার উজোর।
ভীগল তিলক বসন রুচি গোর।

মীটল অন্ধ-বেশ রহু° থোর ।
বাস্থদেব ঘোষ কহে প্রেমণ সাগোর।

115019:01

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুথির ১১৯৭ সংখ্যক পদ। ২। 'শুতল' ক, খ, চ, প-র সা। ৩। 'বহু' ক, ঋ, অ, প-র-সা। ৪। 'ঘোর' প-র-সা। ৫। 'প্রেমে' প-র-সা।

शननी ।>

কি কহব রে সখি রজনিক বাত।
শুতিয়া আছিলুঁ হাম গুরুজন সাথ॥
আধ রজনি যব পূরল চন্দাই।
হুমলয় পবন বহয়ে অতি মন্দাই॥
গৌরক প্রেম ভরল মঝু দেহা।
আকুল শিবন না বাদ্ধই থেহা॥
গৌর গৌর করি উঠলুঁ রোই।
ভাগল গুরুজন কহে পুন কোই॥
গৌর নাম সভে শুনলং কাণে।
গুরুজন তবহাঁ করল চিতে আনে॥
গৌর চৌর করি উঠায়লুঁ ভাষ।
বাস্থেব ঘোষ কহে ঐছে বিলাস॥৬১॥৭২৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৯৮ সংখ্যক পদ। ২। 'চলা'প-র-সা। ৩। 'মলা'প-র-সা। ৪। 'গুনল' ক, থ, চ, প-র-সা। ৫। 'উঠলু' খ, ঘ, 'উঠল'প-র-সা। তেথা রাগ ।১

পালকে শয়নং ঘুমে অচেডন मोचन वश्रु याम । मोभ क**र**त्र करे লুবধ মাধ্য আওল হামারি পাশ। স্থি হে কানু সে এছন টাঠা। অধিক লালসে হরষে পরশে বিষম তাকর দীঠ ॥ প্রদা জাগইবে ডবে লহু লহু করে বসন ক**য়ল দুর। কন**ক-**গা**গরিঙ বেক্ত নেহারি নিজ মনোরথ পুর ॥ দাপের ছটায় ঝটিতে জাগলু ভর্মে কহলু চোর। ডরে চোর পাশে আন্ধারে পশিলু সে মোরে করল কোর ॥ বান্ধি ভুজপাশে হাসিয়া রভদে

চোরের নিলজ মুখ ॥৬২॥ ৭২৫॥ পাঠাস্তর

বেকত কহয়ে

विनाम श्रीव क्ये ।

চম্পতি-পতি

১। ইহা প-র দা পুথির ১১৯৯ ও প-র পুথির ১৩০০ সংখ্যক পন। 'তথা রাগ' হলে 'বিভাব' খ; 'মৃহই' প-র : ২। 'পালফ শরন' খ; 'পালফ শরনে' গর। ৩। 'মৃগধ' প-র-সা। ৪। 'টাট' ক; 'চিঠ' চ; 'টাট' প-র-সা, প-র। ৫। 'আগইব' প-র । ৬। 'কনরা পুতরি' প-র । ৭। 'নিক' ইত্যাদি হলে 'নরানে ভরুগ প্র' প-র । ৮। 'ভরে' ইত্যাদি পংজি-ছরে হলে প-র পুথির পাঠ বথা,—

'চোরের ডরে পাস আদ্ধিয়ারে প্রসূত্তাকর কোর॥' ১। 'হাসিয়া' ইত্যাদি ভণিতার কলি স্থলে প-র পুথির ভণিতা-হীন পাঠ, বথা—

'হাসির রভসে বান্ধি ভূজপাশে

চোরের নিলজ মুধ।

নিজ মনোর**ধ**

তা কহিব কত

विनाम व्यक्षिक सूथ ॥

পঠমঞ্জরী।>

এ সিধ রক্ষিণি কি কহব তোয়।
আজুক বিকাতুক কহনে না হোয়। প্রশু।
একলি আছিলুঁ ঘরে হিন-পরিধান।
অলথিতে আয়ল কমল-নয়ান।
এ দিগে ঝাঁপিতে তনু উদিগেও উদাস।
ধরণি পশিয়ে যদি পাঙ পরকাশ।
করে কুচ ঝাঁপিতে ঝাঁপন না যায়।
মলয়-শিখর জন্ম হিমে না লুকায়।
ধিক যাউ জীবন যোবন লাজ।
আজু মোর অস দেখল যুবরাজ।
ভগয়ে বিভাপতি রসবতি রাই।
চতুরক আগে কিয়ে চতুরাই।৬৬॥৭২৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১ং০০ সংখ্যক পদ।
২। 'আবার এক' ব, প-র-সা। ৩। থ পুথি
ছাড়া আন্ত্রান্ত পুথিতে 'এং' চিক্ল নাই। ৪। 'ও
দিগে'ক, প-র-সা। ৫। 'আবাও' প-র-সা।

৩—8। "একলি" ইত্যাদি। ক্ষুদ্ৰ-বন্ধ-পরিহিতা আমি ঘরে একাকিনী ছিলাম; (এমন সমরে)
পল্লোচন শ্রীকৃষ্ণ অলক্ষিত ভাবে আসিলেন।
হীন (ক্ষুদ্র) পরিধান (পরিহিত-বন্ধ্র) বাহার—
এইরূপ বছরীহি সমাস হারা "হীন-পরিধান" শক্ষটি
সিদ্ধ হইরাছে। কিংবা (আমি) ঘরে একাকিনী
ছিলাম,—(আমার) পরিধান হীন অর্থাৎ ক্ষু

(বক্স)-- এইরূপ সমাস্থীন অব্ধয়ও করা বাইতে পারে।

তথা রাগ ৷>

আর একং লাজ তোহে গ কহব মাই।
জল দেই পোই যদি তবহুঁনা যাই ।
নাহি উঠল হাম কালিদ্দি-তার।
অঙ্গহি লাগল পাতল চার॥
তহিঁ পেকত ভেল সকল শরীর।
তহিঁ উপনীত সমুখে যত্নবার॥
বিপুল নিতম্ব অতি বেকত ভেল।
পালটিয়া তাপর কুন্তল দেল॥
উরজ উপর যব দেয়ল দাঠ।
তর মোড়ি বৈঠলুঁ হরি করি পীঠ॥
হাসি মুখ মোড়ই চাঠি মাধাই।
তমু তনু ঝাঁপিতে ঝাঁপন না যাই॥
বিতাপতি কহে তুতুঁ অগেয়ানি।
পুন কাহে পাল্টি না পৈঠলি পানি॥
॥৮৪॥৭২৭॥

পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২০১ সংখ্যক পদ।
২। 'আর এক' স্থলে 'আফুক' ক, প-র-সা।
৩। 'তোহে' শক ক, প-র-সা পুথিতে নাই।
৪। 'দিয়া' থ, ঘ। ৫। 'ধোই যদি' ইত্যাদি
স্থলে 'ধুইলে ধোয়ে নাহি জাই' প-র-সা। ৬।
'তাহি' ক; 'তহি' ঘ। ৭। 'তাহি' ক; 'তহি'
ঘ। ৮। 'টাট' ক।

টাকা

৯—১০। "উরজ" ইত্যাদি। (শ্রীহরি) বধন
(আমার) কুচের প্রতি দৃষ্টি অপিত করিলেন,
(তখন) আমি হরিকে পশ্চাতে করিয়া অর্থাৎ
হরির দিকে পাছ দিয়া আমার বক্ষঃস্থল ঘুরাইয়া
বদিলাম!

धाननी ।>

এ ধনি রঞ্চিণি কি কহব ভোয়। আজুক^২ কোতুক কহল^০ না হোয়॥ ধ্রু^৯॥ একলি শুভিয়া ছিলুঁ কুস্থম-শয়ান। দোসর মনমথ করে ফুলবাণ ॥ নূপুর রুণু-ঝুসুঙ আয়ল কান। কৌ ভূকে হাম মুদি রহল নয়ান ॥ আয়ল কামু বৈঠল মঝু পাশ। পাশ মোড়ি হাম লুকায়লুঁ হাস। कुखन-कुञ्चमनाम श्रीत (नन। বরিহা-মাল পুনহি মুঝে । দেল ॥ নাসা-মোতিম গীমক হার। যতনে উতারল কত পরকার॥ কঞ্ক ফুগইতে ' পক্ত ভেল ভোর। জাগল মনমথ বান্ধপুঁ১২ চোর॥ ভণয়ে বিছাপতি রসিক স্থলান। তুহু রসবভি১৩ পত্ত সব রস

ভাব>8 ॥५**৫॥**१२৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২০২ ও প-র পুথির ১৩০১ সংখ্যক পদ। ২। 'আর এক' খ। ৩। 'কছল' (প-র পুথি) স্থলে 'কছনে' ক, থ, স্ব, চ, প-র-সা। ৪। ক, ঘ, চ পুথিতে 'ঞু' চিল্থু নাই। ৫। 'করে ফুলবাণ' স্থলে 'কোরে পাঁচবাণ' প-র। ৬। 'রুণুঝুরু' (ঘ পুথি) স্থলে 'ঝুরু ঝুরু' ক, খ, চ, প-র-সা, প-র। ৭। 'কোডুকে' ইত্যাদি স্থলে 'কোডুকে মুন্দি হাম রহল বরান' প-র। ৮। 'আরল' ইত্যাদি স্থলে 'আরলি বৈঠল কারু' প-র-সা। ৯। 'পাল মোড়ি' স্থলে 'কৈতব করি' প-র (পাঠান্তর)। ১০। 'তহি' প-র। ১১। 'পরসিতে' প-র। ১২। 'বারলে' প-র-সা, প-র। ১০। 'রসিকা' প-র। ১৪। 'পছ্ সব রস্ব ভাণ' (প-র-সা পুথি)

ছেলে 'পুন সৰ রস ভাপ' ক; 'পছঁ সরৰস ভান' খ, চ; 'পছ রস বস ভান' ছ; 'পছ সৰ রস জান' প-র।

ख्या होता ।>

শাশ ঘুমায়ত কোবে আগোরিই।
তহিঁ রতি-টাঠ পীঠ রক্ত চোরিই।
কিয়ে হাম আখরে কহলুঁ বুঝাই।
আজুক চাতুরি রহব কি যাই॥
না করহ আরতি এ অবুধা নাহ।
অব নাহি হোত বতন-নিরবাহ॥
পীঠ-আলিগনে কত সুখ পাব।
পানিক পিয়াস দুধে কিয়ে যাব॥
কত মুখ মোড়ি অধর-রস নেল।
কত নিশ্বদ করি কুচে কর দেল॥
সমুখে না যায় স্বনে নিশ্য়াসই।
কাহে কিরণ ভেল দশন-বিকাশ॥
জাগল শাশ চলত তব কান।
না পুরল আশ বিভাগতি ভাগ॥৬৬॥৭২৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ১২০০ সংখ্যক পদ।
২। 'আ্বাগোর' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'চোর'
ক, চ; 'মোর' প-র-সা। ৪। 'আ্বধ' প-র-সা।
৫। 'আলিঘনে' ক; 'আলিজন' খ, ঘ। ৬।
'নিলোরান' ফ, খ, প-র-সা। ৭। 'কাছে
কিরণ' (য-পুণি) ফ্লে 'হাস কিরণ' ক, চ, প-র-সা;
'হাসে কিরণ' খ।

টীকা

৩—৪। "কিন্দে" ইত্যাদি। (আমি) কি জন্ত আখরে অর্থাৎ সক্ষেত্তে তাঁহাকে বুকাইরা কহিলাম ? (অর্থাৎ আমার পশ্চাতে অবস্থিত শ্রীক্ষেত্র অধরোঠে করাঙ্গুলি স্থাপনরূপ সক্ষেত্ত হারা তাঁহাকে নিঃশব্দে অবস্থান করার করা ইন্দিত করিরা আমি কি কর তাহাকে অবস্থানের অসুমতি দিলাম ?) আজিকার চাত্রী রক্ষা পাইবে, কি ঘুচিবে—বুরিতে পারি না।

৯—১০। "কত" ইত্যাদি। (আমি মনে
মনে এরপ চিস্তা করিতেছি,—ইতিমধ্যে) শুরুফ্ট
(আমার) মুথ বক্র করিয়া কত অধরামূত পান
করিতে লাগিলেন! শব্দ না করিয়া কত বক্ষে
ইস্তার্পন করিতে লাগিলেন।

১৩—১৪। "কাগল" ইত্যাদি। (আমার দশন-ক্যোতি চক্ষে লাগার) খাওড়ী জাগিলেন; তথন ক্ষম (নিক্ষপায় হইয়া) চলিয়া গেলেন; (লালা-দশক) বিদ্যাপতি বলিতেছেন,—(শ্রীক্ষমের তথা পদ-কর্ত্তার) বাসনাপুর্ব হইল না।

বিভাষ।১

এ সখি এ সখি কি কহব হাম।
পিয়া মোর বিদগধ বিহি মোরে বাম॥
কত তুখে আয়ল পিয়া মঝু লাগি।
দারুণ শাশ রহল তহিঁ লাগি॥
ঘরে ঘোর আদ্ধিয়ার কি কহব সখি।
পাশে লাগল পিয়া কিছুই না দেখি॥

চিত মোর ধস-ধস কহিতে না পাই।
এ বড় মনের তুখ রহুং চিরথাই॥
বিভাপতি কহ তুহুঁ অগেয়ানি।
শিয়া হিয়ঃ করি শাহে না ফেরি
বয়ানি।ভ ॥৭৩০॥

পাঠান্তর

১। ইংগ প-র-সা পুথির ১২০৪ সংখ্যক পদ। ২। 'রহ'ক,খ, প-র-সা। ৩। 'হিয়া'ক,খ। টীকা

৯—১•। 'বিদ্যাপতি'' ইত্যাদি। বিদ্যাপতি কহিতেছেন— শ্রীরাধে! তুমি আন-হীনা; প্রিন্ধব্দকে বক্ষে (ধারণ) করিয়া কেন (খাওড়ীর দিকে) মুখ ফিরাইলে না ? (অথাৎ শ্রীক্ষের দিকে দল্মুথ দিয়া, উহাকে বাহপাশে গাঢ় আলিঙ্গন করিয়া শ্রমন করিয়া, কেবল মুখটি খাওড়ীর দিকে ফিরাইয়া রাখিলে খাওড়ীর অঙ্গে পূর্ববং শ্রীরাধার নিখাসম্পর্শ হওয়ায়, তাহার মনে কোন সন্দেহ হইতে পারিত না এইং ঐ ভাবে মুখ রাথায় খাওড়ীর অঙ্গ-প্রত্যেশের গতি-বিধি লক্ষ্য করিয়া প্রয়োজন হইলে সভর্ক হওয়ও চলিত—কবির বাক্যের ইহাই তাৎপর্য্য বটে)।

আড়ানী ৷১

অলখিতে আয়ল অলখিতে গেল।
না পুরল মনরথ' বেকত না ভেল॥
গুরুজন জাগল ভেলও বিহান।
চরণ-লখনও হেরি আন বয়ান॥
হরি হরিও কি করব কুলবতি হোই।
অঙ্গলে কামু-চরণ-চিহ্ন সোই॥
গুরুজন-ভয়ে তব লেপইতে চাই।
বিরিতিঃ বিশেষ লেপই নাহিও পাই॥
সংভ্রম ভেল মন ভ্রমে আনিবারি।
সো ভর ভালল নয়নকদ বারি॥

যে পথে রাতি চলল রতি টোর।
সে পথে মনরথ গেলহি মোর॥
দেহ রহল জমু সূধ পসারি।
কহ কবিশেখর প্রেম বিচারি॥৬৮॥৭৩১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুণির ১২০৫ সংখ্যক পদ।
'আড়ানী' হলে 'আড়ানা' ক, খ, প-র-সা। ২।
'মনমথ' প-র-সা। ৩। 'টেভগেল' প-র-সা। ৪।
'চরণ-লখন' (ঘ পুথি) হলে 'চরণ নখর' ক, খ,
চ, প-র-সা। ৫। 'হেরি হেরি' ক, ৫, চ,
প-র-সা। ৬। 'শিরিতি' ক, চ, প-র সা। १।
'না' ক,খ। ৮। 'নয়নিফ' ক,চ। ১। 'হৄধ'
ক প-র-সা।

টীক1

৩--৪। "গুরুজন" ইত্যাদি। প্রশুত হইল; গুরুজন জাগিল; (অঙ্গনে) শ্রীক্ষের চরণ-লক্ষণ অর্থাং ক্ষা-চরণের ধ্বজ-বজাঙ্গুণ ইত্যাদি চিহ্ন (সিক্ত মৃত্তিকায় মৃদ্রিত) দেখিয়া (আমার) বদন অক্সরণ অর্থাৎ চিস্তার বিমলিন হইল।

শেষ হিন্তু ইত্যাদি। হরি-ছরি !
কুলবতী হইয়া (আমি) কি (উপায়) করিব !
আদিনার শ্রীক্ষেত্র সেই (প্রসিদ্ধ ধ্বজ-বজাঙ্গ্রচিক্ত বুক্ত) পদ-চিক্ত (রিইয়াছে)। (শ্রীক্ষেত্র
চরণ বাতীত অন্ত কাহারও চরণে ধ্বজ-বজাঙ্গ্র্ণ
ইত্যাদি চিক্ত না থাকার, তাদৃশ চরণ-চিক্ত দর্শনে গুক্তঅনেরা রঞ্জনীতে আমার গৃহে শ্রীক্ষের আগমন
এবং ওক্তারা আমাকে নি:সন্দেহে অসতী বলিয়া
বৃষিতে পারিবেন)।

৭ — ৮। "গুরুজন" ইত্যাদি। তথন (আমি)
গুরুজনের ভরে সেই চরণ-চিহ্ন (গোমর-জ্ঞলাদি বারা
অঙ্গন-লেপনের ছল করিয়া) লেপিতে চাহিলাম;
কিন্ত বিশেষ বিরীতি অর্থাৎ অনভ্যাস বলিয়া
লেপিতেও পারিলাম না। (ধ পুথির পত্র-পার্যে হুর্বোধ্য

'বিরিতি' শব্দের অর্থ—'লেপনক্ত রীতং নান্তি' লিখিত আছে)।

৯—১০। "সংশ্রম" ইত্যাদি। (আমার)
ভয় হইল; মন অনবরত ঘুরিতে লাগিল অর্থাৎ
কোন উপায় উদ্ভাবন করিতে পারিল না; (কিন্তু
সোভাগ্য-ক্রমে) আমার নয়নের জল-ধারা সেই
ভয় দূর করিল অর্থাৎ আমি অনভ্যাদ হেছু লেপন
য়ারা শ্রীক্রফের পদ-চিক্স বিলুপ্ত করিতে না পারিলেও
আমার অশ্রুজন অবিরলধারে পতিত হইয়া শ্রীক্রফের
চরণ-চিক্সগুলি ধুইয়া ফেলিল।

১:—১৪। "যে পথে" ইত্যাদি। রজনীতে রতি-চোর অর্থাৎ প্রচ্ছেরকামুক প্রীক্ষণ্ণ যেই পথে গেলেন, সেই পথে (তাঁহার স্থেল সঙ্গে) প্রীরাধার (সমস্ত) মনোরথও গমন করিল; (কেবল) তাঁহার দেহ যেন সামান্ত চৈতন্ত-মাত্র প্রকাশিত করিয়া রহিল; (অর্থাৎ শ্রীরাধার সামান্ত চেতনা-শক্তি থাকিলেও অন্তমনস্কতা হেতু তাঁহার কোন বিষয়েরই বিশেষ অন্তন্তি রহিল না)—কবিশেখর (শ্রীরাধার) থেশ্র বিচার করিয়া (এই কথা) কহিতেছেন।

দিনাস্তরে।

थानमा ।>

সধিং—সে সব কহিতে লাজ।
যে করে রসিক-রাজ॥
আজিনা আওল সেহ।
হাম চললুঁ গেহ॥
ও ধরু আঁচর ওর।
ফুরল কবরি মোর॥
টীঠ নাগর চোর।
পাওল হেম-কটোর॥
ধরিতে ধরল তার।
তোড়ল নধের হার॥

চকোর ও চপল চাঁদ। পড়ল প্রেমের ফাঁদ॥ কবি বিভাগতি ভাগ। পুরল দুছাঁক কাম॥৬৯॥৭৩২॥

পাঠান্তর

)। हेहां श-त-मा श्रुथित >२०७ मःश्राक शरा २। 'मश्रि (ह' थ, ष। ७। 'हत्काद्व' क, थ, श-त-मा ८। 'माहक' थ, ष।

টীকা

৭—৮। "তীঠ" ইত্যাদি। চোর অর্থাৎ পর-ধনের অপহারক ধৃষ্ট নাগর (অঞ্চল অপগারিত করার) অর্থের কটোরা আগুর হইল। (স্তন-ছরের উল্লেখ না করিয়া উহা অর্থ-কটোরারপে বর্ণিত করার অতিশরোক্তি অগকার হইয়াতে)।

১১—১২। "চকোর" ইত্যাদি। চকোর
অর্থাৎ শ্রীক্ষণ্ঠ ও চঞ্চল চাঁদ অর্থাৎ শ্রীরাধার ইতন্ততঃ
সঞ্চালিত বদন —উভয়ে প্রেমের ফাঁদে পতিত হইল।
(অর্থাৎ চক্র যদিও প্রেথমে চকোরের নিকট ইইতে
নিজের স্থা-ভাণ্ডারটিকে রক্ষা করার জন্ত কিংবা
চকোরকে বঞ্চিত করিয়া কৌতুক দেখার জন্ত ইতন্ততঃ সঞ্চলন ধারা চকোর হইতে আয়া-রক্ষা
করিতেছিল, কিন্তু শেষে উভয়ের উভয়ের জান্তরাগরূপ বন্ধনে আবন্ধ হইলা পরস্পারের অনুকৃশ কার্য্য
করিতে বাধ্য হইল।)

তথা রাগ।>

যাইতে যমুনা-সিনানে।
সক্ষহিং কাল সমানে।
অলখিতে আওল কান।
হাম তব বন্ধ বয়ানা।
ননদিনি আগে আগে যায়।
ভিহিঁ কিছু কহিতে না পায়।

ও বর বিদগধ নাহ।

ইথে যে করল নিরবাছ ॥ এছ ॥
পুন পিছে পিছে গেও সেহ।
উলটি হেরিতে শুগান-দেহ ॥
অলখিতে চুম্বন কেল।
ভাবে অবশ তন্ম ভেল ॥
বিহি দিল কণ্টক হাথে ।
চললিত্ অধমক সাথে ॥
কয়লত্ যমুনা সিনান।
জ্ঞান কহে সছে কি পরাণ ॥৭০॥৭৩০॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২০৭ সংখ্যক পদ। ২। 'অক্সহি' প-র-সা। ৩। 'নয়ান' প-র-সা।

८। '(रुदिरम्र' क। ६। 'हार्टि' क। ७। 'क्लानमान' क, প-त-मा।

मिनाखद्र।

कुषानी ।>

একসরিং যাইতে যামুন° তীর।
অলথিতে আয়ল শ্যাম-শরীর ॥
অসম্বরে° ছিল মোর অক্স উদাস।
কত বেরি ছেরি ছেরি মৃছ্ ছাস॥
এ সখি এ সখি অপরুপ কাকে।
দীঠহি দীঠ পড়ল রহি লাকে॥
আগে আগে অমুসরি ফিরি ফিরি চায়।
বিহসি বয়নে খণে বয়ন লাগায়॥
আন ছলে কত যে করয়ে পরিহাস।
হেন বুঝি কত কুলজা-কুল নাশ॥
শুনইতে মধুর মুরলি-রব খোর।
খসয়ে কাখের কুম্ব নীবি-নিচোল॥
কি দেখিলুঁ কি শুনিলুঁ কহনে না যায়।
ফ্রোনদাস কহে পিরিতি যাহায়॥৭১॥৭৩৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২০৮ সংখ্যক পদ।
২। 'এক সরী' ক, প-র-সা; 'এক সরে' ধ।
৩। 'যমুনা' ক, চ; 'যমুনাক' প-র-সা।
৪। 'আছরে' ক, চ, প-র-সা। মুদ্রিত পদাবলীর
'আছরে' পাঠে অর্থ-সক্তি হয় না। ৫। 'মুহ্'
(চপুথি) হলে 'মৃহ্ মৃহ' ক, ধ, প-র-সা; 'ও
মৃহ'ব। ৬। 'তহি'প-র-সা।

ভখা রাগ।১

বরুণক দেশ রয়নিং চলি গেল।
অরুণাও অতি স্থরপতিঃ-দিগ ভেল॥
ঐছে সময়ে নিজ কেলি-নিবাসে।
বেশ কয়ল পিয়া বহু প্রতিআশেণ॥
আধাও আধ তাহে না পুরল আশ।
হৈরি বিঘিনি কত ছাড়য়ে নিশাস॥
নাহক চীতহি অতিশয় খেদ।
ভ্রানদাস কহু বিহিক সম্বোদ ॥ ৭২॥৭৩৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-দা পৃথির ১২০৯ সংখ্যক পদ।
২। 'রজনি' ক, থ। ৩। সকলগুলি পুথিতেই
'অরুণা' পাঠ আছে। মুদ্রিত পদাবলির 'অরুণ'
গাঠে ছন্দোভঙ্গ অনিবার্যা ৪। 'শুভপতি' প-র-দা।
৫। 'প্রীতি আনে' ক; 'প্রিতি আনে' চ।

। 'আধ'ক। ৭। 'না কহ'ব।

টাকা

>-- ২। "বরুণক" ইত্যাদি। রজনী বরুণের দেশে অর্থাৎ বরুণাধিষ্ঠিত পশ্চিম দিকে চলিয়া গেল; স্বাপতি-দিক্ অর্থাৎ ইক্রাধিষ্ঠিত পূর্বা দিক্ অত্যন্ত অক্লণ-বর্ণ হইল।

তথা রাগ ৷>

বন্ধুর রসের কথা কি কহব ভোর।
মনের উল্লাস যত কহিল না হোর ॥
এক তুই গণনাতে অন্ত নাহি পাই।
ক্রপে গুণে রসে প্রেমে আরতি বাঢ়াইং॥
দণ্ডে প্রহরে দিনে মাসেকে বরিখেং।
যুগ মম্বন্ধরে কত কলপে না দেখে॥
দেখিলে মানরে যেন কভু দেখি নাই।
পদ্ম শচ্ম আদি কত মহানিধি পাই॥
ভ্যানদাস বলে ভাল মনে মনে থাক।
এড়াইতে নারিলা ঠেকিলা বিষম

914 HOBBOR #

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথিব ১২১০ সংখ্যক পদ। ২। 'বাড়াই' ঘ, চ। ৩। 'মাসেকে বরিখে' ছলে 'মাসেক বরিখে' ক, প-র-সা; 'মাসেখে বরিখে' খ; 'নাসেক বরিখে' চ।

দিনান্তরে।

थाननी ।>

একলি মন্দিরে শুতলি স্থন্দরিং কোরহি শ্রামর-চন্দ। তবহু তাকরু পরশ না ভেল এ বড়ি **मत्राम धन्म**॥ সঙ্গনি পাওলুঁ পিরিভিক ওর। শ্যাম স্থনাগর রসের সাগরঃ কঠিন হৃদয় তোর ॥ ঞ[ে] ॥ কস্তুরী চন্দন অলে বিলেপন (एथिए) अधिक (कांत्र । বিবিধ কুন্থমে বান্ধল কৰ্মী শিধিল না ভেল তোরণ ৷

অমল কমল- বদন-মাধুরীদ না ভেল মধুপ সাথ। পুছইতে ধনি ধরণী হেরসি হাসি না কহসি বাত॥ কিবা রতি-পতি বসতি বিষয়ে দেখিয়া দেয়লি শ্ভক্ষ। জ্ঞানদাস কহে এ দোষ কাগার

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০০০ ও প-র পুথির ১০০০ সংখ্যক পদ। ২। 'শুতলি স্করি' স্থলে 'শুতিরা আছিলা' ব, ঘ। ৩। 'ভাকর' (প-র-সা পুথি) ছলে 'ভাহার' ক, ব, দ, চ, প-র। ৪। 'রনের সাগর' (প-র পুথি) ছলে 'শেশব কিবা' ক, ব, ঘ, চ, প-র-সা। 'শুম স্থানার' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি ব পুথিতে নাই। ৫। ক, ব, ঘ, চ পুথিতে 'শু' নাই। ৬। 'জোর' (প-র-সা পুথি) ছলে 'উলোর' ক, ব; 'রোর' ঘ, চ; 'কন্দরী চল্ফন' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি প-র পুথিতে নাই। ৭। 'ভোড়' প-র-সা। ৮। 'শ্রমণ' ইত্যাদি ছলে 'শ্রমণ বদনক্ষণ-মাধুরী' ক, ব, ঘ, চ, প-র-সা। ৯। 'ধরিস' ব। ১০। 'দেখলে' ক, ব, ঘ, চ, প-র-সা। ১। 'ধরিস' ব। ১০। 'দেখলে' ক, ব, ঘ, চ, প-র-সা।

টাকা

বাক্যের বিশেষ সার্থকতা থাকে না এবং 'গ্রাম' শব্দের 'স্থনাগর' বিশেষণটিও সম্বত হর না; স্থতরাং প-র পুথির পাঠই সমীচীন বোধ হয়।

युर्हे ।)

সজনি ও কথা কহিলং নয়। শ্রাম স্থনাগর গুণের সাগর পि ज़ि दिवादि श्राप्त ॥ धा ॥ কত পরকারে চেত্রন করায়ুণ চেতন না ভেল মোর। অভিমান করি পাশ মোডিঃ ফেরিং ছথে ত চলল ভোর॥ উঠিলুঁ জাগিয়া দেখি নাহি পিয়া क्रमरत्र वाजिल⁹ त्नल। আহা মরি মরি মদন-বাণেতে জর জর ভৈ গেল। সে সৰ সোঙ্গি চিত বেয়াকুল কেমনে আছয়ে পথা। এ কথা ১ শুনিতে জ্ঞানদাস কহে বিদরয়ে মোর হিয়া ॥৭৫॥৭৩৮॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুৰির ১২১২ ও প-র পুথির ১৩।০৭ সংখ্যক পদ। ২। 'কথন' প-র। ৩। 'কররে' ক; 'করারে' প-র। ৪। 'মোড়া' ক, চ; 'মুড়ি' প-র। ৫। 'ফরি' ক, ঘ, চ; 'রহি' প-র। ৬। 'হথেতে' ক, খ, চ। ৭। 'বাজ্ঞা' ক, খ, প-র-সা। ৮। 'হোই' প-র। ৯। 'চিত বেয়াকুল' স্থলে 'বিভবে আকুল' ঘ। ১০। 'কেমনে আছরে' স্থলে 'বেজন করিছে' প-র। ১১। 'কথা' স্থলে 'স্ব' প-র।

দিনান্তরে। তথা রাগ।>

এক দিন যাইতে ননদিনী সনে।
খ্যাম বন্ধুর কথা পড়ি গেল মনে॥
ভাবে ভরল মন চলিতে না পারি।
অবশ হইল তনু কাঁপেং ধরহরি॥
কি কহিব সখি দে হইল বড় দায়।
ঠেকিলুঁ বিপাকে আর না দেখি উপায়॥
ননদী বোলয়েহেলোঁ কি না ভোর হৈল।
কহে চণ্ডীদাস উহার কপালে যে

ছিল ॥৭৬॥৭৩৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১ং১৩ সংখ্যক পদ। ২। 'কাঁপি' প-র-সা। ৩। 'হেঁলো' ক; 'হেন' প-র-সা।

> मिनांखरत । धननो ।>

একলি আছিলুঁ হাম গাঁথইতে হার।
সগরি খসল কুচ-চার হামার॥
তৈখনে হাসি হাসি আওল কান্ত।
কুচ কিয়ে ঝাঁপব নিবিহক বন্ধং॥
হাসি বহুবল্লভ আলিজন দেল।
ধৈরজ লাজ রসাতল গেল॥
করে° কি বুঝায়ব° দূরহি দীপ।
লাজে না যাওত° এ কঠিন জীব॥
বিভাপতি কছে মরমক কাজ।
জিবন॰ সোঁপলি° যাহে তাহে কিয়ে

लाक 1991980 ॥

পাঠান্তর ১। ইহা প-র-সা পুথির ১২১৪ সংখ্যক পদ। ২। 'নিবিহক বন্ধ' ক্লে 'কিলে নীবিবন্ধ' ক। ত। 'কোবে' ক। ৪। 'বুঝাওব' ক। ৫। 'যাওল' ক। ৬। 'জীবন' ক। ৭। 'সোপিবে' প-র-সা।

मनिछ ।>

আজুক শয়নে ননদিনী সনে শুভিয়া আছিলুঁ সই।

যে ছিল করমে^২ বন্ধুর ভরমে মরম ভোহারে কই॰॥

নিন্দের আলসে বন্ধুর ধাধসে তাহারে করিলুঁ কোরে।

ননদী উঠিয়া রুষিয়া বলিছে বন্ধুয়া পায়লি॰ কারে॥

এত টাঠপন জানে কোন জনা বুঝিলুঁ ভোহারি রীতি। কুলবতি হৈয়া পর-পতি লৈয়া

এমতি করহ নিতি॥

८य ७% नि ळांवरण शरत्र त्र तक्तन नियान क्षिण्यं जाहे।

দাদা ঘরে আইলে করিব গোচরে পেণেক বিরাক্ত রাই ॥

নিঠুর বচনে কাঁপিছে পরাণে মরিয়া রহিলুঁ লাজে।

ষ্টিরাইয়া জাঁথি গরবাথাকি^৮ সঘনে আমারে তাজে² ॥

এক হাতে সখি কচালিয়ে স্থাধি নয়ানে দেখিয়ে আর ।

চণ্ডীদাসে কয় কিবা কুল-ভয় কান্দুর পিরিভি যার॥ ৭৮॥৭৪১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২১৫ সংখ্যক পদ। ২। 'নরমে' ক, খ। ৩। 'ভাহারে কই' ক; 'কহিরে ভোই' প-র-সা। ৪। 'পাইলি' ক, খ। (। 'এলে' ক। ৬। 'বিয়াজ' (প-র-সা পুথি)
 ছলে 'বিরাজ' ঘ, চ। ৭। 'পরাণ' ক, খ।
 ৮। 'গরবথাকি' ঘ। ৯। 'বজে' ক। ১•।
 'কচালিয়া' ক, খ।

ख्यां जाता।>

আর এক দিন সৃষি শুভিয়া আছিলুঁ।
বন্ধুর ভরমে ননদিনী কোলে নিলুঁ॥
বন্ধুর ভরমে ননদিনী কোলে নিলুঁ॥
বন্ধু নাম শুনি সেই উঠিল রুষিয়া।
কহে তোর বন্ধু কোথা গেল পলাইয়া॥
সভী কুলগভী-কুলে স্থানি দিলি আগি।
আছিল আমার ভালে তোর বধ ভাগিই॥
শুনিয়া বচন তার অথির পরাণি।
কাঁপয়ে শরীর দেখি আঁখির ভাজনি॥
কেমত্তেই এড়াব স্বি সে পাপিনীরই হার্থে।
বনের হরিণী থাকে কিরাতের সাথে॥
বিজ্ঞ চণ্ডীদাসে বলে পিরিভি এমতি।
যার যত স্থালা তার ভত্তই

পিরিতি ॥৭৯॥৭৪২ ॥

ইতি সম্ভোগ-স্বপ্ন-রসোদগার: । ইতি ষষ্ঠ-পল্লব: ।

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১২১৬ সংখ্যক পদ। ২। 'বধ ভাগী' ক; 'বধের ভাগি' প-র-সা। ৩। 'কেমনে' ক। ৪। 'ভাপিনীর' ক।

অথাভিদারামুরাগঃ।

শ্রীগৌরচন্দ্র।

কানোখ। ১

গৌরাজ-চরিত কিছু কহনে না যার। পুরব সোঙরিং পত্ত মৃত্ত মৃত্ত ধার॥ নিরজনে কছে চল হ্রেরধুনী-তীরে।
পশুপতি পূজিব বিপদ যাবে দুরে॥
ঐছন° বচন সভে রচন করিয়া।
আগোর° চন্দন ফুল হস্তেত করিয়া॥
নিজ জন সজে চলে গোরা বিজ-মণি।
কহে বিশ্বস্তর গোরার যাইয়ে

নিছনি 1১॥৭৪৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১২৩২ সংখ্যক পদ।
২। 'স্বঙরি' চ। ৩। 'ঐছে' ক, প-র-সা।
৪। সকল পৃথিতেই 'অগৌর' পাঠ আছে; ইহা অঞ্জন' শক্ষের পরিবর্তে ব্যবহৃত হইয়াছে।

কামোদ। ১

সবহাঁ বধ্জন চলু বুন্দাবন
গোরি আরাধন লাগি।

এছন মুগধ বচন রচন করিং
গুরুজন অমুমতি মাগি ॥
হরি হরি কাহাঁ। শিখলি পরকার।
গুরুজনে বাঁচি মিছই বচনামূতে
দিনহি করলিং অভিসার ॥ প্রু॰॥
বেশ বনারতং ননদি শুনার ১
চতুর সথি সঞ্জে বাত।
গোরিং আরাধি মনোরথং পূরব
পশুপতি-নন্দন হাথং ॥
বাসিত কুত্ম কপুরিভংগ তামুগ
ভরি লেইংই চন্দন কটোর।
গোবিন্দদাস পন্থ দরশারত

যাহাঁ নাহি কণ্টক-আটোর ১০॥২॥৭৪৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ৪৫•।১২৩০ ও প-র পুৰির ১৫।৩৬ সংখ্যক পদ। ২। 'রচন করি' বলে 'ধনি শুক্কজনে' প-র। ৩। 'তৈথনে' প-র। ৪। 'কাহে' ক। ৫। 'চললি' প-র। ৬। 'বনারতি' প-র-সা ১২৩০ সং পদ। ৭। 'শুনারতি' প-র-সা ১২৩০ সং পদ। ৮। 'আফু গৌরি' প-র-সা ১২৩০ সং পদ। ৯। 'মনমথ' প-র-সা ১২৩০ সং পদ। ১০। 'মাথ' ক, প-র-সা। ১১। 'কর্পুর' প-র-সা। ১২। 'লেহ' প-র-সা ১২৩০ সং পদ; 'লউ' প-র। ১০। 'কণ্টক আঁচোর' থ; 'কণ্টক চোর' প-র-সা; 'কঠ আচোর' প-র।

তথা রাপ ৷১

গৌরি আরাধন ছল করি স্থানরি

মীললিং নাগর সঙ্গে।
আগুসরি নাহ রাই-কর ধরি তহিঁ
আনল কৌ ভুক-রঙ্গে॥
কুণ্ডক তারে কুঞ্জ অতি শীতল
বহতহি মলয়-সমীর।
কোকিল কুহরত কপোত ফুকারত
চৌদিশে শিখিকুল ফীরং॥
রাধা-মাধব কেলি-বিলাস।
দোহেঁ দোহাঁ। বদন নেহারি ঘন চুম্বয়ে
কতন্ত্রঁ হাস পরিহাস॥ গ্রা॥
চন্দন কুস্থম-হারং সব স্থিগণ
দেয়ত কান্তুক অক্টো।
গ্রেছন সময়ে কবন্তুঁ রাধামোহন
হেরব সহচরি সঙ্গো ॥৩॥৭৪৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুখির ১২৩৪ সংখ্যক পদ।
 ২। 'মিললি' চ। ৩। 'ড়ির' ক, প-র-সা।
 ৪। 'ছঁহে ছঁহা' ফ; 'ছছ দোহার' প-র-সা।
 ৫। 'কুছুম্ছার' ক।

ৰডারী।১

রাই কামু নিকুঞ্জ-মন্দিরে।
বিসিয়াছে বেদীর উপরে ॥
হেমমণি-খচিতং তাহাতে।
বিবিধ কুস্থম চারি ভিতে॥
সখীগণ চৌদিগে বেড়িয়া।
বিসিয়াছে তুহুঁ মুখ চাঞা॥
কুণ্ডের পুরুবে সেই কুঞ্জ।
যাহা বেঢ়িং মধুকর গুঞ্জ॥
মলয়-পবন বহে তায়।
তরু পর শারী শুক গায়॥
রাই কামু সে শোভা দেখয়েই।
এ যত্নন্দন নিরখয়েই য়৪য়ঀ৪৬॥
অত্র সম্ভোগ-পদং যথাসম্ভবং গেয়ম্ম।
ইতি সপ্তম-পল্লবঃ।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুণির ১২৩৫ সংখ্যক পদ। ২। 'রচিত' ক। ৩। 'বেড়ি' ব,চ। ৪। 'দেখর' প-র-সা। ৫ : 'নিরখর' প-র সা।

অথ আক্ষেপাসুরাগঃ। শ্রীগোরচন্দ্র:।

श्वरं ।)

গোরা-অনুরাগে মোর পরাণ কাতরে।
নিরবধি ছল ছল আঁখি-জল করেই ॥
গোরা গোরা করি মোর কি হৈল বিয়াথি।
নিরবধি পড়ে মনে গোরা গুণনিধি ॥
কি করিব কোথা যাব গোরা-অনুরাগে।
অনুখণত গোরা-প্রেম হিয়ার মাকে জালে॥
গৌরাজ-পিরিতি খানি বড়ই বিষম।
বাস্থাক্ত করে নাহি রহে কুলের ধরম ॥১॥৭৪৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৩৬ সংখ্যক পদ। ২। 'ঝুরে' প-র-সা। ৩। 'অফুক্ষণ' ক।

थाननी ।>

রূপ লাগি আঁখি ঝুরে গুণে মন ভোর। প্রতি অঙ্গ লাগি কান্দে প্রতি অঙ্গ মোর ! হিয়ার পরশ লাগি হিয়া মোর কান্দে। পরাণ পিরিতি লাগিং থির নাহি বান্ধে॥ সোই কি আর বলিবও। যে পুনি॰ করিয়াছি মনে॰ সেই সে৬ করিব।এ॥ দেখিতে যে স্থুখ উঠে কি বলিব ত। । দরশ পরশ্বণ লাগি আউলাইছে গাণ্ড হাসিতে খসিয়া পড়ে কত মধুধার। লত লত হাসে পত পিরিতির১৩ সার১৪॥ গুরু গরবিত মাঝে রহি সখী সঙ্গে । পুলকে পুরয়ে ততু শ্যাম-পরসজে। পুলক ঢাকিতে করি কত পরকার। নয়নের ধারা মোর বহে অনিবার ৮ ঘরের যভেক সভে ১ করে কাণাকাণি। জ্ঞান কহে লাজ ঘরে ভেজাইলাম

পঠিস্থির

व्याश्वि ॥२॥१८৮॥

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৩৭।১২০৮ ও প-র পুথির ১৪।০৭ সংখ্যক পদ। 'ধাননা' হলে 'প্রারগ প-র। ২। 'পরাণ পিরিতি লাগি' হলে 'পরাণ-পুতলী মোর' প-র-সা। ৩। 'সোই' ইত্যাদি পংজ্যির হলে 'কি আর বলিব আমি কি আর বিলব' প-র-সা। 'সোই' ইত্যাদি প্রব-কলিটি প-র পুথিতে লাই। ৪। 'পুনি' হলে 'পণ' ক; 'পোণ' প-র-সা। ৫। 'মনে' হলে 'আমি' প-র-সা। ৬। 'সেই সে' হলে 'লে পোণ' প-র-সা।

'দেখিতে' স্থলে 'কহিতে' প-র-সা, প-র। ৮। 'উঠে' স্থলে 'বাড়ে' প-রসা। ৯। 'কি বলিব তা' স্থলে 'কি কহিব কায়' প-র-সা; 'কি বলিব তার' প-র। ১০। 'দরশ পরশ' স্থলে 'সে অঙ্গ পরশ' প-র-সা; 'সে রস পরশ' প-র। ১১। 'আউ-লাইছে গা' স্থলে 'আউলাইছে গার' প-র-সা; 'দগধে হিয়ার' প-র। ১২। অতঃপর প-র-সাও প-র পুথিতে নিম্নিধিত অতিরিক্ত পংক্তিছর দৃষ্ট হয়; যথা.—

'দেখিতে না দেখে আঁথি স্থাম বিহু আন।
ভরমে আনের কথা নাহি শুনে কাণ।'
প-র পুথিতে 'নাহি শুনে কাণ' হলে 'না কছে
বরান' পাঠ আছে।

অতঃপর প-র পুথিতে নিম্নিথিত ছুইটি কলি বারা পদটি সম্পূর্ণ করা হুইয়াছে, যথা,—

'শুনিতে না শুনে কাণ আন প্রস্থা।
সোঙ্রি স্থনে মোর প্রাক্ত অঞ্চ ।
আনদাস কহে মুঞি কারে কি বলিব।
, বন্ধর লাগিয়া আমি সাগরে পশিব॥'
১৩। 'পিরিতির' স্থলে 'অমিয়ার' প-র-সা। ১৪।
অতঃপর প-র-সা পুথিতে নিম্নলিখিত কলি ধার।
পদটি সম্পূর্ণ করা হইয়াছে, ব্থা,—

'যত্নাথ দাস করে গুন গো সজনি।
পিরিতি লাগিয়া দিব যৌবন নিছনি॥'
'গুকু গরবিত' ইত্যাদি অবশিষ্ট পংক্তিগুলি প-র-সা
প্রিতে ১২০৮ সংখ্যক স্বতন্ত্র পদরূপে নিবিত ছইরাছে। ১৫। 'মাঝে' স্থলে 'সজে' প-র-সা। ১৬।
'স্থী সঙ্গে' স্থলে 'নানা রজে' প-র-সা। ১৭। 'গ্রের
বতেক সভে' স্থলে 'গ্রের পরে স্ব লোক' প্রা: হস্তশিখিত পুথি; 'দেখিয়া গ্রের লোক' প-র-সা।

ভাটিয়ারি ৷>

সই এবে বলি কি আর কুল-ধরমে। দীঘল নয়ানেরং বাণ হানিলে মরমে॥ সই এবে বলি না রহে পরাণ।

জাগিতে খুমিতে দেখি বাঁশিয়ার ব্যান।

সই এবে বলি তার কি সন্ধান।

তাকিয়া মার্যাছে বাণ যেখানে পরাণ।

সই এবে বলি কি রূপ দেখিলুঁ।

দেখিয়া মোহন রূপ আপনাং নিছিলুঁ।

সই এবে বলি কি রূপ সাজনি ।

যাচিয়া যৌবন দিব শ্যাম-রূপের নিছনি।

সই এবে বলি মনে তাই জাগে।

গোবিন্দদাস কহে নব অমুরাগে। ৩॥৭৪৯॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১২৩৯ সংখ্যক পদ।
 ২। 'ঞাথির' প-র-সা। ৩। 'বসিয়া' ক; 'বাসি-য়ার' ড়; 'বাসিয়ার' চ। ৪। 'মারিয়াছে' ঝ, ড়, চ।
 ৫। 'আমানন' ক। ৬। 'সই এবে বলি' ইত্যাদি
কলিট ড় পুথিতে নাই। ৭। 'তাহাই' ক, চ।

সখ্যক্তিঃ।

शननी ।>

শুন্দরি ধরবিং বচন হামার।
কামুক প্রেম-রজন পুন্ত গোপবি
বেকত করবি কুলাচার॥
বৈরক্ত লাজ করণং তুরা সমূচিত
শূনবি গুরুজন-ভাষ।
আপনকং মান আপে পুন রাখবি
বৈচে নহত উপহাস॥
তুরা সম কো পুন আহুরে ত্রিভুবন
কুলাললবতিং গুণবস্ত।
গ্রহন সূহুঁ কুল হেরইতে উজোর
ধন-জনং গৌরব-জন্ত ॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৪০ ও প-র পুথির ১৪৪০ সংখ্যক পদ। ২। 'শুনবি' প-র-সা। ৩। 'ধন' প-র-সা। ৪। 'করবি' প-র। ৫। 'আপক' ক। ৬। 'কুল শীল লাজ' প-র; 'কুলশীল' ক, চ, প-র-সা। १। 'ধন' পর। ৮। 'ভাব অস্তরে' স্থলে 'ভাবাস্তর' প-র। ৯। 'হোরত' ক। ১০। 'হোরব অস্তর' প-র। ৯। 'হোরব' প-র-সা; 'হোরব অস্তর' প-র। ১১। 'আনতহি' স্থলে 'আনহি' প-র-সা। ১২। 'চীত' স্থলে 'চীতে' প-র। ১৩। 'বিপরীত' স্থলে 'বিপরীতে' প-র।

টাকা

৮—১১। "তুরা" ইত্যাদি। ত্রিভ্বনে তোমার সদৃশ কুলশীলবতী ও গুণবতী আর কে আছে? (তোমার ক্লার) এই প্রকার উভর কুল অর্থাং আমি-কুল ও পিত্-কুল দেখিতে (কাহার) উজ্জ্বল ? (এবং কাহার এরপ)ধন, জ্বন ও গৌরবের সীমা অর্থাৎ পরাকাঠা ?

১২—১৫। "ভাব" ইত্যাদি। যধন (তোমার)
ফ্রন্থের অন্ধ্রাপ অন্ধ্রিত হইবে, (তথন) অক্ত বিধরে
চিত্ত অর্পণ করিবে। গোবিক্ষদাস কহিতেছেন—
প্রেম ঐক্রপ নহে; অন্ধ্রাগের গতি বিপরীত অর্থাৎ
উহাকে বাধা দিতে চাহিলে উহা আরও প্রবল হইরা
উঠে।

थाननी 13

সখি হে ফিরিয়াং আপন ঘরে যাও।
জিরত্তে সরিয়াণ যে আপনা খাইয়াছে।
তাহেং তুমি কি আর বুরাওণ ॥ঞ্জণ ॥

নয়ন-পুতলী করি

হিয়ার মাঝারে করি প্রাণ।
পিরিতি-আগুনি স্থালি

সকলি পোড়াইয়াছি

জাতি কুল শীল অভিমান ॥
নাজানিয়া>৽ মুড় লোকে, কি জানি কি বলে মোকে
না করিয়ে>৽ শ্রাবণ গোচরে।
শ্রোত-বিথার জলে
এ তমু ভাসাইয়াছি

কৈ করিবে কুলের কুকুরে॥
খাইতে শুইতে বৈতে>৽ আন নাহি লয়>৽ চিতে
বন্ধু বিনে আন>৽ নাহি ভায়।
মুরারি গুপতে>৽ কহে পিরিতি এমতি>৽ হৈলে
তার গুণ>ণ তিন লোকে>৽ গায়॥ব॥৭৫১॥

পাঠান্তর

১। ইছা প র-সা পুথির ১২৪১ ও প-র পুথির ১৪।২২ সংখ্যক পদ। 'ধানদী' হলে 'ভাটিরারী' ক, থ, ব, চ। ২। 'ফেরিরা' প-র। ৩। 'মরিল' প-র-সা। ৪। 'থাইল সে' প-র-সা। ৫। 'ভারে' প-র। ৬। 'ফ্ধাও' প-র-সা। ৭। প-র-সাছাড়া অস্তাক্ত পুথিতে 'শু' নাই। ৮। 'লইল' ক; 'লইয়াছি' প-র। ৯। 'পোড়াঞাছি' ক, প-র। ১০। 'কানে' প-র। ১১। 'করেবে' থ। ১২। 'ভাসাঞাছি' ক, প-র-সা, প-র। ১৩। 'নিভে' প-র-সা; 'পথে' প-র; 'রৈভে' শন্ম থ ও ব পুথিতে নাই। ১৪। 'নাহি লয়' হলে 'মাহিক' প-র। ১৫। 'মনে' প-র। ১৬। 'গুপভ' ক; 'গোপতে' ব। ১৭। 'পিরিভি এমভি' হলে 'এমন পিরিভি' শ-র-সা। ১৮। 'মন' প-র-সা। ১৯। 'ভিন লোকে' হলে 'অলকগতে' প-র-সা।

शांचणी ।>

কামু-অমুরাগে ঘরে রহিতে না পারি। কেমনে দেখিব তারে কহু না বিচারি। গুরুজন-নয়ন-পাপগণ বারি।
কেমনে মিলিব সধী নিশি উক্সিয়ারিং॥
কামুর পিরিতি হাম ছাড়িতে নারিক।
রহিতে না পারি ঘরে কেমনে যাইবং॥
শুনি কহে সধী শুন মো সভার বোলং।
সবছ মুমায়ব নহ উতরোল॥
বৈছনং যামিনি কোমুদিং ঘোর।
তৈছনং বেশ বনায়বং তোর॥
এতত্ত কহই১০ করু বেশ বনান।
ধনি অমুরাগিণি জ্ঞানদাস ভাগ॥৮॥৭৫২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৪২ সংখ্যক পদ।
২। 'নিশি উজিয়ারি' স্থলে 'কহ না বিচারি'
প-র-সা। ৩। 'মিলিব' প-র-সা। ৪। 'শুনি'
ইত্যাদি স্থলে 'শুনি কহে সব সধী শুন মোর
বোল' ক, ঘ, চ; 'শুনি কহে স্থীগণ শুন' ইন্ড্যাদি
প-র-সা। ৫। 'বৈছনে' ক। ৬। 'কামিনি'
ক, ধ, চ। ৭। 'তৈছনে' ক। ৮। 'বনামত'
ক। ৯। 'এতহি' ক, ধ। ১০। 'এতহ কহই'
স্থলে 'কহি স্থীগণ' প-র-সা।

एस। द्रांग ।>

কুন্দ-কুণ্ডমে জন্ত কবরিক ভার
হৃদয়ে বিরাজিত মোতিম-হার ॥
চন্দন-চরচিত ক্রচির কপুর ।
অক্সহি অল অনল ভরিপুর ॥
চান্দনি রঞ্জনি উজোরলি গোরি ।
হরি-অভিসার-রভস-রসে ভোরি ॥ ধা ॥
ধবল বিভূষণ অস্বর বনই ।
ধবলিম কৌমুদি মিলি তমু চলাই ॥
ক্রেইতে পারজন-লোচন ভূল ।
রক্ষপুতলি কিয়ে বস মহা বুর ॥

পূর্বতি মনরথ গতি অনিবার। শুরুকুল-কণ্টক কি করয়ে পার॥ স্থরত-শিঙ্গার-কিরিতি সম ভাস। মিললি নিকুঞ্জে কহ গোবিন্দদাস॥৭॥৭৫৩॥
পাঠান্তর

১। এই পদটি ৩০৫ সংখ্যক পদরূপে ১য় শাখার পল্লবে পূর্বের্ব উদ্ধৃত হইয়াছে; স্থতরাং পাঠান্তর ও টাকা উক্ত পদে দইবা।

काटमाम ।ऽ

আদরে আগুসরি রাই হাদয়ে ধরি জামু উপরে পুন রাখি। নিজ কর-কমলে চরণ-যুগ মোছই হেরই২ তির থির আঁখি॥ পিরিতি মুরতি অধিদেবাণ। যাকর দরশনে সব ছখ মীটল সোই আপনে করু সেবা॥ **হিমকর** - শীতল · নীরহি ভাতলা কর-তলেদ মাজই মুখ। मजन निनि-मरन মৃত্ব মৃত্বী জই পুছই পম্বকি ছুখ ॥ অঙ্গুলে চিবুক ধরি বদনে তামুল পুরি মধুর সন্তাবই কান। গোবিন্দ দাস ভণ নিভি নব নৌভুন>• वाहेक>> व्यभिया-भिनान ॥৮॥१८८॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৪৪ সংখ্যক পদ।
২। 'হেরইডে' প-র-সা। ৩। 'পিরিডি' ইত্যাদি
ছলে 'সন্ধনি পিরিডি' ইত্যাদি প-র-সা। ৪। 'ছরে
পেও' প-র-সা। ৫। 'হিম সন' প-র-সা। ৬। 'নির গহি' প-র-সা। ৭। 'ডিডল' চ। ৮। 'নিক করে' প-র-সা। ৯। 'পুছই' ক ; 'পুছড' প-র-সা। > । 'নিতি নব নৌতুন' স্থলে 'নাহ রসিক পণ' প-র-সা। >>। 'রাই করু' প-র-সা।

উভয়োত্তরামুরাগো যথা।

তোমার প্রেমে বন্দী হৈলাম শুন বিনোদ-রায়।
তোমা বিনে মোর চিতে কিছুই না ভায় ॥
শরনে স্বপনে আমি তোমার রূপ দেখি।
ভরমে তোমার রূপ ধরণীতে লেখি॥
গুরুজন মাঝে যদি থাকিয়ে বসিয়া।
প্রসঞ্জন মাম শুনি দরবয়ে হিয়া॥
পুলকে পূর্য়ে অক্স আঁখে ঝরে জল।
ভাহা নিবারিতে আমি হইয়ে বিকল॥
নিশি দিশি বন্ধু ভোমায় গাশরিতে নারি।
চণ্ডীদাসে কহে হিয়ার রাথ শ্বির করি॥৯৯৭৫৫॥
পাঠাক্সব

১। ইহা প-র-সা পুণির ১২৪৫ সংখ্যক পদ। ২। 'দরপদ্ধে থ। ৩। 'নেহারিতে' ক।

তিরোধা ধানশী।১ স্বন্দরি আমারে কহিছ কি। তোমার পিরিতি ভাবিতে ভাবিতে বিভোর হইয়াতি ॥ থির নহে মন मना উচাটন সোয়াথ নাহিক পাই। গ**গনে** ভুবনে मम मिश-शर्व তোমারে দেখিতে পাই ভোমার লাগিয়া বেড়াই ভ্রমিয়া गिति नहीं वटन वटन। খাইতে শুইতে ব্দান নাহি চিতে नमारे कांगरत्र मत्न ॥

শুন বিনোদিনি প্রেমের কাহিনী পরাণ বৈরাছে বান্ধা। একই পরাণ দেহ ভিন ভিন জ্ঞান কহে গেল ধান্ধা^২ ॥১০॥৭৫৬॥

পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৪৬ সংখ্যক পদ। ২। 'ধাৰণ'ৰ, প-র-সা।

बीत्रांग ।>

যেমত পিরিতি ভোমাতে আমাতে ভালে সে জানহ তুমি। ভাত্মর ভাওইং লোক-চরচাতে এমতি থাকিব আমি॥ আসিবা যাইবা দূরেতে থাকিবা না চাবে আমার পানে। বড়ই বিষম গুরু তুরজন (मिथिटन मत्ररम् प्रांटन ॥ তুমি যদি বল পরাণ-বন্ধু ভবে কুলে বা আমার কি। ইঞ্চিত পাইলে সব সমাধিয়াণ क्रा ७नाश्वान पि ॥ সে ছখ চাহিতে এ হুখ বড়ই কহি কেহো নাহি দেশী। গোপত পিরিভি রাখিতে যুগতি

পাঠান্তর

कटर त्रममग्री पांची ॥১১॥৭৫৭॥

১। ইহা প-র-সা প্ৰির ১২৪৭ সংখ্যক পদ।

২। 'ভারই' ক, প-র-সা। ৩। 'সমারিরা' ৰ।

৪। 'এ ছথ চাহিতে' ইত্যাদি কলির পরিবর্ত্তে—

'এ ছথ কহিছে সে ছথ বড়ই

কলম্ব রহিবে শেষে।

গোপত পিরিতি রাথহ যুবতি

কহরে লোচন দানে।'—ক, চ পুৰি।

'সে ছথ চাহিতে এ ছখ বড় ৰে
কহি কোথা নাহি দেশে।
গোপত পিঞিতি রাখহ বুবতি
কহে রসমন্ত্র দাসে ।'—প-র-সা পূথি।

ऋहिनो ।)

দোঁহে কহি দোঁহ অমুরাগ।

ছহুঁ প্রেম ছই হৃদেং জাগ ॥

দোঁহে দোঁহা করু পরিহার।
ছহুঁ আলিক্সই কত বার॥
ছহুঁ বিশ্বাধরে ছহুঁ দংশ।
ছহুঁ বিশ্বাধরে ছহুঁ দংশ।
ছহুঁ বিশ্বাধরে ছহুঁ দংশ।
ছহুঁ বেরি দোঁহার বয়ান।
ছহুঁ জন সজল-নয়ান॥
ছহুঁ কহু মধুরিম ভাষ।
নির্থয়ে যতুনাথ দাস "১২॥৭৫৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পৃথির ১২৪৮ সংখ্যক পদ। ২। 'হিরে' প-র-সা। ৩। 'কহ' च; 'কহ' প-র-সা।

ভূপালী।১

নব অমুরাগিণি নব অমুরাগং।
মীলল ছুছঁ তমুং গলে গলে লাগং॥
তহিঁ এক রক্ষিণি পরম রসাল।
ছুছঁ গলে দেওল এক ফুলমাল॥
টুটব ভয়ে ছুছুঁ পড়ু একং বন্ধ।
দৈবে ঘটায়ল প্রেম-আনন্দ॥
স্থি-মুখ হেরইতে উলসিত ভেল।
কোঁহে মেলি মালাং সেই স্থি গলে দেল॥
বাহু প্সারিয়া দোঁহে দোঁহা ধরু।
দোঁহে অধরায়তে দোঁহ মুখ ভরু॥
ছুরে গেও মউর-শিখ্ণ পিতবাসং।
ছুছুঁ গুণ গাওত গোবিন্দ্দাস ॥১০॥৭৫৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৪৯ সংখ্যক পদ।
২। 'অহরাগী' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'জন'
থ। ৪। 'লাগি' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'পড়ু,
এক' হলে 'পড়ি গেও' প-র-সা। ৬। 'মেলি
মালা' হলে 'গলমাল' প-র-সা। ৭। 'গীতবাস' ক।

CI RINF)

পেখলুঁ রে সখি যুগল কিশোর।
কালিদি-ভীর নিকুঞ্জক ওর ॥ধ্রুং॥
নব নবং রূণ নিরুপম লাবণি
মরকভ-কাঞ্চন-কাঁতি।
নারি পুরুখ তুত্ঁ লথই না পারিয়ে
অছু পরিরম্ভণভাতি॥
ঘন ঘন চুম্বনে লুবধ বদন তুত্ঁ
বিগলিত স্বেদ-উদ-বিন্দুং।
হেরি হেরি মরম ভরম পরিপুরলং
কো বিধুমণি ১০ কো ইন্দুং ॥
সিন্দুর অরুণ চন্দন ১০ বিধু-মগুল
সঘনে উদিত অব১৫ মেলি।
গোবিন্দদাস কছই নব অপরুপ ১৫
রাধা-মাধ্ব-কেলি॥১৪॥৭৬০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৫০ ও প-র পুথির ৪২।২৭ সংখ্যক পদ। 'কেদার' হলে 'বড়ারি' প-র। ২। প-র পুথি ছাড়া অল্লাল পুথিতে 'এ' নাই। ৩। 'নব নব' হলে 'সমবর' প-র। ৪। 'সোঁহে' ক; 'দোহ' ঘ, প-র-সা। ৫। 'পারই' প-র-সা, প-র। ৬। 'ঐছে' প-র। ৭। 'ছবি' প-র-। ৮। 'বেদ-উদ-বিদ্দু' হলে 'বেত অরবিন্দ' প-র-সা; 'বেদ অরবিন্দ' প-র। ৯। 'হেরি হেরি মরম' হলে 'হেরইতে মরমে' প-র-সা, প-র। ১০। 'পরিপুরিত' প-র-সা। ১১। 'বিধু থনি' প-র। ১২ 'কো' ইত্যাদি পংক্তি হলে 'কোরছি মণি করু ইন্ধু' থ, ছ। ১৩। 'বদন' ক। ১৪। 'আধ' ক, থ, ছ, চ। ১৫। 'নব অপরূপ' হলে 'অপরূপ নব' ক, থ'; 'ইছ অপরূপ' প-র-সা; 'সব অপরূপ' প-র।

টীকা

৭—১০। "বন ঘন" ইত্যাদি। বারবার চুবনে উভয়ের বদন লুক্ক হইল; শ্বেদজল-কণা বিগণিত হইল; (সেই শোভা) দেখিয়া দেখিয়া (স্থীদিগের) চিত্ত কে চক্রকান্ত-মণি ও কে ইল্, (ইহা ভাবিয়া) প্রান্তিতে পরিপূর্ণ হইল। (চক্রকাশ্ত-মণি চক্র-কিরণম্পর্শে জল-বিন্দ্-রাজি উলগীর্ণ করে; এ স্থলে প্রীরাধা ও প্রীকৃষ্ণ —উভয়ের বদন বেদ-বিন্দ্-পরিপূর্ণ হওয়ায় উভয়ের মধ্যে কে চক্র ও কে চক্রকান্ত-মণি, তৎসম্বন্ধে স্থীদিগের চিত্তে প্রান্তি উত্তে হইল। এ স্থলে 'সন্দেহ' নামক অলহার হইয়াছে।)

বিহগড়া ৷১ বিগলিত কুন্তল মণিময় কুণ্ডল রুণুঝুমু অভরণ বাজ। খামহিঁ অলকা তিলক বহি যাওত ঘন দোলত মণিরাজ ॥ (पथ (पथ छ्हाँ जन-(किन । হুছঁ ছুছঁ অধর-স্থারস পিবি পিবি তুহুঁ কিয়ে উনমত ভেলি ॥ প্রু ॥ গীমহি ভুজযুগ উপর° শশোধর কনক-ধরাধর মাঝ। অপরুপ প্রনে স্থন অমু দোলত গগন সহিত বিজয়াজ ॥ **५ व्याप्त विश्व क्रिया विश्व क्रिया क्रिय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया** मनवार मनन शृद्ध । মনমধ-কোটি মধন করু ঐছন ख्वांनताम हिटल कृत ॥১०॥१७১॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১২৫১ সংখ্যক পদ।
২। প-র-সা পুথি ছাড়া অক্সান্ত পুথিতে 'এ' নাই।
৩। 'উর পর' ক, খ। ৪। 'শশধর' ক, খ,
প-র-সা। 'শশধর' পাঠে ছলোডজ ঘটে। ৫।
'তহু' খ, ঘ,।

টাকা

৮ - ১১। "গীমহি" ইত্যাদি। (উভ্রের) প্রীবার (উভ্রের) ভূজ-বৃগল, ততুপরি (উভ্রের বদনরূপ) শশধর (শোভা পাইতেছে) এবং (শ্রীরাধার কুচ্বৃগ-রূপ) স্থব-গিরির মাঝে গগন সহ চক্র অর্থাৎ মুক্তাহার সহ হারের মধ্য-মনি অপুর্বা (নিশ্বাস)-প্রনে স্থনে ত্লিতেছে। ভূলনা করুন,—

"নীল মুকুতা- হার বেকতা
শোভিত দেখিলুঁ ভাল।
বেন তারাগণ উদিত গগন
চান্দে বেট্না জাল॥"
—প-ক-ত, ১৯৮ সংখ্যক পদ।
'নীল মুকুতা' ইত্যাদি শ্লোকের ব্যাথ্যা ১৯৮ সংখ্যক
পদের টীকার দ্রাইব্য।

ष्ट्रभागो । ३

হছঁ রসে ভোর ছেরি পাঁচবাণ।
কেলি-কলা লিয়ে করত সন্ধান॥
দেখ পুন চেতন হছঁ অবলম্ব।
পুনহি অচেতন যব পুন চুম্ব॥
বিপুল পুলক বর স্বেদ-সাঁচার ।
চির-থির নয়নে নীর অনিবার॥
কাঁপই থরহরি গদ-গদ ভাষ।
হছঁ হুহাঁ পরশনে কতহুঁ উলাস ।
ভান-আন-সন্ধ-রঙ্গে ভরু অক্ব।
কো করু অমুভব প্রেম-তরক্ব॥

নিতি নিতি ঐছন হোয়ত বিলাস। কব° হেরব রাধামোহন দাস° ॥১৬॥৭৬২॥ পাঠান্তর

১। ইহা শ-র-সা পুথির ১২৫২ ও প-র পুথির ২৫। ৪ও ৪২। ৪৩ সংখ্যক পদ। ২। 'নিরে' ক, খ, দ, চ, প-র; 'কিয়ে' প-র-সা। ৩। 'ছক্' চ, প-র-সা। ৪। 'সচার' দ; 'সঞ্চার' ক, চ, প-র-সা। ৪। 'উল্লাস' ক, খ, ঘ, প-র-সা। 'ছক্' ছহাঁ' ইত্যাদি চারিটি পংক্তি প-র পুথিতে লিপিকর-ভ্রমে পরিত্যক্ত হইয়াছে। ৬। 'কবক' খ, প-র-সা। ৭। 'ইহ নরোক্তম দাস' প-র।

টাকা

> — ২। "ছহঁ" ইত্যাদি। পঞ্চবাণ অর্থাৎ কল্প উভয়কে সম্ভোগ-রসে মন্ত দেখিয়া (সেই অবস্থার উপযোগী) কেলিকলা লইয়া সংবোজিত করিতেছেন। (টীকাকার রাধামোহন ঠাকুর লিখি-য়াছেন — এ স্থলে 'পাঁচবাণ' শব্দের অর্থ 'অপ্রাক্ত মদনী' বুঝিতে হইবে)।

রত্যন্তে মুচ্ছা।

বিহাগড়া ৷১

রতি-স্থপ-শয়ন-নিবেশহিং স্থন্দরি
প্রমুদিত-মানস ভেলি।
বিছুরল আন আন কেলি-কোতৃক
অনুগত-নিধুবন-কেলি॥
আনভুত মদন-বিলাস।
রাইক দেহ-দণ্ড পরিশোভিত
শ্রামজল-মুকুতা বিকাশ॥
নিমিলিত নয়ন বয়ন-বয় শোভন
অলখিত সহজহি হাসং।
অনখিন বাহ্-বলি অরু সব অলগ
তে উহ রহত উদাস॥

বিগলিত অক্স-রাগ অরু অভরণ বিগলিত কুঞ্চিত কেশ। রাধামোহন চিতে নিতি নিতি ভাবই ঐছন প্রেম-আবেশ ॥১৭॥৭৬৩॥ ইতি অফীম-পল্লবঃ।

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০৫০ সংখ্যক পদ।
২। 'শয়নে নিবেশহি' ক। ৩। 'অলথিত সহজহি
হাস' প-স স্থানে 'অলথিত সহজই হাস' ঘ; 'হেরইতে
সহসহিঁ' ঘ, চ; 'হেরইতে সহচরি হাস' ক, খ,
প-র-সা। ৪। 'অনথিন' ইত্যাদি স্থানে 'অনথীন
বাছৰল্পরী অরু সব অল' ক, খ, প-র-সা।

টাক1

১—৪। "রতি"-ইত্যাদি। স্থরত-কেণিতে
স্থাজনক শ্যার শরনে শ্রীরাধা হাই-চিন্তা হইলেন
(এবং) স্থরত-লীলার প্রার্ত্ত হইরা অভান্ত (আমুসন্ধিক) কেলি-কৌতুক বিশ্বত হইলেন। (ম্থরতপ্রসন্ধে নোহ দারা শ্রীরাধার 'মধ্যা' নারিকার শ্বভাব
স্চিত হইতেচে)।

৮--> । "নিমিলিত" ইত্যাদি। (ঐরাধার)
নরন (রসাবেশে) মুদ্রিত, স্থলর বদন অধিকতর
শোভিত; আভাবিক হাজ অদৃশু হইল; (তাঁহার)
বাহ্-লতা ও সর্কাঙ্গ অবশ,—স্তরাং (আর্ত করার
অক্ষমতা হেতু) উলুক্ত রহিল।

রাধানোহন ঠাকুর তাঁহার স্বক্ষত এই পদের ব্যাখ্যা-স্থলে লিখিয়াছেন বে, তিনি এই পদে উজ্জল-নীলমণি-শ্বত নিম্নলিখিত প্লোকের মর্লাস্থবাদ করিয়া-ছেন; বুণা,—

শ্বন্দলনিবিড়াং নিমীলিভাকীং
লগচিকুরামনধীনবাহ্বলীম্।
মুক্তিবনসমন্তানাভাবাং
নতিলাকনে নিলি রাধিকাং শ্বরামি ॥"
"কিং ধ্যারসীতি ক্সবলেন পৃষ্টা ক্লফ আহ প্রমেতি।
আন প্রমন্তানাং নৈবিড়াং চিকুরালাং লগড়ং বাহ্-

বল্যা দৌর্বল্যক স্বরতান্তং ব্যন্তি । ন স্বতোহনাস্য বিষয়প্ররোদ্ধীপনাদের্ভাবা ভাবনা বস্তা ইতি রভিন্তিধবিশেষাস্থ্তবো সৃদ্ধ্রিয়ামপি বর্তমানত্তস্যা মৃধ্যমাধুর্য্যান্তদানীমবগত ইতি জ্ঞেরম্। আন সৃদিত্যনস্মাপ্রার্থ্যং বক্তঃ প্রেমবন্তান্ত্যাপরার্থ্যং বক্তঃ প্রেমবন্তান্ত্যাপরার্থ্যং বক্তঃ প্রেমবন্তান্ত্যাপরার্থ্য কামাধিসম্বর্ধনাং সাল্বতেন মধাদ্য মুদিত্যনাং ক্রতা ইত্যতঃ ক্রতার্থোহ্মীতি স্বাভিপ্রারোদ্যারময় ইতি। বিশ্বনাধ্ চক্রবর্ত্তিক্ত 'আনন্দচক্রিকা' টাকা।

অথ প্রেম-বৈচিত্ত্যং শ্রীরাধায়া যথা। ভত্তচিত-শ্রীগৌরচন্দ্রঃ।

গান্ধার 1>

व्यत व्यत रंगाजा तकरन कारम । নিজ সংচরগণ পুছই কারণং **टित्रहे** शांत्रांत्रूथ-ठाँदि ॥ अ ॥ প্রেম-ভরে ভেল ছন অরুণিত লোচন कात कात कारत ८ श्रम-वाति । গাঁ**থল**° মোভিফল° रेयइन निश्नि-খসয়েণ উপরি উপরি॥ নিশাসই পুন পুন সোঙ্জি রন্দাবন আপনার অঙ্গ নিরখিয়া। রাই রাইণ করি ছুই হাত বুকে ধরি ধরণি পড়ল মুরছিয়া # ধরিয়া করল কোর তহিঁ প্রিয় গদাধর करुरत्र व्यवर्ग सूच मित्रा। পুন : অট্ট অট্ট হাসে জগ-জন : মন ভোবে বাহুখোষে মরয়ে ঝুরিয়া ॥১॥৭৬৪॥ পাঠান্তর

১। देश প-ब-मा পृथित ১২८৪ मरबाक भाग २। 'পृष्टे कात्रव' यृश्व भा तृतिहत कात्रव' श-ब-मा।

৩। 'গাঁৰিল' क, চ; 'গৰিত' প-র-দা। ৪। 'মুকুতাফল' প-র-সা। ৫। 'বসতহি' প-র-সা। ৬। 'নিশাসই' ইত্যাদি স্থলে 'নিখাসই পুন' थ। ৭। 'রাই রাই' স্থলে 'গোবি গোবি' প-র-সা। ৮। 'ধবণি পড়ল' ছলে 'ধরণীতে পড়ে' প-র-সা। ১। 'विभिन्ना' क। > । '(भोत्न' भ-त्र-मा।

(क्शांव 15

শ্যামকং কোরে যতনে ধনি শৃতলং মদন-আলসে প্রভ" ভোর। ভূবে ভূজে বন্ধন নিবিড় আলিজন জমুৎ কাঞ্চন মণি জোড়। কোরহি শ্রাম চমকি ধনি বোলতা কবে মোহে মীলব কান। হৃদয়ক ভাপ ভবহিঁ দমঝু মীটব অমিয়া করব শ সিনান ॥ সো মুখ-মাধুরি বঙ্ক নেহারই>> সোভরি সোভরিস্মন ঝুর। সো ভবু সরস্ত পরশ যব পাওবত তবহিঁমনোরথ পুর॥ এত কহি সুন্দরি দীঘ নিশাসই মুরছিড> হরল গেয়ান। আকুল রাই শ্যাম প্রবোধই **८गाविम्ममाम भन्नमान ॥२॥१७०॥** পাঠান্তর

)। देश भ-ब्र-मा भूषित्र ১২৫৫ ও প-ब्र পूषित ৩২।২ সংখ্যক পদ। 'কেদার' স্থলে 'কামোদ' প-র। ২। 'ভাষ' ধ; 'ভাষর' প-র। ৩। 'ওতনি' প-র-না, প-র। ৪। 'মদন-আলনে ত্রুঁ' স্থল 'নদন মদালসে' প-র-সাঃ 'মদনালসে তত্ত্ প-র। ৫। 'বেন' ক, ধ, ঘ, চ, প-র-সা। ৬। 'রোর' প-র। ৭। 'রোরত' ব; 'পুছই' ^{श-त}। ৮। '**फ़रह' क, ४, ४,** ६। ৯। 'त्रब्'

মীটব' স্থলে 'দূর যায়ব' প-র-সা; 'মিটি যায়ব' প-র। ১০। 'অনিয়া কর্ব' ফ্লে 'কর্বছি অনিরা' প্র। ১১। 'সো মুখ' ইত্যাদি স্থ:ল 'আর কিরে সো মুখ মাধুরি হের ব' পর। ১২। 'দোঙরি সোঙরি' च्रत्न 'खन माঙ्किर्डि' প-द्र। ১০। 'मद्रम' প-द्र। >। '(रांबर' প-ब-मा, भ-ब। ১৫। 'मुबहरे' প-র। ১৬। 'আকুল' ইত্যাদি স্থলে 'ৰতনহি শ্রাম রাই পরবোধই' প-র (পাঠান্তর)।

বিহাগড়া ৷১

রোদতি রাধা শ্যাম করি কোর। হরি হরি কাহাঁ গেও প্রাণনাথ মোর॥ জানলু রে স্থি প্রেম অগেয়ান। নাগর কোরে নাগরি নাহি জান॥ মুরছলি নাগর মুরছলি রাইং। বিরহে বেয়াকুল কল না পাই॥ দারুণ বিরহে না হেরই তায়। সহচরি চিত্র-পুতলি**ণ সম চায়** ॥ প্রছন হেরইতে রাইক রীত। গোবিন্দদাস-চীত সচ্কিত ১৩॥৭৬৬॥

পাঠান্তর

)। ইहा भ-त्र-मा भूषित >२८७ ७ ১८८२ मर-খ্যক পদ। ২। 'মুরছলি' ইত্যাদি পংক্রিবর খ ও ष পুথিতে নাই। ৩। 'ব্যাকুল দোহ' প-র-সা। ৪। 'চীতপুতলি' খ, প-র-সা। ৫। 'সম চার' इरन 'नम्याम' भ-त्र-मा। ७। 'भाविन्समान भट्ट চিত' প-র-সা।

তথা সাগ ৷১

রসবভি বৈঠি রসিকবর পাশ। রোইং কছই ধনি বিরহ-ত্তাশ। আর কি মিলব মোছে॰ রসময় শাম। বিরহ-জলধি কত পউরব হাম ॥

নিকটিই নাহ না হেরই রাই।
সহচরি কত পরবোধই: তাই ॥
কানু চমকি তব রাই করু কোর।
গোবিক্দাস হেরি ভেল ভোর ॥৪॥৭৬৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১২৫৭ সংখ্যক পদ। ২। 'রাই' ক, খ। ৩। 'মোরে' খ। ৪। 'পরবোধৰ' ক।

धाननी ।>

কত পরকারে তহিঁং পরিচয় দেল।
হেরইতে মুখ-শশি তুখ তুরু গোল॥
সহচরিগণ সব চমকিত ভেল।
সজল-নয়ানে আলিঙ্গন কেল ॥
আঁচরে মোছায়তঃ নয়নক লোর।
যতনহি দৃঢ় করি তুল করু কোর॥
কোই সঞ্চি দেওত চামরক বায়।
গোবিন্দদাস তুল্কেঁ গুণ গায়ও॥৫॥৭৬৮॥

পাঠান্তর

১। देश প-त-ना श्रीका ১२ १४ मरथाक शहा २। 'छांडि' क, भ-त-ना। ०। 'मृद्त्र' क, थ, भ-त-ना। ८। 'साहाबहे' ए। ६। 'क्हें' क, थ, भ-त-ना; 'छवह' ए। ७। 'खन शांब्र' इटन 'दिश्रमिक क्षत्र' भ-त-ना।

জত্র সন্তোগোচিতপদং যথাসন্তবং গেরম্।
জয় জয় রাধা কুষ্ণের প্রেম অদভূত।
নিতৃই নৌতুন প্রেম অমুরাগযুত ॥ ইত্যাদি।
ধানী ।>
তামর-চন্দ গোরি যব বৈঠল
নিধুবনে স্থিগণ স্কা।
চাতৃরি রক্তস কলা কত কৌশল
কিয়ে কিয়েং মদন-তর্ক ॥

সজনী কো পয়েও ঐছন জান।
পিয় পিয় পিপিয়-নাদ শুনি আকুল
মুবছিং আনতং ভই আন ॥ধ্রু॥
চর চর লোরে নয়ন বহি যাওত
কত কত করুণা-কোটি।
দত্তে তৃণস্থ কৈছি প্রিয় দরশন দেহ
না হেরিয়া হিয়া যাউ ফোটিং॥
বহুত বিনতিং করে সখির করেদ ধরে
কোরহি শ্রাম না জানা।
বিপরিত অচল সচল দেখি ঐছন
বল্লভদাস রস গান॥৬॥৭৬৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১২৫৯ ও প-র পুথির ৬৬।৪ সংখ্যক পদ। ২। 'ভেল' প-র। ৩। 'কো পরে' খুলে 'কো পারে' প-র-সা। ৪। 'মুরছিড'ক, চ। ৫। 'আন' ক, খ, চ, প-র-সা। ৬। 'ফাটি' ক, প-র-সা, প-র। ৭। 'মন্ডি' প-র-সা। ৮। 'চরণে' প-র-সা। ৯। 'মান' ক, চ, প-র-সা।

बैंबोग 13

সঞ্জনী প্রেমক কো কছং বিশেষ।
কামুক কোরে কলাবতি কাতর
কহত কামু পরদেশ ॥ প্রশ ॥
চাঁদক ধেরি স্থরজ করি ভাগরে
দিনহি রক্ষনি করি মান।
বিলপই তাপে তাপায়ত অস্তর
বিরহ গিয়ক° করি ভান ॥
কব আওব হরি হরি সঞ্জে পুছই
হসই রোয়ই খেণে ভোরি।
সো গুণ গাই॰ খাস খেণে কাঢ়ই॰
খণহি খণহি॰ তমু মোড়ি ॥

বিধুম্থি-বদন কামু যব পোঁছল।

নিজ পরিচয় কত ভাতি।

অনুভবি মদন কাস্ত কিয়ে কামিনিদ

বল্লভদাস স্থা মাতি ॥৭॥৭৭০॥

পঠিক্তির

১। ইহাপ-র-সা পুথির ১২৬০ ও প-র পুথির ৩৬।৩ সংখ্যক পদ। ২। 'প্রেমক কো কহ' ছলে 'প্রেমক কহবি' ঘ, প-র-সা। ৩। 'বিরহ পিয়ক' ছলে 'প্রিরক বিরহ' ক; 'বিরহক পিয়' প-র। ৫। 'বাচই' ক; 'কাডই' ক, খ, প-র-সা, প-র। ৫। 'বাচই' ফ; 'কাডই' চ, প-র-সা। ৬। 'খণহি খণহি' ছলে 'ক্লহি ডক্ল' ক, খ, প-র-সা, প-র। १। 'মোছল' প-র-সা; 'মোছত' প-র। ৮। 'ভাবিনি' প-র-সা।

বিহুপড়া।১

নাগরং সজে রজে যব বিলস্ই কুঞ্জে শুভলি ভুজ-পাশে। কামু কামু করি রোরই স্থন্দরি দারুণ বিরহ-হতাশে ॥ এ সবি আরতি কহনে না যাই। আঁচলক হেম আঁচলে রছ যৈছন ৰোজি ফিরত আন ঠাঞি"। এ। কাহাঁ গেও সো মঝু রসিক স্থনাগর মোহে ভেজল কবি লাগি। কাতর হোই মহা-তলে লুঠই मनन-नर्दन तर काणि । রাইক বিরুদ্ধে কামু ভেল সচকিত বয়ালে বাণি নাহি ফুর। প্রিয় সহচরি লেই করে কর বান্ধই (श्रविन्त्रकांत्र बक्ट पूत्र ॥৮॥११)॥ পাঠান্তর

)। देशं श-त्र-ता शूषित्र ১২৬১ तरशक् श्रह ।

২। 'কাফুক' প-র-সা। ৩। 'আঁচ**ণক ছেম'** ইত্যাদি স্থলে—

হেম আঁচলে রছ বৈছন থোজি
ফিরত আনহি ঠাঞি ॥ গুলাক, চ পুৰি।
৪। 'বেদনে' ক, খ, চ, প-র। ৫। 'চমকিড'
ক, চ, প-র।

ভখা ব্রাগ ৷১

বহুখণে পরিচয় ভেল।
বিরহ-বেদন ছুরে গেল।
দৌহে ছুহুঁ কোনে আগোরি।
সহচরি হেরি বিভোরি।
অদভুত প্রেম-চরাতং।
হেরইতে চমকিত চাত্তং।
কোরহি দেখিতে না পায়।
ঐছন না শুনি কোধায়॥
পুন দোহে নিবিড় বিল,স।
ছুরে গেও বিবহ-হুতাশ।
গোবিন্দ দাসক দাস।
ইহ গুণ আনন্দে ভাষ।৯॥৭৭২।
ইত্যাদি শ্রীরাধিকায়াঃ প্রেমবৈচিত্যম।

াদি জ্রীরাধিকায়াঃ প্রেমবৈচিক্তাম্ পাঠান্তর

১। টহা প-র-সা পুথির ১২৬২ সংখ্যক পদ। ২ । 'চরিড' ক, খ, চ, প-র-সা। ও। 'চিড' ক,ৰ,প-র-সা।

व्यथ ८थ्रमरेविष्ठ छाः श्रीकृष्णमा यथा।

श्रृहरे । ३

আর কিয়ে কনক-ক্ষিল-ভনু স্কুন্সরি দরশ পরশ মঝু হোয়। উর° পর পাণি হানি খিভি শুভূন° আকুল-কণ্ঠে ঘন রোয়। সঞ্জনি না বুঝিয়ে প্রেম-তরক্ষ।
রাইক কোরে চমকি হরি বোলত
কবে হবে তাকর সক্ষ । প্রু ॥
আর কিয়ে শ্রাবণে শুনব হাম তাকর
সো প্রিয় মধুরিম ভাষা।
নয়নহি বয়ন-চান্দ কিয়ে হেরব
কোমুদি হাস-বিকাস ॥
রাইক কোরে কামু ঐছে বিলপই
ব্রহ্ম-বনিতাগণ হাস।
প্রেমক রীত বুঝাই সংশ্য ভেল
কহতছি গোবিন্দদাস ॥১০॥৭৭০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৬০ ও প-র পুথির
৩৬। বংধ্যক পদ। ২। 'হব' প-র। ৩। 'উরু'

য়, চ, প-র-সা। ৪। 'লুঠই' প-র। ৫। 'সজনি
লা ব্বিরে' হলে 'সধি হে কো কহ' প-র। প-র
পুথিতে 'সথি হে' ইত্যাদি কলি বারা পদটি আরম্ভ
করা হইরাছে। ৬। 'চমকি হরি বোলত' হলে
'বৈঠি হরি কহতহি' প-র। ৭। 'বোল' প-র-সা,
প-র। ৮। 'সো' ইত্যাদি হলে 'আর তাহে মধুরিম
হাস' প-র। ৯। 'কবে' প-র। ১০। 'ঐছে'
ছলে 'বব' প-র-সা, প-র। ১১। 'প্রেমক' ইত্যাদি
ছলে প-র পুথির পাঠ বথা—'না বুঝল বাত ধন্দ
বোহে লাগল'।

তথা রাগ ৷>

ধনি-কোরে বিনদ^২ নাগরবর⁹ ভুললা⁹। রোয়ত নীর বয়ন বহি গেলা॥ কোরে আকুল ভই মুরছিত ভেল। সহচরিগণ কর বয়নহি দেল॥ খাস-হীন হেরি সবছ[®] বিভোর। রোয়ত ধনি তব খাস করি কোর॥ এক সৰি যুগতি করল অনুপাম।
আবণে কছই তব রাধা নাম॥
বছখণে আবণে পৈঠল সোই বোল।
রাই রাই করি উঠল তনু মোড়॥
রোই রোই হ্বদনি পরিচয় দেল।
কোরে কয়ল সব তুখ হুরেণ গেল॥
বৈঠল নাহ রাই বাম পাশ।
বেরি চমকিত রাধাবল্লভ দাস ॥১১১৭৭৪॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১২৬৪ সংখ্যক পদ। ২। 'বিনোদ' ক। ৩। 'নাগর' খ, প-র-সা। ৪। 'ভূলিলা' ক। ৫। 'দুরে' ক।

পুনশ্চ দিনান্তরে।

विरुपड़ा ।)

রাধা মাধব বিলসই কুঞ্জক মাঝ।
তমু তমু সরস পরশ-রদ পীবই
কমলিনি মধুকর-রাজ ॥ ধ্রু ॥
সচকিতেই নাগর কাঁপই পর পর
শিথিল হোয়লই সব অজ ।
গদ গদ কহয়ে রাই ভেল অদরশ
কবে হোয়ব তছু সজ ॥
সো ধনি-চাঁদ-বয়ন কিয়ে ছেরব
শুনব অমিয়াময় বোল।
ইহ মঝু হাদয়, তাপ কিয়ে মেটবই
সোই করব কিয়ে কোল ॥
ঐছন কভছ বিলাপইই মাধব
সহচরি দুরহি হাদ।
অপরপে প্রেমে বিষাদিত অস্তর
কহতহি মাধবিই দার ॥১২৪৭৭৫৪

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পূথির ১২৬৫ সংখ্যক পদ।
২। 'সচকিত্ত' ক। ৩। 'করল' ক। ৪। 'হৃদ্ধে'
ক। ৫। 'মিটব' ক। ৬। 'বিলপরে' ক;
'বিলপই' প-র-সা। ৭। 'মাধ্ব' ক, প-র-সা।

মঙ্গল ।১

পরশিতে রাই-তকু আপনে ভুলল কামু মুরছি পড়ল ধনি-কোর। ধনি ভেল গদগদ শ্যামকেং হেরইতে তরকি তরকি বহে লোর॥ খাম মুরছিত হেরি চকিতে ললিতা ফেরি রাধা-মন্ত্র শ্রান্তি-মূলে দেল। অন্ন মোড়াইয়া কান্ত্ৰ নিরখই রাই-ডমু হেরি সখী সচকিত ওেল। চিত্ৰ-পুঙলি যেন বেঢ়ল স্থিগণ नित्रथरे भाग-मूथ-हन्स । কি ভেল কি ভেল বলি ধাওল বিশাখা আলি नव करन लांगल धन्त ॥ শ্রামর-সুন্দর-বদন-স্থাকর স্মৃষি নেহারই সাধে। উপকল উল্লাস কহই মাধ্বিঃ দাস विषयि माध्य ब्राट्य ॥১०॥१२७॥ ইভ্যাদি শ্রীকৃষ্ণশ্য প্রেম-বৈচিন্ত্যম্। ইতি নবম-পল্লবঃ।

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৬৬ সংখ্যক পদ।

२। 'শ্রাম কতে' ক; 'শ্রামক' ব, চ; 'নাগর' প-র
না। ৩। 'চমকিড' ক; প-র-সা। ৪। 'মাধবী'

क; 'মাধুরী' ব।

অথ অমুরাগঃ।

সদাসুভূতমপি ষঃ কুর্যান্নবনবং প্রিরম্। রাগোভবন্নবনবঃ সোহসুরাগ ইতীর্যাতে ॥ অসুরাগো ভবেজ্রিধা রূপাদাক্ষেপতঃ ক্রেমাৎ। অভিসারাসুরাগশ্চ জ্ঞান্নত্তে রসিকৈজনৈঃ॥

আদৌ রূপামুরাগো যথা।

তত্র শ্রীমহাপ্রভুঃ।

यहरे ।)

নিরবধি মোর মনে গোরা-রূপ লাগিয়াছে
কহ সধী কি করি উপায়ং।
না দেখিলে গোরা-মূখ বিদরিয়া যায় বুক
পরাণঃ বাহির হৈতে চায়॥
কহ সধি কি বুদ্ধি করিব।
গৃহপতি গুরুজন ভয় নাহিং মোর মন
গোরা লাগি পরাণ তেজিব॥
সব হুখ তেয়াগিলুঁ কুলে তিলাঞ্জলি দিলুঁ
গোরা বিন্দু আন নাহি ভায়।
নিকরে করয়েখ আঁখি শুন হে মরমিণ স্থি
বাহ্যঘোষ কি বলিবে তায়॥১॥৭৭৭৪

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পূথির ১২৬৭ ও প-র পূথির
১৪। ১০ সংখ্যক পদ। 'ফুহই' হলে 'ভুড়ী' প-র।
২। 'কহ' ইত্যাদি হলে 'কি করিব কি হবে উপার'
প-র। ১। 'ক্রপ' ক, খ, খ, চ, প-র-সা। ৪।
'পরাণি' ক, খ, প-র-সা। ৫। 'ভর নাহি' হলে
'নাহি লরে' প-র। ৬। 'নিবরে বাররে' হলে
'নিকুরে কুররে' প-র-সা। ৭। 'মরম' খ, প-র-সা, প-র।

তথা বাগ।>

থার বিজুরি অসু মব-জলধর-তমু পীত বসন বনিং তায়। **हु** जिथि-प्रज বেডিয়া মালতামাল সৌরভে মধুকর ধায়॥ श्रीम-क्रथ जागरम मत्रम । যতনে ভুলিতে নারি পাসরিৰ মনে করি श्रुहारेल कूलित धत्राम ॥ अ ॥ কিবা সেই মুখ-শশী উগারে অমিয়া-রাশি আঁখি মোর মজিল তাহায়। ঞ্জেজন-ভয়ে যদি ধৈরজ ধরিতে চাহি বিগুণ আগুন উপজায় । রস-ত্বধানিধি কভ এ তিন ভুবনে যত শ্যাম আগে নিছিয়া পেলিয়ে । এ দাস অনত্তে কয় হেন রূপ রসময় मा (पश्चिटन भेदान ना खोरम ॥२॥११৮॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৬৪ সংথ্যক পদ। ২। 'বেনে'প-র-সা। ৩।'কেলিয়ে'থ,খ,চ।

তুড়ী।১

হৈরি মুখচন্দ্র-স্থারস-লহরাকিরণহি ভুবন উল্লোর।
ভিরপিত হ চাহি চকোরিণি-কামিনিলোচন নিশি দিশি ভোর ॥
সজনি অব হাম না বুঝিও বিধান।
অভিশয় আনন্দে বিঘিন ঘটাওল
হেরইভে ঝরয়েও নয়ান ॥ এও ॥
লাকণ দৈব কয়ল ছক্ত লোচন
ভাকে পলক নিরমাই।
ভাবে অতি হরিবে এ ছক্ত দিঠি পূরল
কৈচে হেরব মুখ চাই॥

তাহে গুরু ছুরুজন-লোচন কণ্টক
সন্ধট কতক্ত বিধার।
কুলবভি-বাদ বিবাদ করত কত
ধৈরজ লাজ বিচার ॥
সবহুঁ উপেধি ষাই বন পৈঠব
কামু গীমে করি হার।
নিরজনে রাতি দিবস হথে হেরবং
এহি দঢ়ায়সুঁ সার॥
কি করব আন ধরম-করম মতং
জীবনহীন জমু দেহ।
গোবিন্দদাস ভণ মনমধ মোহন
মিলনে কিয়ে করু কেই ॥৩॥৭৭৯॥
পাঠাস্কর

১। ইছা প-র-সা পূথির ১২৬৯ ও প-র পূথির ১৪।১০ সংখ্যক পদ। ২। 'তির্থিত' প-র। ৩। 'হাম না বুঝি' স্থলে 'নাহি বুঝিরে' প-র। ৪। 'ঝুররে' প-র-সা। ৫। 'বঞ্চব' প-র। ৬। 'তন' প-র। 'কি করব' ইত্যাদি ভণিতার কলিটি ক, বু, চ ও প-র-সা পূথিতে নাই।

ভাটিরারি ৷১

যো মুখ দেখিতে हिशा विभन्नदन्न **क् डांट्बर** भेजांग भद्र । ভালে সে কামিনী पिवन बक्रनी युतिया युत्रिया मत्त्र ॥ সই সে কালা॰ ক্ৰম্বজনে। ও রূপ দেখিয়া কুলে ভিলাঞ্জল मिनू वभूनात जरन ॥ अ ॥ विक्रम नग्नादन ভজিম চাহনি ভিলে পাসরিতে নারি। এত দিনে স্থি निष्ठात्रः जानिन् মজিল কুলের নারী 🛊

চাঁচর চুলে সে ফুলের কাঁচনি ^৫

সাঞ্জনি মরুর-পাথে।

বলরাম বলে কোন বা দারুণী

কুলের ধরম রাখে॥৪॥৭৮•॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৭০ ও প-র পুথির ০০৮ সংখ্যক পদ। ২। 'তার' প-র। ৩। 'সে কালা' ছলে 'কি জানি' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৪। 'নিশ্চর' ক, খ, প-র-সা। ৫। 'কাছনি' প-র-সা, প-র।

बैजार्थ ।>

অক না ধরে রসের ভরে হেলিয়া পড়িছে বায়। অঙ্গ মোডা দিয়া ত্রিভঙ্গ হইয়া কিরিয়া ফিরিয়া চার ॥ **ट्हिया मित्रम्** রসিয়া নাগর কি শেল বাজিলং মোরে। গুরু পরিজন नारग উচাটन তারে সে॰ পরাণ ঝুরে॥ আঁখির ঠারে বুক বিদারে ও বড় বিষম বাণ। পাপিনী যুবতি কুলবভী সভী রাপুক কুলের মান । হিয়া জরজর পরাণ ফাঁকর माऋग मूत्रनी-ऋदत्र । কুটিল° হরিণী **ट्याँ**वेत्र यत्रगी॰ कान्मिया मन्द्रय चटन ॥ मध्य (वार्ष পরাণ দোলে ভাহে পরমাদ হাস। বলরাম কছে এবে সে निहरय

शंक्षिमूँ चरतव माण ॥८॥१৮১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৭১ ও প-র পুথির ৩।৩৯ সংখ্যক পদ। ২। 'রহল' প-র। ৩। 'তারে সে' ব্বে 'তরে সে' চ। ৪। 'কাপর' ক, ধ; 'কাফর' প-র-সা। ৫। 'বাশীর' প-র। ৬। 'কুটিল' ক, ধ, প-র-সা। ।। 'নিশ্চর' প-র।

यश्रहे ।)

ছই ভুরু কামের কামান।
নঠ কৈল কুল-অভিমান ॥
কত ছাঁদে নয়ান চুলায়।
মন সনে পরাণ দোলায় ॥
সে মোহন নাগর কিশোর।
মরমে পশিয়া রৈল মোর ॥ প্রু ॥
কত ন! নাগরপনা জামে।
নিরখয়ে আধ নরানে ॥
আধ মুচ্কি কথা কয়।
প্রকলা-পরাণে কি তাং সয় ॥
কে না কৈল মনোহর বেশ।
সেই সে মজাইল সব দেশ ॥
ভিরি-বধে ভার নাহি ভার।
বলরামের মনে হেন লায় ॥৬॥৭৮২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১২৭২ ও প-র পৃথির ৩০৫ সংখ্যক পদ। ২। 'অবলা-পরাণে কি ডা' ফলে 'অবলার প্রাণে কড' প-র।

ধাৰণী ছুঞা ।>
স্বিত হাসিতে কতং অসিয়া উপলে।
ধরম করম হরে আধ আধ বোলে॥
রূপ দেখি কি না সে করিলুঁ ।
বল করি জাতি প্রোণ পর-হাতে দিলুঁ॥এ॥

নানা ফুলে চাঁচর চুলে চূড়ার কাঁচনি।
কত না ভঙ্গিমা ছটি নয়ান-নাচনি।
কিসের লোকের ভয় কিবা গুরু-লাজে ।
মধুর মুরতি সে লাগিল হিয়ার মাঝে।
ফাগু বিন্দু বিন্দু মাঝে চন্দনের চাঁদ।
কতে বলরাম ওই পিরিতের ফাঁদা। ৭৮ ৭৮ ৩।

পাঠান্তব

১। ইহাপ-র-সাপুৰির ৩৬৮, ১২৭০ ও প-র পুৰির ৩৩০ সংখ্যক পদ। ২। 'হাসিতে কত' ছলে 'ঞাধির ঠারে' প-র-সা। ৩। 'রপ দেখি' ইত্যাদি ছলে 'রূপ দেখি সথি মুক্তি অকাজ করিলু' প-র। ৪। 'কিসের' ইত্যাদি ছলে 'কিসের ভর কিবা শুরুজন লাজে' ক; 'কিবা সে লোকের ভর শুরুজনা লাজে' প-র-সা। ৫। 'সে লাগিল' ছলে 'থানি জার্গে' প-র। ৬। 'কাঞ্ড' ইত্যাদি ছলে 'চৌদিসে কাঞ্ডর বিন্দু' প-র্লা, প-র। ৭। 'ইহা' ক।

Anty 13

কিবা রাতি কিবা দিন কিছুই না জানি।
জাগিতে অপনে দেখি কালা রূপংখানি ॥
আপনার নাম মোর নাহি পড়ে মনে।
পরাণ হরিলে রাজা নয়ন-নাচনে ॥
কি খেণে দেখিলামণ সই নাগর-শেখর।
আঁখি করে মন কাঁদে পরাণণ কাঁফর॥
সহকে মুরতি খানি বড়ই মধুর।
মরমে পশিরা সে ধরম কৈলে চূর ॥
আর তাহে কত কত ধরে বৈদগধি।
কুলেতে যত্তন করে কোন বা মুগ্রী॥
দেখিতে সে চাঁদমুখ জগ-মন হরে।
আাধ মুচকি হাসেণ কত কুধা খরে॥

কাল কপালে শোভে চন্দনের চাঁছে। বলরাম বলে ভেঞি সদাই পরাণ

काटन माध्य १४८१

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৭৪ ও প-র পুথির ৩াও সংখ্যক পদ। ২। 'বরণ' প-র। ৩। 'বি খেণে দেখিলাম' ফলে 'কি রূপ দেখিরু' ক, খ, প র। ৪। 'নরান' ক, খ। ৫। 'হাসি' ক, খ্ খ,চ,প-র-সা।

कुड़ो ।>

রূপ দেখিলে এমন হবে জানিব কেমনে।
এত কি সহিতে পারে অবলা পরাণে॥
বিশুণ দহয়ে তথু মুরলীর স্বরে।
কুলিন সাপিনী যেন গরল উগারে॥
আব তাহে তাপ দিল পাপ ননদিনী।
ব্যাধের মন্দিরে যেন কম্পিত হরিণী॥
নিরবধি প্রাণ মোর শ্যাম-অনুরাগী।
যে মোরে ছাড়িতে বোলে হবে বধের ভাগী।
ভ্তান কহে যেই কহ সেই সে করিব।
শ্যাম বন্ধুর লাগি পরাণ হারাইৰ॥৯॥৭৮১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১০৬ ও ১২৭৫ সংখ্য পদ। ২। 'দহরে তমু' ছলে 'দগৰে প্রাণ' প-র সাঃ ৩। 'কুলিনী' প-র-সা। ৪। 'আর ভাষে ইত্যাদি ছলে 'তাহে হথ দেই মনে' প-র-সা। ৫ 'বঞ্চরে' প-র-সা। ৬। 'নিরব্ধি' ইত্যাদি পংঘি চারিট ক, ধ, দ, চ পুৰিছে নাই; প-র-সা পুটি হইতে উদ্বত হইবাছে।

রামকেলি ৷>

মলু মলু ভাষ-অনুৱাগে।
মনোহর মধুর মূরতি নব কৈলোন
সদাই হিয়ার মাবে ভাগে। এ এ

জীতে পাসরিতে নারি বল নাং কি বুদ্ধি করি

কি শেল রংলা মোর বুকে।
বাহির হৈরা নাহি যায় টানিলে না বাহিরায়
অন্তরে জ্বলয়ে থিকে থিকে ॥
চরণে চরণ পুঞা অথকে মুরলী লৈয়া
দাঁড়াইয়া তেরছ নয়ানে।
অঙ্গুলি লোলাইয়া খাম কি জানি কি দেখাইলা
সে কথা পড়রে সদা মনে ॥
কিছু না মোর সহে গায় কেবা পরতীত যায়
ভিলে প্রাণ ভিন ঠাঞি ধরি।
বহু রামানন্দের বাণী দিবানিশি নাছি জানি

পাঠান্তর

গোপতে গুমরি মরি মরি ॥১০॥৭৮৬॥

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১২৭৬ সংখ্যক পদ।
২। 'সে' ক, খ। ৩। 'পশিল' খ। ৪। 'পৃইরা'
ব, চ। ৫। 'দঙাইরা' খ। ৬। 'তেড্ছ' প-রমা। ৭। 'লোলাহে' ক; 'লোটাইরা' খ। ৮।
'কহিল গো' প-র-সা।

পুনশ্চ প্রকারান্তরং যথা।

थानमी ।>

গৌরাজ-লাবণ্য রূপে কি কহিব এক মুখে আর তাহে ফুলেরং কাঁচনি।

চাঁদ-মুখেরণ হাসি জীব না গো হেন বাসি আর তাহে ভাতিয়া চাহনি॥

বিহি সে গঢ়ল রূপ ছাদেদ।

কেমন কেমন করে মন সব লাগে উচাটন পরাণ-পুডলি মোর কান্দে॥ এদ॥

বিধিরে বলিব কি করিলে কুলের ঝি আর তাহে নহি স্বভন্তরি।

পেল কুল লাল ভর পরাণ রহিবারণ নর মনের আনলেণ পুড়ে মহি॥

কহিব কাহার আগে কহিলে পিরিতি ভাজে

চিত মোর ধৈরজ না বান্ধে।
নয়নানন্দের বাণী শুন শুন বিনোদিনি

ঠেকিলা গৌরাক্ত-প্রেম-ফান্দো।১১॥৭৮৭॥

পাঠান্তৰ

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৭৭ সংখ্যক পদ।
২। 'কুলের' ক, খ, ঘ, চ। ৩। 'ও চাদ-মুখের'
প-র-সা। ৪। 'বাহিরাবার' প-র-সা। ৫। 'মনের
অনলে' ছলে 'প্রেম অনলে' প-র-সা। ৬। 'ঠাকুরাণি' ধ।

তথা রাগ ৷১

তপত-কাঞ্চন-কান্তি কলেবর উন্নত ভাঙ্ব ওজী। করিবর-কর জিনি বাছর স্থবলনি বিহি সে গঢল বছরজী । গোরা রূপ জগ-মনহার।। আপন বৈদগধি বিধাতা প্রকাশিত• विश्व कूमविक नांत्री ॥ अ ॥ আপদ-মস্তক পূৰ্ণ পুলকিত প্রেমে ছল ছল আঁখি। আপন গুণ শুনি আপহিঁ বোরত হেরি কান্দয়ে পশু পাখী। কুমুদ-মলিকা চান্দ-চন্দ্ৰিকা জিনিয়া মধুর মৃত্হাস। মধুর বচনে অমিয়া সিঞ্চনে बिह्न (गाविन्मनाम ॥)२॥**१৮**৮॥

পাঠাক্তৰ

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৭৮ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' ফ্লে 'ভূড়ী' প-র-সা। ২। 'ভাঙর' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'প্রকাশিণ' থ। ৪। 'আপনি' প-র-সা।

পঠবঞ্জী ।১

মরি মরিং না লোও শ্যাম-রূপের বালাই লৈয়া। কোন বিধি নিরমিল কত স্থা দিয়া॥ এ ॥ শরদ-বিধুবর ফুল পুদ্ধ ञुन्दर्शनन मश्रदण। बक्र मणिमग्र রবি সমোদিত গণ্ডে নৃত্যতি কুগুলে॥ চারু-চন্দ্রিমণ চুড়া চিক্কণ চঞ্চরীগণ আব্রতে। চমকিত হিয়া মোর ও রূপ দেখিতে ॥ ভিমির পুঞ্জর नकन कलभन हेस्तीम मत्नात्रम । ৰন্ধ্যাধ্য রঙ্গ সিন্দুর নিন্দি বিশ্বক বিশ্ৰমে । (कांडनांकन বিমল চঞ্চলদ विषय - वान-जटकान्द्र । শ্রাম-রূপ নির্বিতে হৃদয় বিদরে॥ निक्स क्रिक्तः প্রবল ভুজবর কশ্বপাঞ্চদ শোভনে। নখর তীখণ রুচি বিলক্ষণ গোপি-চিত্ত-প্রলোভনে ৷ হেম-বিরচিড) ২ মুদ্রিকাযুত পাণিশাথ মনোহরে। ও রূপ দেখিতে প্রাণ কি জানি কি করে। বিপুল বক্ষ ঐবৎস-লাঞ্ছন ভার>৩ হার বিলম্বিতে। উরগ বিক্রম> কুশিম মধ্যম পীত অম্বর শোভিতে। চরণ-পল্লব শরণ বছাত মঞ্-মঞ্জির রঞ্জিতে। मधुनामारमन हिट्ड नह व्यक्तिए । 17017121

পাঠান্তর

>। इंश প-त्र-मा श्रीत >: १৯ % প-त श्रीत् शास्त्र मार्थ मार्थ भाग प्रतिमा श्री खरण 'कार्याण भाग । 'भिक्रम त्री' खरण 'कार्याण भाग । १। 'मित्र मित्र' खरण 'मित्रि' भाग । १। 'मित्र मित्र' कर हा। १। 'मित्र मार्थ भाग । भाग । 'मित्र मार्थ भाग । भाग । 'मित्र मार्थ भाग । भाग । भाग । 'मित्र मार्थ भाग । 'मित्र मार्थ भाग । भाग । 'मित्र मार्थ भाग । भाग । 'मित्र मार्थ भाग । 'मित्र मार्थ भाग । भाग । 'मित्र मार्थ भाग । 'मित्र मार्थ भाग । 'मित्र मार्थ भाग । 'मित्र मार्थ भाग । भाग । 'मित्र मार्थ भाग ।

यहरे ।>

কুন্দারে কুন্দিলে গো वमन-होन्म दर्कान क ना कृत्मिल हुई आँचि। দেখিতে দেখিতে মোর পরাণ যেমন করে সেই সে পরাণ তার সাধী। রতন কাডিয়া অভি৽ যভন করিয়া গো क् ना शिष्याः पिन कारन। মনের সহিতে মোর এ পাঁচ পরাণি গো যোগী হবে• উহারি ধেয়ানে ॥ তথা খানি খানি গো অমিয়া মধুর বোল হাতের উপর নাহিণ পাত। এমতি করিয়া বদি বিধাতা গঢ়িত গো ভালিয়া ভালিয়া উহা খাঙ । চুড়ার টালনি পোণ यमन-कान्स ४ ना উহা না শিধিয়া আইল কোথা। এ বুক ভরিনা মুঞি • উহা না দেখিলুঁ গো अ विक महाम त्यांत्र त्यां³ ॥

নাসিকার আগে দোলে ২ এ গজ-মুকুতা গো সোণার মড়িত^{১৩} তার পাশে। বিজ্বী জড়িত ১০ যেন চাঁদের কণিকা ১৫গো মেখের আড়ালে থাকি ১৬ হালে॥ করভের কর জিনি বাছর বলনি১৭ গো হিঙ্গুল-মণ্ডিত তার আগে। বৌবন-বনের পাখী পিয়াসে মরয়ে১৮ গো উহারি পরশ-রস মাগে॥ नाष्ट्रया-ठेमटक यात्र রহিয়া রহিয়া চায় চলে যেন গজরাজ>>মাতা। শ্রীনিবাস দাস কয় লখিলে লখিল নয় রূপসিন্ধু গঢ়ল বিখাতা ॥১৪॥৭৯०॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৮০ ও প-র পুথির ২। ও সংখ্যক পদ। 'স্ক্ছই' স্থলে 'প্রারাগ' প-র। ২। 'কঢ়িরা' ক; 'কড়িরা' ল; 'কাটিরা' চ, প-র। ৩। 'কেবা' ক। ৪। 'পরাইরা' প-র-সা। ৫। 'পরাণ' ক, খ, চ। ৬। 'ইলে' প-র। ৭। 'লাগি' ক, খ। ৮। 'ফাল্দরা' ক; 'ফাল্দুরা' চ। ৯। 'সাক্রি' প-র। ১০। 'মদন-কাল্দ' ইত্যাদি স্থলে 'মর্ব-প্রেছ্রে ছাল্দে' ইত্যাদি খ; 'মউরপ্রেছ্রে চাল্দে' ইত্যাদি স্থলে 'মরমে রহিরা গেল বেখা' প-র। ১২। 'শোভে' প-র। ১৩। 'মঢ়িল' ক; 'মৃড়িত' প-র-সা। ১৪। 'সহিত' প-র; 'ডড়িত' খ। ১৫। 'কলহ' ক। ১৬। 'কিবা' প-র। ১৭। 'বাছর বলনি' স্থলে বাই স্থবলনি' প-র। ১৮। 'মরিল' প-র-সা। ১১। 'সক্রপতি' প-র।

ভাটনারি।>
আফে আজে সবি মুক্তা খেচনিং
বিজুরী চমকেও তার।
হি হিও কি অবলা সহজে চপলা
মধন মুরহা পার ॥

মরোঁ মরোঁ পই ও রূপ নিছিয়া লৈয়া। কি জানি কি খেণে কো বিহি গঢ়ল कि ज़भ माधुती निग्ना ॥ अ ॥ চুলু চুলু ছুটি নয়ন-নাচনি চাহনি मन्त-वाटन। তেরছ বন্ধানে বিষম সন্ধানে यत्राय यत्राय शत्म शत्म ॥ চন্দন-ভিলক আধ ঝাঁপিয়া বিনোদ চুড়াটী বাঙ্গে। হিয়ার ভিতরেগ त्नां हो या त्नां हो या। কাতরে পরাণ কান্দে॥ আধ চরণে আধ> চলনি আধ্য মধুর হাস। এই সে লাগিয়া ভালে সে ঝুরিয়া मटत वनताम मान ॥১०॥१৯১॥

পাঠাম্বর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৮১ সংখ্যক পদ।
২। 'বেচনি' ক। ৩। 'দমকে' ক, খ, প-রসা। ৪। 'ছি ছি' স্থলে 'এথে' প-র-সা। ৫।
'মরোঁ মরোঁ' স্থলে 'মরো মরো' ক; 'মরঙ মরঙ'
প-র-সা। ৬। 'মাঝারে' প-র-সা। ৭। 'লোটারা।
লোটারাা' স্থলে 'লোটাঞা লোটাঞা' ক, খ;
'লোটারা' প-র-সা। ৮। 'আধ্রা' প-র-সা। ৯।
'আধ্রা' প-র-সা। ১০। 'আধ্রা' প-র-সা।

রামকেলি ৷১

আলো সই করিব কি।
পরাণ পরবশ জীবারে জি॥
কি দিয়া নিরমিল কেমন বিধি।
রূপের নাহি সীমাং গুণের নিধি॥
লখিল॰ নছে রূপ লখিল নয়।
বে অকে পড়ে দিঠি সে অকে রুর॥

দেখিতে দেখিতে মনে এমনিং লয়।
সকল অংকং যদি নয়ান হয়।
যখন শামবন্ধু বাঁশীটি পূরে।
বনের পশু কান্দে বিরিখি ঝুরে॥
যখন তক্ততেলে বাঁশীটি বাজে।
পরাণ যেমনং করে না কহি লাজে।
নয়ান-কোণে ভারদ আছে কি ধন।
যার লাগিং জাতি কুল করিলুঁ পণ॥

1176119951

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১২৮২ ও প-র পুথির
১৪।০২ সংখ্যক পদ। 'রামকেণি' হুলে 'বিভাব'
প-র। ২। 'রূপের নাহি সীমা' হুলে 'শ্রামরূপে
সীমা' প-র। ০। 'লখিলে' ক। ৪। 'মনে
এমনি' হুলে 'মোর হেন মনে' প-র। ৫। 'অল'
প-র। ৩। 'বখন তরুতলে' হুলে 'কদহুতলাতে'
প-র। ৭। 'পরাণ বেমন' হুলে 'নরানের কোণে'
প-র। ৯। 'বার লাগি' হুলে 'বাতে' প-র।

সিমুড়া।১

কি বা সে মোহন-বেশ ভুলাইলে সবং দেশ না রহে সভীর সভীপনা। ভরমে দেখিলে ভারে জনম ভরিয়া গো यूतिया मत्राप्त^७ कछ जना ॥ नरे सम कि कतिनुं किटन वा त्म वाज़ाहे नुं কি শেল হামিল জানি॰ বুকে। ৰাতি কুল শীলে সই বজর পড়িল গো कामाऋश दम्भि दहोट्य दहोट्य ॥ কিবা সে বল্লান-বাণ विश्राय शनिन (गा भन्न अभिग्ना दिन वृदक । কোন বা পামরী নারী जानना बाधरयः (गा আঞ্চন খালিরা দি ভারণ মুখে।

থাইতে সোয়ান্ত নাই নিন্দ দুরে গেল গো

হিয়া ডহ ডহ>> সন কুরে।

উড়ু উড়ু>২ আনছান ধক ধক করে প্রাণ

কি হৈল রহিতে নারি>০ ঘরে॥

রসের মূরতি সে দেখিলে না রহে দে

বাতাসে পাষাণ হয় পানী।
বলরাম দাসে বোলে সে অল পরশ হৈলে
প্রাণ লৈয়া কি হয় না জানি॥১৭॥৭৯৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৮৩ ও প-র পুথির ১৪।০০ সংখ্যক পদ। 'নিদ্বৃড়া' ছলে 'তুড়া' প-র।
২। 'তুলাইলে দব' ছলে 'নেথিতে মুবছে' প-র।
০। 'মজরে' ক, খ; 'না মরে' প-র। ৪। 'সই'
ইত্যাদি ছলে 'দই কি করিলুঁ মেনে' প-র। ৫। 'দেন বাঢ়াইলুঁ' ছলে 'চাহিলুঁ পো' প-র। ৬। 'দেন ক, খ, ঘ, চ, প-র। ৭। 'আজি' প-র। ৮। 'কালারপ' ইত্যাদি ছলে 'কিনা রূপ দেখিলাম চৌখে' প-র-সা। ৯। 'রাখিবে' প-র। ১০। 'জালিরা দি তার' ছলে 'দেরাব তার' প-র। ১০। 'লহ দহ' ক; 'চহ ঢহ' থ। ১২। 'উড় উড়' ছলে উড় পুড়' প-র-সা। ১০। 'নারোঁ প-র।

थाननी ।>

রূপে ভরল দিঠি সোঙরি পরশ মিঠি
পুলক না তেজই অল ।

মধুর মুরলী-রবে শ্রুতি পরিপুরিত
না শুনে আন পরসঙ্গ ॥

সঞ্জনি অব কি করবি উপদেশ ।

কামু-অমুরাগে মোর তমু মন মাতল
না শুণে ধরম লব-লেশণ ॥ গ্রুণ ॥

নাসিকা হো সে অক্সেক সৌরভে উনমত
বদনে না লয়ে আন নাম।
নব নব গুণগণে বাক্ষল মর্ মনে
ধরম রহব কোন ঠাম॥
গৃহপতি-ভরজনে গুরুজন-গরজনে
অন্তরে উপজয়ে হাস।
ভহি এক মনোরথ জনি হয়ে অনর্থ প্রত্

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৪৮ ও প-র পুথির ১৯:৪ সংখ্যক পদ। ২। 'মধুর' (প-র, সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি) ফ্লে 'মোহন'ক, খ, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'আপন'ক; 'আর' সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি। ৪! 'সছে' ক, খ, য়, ৳; 'গুনে' প-র। ৫ 'ভয়-লেশ' ক, প-র-সা। ৬। 'নাসিকা হো সে অক্লের' ফ্লে 'নাসিকা সে অক্লের' ক; 'নাসিকা যে সে অক্ল' প-র। ৭। 'কো ফানে' ক, খ, খ, চ, প-র। ৮। 'ভহিঁ এক' ফ্লে 'ভাহে এভ' প-র। ৯। 'বদি' ক, খ, য়, চ, প-র। ১০। 'অফুরভ' ক, খ, য়, চ, প-র-সা।

ভুড়ী।১

কানড়-কুত্বম জিনি কালিয়া বরণ খানি
তিলেক নয়নে যদি পাগে।
তেজিয়া সকল কাজ জাতি কুল শীল লাজং
মরিবে কালিয়া-অনুরাগে॥
সই আমার বচন যদি রাখ।
ফিরিয়া নয়ন-কোণে না চাইহ তার পানে
কালিয়া বরণ যার দেখ॥ ধ্রুঃ
আরতি পিরিতি মনে যে করে কালিয়া সনে
কখন ভাহার নহে ভাল।
কালিয়া রজস্থ কালা মনেতে গাঁথিয়া মালা
জাগিয়া জিলিয়াণ প্রাণ গেল॥

নিশিদিশি অমুখণ প্রাণ করে উচাটন
বিরহ-সনলে ছলে তমু।
ছাড়িলে ছাড়ন নয় পরিণামে কিবা হর
কি মোহিনী জানে কালা কামু॥
দারুণ মুরলী-স্বর না মানে জাপন পর
মরম ভেদিয়া যার থাকে।
বিজ চণ্ডীদাসে কয় তমু মন ভার নয়
বোগিনী হইবে সেই পাকে ॥১৯॥৭৯৫॥
পাঠাছর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১২৮৫ সংখ্যক পদ।
২। 'তেজিরা' ইডাদি স্থলে সা-প ২০১ পুথির
পাঠ বলা,—'ছাড়িএ সকল কাজ ডেজি কুলভর
লাজ'। ৩। 'ভূষণ' সা-প ২০১ পুথি। ৪। 'জালিরা
জপিরা' স্থলে 'জাগিরা জাগিরা' ক, খ। ৫। 'মিশি
দিশি' স্থলে 'নিশি দিন' ক, খ। ৬। 'জানে' সা-প
২০১ পুথি। ৭। 'সোই' ড়; 'এই' সা-প ২০১

श्रीबाब 13

কি রূপ দেখিলুঁ সই কদন্তের তলে।
লখিতে নারিলুঁ রূপ নয়নের জলে॥
কি বুদ্ধি করিব সেই কি বুদ্ধি করিব।
নিতি নব অসুরাগে পরাণ হারাব॥
কিবা নিশি কিবা দিশি কালা পড়ে মনে।
দেখিলে এমন হবেং জানিব কেমনে॥
গৃহকাজে নাহি মন কর° নাহি সরে।
ভামনাম শুনিতে পুলকে অজ ভরে॥
ভাতেও সে মোহন বাঁণী রাধা রাধা বাজে।
পরাণ কেমন করে মলুঁ লোক-লাজে॥
॥২০॥৭৯৬॥

পাঠান্তর

। ইহা শ-র-সা পুথির ১২৮৮ সংখ্যক পদ।

२। 'हर' थे। ७। 'कांब्र' का ४। 'छांशास्त्र' का

ভাটিবারি ৷১

আংগে পাছে চলে মোর কত প্রিয় সহচরী যমুনার জলে আজু যাই। যোক্সট কাড়িতেং রূপ নয়ানে লাগিয়া গেল

সরম রহিল সেই ঠাঞি ॥

আজু দেখিলুঁ রূপ কদম্বের তলে।

হিয়ার মাঝারে মোর না জানি কি জানি হৈল

নিরবধি ধিক ধিক জালে ॥ এ৮ ॥

কেন বা চঞ্চল চিত নিবারিতে নারি গো

মন মোর থির নাহি বাজে।
ভিলে ভিলে বারে বারে মুকুছা পাইয়া থাকি

চেতন পাইলে প্রাণ কান্দে॥ ধীরে ধীরে পা খানি বাড়াই কত ছল করি

বংশীবদনে করে শুন অসুরাগিণি পিরিতি-অনল না নিভাই ॥২১॥৭১৭॥

তাহে গুরুজনেরে ডরাই।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৮৭ সংখ্যক পদ। ২। 'কাঢ়িতে'ক, থ। ৩। 'দেখিল' ক, ব; 'দেখিলাম'থ। ৪। 'ছইয়া'ক।

एवा जान ।>

নব অনুরাগ-ভবে রহিতে না পারি ঘরে
চলে ধনী সধী একসঙ্গে ।
চলিতে না চলে পা ধরণে না বায় গা
কুঞ্জে মিললণ হেন রঙ্গে ।
দেখিয়া বিনোদ হরি আনিলেন আগুসরি
বসিলেন রসের আবেশে ।
ধনী অনুরাগিণী কহরে সরস বাণী
শুনি নাগর প্রেম-কলে ভাসে ॥

স্থবদনী কহে কথা বেমন **অন্ত**ের বেখা ছলছল অরুণ নয়ানে।

গৰ্বব হৰ্ষ রসাবেশ দৈন্ত গ্লানি মোহ লেখ

আর কত ভাব ভাছে শ্যাম-মন মোহেং যাহে ঈষদ বঙ্কিম ভাহে মাধা।

প্রেমদাস করে ধনি সরস বিরস জানি। রাখিতে না যার পুন রাখা ॥২২॥৭৯৮॥

> ইত্যাদি রূপামুরাগঃ। ইতি দশম পল্লবঃ।

> > পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১২৮৮ সংখ্যক পদ।
'তথা রাগ' হলে 'ভূপানী' প-র-সা। ২। 'এফ সক্ষ'ক, থ, ঘ, চ। ৩। 'মিলন' ক, খ, চ, প-র-সা। ৪। 'রক্ষ'ক, থ, ঘ, চ। ৫। 'মোহ' ঘ, চ, প-র-সা। ৬। 'বানী' খ।

অথ আফেপামুরাগঃ।

স এব নানাবিধো ষধা।

কৃষ্ণঞ্চ মুরলীঞৈবং আত্মানক সধীন প্রতি।
দূত্যাং ধাতরি কন্দর্পে তথা গুরুগণাদিরু॥

তত্ত্ব শ্রীকৃষ্ণং প্রতি আক্ষেপো যথা।

তত্রাদে **শ্রীমহাঞ্জত্র:।** বক্টা>

দেখি গোৱা নীলাচল-নাথ।
নিজ পারিষদগণ সাথ ॥
বিভোর হইলা গোপী-ভাবে।
কহে পছ করিয়া আক্ষেপে ॥
আমি ভোমা না দেখিলে মরি।
উলটি নাং চাহ ভূমি কিরিও ॥

করিলা পিরিভিময় ফাঁদ।
হাতে দিলা আকাশের চাঁদ॥
এবে ভোমা দেখিতে সন্দেশ।
কহে গোরা করিয়া আবেশ॥
হলহল অরুণ নয়ান।
রসরস বিরস বয়ান॥
অপরূপ গৌরাজ-বিলাস।
কহে কিছু নরহরি দাস॥১॥৭৯৯॥

পাঠান্তব

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৮৯ সংখ্যক পদ। ২। 'উলটি না' ফলে 'উলটিরা' ক। ৩। 'কেরি' ক,খ,ব,চ।

थाननी ।>

কুঞ্চ হি ভেটল নাগর শ্যাম।
ধনি অনুরাগিণি সহলই বাম ॥
গদগদ কহে কথা নাগর পাশ।
ভূতাঁ কাহে মাধব ভেলি উদাদ ॥
পহিলহি যত ভূতাঁ আরতি কেলং।
সো অব জুরহি দূবে রহি গেলং॥
হাম ভূয়া দরশন লাগি বিভোরং।
ভূতাঁ কাহে বচন না শুনসিং মোর ॥
ভূয়া লাগি কুল শিলং ভেজিলুঁ হাম।
না জানি কি অবহাঁ আহুরোই।
ধনি অভি সরল কহরে পুন তাই ঃ২৮৮০০॥

পাঠান্তর 🥕

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৯০ সংখ্যক পদ। ২। 'কেলি' ক। ৩। 'গেলি' ক। ৪। 'লাপি বিভার' ছলে 'লাপিরা বিভোর' ক; 'লাপিরা ভোর' চ। ৫। 'শুন্সি' ক, থ, চ, প-র-না। ৬। 'শীল' ক, খ, পর-সা। ৭। 'নছে' ছলে 'নাহ' ক, ঘ, চ।

श्रीकांत्र 15

वक् मकिल आगात लाग। ना जानिया यपि কর্যাছিং পিরিভি কাহারে করিব রোষ ॥ স্থার সমুদ্র नमूर्य (मथिया খাইলু অপন সুখে। কে জানে খাইলে গরল হইবে পাইব এতেক ছখে॥ মো যদি জানিতাঙ অলপ ইন্সিতে তবে কি এমন করি। জাতি কুল শীল মজিল সকল ক্রিয়া কুরিয়া মরি। অনেক আশার ভরসা মক্রক দেখিতে করিয়ে সাধ। প্রথম পিরিত্তি ভাছার নাহিক ত্রিভাগ° আধের আধ ॥ যাহার লাগিয়া যে জন মরয়ে त्मर यमि करत[े] व्याप्त । **ठ** छीमारम करह এমনি পরিডি क्त्ररत्र ञुक्न मत्न । १०१४ - ১॥ পাঠান্তর)। हेहां भ-त-मा शूबित ১२৯) मरबाक भग।

२। 'क्रब्रिड्' क; 'क्रिब्राह्' च। ७। 'बार्डेन'

ष ; 'আইলু' ক। ৪। 'মৰিল সকল' ছলে 'সকল মৰিল' থ, য ; 'মৰিল সকলি' চ। ৫। 'ত্ৰিভাগেয়'

ह। ७। 'क्यर्य' ४, ४, १५-य-गा। १। 'এमन' हा

গান্ধার ।১

অহে খ্যাম তু বড়িং স্থজন জানি°। কি গুণে বাঢ়াইলা° কি দোষে ছাড়াইলা° নৌতুন• পিরিতিখানি॥ ভোমার পিরিভি আদর আরতি আর কি এমন হবে। মোর মনে ছিল এ হুখ সম্পদ क्रम व्यविष शादन ॥ দিলা সমাধান ভাল হৈল কান वृश्चिनाम जनभ काटन। পাছু না গণিলাম মুঞি অভাগিনী ছিল শুভ দিন যখন আমার তখন বাসিতা ভাল। না পাই দেখিতে এখন এ>> সাধে কান্দিতে জনম গেল। বন্ধুর পিরিতি কহয়ে শেখর কহিতে পরাণ ফাটে। করাত যেমন>২ শখ-বণিকের আসিতে যাইতে কাটে ॥৪॥৮•২॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৯২ ও প-র পুথির ১৪)২৭ সংখাক পদ। 'গান্ধার' হুলে 'দিম্ভা' প-র। ২। 'তু বড়ি' হুলে 'তুহু 'দে' থ। 'অংহ' ইত্যাদি পংজি হুলে প-র পুথির পাঠ বখা,—'অংহ শ্রাম তুমি বড় হুজন তা জানি'। ৩। 'সড়িলে' প-র। ৪। 'হাড়িলা' ক খ, য়, চ। ৫। 'নেবান' হুলে 'গুলে তালিলে' গ-র। ৬। 'নবীন' ফ, ঝ, য়, চ, প-র-সা। ৭। 'এমনি' ক, ঝ, য়, চ, প-র-সা। ৭। 'এমনি' ক, ঝ, য়, চ, প-র-সা। ৮। 'বুনিলাম জলপ' হুলে 'বুনিলু ডোমার' প-র। ৯। 'না স্পিলাম' হুলে 'নাহি গণি' প-র। ১০। 'জগত' প-র। ১১। 'জতি' গ-র। ১২। 'ক্লাত বেনন' হুলে 'বেনন ধরণ' গ-র-সা।

बाननी ।>

বন্ধ কানাইং কছিলে বাসিবা ছুখা। কুলের ধরম রাখে আর যত কুলবতী সে জনি হেরয়ে ভুরা মুধ ॥ এ ॥ তিমির-কা**জর**ু ভেল সহজে বরণ কাল অন্তর বাহিরে সমতুল। মরুক ভোমার বোলে কেণসী বান্ধিয়া গলে সে ধনি মজাকু জাতি কুল a পরিচয় নাহি ছিল যথন তোমার সনে আন ছলে দেখিয়া বেড়াও। বারে বারে ডাকি আমি শুনিয়া না শুন ভূমি আঁখি তুলি সরসে না চাও॥ যখন পিরিতি কৈলা আনি চাঁদ হাতে দিলা আপনে বনাইতা সোর বেশ। আঁখি-আড় নাহি কর হাদয় ২০ উপরে ধর এবে তোমা দেখিতে সন্দেশ। একে হাম পরাধিনী তাহে কুল-কামিনা चरत्रभ रेहरक व्यक्तिना विस्तृभ । যথা তথা থাকি আমি তোমা বহি নাহি জানি नकलि कहिलूँ २२नविर्नव ॥ বড় বৃক্ষ-ছায়া> দেখি ভরদা> করিলুঁ মনে ফুল ফলে ১ একই না গন্ধ। সাধিলা আপন কাজ আমারে সে দিলা লাজ জানদাস পড়ি রন্থ ধন্দ । ৫।৮০৩।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৯০ ও প-র পুথির ১৪।১২৯ সংখ্যক পদ। 'ধানদী' হুলে 'কক্পা' প-র। ২। 'বদ্ধ কানাই' হুলে 'বদ্ধ হে' ও; 'জহে বদ্ধ' প-র। ৩। 'মনে ছ্থ' প-র। ৪। 'রাথি' ক, প-র-সা। ৫। 'কানি' ক, ধ, চ, প-র-সা। ৬। 'পুঞ' ক, প-র-সা। ৭। 'কক্ষ' প-র। ৮। 'সর্বেশ' ক, খা ৯। 'বনাডো' প-র। ১০। 'ছিরার' প-র। ১১। 'ঘর' ক, থ, প-র-সা। ১২। 'কহিল' ক; 'জানহ' প-র। ১৩। 'বড় রক্ষ-ছারা' হলে 'রভনের রক্ষ' প-র। ১৪। 'ভরোসা' থ। ১৫। 'ফল' প-র।

সিমুড়া ।১

অহে কানাইং বুঝিলুঁ তোমার চিত। আগে আহারণ দিয়া মারয়েঃ বান্ধিয়া এমতি তোমার রীত। ধ্রু। যখন আমাকে সদয় আছিল৷ পিরিতি করিলা বড়। এখন কি লাগি इहेला विद्रांशी নিদয় হইলা দড ।। বুঝিলু মরমে যে ছিল করমে (मरे (म रुवेट कांग्र। নহিলে কে জানে খলের বচনে পরাণ সোঁপিলুঁ তায় ৷ ভোমার পিরিভি দেখিতে শুনিতে যে ছুখ উঠিছে চিতে। সে নারা মরুক যে করে ভরসা ভোমার পিরিতি-রীতে ॥ দেখিতে শুনিতে মাপুৰ-জাকার আছি নাও আছিয়ে ঘরে । হিয়ার ভিতরে বেমত পুড়িছে সে তুখ^৮ কহিব কারে । পুরুবে জানিতাম হইবে এমডি পাইব এতেক লাব্দে। छानमात्र कट्ट देशब्रक धवर আপন সুখের কাজে ১৬৯৮ - ৪১ পাঠাতর

>। ইহা প-র-সা পুৰির ১২৯৪ ও প-র পুৰির ১৪।১৩- সংখ্যক পদ। .২। 'আকে কানাই' হলে 'অংহ নাথ' প-র। ৩। 'আধার' প-র। ৪।
'মারহ'থ। ৫। 'দচ'ক, থ। ৬। 'আছি না' ছলে
'আছিলে' প-র-দা। ৭। 'আছি না' ইত্যাদি ছলে
'আছিরে আভির ছরে' প-র। ৮। 'সে ছ্থ' হলে
'তাহাবা' প-র। ৯। 'জানিতু' প-র।

यहरे ।>

কি মোহিনা জান বন্ধু কি মোহিনী জানং।

অবলার প্রাণ নিতে নাহি তোমা হেন ॥

রাতি কৈলুঁ দিবস দিবস কৈলুঁ রাতি।

ব্কিচে নারিলুঁ বন্ধু তোমার পিরিতি॥

ঘর কৈলুঁ বাহির বাহির কৈলুঁ ঘর।

পর কৈলুঁ আপন আপন কৈলুঁ পর॥

কোন বিধি সিরজিলে সোভের শেহলিও।

এমন বেথিত নাই ডাকে রাধা বলি ॥

বন্ধু তুমি যদি মোরে নিদারণ শ্ও।

মারিব ভোমার আগে দাঁড়াইয়া রওে ॥

বাশুলী-আদেশে বিজ চণ্ডীদাসে কয়ং।

পরের লাগিয়া কি আপনা পর হয় ৪৭॥৮০৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পূথির ১২৯৫ ও প-র পূথির ১০।১৩৭ সংখ্যক পদ। 'স্হই' স্থলে 'সিদ্বৃড়া' প-র। ২। 'কি মোহিনী' ইত্যাদি স্থলে প-র পূথির পাঠ বথা— 'বদ্ধ কি জানি মোহিনী জান'। ৩। 'কোন বিধি' ইত্যাদি জলিটি প-র পূথি ব্যতীত আভাভ পূথিতে নাই। ৪। 'চাও' ধ, ঘ। ৫। 'বাঙ্গী-আদেশে' ইত্যাদি স্থলে প-র পূথির পাঠ বথা,—

'চণ্ডীদাস কৰে হিয়া গুনিতে যুড়ায়। এমন পিরিভি আর না দেখি কোথায়॥' শীরাগ।>
সে কালং গেল বৈয়া বন্ধু
সে কাল গেল বৈয়াও।
আঁথি ঠারাঠারি মুচকি হাসি
কত না করিতা রৈয়া॰ ॥
বেশের লাগিয়া৽ দেশের ফুল
না রহিত কিছুণ বনে।
নাগরীর সনেদ নাগর হইলা
আর বেশ চিনিবা কেনে॥
কুলি ১০ বেড়াইয়া১১ নাম লইয়া১২
ফিবিতা বংশী বাইমা।

ফিরিতা বংশী বাইয়া।
মূখের কথা শুনিতেহ>৽ কত

হাতে করিয়া> মাথায় করিলুঁ>
কলকের> ডালা।

শেশর করে পরের বেদন নাহি জানেস্কালা ॥৮॥৮০৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্রির ১২৯৬ ও প-র পুরির ১৪।১০১ সংখ্যক পদ। 'জীরাগ' হলে 'জীগারার' প-র। ২। 'দিন' প-র। ৩-৪। 'বৈহা' ব, চ; 'বঞা' প-র। হ। 'দিন' প-র। ৩-৪। 'বৈহা' ব, চ; 'বঞা' প-র। হ। 'বেহা' ব, চ। ৬। 'বে' প-র-সা। १। ক, ব, ব, চ পুরিতে 'কিছু' শব্দ নাই। ৮। 'নাগরীর সনে' হলে 'নগরে আসিরা' প-র। ৯। 'বে' শব্দ ক, ব, ব, চ, প-র পুরিতে নাই। ১০। 'কুলে' ব; 'পবে' প-র। ১১। 'বেডাঞা' ক। ১২। 'কুলি' ইত্যাদি হলে 'পবে বেড়াইরা মোর নাম লৈরা' প-র। ১০। 'শুনিতে' ক, ব, ব, চ, প-র। ১৪। 'কত' ইত্যাদি হলে 'জামার বাটে বেড়াইতে ধাঞা' প-র। ১৫। 'করি ছলি' প-র। ১৬। 'নাই জানে কালা' হলে 'জুমি নাই জান কালা' প-র।

শ্ৰীকৃষ্ণস্থোক্তিঃ।

স্থানির কাহে করসি তুরুঁ থেদ।

তুরা বিনা রাতি দিবস হাম না জানিরে

কোনে কয়ন তোহেণ ভেদ।

তুরা মুখচাঁদ হেরি মঝু মানস

অহনিশি তহিঁ রহি গেলা।

নয়ন -কমল পর ভাঙ মদন-ধমু

ভাহেণ উমতি মতি ভেল।

কোটি রমণি তুয়া পদেণ নিরমঞ্জিয়ে

তুরুঁ মঝু জীবন রাই।

তোহারি নাম গুণ অবিরত জপি হামদ

সদয়-জদয় তুরা চাই।

এত কহি মাধব ছল-ছল লোচন

হুদয় উপরে ধনি রাখি।

চরণ পরশি কহে হাম তুয়া অমুগত

প্রেমদাস তহিণ সাখী।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৯৭ ও প-র পুথির ১৪।১৩২ সংখ্যক পদ। ২। 'কোন' ক, প-র। ৩। 'তুহঁ' ক। ৪। 'অহনিশি' ইত্যাদি স্থলে 'কৈরৰ বিক্চনা ভেল' প-র। ৫। 'বরান'থ। ৬। 'দেখি' প-র। ৭। 'পারে' ক, চ; 'পার' প-র-সা। ৮। 'ক্লি হান' :স্থলে 'অপতহি' প-র।৯। 'তাহি' ক, খ, প-র-সা; 'তাহে' প-র।

পুনঃ শ্রীমত্যুক্তিঃ।

কি বলিব জার বন্ধু কি বলিব জার।
নরানের লাজে না ছাড়ি লোকাচারং।
গোকুলে গোয়ালাকুলে কেবা কিনা বোলে।
ভয়ু মোর কুরে প্রাণ ভোষা না দেখিলে।

একে মরি মনছথে আবে গুরুর গঞ্চনা ।

ডাকিয়া সোধার হৈন নাহি কোন জনা ॥

ডরে ডরাইয়া সে বঞ্চিব কত কাল ।

ভূয়া প্রেম-রতন গাঁথিব কঠমাল ॥

নিশি দিশি অবিরত পোড়ে মোর হিয়া ।

বিবলে বসিয়া কান্দি তোমা সম্ভরিয়া ॥

ভোমা দেখিবারে বন্ধু আসি নানা ছলে ।
লোকভয় লাগিয়া সে ডরে প্রাণ হালে ॥

না দেখিলে মরি যারে ভারে কিবা ভয় ।

যত্নাথ দাসে বলে দড়াইলে হয় ॥১০॥৮০৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৯৮ ও প-র পুথির ১৪।১০০ সংখ্যক পদ। ২ । 'নয়ানের' ইত্যাদি ছলে প-র পুথির পাঠ ষথা,—'লাজে ছটি নয়ান না ছাছে লোকাচার'। ৩। 'আর' ক; 'তাহে' থ। ৪। 'গুরুর গঞ্জনা' খুলে 'গুরুগঞ্জনা' থ, প-র-সা। । 'হুধার' ক, প-র-সা। ৬। 'করিয়া' প-র। ৭। 'নাম লৈয়া' ক। ৮। 'তোমা দেগিবারে' ছলে 'তোমারে দেখিতে' প-র। ৯। 'লোকভর' ইত্যাদি ছলে প-র পুথির পাঠ যথা,—'লোকভরে মিলিতে না পারিয়ে বিরলে'।

यहरे ।>

পরাণ কান্দে বন্ধু ভোমা না দেখিয়া।
অন্তরে দগধে প্রাণ বিদরয়ে হিয়া॥
বারেক দেখিতে নাহি পাই সব দিনেই।
কেমনে বা রবে প্রাণ দরশন বিনে॥
এ ছুখ কাহারে কব কে আছে এমন।
ভূমি সে পরাণ-বন্ধু জান মোর মন॥ প্রত॥
ইটকট করে প্রাণ রহিতে না পারি।
ব্যেণে খেণে জীয়ে প্রাণ খেণে খেণে মরি॥

কুল গেল শীল গেল না রহিল জাতি। জ্ঞানদাস কহে এই বিষম পিরিতি।

॥১১॥৮০৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প র-সা পুথির ১২৯৯ ও প-র পুথির ১৪।১৯৪ সংখ্যক পদ। 'বছই' ছলে 'ব্রীরাগ' প-র-সা; 'সিকুড়া' প-র। ২। 'বারেক' ইত্যাদি পংক্তির স্বলে 'বারেক দেখা না হইল সকল দিনে' খ; 'বারেক দেখা নাই সকল দিনে' ঘ, চ; 'বারেথ দেখাই নাই সকলছ দিনে' প-র-সা। ৩। প-র পৃথি ব্যতীত অভ্যান্ত পৃথিতে 'গ্রু' নাই।

তুড়ী ।১

তোমারে বুঝাই বন্ধু তোমারে বুঝাই।
ডাকিয়া সোধায় মোরে হেন জন নাই।
অমুখন গৃহে মোরে গঞ্জয়ে সকলে।
, নিশ্চয়ে জানিহ মুঞি ভখিমুং গরলে।
এ চার পরাণে আর কিবা আছে হুখ।
মোর আগে দাঁড়াপ চোমার দেখি চাঁদমুখ।
খাইতে গোয়ান্ত নাই নাহি টুটেড ভুক।
কে মোর বেণিত আছে কারে কব হুখ।
চণ্ডাদাসে কহে রাই ইখা না যুয়ায়।
পারের বোলে কেবা প্রাণ ছাড়িবারে চায়।

পঠিস্তর

リングリトン・リ

১। ইহা প-র-সা পুণির ১০০ ও প-র পুৰির ১৪|১৩৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ভক্ষিমু'ক; 'ভূজিব' প-র। ৩। 'ছুটে' প-র।

व्यानावत्री ।>

নিজ পতির বচনং যেমন° শেলের খা। ভার আগে দাঁড়াইভে॰ ভয়ে কাঁপে॰ গা॥ তাহে আর° ননদিনী করে অপমান।
তোমার পিরিতি লাগি রাখিয়াছি প্রাণ॥
মোর দিব্য লাগে বন্ধু মোর দিব্য লাগে ।
চাঁদমুখ দেখি মরিং দাড়াও মোর আগে॥
এ তোমার ভুবনং নাহন রূপ খানি।
ভাবিতে ভাবিতে মোর দগ্যে পরানি॥
ভাক-ভয় লোক-লাজ নাহি পড়ে মনে।
কতে পরকারে চিত করি নিবারণ।
তমু সে ভোমার প্রেম নহে বিসর্বংও॥
কতে বল্রাম দাস কেমনে যাবে ছাড়া॥

পাঠান্তর

川ついたとろろれ

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১০০১ ও প-র পুথির ১৪।১৩৬ সংখ্যক পদ। 'আশাবরী' স্থলে 'আদোয়ারি' প-র-সাঃ 'নিজুড়া' প-র। ২। 'কুবচন' প-র। ত। 'বেন' প-র। ৪। 'माखाईर७' थ। ८। 'হালে' প-র। ৬। 'তাহে আর' স্থলে 'তাতে কত'প-র। ৭। 'রহিয়াছে' প-র। ৮। 'মোর मिया' हेळामि भःक्तित श्रम वक्त सात निया नाला।' প-র। ৯। 'মরোঁ' প-র। ১৽। 'জীবন' প-র। **>>। '(इन' भ-ब-मा, भ-ब।** >२। 'बादका' थ। ১০। 'তমু' ইত্যাদি ছলে প-র পুথির পাঠ যথা,---'বে বল সে বল মোরে ভূমি প্রাণধন'। ১৪। অতঃ-পর প-র পুথিতে নিম্নিথিত অতিরিক্ত কলিটি मुद्दे इत्रः, यथा,--'स्मादत प्रथि व्यान नात्री करत ঠারাঠারি। এ বড় দারুণ শেল পাসরিতে নারি॥' ১৫। 'তোমার পিরিডি' ইভ্যাদি ভণিভার ক্রির পরিবর্ত্তে প-র পুথির পাঠ বুণা,—'বুলরাম দানে কহে ভাঙ্গল বিবাদ। সকল নিছিয়া লৈল তুরা পরিবাদ ॥'

शीकांत्र १३

বিষের অধিক বিষ পাপ ননদিনী।
দারণ শাশুড়ী মোর অলন্ত আগুনি।
শাণানং কুরের ধার স্থানী তুরজন।
পাঁজরে পাঁজরে কুলবধ্র গঞ্জন।
বন্ধু ডোমায় কি বলিব আন।
যে বন্ধু সে বলু লোকে তুমি সে পরাণ। গ্রুণ।
ভোগার কলঙ্ক বন্ধু গায় সব লোকে।
লাজে মুখ নাহি ভোলোঁ। সভীর সমূপে।
এ বড় দারণ শেল সহিতে না পারি।
মোরে দেখি আন নারী করে ঠারাঠারি।
বলরাম দাস কহে ভান্সিল বিধাদ।
সকল নিছিয়া নিলুঁ গোমার পরিবাদ॥১৪॥৮১২।

পঠিস্কির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩•২ সংখ্যক পদ। ২। 'সানন' খ; 'সানান' घ; 'সানান্' চ। ৩। প-র-সা পুথি ব্যতীত অঞাক্ত পথিতে 'ঞ' নাই। ৪। 'তোলো' ক; 'তোল' প-র-সা।

कुड़ो ।>

কান্দিতে না পাই বন্ধু কান্দিতে না পাই।
নিচয়েং মরিব তোমার চাঁদমুখ চাই॥
শাশুড়ী ননদার কথা সহিতেও পারি।
তোমার নিঠুরপনা সোভরিয়া মরি॥
চোরের রমণী যেন ফুকরিতে নারে।
এমতি রহিয়ে পাড়াপড়সীর ভরে॥
ভাহে আর ভুমি সে হইলা নিদারুণ।
ভ্যানদাস কহে ভবে না রহে জীবন॥

12612201

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩০০ সংখ্যক পর।

পাঠান্তর

২। 'নিশ্চয়' ক; 'নিশ্চয়ে' থ, প-র-সা। ৬। 'না' ক, প-র-সা।

সিকুড়া ।১

আনি চাঁদ হাতে দিলা যখনং পিরিতি কৈলা আপনি করিতা মোর বেশ। আঁৰির আড় নাহি কর হিয়ার উপরে ধর এবে ভোমা দেখিতে সন্দেশ॥ একে হাম পরাধিনী তাহে কুল-কামিনী घटतः देश्ट व्यक्तिमा विद्रम्भ । এত পরমাদে প্রাণ না যায় তমু ত আন আর কত কতিব বিশেষ॥ ननमी विषय कैं। हो। বিষমাখা দেয় খোঁটা তাহে তুমি এত নিদারুণ। কবি চণ্ডীদাসে কয় কিবা ভূমি কর ভয় বস্থু তোর নহে অকরণ ॥১৬।৮১৭॥ পাঠাস্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৩∙৪ সংখ্যক পদ। ২। বৈধনে'ক। ৩। 'মোরে' ঘ। ৪। 'ঘর' ₹, প-র-সা। ৫। 'খোটা' ঘ; 'ঘোঁটা'প-র-সা।

यहरे ।)

তেদে হে বিনোদরায়।
ভাল হৈল ঘুচাইলে পিরিতের দায়॥
ভাবিতে গুণিতে তমু হৈল অতি ক্ষাণ।
ভাবিতে গুণিতে তমু হৈল অতি ক্ষাণ।
ভাগ ভরি কলঙ্ক রহিল এই চিন ॥
না জানি অস্তরে মোর হৈল কিনা বেধা।
একে মরি মনতুধে আর নানা কথা॥
ঘারে না মরিয়ে বন্ধু মরি মিছা দায়।
চণ্ডাদাস কছে কাহার কথায়ে কিণ বায়॥

112641161

পঠিব্র

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১০-৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ঘুচাইলা' ক। ৩। 'কিবা' প-র-সা। ৪। 'ভাহে' প-র-সা। ৫। 'কথার' ক, থ, প-র-সা। ৬। 'কিবা' ক, প-র-সা।

ভাটিরারি।১

তুমি ত নাগর রসের সাগর যেমত ভ্রমর-রীত। সামি ভ চুখিনী कुल-कलक्रिनी হইলুঁ করিয়া প্রীক্ত ॥ গুরুজন ঘরে গপ্তয়ে আমারে ভোমারে কাহব কত। বিষম বেদনা কহিলে কি যায় পরাণে সহিছে যত॥ পিরিতি বন্ধু হে অনেক সাধের কি জানি বিচেছদ হয়। বিচ্ছেদ হইলে পরাণে মরিব এমতি মনে সে লয়। পিরিতি বিষম চণ্ডাদাস কৰে **७**नहर वज्र्यात वह । পিরিতি বিছেদ^৩ হইলে বিপদ এমত না হউ কেন্তু ॥১৮॥৮১৬॥

পাঠাম্বর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩০৬ সংখ্যক প্রা ২। 'গুন হে' থ, প-র-সা। ৩। 'বিষদ' ক; 'বিচ্ছেদ' চ, প-র-সা।

कूड़ी 13

তুখিনীর বেণিত বন্ধু শুন চুখের ফথা। কাছারে মরম কব কে জানিবে বেণা। কান্দিতে না পাই পাপ ননদীর তাপে। আঁখির লোর দেখি কহে কান্দে বন্ধুর ভাবে॥

বসনে মুছিয়ে ধারা ঢাকি বদি গায়।
আন ছলে ধরি গুরুজনেরে দেখায়।
কালা নাম লৈজে না দেয় দারুণ শাশুড়া।
কাল হার কাড়ি লয় কাল পাটের শাড়া।
ছথের উপরে বন্ধু অধিক আর ত্ব।
দেখিতে না পাই বন্ধু তোমার চাঁদমুধ।
দেখা দিয়া যাইতে বন্ধু কিবা ধন লাগে।
না যায় নিলজ প্রাণ দাঁড়াই তোমার আগে।
বলরাম দাস বলে হউক খেয়াতি।
জিতে পাসবিতে নারি তোমার পিরিতি।

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১০•৭ সংখ্যক পদ। ২। (হের'খ। ৩। 'ননদিনীর'খ। ৪। 'মুছিরা' ড়,খ,চ,প-র-সা। ৫। 'রাখি' ক,চ,প-র-সা। ७। 'কাঢ়ি'খ।

धाननी ।>

আপন শপতি করি হাত দিয়া মাথে।
স্থ্যুইং শরীর মোর প্রাণ তোমার হাতেও ॥
বন্ধু হে তোমারে বুঝাই।
সভাই বলে আমি ভোমার তেঞি জীতে
চাই । ধ্রু ॥

নিরবধি ভোমা লাগি দগধে পরাণ।
তিলেক দাঁড়াও কাছে জুড়াকু নয়ান।
কি লাগি দারুণ চিত কাঁদে দিন রাতি।
কাহে বলরাম বড় বিষম পিরিতি। ২০।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৩০৮ ও প-র পৃথির ১৭১৪০ সংখ্যক পদ। ২। 'স্থই' শ, প-র-সা, পর। ৩। 'সাথে' শ। ৪। 'রে' প-র-সা। ৫। 'আমি তোমার' ফ্লে 'শ্রামের রাধা' প-র। ৬। 'দগধ' প-র-সা। ৭। 'পথে' প-র।

তথা রাগ।১

ভোমার লাগিয়া বন্ধু যত দুখ পাই। তাহা কি কহিতে পারি তোমার যে ঠাঞি। একে প্রেম-জালা তাছে গুরুর গঞ্চন। নিরবধি প্রাণ মোর করে উচাটন 🛭 পতি তুরমতি তাহেং সদা দেয় গালি। ভাবিতে ভাবিতে ততু ক্ষীণ অতি কালী। এ সব হুখেতে° আমি হুখ নাহি গণি। তোম। না দেখিতে পাই বিদরে পরাণি॥ শুনিয়া নাগর কহে করি নিজ কোরে⁶। বৃক্ ভাসিয়া গেল নয়ানের লোরে ॥ গদগদ কহে নাগর কাতর-বয়ানে। পরাণ নিছিলু রাই ভোমার চরণে n তুয়া গুণে বিকাইয়াছি কিনিয়াছ মোরে। व्यथीन करनरत्र (कन कह श्रुनवादत । যে কহ তাহাই করি নাহি কিছু ভয়। यञ् करर এই ভাল আর কিছু नয়॥

পাঠান্তর

157115721

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩০৯ সংখ্যক পদ।
২। 'ভার' খ। ৩। 'ছুখেড' খ। ৪। 'নিল কোরে' স্থলে 'কোড় করে' প-র-সা। ৫। 'বুক' ক, ম, চ, প-র-সা। 'বুক' পাঠে ছুক্লোভল মটে। ৬। 'পুন্র্কারে' ক।

1129112391

ইতি সাক্ষাৎ অমুরাগ:।

অত্যান্তরে সম্ভোগপদানি গেয়ানি।

পুনশ্চ দিনান্তরে।

মুরলীং প্রতি আক্ষেপো যথা।

তত্ত্র শ্রীগৌরচন্তঃ:।

হছিল। ।

রামানন্দ স্বরূপের সনে।

বসি গোরা ভাবে মনে মনে ॥

চমকি কছরে আলি আলি।

ক্ষণেং রহিয়া বাঁশীরে দেয় গালি॥

পুন কহে স্বরূপের পাশে।
বাঁশী মোর জাতিকুল নাশে॥

ধ্বনি কাণে পশিয়া রহিল।

বধির সমান মোরে কৈল॥

নরহরি মনে মনে হাসে।

দেখি এই গৌরাক্ষ-বিলাসে॥২২॥৮২০॥

গাঠান্তর

हें ल-ब्र-नां पृथित ১०১० नःश्वक शहा
 'करन करन' क।

জীরাধায়াঃ মুরলীং প্রতি আক্ষেপ:।
ভবা মান।>

সুরলি রে মিনভি করিয়ে বারে বার।
স্টামের অধরে রৈরা রাণ রাধা নাম লৈরা।
তৃমি মেনে না বাজিও আর ॥
বালের বদনে থাক নাম ধরি সদা ভাক
ভক্তজনা করে অপবশ।
বল হয় বেই জনা সে কি ছাড়ে ধলপনা
ভূমি কেনে হও ভার বল ॥

তোমার মধুর স্বরে রহিতে নারিলামণ খরে
নিকরে করয়ে তু নয়ান।
পহিলে বাজিলা যবে কুল শীল গিয়াছে ওবে
অবশেষে আছে মোর প্রাণ ॥
বে বাজিলা সেই ভাল ইপেই সকলি গেল
ভোৱে আমি কহিলু নিশ্চয় ।
এ দাস উদ্ধবে ভণে যে বংশীর গান শুনে
সে জন ভেজই কুল-ভয় ॥২০॥৮২১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩১১ সংখ্যক পদ।
২। 'করবে' ক। ৩। 'রঞা' ঘ। ৪। 'লঞা'
ঘ। ৫। 'মেন' খ, ঘ, চ; 'বেন' প-র-সা। ৬।
'নারিলু' প-র-সা। ৭। 'গেল' ক। ৮। 'ঝবশেব' খ। ৯। 'সকল' ক, প-র-সা।

ब्रहरे ।>

শুন তোরে কি বলিব বাঁশী।
সভীকুল সকলি বিনাশি॥
গোবিন্দ-অধর-স্থারস।
পিয়া পিয়া মাতালি সাইস॥
ক্ষণত মোহদি মুহুস্বরে।
রমসি শবদেং যারে তারে॥
অধবা কি তুমি অতি দোষী।
বাঁশিনী-বাঁশের জাতে বাঁশী॥
দারুতে গঢ়ল তুয়া দেহ।
কেবল দারুময়া সেহ॥
এ যতুনন্দন দাস ভণে।
কি করুণা স্কঠিন করে॥২৪॥৮২২॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩১২ সংখ্যক পদ। ১। 'রমসি শ্ববে' ক্লে 'বসসি বব্বে' ব। ●। 'ৰাতে' ক; 'ৰাতি' খ। ৪। 'দাকণমন্ত্ৰী' ক, প-র-সা; 'দাকণমই' ম; 'দাকণমন্ত্ৰি' চ।

সূতিন্তে ধনুষশ্চ বংশবরতো বন্দে তয়োরস্তিমং > বিন্ধো যেন জনস্তমুং বিরহয়ন্নান্তশ্চিরং তাম্যতি। বিন্ধানাং ক্রদি মার-পত্তি-বিষটেশপর্যনেষুভিন স্থয়। ক্রুবে বংশি ন জীবনং ন চ মৃতির্ঘোরাবিরাসীদ্দশা॥

BSC BESSH

পঠিক্র

>। 'বিদগ্ধ-মাধব' নাটক হইতে উদ্ধৃত এই লোকটি প-ন-সা পুথিতে নাই। অভাক্ত পুথিতেও ইহা অভত্র পদক্রপে গণিত হয় নাই। কিন্তু ইহাকে গণনা না করিলে নিদিষ্টে পদসংখ্যার পূরণ হয় না বশিয়া ইহা অভত্র পদ-ক্রপে গণিত হইল।

টীকা

শ্বতিবিতি"। হে বংশি ! বংশবরতঃ শ্রেষ্ঠ-বংশাৎ তব ধনুষক্ষ স্তিক্রংপজিঃ। 'বংশবরতঃ' ইতাত্র শ্লেষমহিয়া শ্রেষ্ঠ-কুলাদিতি ধ্বনিঃ। তেন চ শ্রেষ্ঠকুলোভুতেন ন কদাপি পরাপকারঃ কার্যা ইতি বাজ্যতে। তরোর্বংশীধনুবোরহিমং শেবাক্তং ধন্থ-রিতি শেবঃ বন্দে। বেন বিদ্ধো জনঃ তন্থং বির-হরন্ তাজন্ সন্ চিরকাগং নাস্তভাম্যতি। জয়া হৃদরে বিদ্ধানাং নোহলাকং ন জীবনং ন চ মৃতিঃ। কিছ বোরা লাকণা দশা আবিরাসীৎ জাতা। কৈবিদ্ধানাং—ধ্বানেবুডিঃ ধ্বানাঃ ক্রম্পবানেভ্যো-হ্শি বিষ্ট্রীঃ। কীদুলৈঃ—মারপত্রিভাঃ কন্দপবানেভ্যো-হশি বিষ্ট্রীঃ।

অপুবাদ

হে বংশি! ভোষার ও ধলুর উভরেরই উৎক্রষ্ট বংশে কয়। ভোষাদিগের উভরের মধ্যে
ধল্পকেই বন্দনা করি; বেহেডু উহার বারা বিদ্ধ ব্যক্তি দেহ পরিভাগে করার অধিক কাল ক্লেশ ভোগ করে না। কন্দর্পের শর হইভেও দারুণ ভোষার বর-রূপ বাপ্সমূহ বারা ব্যবে বিদ্ধ ব্যক্তিগণের না বীৰ্দ, বা মুডুা—এক বিব্র দশা ঘটিরা থাকে।

ভাৎপর্য্য

কৰি 'উৎকৃষ্ট বংশে জন্ম' এই দিট বাক্যের ধানি ৰারা বুঝাইতেছেন বে, সৰংশ-জাত ব্যক্তির পদে পরের অপকার করা কখনই সঙ্গত নহে; স্থতরাং স্বংশ-জাত বংশার পক্ষে মৃত্যু অপেক্ষাও স্থানন স্থাবি বাতনা প্রধান করা বার-পর-নাই গহিত বটে।

ৰাড়াৰা ৷১

ছিত্র-জালে পূর্ণাং তুমি শুনহ মুরলী।
সতি লঘু স্থকঠিন অন্তর তোহারি।
নীরস তোহার তন্ম গ্রন্থি তাহে হয়।
কৃষ্ণ-করে থাক তুমি কোন শুভোদয় ।
কৃষ্ণের অধরে তুমি রহণ অনুক্ষণ।
তাহাতে পাইলা তার নিবিড় চুম্বন।
যত্তনাথ দাসে বোলে শুনহ মুরলি ।
নারী-প্রাণ লওয়া হেন কোপায় পাইলি।
॥২৬॥৮২৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০১০ সংখ্যক পদ।

২। 'পূর্ণ' ক,ঝ, প-র-সা। ৩। 'কুকঠিনা' খ, চ।

৪। 'কোন ভভোদয়' ছলে 'কেমন মডদয়' ফ;
'কোন মডোদয়' ৬; 'কোন মডো নয়' য়; 'কোন
পুণোদয়' চ। ৫। 'রহি' প-র-সা। ৬। 'আরো'

ক; 'জুমি' প-র-সা। ৭। 'বছনাথ' ইত্যাদি
ভণিতার কলি প-র-সা ব্যতীত অফাফ্র পুথিতে নাই।
এই পদটি নিম্নলিখিত বিদশ্বমাধ্বীর স্নোক্রের মন্দ্রিদ্রাদ, বথা—'সখি মুর্লি বিশালচ্ছিক্রনালেন পূর্ণা,
লম্ম্রতি কঠিনা খং গ্রহিলা নীরসাদি। ভদ্পি ভল্পি
শব্দ্রানন্দ্রাক্রং, হরিকরপরিস্কর্জং কেন পুণোল্বরেন।'

वाना शननी ।>

শ্রামের মুরলী क्रमग्रर भूत्रनि করিলি সকলিও নাশ। মোহর মিনতি না শুনি আরতি করহ বাজিতে আশ ॥ শুন শুন রে ধরমনাশা। ও মুখ বান্ধিব দেব আরাধিয়া ঘূচাব তোমার আশা ॥ এ ॥ আমরা অবলা সহজে অখলা দেখিয়া তোহার লোভ: সকলিও খাইয়া অলপে অলপে জীবনে করহ ক্ষোভ II স্তর হইলুঁ এখনে আমরা ভেক্তত এ সব আশ। যাহার যেমন না ছাড়ে করণ কহে মনোহর দাস ॥২৭॥৮২৫॥ পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৩১৪ সংখ্যক পদ।

১। 'হৃদ্র' হলে 'হৃদ্রে' হ। ৩। 'সক্ল' ক,

ব, প-র-সা। ৪। 'মোহোর' ক, চ; 'মোরহ'
প-র-সা। ৫। 'তেমার' প-র-সা। ৬। 'সক্ল'

ক,ব,ব,চ। ৭। 'কারব' ক।

यहरे ।)

শুক্রনারং ফালায় প্রাণ কররে বিকলিও।
বিশুণ আগুন দেওও শুটামের মুরলী ॥
উভ হাতে ভোগায় মিনতি করি আমি।
মোর নাম লৈয়া আর না বাজিহ ভূমি॥
ভোর স্বরে গেল মোর জাতি কুল ধন।
কত না সহিব পাপ-লোকের গঞ্জন ॥
ভোরে কহি বাঁশিয়া নাশিয়া সভীকুল।
ভোরে স্বরে মুঞ্জি অভি হৈয়াছি আকুল॥

আমার মিনতিং শতং না বাক্সিহ আরে।
জ্ঞানদাস করে উহার ওইং সে বেভার ॥
॥২৮॥৮২৬॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপৃথির > >১৫ সংখ্যক পদ।

২। 'গুরুজন' ক। ৩। 'ব্যাকুলি' প-র-সা।

। 'দিয়া' ক; 'দাও' অ; 'তাহে' প-র-সা। ৫।
'সপতি' প-র-মা। ৬। 'সও' (সক্ত ॰) চ; ডোরে'
প-র-মা। ৭। 'অই' প-র-মা।

ততে। মুরলী-চরিত্রং দখীং প্রতি কথয়তি।

শীরাপ ।১ সঞ্জনি লো সই। খানিক বৈদহ শ্যামের বাঁশীর কথা কইং ।ঞ। শ্যামের বাঁশীটী তুপয়াণ ডাকাতি मत्रवम इति देशनः। পরাণ পুড়নিং হিয়া দগদগি কেন বা এমতি কৈল। খাইতে শুইচে আন নাহি চিঙে विधित्र कतिरल वैं। भी। সব পরিহরি করিলে বাউরী मानद्य (यमन मागी ॥ देशब्द भव्रम কুলের করম मत्रम मत्रम क्याँमि। **ठ**धीनांत्र करव এই সে কারণে काञ्च-भनवतन वींनी ॥२३॥৮२१॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০১৬ সংখ্যক পদ।
২। 'থানিক' ইত্যাদি স্থলে প-র-সা পুথির পাঠ
রখা,—'থানিক বৈসহ থানিক স্থানের
বালীর ক্থাটি কই ॥'

। 'ছপরে' ক; 'ছফরে' প-র-না। ৪। 'নিল'
 । ৫। 'পোড়নি' ক। ৬। 'কাছর' ক, খ, প-র-না।

টাকা

তেনে প্রত্যাদি। (বাশী) সকল কার্যা

 ভাড়াইরা উন্মন্তা করিল; (উহা) বেন (আমাকে)

 দাসী বলিরা মনে করে অর্থাৎ আমার বারা দাসীবৎ

 ইচ্ছামত কার্য্য করার। তুলনা করুন; ব্ধা,—

 "বিষম বাশীর কথা কহিলে না হর।

 ডাক দিরা কুলবতী বাহির করর॥

 কেশে ধরি লৈরা বার ভানের নিকটে।

 পিরাসে হরিণী বেন পড়রে সহটে॥"

 —চণ্ডীদাস; প-ক-ত, ৮০০ সংখ্যক পদ।

थाननी ।>

আর তাহে অবলা

शिक्ष्य ।

কালা-গরলের জালা

ভাবে মুঞিং কুলের বৌহারীণ।

অস্তরে মরম-বেথা কাহারে কহিব কথা

গোপতে গুমরিং মরি মরি ॥

সধি হে বংশী দংশিলেণ মোর কাণে।
ভাকিয়া চেতন হরে পরাণ না রহে ধড়ে
ভন্ত মন্ত্র কিছুই না মানে ॥ গুল ।
কালারণ লাগিয়া হামণ হব বনবাসী।
কালা নিলেণ জাভি কুল প্রাণ নিলেণ

বাঁশী।
ভরল বাঁশের বাঁশী নামে বেড়াজাল।
সভারিণ সুলভ বাঁশী রাধার হৈল কাল ॥

অস্তরে অসার বাঁশী বাহিরে সরলংং।
পিবরে অধর-কুখা উগারে গরল ॥

বে ঝাড়ের ভরল বাঁশী ঝাড়ের লাগ

ভালে মূলে উপাড়িয়া সাগরে ভাসাভ> ।

বিজ চণ্ডীদাসে কৰে বংশী কি করিবে। সকলের মূল কালা তারে না পারিবে। ॥৩০।৮২৮।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০১৭ সংখ্যক পদ।
২। 'আর' খা ০। 'বৌহরী' ঘা ৪। 'ঋপড়ে'
ক; 'অক্তরে' প-র-সা। ৫। 'ঋমরে' প-র-সা।
৬। 'দংশিল' ক। ৭। 'ৠামের' প-র-সা। ৮।
'আমি' প-র-সা। ৯-১•। 'নিল' ক, প-র-সা।
১১। 'সবার' ক। ১২। 'রসাল' প-র-সা। ১৩। 'বে ঝাড়ের' ইভ্যাদি স্থলে 'বেনা দেশে বাসির ঘর সেনা দেশে আঙি' ঘ। 'বে ঝাড়ের বাশি তুষি
ভাহার লাগ পাঙি' প-র-সা।

তুড়ী।১

মুরলীর স্বরে त्रहिटव कि र चटत्र গোকুল-যুবতীগণে। আকুল হইয়া বাহির হইবে না চাবে কুলের পানে कि॰ त्रज-नीना মিলায় শিলা শুনিতে সে ধ্বনিং কাণে। যমুনা-প্ৰন **থকিভ-গমন**• ভূবন মোহিত গানে । व्यानम्य छम्य ত্থ-ত্থাসর **उ**षित्रा व्यख्यत्र होत्त । मद्रायः काला कोरत्र कि व्यवनां भ कांनरत्रः भनन-वार्ण ॥ কুলবতী-কুল क्टब नित्रमुग निरंद्य गाहिक मार्ग। **ह शीक्षांत्र कर** १ व्राषिक्श्य मन्द्रम कि बाहिनी काला कात्न १७১॥/२३।

পাঠান্তর

ইহা প-র-সা পুথির ১২৯, ১০১৮ ও প-র পৃথির বাত সংখ্যক পদ। ২। বিছিবে কি' ছলে 'রহিব কে' প-র-সা। ৪। মিশায় যে' প-র-সা। ৫। 'কেবা' প-র-সা। ৪। মিশায় যে' প-র-সা। ৫। 'থেক ত গগন' ক, থ, ঘ, চ, প-র-সা। १। 'হংধু' ক; 'হংধ' চ, প-র-সা। ৮। 'কছেরে' ক, প-র-সা। ১। 'মরমে যে' প-র-সা; 'মরমের' প-র। ১০। 'কি অবলা' ছলে 'কিয়ে বালা' ক। ১১। 'হানিল' প-র-সা, প-র। ১২। 'রাথিয়' ক; 'রাথিও' প-র-সা।

युर्दे ।)

বিষম বাঁশীর কথা কহিলে না হয়ং।
ডাক দিয়া কুলবতা বাহির করয়॥
কেশে ধরি লৈয়া যায় শ্যামের নিকটে।
পিয়াসে হরিণী থেন পড়য়ে সঙ্গটে ।
সতা ভুলে নিজ পতি মুনি ভুলে মনং।
শুনি পুলকিত হয় তরু-লতাগণ॥
কি হবে অবলা জাতি সহজে সরলা।
কহে চণ্ডীদাস সব নাটের গুরু কালা॥

পঠিন্তির

১। ইহা প-র সা পুথির ১৩১৯ সংখ্যক পদ।
২। 'কছিলে না হয়' ছলে 'কহন না য়য়' ক;
'কহন না হয়' চ; 'কহনে না য়য়' প-র-সা। বোধ

য়য় 'কছিল না হয়' ৩জ পাঠ হইবে। ৩। 'হয়িণ'
ক, খ, য়, চ। ৪। 'য়ৌন' ক, খ, চ, প-র-সা।

পঠমঞ্চরী।১

কি কহিব রে সখি ইহ জুখ-ওর। বাঁশি-নিশাস-গরলে তফু ভোর॥ হঠ সঞ্জে পৈঠয়ে শ্রাবণক মাঝ।
তৈখনে বিগলিত ততু মন লাজ।
বিপুল পুলক পরিপুরয়েই দেই।
নয়নে না হেরি হেরয়ে জনি কেই॥
গুরুজন সমুখহি ভাব-তরক্ব।
যতনহি বসনে ঝাঁপি সব অক্ব॥
লক্ত লক্ত চরণে চলিয়েই গৃহ মাঝ।
দৈবে সে বিহি আজু রাখল লাজ॥
ততু মন বিবশং খস্যে নিবি-বন্ধং।
কি কহব বিস্তাপতি রক্ত ধন্ধ॥৩০॥৮০১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩২০ সংখ্যক পদ।
২। 'পরিপুরল' ক। ৩। 'চলয়ে' খ। ৪।
'বিবশ' স্থলে 'বিরস' প-র-সা। ৫। 'নীবিবন্ধ'
ক,খ।

, নিজং প্রতি আক্ষেপো যথা। শ্রীগোরচন্ত্র:॥

ত্তী। বির্বাস-চান্দের ভাব কহনে না যায়।
বির্বাস-চান্দের ভাব কহনে না যায়।
বির্বাস বির্বাসপন্থ করে হায় হায়॥
প্রিয় পারিষদগণ পুছুয়ে তাহারে।
কহে মুঞি কাঁপ দিব সমুদ্র মাঝারে ॥
করিলুঁ দারুণ প্রেম আপনা আপনি।
ছু কুলে কলক হৈল না যায় পরাণি॥
এত কহি গোরাচান্দ ছাড়য়ে নিশাস।
মরম বুঝিয়া কহে নরহরিদাস॥৩৪॥৮৩২॥

পাঠাস্তর

)। ইহা প-র-সা পুথির ১৩২১ সংখ্যক পদ।
 । 'সমুজ মাঝারে' ফলে 'বমুনার নীরে' ক;
 'বমুনা মাঝারে' চ, প-র-সা।

পাহিড়া।>

ধিক্ রক্ত নারীর যৌগনে।
পিরিতি করয়ে শঠ সনে ॥
যার লাগি প্রাণ সদা ঝুরে।
ফিরিয়া না চাকে সেহং মোরে॥
কি করিব তারে দোষ দিয়া।
না দেখিয়ে ললাট চিরিয়া॥
আপনা আপনিং বাঢ়াইলুঁ।
তুই কুলে কলক রাখিলুঁ।
সকলিং করিলুঁ ভাম ভঙ্গ॥
ছিয়ে ছিয়ে পাপ পরাণ।
অবস্থা নাহিক বাহিরাণ॥
এ পাপ পিরিতি নাহি আশা।
শুনি কহে নরহরিদাস॥৩৫॥৮৩৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০২২ সংখ্যক পদ। ২। 'সেই'ক, ঘ, চ। ৩। 'আপুনি' থ, চ; 'আমাপনা' প-র-মা। ৪। 'স্কল'ক, থ, ঘ, চ।

গান্ধার।১

ধিক রহুঁ জীবনে যেং পরাধিনা জীয়ে।
তাহার অধিক ধিক্ পরবশ হয়ে॥
এ পাপ কপালেং বিহিং এমতি লিখিল।
স্থধার সাগরং মোরে গরল হইল॥
অমিয়া বলিয়া যদি ডুব দিলুঁ তায়।
গরল ভরিয়া কেনে উঠিল হিয়ায়॥
শীতল বলিয়া যদি পাষাণ কৈলাম। কোলে।
এ দেহ-অনল-তাপে পাষাণ সে গলে॥
ছায়া দেখি বসি যাইং তরুলতা বনেশ।
ভালায়া উঠয়ে তরুলভাপাতা সনে॥

যমুনার জলে যদি দিয়ে হাম ঝাঁপ।
পরাণ জুড়াবে কি অধিক উঠে তাপ।
অতএ দে এ ছার পরাণ যাবে কিসে।
নিচয়ে ভথিমু মুঞি এ গরল বিষে।
চণ্ডীদাস কহে দৈব-গতি নাহি জান।
দারুণ পরিতি সেই বধয়ে পরাণ।
।৩৬॥৮৩৪।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩২৩ সংখ্যক পদ।
২। 'যে' শব্দ থ, ব ও চ পুথিতে নাই। ০।
'পাপ কণালে' স্থলে 'পাপ পরাণে' ক; 'গাপক
প্রাণে' থ। ৪। 'বিধি' ক, চ। ৫। 'সাগরে'
ক, থ, প-র-সা। ৬। 'কৈলাঙ' প-র-সা। ৭।
'বিসি যাই' স্থলে 'যাই যদি' ক। ৮। 'সনে'
প-র-সা। ৯। 'ধর্ষে' ক, চ; 'ব্ধই' প-র-সা।

ওখা রাগ।১

যত নিবারিয়ে পায়ঽ নিবার না যায় রে।
আন পথে যাইতেও সে কামু-পথে ধায়রে।
এ ছার রসনা মাের হইল কি বাম রেও।
যার নাম নাহি লই লয় তার নাম রে॥
এ ছার নাসিকা মুঞি যত করিও বন্ধ।
ততু ত দারুণ নাসা পায় শাম-গন্ধ॥
সে না কথা না শুনিব করি অমুমান।
পরসঙ্গ শুনিতে আপনি যায় কাণ॥
ধিক্ রক্ত এ ছার ইন্দ্রিয় মাের সব।
সদা সে কালিয়া কামু হয় অমুভব॥
কহে চণ্ডীদাস রাই ভাল ভাবে আছে।
মনের মরম কথা কারে জানি পুছ॥

পাঠাস্তর

1100411001

১। ইহা প-র-সা পুলির ১০২৪ সংখ্যক পদ।
 ২। 'তার' ক; 'পদ' প-র-সা। ৩। 'বাই' ক।

৪। 'হইল কি বাম রে' ছলে 'হৈল কি বাম রে' ক; 'হইল কিবা মোরে' ঘ। ধ। 'ষত করি' ছলে 'কত করু' ক, থ, চ, প-র-সা।

হ্যারাপ ।>

কুলের বৌহারাং রাজার ঝিয়ারী স্বামী-সোহাগিনা নারী। পিরিতি লাগিয়া এ ভিন খোয়ালুঁ **इहेलूँ कूल-थाँ** भारी ॥ সই কি ছার পরাণ কাজেও। স্বপনে শে জন⁸ নাহি দরশন জগত ভরিল লাজে॥ ধ্রু॥ ধরম করম সব তেয়াগিলুঁ যাহার পিরিতি সাধে। জাতি কুল শীল সকল গ মজিল সে জনার পরিবাদে॥ ভাবিতে চিন্তিতে হিয়াজার-জর না রুচে আহার পানি। ক্রে বলরাম এ তিন• আখর কেবল দুখের খনি ॥ ৩৮॥৮৩৬॥ পাঠান্তর

া ইহাপ-র-সাপুথির ১৩১৫ ও প-র পুথির ১৪৪৪ সংখ্যক পদ। ২। 'কুলের বৌহারী' স্থলে 'কুলের বৌহয়ারি' চ; 'রাজার বছয়ারি' প-র। ৩। 'সই' ইত্যাদি স্থলে 'সই ছার পরাণে কি কাজে' প-র। ৪। 'সে জন' স্থলে 'বা সনে' প-র। ৫। 'সকলি' ক, খ, প-র-সা, প-র। ৬। 'এ তিন' স্থলে 'পিরিতি' প-র।

তথা রাগ।) ওঁকান বিধি সিরজিল কুলবতী নারী। সদা পরাধিনী খবে রুহে একেখুরাই॥ ধিক্ রহুঁ হেন জন হৈয়া প্রেম করে।
বুঝা সে জাবন রাখে তখনিও না মরে ॥
বড় ডাকেও কথাটি কহিতে যে না পারে।
পর-পুরুষেতেও রতি ঘটে কেন তারে।
এ ছার জাবনে মুই ঘুচাইলুঁ আশ।
চণ্ডীদাস কহে কেন ভাবহ উদাস॥৩৯॥৮৩৭॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০২৬ সংখ্যক পদ। ২। 'একাম্বরী' থ, প-র-সা। ৩। 'এখনি' থ। ৪। 'ডাকি'থ। ৫। 'পুরুষেত' ক, পর-সা; 'পুরুষের' থ।

ত্বা রাগ।১

আন্ধার ঘরের কোণে থাকি একেশ্বরী।
কোন বিহিৎ সিরজিল ছার কুলনারীও॥
কথার দোসর নাই থারে কহোঁ। ছব।
দেখিতে না পাও চাঁদ স্তরুজের মুব।
কহ সবিও কি হবে উপায়।
না জানি কি গুণ কৈলে বিদেশ্যর রায়॥
ঘরের আজিনা দেখিবারে লাগে সাধও।
ততু ত না গুণে মনে এত প্রমাদ॥
ও রূপ দেখিয়াও কৈলুঁ মরণ সম্মাধি।
আন কথা কহোঁও যদি গুরুর সমূবে।
ভরমে তথনি মোর শ্রাম আইসে মূবে।
ভাবেও বিভার ততু গদ-গদ বাণী।
ধরিতে ধরণেও না যায়ও ছটি চোঝেরও
পানিও॥
ধ্য ক্রেম মাজিল চিত গাস্বিলও নয়।

সে রূপে মজিল চিত গাসরিল^১• নয়। বলরামদাস বলে না জানি কি হয় ॥৪•॥৮৩৮॥

পঠিস্তির

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৩২৭ ও প-র পুথির ১৪।৪৬ সংখ্যক পদ। ২। 'বিধি' ক। ৩। 'কুলের বছয়ারি' প-র। ৪। 'ধারে কুইো' স্থলে 'বারে কহো' ক, ব, চ; 'কারে কব' প-র। ৫। 'সই' প-র। ৬। 'ঘরের' ইত্যাদি **স্বলে** 'ঘরের আজিনা মোর দেখিবারে সাধ' প-র। ৭। 'লাগিয়া' थ। ৮। 'देक मूँ भत्रण मर्भाध' ऋत्म 'देवल भत्रम ममाधि' প-त्र। २। 'कि हेंग्ग' भ-त्र। २०। 'करहा' क, घ, ह। ১১। 'ভাবিতে' क, ह। ১>। 'श्रवन' ক, প-র-সা। ১০। 'নাযায়' স্কলে 'নচে' প-র। ১৪। 'ছটি চৌথের' স্থলে 'ছটি আঁথের' ক: 'ছচক্ষের' প-র। ১৫। অত:পর প-র পুথিতে নিয়ালিখিত অভিরিক্ত কলিটি দৃষ্ট হয়; যণা, -'ও চান্দমুখের হাসি আধ আধ বোলে। হিয়ার ভিতরে প্রাণ নিরবধি দোলে॥' >७। 'शांत्रदिल' क, श-त-मा; 'शांत्रवात' थ।

তথা রাগ।১

অমুখণ কোণে থাকি বসনে আপনা ঢাকি ছুয়ারের বাহির পরবাস। আপনা বলিয়া বলে হেন নাহি ক্ষিভিতলেং েন ছারের হেন অভিলায। স্থি হে° তুয়া পায়ে কি বলিব আর। অবিরত যার মনে সে হেন তুলছ জনে নিশ্চয়° মরণ^৬ প্রতিকার ॥ প্রণ ॥ না বুঝে পামর মন বুঝাইলুঁ অমুক্ষণ পিরিতি হইল মোর কাল। শুনিতে মরমে বেগা ভাহে ননদিনী-কথা এ ঘর-বসতি বড় জাল। ষত তত্ত মনে করিদ নিশ্চয় করিতে নারিণ রাতি দিবস নাহি যায়। সব মোর রিপুগণ^১ খনে যত গুরুজন

পঠিস্তির

১। ইহাপ-র-সা পুথির ২৬১ ও ১৩২৮ ও প-র পুথির ১৪।৪৪ সংখ্যক পদ। ২। 'আপনা' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ; ষ্থা,—'হেন নাই মোর ক্ষিতিতলে আপনা বলিয়া বলে'। ৩। 'সই' প-র। ৪। 'পায়' ক; 'ঠামে' প-র-সা। ৫। 'কেবল' প-র-সা, প-র। ৬। 'পরম' প-র। ৭। 'বুঝাইলুঁ' ইত্যাদি কলিটি প-র ব্যতীত অন্যান্ত পুথিতে নাই। ৮। 'ষত' ইত্যাদি স্থলে 'ষত্য হ মনে করি' ক, চ; 'কি করিতে কি না করি' প-র-সা; 'কত কত মনে করি' প-র। ৯। 'নিশ্চম' ইত্যাদি স্থলে 'কছু দড়াইতে নারি' প-র-সা; 'চিত নিবারিতে নারি' প-র। ১০। 'করিব' ক, ঝ, প-র-সা, প-র। ১২। অতঃপর প-র পুথিতে নিম্লিথিত অদ্ধ-কলি দৃষ্ট হয়; যথা,—

'নরোক্তম দাসে কয় শ্রাম সে তোমার হয় ইথে দঢ় জানিছ নিশ্চয়।'

> অত্র "ধিক্ রহু পরাধিনী নারী" ইভ্যাদি গেয়ম্।*

অথ সখীং প্রতি আক্রেপো যথা।

बीरगीवठमः।

সুহই।১

আরে মোর গোর কিশোর। পুরুব প্রেম-রদে ভোর॥ স্বরূপ দামোদর রামরায়। করে ধরি করে হায় হায়॥

রাতি দিবস নাহি যায়।

• 'ধিকু রছ পরাধিনী নারী' ইত্যাদি পদটি
ত শুরুজন

সব মোর রিপুগণ'
কোন পুথিতেই উক্ত হর নাই; স্তরাং আমরা
কি কহিব'

কি কহিব'
কি হবে উপায়' ॥৪১॥৮৩৯॥ উহা এ হলে স্বিবেশিত ক্রিতে পারিলাম না।

কহে মৃত্ গদগদ ভাষ।

হন বহে দীঘ নিশাস' ॥

মরম না বুঝে কেহো মোর।

কহে পদ্ত হইয়া বিভোর ॥

কেনে বা এ প্রেম বাঢ়াইলুঁ।

জীয়ন্তে পরাণ খোয়াইলুঁ॥

নিকরে ঝরয়েও দুনয়ানও।

নরহরি মলিন বয়ান ॥ ৪২ ॥ ৮৪০ ॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পূথির ১৩২৯ সংখ্যক পদ। ২। 'নিখাস' ঘ, চ। ৩। 'নিকুরে ঝুরুরে' প-র-সা। ৪। 'নয়ান' ক, খ, চ, প-র সা।

ত্তথা রাগ।১

কাহারে কহিব তুথ কে বুঝে সম্ভর।
যাহারে মরমী কহিং সে বাসরে পর॥
আপনার বলিতে বুঝি নাহিক সংসারে।
এত দিনে বুঝিলুঁসে ভাবিয়া অন্তরে॥
মনের মরম কহি জুড়াবার তরে।
বিশুণ আঞ্জন সেই জালি দেয় মোরে॥
এত দিনে বুঝিলাম মনেত ভাবিয়া।
এ তিন ভুবনে নাই আপনা বলিয়া॥
এ দেশে না রব একা যাব দুরদেশে।
সেই সে যুগতি কহে বিজ চণ্ডাদাসে॥
॥৪৩॥৮৪১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৩৩০ সংখ্যক পদ।

१। 'বাসি' প-র-সা। ৩। 'আপনা' ক, খ,

প-র-সা। ৪। 'দেই' প-র-সা। ৫। 'মনেতে'

ক, পর-সা। ৬। 'নাহি' ক, খ; 'নাঞি' চ।

মুছই (১

কি করিব কোথা যাব কি হবে উপায়।
যাবে না দেখিলে মরি তারে না দেখায়।
যার লাগি সদা প্রাণ আনছান করে।
মোরে উপদেশ কর গাসরিতে তারে।
এত দিন ধরি মুঞি হেন নাহি জানি।
যে মোর তথের তথা তার তেন বাণী।
আন ছলে রহি কত কবে কাণাকাণি।
প্রোমান বলে তুমি বড় অভিমানা।

118844881

পাঠাম্বর

১। তহাপ-র-সাপৃথির ১৩৩১ সংখ্যক পদ। ২। 'আনন্দান' ক। ৩। 'করে' ক, খ, খ, প-র-সা।

> › পুনশ্চ স্থীং প্রতি আক্ষেপো গথা।

সিক্সড়া।>

তোমরা মোরে ডাকিয়া সোধাও না প্রাণ আনছান বাসি। কেবা নাহি করে প্রেম আমি হৈলাম (नार्यो ॥ अ ॥ গোকুল নগরে কেবা কি মা করে তাহে কি নিষেধ বাধা। দে সৰ যুৰতী সতী কুলবভা कायु कलिकनो त्रांथा । লোকে চরচার বাহির হইলেং বিষ মিশাইল ঘরে। জগতের বৈরী পিব্লিভি করিয়া আপনা বলিব কারে॥

বেথিত আছিলা তোমরা পরাণের জীবনে মরণে সঙ্গ। দোষিণী হইলে অনেক দোধের কে ছাডে আপন অসং॥ नरमत्र नमन গোকুলের কান সভাই আপনা বলে। মো পুনি ইছিয়া নিছিয়া লইলু অনাদি জনম-ফলে॥ ডাকি না স্থাও রাধা বলি আর এখনি এখানে মৈলে। **हशोगांग** करह সকলি পাইবা বন্ধুয়া আপন হৈলে ॥৪৫॥৮৪৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০০২ সংখ্যক পদ।
২। 'হইভে' ক, খ, খ, চ। ৩। 'চরচায়ে' থ, ঘ,
চ, প-র-সা। ৪। 'সঙ্গ' ক, থ। ৫। 'পোকুল কান' ক, খ, ঘ, চ। ৬। 'সো' ক, খ, প-র-সা।
१। 'পুন' ক, থ।

তথা রাগ ৷১

দেখিলে কলক্ষিনীর ব্যুধ কলক্ষ হইবে।

এ জনার মুখ আর দেখিতে না হবে॥

ফিরি ঘরে যাও নিজ ধরম লইয়া।

এ দেশে না রব মুঞি যাব বারাইয়া॥

কালা-মাণিকের মালা গাঁথি নিব গলে।

কামু-গুণ্যশ কাণে পরিব কুওলে॥

কামু অমুরাগ -রাক্সা বসন পরিয়া।

দেশে দেশে ভরমিব যোগিনী হইয়া॥

চণ্ডীদানে কহে কেনে হইলে উদাস।

মরণের সাথী যেই দে কি ছাড়ে পাশ॥

#8415881

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০০০ সংখ্যক পদ। ২। 'কলঙ্কীর' ক, চ। ০। 'অফুরাগে রাঙ্গা' ঘ,চ।

शाननी ।>

স্থি হে ফিরিয়া স্থাপন ঘরে যাও। জিয়ন্তে মরিয়া যে আপনা খাইয়াছে তাহে তুমি কি আর বুঝাও॥ ধ্রু॥ नग्रन-পুতली कत्रि লইলুঁমোহন রূপ হিয়ার মাঝারে কবি প্রাণ। পিরিতি-সাগুনি জালি সকলি পোড়াইয়াছি জাতি কুল শীল অভিমান॥ না জানিয়া মৃঢ় লোকে, কি জানি কি বলে মোকে না করিয়ে শ্রবণগোচরে। স্রোত-বিথার *জলে* এ ওমু ভাদাইয়াছি কি করিবে কুলের কুকুরে॥ খাইতে শুইতে রৈতে আন নাহি লয় চিতে বন্ধ বিনে আন নাহি ভায়। মুরারি গুপতে কহে পিরিতি এমতি হৈলে তার গুণ তিন লোকে গায়।।৪৭॥৮৪৫॥ পাঠান্তব

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০০৪ সংখ্যক পদ। এই পদটি ইতিপূর্ব্বে ৭৫১ সংখ্যক পদরূপে উদ্ধৃত হইয়াছে; স্মৃত্যাং পাঠাস্তর উক্ত পদে জ্বইব্য।

তুড়ী।১

আর কত বোল সই আর কত বোল।
নিভান অনল আর পুন কেন আলে ।
যে অনলে পোড়ে হিয়া সে অনলে সেকি।
কন্তারী লেপিয়া অসে শ্যাম-নাম লেখি।।

শ্যাম-পরসক্ষ বিনে যদি প্রাণ রয়।
তমু ত' দারুণ লোকে এত কথা কয়।।
জ্ঞান কহে বিনদিনি নিবারহ চিতেও।
কালায় মাতল মন কি করে কথাতে ॥৪৮॥৮৪৬॥
পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৩০৫ ও প-র পুথির ১৪।২০ সংখ্যক পদ। ২। 'নিভাল্য' প-র। প্রকৃত পাঠ বোধ ছয়, 'নিভাইল' হইবে। বাঙ্গানা-কৃদস্ত 'নিভাইল' শব্দের অর্থ 'নির্বাপিড'। 'নিভান' রূপটি অপেক্ষাকৃত আধুনিক। ৩। 'অনল' ইত্যাদি ছলে 'অনল কেন ফুক দিয়া আগ' প-র-সা; 'মনের আঞ্জন পুন' ইত্যাদি প-র। ৪। 'পে অনণে' ফলে 'তাহে পুন' প-র। ৫। 'ত্যু কি' থ, ঘ। ৬: 'ফ্রান কহে' ইত্যাদি ভণিতার কলিটি প-র পুথি ব্যভীত অন্থান্ত পুথিতে নাই।

সিকুড়া।১

কি মোর এ ঘর^২ তুয়াবের কাজ
লাজে কহিতে নারি।
তিলেক বিচেছদে লাগে পরমাদ
হিয়া বিদরিয়া মরি ।
আপন ইচ্ছায় বাছিয়া লই লুঁ
ব্য মোর করমে ছিল।
এ কথা শুনিয়া বে জন বিমুধ

তারে তিলাঞ্চলি দিল॥ কি আর বুঝাও কুলের ধরমণ মন সভন্তরগদ নয়।

কুলবভী হৈয়া রসের পরাণ জনি কারো গাছে হয়। -কামু সে জীবন জাতি প্রাণ ধন এ ছটি নয়ানের তারা। পরাণ-অধিক নয়ান ১২-পুতলী

ধিক নয়ান১১-পু্তলী তিলেকে বালিয়ে১২ হারা॥

গঞ্জে গুরুজন

বলু ১৩ কুবচন

সে মোর চন্দন চুয়া।

শ্রাম-অসুরাগে

গঙ্গ বেডিয়াছি

তাল ১৪ তুলদী দিয়া ॥৪৯ ॥৮৪৭॥

পাঠান্তর

১। ইशे প त-मा शृषित ১৩৩৬ ও প-র পুषित ১৪। ১ मংখ্যক পদ। ২। वत' क, थ, घ, ठ, প-র-म। ৩। '६য়ারে' क, थ, ठ। ৪। 'লাজে কহিতে' হুলে 'লাজ কহিতে' ক, প-র-দা; 'লাজ করিবারে' थ, च, চ। ৫। 'হিয়া বিদরিয়া' হুলে 'য়ুরিয়া ঝুরিয়া' ঘ, চ। ৬। 'বোল' খ, চ, শ-র। ৭। 'কুলের ধরম' হুলে 'ধরম বিচার' পর। ৮। 'অভয়র' ক, প-র-দা, প-র। ৯। 'জানি' ক, থ, প-র-দা, প-র। ১০। 'কার' ক; 'কারু' ব। ১১। 'হিয়ার' প-র। ১২। 'ভিলেকে বাসিয়ে' হুলে 'ভিলে ভিলে হুই' প-র-দা। ১৩। 'বলু কুবচন' হুলে 'বলে কুবচন' ক, চ, প-র-য়া; 'বলুক বচন' থ। ১৪। 'ভিল' ক, প-র-য়া; 'ভিল' পাঠে ছুলো ভঙ্গ ঘটে।

দূতীং প্রতি আন্দেপো যথা।

মলার ।১

দিবস রজনী গুণ গণি গণি
ক হৈল দারুণ বেথা।
খলের বচনে পাতিয়া প্রাবণে
খাইলু আপন মাথা॥
শুন শুন দৃতি কি কহু মো প্রাভিং
বচন না লাগে ভাল।
কি ছার পিরিতি ভাবিতে ভাবিতে

(मागांव ववन कानः॥

সোণার গাগরি

বিষজল ভরিগ

কেবা আনি দিল গাগে।

করিলুঁ আহার

না করিঃ বিচার

এ বধ কাহারে লাগে II

নীর লোভে মৃগী

পিয়াসে ধাইতে

ব্যাধ শর দিল বুকে।

অলের সফরী

আহার করিতে

বড়শী লাগিল মুখে॥

নৰ ঘন• হেরি

পিয়াদে চাতকী

চঞ্ পসারল আশে।

বারিক বারণ

করল প্রন

कुलिम भिलल (भरष ॥

লাখ হেম পাইয়া

যহনে বান্ধিতে

পড়িল অগাধ জলে।

হেন অমুচিত

করে পাপ বিধি

বিজ চণ্ডীদাসে বলে॥৫•॥৮৪৮॥

পাঠাস্কর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১০০৭ ও প-র পুথির ১৪৷১১২ সংখ্যক পদ। ২। 'শুন শুন' ইত্যাদি পংক্তি ছুইটির স্থলে প-র পুথির পাঠ; যথা,—

'সই কে বলে পিরিভি ভাল।' ৩। 'সোণার গাগরী' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ; ষ্থা,—

'বিষের গাগরী থিরে মূথ পুরি।'

৪। 'না করি' স্থলে 'করং' প-র। ৫। পিয়াদে
ধাইতে' স্থলে 'আনন্দে ধাওই' প-র। ৬। 'নব ঘন'
স্থলে 'জলধর' প-র। ৭। 'চাতক' প-র। ৮।
জ্ঞানর পর প্থিতে নিমাল্থিত অভিরিক্ত কলিটি
দুষ্ট হয়; যথা,---

'পির লাড়ুকরি বিব মাধাইয়া অবলা বালকে দিল।

স্বাছ পাইয়া থাইতে খাইতে

নিকট মরণ ভেল ॥

অথ বিধাতারং প্রতি আক্ষেপো যথা।

শ্রীগৌরচন্দ্রঃ।

यश्हे ।)

কনক-চম্পাক গোরাচান্দে।
ভূমিতে পড়িয়া কেন কাম্দে চ
ক্ষেণে উঠি কহে হরি হরি।
কে করিল আমারে বাউরি ॥
আজাকুলমিত বাস্ত তুলি।
বিধিরে পাড়য়ে সদা গালি॥
বহে ধিক্ বিধির বিধানে।
এমত যোটনাং করে কেনে॥
কোন ভাবে কহে গোরারায়।
নরহরি সোধিয়া বেড়ায়॥৫১॥৮৪৯॥

পঠিস্তর

১। ইহাপ-র-সাপু(ধর ১০০৮ সংখ্যক পদ। ২। 'ভোমেতে' ধ, ধ। ৩। 'ঘোটন' क; 'ঘোটনা' থ।

ভেউট বিহাগ ৷>

ধাতা কাতা বিধাতার বিধানে দিলামং ছাই।
জনম হৈতে একা কৈলে দোসর দিলে নাই।
না দিলে রসিক মৃতু মুক্তথের স্বনে।
এমতি আছিল তোর এ পাপ বিধানে।
যার লাগি প্রাণ কান্দে তার নাই দেখা।
এ পাপ করমে মোর এমতি লেখাজোধা।
ঘর-ভ্য়ারে গাগুন দিয়া যাব দূর দেশে।
আরতি পূরিবেং কহে কবি চণ্ডীদাসে।

পাঠান্তর

10310001

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৩৯ সংখ্যক প^র। 'ডেউট বিহাপ' ফ্লে 'ডেউটা বিহাপ্ডা' প-র-সা। ২। 'দিয়াছি' ক ; 'দিয়ে' চ, প-র-সা। ৩। 'পুকুষের' ক ; 'মুকুথের' থ, ঘ, প র-সা। ৪। 'নাহি' ক , থ, প-র-সা। ৫। 'পিরিতি' ঘ।

টাকা

৩—৪। "না দিলে" ইত্যাদি। ছে মৃচ্
(বিধাতা!) (তুমি) রসিক পুরুষের সঙ্গে (আমাকে)
দিলে না অর্থাৎ আমাকে রসজ্ঞ নায়কের সহিত
সন্মিলিত করিলে না; তোর পাপ-বিধানে এইরপ
ছিল ?

ভণা রাপ ৷>

বিধির বিধানে হাম আনল ভেজাই।

যদি সে পরাণ বন্ধুরং তার লাগি পাই॥
গুরু তুরুজন যত বন্ধুর বেষ করে।

সন্ধ্যাকালে সন্ধ্যামুনিং তার বুকে পড়ে॥
আপন দোষ না দেখিয়া পরের দোষ গায়।
কাল সাপিনী যেন তার বুকেং খায়॥
আমার বন্ধুকে যে করিতে চাহেং পর।
দিবস তুপরে যেন পোড়ে তার ঘর॥
এতেক পুবতি আছে গোকুল নগরে।
কে না বন্ধুরেং দেশি বুক ফাটি মরে॥
বাশুলী আদেশে বিজ চণ্ডাদাসে ভণে।
তোমার বন্ধু তোমার আছে গালি পাড়িছ
কেনে॥৫৩।৮৫১॥

পাঠাস্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১০৪০ সংখ্যক পদ।
২। 'বছ্ব'ক, চ, প-র-সা। ৩। 'সভ্যামনি' ख;
'সভ্জামনি' প-র-সা। ৪। 'বৃক্ব' প-র-সা। ৫।
'চায়' য়, চ। ৬। 'বছুকে' খ।

श्रीवांग ।>

আপনা আপনি দিবস রজনী
ভাবিয়েং কতক তুখ।

যদি পাখা পাই পাখা বিত্যা যাই

যদি পাথা পাই পাথা হৈয়া যাই না দেখাই পাপ মুখ ॥

সই বিধি দিল মোরেও শোকে। পিরিতি করিয়া আশ না পুরল

কলক্ষ ঘূষিল লোকে ॥ গ্রা॥
হাম অভাগিনা তাহে একাকিনী
নহিল দোসর জনা।

জভাগিয়া লোকে য**ত বোলে মোকে** ভাগা যেখনা যায় **শুনা।**

বিধি যদি শুনিত[া] মরণ হইত• ঘুচিত সকল দুখ।

চণ্ডীদাসে কয় এমতি **হইলে** পিরিতির কিবাণ স্থ**খ** ॥৫৪॥৮৫২॥

পাঠা স্থর

১। তহাপ-র-সাপুথির ১৩৭১ সংখ্যক পদ।
২। 'ভাবিয়া' প-র-সা। দ। 'মোকে' প-র-সা।
৪। 'সে' দ। ৫। 'হৈত' প-র-সা। ৮। 'করত'
প-র-সা। ৭। 'পিরিভির কিবা' স্থলে 'পিরিভি
কিসের' প-র-সা।

কন্দর্পং প্রতি আফেপো যথা।

শ্রীগোরচন্দ্র:।

षूड़ो ।>

গোর হুন্দর মোর।

কি লাগি একলে বসিয়া বিরলে নয়নে গলয়েং লোর ॥ ধ্রু ॥ পুরুব-চরিত

হরি-অসুরাগে আকৃল অস্তর
গদগদ মৃত্র কহে।
সকল অকাজ করে মনসিজ
এত কি পরাণে সহে॥
অবলা-শরীর করে জরজর
মনের মাঝারে পশি।
কহিতে ঐছন পুরুব-বচন
অবনত মুখ-শশী॥
প্রলাপের পারা কিবা কহে গোরা
মরম কেহো না জানে।

দাস নরহরি ভণে ॥৫৫॥৮৫৩॥

সদা বিভাবিত

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১০⊰২ সংখ্যক পদ। ২। 'নয়নে গল্যে' স্থলে 'গল্যে নয়নে' ক, ধ, চ.প-র-সা।

थानगी ।>

পর-মন্দকারী পঞ্চবাণ-ধারী তোরে বাং বলিব कि। তোর আকর্ষণে পিরিতের ফাঁদে আমি সে ঠেকিয়াছি॥ मत्रम वृक्षिन् এত দিনে তোর অনক ভোহারি নাম। অঙ্গ বা থাকিলে আর কি হইত কি জানি কি গুণগাম ॥ পশিয়া নারীর মনের মাঝারে সরম করিলিঃ দুর। তার প্রতিফল হইবে তোমার কহিলুঁবচন গুঢ় ॥

কালার পিরিতি

লাগি তোর শরে

কাতর হৈয়াছি আমি।

কহয়ে উদ্ধৰ

যে জন অন্তরে

তারে কি ছাড়িবে তুমি ॥৫৬॥৮৫৪।

পাঠাস্তর

>। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৩৪৩ সংখ্যক পদ। ২। 'আর' দ, চ। ৩। 'মার কি হইড' ফুলে 'আর কি হইডা' ক; 'আব কিবা হৈড' প-র-সা। ৪। 'করিলা' ক।

ভিরোগা।১

কতরেই মদন তন্তু দহসি হামারি।

হাম নহ শঙ্কর হঙ্ড বরনারি ॥

নাহিং জটা ইহ বেণি-বিভন্ম।

মালতি-মাল শিরে নহ গঙ্গ॥

মোতিম-বন্ধ মৌলিং নহ ইন্দু।
ভালে নয়নই নহ সিন্দুর-বিন্দু॥

কঠে গরল নহ মুগমদ-সরে।

নহ ফণি-রাজই উরে মণিহার॥

নীল পটাম্বর নহ বাঘছাল।

কৈলি-কঙল ফুলাং না হয়েই কপালা॥

বিশ্বাপতি কহ এইইনাই এইনাই ভিন্ন ।

আসে ভসম নহ মলয়গ্র-পক্ষ ॥৫৭॥৮৫৫॥

পাঠাগুর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ৬০৫, ১৩৪৪ ও প-র
পুথির ১৪।৬ সংখ্যক পদ। ২। 'কভিছ' ক, ধ,
ব, চ; 'কথিছ' প-র। ৩। 'ভূছ' क; 'রছ' চ।
৪। 'নহি' প-র-সা। ৫। 'শিরে' ঘ। ৬। 'অনল'
প-র-সা, প-র। १। 'মণিরাজ' ক; 'ফণিহার'
ঘ। ৮। 'কেলি-কঙল ফুল' স্থলে 'কেলিকমল ইহ'
ক; 'কেলিক কমল' চ। ১। 'না হুরে' স্থলে 'এ

নছে' প-র-সা; 'না হোয়ে' প-র। ১০। 'কছ এ:হন' হলে 'কৰি কছই' প-র-সা, প-র।

उथा जात्र ।>

মনমথ ভোহে কি কহব অনেক। দিঠি-অপরাধে পরাণ পরিপীড়সিং এ তুয়া কোন° বিবেক॥ ধ্রু॥ ভাহিন নয়ন প্রত্নগণ বারণ পরিজন বামহি আধ। আধ নয়ন-কোণে যব হরি পেখলুঁ তাহে ভেল এত পরমাদ॥ পুরু বাহির পথ করত গভাগত কোন না° হেরভ কান। তোহারি কুত্বম-শর কথিত্র না সঞ্চর হামারি হৃদয়ে পাঁচবাণ ॥৫৮॥৮৫৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৪৫ ও প-র পুথির >১৪। « मश्थाक भाग। २ । 'भटब भौकृति' क, ६; 'পর পিড়সি' প-র-সা। ৩। 'কৌন' প-র-সা। 81 'नव्रदन' क, थ, च, ठ, প-त्र-ना। **८। '**यव র্বার পেথলু' ছলে 'হরি অবলোকনে' প-র। 💆। 'প্রত' প-র-সা। १। 'কোন না' স্থলে 'কো নাহি'ক, খ, চ; 'কোনে না' ঘ। ৮। 'কভিছ'' क, थ, ब, ठ, श-ब्र-मा।

টাকা

১—৩। "মনমথ" ইত্যাদি। হে মন্ম**থ**! ভোমাকে অধিক কি বলিব ? (ভূমি) নয়নের দোষ হেতু প্ৰাণকে নিভান্ত পীড়া দিতেছ; ইহা ভোষার কি বিবেচনা ?

8-- १। "ডাহ্ন" ইত্যাদি। (আমার) দক্ষিণ নয়ন নিক্কদিগের এবং বাম-নয়নের অর্জ-ভাগ পরিজনদিগের বারণ-কারী অর্থাৎ দক্ষিণ নম্বনে নিক্কিছিগের ও বাম-নম্বনের অক্ষভাগে

পরিজনদিগের দৃষ্টি বাঁচাইয়া, (অবশিষ্ট) বাম-নম্নার্দ্ধের প্রাস্তভাগ বারা যখন এক্সফকে দেথিলাম. তাহাতেই এত প্রমাদ হইল ৷ (উভয় নয়নে ভাল করিয়া 🖺 ক্বঞ্চকে দেখিলে না জানি কি প্রমান **ब्हेउ**।)

৮-১১। "পুব" ইত্যাদি। (ত্রীক্লয়) গোকুলে ও বাহিরের পথে যাভায়াত করেন; শ্ৰীক্লফকে কোনু বাক্তি না দেখে ? ভোমাব কুন্মুম-শর কোথায় না সঞ্চরণ করে 📍 (ভবে) আমার कुनस्बरे পঞ্-বাণ (ऋाब्रो) (कन 🤊

পুনশ্চ কন্দর্পরীতং দখীং প্রাক্তি কথয়তি। धानना ।>

কুলের বৈরা ३३ल भूत्रली সকলি করিল নাশে। মদন-কিরাতী মধুর যুবতা ধরিতে সাইল দেশে॥ महे जोत ना এमन वामि। পিরিতি আঠা ननमो काँछार

পড়দা হইল ফাঁদী। গ্ৰা বুন্দাবন মাঝে বেড়ায় সাজে ধরিতে যুবতা-জনা।

যমুনার কুলে গাছের ভলে আসিয়া° করিল থানা॥ বসিয়া ভালে

ভাক করে এক দিঠে। না যায় কাটা জ্ঞ চান আঠা লাগিল পাখার পিঠে॥

গাছের ডালে

পড়িয়া ভূমিতে ধড়ফড়ইতে কিরাতে ধরিল পাখে।

পাখে পাথা দিয়া বান্ধিল টানিয়া বুলিতে ভরিয়া রাখে 🛭

চণ্ডীদাসে কয় মহাজন হয়
কিনিয়া লয় যে পাখী।
ছাড়িয়া দেয় পাখা যে ধোয়ায়
তবে সে এডান দেখি ॥৫৯।৮৫৭॥

পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১·৪৬ সংখ্যক পদ। ২। 'থোটা' প-র-সা। ৩। 'ব্সিয়া' ক, খ, প-র-সা। ৪। 'ধড়ফড় হইডে' খ, ঘ।

তথা রাগ।১

আরে মনমথ নাহি ভুৱা ধরম-বিচার। কো করু দোখ ব্লোখ করুং কা সঞ্জে বড় তুহুঁ মুরুখ গোঙার ॥ কলা গুণ-মাধুরি শুনইতে রূপ তেএিঃ দিঠি হেরল কান। সোই যোধ-পতি তাহে নাাহ পারলি হৃদয়ে হানলি পাঁচ বাল। কিয়ে গুণে রতি তোহে পতি করি মানল নাম কে রাখল কাম⁸। নাশসি কাম কুলটা-পদ দেওসি অব তোহে চানলু ॰ হাম॥ দেবীপতি শিব জীব ভুয়া রাখল ছিয়ে ছিয়ে এ বড়ি দুখে। সাধি থৈছে ধাওলি তা সঞ্জে বাদ তৈছে অনল দিল মুখে ॥ অব হাম শস্ত আরাধব তুয়া লাগি পুন ভোহে করব বিনাশ। বিরহিণিগণ যেন किरम चन्न किरम वन যাহাঁ ভাহাঁ স্থা করু বাস।

ধরণিক বাণি মান শত কুছ হন্দরি
শন্ত আরাধবি কায় শন্ত আরাধবি কায় শন্ত আরাধবি কায় শন্ত আদি কন
মনমণ-কোটি মথন করু যোজন
সোতুয়া চরণ ধেয়ায় শ্ব ॥৬০॥৮৫৮॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পৃথির ১৩৪৭ সংখ্যক পদ।
২। 'কর' প-র-সা। ৩। 'গুণে রতি' ছলে
'গুণবতী' ক। ৪। 'কান' ক। ৫। 'অব তোহে
চীনলুঁ' ছলে 'আর তোছে চিহুল' ক। ৬। 'দেবিপতি শীব' ঘ; 'দেবিপতি শিব' চ। ৭। 'ছথে' ক,
থ, প-র-সা। ৮। 'মুথে' ক, থ, প-র-সা। ১। 'আরাধিব' খ, ঘ। ১০। 'মানি' ঘ, চ, প-র-সা।
১১। 'আরাধবি কার' ছলে 'পুজবি ক্ষব কার' ঘ।

গুরুগণাদীন্ প্রতি আক্ষেপো যথা। শ্রীগোরচন্দ্র।

बबाड़ी 12

গোরাচাঁদে দেখিয়া কি হৈলুঁ।
গোপত পিরিতি-ফাঁদে মুঞি সে ঠেকিলুঁ।
গরে গুরুজন-জালা সহিতে না পারি।
অবলা করিল বিহি তাহে কুলনারী।
গোরা-রূপ মনে হৈলে হইয়ে পাগলী।
দেখিয়া শাশুড়ী মোর সদাপাড়েই গালি।
রহিতে নারিলুঁ ঘরে কি করি উপায়।
যতু কহে ছাড়িলেই না ছাড়ে

পাঠান্তর

গোরারায় ॥৬১॥৮৫১।

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৪৯ সংখ্যক ^{পদ।} ২। 'দেই' ঘ, প-র-সা। ৩। 'ছাড়িতে' প-র-সা। সিক্ষ্ড়ো।১

তাহারে বুঝাই সই পাই তার লাগি।
ননদী-বচনে ধেন বুকে উঠে আগি ॥
কাহারে না কহি কথা রহি ছথে ভাসি।
ননদী-দ্বিশুণ বাদা এ পাড়াপড়সীর ॥
কাহারে কহিব ছুগ যাব আমি কোথা।
কার সনে কব আরু কালা কামুর কথা ॥
যত দূরে যায় মন তত দূরে গাব।
পিরিতি পরাণ-ভাগী যথা গেলে পাব॥
তাহারে কহিব ছুথ বিনয় করিয়া।
চণ্ডীদাস কহে তবে জুড়াইবে

হিয়া ॥৬২॥৮৬০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০৫০ ও প-র পুথির ১৪।৫৯ সংখ্যক পদ। ২। 'পোড়া পড়সী' ক, খ। ৩। 'আমি' প-র। ৪। 'পরাণ-ভাগী' স্থলে 'পরাণ দোসর' খ। ৫। 'কোথা' ব, চ, প-র-সা, প-র।

श्रीवान ।>

ঘুচিবে কখনি পরের রমণীং এমতি করিবে³ ধাতা। প্রতি ঘরে ঘরে গোকুল নগরে মা শুনি পিরিতি কথাং॥ महे (य वल (म वल⁶ (भारत । শপতি করিয়া বলি দড়াইয়া না রব এ পাপ যরে॥ প্রা মেঘের গর্জন গুরুর গঞ্জন্দ কত না সহিবেশ প্রাণে। বর ভেয়াগিয়া याँहैव हिलग्ना ११ রহিব গহন বনে॥

বনে ষে ২ পাকিব শুনিতে না পাব

এ পাপ জনার ২০ কথা।
গপ্তনা ঘুচিবে হিয়া জুড়াইবে ২০
ঘুচিবে ২ মনের বেথা॥
চণ্ডাদাস কয় সভন্থরা হয় ২০
তবে সে এমন ২০ বটে।
যে সব কহিলে করিতে পারিলে ২৮
তবে সে এ তাপ ২০ ছুটে॥৬০॥৮৬১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৫১ ও প-র পুথিয় ১৪|৬৭ সংখ্যক পদ। २। 'অধীন' প-র। **৩।** 'কখন'প-র। ৪। 'এমতি করিবে' **স্থলে 'এমন** কর্মে' প্-র। ৫ । 'না শুনি' ইত্যাদি খলে 'শুনি পিরিতের কথা' প-র। ৬। 'যে বল সে বল' ছলে 'আর যে না বোল' প-র। १। 'বলি দড়াইরা' স্থলে 'দোষ ছাড়াইব' প-র। ৮। 'তর্জন' প-র। ৯। 'সহিব' ক, প-র-দা, পর। ১০। 'বর ভেয়াগিয়া' স্থলে 'বর যে ছাড়িয়া' প-র। ১১। 'ষাইব চলিয়া' ফ্লে 'ষাব বাহিরাঞা' প-র। ১২। 'বনে যে' হলে 'বনেকে' প-র-সা। ১৩। পাপ लाटकत्र' श-ता >8। 'विषा क्ष्मिहेरव' व्राम 'श्वान क्ष्मारव' श-द्र। ১৫। 'साइंटव' श-द्र। ১७। 'সতস্তরীহয়' ৬লে যদি স্বভন্ন হয়' প-র। ১৭। 'এমনি' খ; 'এমভি' প-র। ১৮। 'করিতে পারিলে' স্থলে 'দে সব হয়' প-র। ১৯। 'এ ভাপ' স্থলে 'এ পাপ' क, খ, চ, প-র-সা ; 'তাপ যে' প-র ।

डवा जोग ।>

ছারং দেশে বসতি ছইল নাহিক দোসর জনা।
মরমের মরমী নৈলেও না জানে বেদনা॥
চিত উচাটন সদা কত উঠে মনে।
মনদিনীরঃ বচনে পাজেরেও বিদ্যে মূণে॥

থালার উপরে জালা সহিতে না পারি।
বন্ধু হৈল ধ্বিমুখ ননদা হৈল বৈরা ॥
শুরুজন ক্রকন ক্রকন দা শেলের ঘায়।
কলকে ভরিল দেশ কি করি উপায় ॥
বাঁশুলী-আদেশে দ্বিজা চণ্ডীনাসের গীত।
আপনা আপনি চিত করহ স্থিতে ॥৬২॥৮৬২॥

পাঠান্তব

১। ইছাপ-র-সা পুথির ১৩ ং২ সংখ্যক পদ।
২। 'এ ছার'ক, প-র সা। ৩। 'নহিলে' ক,
ঝ, প-র-সা; 'নইলে' ঘ। ৪। 'ননদীর' ক,
প-র-সা; 'ননদিনি' ঘ; 'ননদি' চ। ৫। 'পাজর'
প-র-সা। ৬। 'ছেন' প-র-সা। ৭। 'গুরুজনের'
প-র-সা। ৮। 'কবি' ক, থ, ঘ, চ। ৯।
'স্বীত' ঘ।

পঠমপ্ররী 13

নিখাস ছাড়িতে না দেয় ঘবের গৃহিণী।
বাহিরে বা গাসে ফাঁন পাতেই ননদিনী॥
বিনিই ছলে ছলে সে সদাই ধরে চুরিই।
হেন মন করে জলে প্রবেশিয়া মরি॥
সতী-সাধে দাঁড়াই যদিং সহীগণ সক্ষে।
পুলকে পূর্য়ে তমুই শ্রাম-পরসঙ্গে॥
পুলক ঢাকিতে নানা করিং পরকার।
নয়নের ধারা মোর বহে অনিবার॥
পাড়ারা লোক না জানে পিরিতি বলিই

তুমি যদি বল সমাধান দিয়ে ও ঘরে ও । চণ্ডীদাস বলে শুন আমার যুগতি। অধিক জালা ২ তার যার ১০ অধিক পিরিতি ॥৬৫॥৮৬৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৫০ ও প-র পুথির ১৪২৮ সংথ্যক পদ। 'পঠমঞ্জরী' স্থলে 'ফরুলা শ্রীরাগা' প-র। ২। 'পাড়ে' থ। ৩। 'বিনা' প-র। ৪। 'ধরে চুরি' স্থলে 'ধরি চুলি' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'বিদি' শব্দ ক, থ, প-র-সাও পর পুথিতে নাই। ৬। 'অঙ্গ' প-র। ৭। 'নানা করি' স্থলে 'করি কত' প-র। ৮। 'পোড়া' থ। ৯। 'বলে' ক। ১০। 'সমাধান দিয়ে' স্থলে 'সোই সমাধিয়ে' থ; 'সেই সমাধিয়ে' ঘ। ১১। 'ভারে' প-র। ১২। 'যাতনা' প-র। ১৩। 'ভার ধার' স্থলে 'ধার ভার' ক, খ, ঘ, প-র-সা; 'ধার' প-র।

৩—৪। "বিনি ইত্যাদি। (আমার) ছল বিনা অর্থাৎ ছল-পূর্বক সর্বাদাং আমার চুরি অর্থাৎ চৌর্য্য-প্রণয় বাহির করে। (তাংগতে) এক্লপ ইচ্ছা হয় যে, অলে প্রবেশ করিয়া প্রাপত্যাগ করি। 'সদাই ধরি চুলি' পাঠে 'ননদিনী ছল পূর্বকি সর্বাদাই চুলে ধরে' এই কলে অর্থ স্থাকত নহে।

১১—১২। "চণ্ডাদাস" ইত্যাদি। চণ্ডাদাস বলেন—(হে শ্রীরাধে!) আমার বৃক্তি শ্রবণ কর; বাহার অধিক প্রেম, তাঁহারই অধিক বাতনা। (কবির সান্তনার ভাৎপর্য্য এই বে, ত্রিভূবন-সার প্রেম বস্তুটি যথন একাত্তই বাহ্ণনীয়, স্থতরাং উহার ক্ষন্ত অনিবার্য্য আমুবলিক বাতনা সহ্থনা করিয়া উপায় কি?) 'অধিক আলা বার ভার অধিক পিরিতি' পাঠে সমীচীন অর্থ হয় না।

ভণা রাপ ৷১

গুরুজন-বচনে পাঁজের ধসি গেল। পাড়াপড়সীর জালায় প্রাণ সারা ছৈল। কভ না সহিব আর সহিতে না পারি। কহিতে কৃষ্টিতে ডুখ কহিছেও নারি। এ দেশ ছাড়িয়া যাব রহিব কাননে। এ পাপ লোকের মুখ না দেখি

যেখানে ॥৬৬॥৮৬৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৫৪ সংখ্যক পদ।

তত্ৰ কুটিলায়াঃ দাক্ষাভুক্তিঃ। গাৰায়।

এ কি পরমাদ আই।

লোকের বদনে শুনি যেং শ্রাবণে তাহাই দেখিতে পাই ॥ ধ্রু ॥ গোমার আমার বাপের কুলেতে কথন কথাটি নাই।

ভবে কেন ভূমি কাফু কাফু করি সদাই জপহ রাই॥

কামু নাম শুনিং চমকি উঠহ পুলক ভাহার সাথী।

কালা-রূপ দেখি ছলছল আঁখি

বেকত এ সবং দেখি॥

আমি ননদিনী সব রস জানি পাশার এ• চৌপিঠ।

ক্ষে শিবরামণ বুঝিলুঁ কথায় তুমি সে বড়ই ঢাঠ ॥৬৭॥৮৬৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৫৫ ও প-র পুথির
১৪!৫৬ সংখ্যক পদ। 'গান্ধার' হুলে 'দ্রীরাগ'
প-র। ২। 'শুনি বে' হুলে 'শুনিহে' ও; 'শুনিয়া'
ক, চ, প-র-সা; 'শুনিতুঁ' প-র। ৩। 'যথন' থ।
৪। 'কাহু নাম শুনি' হুলে 'কাহুর নামে' প-র।
৫। 'বেকত এ সব' হুলে 'এ বড় বেকত' প-র।
৬। 'পাশার এ' হুলে 'পাসার রে' ক; 'পাশার জেন

এ' প-র-সা; 'পাসাল্লের' প-র। ৭। 'ক্ছে শিবরাম' স্থলে 'শিবানন্দ বলে' প-র।

बबाड़ी ।>

ননদিনি লো মিছাই লোকের কথা। যদি কান্যু সঞ্চে পিবিতি করি ভং শপতি ভোমার মাথা। গ্রু॥ নিজ পতি বিনে আন নাহি জানি সেই সে আমার ভাল: কোন গুণে যাই রাখালে ভজিব তাহাতে বরণ কাল। মণি মৃকুতার• অভরণ নাহি সাজনি কনের ফুলে। চূড়ার উপরেণ ভ্ৰমরা গুঞ্জরে তাহে কি রমণী ভুলে " त्र∮का टेश्या यादव দেখিতে না পারে মায়ে বোলে ননীচোরা ৷ ক্রে শিবরাম রাধার কলক্ষ• মিছাই করিলি ভোৱা ॥৬৮॥৮৬৬॥

পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০৫৬ ও প-র পুথির ১৪।৫৭ সংখ্যক পদ। ২। 'পিরিতি করি ত' স্থলে 'ভাব বাড়াই থাকি' প-র-সা। 'যদি' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ ষথা,—'দে নন্দন-দন ষদি দেখা। থাকি'। ৩। 'বাছার' ক, থ, ঘ, চ, প-র-সা। ৪। 'মাণিকের' প-র। ৫। 'চুড়ার উপরে' স্থলে 'চুড়াট বেড়িয়া' প-র। ৬: 'কচে শিবরাম' ইত্যাদি পংক্তি ফুইটির স্থলে প-র পুথির পাঠ ষথা,—'শেবরাম বলে বসি তক্তমূলে দিছা রব তোল তোরা।'

সিন্ধুড়া।১

সই এত কি সহে পরাণে। (भल ननिमनो কি বোল বলিয়া শুনিলা আপন কাণে॥ ধ্রু॥ এত কথা কংহ্ পরের কথায় ইহাতে করিব কীও। কামু-পরিবাদে ভুবন ভরিল त्रशाहे॰ भन्नारम को ॥ কামুরে পাই ত এ সবুধ কহিত তবে বা সে বোল ভালা। মিছা পরিবাদে বাদিনী হইয়াদ প্রাণ জরজর হৈল ॥ কে আছে বুঝিয়া শ্রামেরে কহিয়া এ ছথে করিনে পার। ধৈৰ্ঘ্য করি রহ **ठ** छोमारम करश (क दक्षण कि कर्द्र>• कात्र ॥७३॥৮৬९॥* পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০৫৭ ও প-র পুথির ১৪।৫৮ সংখ্যক পদ। ২। 'কয়' প-র। ৩। 'কি' ক, থ, প-র-সা, প-র। ৪। 'ভূবন ভরিল' হলে 'ভূবন ভূলিল' ক, থ; 'জগত ভাদিল' প-র। ৫। 'কেমনে' প-র। ৬। 'এ সব' হলে 'ভবে ষে' প-র। ৭। 'ভবে' ইত্যাদি হলে 'ভবে ভাল বাদে বোল' প-র-সা; 'সে বোল আমার ভাল' প-র। ৮। 'মিছা' ইত্যাদি হলে প-র পুথির পাঠ ষ্থা—'মিছা বাদে পরিবাদিনী হইয়া'। ৯। 'ব্যাঞা' ক, থ; 'ব্যাইয়া' য়, চ। ১০। 'কি করে' হলে 'করিল' ক, থ, য়, চ, প-র-সা।

थाननी ।>

ভাদরে দেখিলুঁ নঠং চাঁদে।

সেই হৈতে উঠে মোর কামু - পরিবাদে।
এতেক যুবতী আছে গোকুলে ।
কলক কেবল লেখা মোর সে কপালে ॥
স্বামী ছায়াতে মারে বাড়ি।
তার আগে কুকথা কয় দারু শাশুড়ী ॥
নন্দী দেখয়ে চৌখের বালি।
শ্রাম নাগর তোলাই স্কাই পাড়ে গালি॥
এ ছুঃখে স্বাজর হৈল কাল।
ভাবিয়া দেখিলুঁ এবে মরণ সে ভাল ॥
ঘিজ চণ্ডাদাসে পুন কয় ২।
পরের বচনে কি আপন পর হয় ॥৭০॥৮৬৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০৫৯ সংখ্যক পদ।
২। 'নট' ক। ৩। 'সদা' প-র-সা। ৪।
'উঠে' প-র। ৫। 'যুবতীগণ' ক, চ। ৬।
'আছে গোকুলে' স্থলে 'আছরে গোকুলে' ক, চ;
'গোকুল নগরে' প-র-সা। ৭। 'কেবল শেখা'
স্থলে 'লেথ্যাছে বিধি' প-র-সা। ৮। অভঃপর
প-র-সা পুথিতে নিম্লিখিত প্রাক্ষিপ্ত কলিটি দৃটি
হর; ষ্থা,—

'কথনো যাহারে মুক্তি না দেখো সপনে। কলম তোলয়ে লোক সে জনার সনে॥' ১। 'চৌথের বালি' স্থলে 'সদা নয়নের বালি' প-র-সা। ১০। 'তোলাইয়া' প-র-সা। ১১। 'বি ছংথে' স্থলে 'বিভ ছথে ছথে মোর' প-র-সা। ১২। 'বিজ চণ্ডীদাসে' ইত্যাদি পংক্তি ছইটির স্থলে প-র-সা পুথির পাঠ বথা,—

> 'কাহারে কহিব সই মরমের কথা। বলরাম দাস বলে কি কৈল বিধাতা।'

ক, এ, ঘ, চ ও প-র-সা প্রিতে অতঃপর
'ভাহারে বুঝাই সই' ইত্যাদি পংক্তি-চতৃষ্টয় লিখিত
ছইলেও এই পদটি বর্তমান পলবের ৬২ সংখ্যক পদয়পে ইতিপ্রে উদ্ভ হওয়ায় এ য়লে সলিবেশিত ও
প্রিত হইল না।

তথা বাগ ৷১

ইহ গুরু-গঞ্জন বোল।
শুনইতে জিউ উতরোল।
কত সহ এই পাপ পরাণ।
বুকি কিয়ে হয় সমাধান।
মিছা • ছলে তোলে পরিবাদ।
কি কার করিলুঁ অপরাধ।
ননদী-নয়ন-জালে বিস।
তাহে কাল এ গাড়াপড় সী।
ভ্যানদাস কহে ধনি রাই।
পরিবাদে আর ভয় নাই ঃ৭১৮৮ ৬৯॥

পাঠা হর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৬০ সংখ্যক গদ। ২। 'সহ অ' স্থপে 'সহজে' চ। ৩। 'বিনা' খ।

প্রেম প্রতি আক্রেপ যথা।

পঠমঞ্জরী।১

कि वूटक माराग तथा। সে দেশে যাইব य एएटम ना क्षिन পাপ পিরিভের কথা। ধ্রা। সই কে বলে পিরিতি ভাল। হাসিতে হাসিতে পিরিভি করিয়া कान्मिए छन्म (शल ॥ कूलवजी टेहश কুলে দাঁড়াইয়াণ ষে ধনি পিরিতি করে। ভূষের আনল যেনঃ সাজাইয়া এমভিং পুড়িয়া মরে॥ राम विरनामिन এ হুখে হুখিনী প্রেমে ছল ছল আঁখি। চণ্ডীদাস কৰে যে গতি হইল **পরাণ-সংশর দেখি ॥৭২॥৮৭०॥**

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুণির ১০৬১ সংখ্যক পদ।
 ২। 'পিরিতির' ক, খ; 'পিরিতী' প-র-সা। ৩।
'কুলে দাঁড়াইয়া' ছলে 'কুলেতে দাঁড়াঞা' ক, চ;
'কুলে ডাড়াইয়া' ছ। ৪। 'লে জ্বন' প-র-সা।
 ৫। 'আপনি' প-র-সা।

বীরাপ।>

পিরিভি-মুগতি কভু না হেরিব এ ছুটি নয়ান-কোণে। পিরিতি বলিয়া নাম শুনইতে मुनिश त्रश्वि कारन ॥ সধি আর কি বলিব ভোরে। পিরিতি বলিয়া এ তিন্থ আখর এত হুখ দিল মোরে॥ ধ্রু॥ পিরিভি-আর্ডি কভুনা করিব শয়ন সপন[ু] মনে। বসতি তেজিয়া পিরিতি-নগরে রহিব গছন বনে॥ পিরিভি-প্রন পরশ লাগিয়া তেজিব নিকুঞ্চবাস। ছাড়িলে না ছাড়ে পিরিতি-বেয়াধি ভালে জানে চণ্ডাদাস ॥৭০॥৮৭১॥ পাঠান্তর

১। ইছাপ র-সা পুণির ১০৬২ ও প-র পুণির ১৪।৫২ সংখ্যক পদ। ২। 'এ তিন' ছলে 'দাকণ' প-র। ৩। 'লয়ন সপন' হলে 'লয়ন অপনে' ক, চ, প-র-সা; 'শ্রনে অপনে' খ। ৪। 'ছাড়িতে' প-র-সা। ৫। 'ভাল' ধ। **শ্রীপ্রীপদকল্পত**রু

তথা রাখ। >
পিরিতি স্থথের ২ সায়র ও দেখিয়া
নাহিতে নামিলাম ও তায় ।
নাহিয়া উঠিয়া ও ফিরিয়া চাহিতে
লাগিল তুখের বায় ॥
কেবা নিরমল প্রেমন্যরেবর
নিরমল তার জল ।
ক্রেধ্ব মক্কর ফিরে নিরস্কর

তুধের মকর ফিরে নিরন্তর
প্রাণ করে টলমল ॥ গ্রু ॥
শুরুজন-জালা জলের শিহালা
পড়দী-জীয়ল-মাছে।
কুল-পানিকল কাঁটায় দকল

সলিল বেড়িয়া⁶ আছে ॥
কলক-পানায়⁹ সদা লাগে গায়
ছানিয়া খাইলুঁ⁹ যদি ।
অন্তরে⁹ বাহিরে কুটু কুটু⁹ করে
স্থার তুখ দিল বিধি ॥
কাহে চণ্ডীদাস শুন বিনোদিনি⁹
স্থার তুখ তুটি ভাই।

হ্বধের লাগিয়া যে করে পিরিতি ছখ যায় ভার ঠাঞি ॥৭৪॥৮৭২॥

পাঠান্তর

১। देश প तः मा পूषित ১८७० छ भ त পूषित ১৪।১১० मः श्रुक भन । 'তला ताम' यहल 'मिष्कुण' भ त । २। 'त्रहमत्र' मा ल २०० भूषि। ०। 'मामत्र' क, ल, ष, ष, ठ, भ त-न मा। ८। 'प्र्विमाम' मा ल २०० भूषि। ६। 'उंठिंट्ड' भ त, मा ल, २०० भूषि। ६। 'उंठिंट्ड' भ त, मा ल, २०० भूषि। ७। 'स्थमत्र' भ त मा, भ त; 'स्कमन' मा ल २०० भूषि। १। 'मिहना' च, ठ; 'मिहाना' भ त, द्वं दिन भ ते मा, भ त त; 'स्क्वा' मा ल २०० भूषि। ৮। 'छाकित्रा' भ त मा, भ त त; 'स्क्वा' मा ल २०० भूषि। ४। 'माना छात्र' मा ल २०० भूषि। २। 'माना छात्र' मा मा ल २०० भूषि। २। 'माना छात्र' मा मा न २०० भूषि। २०। 'माना छात्र' मा मा र०० भूषि। २०। 'माना छात्र' मा मा न २०० भूषि। २०० भूष्य मा मा न भूष्य मा न भूष्य मा मा न भूष्य मा न भूष्य मा न भूष्य मा मा न भूष्य मा न भूष्य मा मा न भूष्य मा न भूष्य मा न भूष्य मा मा न भूष्य मा

'থাইলাম' পার। ১১। 'অক্তর' ক, পার-সা। ১২। 'কুটকুট' ক, পার-সা, সা-প ২০১ পুথি। ১৩। 'কংহ' ইত্যাদি স্থলে পার পুথির পাঠ মধা—'চণ্ডীদাদে বলে শুন গো স্থক্ষরি'।

হুহিনী।১ না কর চাতুরী শুন সহচরি সহজে দেহ উত্তর। কি জাতি মুরতি কামুর পিরিতি কোণাইং ভাহার ঘর॥ চলে কি বাহনে টিকে কোন স্থানে रेमग्रगंग (कवा मर्ष्यः। পারাপার করে কোন অস্ত্র ধরে (कमरन **अर**ास वरत्र ॥ পাইয়া সন্ধান হব সাবধান না লব ভাষার বা। বচনে তেজিব নয়নে শ্রবণে সোভরি তাহার পা॥ দেখি নৈরাকার স্থী ক্রে সার স্বরূপ কহিবে কে। অথুরাগ-ছুরী বৈদে মনোপরি জাতির বাহিরে সে। त्रक्रक महन মন তার বাহন ভাবগণ তার সঙ্গা । না দেয় ছাড়িয়া সূজন পাইলে পিরিতি অদুত রঙ্গী ।। वाक्नी-व्याप्तरम কতে চণ্ডাদানে

পাঠাস্তর ১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৬৪ সংখ্যক ^{পর।} ২। 'কোথারে' প-র-সা। ৩। 'পারাবার'^ক,

পর্যাছ পিরিতি-বাস ॥৭৫॥৮৭৩॥

ছাড়িতে কি কর সাশ।

বসতি করাছ

পিরিভি-নগরে

চ, প-র-সা। ৪। 'মান পরি' খ, च; 'মোনাপরি' প-র-সা। ৫। 'সঙ্গে' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'রজে' ক, চ, প-র-সা।

उथा ज्ञान ।>

পিরিতি বলিয়া এ তিন আঁখর
ভূবনে আনিল কে।
মধুর বলিয়া চানিয়া খাইলুঁং
তিভায় তিতিল দে ।

সই এ কথা কহিল । নহে।

হিয়ার ভিতর বসতি করিয়া কখন কি জানি কহে॥ গ্রাম পিয়ার পিরিতি প্রথম আরতি ভাহার নাহিক শেষ⁸।

পুন নিদারুণ শমন সমান
দয়ার নাহিক লেশ ॥
কপট পিরিতি আরতি বাঢ়াএগ
মিরিতি সাধিকুঁ কাকো ।

লোকে চরচায়ে কুলের থাঁখার

জগত ভরিল লাজে।। হইতে হইতে অধিক হইল

সহিতে সহিতে ম**ণু**ঁ। ক**হিতে** কহিতে তমু জর **জর**

পাগলী হইয়া গেলুঁ॥ এমতি পিরিতি না লানি এ° রাতি

পরিণামে কিবা হয়।
পিরিভি পরম হয় তুখনয় দ ভিজ চণ্ডীদানে কয় ॥৭৬॥৮৭৪॥

পঠিক্তির

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১০৬৫ সংখ্যক পদ।
 ং ছানিরা খাইলুঁ হলে ছোকিরাখাইতে সা-প
 ২০১ পুৰি। ৩। 'কছন' প-র-সা। ৪। 'ডাহার'

ইত্যাদি ছলে 'আনল অধিক শেব' च; 'পাওল অবধি শেব' সা-প ২০১ পূথি। ৫। 'বাঢ়াইলুঁ' সা-প ২০১ পূথি। ৬। 'মিরিতি সাধিলু' (সা-প ২০১ পূথি) ছলে 'মরণ অধিক' ক, ধ, ছ, চ, প-র সা। 'মরণ অধিক' পাঠে ভাল অর্থ হর না। । 'না জানি এ' ছলে 'না জানিয়া' সা-প ২০১ পূথি। ৮। 'পিরিতি' ইত্যাদি স্বলে সা-প ২০১ পূথির পাঠ যথা—'পিরিতি প্রাণ হয় স্থাছ্থমর'।

ভৰা হাগ ৷>

পিরিভি পিরিভি কি রীভি মুর্বিড क्रमस्य लागन रम। পিরিতি না ছাড়ে পরাণ ছাড়িলে পিরিতি গঢ়ল কে। পিরিভি বলিয়া া ভিন আঁখর না জানি আছিল কোথা। পিরিতি-কণ্টক হিয়ায় ফুটল পরাণ-পুতলী যথা। পিরিতি পিরিতি অনল चिछन क्लिग्रा॰ रान । নিভাইল নহে বিষম অনল হিয়ায় রহিল⁸ শেল॥ শুন বিনোদিনি **ह छोमाम** वांगी পিরিতি না কহে কথা। পিরিতি লাগিয়া পরাণ ছাড়িলে পিরিভি মিলয়ে তথা ॥৭৭॥৮৭৫॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৩৬৬ সংখ্যক পদ। ১। 'গড়ল' থ, প-র-সা। ৩। 'আালিয়া' চ, প-র-সা। ৪। 'রহল' ব,চ। श्रीव्राप्त ।>

ভুবন ছানিয়া যতন করিয়া আনিলং প্রেমের বীজ। রোপণ করিতে গাছ যে খইল সাধল**ু মরম নিজ**8 ॥ महे (अभ-७क (कन देश)। হাম অভাগিনী **जियम ब्र**जनी সিঁচিতে জনম গেল। ধ্ৰু। পিরিতি করিয়া স্থুখ যে পাইব छनिनुँ गशीव मूर्य। অমিয়া বলিয়া গরল কিনিয়া খাইলু আপন হুখে। স্বাচু লাগিত **অ**মিয়া হইত इहेल भ्रत्न करन। কাসুর পিরিভি শেষে ধেন রীতি कानिन्ँ भूरगुत रल ॥ সকলি পৃরিল যত মনে ছিল আর না চাহিব নেহাও। চণ্ডীদাস কৰে পরশন থিনে **क्रिया स्थित क्रिया अन्यान्य अन्यान्य अन्यान्य अन्यान्य अन्यान्य अन्यान्य अन्यान्य अन्यान्य अन्यान्य अन्यान्य** পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৬৭ সংখ্যক পদ। ২। 'আনিয়' ক,চ। ৩। 'সাধিল' খ। ৪। 'নীফ' ঘ,চ। ৫। 'লেখ' প-র-সা। ৬। 'লেখা' ক,খ,চ,প-র-সা।

তথা রাগ ।>

কানুর পিরিতি চন্দনের রীতি ঘসিতে সৌরভময়। ঘসিয়া আনিয়া হিয়ায় লইডে দহন বিশুণ হয়॥

সই কে বলে পিরিতি হীরাং। সোণায় জড়িয়া হিয়ায় করিতে তুখ উপজিল ফিরা। গ্রু॥ পরশ-পাথব বড়ই শীতল कश्रा मकल (लांदक। মুই অভাগিনী লাগিল আগুনি পাইলুঁ এতেক শোকে।। সব কুলবতী করয়ে পিরিডি এমত না হয় কাবে। ডাহিনী '-সদৃশী এ পাড়াপড়সী এমত লা খায় তারে 🛭 গুহের গৃহিণী আর ননদিনা বোলয়ে বচন যত। কহিলে কি যায় কি করি উপায় পরাণে সহিবে কভ। নান্ধ্রের মাঠে ্রামের হাটে বাশুলা সাহয়ে যথা। তাহার আদেশে বং চণ্ডাদাসে ত্বখ যে পাইবা কোথা ॥৭৯॥৮৭৭॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুশির ১৩ ৮৮ সংখ্যক পদ। ২। 'হিরা' অ, চ। ৩। 'লাগুক' ক, খ। ৪। 'ছ্থে' ক, চ। ৫। 'ডাইন' প-র-সা। ৬। 'ঠামে' থ। ৭। 'পাইব' ক; 'পাইবে' প-র-সা।

তথা রাগ।১

আপনা খাইলুঁ সোণা যে কিনিলুঁ
ভূষণে ভূষিব দৈহ।
সোণা যে নহিল পিতল ছইল
এমতি কামুর লেহ ।

সই মদন-সোণারে না চিনে সোনা। সোণা যে বলিয়া পিতল আনিয়া গড়ি দিল যে গহনা॥ গ্ৰু॥ ঝলকেঃ দেখিতে প্ৰতি গঙ্গলিতে হাসয়ে সকল লোকে। কাজ নাহইল* ধন সেং গেল শেল রহি গেল বুকে ! তেম্ভি এ গতি যেন মোর মতি ভাবিয়া দেখিলুঁ চিতে। পাথারে সাঁডারি খলের কথায় উঠিতে নারিশুঁ ভিতে॥ ভাগ্য নাহি জানে অভাগিয়া জনে ना शृत्रद्य मव माध। খাইতে নাহি ঘরে সাধ বহু করে বিহি করে অমুবাদ॥ চণ্ডীদাসে কহে বাশুলী-কুপায়ে আর নিবেদিব কায়। তড় ত পিরিতি নাহি পায় যদি পরাবে মরিয়া যায় ॥৮০॥৮৭৮॥

পঠিক্তির

১। ইহাপ-র-সাপুৰির ১০৬৯ সংখ্যক পদ।
২। 'ভূবিত'ক। ৩। 'নেহ'ব। ৪। 'নাক' প-র-সা। ৫। 'যে'ক, চ, প-র-সা। ৬। 'না ইইল' ফুলে 'নহিল' প-র-সা।

তথা সাগ ।১

কাতুর পিরিতি মরমে বেয়াধি

হইল এতেক দিনে।

মৈলে কি ছাড়িবে সজে না বাইবেং

কিনা ক্রিবং বিধানে ॥

महे कियरिष्ठ अगम काला। জাতি কুল শীল সকলি ডবিল हां फ़िल ना हारफ़ काना ॥ धा শ্য়নে স্বপনে না করিয়ে মনে ধরম গণিয়া থাকি। আসিয়া মদন (पग्न कपर्शन⁸ অন্তরে জালখে উকি॥ সরোবর মাঝে भीन (य शाक्त्य উঠে অগ্নি দেখিবারে। धौनत्र कांग शारु नहें जान ভুরিতে ঝাঁপয়ে তারে॥ কামুর পিরিতি কালের বসতি যাহার হিয়ায় পাকে। জারে সেই জনে খলের খলনে কলক ঘোষয়ে লোকে। চ গ্রীদাস-মন वारानी-हत्रन আদেশে রজক্-নারি। কিছু না ভাগিবে সহিতে সহিবেশ রহিবে একান্ত করি ॥৮১॥৮৭৯॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপ্থির ১৩৭০ সংখ্যক পদ।
২। 'না বাইবে' স্থলে 'নাছি বাইবে' প-র-সা।
৩। 'কিনা করিব' স্থলে 'না করিব কি' ক, খ।
৪। 'কদখন' খ। ৫। 'কদরে' খ, দ, প-র-সা।
৬। 'ভাছে' প-র-সা। ৭। 'কারে সেই কানে'
স্থলে 'বারে সেই কানে' ক; 'কারে সেই কানে' চ,
প-র-সা। ৮। 'এমুক' ক; 'রক্ক' চ। ১।
'সহিতে' ক, প-র-সা।

ভণা রাপ 1> কি হৈল করমে যাবত জনমে পিরিতি হইল কাল। অন্তরে গহিরে পশিয়া গহিল কেমতে হইবে ভাল। সই বল না উপায় মোরে। গঞ্জনা সহিতে নারি আর চিতে মরম কহিলুঁ তোরে 🛭 জ্বলিছে পরাণে ननमो-वहरन আপাদ মস্তক চুল। মাথায় করিয়া কলক্ষের ডালি ২। 'সরগা' ঘ। ৩। 'দেওণ' ক। পাথারে ভাসাব কুল।। ভাগিয়া যায় चूठरत्र पात्र না^২ বোলে⁹ এ ছার লোকে। **ठ छीमांग** कर इ এমতি হইলে মরিবে তাহারা শোকে ।৮২।৮৮ •।। পাঠান্তর ১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৭১ সংখ্যক পদ। २। 'ब' क। ७। 'वान' क; 'वानास' ह। वानगे ।> পিরিতি গরল আমরা সরলং লাগিল অমিগ্রাময়। বিছুরিলুঁ পতি মহানন্দ রীতি কলঙ্ক সভাই কয়॥ महे लिएव देवल ८३न मि । व्यस्तर क्रिन পরাণ পুড়িল এছন পিরিভি-রীভি ॥ এ ॥ খাল বানাইয়া মাটি খোদাইয়া উপরে দেয়ল° চাপ। আহার দিয়া শারয়ে বান্ধিয়া

এमन कत्राम शांभ ॥

নৌকাতে চড়াঞা দরিয়াতে লৈয়া ছাড়য়ে অগাধ জলে। ডুবু ডুবু করি ডুবিয়ানা মরি উঠিতে নারিয়ে কূলে॥ এমতি করিয়া পরাণে মারিয়া চলিল আপন ঘরে। চণ্ডীদাসে কয়. এমতি সে হয় তুমি সে ভাবহ তারে ॥৮০॥৮৮১॥ পাঠান্তর ১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৭২ সংখ্যক পদ।

ভথা রাপ ৷> পিরিভি করিলুঁ হুখের লাগিয়া শ্রাম বন্ধুয়ার সনে। পরিণামে এত তুখ হবে বল্যাং কোন অভাগিনী জানে। সই পিরিতি বিষম মানি। এত স্থাে এত ছুখ হবে বল্যা^৩ স্বপনে নাহিক জানি॥ গ্ৰা সে হেন কালিয়া নিঠুর ছইল कि भिन नांशिन (यन। **प्रज्ञान-व्याटन** य जन कित्ररप्र সে এত নিঠুর কেন। বল না বল না কি বৃদ্ধি করিব ভাবনা বিষম হৈল। হিয়া দগদঙ্গি পরাণ পোড়নি कि पिटन बहेरव जान । **ठ** छीमारम कर इ **च्छन विरना**षिम

মনে না ভাবিহ আন।

ভাগ সে ভোগার প্রাণ ॥৮৪॥৮৮২॥

मद्रवम धन

ভূমি সে খ্যামের

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৭০ সংখ্যক পদ। a-01 'त्रव वना।' ऋरम 'त इहेरव' श-ब-मा। ৪। 'বল না' ইত্যাদি স্থলে 'বল না কি বুদ্ধি করিব এখন' ক : 'বল না কি বুদ্ধি করিব সজনি' প-র-সা।

नेवान ।

যতনে আনিয়া বিবিধ কুমুম গাঁথিলুঁ পিরিতি-মালা। পরিমল গেল শীতল নহিল जामार्ड क्लिन गना॥ जरे माली (कन (इन रेड्न । বিষ মিশাইয়া মালায় করিয়া হিয়ার মাঝারেং দিল ॥ গ্রা উঠিল যে হিয়া कालाग्र कलिया আপাদ মন্তক চুল। না শুনি না দেখি কি কহিব° সখি আগুন হইল ফুল। हम्मन लागल ফুলের উপর সংযোগ হইল ভাল। পোডাইল হিয়া ছই এক হৈয়া পাঁজর ধসিয়া গেল। मकलि धमिल ধসিতে ধসিতে निर्दा ल॰ देश्ल (पर। কহিলে না হয় চণ্ডাদাসে কর ঐছন কামুর লেহে ॥৮৫॥৮৮৩॥ পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুৰির ১৩৭৪ সংখ্যক পদ। २। 'स्त्रितंत्र मांबादित' ऋला 'ब्यामात्र गलांत्र' श-तः मा । ৩। 'করিব' ক। ৪। 'নির্দ্মণ' ক, খ, চ, भ-त-मा । (ा 'तिह' पा

তথা বাগ ৷১

ভূখের লাগিয়া রন্ধন করিলু জালাতে জ্লিলং দে। স্বাতুণ নহিল জাতি সে গেল ব্যপ্তন খাইবে কে ॥ मरे (ভাজন विश्वापः देशन । বামুর পিরিভি হেন রসবভী স্বাদ প্র দুরে গেল। এ। পিরিতি রসের নাগর দেখিয়া আরতি বাঢালুঁ তাতে। प्तिवन बन्नी তবে সে সজনি অনল উঠিল চিতে 🛚 অধিক উঠিল হ্যর্রেড ভ্যর্রেড পিরিতে ড্বিল দেহ। একত্র করিয়া नित्र स्था पिया ঐছন কামুর লেহণ। হিয়ায় সহয় চণ্ডাদাস কয় मकलि भन्नल (ेश्ल । কিছু কিছু সুধা বিষ-গুণ আধা চিরঞ্জীবী দেহ কৈল ॥৮৬॥৮৮৪॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-মাপ্রির ১৩৭৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ভরিল'প-র-সা।৩। 'বাদ'চ, প-র-সা। 8। 'विचाइ' च, घ। १। 'वाइ' च, ठ। ७। 'मांगब' चा १। 'स्वर' च। ৮। 'हिवादर' च। २। 'विषक्षणा' क, घ ; 'विषक्षम' भ-व-मा।

यहरे ।>

পাপ পরাণে কত সহিবেক জ্বালা। শিশুকালে মরি গেলে হইত যেং ভালা॥ এ জ্বালা জঞ্চাল সই তবে পরিহরি। ছেদন করিয়া দেহ পিরিভের ভুরি।

তেমতি নহিল যার এমতি বেভার।
কলক্ষ-কলসী লৈয়া ভাসিব পাথার।
চণ্ডাদাসে কহে ইহা বাশ্তলী-ক্রপায়।
পিরিতি লাগিয়া কেন ভাসিবে
দরিয়ায়॥৮৭॥৮৮৫॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৭৬ সংখ্যক পদ। ২। 'ছইত যে' স্থো তিবে হৈত'ঘ; 'হইত সে' প-র-সা।

ভথা রাগ ৷১

ধরম করম গেল গুরু-গরবিত।
অবশ করিল কালা কামুর পিরিত ।
অবশ করিল কালা কামুর পিরিত ।
অবংশ করিল কালা কামুর পিরিত ।
কে না করয়ে প্রেম লামি কলকী ॥
বাহির হইতে নারি লোক চরচাতে।
কেন মন করে বিষ খাইয়া মরিতে ॥
একে নারী কুলবতী অবলা বলে লোকে।
কামু-পরিবাদ হৈল পুড়া। মরি শোকে ॥
খাইতে নারিয়ে কিছু রহিতে নারি ঘরে।
ভাবিতে ভাবিতে ব্যাধি সামাইলং অন্তরে।
জারিল সে তমু মন ব্যাপিল শরীর।
চন্তীদাস বলে ভাল হইবে

স্থার ॥৮৮॥৮৮৬॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৭৭ সংখ্যক পদ। ২। 'কী' চ। ৩। 'পুড়ে' ক। ৪। 'হইল' প-র-সা। ধাননী।১ স্থাধের লাগিয়া এ মর বান্ধিলুঁ আনলে পুড়িয়া গেল।

অমিয়া-সাগরে^২ সিনান করিতে সকলি° গরল ভেল ॥ স্থি হে° কি মোর করমেণ লেখি। শীতল বলিয়া ও চাঁদণ সেবি**লুঁ**ণ রবিরদ কিরণ দেখি॥ ধ্রু ॥

নিচল ছাড়িয়া উচলে উঠিতে পড়িলুঁ অগাধ জলে।

লছিমী শ্ চাহিতে দারিক্তা বাঢ়ল শ মাণিক হারালুঁ হেলে॥

পিয়াস লাগিয়া জলদ সেবিসুঁ বজ্কর পাড়িয়া গেল^{১২}। জ্ঞানদাস^{১০} ক**হে কামুর পিরি**ডি^{১০}

পাঠাম্বর

মর্ণ-অধিক শেল> ছাচ্চাচ্চণা

১। ইহা প-র-সা পুলির ২০ং, ২৮১ ও ১০৭৮

এবং প-র পুলির ১৪।৮১ সংখ্যক পদ। ২। 'হিলোলে'

প-র। ৩। 'শ্রুষ্ট' প-র। ৪। 'স্থি ছে' বলে

'স্ট' প-র-সা, প-র। ৫। 'কর্ম' প-র। ৬। 'ও

চাল' হলে 'চাল্ল মে' প-র-সা। ৭। 'সেবিতে'

প-র। ৮। 'ভাহর' প-র-সা, প-র। ৯। 'উর্টিল্'

খ, চ, প-র। 'নিচন' ইত্যাদি হলে—'উচল বলিরা

অচলে চড়িতে' প-র-সা। ১০। 'লছ্মি' প-র-সা;

পিন্র। ১২। 'বজ্বা ইত্যাদি হলে 'বজ্বা পড়িরা

গেল' ক, খ, ঘ, চ; 'পাইল্' (পাঠান্তর- –'পীড়েল্')

'বজ্ব তালে' প-র-সা। :৩। 'চঞ্জীদানে' প-র।

১৪। 'কাল্লর পিরিতি' হলে 'পিরিতি ক্রিরা'

প-র-সা। ১৫। 'মরণ' ইত্যাদি হলে 'পাছে ক্র

জন্তাণে' প-র-সা; 'হলুবের রহিল শেল' প-র।

সিলুড়া।১

এ দেশে না রহিবং সই দূরদেশে যাব।
এ পাপ পিরিতের কথা শুনিতে না পাব॥
না দেখিব নয়নে পিরিতি করে যে।
এমতি বিষম বেথা জানি দিবে সে॥
পিরিতি আঁখর তিন না দেখি নয়ানে।
যে কহে ভাহার আর না দেখি ব্য়ানে॥
পিরিতি বিষম দায়ে ঠেকিয়াছি আমি।
ভিজ চণ্ডীদাসে কহে ইহার শুরু

তুমি ॥৯০॥৮৮৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৭৯ সংখ্যক পদ। ২। 'রব' ক, প-র-সা। ৩। 'ব্যথা' ক, চ; 'ক্থা'থ। ৪। 'আংলি' ক, প-র-সা।

ততঃ প্রকারান্তরং।

वाला धामनी ।> পিরিতি বলিয়া এ তিন আঁখর সিরজিল কোন ধাতা। অবধি জানিতে সোধাই কাহাতে ঘুচাই মনের বেথা। পিরিভি-মুর্রভি পিরিভি-রতন যার চিতে উপজিল। সে ধনি কতেক कन्य कन्य ভাগ্য করিয়াছিল ॥ সই পিরিভি না জানে যারা। এ তিন ভুবনে जनाम जनाम কি সুখ জানয়ে তারা ॥ ধ্রু ॥ যে জন যা বিনে না রহে পরাণে त्म (व देशन कुलनानी। ভবে কেনে তারে कनिकनी वटन গোকুল-নগরে কেবা কি না করে

অবুধ মূড় সেও লোকে।

চণ্ডীদাসে ভণে মরুক বেং জনে
পর-চরচায় থাকে ১৯১৮৮৯॥

পাঠাৰৰ

১। ইহাপ-র-সাপুধির ১৩৮০ সংখ্যক পদ। 'বালা ধাননী' স্থলে 'ধাননী' ক, খ, প-র-সা। ২। 'হুধাই' ক, খ, প-র-সা। ৩। 'মুচ সে' স্থলে 'মুচ্সি' ঘ; 'মুড্সি' চ।

এবাগ 13

এই মোর মনে হয় রাতি দিনে ইহা বহি নাহি আর। পিরিভি বলিয়া এ তিন আঁখর এ তিন ভুবন-সার॥ বিহি একচিতে ভাবিতে ভাবিতে नित्रमांग देकल भिरा মন্তন করিতে রুসের সায়র তাতে উপজিল রি॥ অমিয়া হইল পুন যে মথিয়া তাহে ভিয়াইল° ডি। এ ভিন আঁখর সকল স্থাবের তুলনা দিব যে কি॰ ॥ পশিল যতনে যাহার মরমে এ তিন আঁখর সার। সরম ভরম ধরম করম কিবা জাতি কুল তার ॥ এ হেন পিরিভি না জানি কি রীতি পরিণামে কিবা হয়। বড়ই বিষম পিরিভি-বন্ধন विक हशीमारम क्या । २२॥৮३०॥

অবুধ গোকুলবাসী ॥

পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৮১ সংখ্যক পদ। ২। 'পী' ঘ,চ। ৩। 'ভিঞাইণ' খ,চ। ৪। 'কী' চ। ৫। 'এ ছেন' স্থলে 'এই না' ঘ। 'চণ্ডীদানে কংহ' ইন্ড্যাদি ছলে 'কছে নরছরি শুন্ স্থনাম্বরি' প-র-সা (পাঠান্তর)। ১। 'স্থের' প-র-সা (পাঠান্তর)। ১০। 'মরম' প-র-সা (পাঠান্তর)। ১১। 'রসিক নছিলে' ছলে 'মর্মে নছিল' প-র-সা (পাঠান্তর)।

তথা রাগ।>

একটি কমল পিরিভি বলিয়া রদের সায়র মাঝে। প্রেম-পরিমল^৩ -লুবধ ভ্রমর ধায়ল আপন কাজে 🛭 কমল-মাধুরী ভ্ৰমর জানয়ে তেঞি সে তাহারি বশ। রসিক জানয়ে রদের চাতুবীৎ আনে কহে অপ্যশ। সই এ কথা বুঝিনে কে। যে জন জানয়ে সে যদি না কহে क्मरन धतिव° रम ॥ क्ष ॥ ধরম করম লোক চরচাতে এ কথা বুঝিতে নারে। এ তিন আঁখর যাহার মরুমে সেই সে বুঝিতে পারে চণ্ডাদাসে কৰে रधन ल खुन्मविष् পিরিতি রসের» সার। পিরিতি-রসের>• রসিক নহিলে১১ কি ছার পরাণ ভার ॥১ং॥৮৯১॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ২০৬, ৩৬১ ও ১৩৮২ সংখ্যক পদ। ২। 'সাগর' প-র-সা (পাঠাস্তর)। ৩। 'পরিমলে' প-র-সা (পাঠাস্তর)। ৪। 'তাহার' ক, শ, দ, চ। ৫। 'মাধ্রা' প-র-সা। ৬। 'লোকে' প-র-সা। ৭। 'ধরিবে' ক, শ, চ, প-র-সা। ৮।

তথা রাগ ৷১

স্থথের পিরিতি আনন্দ যে রীতিং দেখিতে স্থন্দর হয়। মধুর পীযুবে মদন সহিতে মাখিলে (भ त्रमसूर[®]॥ সই কিবা কারিগর সে। করি অমুরাগে এমত সংযোগে কেমতে গড়িল দে॥ ধ্রু॥ সাগর মাঝারে থাকায়ে অমিয়া (कगरन পाইरव (मह । ম্দন মাদন পাইল কোন স্থান রসে নিরমিল দেহ ।। বিন্ধিলেক খুণে তিন তিন গুণে পাঁজর ধসিয়া গেল। ষ্ভন করিয়া অবলা বধিতে আনিলেশ এমতি শেল। এমন অকাজ করে কোন রাজ বুঝিতে নারিলুঁ মোরা। কুলের ধরমে তেঞ্জিলুঁ মরমে এমতি হউক ভারা॥ মিছা গালি হয় চণ্ডাদাসে কয় ना ८०४ करनक टलाटक। আপনা আপনি বোলহ্য- কাহিনী व्यापन मरनद श्रूर्थ ॥ २८॥ ৮ ৯२॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৮৩ সংখ্যক পদ।

২। 'যে রাতি' স্থলে 'কিরিতি' খ, ঘ। ৩। 'সে
রসময়' স্থলে সরসময়' প-র-সা। ৪। 'সঞ্জোগ' ক।

৫। 'থাকিয়া' ক, খ, প-র-সা। ৬ 'সে' ক, প-র-সা।

৭। 'দে' ক, প-র-সা। ৮। 'আনিল' ক। ৯।
'এমন অকাজ' ইত্যাদি কলিটি প-র-সা।

নাই। ১০। 'বলহ' ক, খ, প-র-সা।

তথা রাপ ৷১

সই পিরিতি আঁখর তিন। জনম অবধি ভাবি নিরবধি না জানিয়ে রাতি দিন ॥ প্রা পিরিভি পিরিভি স্ব জনা ক্ৰে পিরিতি কেমন রাত। রদের স্বরূপ পিরি৷ত-মুর্রাত কেবা করে পরতাত॥ পিরিতি-মন্তর জপে যেই জন নাহিক তাহার মূল। বন্ধুর পিরিতে আপনা বেচিলুঁং নিছি° দিলুঁ জাতি কুল। দে রূপ-সায়রে নয়ন ডুবিল⁸ সে গুণে বান্ধল হিয়া। সে সব চরিতে ছুবিল বে চিতে* নিবারিব কি বা° দিয়া ॥ খাইতে খাইছি শুইতে শুইছি আহিতে আহিয়েদ ঘরে। চণ্ডীদাস কছে ইঙ্গিত পাইলে অনল দিশ্বর ঘারে শার্মাচরত॥ পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৩৮৪ পদ। ২। 'নিছিলু' প-র-সা। ৩। 'বিচি' প-র-সা। ৪। 'ভ্ৰল' ধ। ৫। 'বাহিল' ক। ৬। 'ৰে চিতে' স্থলে 'সে মন' ধ। ৭। 'কি না' ক, ধ। ৮। 'আছি আপন' থ; 'আহিয়ে স্থাপন' ধ। ১। 'দিয়ে' ক, থ, চ, প-র-সা। ১০। 'দর বারে' স্থলে 'ছয়ারে' ক, চ, প-র-সা।

थररे ।>

এই ভয় উঠে মনে এই ভয় উঠে।
না জানি কামুর প্রেম তিলে জানিং টুটে ।
গড়ন ভাঙ্গিতে সই আছে কত খল ।
ভাঙ্গিয়া গড়িতে পারে সে বড় বিরল ।
যথা তথা যাই আমি যত হুখ পাই।
চাঁদমুখেন মধুর হাসি তিলেক জুড়াই।
সে হেন বন্ধুরে মোর যে জন ভাঙ্গায়।
হাম নারা অবলার বধ লাগে তায়।
চণ্ডাদাস কহে রাই ভাবিছ অনেক।
ভোঁমার পারিতি বিনে না জিয়ে
ভিলেক ॥৯৬॥৮৯৪॥

পাঠা গ্র

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩০৫ সংখ্যক পদ।
২। 'জান' প-র-সা। ৩। 'ছুটে' ঘ। ৪।
'গঢ়ন' থ, ঘ। ৫। 'জন' প-র-সা। ৬। 'গঢ়িতে' থ, ঘ। ৭। 'হুজন' প-র-সা। ৮। 'চাদ মুখে' ক, প-র-সা। ৯। 'দে' क; 'দে না' ঘ, চ, প-র-সা।

ने बाब 15

শ্যানের পিরিতি মুর্ভি^২ হ**ইলে**তবে কি পরাণে ফলে।
পরাণে পিরিতে⁵ সমান করিলে
কে তারে জিয়স্ত বলে।

যদি হাম শ্যাম বন্ধু লাগি পাড় তবে সে এ ছুখ টুটে। আন মত শুনি মনের আগুনি यन दन वन दक उटि ॥ পরাণ সমানং পিরিভি-রভন্দ क्षिन् हापग्र-जूरन । অধিক>> হইল পিরিভি-রভন>• পরাণ উঠিল চুলেম্ং ॥ জাতি কুল বলি দিলুঁ তিলাঞ্চল আর সতী-চরচাতে। তমু ধন জন>৩ জীবন যৌবন নিছিলুঁ কালা-পিরিতে ॥ হিয়ায় রাখিব কারে না কহিব১৪ भवारम भवारम[े] कहा। कि कानि कि त्थरन के कि मिया कि देकरल মরিলে " না বার ছাড়া॥ **िटलटक** भित्रा यिन ना प्रिश्विद्य শয়নে স্বপনে ১৯ বর্জ। কহে চণ্ডীদাস मत्राम त्रव्भरः পিরিতি অমিরা-সিকু ॥৯৭॥৮৯৫॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৮৬ ও প-র পুথির ১৪।৫৫ সংখ্যক পদ। ২: 'কিরিভি' প-র; 'মিরিভি' সা-প ২০১ পুথি। ৩। 'পরাণ' ক, চ, প-র-সা; 'গরণ' প-র। ৪। 'পরাণে শিরিভে' হলে 'পরাণ পিরিভি' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'বিদি' ইত্যাদি পংক্তি হলে প-র পুথিতে 'শ্রাম-ধনের' ইত্যাদি কলিটি ঘারাই এই পদ আরম্ভ করা হই-রাছে। ৩। 'আনমত' হলে 'অনুপার' প-র। ৭। 'রতন' প-র। ৮। 'পরশে' প-র। ৯। 'কুথিলু' ইত্যাদি হলে 'খ্রিকু হৃদরে তুলে' ক। ১০। 'পরশ' প-র। ১১। 'কুলে' প-র।

২০। 'মন ধন' প্র-র। ১৪। 'হিরার' ইত্যাদি স্থলে প্র পূথির পাঠ ষ্থা—'হিরার হিরার লাগিরা থাকিব'। ১৫। 'পরাণ' প্র-র। ১৬। 'কি থেণে' স্থলে 'কি থানে' থ, ঘ, চ; 'কি ক্ষণে' ক। ১৭। 'অস্তরে' প্র। ১৮। 'তিলেক' ক, থ, ঘ, চ। ১৯। 'শ্রনে স্থপনে' স্থলে 'স্পনে সে শ্রাম' প্র। ২০। 'হানিল' প্র।

তথা রাগ।১ কান্যু-পরিবাদ মনে ছিল সাধ সফল করিল বিধি। ছাড়িতে নারিব কুজন-বচনে সে হেন গুণের নিধি ॥ বন্ধুর পিরিতি শেলের গ পহিলে সহিলুঁ বুকে। বেথাটি বাঢ়িল দেখিতে দেখিতে এ ছখ কহিব কাকে॥ করে মিরন্তর• হিয়া দগদগ যারে না দেখিলে মরি। কি শেল সম্ভাইল হিয়ার ভিতরে वल ना कि वृष्कि कति॥ অস্থ্য বেথা নয় বোধে সোধে রয় হিয়ার মাঝারে থুইয়া⁸। কোন কুলবভী কুল মজাইয়া কেমনে বৈয়াছে সইয়া ॥ অবলা অখল क्षप्र भवन क्षात्र जूलिया (शन् । পরের কথায় পিরিভি করিয়া अनम कान्द्रिश मन् ॥ मकल कृत्ल ভ্ৰমরা বুলে কি তার আপনা পর। **हशीमांग** करह কামুর পিরিভি

কেবল ছবের ধর ১৯৮১৮৯৬।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১০৮৭ সংখ্যক পদ।
২। 'সহিলে' ক; 'সহিল' চ, প-র-সা। ৩।
'হিয়া' ইত্যাদি কলিট ক, থ, ব, চ ও প-র-সা
পুথিতে নাই; সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি হইতে
উদ্ভ হইল। ৪। 'খুইঞা' ক, থ; 'থুইয়ে'
প-র-সা। ৫। 'শুইঞা' ক, থ; 'সহিয়া' ব;
'শেঞা' চ; 'সইয়ে' প-র-সা। ৬। 'অবলা'
ইত্যাদি কলিট ক, খ, ব, চ ও প-র-সা পুথিতে
নাই; সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি হইতে উদ্ভ হইল।
৭। 'কে' ব। ৮। 'আপন' চ, প-র-সা।

এীরাগ 1>

না বোল না বোল সখি না বোল এমনে।
পরাণ বাদ্ধিয়া আছি সে বন্ধুর সনে ॥
প্রাণ বাদ্ধিয়া আছি সে বন্ধুর সনে ॥
প্রাণ ক্রল শীল এ লোক-লাজ।
কি গুরু-পৌরব গৃহের কাজ ॥
তেজিয়া সব লেগা পিরিতি কৈলুঁ।
যে ইহার বিরতি তারে জিয়ন্তে মেলুঁ ।
যে চিতে দড়াঞাছি সেই সে হয়।
খেপিল বাণ যেন রাখিল নয়॥
ঠেকিলুঁ প্রেমফানে সকলি নাল।
ভালে সে জ্ঞানদাস না করে আলা॥

1221661

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুধির ১৩৮৮ সংখ্যক পদ।
২। 'ধে' ইত্যাদি পংক্তির ক্লে 'বেই হুরে
বিরতি তারে তেজিয়া মৈলুঁ'ক; 'বে হুয়ে বিরতি
তারে জিয়ুস্তে মলুঁ। প-র-সা। ৩। 'দড়াইয়া'
খ; 'দঢ়ায়াছি' চ।

টাকা

e—৬। "ভেলিয়া" ইত্যাদি। অক্ত সকল মেহ পরিভ্যাগ করিয়া (গ্রীকৃষ্ণের সহিত)প্রেম করিলাম; বে (শ্রীকৃষ্ণ) ইহাতে বিরতি অর্থাৎ বিভূষ্ণ, জীবিতাবস্থায় তাহার সহিত সন্মিলিত হই-লাম! (শ্রীরাধার উক্তির তাৎপর্য্য এই বে, এ ভাবে শ্রীকৃষ্ণের সহিত সন্মিলন অপেকা দেহ পরিত্যাগ করা শ্রেষ ছিল)।

৭-৮। "যে" ইত্যাদি। চিত্তে বে (ভাব)
দৃঢ় করিয়াছি, তাহাই কার্য্যে প্রকাশ পাইবে;
যেমন (ধয় হইতে) নিক্ষিপ্ত বাণ রক্ষা করিবার
বোগ্য নহে! (শ্রীরাধার উক্তির তাৎপর্য্য এই বে,
যেমন মুক্ত শরকে ফিরাইয়া আনা বায় মা, তেমন
প্রেম-প্রবণ হাদয়কেও নিরক্ত করা অসম্ভব)।

১০। "ভাবে" ইত্যাদি। আচানদাস বে আশা করে না,—(তাহা) ভালই (বটে)। (আশা করিলেই আশার অপরিকৃত্তি-জনিত নানা ছঃখ নানা সময়ে সহ্ করিতে ১য়; সে জন্ত হচ্ছুর জ্ঞানদাস আশাকে ক্লমে পোষণ করেন না)। ভূলনা কক্লন,—

"ন তথা সুধয়তাঙ্গ-সংলগ্ধা বন্ধবণিনী।

> যথা সুধয়তি স্বাস্তমিশু-শীতা নিরাশতা॥"

— বোগবাশিষ্ঠ, ৪০.৭৪।

यहरें।)

কামু সে জাবন জাতি প্রাণ-ধন

এ সূটি আঁথির তারা।
পরাণ-অধিক হিয়ার পুতলী
নিমিপে নিমিখেং হারা॥
তোরা কুলবভী ভজ নিজ পতি
যার যেবা মনে লয়।
ভাবিয়া দেখিলুঁ আমবলু বিমু
আর কেহো মোর নয়॥
কি আর বুঝাও কুলের ধরমণ
মন স্বভন্তর নয়।

কুলবভী হৈয়। রসের পরাণ আলার কার° জনি° হয় ॥ যে মোর করমে। লিখন আছিল
বিহি ঘটায়ল মোরে।
ভোমরা কুলবতা দেখিলে কুমতিদ
কুল লৈয়া থাক ঘরে।
ভারু ছুরুজন বলু কুবচন
না যাব সে লোক-পাড়া।
ভারনদাস কয় কামুর পিরিতি
ভাতি কুল শীল ছাড়া॥১০০॥৮৯৮॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২১১, ১০৮৯ ও প-র পুথির ১৪।১০৯ সংখ্যক পদ। ২। 'বাসিরে' প-র-সা; 'নিমিথ' প-র। ৩। 'কুলের ধরম' হুলে 'ধরম বিচার' প-র-সা। ৪। 'আপনার' প-র-সা। ৬। 'আনি' ক। ৭। 'কপালে' প-র-সা। ৮। 'দেখিলে কুমতি' হুলে 'দেখিলে মুক্তি' ক; 'দেখিলে মুক্তি' প-র-সা; 'দেখিলে মুক্তি' ক, প-র। ৯। অতঃপর প-র-সা পুথিতে নিম্নিথিত অতিরক্ত কলিটি দৃষ্ট হয়; যথা,—

'কাছ বিনে প্রাণ নাহি জানে আন না শুনি আনের কথা। কাছ বিনে সধ যে সুথ বৈত্র শুনিতে শ্রবণে বেধা॥'

অথ অমুরাগঃ প্রকারান্তরং যথা। ভত্ত শ্রীগৌরচন্দ্র।

विज्ञान ।>

গোরা-রূপ লাগিল নয়নে।
কিবা নিশি কিবা দিশি শয়নে স্থপনে ।
যে দিগে ফিরাই আঁথিং সেই দিগে দেখি।
পিছলিতে করি সাধি না পিছলে আঁখি।

কি খেণে দেখিলাম গোরা কি না মোর হৈল।
নিরবধি গোরা-রূপ মরমে লাগিল ॥
চিত নিবারিতে চাহি নহে নিবারণ।
বাস্ত্যোধে বলে গোরা রমণী-মোহন॥
॥১০১॥৮৯৯॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১০৯ °, ১০৯৮ ও প-র
পুথির ১৪: ৭ সংখ্যক পদ। ২। 'ফিরাই আঁথি'
স্থলে 'পড়য়ে দিঠি' প-র। ৩। 'করি সাধ' হলে
'করে মন' প-র-সা; 'করে সাধ' প-র। ৪। 'নয়নে'ক। ৫। 'পশিল' প-র।

कुड़ी ।>

मूि यि वर्ला र পাসব্রো কান° মনে সে না লয় আন। তিল-আধ তার মুখ না হেরিলে' নিঝরে ঝরে নয়ান ॥ পরাণের সই लन लन लन কামুর পিরিতি কাচ্চে। ভেল পরাধীন তমু মন ধন কি আর করিবে লাজে ॥ এ ॥ পরাণ উছলে মানের নামে সে क्षेत्र रम् व्यक्ति। यप्ति. श्वित्छ ना চাহোঁ। কামুর বচন कारण एम यूत्रली वारक । যদি, চলিতে না চাহোঁ > কানাইর > পাশে **চর**ণে থির না বান্ধে। গোবিন্দ দাস কহে কামুর লাগিয়া **ভালে সে পরাণ কাম্মে ॥>०२॥৯००॥**

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৭ ও ১৩৯১ এবং প-র পুথির ১৪।৮ সংখ্যক পদ। ২। 'বোলো' ক্, ৬; 'বলঙ' প-র-সা। ৩। 'পাসরোঁ কান' হলে 'পাসরো কান' ব; 'পাসরোঁ কাহ্ন' চ, প-র-সা। ৪। 'না হেরিলে' হলে 'নাহি দেখি' ক: 'না দেখিয়া' ব। ৫। 'নিঝরে ঝরে' হলে 'অর্বে ঝুরে' প-র-সা। ৬। 'বয়ান' ধ। ৭। 'জীবন' ক, ব, চ। ৮। 'এছন' ইত্যাদি হলে 'ফীছন হরে যে কাজে'। ৯-১০। 'চাহো' ব, প-র-সা। ১১। 'কাহ্রর' ক, ব, ব, ব, চ; 'কাহ্রারের' প-র।

টীকা

৯—১•। "মানের" ইত্যাদি। (মান করা দুরে ধাকুক), মানের নামেও আমার প্রাণ অভির হয়,—এইক্লপ আমার ভ্রবস্থা হইয়াছে!

धाननी ।>

শুনইতে অমুখণ यह नव खनगगर প্রবণ নয়ন জৈ গেলাও। দরশনে ভাকর এ হেন⁸ লোর ঝর नयन अवग नम (छला ॥ হরি হরি কি ভেল দারুণ কাঞ্চ। না জানিয়ে কো বিহি বিঘন বাঢ়াওল কাসু-সমাগম মাঝ ॥ গ্রু ॥ যা সঞে কেলি-কলা-রস-লালসে लाथ मरनात्रथ (कल। তাকর পাণি-পরশে তমু পরবশ তবহি অচেতন ভেল॥ হিয়া ঘন-সার হার নাহি পহিরলুঁ यांक भत्रभ-त्रम-१ आत्म। তাক বিছেদেদ জীউ নাহি নিকসয়ে কহতহিঁ > গোবিন্দদাসে ॥১০৩॥৯০১॥ পাঠান্তর

)। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৮ ও ১৩৯২ এবং প-র পুথির ১৪।১১ সংখ্যক পদ। ২। 'নব ৩৭'

প-র-সা। ৩। 'গেল' ক, প-র-সা। ৪।
'ঐছে' প-র-সা। ৫। 'ভেল' ক, প-র-সা। ৬। 'হরি হরি' ইত্যাদি ধ্রুব-কলিটির স্থলে সা-প ২০১ পুণির পাঠ, যধা—

'ধৰি ছবি কো বিছি বিঘিন বাঢ়াওল
কাত্ন-সমাগম মাঝে।
জীবন যৌবন ভেল পরাধিন
কি আর করব লাজে॥'
। 'ত্রখ'ল, চ, প-র-সা, পর । ৮। 'বিচ্ছেদে'
ক, চ, প-র-সা, প-র । ১। 'কি কহব' প-র-সা;
'কি করব' প-র ।

টীকা

১-- ৪। শভনইতে" ইত্যাদি। সর্বাদা বাধার অপুর্ব গুল-গ্রাম গুনিতে গুনিতে (আমার) কর্ণ নয়ন হটল অর্থাৎ নয়নের কার্য্য কর্ণই সম্পন্ধ করিল,—(অর্থাৎ অফ্রাগোৎপত্তির জক্ত দর্শনের আর অপেক্ষা রহিল না)—গ্রাহার সাক্ষাৎ দর্শনে (প্রেমানন্দ হেডু) নয়নে এরূপ অক্ষাবর্ধণ হইতে লাগিল (বে), নয়ন কর্ণের ক্যার (দৃষ্টি-শক্তি-হান) হইল!

कारमाम ।>

নব নব গুণগণ শ্রবণ-রসায়ন नग्रन्थ - त्रमाग्रन व्यक्त । क्षय द्रमायन রভস্ত সম্ভাষণ পরশ-রসায়ন সম। এ স্থি রসময় অস্তর যার। গুণগণ-সাগর খ্যাম স্থনাগর (क) धनि विष्कृतस्य भात ॥ प्र ॥ গৃহপতি-তরজন গুরুত্বন-গঞ্জন কুলবভি-কুবচন ভাষ। मत्रह भून (महेहे যত পরমাদ মধুর-মুরলি-আপোনাস 🛭

কিয়ে করব কুল দিবস-দীপ ভূল প্রেম-প্রনে ঘন ডোল । গোবিন্দ দাস যতন করি রাখত লাজক জালে আগোর ॥১০৪॥৯০২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৭, ১৩৯০ ও প-র পুথির ১৪।১২ সংখ্যক পদ। ২। 'পরশ' প-র-সা। ৩। 'সরস' প-র। ৪। 'রভস' ইত্যাদি পংক্তি ছুইটির ছুলে প-র-সা পুথির পাঠ, যথা—

'শুন স্থি রসময় খ্রাম স্থনাগর
কোধনী বিছর অপাল।'

(। 'আগর' ক, চ। ৬। 'পুন মেটই' স্থলে
'পুন মেটব' ক; 'পুন মেটরে' চ; 'প্ছ মিট্রে' প্র-র-সা। ৭। 'দোল' প্র-র-সা, প্র।

কৌ স্থানিগী ৷১

অরুণ-উদয়-কালে ব্ৰজ-শিশু আসি মিলে বিপিনেং পয়াণ প্রাণনাথং। এক দিঠি গুরুজনে আর দিঠি পথ পানে চাহিয়ে পরাণ করি হাপঃ সজনি না জানি কি হয়ে° প্রেম লাগি। দারুণ পিরিভি পর-বোধ না মানই কত চিতে নিবারিব আগি ॥ প্রশ ॥ তাহে নব-যৌবনি একে কুল-কামিনি আর তাহে পরের অধীন। রহিতে না পারি খরে পিরিভি বিষম-শরে ভাবিতে ভাবিতে ওমু ক্ষীণ॥ নিশি দিশি অবিরত জাগিতে খুমিতে কভ প্রাণনাথ সোত্ররি সদাই । छानमाम (वादन व्यक्त नग्रानः कत्न তিল আধ খির নাছি পাই ১০ ১০ ৫ ৯০ ৩ ৪

পাঠান্তব

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৯৪ ও প-র পুথির ১০৯৪ সংখ্যক পদ। 'কৌ রাগিণী' স্থলে 'কোড়া রাগ' প-র। ২। 'বিপিন' ক, খ; 'বিপিনছি' প-র-সা। ৩। 'প্রাণনাথে' প-র। ৪। 'হাড' ক; 'হাথে' প-র। ৫। 'হয়' ক, খ, প-র-সা, প-র। ৬। 'দাকণ' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ যথা,—'দাকণ পিরিতি মোর পরবোধ নাহি মানে'। ৭। 'ঘুমাত্যে' প-র। ৮। 'প্রাণনাথ' ইত্যাদি স্থলে 'প্রাণনাথ সভরিব কত' প-র। ৯। 'নয়নের' ঘ, চ। ১০। 'তিল' ইত্যাদি স্থলে 'বিষাধিক অধিক পিরিত' প-র।

कुषानी । ১

শুন শুন বিনোদিন রাই।
তোহে পুন কহিয়ে বুঝাই॥
কান্তক ভাব যব হোই।
হিয় মাহা রাখবি গোইং॥
কোই জন্তুং লখই না পার।
বেকত করবি কুলাচার॥
কান্তু উয়ব হিয় মাহা।
আন ছলে বিছুরবি তাহা॥
গুরু ছুরুজনং তুয়া পাপ।
দেখিলে দেওব বহু তাপ॥
থীর করবি সদা চাত।
ঐছন কুলবতি-রীত॥
পুন জনি ভাবহ আন।
ইহু কবিশেখর ভাগ॥১০৬॥৯০৪॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১০৯৫ সংখ্যক পদ।
২। প-র-সাএ ক্লে 'ইত্যাদি' শক্ষ হারা এই পদটি
সমাপ্ত করা হইয়াছে। ৩। 'ক্লন'ক। ৪। 'ঝর্ক
হক্ষন' ক্লে 'ঝর্কজন ক্লি'ক, ব।

টাকা

৯—:•। "অংক" ইত্যাদি। তোমার অংকজন চর্মন ও পাপ-স্বরূপ; ভাহারা দেখিলে সনেক হাতনা দিবে।

ৰরাড়ী।১

পরশ না করি ডরে কানড> কুস্থম করে এ বড মনের মনবেথা⁹। যেখানে সেখানে যাই সকল লোকের ঠাঞি কাণাকাণি শুনি এই কথা॥ मरे ८लाटक वटल काला পরিবাদ। জলদ না হেরি গো কালার ভরমে হাম তেজিয়াছি কাজবের সাধ ॥ প্রণ। যমুনা-সিনানে যাই আঁখি মেলি নাহি চাই ভরুয়া কদম্বতলা পানে। যথা তথা বসি থাকি বাঁশীটি শুনিয়ে যদি पूर्णि शंख मिश्रा शांकि कारन ॥ চণ্ডীদাস ইথেৎ কৰে সদাই অন্তর দৃতে পাসরিলে না যায় পাসরা। দেখিতে দেখিতে হরে ততুমন চুরি করে না চিনিয়ে কালা কিবা গোল।

পাঠান্তর

115051120611

১। ইহা প-র পুথির ১৪।৬৩ সংখ্যক পদ। 'ভনিয়ে যদি' স্থলে 'ভনিয়া গো' থ। ৫। 'চণ্ডী-দাস ইথে' স্থলে 'বড়ু চণ্ডীদাসে' প-র। ৬। 'চেতন' प। १। 'हिनि स' क, ब, श-द्र।

ভণা বাগ ৷১

জীবাদে নগে মুই জী পৰে নহো নহো জাবারে নহেং গোর সাবং। যাগার সনে সইঃ পবিচয় নাহি মোবং তাহা সনে কচেও গাবিবাদ।। কেমন বানাই সেই ে : মন মুব্তি স্ই৮ কেমন বাং তাহার্ফ বেভার। রাধার বন্ধয়া বলৈ সব ভোতে ডাতে তারেস সেই দোর কুলের খাঁখোর॥ কাহারে কৃষ্টি : দুখ -- কেবা নোৰ জানে গো ातान करेल **८म क**ांक ,२२। তাহার সনে যদিত বিভিন্ন বিভিন্ন বিভাগ তবে সে কহিত ওলে মোরুং।। 11:01/10011

পাঠান্তব

১। ইহা পর পুথির ১ ৬১ দংখ্যক পদ। २। 'नरभ' क। ७। 'काबाद' हे ग्रांकि भर्शक ছুহটির হুলে দার পুলিব গাঠ, যদা -- নজান আর नाष्ट्र कावस्मव माधार अने 'यानाब' हेलापि স্থলে যার সনে কন্তু মোর' পব। '। 'গো' প-র। ৬। তিহি। ইত্যাদি হলে দি জনার সনে পর। ে 'নে' পর। ৮। 'গো' প-র। ১। '(कमन वा' ছলে 'কেমন' क, চ। ১০। 'কেমন বা ভাগার' স্থলে 'না कानित्य ८ १ भने थे- जा। ३३। अंदर्ग जोदर्श खटन ্বলে গোঁপ-র। ১১। পরাণ হলাদি হলে **१। 'কানড়' ছলে 'কাল' ক, থ, চ, প-র। 'প্রাণ মো**র বিধ্রিস যার' প্র। তার সনে ে। 'মনব্যথা' क, ह; 'মোর বেথা' প-ব। ৪। যাল নোর' প-র। ১৪। 'গাকিতে' প-ব। ১৫। ্ভিবে'হভাগালি স্থলে 'একপা স্থিত ভবে গায়' পর ।

সিক্ষড়া ।১

বে দিগে কামুর ঘর সে দিগে না বসি।
সঙী-সাধে সে দিগের বাউং না পরশি॥
ভমুত দারুণ লোকে নানা কথা কয়।
দুখের উপর তুখ আছুরে হৃদয় ॥
কাহারে কহিব তুখ কে মোর হিতাশী।
পরের কথায় প্রাণ পোড়ে দিবানিশি॥
শিবা কহে স্থানিন বুকে না হানিবে।
কুবাদিনা লোকের কথায় কিবা হবে॥

11906116061

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৪।৩৫ সংখ্যক পদ।

হ। 'বাগু'ক। ৩। 'আছ্রে হৃদ্ধ' স্থল 'ততোথিক হর' প-র। ৪। 'কাহারে কহিব' ইত্যাদি
পংক্তি চারিটিক, খ, ঘ, চ পুথিতে নাই,—পর
পুথি হুইতে উদ্ধৃত হুইল।

चामरत्र प्रियू नहे हाँदम देखामि रशश्रम्।

यहरे।

যারে মুই না দেথোঁ নয়ানে।
কলক ভোলায় তার সনে।
নগরে আছায়ে কত নারী।
কে না চাহে শ্রাম পানে ফিরি॥
কে না পিরিতি নাছি করে।
গুরুজন নাহি কার ঘরে॥
মোর হৈল সব বিপরাত।
জগতে করিলে বেয়াপিত॥
যাহা নাহি দেখয়ে নয়নে।
তাহা যেন দেখিল এখনে॥
বলরাম কহে পাপ-লোকে।
মিছা কথা করে পরতেকে ॥১১০॥১০৮॥

অথ প্রেম-বিচার।

শ্রীগোরচন্দ্র ॥

भाननी ।>

ভাব-ভরে গরগর চিত।
থেণে উঠে থেণে শৈসে না পায় সন্থিত।
আত রসে নাহি থানে থেহ।
সোটের সোটের কানে পুরুব স্থনেই ॥
নাচে পত্ত গোরা নটরাজ।
কি লাগি গোকুল-পতি সকার্ত্তন মাঝ ॥
প্রানহান উত্তম অধম নাহি মানে॥
প্রিয়-গদাধর-কর ধরি।
মরম-কথাটি কহে ফুকরি ফুকরি॥
ডগমগ আনন্দ-হিলোলে।
লোলিয়া লোলিয়া পড়ে পতিতের কোলে।
গোরা-রসে সব রসময়।
না দববে বলরাম পাষাণ-হাদয়॥১১১॥৯০৯।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১১২ সংখ্যক পদ।
এই পদটি ৬৩৫ সংখ্যক পদরপে পদকলতক এই
ইতিপুর্বে উদ্ভ হইয়াছে; স্বভরাং পাঠায়র উর্ব পদে এইবা।

পরস্পার সখ্যাক্তি প্রেম-বিচার।

सक्र ।>

সো কুল বভি অভি ভূল হ গভাগতি
পতিং জুরমতি খুর-ধারণ।
পাপিয় পিরিভি এত লাহি সমুক্রেণ
দোসর মদন গোঙার ॥

সজনীং রাই সহজে পরতন্ত্র। কবর্ত্ত দূর নহ গ্ৰুন বিৱহ-গৃহ ইথে কি আছুয়ে মণিমন্ত্ৰ ॥ গ্ৰা নয়ন ভরি তিরপিত দরশনে নহত পরশনে না রহে গেয়ান। জাবন জর জর ভাহে বিস্তু তত্মন কহত কিয়ে সমাধান॥ মরম মাধা পৈঠত বিছুরত মরমে স্বপনে না হেরুয়ে ' আন। তুল্ভেল সমতুল অমিলন মিলন भाविक्षपात्र ভा**टल जा**न ॥>>२॥>>•॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পূথির ২০০ সংখ্যক পদ।
২। পর'ক। ৩। থেরধার'ক। ৪। 'সমূঝিরে'ক,
চ। ৫। 'সজনি'ক, থ, প-র-সা। ৬। 'কবছ'
না'ক। ৭। 'ডাহা'ক। ৮। 'মরম' প-র-সা।
১। 'বাহা'প-র। ১০। 'হেরই'ক, চ; 'হেরিরে'
প-র-সা।

बब्राफ़ी ।>

ছত রসময়-ভসুং গুণে নাহি ওর।
লাগল ছত্ত না ভাসই জোন ।
কে নাহি কয়ল কভত্ত পরকার।
ছত্ত জন ভেদ করই নাহি পার॥
খোজলুঁ দকল মহীতল-গেহ।
খীর নীর সম না হেরলুঁ নেহ॥
যব কোই বেরি আনল-মুখ আনি।
খার দণ্ড দেই নিরস্ত পানি॥
তব্ত জীর উছলি প্ড়ু তাপে।
বিরহ-বিয়োগ আগি দেই গ ঝাঁপে॥
বব কোই পানি আনি ভহিঁ গ দেল।
বিরহ-বিরোগ ভবহিণ দুরে পেল॥

ভণহঁ বিদ্যাপতি এতেনে স্থরেহ>•। রাধা মাধব ঐছন নেহ ॥১১৩॥ə১১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পূ'্থব : ৪।৯৬ সংখ্যক পদ।

'বরাড়ী' হলে 'ধানশী' প-র। ২। 'ছহ' প-র।

০। 'লাগণ' ইত্যাদি হলে 'গ্রুই দরশনে ছহু পূল্কে আগোর' প-র। ৪। 'যোধল' ক; 'জোধল' অ, চ।

৫। 'ফৌর' ক, খ। ৬। 'নিরস্ল' ঝ, অ, প-র।

৭। 'উম্ভি' ক। ৮। 'বিরোগে' ক, প-র।
৯। 'আগে' ক, চ। ১০। 'দিল' অ। ১১। 'তাহে'
ক, ঝ, অ, চ। ১২। 'সবহি' প-র। ১০। 'এতেবে
অ্রেহ' হলে 'এ ভিন হ্রেহ' ক, প-র; 'এভিবে

টীকা

৫--৬। "পোজলু" ইত্যাদি। পৃথিবীর সকল
গৃহ অনুস্কান করিণাম; (কিন্তু) ছ্ছা ও জলের
প্রশ্বের) ভার প্রণয় দেখিলাম না।

১০-১ন। "তণহ'" ইত্যাদি। বিভাপতি বলিতেছেন — থ্রেছ অর্থাৎ প্রলেহ কি না উৎক্ষী প্রণম এই প্রকার। রাধা ও মাধবের প্রণম এই রূপ বটে। (নগেক্স বারুর সংস্করণে 'এতেনে স্থরেছ' স্বলে 'এছন প্রনেহ' পাঠ মুদ্ধি ১ হই মাছে, কিন্তু এরিশ পাঠ কোন পুথিতেই দৃষ্ট হইল না। 'র' ও 'ল'বের অকেল হেডু 'প্রলেহ'— 'প্রেহ' হইতে পারে। 'এতেনে' শক্ষাট ছিন্দী 'এচ্না' শক্ষের রূপান্তর বলিরাই বিবেচনা হয়)।

यहरे।

এমন পিরিতি কভু নাহি দেখি শুনি।
পরাণে পরাণে বাদ্ধা আপনা আপনি।
সূত্র কোরে সূত্র কাঁদে বিচ্ছেদ ভাবিরা।
আধ তিল না দেখিলে বাদ্ধ কি মরিয়া।

জল বিজ্ মীন যেন কবছাঁ না জিয়ে।

মাপুষে এমন প্রেম কোণা না শুনিয়ে॥
ভাল কমল বলি দেখো হেন নয়।

ঠামেই কমল মরে ভালু স্থুখে রয়॥

চাত হ জলদ কহি সে নহে ভুলনা।

সময় নহিলে সে না দেয় এক কণা॥

কুশমে মধুপ কহি সেগো নহে ভুলং।

না আইলে সমব আদানি না যায় ফলং॥

কি ছার চকোব চাল্ড ড্রুই সম নহে।

গ্রিভুশনে হেন নাহি চণ্ডাদাসে কহে॥

॥১১৪॥৯১২॥

পাঠান্তর

১। 'বিনে' থ, ঘ। ২। 'হিমে' ক, থ। 'হিমে' পাঠে ছলোভক ঘটে। ২। 'তুল' ক, থ। ৪। 'ফুল' ক, থ।

সওয়ারী ।১

निष्ट्रहे त्नोडून পািরতি চুঃন ভিলে তিলে বাঢ়িং যায়। विश्वि नार नाय তথাপি বাচ্যু পরিণামে নাহি থায়⁸ ॥ স্থি হে অদভূত হুকু প্রেম। এত দিন চাই অবধি না পাই ইথে কি ক্ষিল হেম॥ ধ্ৰু॥ সব কৈল আন উপমার গণ দেখিতে শুনিতে ধন্দ। এ কি অগরূপ তাহার স্বরূপ স্বভাবে^{*} করিলে অন্ধ॥ চণ্ডীদাস কৰে (मोर्ड मम **इ**रग्र এখানে সে বিপরীত। এ তিন ভুবনে হেন কোন জনে रुनि ना पत्रदव होड॰ ॥১১৫॥৯১०॥

পাঠান্তর

১। 'শোষানী' থ। ২। 'বাড়ি' ক, থ,চ।
৩। 'বাড়ম' থ। ৪। 'থার' চ। ৫। 'ঠাঞি'
ক,চ। ৬। 'ধর' থ। ৭। 'সভাবে' ক, ঘ,চ।
৮। 'ছহঁ সম হয়ে' ক; 'দোই।' থ; 'দৌহ' চ।
৯। 'চিত' ক, থ।

थ्हरे ।ऽ

একে কুলবতা ধনা তাতে সে অবলা।
ঠেকিল বিষম প্রেমে কত সবে জ্বালা॥
অকথন বেয়াধি কহন নাহি ষায়।
যে কবে কানুর নাম ধরে তার পায়।
পায়ে ধরি কাঁদে সে চিকুর গড়ি যায়।
সোণার পুতলা যেন ভূমিতে লোটায়॥
পুছয়ে কানুর কথা ছল ছল আঁথি।
কোণায় দেখিলা শ্রাম কহ দেখি সখি॥
চণ্ডীদাস বলে কাঁদে কিসের লাগিয়া।
সে কালা আছয়ে তার হৃদয়ে জাগিয়া॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩১৬ সংখ্যক পদ। ২। 'এ কহা' ক,চ; 'কহনে'খ; 'এ কহনে' প-রসা।

তথা রাগ।১

সহজেই কুলবতী বালা।
সোঁত কি সহই প্রেম-জালা॥
তাহে গুরু-গঞ্জন বোল।
অহনিশি অন্তর ডোল ॥
তাহে নিতি প্রেম-তরক।
জোরি কবহুঁ নহু ভক্ষ॥

তুরজন সঙ্গ সঞ্চারি।
ব্যাধ-মন্দিবে জন্ম শারী ॥
সকল কহব কামু-ঠাম।
ইথে কি কহয়ে পরিণান ॥
ভ্যানদাস কহ তাব।
পরিণানে বড়ই সে দাব॥১১৭॥৯১ ॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুণিব ১৩৯৭ সংখ্যক পদ। ১। 'সহজ্বই' ঘ,চ। ৩। 'সে' ক।৪। 'রোল' ক,ধঃ' ঢোল' প-র-সা।

ত**ত্রানুরাগঃ** প্রকারান্তরং যথা।

শ্রীগোরচন্দ্র:। নিরাগ ।>

গোরা-রূপ লাগিল নয়নে।
কিবা নিশি কিবা দিশি শয়নে স্বপনে॥
যে দিগে পড়য়ে দিঠি েই দিগে দেখি।
পিছলিতে করি সাধ না পিছে। সাঁপি॥
কি থেণে দেখিলাম গোরা কিনা মোর হৈল।
নিরবধি গোরা-রূপ মরমে লাগিল॥
চিত নিবারিতে চাহি নহে নিবারণ।
বাস্থাবাৰে বলে গোরা রমণী-মোহন॥

1776119761

পাঠান্তর

১। এই পদটি ৮৯৯ সংখ্যক পদরূপে ইতিপূর্বে উদ্ধৃত হইরাছে; স্বতরাং পাঠান্তর উক্ত পদে

सहैবা।

दा हि डू

ছাড়িয়া' ঘনের আশ করিব সে বনবাস এই চিতে দটাইলুঁ সার। রা, ৩ দিবদেও হামণ হিয়ার উপবে পোব না করিব হাব আঁথির আছে। মই তোমারেগ কহিয়েও মরম। জাহি ভাসাইলুঁ বুলে তিলাঞ্জলি দিশু शुक्तां न्तूं । भत्रम- व्यय ॥ श्रुष्ट ॥ শাশুড়া-এনা-ড'র নিথাস না ছাডি খরে এই দুখে হেন ধাধ করে। চাঁন্দমুখ নির্বিয়া খ্যারে উপর **অ**ল থুইয়া মনেৰ কুণাটি কৰ ভাৱে ঃ নয়ানে না দেখে আন আন নাহি শুনে কাণ যত দেখি সব লাগে ধন্দ। বলরাম দাসে বলে না জানি কি করিলে> সে> নাগর গোকুলের চন্দ :১১৯৪৯১ ৭

পণঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুণির তেও ওপ-র পৃথির ১০০০ সংখ্যক পদ। ১. 'ছাড়িব' ক, খ, প-র-সা; (পাঠান্তর---च, চ)। ৩। 'দিবস' ক, চ। ৪। 'চিতে' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'আর আঁথির' হলে 'নয়নের' প-র। ২। 'কহিলু' (পাঠান্তর— च, চ), প-র। ৭। 'গাহন্থ সে' ক। ৮। 'দেখি' খ, ঘ, প-র-সা। ৯। 'দেখে' ক, খ, প-র-সা। 'দেখ' প-র। ১০। 'ছইলে' খ; 'হৈল' গ-র-সা। 'ও' ক, খ।

সিম্বুড়া।>

এ দেশে বসতি নাইং যাব কোন দেশে। যাব লাগি প্রাণ কান্দে তারে পাব কিনে॥ বোল না উপায় সই বোল না উপায়। জনম অবধি দুখ বহল হিয়ায়॥ ভিত্ত° কৈল দেহ মোর ননদী-বচনে ।
কত না সহিব জালা এ পাপ পরাণে ॥
বিষ খাইলে দেহ যাবে রব রবে দেশে ।
বাশুলী-আদেশে কহে বিজ চণ্ডীদাসে ॥
॥১২০॥৯১৮॥

পাঠা হর

১। ইছা প-র-সা পুঝির ১৪০০ ও প-র পুঝির ১৪।৬০ সংখ্যক পদ। ২। বসতি নাই' হলে 'নহিল বাস' প-র। ৩। 'তিঁতা' ক। ৪। 'ননদীর বোলে' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৫। 'এ পাণ পরালে' হলে 'নাভড়ীর বোলে' প-র। ৬। 'কছে বিজ্ঞ চঙীদাসে' হলে 'কবি কহে চঙীদাসে' প-র।

थाननी ।>

अनिग्रार (मिश्रन् দেখিয়া ভুলিলু ভুলিয়া পিরিভি কৈলু । পিরিভি-বিচ্ছেদে না রহে পরাণ युविया युविया रेमल्"। সই পিরিতি দোসর ধাতা । विधित्र विधान স্ব করে আন না শুনে ধরম-কথা। এ ॥ তুলে ভোলাইলু পিরিভি মিরিভি পিরিতি গুরুয়া ভার। পিন্ধিভি-বেয়াধি যার উপজয়ে (म दूरवर ना दूरवर जात। সভাই কহয়ে পিরিভি-কাহিনী কে বলে পিরিভি ভাল। কাত্মর পিরিভি ভাবিতে ভাবিতে পাঁজর ধসিয়া গেল । জীবনৈ সরুণে পিরিভি-বেয়াধি হইল বাহার অলু ।। खानगान करह কামুর পিরিভি निकृषे १ भीकृम तक ॥१२१॥३१॥।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪•১ ও প-র পুথির
১৪:৪৯ সংখ্যক পদ। ধাননী পুলে 'ফুইং' প-র-সা।
২। 'গুণিয়া' প-র। ৩। 'গুণিয়া' প-র। ৪।
'জীবন' প-র। ৫। 'মলু' খ। ৬। 'সই পিরিডি
দোসর ধাতা' ইত্যাদি ক্রব-কলির পরিবর্তে ক
পুথিতে নিম্নলিখিত কলি দুষ্ট হয়; যথা,—
'সই কে বলে পিরিতি ভাল।
শ্রাম বদ্ধু সনে পিরিতি করিয়া
পীজর ধসিয়া গেল।'
৭। 'তৌলাইয়া' খ। ৮-৯। 'জানে' প-র-সা। ১০।
'সল্প' প-র। ১১। 'নিতি' ক, খ, খ, ঢ়; 'নিভাই' প-র-সা।

সিদ্ধভা ।>

মুঞি মৈলুঁ মৈলুঁ মরিয়া গেলুঁ

ঠেকিলুঁ পিরিভি-রদে।

এ হার-করণ বিহি নিদারুণ

সকলি পরের বশে॥

কালিয়া কালিয়া বলিয়া
জনমে কি সুখ পাইলুঁ।

হিয়া দগদগি পরাণ পুড়নি

মনের আগুনে মৈলুঁ ॥১২২॥৯২০॥

ইভাাদি গেয়ম্।

পাঠান্তর।

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪০২ সংখ্যক পদ।

তথা রাগ ৷১

কিবা সে মোহন বেশ দেখিতে মুরুছে দেশ না রহে সভীর সভীপনা। ভরমে দেখিলে যারে জনম ভরিরা সই সুরিরা মরয়ে কভ জনা। कि कतिनुँ कि ना देशन किटन वा तम वाड़ाइन कि (भन शिनशि (शन वृद्ध। জাতি-কুল-শীল-শিবে বজর পড়িল সই काशूरत प्रथियां किएन किएन নিন্দ গেল দুরে গো খাইতে সোয়ান্তি ৭ নাই হিয়া ডহ ডহ মন ঝুরে। উড়ু পুড়ু আনছান ধক ধক করে প্রাণ কি হৈল ইহিতে নারি ঘরে॥ রসের মুরতি সে (पशिरम ना॰ त्राह (प বাভাদে পাধাণ হয় পানি। বলরাম দাসে বলে সে অক পরশ হলে প্রাণ লৈয়া কি হয় না জানি ॥১২৩॥৯২১॥

১। ইহা প⊹র-সাপু(ধর ১৪∙০ সংখ্যক পদ। 'তথারাগ' ছলে 'ভূড়ী' ধ। ২। 'সোরাফ'ক। ৩। 'সে'ক,চ।

পাঠাম্বর

कुड़ो ।>

কি ঘর বাহির লোকে বলে একি রীতিং।
জীতে পাসরিলও নহে বজুর পিরিতি॥
দেখিতে না দেখে আঁখি শ্রাম বিনে আন।
ভরমে আনের কথা না কহে বয়ান॥
শুনিতে শুনিয়ে হাম সেইং পরসঙ্গ।
সোজর সন্থনে মোর পুলকিত অঙ্গ॥
হিয়ার আরতি গোং কহিতে নাহি দেশ।
মরমে ধরম কথা না করে প্রবেশ॥
গৃহকাল করিতে আউলার সব দেহ।
ভ্যানদাস কহে বড় বিষম শ্রাম-লেহ॥

।ऽ२८।३२२।

পাঠান্তর

>। ইহা প-র পূথির ১৪/৩৬ সংখ্যক পদ। २। 'একি রীডি' কলে 'এ কিরিডি' ব, চ; 'ককি-

রিতি' প-র। ৩। 'পাসরিলে' ক। ৪। 'ক্তাম' প-র। ৫। 'গো' শস্কট ক, ধ, দ, চ পুথিতে নাই।

मेत्रात्र ।>

মনেরং মরম-কথা শুন লো সক্ষনি।
শ্যাম বন্ধু পড়ে মনে দিবস রক্ষনা। এই ॥
চিতের আগুনি কত চিতে নিবারিব।
না যায় কঠিন প্রাণ কারে কি বলিব ॥
কোন বিধি সিরজিল কুলবতা বালা।
কোবা সে মোহন রূপণ মন মোর বাঁধে।
মুখেতে না সরেই বাণী ফুটি আঁখি কান্দের ॥
ভ্যানদাস কছে সখি এই সে করিব।
কাপুর পিরিতি গাগি যমুনা পশিবং॥

.

পাঠা**ন্ত** ব

ু >। ইহা প-র-সা পুৰির ২১৪, ১৪০৪ ও প-র
পুৰির ১৪।০৮ সংখ্যক পদ। ২। 'মনের' শব্দ ক,
চ ও প-র-সা পুৰিতে নাই। ৩। 'কিবা সে মোহন
রূপ' হবে 'কিবা রূপে কিবা ওপে' প-র-সা। ৪।
'মুখেতে না সরে' হবে 'মুখে না নিঃসরে' প-র। ৫।
অতঃপর প-র-সা পুৰিতে এই অতিরিক্ত কলিটি
দুই হর, ব্ধা,—

'দ্রে হৈতে বাধির বাধির হৈতে দর।
দেখিবারে করি সাধ নহি সতক্তর।'
৬। 'কান্থর' ইত্যাদি স্থলে 'কান্থর লাগিয়া আমি
জানলে পশিব।' প-র-সা।

निवात ।>

রাজার বিয়ারী কুলের বৌহারী
স্থামা-সোহাগিনী নারী।
পিরিতি লাগিয়া এ তিন খোরালুঁ
হইমু কুল-খাঁধারী॥

সই কি ছার পরাণ কাজে। নাহি দর্শন স্বপনে তা সনে অগত ভরিলং লাজে ॥ ধ্রু॥ সব ভেয়াগিলুঁ ধরম করম যাহার পিরিতি-সাধে। সকলি নাশিল জাতি কুল শীল সে জনার পিরিভি-বাদে॥ ভাবিতে চিন্তিতে হিয়া জর জর না ক্রচে আহার পানি। পিরিতি-আঁখর কতে বলরাম কেবল ছুখের খনি ১১২৬:১২৪॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪০৫ সংখ্যক পদ। ২। ভিরিয়াক। ৩। নিশিল প-র-সা।

षुष्रो ।ऽ

এক স্থালা ঘরং হৈল আর জ্বালা কামু।
জ্বালাতে জ্বলিল প্রাণ্ড সারা হৈল তমু ॥
কোধায় যাইব সই কি হবে উপায়।
গরল সমান লাগে বচন হিয়ায়॥
কাহারে কহিব কেবা যাবে পরতীত।
মরণ-অধিক ভেলং কামুর পিরিত॥
জারিলেক তমু মন কি আছে ঔষধে।
জগত ভরিল কালা কামু-পরিবাদে॥
লোক-লাজেং ঠাঞি নাই অপ্যশ দেশে।
বাশুলী-আদেশে কঠে বিজ চণ্ডাদাসে॥

পাঠান্তর

1122912201

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪•৬ ওপ-র পুথির ১৪।৫০ সংখ্যক পদ। ২। বিরেপ ক, ঝ, য়, চ, প-র-সা। ৩। কেহ'ক, ঝ, য়, চ। ৪। কেন' ফ, চ: কেল'ঝ, প-র-সা। ৫। মাঝোক, ঝ।

षुष्ठी ।३

কি হৈল কি হৈল মোরেং কাসুর পিরিতি।
আঁথি কুরেণ পুলকিত প্রাণ কাঁদে নিতি।
শুইলে সোয়ান্ত নাই নিন্দ গেল দুরে।
কাসু কাসু করি প্রাণ নিরবিধ কুরে।
নবীন পাউসেরং মান মরণ না জানে।
নব অমুরাণে চিত ধৈরজ না মানে।
এ না রস যে না জানে সে না আছে ভাল।
ফারে পশিলা মোর কাসু-প্রেম-শেল।
নিগৃঢ় পিরিতিখানি আর্তির ঘর।
ইথে চেণ্ডাদাস বড় হইল ফাঁফের।১২৮॥৯২৬॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪•৭ সংখ্যক পদ। ২। 'মোর' ক। ৩। 'ঝরে' ঘ। ৪। 'পাঙ্সের' ক। ৫। 'রহিগ' ক, চ।

कक्ष बबाड़ी।>

বিষম হইল কালার প্রেম লাগে শেলিং।
ঝুরিয়া ঝুরিয়া কালে পরাণ-পুতলী ॥
থা
যত যত পিরিতি করিয়াছে মোরে।
আঁখরে আঁখরে লেখা হিয়ার ভিতরে ॥
হাসিয়া পাঁজরকাটা কইয়াছে কথাখানি।
সোঙ্করিতে চিতে উঠে আগুনের খনি ॥
নিরবধি বুকে থুইয়া চায় চোখে চোখে।
এ বড় দারুণ শেল ফুটি রৈল বুকে ॥
হিয়ায় ধরিয়া কবে দেখিব মুখখানিং।
বলরাম বলে হিয়ায় দারুণ আগুনি ॥
১২৯॥৯২৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪০৮ সংখ্যক পদ।
 ২। 'বিবম' ইত্যাদি ছলে 'বড়ি বিষম হৈল কালার
প্রেম এ মর বসতি লাগে পেলি' ক, ধ, ম, চ। ।।

ৰুৰ্চ। ৫। 'হিষাৰ ধরিষা' ইত্যাদি প-র-সা ক, চ: 'হিলোলে' প-র-সা। ৬। 'চল্ম' ক। পংক্তি হুইটির স্থলে ক, ধ, ঘ, চ পুৰির পাঠ বণা,--'ছিয়ার ধরিয়া নয়ন ভবিয়া

करव मि (मिश्व मुश्थानि । হিয়ার ভিতর অলে বলরাম দাসে বোলে দারণ খেল আগুনি ॥

একটি পদের ভণিতা ত্রিপদী-ছন্দে রচিত হইয়া অবশিষ্ট পদ পয়ার-ছন্দে রচিত হওয়া সম্ভবপর বোধ হর না : স্থতরাং প-র-দা পুথির পাঠই দমীচীন বোধে মূলে গুণীত হইল।

তথা রাপ।১

নয়ান-কোণের বাবে হিয়ায় হানিলে বে সেই হইল পিঠের পার। জালিয়া তিন কোণের খড়, দিলুঁ ও স্থাবের মুখে তবে আমার দুখের নাহি পার॥ রসের আবেশে অঙ্গ মোডা দিয়াং হাসিয়া কথাটি কয়। কত ভক্তিমায় ও ভুরু• নাচায় তাতে কি পরাণ রয় 🛭 বাঁশীর ফুকে বুকের ভিতরে ফুটিয়া আগুন ছলে। মধুর বচলে হিয়ার হিলোলে পরাণ-পুতলী দোলে॥ হিয়াজর জর

পরাণ কাঁফর **(मिथिय़ा '७ मूथ ठान्म' ।**

বলরাম-মনে আন নাহি লয় সবে প্রাণ গোকুলচান্দ ॥১৩০।৯২৮॥

পাঠান্তব

১। ইহা প-র-সাপুথির ১৪০৯ সংখ্যক পদ। र। '(बाफ़ा विदा' ऋत्व '(बाफ़ारेद्रा' श-त-ता। ७।

'इडेबाएइ' थं; 'कब' भ-त-मा। ४। 'ठाहिएन' क, 'मिठि' भ-त-मा। ३। 'ठनएन' छ। ४। 'हिनएन'

ভাটিয়ারি ।১

একে কুলবতী করি বিভৃত্বিলং বিধি। আর তাহে দিল কেন পিরিতি-বিয়াধি॥ कि रेश्ल कि रेश्ल महे किया (म क्रिला । গোপতে বাঢ়ায়া। প্রেম আপনা খোয়ালুঁ ।। জাগিতেঃ স্বপনে মনে নাহি জানে আন। (म नव नागत लागि कान्मरम भताव # কত না সহিব আর হিয়াব পোডনি। কহিতে নাহিক ঠাঞি ছার পরাধিনী 🛭 যার লাগি বেবা জন জাতি প্রাণ তেজে। বলরাম বলে ভারে কি করিবে লাজে ॥

12021952

পাঠাস্তর

১। ইচা প-র-সা পুথির ১৪১০ ও প-র পুথির DS180 नःशाक अन्। २ । 'निव्रमिटन' सः 'সিরজিল' প-র। ৩। 'ধাইলু' প-র-সা। ৪। 'জাগিলে' ক। ৫। 'নাহিয়ে' ক। ৬। 'মুঞি' প-র। ৭। 'জাতি প্রাণ' কলে 'পরাণ' ক, খ, খ, চ, প-র-সা। ৮। 'আর' ক।

यहरे ।>

ি ভোহে কহিব বাণী শুন অফুরাগিণি সদাই ভাবহ কালা কামু। পুলকে শরীর ভরে নিরব্ধি আঁখি করে मित्न मित्न कोन कर्न जम् । যদি তৃত্ত শুন মোর কথা। मना इटव मावधारन সে কালা কামুর প্রেমে **उद्धार अ**व दिशे । अ

থকে তুহুঁ কুলবভী তাহে ছুরজন পতি
জানিলে পড়িবে পরমাদ।
এ পাড়াপড়সী ষত বিপক্ষ আছরে কত
জগতে ঘূষিবে পরিবাদ॥

যব তাহে পড়ে মনে চিত দিবে আন কামে
যেন লোকে নহে উপহাস।

যবিবে আমার কথা মনে না ভাবিহ বেথা
যতনে কহয়ে প্রেমদাস ॥১৩২॥৯৩০॥
পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪১১ সংখ্যক পদ। ২। 'কত' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'সদা হবে' ছলে 'রবে সদা' ক,খ, প-র-সা।

व्यहें ।>

তোমরা কি আর বুঝাও ধরম।
শায়নে স্থানে বেশনে দেখোঁ কালিয়া-বরণ ।
কো আউলাইয়া বেশ বনাইতে
হাত নাহি সরে বান্ধি।
সে কালার ভরমে কেশ কোলে করি
কালা কালা করি কান্দি ॥
কালা সে কেশ কোলা সে বেশ
লোটন বান্ধিয়া রাখি।
যথন কালাকে পড়য়ে মনে
আউলাইয়া তাহা দেখি ॥১৩০॥৯৩১॥
পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৪১২ ও প-র পুথির ১৪১৭ সংখ্যক পদ। ২। 'দেখে।' ক, ধ; 'দেখঙ' প-র-সা; 'দেখি' প-র। ৩। 'বেশ' ক, চ; 'বেশে' প-র। ৪। 'কেশ' ক, ধ; 'কেশে' প-র।

সিম্বড়া ।১ কি ঘর-বস্তি হাড়ে হাড়ুক পতি কিবা বাংকরিবে বাপ মায়। এ রূপ° যৌবন জাতি জাবন ধন নিছনি ফেলিব⁸ শ্যাম-পায়॥ কহিলুঁ নিদান আর না রহে প্রাণ শ্রাম স্থনাগর বিনে। কুলের ধরম ভরম সরম ভাগিল এতেক দিনে ॥ সমুখে রাখিয়া নয়ানে দেখিমুণ लहेग्रा थाकिम् रहोर्य रहोर्थ। হার করিয়া গলায় গাঁথিয়া लहेशा थाकिम् तुरक ॥ চিতে উঠে যত বেশ করি ডত অঙ্গে অঙ্গে দিয়া হাথ। সাধ পুবাইৰ অনেক দিনের কোলে করি প্রাণনাথ # মুখানি মাজিব' (मिश्रा (मिश्रा তাত্মল দিব চাঁদমুখে । বলরামের কথা বন্ধু লৈয়া যাব যথাস রাধা বলি কেহ নাহি ডাকে॥ 1508112051

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪১৩ ও প-র পুথির ১৪৪৬ সংথ্যক পদ। ২। 'কিবা বা' ছলে 'বি' প-র। ৩। 'নব' প-র। ৪। 'পেলিব' পর-সা। ৫। 'ভালিল' ক, চ। ৬। 'মুখানি' প-র। १। 'পেরিম' প-র। ৯। 'লইয়া থাকিম্' ছলে 'সদাই রাথি' প-র। ১০। 'মুখান মাজিব' ছলে 'মুখ নির'গ্রা পর-সা। ১১। 'ভাস্ব্ল' ইত্যাদি হলে 'গুয়া তুলি দ্বি মুখে' প-র। ১২। 'ভাশ্ল' ইত্যাদি হলে 'গুয়া তুলি দ্বি মুখে' প-র। ১২। 'ভাশ্ল' ইত্যাদি হলে 'গুয়া তুলি

ভথা রাগ।১

সই নাকহ ও সব কথা। যাহারে লাগিল কালার পিরিভি জনম হইতে বেখা ॥ নয়ানে না হেরি কালিন্দীর জল বয়ানে না বলি কালা। ভভু ত সে কালা অন্তবে জাগয়ে° काला टेश्ल ख्रान-भाला ॥ (यागिनी इरेव বন্ধুব লাগিয়া কুণ্ডল পরিব কাণে। বিদায় হইয়া সভার আগে यहित शहन तत्न ॥ গুরু প্রিজন বলে কুবচন

পাঠান্তর

জাতি কুল শীল ছাড়া ॥১৩১॥৯৩৩॥

না যাব সে লোক -পাড়া।

চণ্ডীদাসে কহে

কান্তুর পিরিভি

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৪১৪ ও প-র পুথির ১৪১৮ সংখ্যক পদ। ২। 'অবধি' প-র। ৩। 'নাছাড়ে' প-র। ৪। 'বিদিত' প-র। ৫। 'সে নোক' দ্বলে 'কোকের' ক, ধ, ঘ, চ, প-র-সা।

সিছুড়া।১

কহিলাম মনের কথা ছাড়িতে নারিব।
ভাদ নাগর বিনেং তিলেক না জীব॥
অনুখণ হিয়া মোর ভাদ-অনুরাগা।
ছাড়িতে কহিবে ধেনে হবেবধের ভাগী॥
ভাদ সজে রস-রজে অজ গেল পাগা।
মজিল আমার মন সোণায় সোহাগা।
শিবরাম দাসে বলে ভাজিল চাতুরী।
মরমে লাগিল ভাদ-ক্ষপের মাধুরী॥

120012081

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪১৫ ও প-র পুথির ১৪।২০ সংখ্যক পদ। ২। 'বিনে আমমি' প-র। ৩। 'ছাড়িতে কহিবে' হবে 'ছাড়াইতে চাৰে' প-র। ৪। 'শিবা সহচরী' প-র।

সিকুড়া।১

কি মোর এ ঘর ছুয়ারের কা**জ** লাজে কহিতে নারি। ইত্যাদি॥১৩৭।৯৩৫॥

পাঠান্তর

১। এই পদটি ৮৪৭ সংখ্যক পদরপে ইতিপূর্ব্বে উদ্ধৃত হইয়াছে বলিয়া এ ফলে পুনরার সম্পূর্ণ
শিধিত হইল না; এই পদের অবশিষ্ট অংশ ও
পাঠান্তর উক্ত পদে দ্রন্টব্য।

অমুরাগঃ প্রকারান্তরং যথা।

श्रीरगोत्रष्टमः । बाननाः ।>

নিরবধি মোর হেন লয় মনে
থেগে থেগে অনিমিবে।
নয়ন ভরিয়া গোরাজ-বদন
হেরিয়ে মন হরিবে।
আই আই কিয়ে দে রূপ-মাধুরী
নিরমিল কোন বিধি।
নদীয়া-নাগরী সোহাগ-আগরি

পাইল রদের নিধি ।

অপরূপ রূপ

ইচ্ছা বেং হিয়ার লেপি।

সোণার বরণ

বসন পরিয়া

कोवन रवीवन (मांशि।

চুলের চাঁপারও ফুল হেন করি
আউলায়্যা করিয়ে দেখা।
লাজ ভয় ছাড়ি কোলেণ্ড উড়ি পড়ি
ছ বান্ত করিয়াণ পাখা॥
পিরিভি-মুরভি চিত্র বনাইয়া
কহিয়েণ মনের কথা।
বুকে বুকে স্থাধ মুধে মুধ ভরিণ
ছুচাই মনের বেপা গ্রাপ্তদান্ত ওচা

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪১৭ সংখ্যক পদ।
২। 'ইচ্ছা ধে' ফলে 'ইচ্ছার' ক; 'ইছারে' ঋ,
শ-র-সা। ৩। 'টাপা' ক, চ। ৪। 'লোকে'
ক, চ, প-র-সা। ৫। 'করিরে' ক, প-র-সা। ৬।
কৈছি ধে' ক; 'কহিএ' ঋ। ৭। 'বুকে' ইত্যাদি
ছলে 'ৰুকে বুকে মুধে মুধে মুধ ভরি' প-র-সা।

রদোদারিত্তে অমুরাগঃ।

তথা রাপ 1>

স্থি হে^২ কি পুছসি অনুভব মোয়। সোই পিরিতি অমু-রাগ বাখানিয়ে° অমুখণ নৌতুন⁸ হোয় 🕸 🛚 জনম অবধি হৈতে ও রূপ নেহারলুঁ নয়ন না তিরপিত ভেলা। লাখ লাখ যুগ হাম श्रित्र श्रित्र मूर्थ मूर्थ क्षमग्र खूज़न नाहि रशना॥ বচন-অমিয়া-রস व्ययूथन भूनमू শ্ৰুতি-পথে পরশ না ভেলি। ক্ত মধু-বামিনি রভদে গোঙায়লুঁ मा बूबर्ग् देक्डन दक्ति ॥

কত বিদগধ জন রস জাপুনোদই
আমুভন কান্ত মা পেখি ।
কহ কবিবল্লভ হাদয় জুড়াইতে
মিলয়ে কোটিমে একি । ॥১৩৯॥৯৩৭।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৪১৬ সংখ্যক পদ।
২। 'সিথি হে' ছলে 'সথি' ক, চ। ৩। 'বাধানি
এ' খ; 'বাধানি' প-র-সা। ৪। 'নব নব' প-র-সা।
৫। 'হইতে' খ, ঘ, প-র-সা। ৬। 'নেহারিয়'
ক, চ। ৭। 'অফুডব কাহ' ছলে 'অফুডব কাহ'
ক, খ; 'অফুডব কাহে' প-র-সা। ৮। 'লেখ
খ। ১। 'মিলরে কোটিমে' ছলে 'লাথে না মিলরে'
প-র-সা। ১০ ৷ 'এক' খ।

<u>টাকা</u>

> — >। "সহি হে" ইত্যাদি। হে স্থি!

সামাকে (প্রেমের) অমূভব কি জিজ্ঞাসা করিতেঃ
সেই প্রেমকেই অমূরাগ বলিয়া ব্যাধ্যা করি—
(বাহা) অমূকণ অথাৎ ক্ষণে ক্ষণে নৃতন (রুণে
প্রতীত) হয়! তুলনা করুন;—

"সদায়ভূতমপি ষঃ কুর্যান্নবনবং প্রিন্নম্। রাগো ভবন্নবনবঃ সোহমুরাগ ইতীর্যাতে ॥"

১২—১৫। "কত" ইত্যাদি। কত রসিক বাজি রস অর্থাৎ অস্থ্রাগকে প্রাশংসা করিরা থাকেন; (কিছু) অস্থ্রাগের (প্রাকৃত) অস্থুভব কাহাতেও দেখিতে পাই না। কবিবল্লভ করেন—জ্বদ্ম জুড়াই-বার জন্তু (প্রাণের মাস্থ্য) কোটির মধ্যে একটি পাওয়া বার।

मिश्राकात्र ।>

কাহারে কহিব কামুর পিরিভি
তুমি সে বেদনী সই।
রসের ধাধসে ধসধস হিয়া
তেঞি সে ভোমারে কই॥

রসের সাগর ও ন্ব-নাগর আগর সকল গুণে। দে সৰু পিরিভি আদর আরতি यूतिया मतिव (मटन ॥ কত না ছলে° সে পিরিভি-বোলে কি না সে আকৃতি সাধে। মধুর ভাষিয়া মান নাশিয়া হাসিয়া মরম বাঁধে। করিয়া ভরিয়া সে মোরে কোলেতে वर्षान वर्षन किया। বিধু বিভূম্বিয়া মধুর চুব্বিয়া পরাণ লইল পিয়া॥ কাঁচুয়া ফাঁড়িয়া সে রস লুটিয়া ভুলিয়া মধুপ জমু। ভর্মে কি কৈল কমল-কোরক গুণেতে ঘুণিত তুমু। ও দিঠি-চাতুরী মুখের ১০ মাধুরী লহরী বহুয়ে আর। ঝুরিয়া মরুক এ স্থা শুনিয়া

পাঠান্তর

षांत्र Cगाविन्स होत ॥> 8 ०॥ २ ०७ ॥

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪১৯ সংখ্যক পদ।
২। 'বস' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'ছল' ক, খ,
চ। ৪। 'ভাথিরা' ক। ৫। 'মোর' ক। ৩।
'কাচুলী' ক; 'কাচুরা' খ, চ। ৭। 'ছটিরা' খ।
৮। 'আলিমা' ক; 'ডুলিরা' খ, চ। ৯। 'ইল'
ক। ১০। 'রসের' প-র-সা। ১১। 'এ স্থ্ধ'
ছলে 'সে রস' প-র-সা।

টাকা

১০-১৬। "সে মোরে" ইত্যাবি। সে আমারে ক্রোড়ে ধারণ ও (আমার বারা) ক্রোড় পূর্ণ করিয়া, '(আমার) মূথে মূথ অর্পণ করিয়া, (আমার মূথে)

মধুব ভাবে চুম্বন করিয়া ও (চক্র এই মুখের নিকট কি ছাব !—এই বলিয়া) চক্রকে তিরকার করিয়া, আমার হুদর হরণ করিল।

পুনশ্চ প্রকারান্তরং যথা।

তিরোধা। ১

স্থি হে মন্দ প্রেম-পরিণামা। वत्रकर जीवन কয়ল পরাধীন নাহি উপকার এক ঠামা।ধ্রা। লগই নাহি পার**লু** ঝাঁপল**ু** কুপ ষাইতে পড়লছ ধাই। কছু না বিচারলু তখনক লঘু গুরু অব পাছু• তরইতে চাই¹ ॥ প্রেম সম মাসুখ মধু সম বচন পহিল ভানন নাহিণ ভেলা। পর হাতে সোঁপলুঁ আপন চতুরপন ক্ষদিসে গরব দূরে গেলা॥ ভানে হাম আছিলুঁ এত দিন আন অব বুঝলু অবগাহি। আপহি চাঁছলু ১২ আপন শ্লুণ হাম माथ मियन अव कारि॥ শুন বর যুবতি ভণয়ে বিছাপতি চিতে নাহি গুণবি> আনে। की छ উপেখিয়ে প্রেমক কারণ জগ-জন কো নাহি জানে ॥১৪১॥৯৩৯॥ পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পৃথির ১৪২০ সংখ্যক পদ।
২। 'বরাক' প-র-সা। ৩। 'ঝাঁপরে' ক। ৪। 'না' ক। ৫। 'আইতে' ক, চ। ৬। 'পাছে' প-র-সা। ५। 'পাছল আনন নাহি' ছলে 'পহিলহি আনক না' ক; 'পহিলহি আনক না'

গৰি জানসুনা' খ, চ। ৯। 'বিনে' ক, খ, খ, চ।
১০। 'ভানে হাম' খবে 'ভাবে হাম' চ। ১১।
'গুড' খ, গ-রসা। ১২। 'আপহি চাঁচলু' খবে
'আপে না চাহিল' প-র-সা। ১০। 'গুণবি' ক, থ,
খ; 'ভাবিহ' প-র-সা।

थाननी ।>

পিরিতিকি রীত কোন অবগাহইং সহজই বৃদ্ধিন সোই। যো রস ধাধসে धम धम व्यख्य পাঁজরু জর জর হোই॥ সঙ্গনি তোহে কহি° কামুক নেহা। চীতে মঝু ডঠয়ে ষত যত নীত ভাবিতে আকুল দেহা ॥ ধ্রু ॥ পরবল হোই যোই ধনি জাবই প্রেম-বিলাসক আখে। দূরে রহুঁ লালস দরশনী তুলহ নিচয়ে মরণ অভিলাষে॥ মরমক বোল কহত' হিয়া ডোলত का कर जनि भतिवास। গোবিম্মদাস বচনে হাম জুললু তে । ভেল এভ পরমাদে। 1128412861

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ২০২ ও ১৪২১ সংখ্যক পদ। ২। 'অবগাহক' ক, খ, খ, চ; 'অবগাহব' সা-প ২০১ পুথি। ৩। 'পঞ্চর' খ, চ। ৪। 'ভোছে কহি' খলে 'ভাছে কি' ক, প-র-সা। ৫। 'নিভি নিভি' প-র-সা। ৬। 'জীবরে' ক, খ, খ, চ। ৭। 'পরিচর' সা-প ২০১ পুথি। ৮। 'কভহি' প-র-সা। ৯। 'ভোলরে' প-র-সা। ১০। 'ভাহে' ক, খ; 'ভেঞি' প-র-সা। ढुड़ी १५

একে কুলবভী চিত্রের আর্ডি বিধি-বিভৃষিত কাজে। পিরিতি-কণ্টক শ্রাম স্থনাগর-ফুটিল হিয়ার মাঝে 🛭 छन छन मह মর্ম্ম ভোরেং কই পড়িলুঁ বিষম ফাঁদে। অমূল্য° রতন বেড়ি ফণিগণ पिथिय़ा शंजांग काटना । **अ** গুরু গরবিত বোলে অবিরভ এ বড়ি বিষম বাধা। এ কুল ও কুল ছু কুল চাহিতে সংশয় পড়ল রাধা। ছাড়িলে ছাড়ান না যায় সে লোক পরাণ-অধিক বড়। জ্ঞানদাস কহে কাহার ডবে বা এড়॥১৪৩॥৯৪১॥ পঠিত্র

ইহা প-র-সা পুলির ১৪২২ সংখ্যক পদ।
 শের্ম তোরে' ফ্লে 'মরম তোমারে' ক, খ, च;
 'মরম তোরে' প-র-সা। ৩। 'অসুগ' ক, च, চ।
 গ্রাড়িলে' ইত্যাদি ফ্লে 'ছাড়িলে ছাড়িল এলোক সে লোক' ক, খ, খ, ছ।

ৰিহগড়া।

কবহুঁ রসিক সনে দরশ হোয় জনিং
দরশনে হোয় জনিং নেহ।
নেহ-বিছেদ জনি কাহুঁকে উপজয়ে
বিছেদে ধরয়ে জনি দেহ॥
সজনি সূরে কর ও পরসঙ্গ।
পহিলহি উপজিতে প্রেমক অহুর
দারুণ বিছি দিল ভজ্॥

ষবহুঁ দৈব দোষ উপজয়ে প্রেমহি
রিসিক সনে জনিশ হোয়।
কামু সে গোপতঃ নেহ করি অব এক
সবহুঁ শিখায়ল গ মোয় ॥
হেন ঔষদ সথি কাইা নাহি পাইয়ে
জমু ১০ যৌবন জরি যায়।
অসমপ্রস রস সহিতে না পারিয়ে
ইহু কবি শেখর গায় ॥১৪৪॥৯৪২॥
পাঠাত্ত

>। 'দরশ হোয়' স্থলে 'দরশন হোয়ে' ক।

২। 'জানি' ক, ধ। ৩। 'জয়' ক, চ। ৪।
'লেগৰিচ্ছেদ' ক, চ। ৫। 'বিচ্ছেদে' ক, চ।

৬। দুরে' ক, ধ। ৭। 'প্রেম' ক। ৮। 'জয়'

ক, চ। ৯। 'গোপতে' ক। ১০। 'শিধাঙলু'
ধ। ১১। 'জনি' খ।

টাকা

> -- ৪। "কবর্ছ" ইত্যাদি। কথনও বেন রসিক জনের সহিত সাক্ষাৎ হয় না; সাক্ষাৎ হইলেও বেন প্রণায় হয় না; প্রণায় (হইলেও) বেন বিচ্ছেদ মটে না; বিচ্ছেদ মটিলে যেন দেহ ধারণ করে না। ('একাবলী' অলহার)। তুলনা করুন,—

শুক্ৰবতি কোই নয়নে জনি হেরই
হেরত পুন জনি কান।
কাস্থ হেরি জনি প্রেম বাঢ়ায়ই
প্রেম করই জনি মান॥'
--প্-ক্-ড, ১০৪ সংখ্যক পদ।

यश्रे ।>

একে নব পিরিভি আরতি অতিং জুরগম
সোডরি সোডরি খিণ দেহা।
তাহে গুরু-গঞ্জন হাদয়-বিদারণ
জীবইতে ভেল সন্দেহাণ।

সজনি চুরে কর ও পরথাব। প্রেম-নাম সাহা শুনই না পায়ব সোই নগরে হাম যাব ॥ধ্রু॥ যাহে বিসু সপনে আন নাহি হেরিয়েণ অব গোহে বিহুরল সোই। হাম অভি দুখিনি সহজে একাকিনি আপন বলিতে নাহি কোই॥ তুহুঁ কুল চাহিতে**°** আকুণ অন্তর পাঁতরে পড়ি রহাঁ কেম। **धिक धिक की वरन** জ্ঞানদাস কহে যাকর পরবশ প্রেম ॥১৪৫॥৯৪৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র পৃথির ১৪।১১৭ সংখ্যক পদ।

২। 'আর্তি অতি' ফলে 'আর অতি' ক; 'আর্তি'
ধ, ল, চ। ৩। 'জীবইতে ভেল সন্দেহা' ফলে
'পরিজনক গেছা' প-র; 'পরিজন কণ্টক গেছা'
সা-প ২০১ পৃথি। ৪। 'প্রস্তাব' প-র; 'পরতাব'
সা৯প ২০১ পৃথি। ৫। 'জানিলুঁ' প-র। ৬।
'গুঝিনা' ক; 'দোথিনি' চ। ৭। 'হেরইতে' প-র,
সা-প ২০১ পৃথি। ৮। 'পাতরে' ক, দ; 'পশ্বহি'
প-র।

कुड़ो ।)

ভালই সময় ছিল যখন শিশুমতি।
অন্তরে অনল জ্বেং পিরিতি-কিরিতিও॥
বাহিরে অনল নহে জল দিবং তায়।
শ্যাম-প্রেমে ধকধকিং কি বলিব কায়েও॥
প্রাণস্থিও তোমারে সে বলি।
হিয়ার ভিতরেও শ্যাম পরাণ-পুতলী॥
ঘর হৈতে বাহির হইয়ে নিরস্তরও।
দেখিবারে সাধ করি নহি সভস্তর॥
মন ধকধকাও করে দিবস রজনীত।
লোক মাঝে না থাকিয়ে রহি একাকিনী॥

নিখাস ছাড়িতে মোর ২ নাহি অবসর ১০। কুষ্ণপরসাদ কহে পরমাদ বড় ১০॥

128412861

পাঠান্তর

১। ইছা প-র পুলির ১৪।১২১ সংখ্যক পদ। 'ভূড়ী' ছলে 'শ্রীরাগ' প-র। ২। 'ইবে' প-র। ৩। 'লিরিভিক রীডি' ক, ৩, প-র। ৪। 'দিরে' প-র। ২। 'কি বলিব কার' ছলে 'কি করি উপায়' প-র। ৭। 'মনের মরম কথা' প-র। ৮। 'মাঝারে' প-র। ৯। 'ঘর হৈতে' ইত্যাদি পংক্তিছ্বের ছলে প-র পুথির পাঠ যথা,---

'দেখিবারে করি সাধ নহি সহস্কর।

হর কৈলুঁ বাহির বাহির কৈলুঁ হর॥'

১০। 'ধকণকি' ক; 'দকদকি' চ। ১১। 'মন'
ইত্যাদি পংক্তিহর প-র পুথিতে নাই। ২। 'মোরে'
প-র। ১০। 'অবসাদ' প-র। ১৪। 'কৃষ্ণ-প্রসাদ' ইত্যাদি হলে প-র পুথির পাঠ, যথা,—

'শিবানল কহে এই পিরিতি প্রমাদ।

পঠমপ্ৰরী।

একে কাল হৈল মোরে নহলি যৌবন।
আর কাল হৈল মোর বাস বৃদ্দাবন ॥
আর কাল হৈল মোরে কদন্তের তল।
আর কাল হৈল মোরে ব্যুনার জল॥
আর কাল হৈল মোরে ব্যুনার জল॥
আর কাল হৈল মোরে গিরি গোবর্দ্ধন॥
এত কাল সনে আমি থাকি একাকিনী।
এমন বেথিত নাহি শুনে যে কাহিনী॥
বিজ্ঞ চণ্ডীদাসে কহে না কহু এমন।
কারু কোন দোৰ নাই স্বেণ্ড এক জন ॥

128912841

পাঠান্তর

>। 'মোর' ক, ধ। २। 'মোর' ক, ४। ৩। 'মোর' ক, ধ। ৪। 'মোর' ক, ४। ৫। 'শুনে বে' স্থলে 'শুনরে' ক, ধ। ৬। 'স্ব' ক, খ।

ট্যকা

"মোর" ও "মোরে" শব্দের প্রয়োলে চঙীদান বে হন্দ্র পার্থকা রক্ষা করিয়াছেন, অধিকাংশ লিপি-कत छेश बक्का ना कत्रात्र छ छोनाटनत मकल मश्यदन-গুলিতেই বটতলার মুদ্রিত পুথির অমুকরণে 'মোরে' শব্দের স্থলে সর্বাত্র 'মোর' পাঠ গৃহীত হইয়াছে। 'মোর' শক্টি সম্বন্ধে ষ্ঠী বিভক্তির প্র ; 'মোরে' नक्षि हुव्यी विज्ञालिक त भार ; उदाव वर्थ- 'आमात পক্ষে'। বলা বাহুল্য যে, 'কদ্পের তল', 'ষ্মুনার **জল' ও** 'গিরি-গোবর্দ্ধন' – এই সকল পদার্থে শ্ৰীয়াধার কোন স্বামিত্বসম্বন্ধ নাই: স্কুতরাং দেই দেই হলে 'মোর কদম্বের তক' ইত্যাদি-রূপ প্রয়োগ সমীচীন ও বৈশিষ্ট্যস্তক হইলাছে। 'নহলি বৌৰন' অর্থাৎ 'নবীন যৌবন' বস্তুটতে শ্রীরাধার স্থামিত্ব-সম্বন্ধ থাকিলেও তাঁধার মনে ধৌবনাভিমান নাই এবং তিনি উহাকে বাঞ্নীয়ও মনে করেন না; স্তরাং দেই স্থলেও 'মোর' অপেকা 'মোরে' व्यासागरे समन्छ रहेबाट्ड। श्रीबाधांत व्यन-धृठ দুউমান 'রতন-ভূষণ'ঞ্লি সুধকর না হইলেও উহাদিগের স্থামিত অস্বীকার করার ও শুকুজনের গলনার ভবে উহা পরিত্যাগ করার উপার নাই ৰলিয়াই 'মোর রতন-ভূষণ' বলা হইরাছে।

ভাটিরারী।

একে দেখি অভি চিভের আরভি
পহিলে না ছিল এভ।
ংরে গুরুজন- গঞ্জনা না মানিং
নিভি নিবারিব কভঃ

স**ই ঠেকিলুঁ বিষম ফাঁদে।**কামুর পিরিতি তিলেক বিঃতিং

হইলে° পরাণ কাঁদে॥

সহকে মধুর শ্য'মের মুরতি

স্বাচ্চ মধুর অচন্দ্র আন্তর্কারে কো।
দের বিজ্ঞানর ভাদর বাদর

. কেমনে ধরিবং দে॥

চিত্রে বিচাব উচিত্ত• কহিতে

জনদাস বহে ইহার অধিক

রসিক গোশত কা**জ ॥১৪**৮॥৯৪৮॥

পঠা সর

১। মানে'ক। ২। 'বিবিভি' ব,চ।৩। 'ডিলেক'ক চ ৪। 'বাদর ভাদর' ব, ব,চ। ৫০ 'ধবিবে'ক,ব। ৬। 'উদিভ'ক,ব।

क्ष है।

ষর হেন নছে মোর ষ্বের বগতি।
বিষ হেন লাগে মোরে পতির লিরিতি॥
বিরলে ননদা মোরে যতেক বুঝার।
কামুর বিরিতি বিনে আন নাহি ভার॥
স্থি মোর নব অমুরাণে।
পরবশ জাউ না উবরে> পুণভাগে॥
জাখেই বৈয়া আঁথেই নহেই সদা রহেই চিতে
সে রস বিরস্থ নহেই কালিতে ছ্মিতে॥
এক কথা লাখ হেন মনে বাসি ধান্দি।
ভিলে কতবার দেইোই স্থান-সমাধি॥
জাম্দাস বহে ভাল ভাবে পড়িয়াছ।
মনের মরম কথা কারে জানি পুছ॥

পাঠান্তর ১। 'উরবে' বঃ ২-০ঃ আবেয়' ব, ৪।

188416841

श्वादश क, ह। १। 'क्वारश' च। ७। 'নীরস'
 कः ; 'নিরস' च, ह। १। 'দেখি' कः ; 'দেখে' च।

তথা রাগ।

জীব না জীব না সোই জীবার নহোঁ মুঞিণ
এ ছার পরাণ কার ভরে।
এ ছ পরমাদে সই রাধার মনে জ্ম্মন নাই
প্রাণ কাঁদে বিচ্ছেদের ডরে॥
বন্ধুরে বিদরে হিয়া একা নিশবদ হইয়া
শুভিয়া রহিলুঁ মুঞি দিনে।
স্থপনে বন্ধুব সনে মনের কথাটি কই
নননী দাঁড়াঞা ভাষা শুনে ॥
ঘুমের আলিসে ঘুটি আঁখি মেলিডে নারি
কালা-রূপ যাহাঁ ভাষা দেখি।
আন বোল বলিতে বালা বন্ধুয়া বলিয়া ডাকিং

প্রতি বোলে তারা করে সাখী ।
কালা,বিলাসের হার কালা গলার° কাঁঠি
কালা স্থতায় নিতি নিতি গাঁথি।

লোচন বলয়ে অমু- রাগের বালাই বাই বন্ধুর গুণের লাগি বেথি ॥১৫০!৯৪৮॥

পাঠান্তর

স্থি মোর নব অমুরাণে।

গরবণ জাউ না উবরে পুণ ভাগে।

চ পুথির পাঠ বথা —'জীব না' ইত্যাদি পংক্তিবর হলে ক ও
গরবণ জাউ না উবরে পুণ ভাগে।

চ পুথির পাঠ বথা —'জীব না' ইত্যাদি হলে ক
থা বেব নির্দাণ নির্দাণ নির্দাণ করিব না নাব না নাব বিদ্যালি বিদ্যাল

ভখা রাপ।

পাদরিতে শরির হোয়ে স্বাধান।
কহিতে না নাগর বুকই অবধান ।
কহনে না পারিয়ে সহনে না বার।
রচহ সক্লি অব কি করি উপার।

কোন বিহি নিরমিল এই পুন লেই।
কাহে কুলবতি করি গড়ল মোর দেই ॥
কাম করে ধরিয়া সে করায় বাহার।
রাখয়ে মন্দিরে এ কুল-আচার ॥
রহই গনা পারিয়ে চলই না পারি।
ঘন ফিরিদ বৈছে পিঞ্জর মাহা শারি॥
এতত্ত্ব বিপদে কাহে জীবয়ে দেই।
ভেণয়ে বিতাপতি বিষম এ নেই॥১৫১॥১৪৯॥

পাঠাম্বর

>। 'হয়' ক। ২। 'কছিতে' ইত্যাদি পংক্তির
ছলে 'কছিতে না লয় অব বুঝাই অবধান' ক;
'কছিতে না লয়ব বুঝাই অবধান' চ। ৩। 'না
পারিয়ে' ছলে 'নারিয়ে' ঘ। ৪। 'বলহ' ক,ঝ।
৫। 'কয়য়ে' ক। ৬। 'কুলাচার' ক। ৭।
'সহই' ক,চ। ৮। 'ফিয়ে' ক। ৯। 'বৈছন'
ক,ঝ।

ততঃ দখ্যক্তিঃ।

শুন শুন স্করি কর অবধান।
নাহ রসিকবর বিদগধ জান ॥
কাহে তুহুঁ হৃদয়ে করসি অমুভাপ।
অবহুঁ মিলব সোই স্পুরুপ আপ॥
উদভট প্রেম করসি অমুরাগ।
নিতি নিভি ঐছন ইয়ে মাহা জাগ।
বিদ্যাপতি কহ বাস্কহুত পেহ।
স্পুরুপ কবছ না তেজয়ে নেই॥

11)6 31126 011

পাঠান্তর

১। 'অञ्च्छाপ' ক, ধা ২। 'নৌজুন' ধ। ৩। 'বাছই' ক; 'বাছব' ধ। পুনশ্চ আক্ষেপানুরাগঃ।

হার ।
হার শুস্তাহ্য আলো সই ভামার কামুর রাত।
হার্সাইলে সব মাের গুরু গরবিত ॥
সখীর সামিলে পথে আসিয়েং চলিয়া।
বান্ত প্রারিয়া রহে পথ আগুলিয়া ॥
যতেক নিষেধি তায় বিগুণ উথলে।
লোকে বলে এমন কেনে সে বোল নহিলে॥
পথে যাইতে লোকণ সব কহে আমার কথা।
সদাই আমার নাম লয় যথা তথা ॥
রসাভাসে যে বোল বোলে শুস্তাঃ লাজে মরি।
পাপিয়া পাড়ার লোক করে ঠারাঠারি ॥
এত দিন ছিল মাের অবেকত কাজ।
এবে সে বেকত হৈল গোকুল-সমাজ॥
বিরলে পাইয়া তাহা সােঙ্রির কহিয়।
যত্নাথ দাস কহে সময় বুঝাইয়॥১৫৩৯৫১।

পাঠান্তর

১। 'গুনেছ'ক। ২। 'আসিতে' ক, ধ, চ। ৩। 'লোকে' ক, চ। ৪। 'গুনে' ক। টীকা

৫— । "যতেক" ইত্যাদি । (প্রীক্ষের
ধৃষ্টতা) যত নিষেধ করি, তাহাতে (ক্ষান্ত না হইয়)
দিশুণ বর্দ্ধিত হয়। (তাহা দেখিয়া) লোকে বলে
যে, সেই কথা অর্থাং প্রীক্ষয়ের সহিত প্রীরাধার
শুপ্ত প্রণরের কথা (প্রক্রত) না হইলে—এরণ
হইবে কেন ? (শুপ্ত প্রণর না থাকিলে কোন
কুলালনা নীরবে পর-পুক্ষবের এইরূপ ধৃষ্টতা সম্ব
করে না)।

ছুড়ী।> সই কেমনে দেখাব মুধ। গোপত পিরিতি বেকত কংগ্রে এ বঞ্জি মরুশে সুধা। ঞা।

126612601

করে কোন জনা এত টাঠপনা বুঝিলং তাখার মতি। সকলে হাসয়ে মোর অপযশে ইথে কি পাইবে সিধি ॥ সিনানে যাইতে আর এক দিন আঁচবে ধরল মোর। নাগরী আছিল তথা ছুই চারি হাসিয়া⁸ হইল ভোর ৷ অবশ হইলু পরশ পাইয়া ইহাতে করিব কি। শেখর কহে কি করিবে লোকে তোমার নিছনি দি ॥১৫৪॥৯৫২॥ পাঠান্তর

১। ইছা প-র পুথির ১৪। প সংখ্যক পদ।

২। 'বুঝিকু' ক, চ। ৩। 'ইথে' ইত্যাদি হুলে
'ইথে পাবে কোন সিধি' প-র। ৪। 'দেথিয়া'
প-র। ৫। 'তোমার নিছনি' হুলে 'তোমারে
নিছিয়া' প-র।

সিকুড়া ।>

না জানি তাহার এমত বেভার পিরিতি যাহার সনে। গোপত করিয়া কেনে না রাখিল বেকত করিল কেনে ॥ मत्नव भव्रम क्रानित्व (क । মনের মরম সেই সে জানয়ে u त्राम मिलन (य ॥ क्ष ॥ চোরের মায়েং যেন পোয়ের লাগিয়া ফুকরি কাঁদিতে নারে। পিরিভি করিলে কুলবভী হৈয়া এমতি সঙ্কট তারে 🛭 ক্বে পরতীত**° কে আছে** বেথিত এ ছুখ कहित कादत्र।

হয় ছ্খভাগী পাইয়ে॰ তার লাগি
তবে সে কহিয়ে তারে ॥
পরে কি জানয়ে পরের বেদন
সতর গাণন কাজে ।
চণ্ডাদাসে কহে বনের ভিতরে
ভাহে কি গোদন সাজে ॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র প্রথির ১৪।৭১ সংখ্যক পদ।
২। 'মা'ক, ঝ, চ, প-র। ৩। 'পরহিত'ক,
চ; 'পরতিত' ঘ। ৪। 'পাই' প-র। ৫। 'সন্ধর'
চ। ৬। 'তাহে কি' স্থলে 'তাহা কি' ধ; 'তবে
দে' প-র।

গ্রীরাপ।১

সই কাহারে করিব রোষ। না জানি না দেখি मत्रल इ**रेल्** সে পুনি আপন দোষ॥ ধ্ৰা॥ (भनाहे थूर भा বাভাস বুঝিয়া বাঢ়াই বুঝিয়া থেহ। মানুষ বুঝিয়া কথা যে**° কহিয়ে** त्रिक वृक्षिया त्नर ॥ ধরিয়ে ডাল মড়ক বুঝিয়া ছায়ায় বুঝিয়া মাথা। গাংক বুঝিয়া গুণ প্রকাশিয়ে° বেথিত বুঝিয়া বেখা ॥ করিলুঁ পিরিতি অবিচারে সই (कम देक**नूँ** (श्न कारक । ধীর হ স্থানি প্রেমদাস কছে কহিলে পাইবা লাজে ।১৫৬।৯৫৪। পাঠান্তর ১। ইহা প-র পুৰির ১৪।৭২ সংখ্যক পদ। २। 'लनारे थू' चरन 'स्नारेजू' ४; 'स्नारे थू'

চ, কেলাইড' প-র। ৩। সে'ক, খ, ব, চ। ৪। ছোর সে'খ। ৫। পিরকাশি'ক। ৬। কাল' ক, চ, প-র। ৭। লোল'ক, চ, প-র।

নিকা

৪—१। "বাতাস" ইত্যাদি। (আমরা)
বাতাস ব্ৰিয়া অর্থাৎ কোন্ দিক্ হইতে বায়্
প্রবাহিত হইতেছে, তাহা দ্বির করিয়া পুঝু ফেলি;
(.লতুবা নিজের পুঝু নিজের গায়ে উড়িয়া পড়িতে
পারে)। সেই প্রকার (পাদ-বিক্লেপ-স্থলের)
দ্বিরতা ব্রিয়া পা বাড়াই; (নতুবা পা থাদে পড়িয়া
ভর্ম হইতে পারে)। (সেইরূপ) মামুব ব্রিয়া
অর্থাৎ স্থলন কি কুজন, তাহা দ্বির করিয়া কথা
বলি; (নতুবা সেই কথার বিপদ্ ঘটতে পারে)।
(সেইরূপ) রসিক ব্রিয়া প্রণয় করি, (কেন না,
অরসিকের সঙ্গে প্রণয় করিলে সারা জীবন ক্লেশ
পাইতে হয়)।

ছ- >>। "মড়ক" ইত্যাদি। মড়ক অর্থাৎ
কীটাদি-ক্ষনিত জীণতা বুঝিরা (পাছে চড়িতে
হইলে) ডাল অবলম্বন করি; ছারা দেখিরা মাধা
রাখি; (খণের উপযুক্ত) গ্রাহক বুঝিরা গুণ প্রকাশ
করি (নজুবা বেরার বনে সুক্তা ছড়ান হর); এবং
(ব্যধার) ব্যধী বুঝিরা (তাঁহার নিকট) ব্যধা
প্রকাশ করি (নজুবা অরণ্যে রোনন করা হর)।

তথা নাগ।

বালার উপর বালা সই

বালার উপর বালা ।

কলকে বাই পথ না পাই

বসন টানে কালা ॥

সরম কর্যা ভরম কর্যা

বসন দিলাম মাথে।

সকল স্থীর মাঝে কালা

ধরে আমার হাতে ॥

রস ক্রিতে জানে যদি

ভবে সে মনের স্থা
।

গোপত কথা নেকত করেং

এই সে বড় ছ্খ।
চলমল্যাকে চতুব গলি

হেটমুড়াকে জপু।
রস জানিলেং রসিক বলি
নৈলে বলিং ভেপু।
লোচন বলে আলো দিদি
ইঙা বল্লিং কেনে।
কালার সমানং রসিক নাই
এ ভিন ভূবনে ১১৫৭॥১৫৫।
পাঠাক্ষর

১। 'জ্বানার' ইত্যাদি স্থলে 'কি হৈল কি হৈল সই' ক, চ। ২। 'জ্লকে' ইত্যাদি স্থলে 'পথে যাইতে দেখা চইলে' ক, চ। ৩। 'সরম করা' ইত্যাদি স্থলে 'ভরম কৈরা সংম কৈরা' ক। ৪। রেস করিতে' ইত্যাদি স্থলে 'কালার সনে বনের কথার মনে পাইমু স্থা' ক, চ। ৫। 'হৈল' ক। ৬। 'বুকিলে' ক, চ। ৭। 'নৈলে বলি' স্থলে 'না বুকিলে' ক, চ। ৮। 'হলা বল্লি' স্থলে 'গালি দিলা' ক। ৯। 'কালার সমান' স্থলে 'কালা বই' ক।

নিকা

১০—১৪। "চলমল্যাকে" ইত্যানি। (মামনা)
চলমল্যা অর্থাৎ ক্ষিপ্রকারী লোককে চতুর ও অবনতমত্তক ব্যক্তিকে জ্বলীল বলিরা থাকি; সেইরণ
(প্রেম)-রস জানিলে রসিক বলিরা থাকি; বিং
(প্রেম)-রস না জানে, তাহা হইলে তাহাকে তেপু
অর্থাৎ শক্তকারী ব্রহাত্ত বলিরা থাকি।

बर्गाडी १५

কেনে কৈলুঁ পিরিভিন সাধ। পিরিভি-অঙ্ক হৈতে বত ছখ পাইলুঁ চিটে শুনিলে গণিবে প্রমান । প্রা মুঞি বলি জানিছুঁ থেড তবে কেন হব রড
না করিছুঁ হেন সব কাজ।
ভূলিলুঁ পরের বোলে কুলটা হইলুঁ কুলে
ভগত ভরিয়া রৈল লাজ ॥
বখন পিরিভি কৈল আনি চাঁদ হাতে দিল
পুন তারে না পাই দেখিতে।
কি করিতে কি না করি ঝুরিয়া ঝুরিয়া মরি
অবশেষে প্রাণ চাহে নিতে॥
পিরিভি জাধর তিন যাহার জন্মে চিন
কিবা তার লাজ কুল ভয়।
বহে ঘিজ চণ্ডীদাস যে করে পিরিভি-আশ
তার বুঝি এই দশা হয় ৪১৫৮।৯:৬॥

পাঠাস্তর

১। ইছা পার পুথির ১৪। ৭৭ সংখ্যক পদ। ২-৩। কোনিতু ক, চ। ৪। বিংশ্যা ৫। সেব' ক,খ,খ,চ।

পুনশ্চ শ্রীকৃষ্ণং প্রতি আকেপঃ।

वानकी 13

সৰি আর কি কহিতে ভবং। সব েয়াগিলু যাহার লাগিয়া **(म ८क्टन शंमध्य भव ॥** বে জন না জানে স্থান কুজন ভাহারে কৃথিব কি। অন্তর বাহির त्व कन कान्द्र তাহারে পরাণ দি ॥ কহিতে শুনিডে কামুর পিরিভি পরাণ কাটিয়া উঠে। मध-विश्वत করাত বেমন আগিতে॰ বাইতে কাটে।

126919671

পঠিক্র

১। ইহা পার পুথির ১৪ ৭৭ সংখ্যক পদ।
২। 'আর কি' ইত্যাদি ক্লে 'কহিতে বাসিলে ডর' পার। ৩। 'বুরো' পার। ৪। 'অম্বর বাহির' ক্লো মনের বেদন' পার। ৫। 'আসিতে' ক্লো 'আইতে' পার।

নিশ্বড়া।

স্বামি-তরজন গুহে গুরুজন या लागि ना मिन् कारन। সে জন আমারে এখন কি লাগি না চাহে নয়ান-কোণে। भड़े भविषे वृत्रम् कारण। माधित्व वार विनि चलद्रांट्य হুগত ভরিল লাজে। ধ্রু। আদর আরভি সে সৰু পিৰিছি भारे পড়িছে মনে। এমন কানিয়া 6±ম-পরাভ া এখন যায় পরাণে আগু অমুসরে नश्क व्यवना ना नि कि रय शहर । সময় বুঝিতে छ्याननाम व्यास्त्र (क कन এमन আছে ॥> ७०॥२६४॥ পাঠান্তর ১। 'भ्रत्र(व' क, छ। २। 'क्र्इं क।

अवात ।>

বাহার লাগিয়া কৈলুঁ কুলের লাঞ্না।
কত না সহিবে দেহে গুরুর পঞ্চনা।
বার লাগি ছাড়িলুঁ গৃহের যত স্থেই।
না জানি কি লাগি এবে সে জনা বিমুখ।
সঞ্জনি নিবেদলুঁ তোরে।
কলম্ব রহল সব গোকুল নগরে। এই।

ভিলেকে সে ভেয়াগিলুঁ পতি থুর-ধার। প্রবেশ না শুনলুঁ ধরম-বিচার। অবলা অথল-জাতি ভুলে পর বোলে। অনেক সাধের দীপ নিভাইলং

माँदिशंत (वटन ।

তুখের উপরে তুখ পরিজন-বোল। সতীর সমাজে দাঁড়াইতে হৈলুঁ তোর॥ জ্ঞানদাস করে ইথে কেমন উপায়। প্রোম-পরাভব তুখ সহনে° না যায়॥

まるらんまとい

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৪।৮০ সংখ্যক পদ।
২। 'গৃহের বত সুথ' স্থলে 'সকল গৃহস্থ' প-র।
৩। 'সক্ষনি নিবেদিলু' স্থলে 'আলো সই নিবেদিরে'
প-র। ৪। 'ভনিলাম' প-র। ৫। 'নিভে' চ;
'নিভাল্য' প-র। ৬। 'সাঁঝ' চ; 'সাঁফ' ক।
৭। 'হইলে' প-র।

यहरे ।)

ভালই আছিলুঁ আন-মনে।
প্রমাদ পড়িলং সেই খণে ।
কেনে শুনাইলা তার গুণ।
উপলিল আগুনের খুন ॥
নিশি দিশি যার গুণ গাই।
তারণ কেনে এতং নিঠুরাই॥
যার লাগি তেয়াগিলুঁ যর।
সে কেনে ভাবয়ে ভিন পর॥
যার লাগি কুলে দিলুঁ ছাই।
তারে কেনে দেখিতে না পাই॥
সভীর সমাজে হৈলুঁ মন্দ।
ভানদাস শুনি রছ শন্দ ॥১৬২॥১৬০॥
গাঠাতঃ
১। ইহা পান পুথির ১০৮১ সংখ্যক পদ।

২। 'পাড়িলে' প-র। ৩। 'সে' ক, ধ, ব, চ। ৪। 'এতেক' ক, ধ, ব, চ।

विद्यांत्र ।

বন্ধুর লাগিয়া সব তেরাগিলুঁ
লোকে অপ্যশ কয়।
এ ধন আমার লয় অহাত জন
ইহা কি পরাণে সয়॥
সই কত না মাধিব হিয়া।

আমার বন্ধুয়া আমন বাড়ী যায় আমারি 'আজিনা দিয়া॥

ষে দিন দেখিব আপন নয়ানে আন জন সত্ত্রে কথা।

কেশ ছিঁড়ি গেলিং বেশ দূর করি ভালিব আপন মাধা।

বন্ধুর হিয়া এমন করিলে না জানি সে জন কে।

আমার পরাণ করিছে যেমন এমনি° হউক সে ॥

জ্ঞানদাস ক**হে শুনহ° স্থুন্দ**রি মনে না ভাবিহ স্থান।

তুহঁ সে খ্যামের সরবস ধন খ্যাম সে ভোহারি প্রাণ ।

179012971

পাঠান্তর

>। 'আমার'ক,চ,। ২। 'ফেলি' ক,চ। ৩। 'এমন'ক,চ।ঙ। 'গুন হে'ক।

यानना ।

এ পথি হাম সে কুলবতি রামা। অনেক বতম হরি প্রোম হাপারপুঁ

বেৰত করল ওই খ্যামা ॥ এ ॥

বিহি কৈল কিবা বিভিগ আছিলু মালভি ভৈ গেল কেড কি ফুলেই। ভ্ৰমর নাহি আওত কণ্টক লাগি ছুবে° রহি ছুছ মন ঝুরে॰ ॥ যব তুত্ঁ দরশন দৈবে মিলায়ল কোন না কহে কত বোল। অন্তবে বৈদগধি-মাণিক ছাপায়ল ছুত্ ভেল পস্ক চোর॥ দখিণ নয়ন করি রঞ্চব কিয়েও ছরি বাম নয়ন করি আধা। গোপত পিরিতি খানি ८कान देवायन मञ् मत्न लागल थाना । কাঁদি গোঙায়ব কান্দিব রে কভ কাহারে করিব বিশোয়াস। धिक त्रष्टे कीवरन জানদাস কছ যো করে পর-পতিআশ> ॥ 1156818651

পাঠান্তর

১। 'কিবারিভি' ছলে 'বিপরীভি' ক; 'বিপ-রিভ' চ। ২। 'ফুলে' ক, খ। ৩। 'দুরে' ক, খ। ৪। 'ঝুরে' ক, খ। ৫। 'বব ছহু' ছলে 'ববহু' খ। ৬। 'কি' খ। ৭। 'কাফু' ক, খ। ৮। 'ধারা' খ। ৯। 'রহ' ক, চ। ১০। 'প্রভিমাশ' ক।

তিরোধা ধানণী।>

প্রেমক গুণং কছই সব কোই।
বা প্রেমে কুলবতি কুলটা হোই॥
হাম যদি জানিয়ে পিরিতি তুরস্ত।
তব কিয়ে বায়ব পাপক অস্ত॥
তব সব বিষসম লাগয়ে মোই।
হরি হরি পিরিতি করই জনি কোই॥

বিভাপতি কহ শুন বরনারি। পানি পিয়ে পিছে॰ জাতি বিচারি॥

1766112601

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৪।৮৩ সংখ্যক পদ।
২। 'গুণ' ক, খ, চ, প-র। ৩। 'কহব' ক,
খ, ঘ, চ। ৪। 'বো' ইডাদি ছলে 'বাহে কুলবভি
জন' প-র। ৫। 'বিষমর' ক, খ; 'বিষম' প-র।
৬। 'না করে' ক, খ, ঘ, চ। ৭। 'পাছে' ক।

সিশ্বড়া ।১

পুরুধ-রতন হেরি মন ভেল ভোর।
তিল-আধ্য হব লাগি ছব নাহি ওর॥
বড় অভিলাষে ভজিলুঁ বর নাহ।
দৈবে বিমুখ ভেল কি কহব কাহা॥
দরশন তুলহ তুলহ নব নেহ।
বিরহ-বিকল মন জিবন সম্দেহ॥
অপরুপ রূপ মধুর রস-লালা।
সকল নাগরিগণ-ক্ষণক শিলা ॥
অস্তিত কাজ সহজে মঝু ভেলা।
সোধ্যরি সো ভুমু নবং ঘৌবন গেলা॥
মরমক দুখ কহিতে হয় লাজ।
দারুণ দৈব কয়ল কোন কাজ॥
রসিক-শিরোমণি নাগর কান।
রস স্পিছত কবিরঞ্জন ভাণ॥১৬৬।৯৬৪॥

পাঠাস্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৪৯৬ ও প-র পুথির ১৪।৮৪ সংখ্যক পদ। ২। 'এক' প-র-সা, প-র। ৩। 'নাহি' ক। ৪। 'সকল' ইত্যাদি স্থলে প-র-সা পুথির পাঠ বথা—'নাগরি নাগর ঋণ নিক্বণ শিলা'। ৫। 'নথ' শব্দ ক, খ পুথিতে নাই। ৬। 'হুগ' ক, খ, চ, প-র-সা, প-র। ৭। 'ইফিড' ক; 'সদীত' চ; 'প্রসংস্কিত' প-র। छवा जात ।>

কত গুরু-গঞ্চন ত্রজন-বোল।
মনে কছুং না গণল ও° বলে ভোলে।
কুলজা-রাত ছোড়লুঁ যছ লাগি।
সো অব বিছুলে হামা'র অভাগি।
সোজর সোও র স্থি কহবি মুবারি।
ফুপুরুষ পরিহরে কি তুষণ বিচারি এজা।
বো পুন সহচরি হোয় মহিমান।
কর্মে পিশুন-বচনে অধান।
নারি অবলা হাম কি বোলব মান।
তুহুঁ রসনান্দ-গুণক নিধান।
মধুর বচন কহি কামুকেণ বুরাই।
এই কর দোখ রোখ অবলাই।
ভুলুঁ বর চহু'র হাম কিয়ে জান।
ভুণুয়ে বিভাপতি ইহ রস গান।

126912541

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৪।৮৫ সংখ্যক পদ।
২। 'কিছু' ক; 'কছু' প-র। ৩। 'পিরা' প-র।
৪। 'ভোর' থ। ৫। 'কিছ্থ' হলে 'ছ্থ' ক;
'রূথ' থ, খ, চ। সাহিত্য-পরিবদের সংখ্রণে 'দোথ'
পাঠ গুথীত হইরাছে; কিছ ঐ পাঠ কোন হত্তলিখিত পুথিতে ছুট হইল না। প্রপরিনার দোব
ক্ষমা করাই অপুক্ষের কর্ত্তব্য; স্তত্তবাং 'অপুক্ষথ
পরিহত্তে দোধ বিচারি' এইরপ বাক্য নারিকার
মুখে তেমন সক্ষত বোধ হর না। ৬। 'রসনানম্ম'
ইত্যাদি হলে 'রস কানন স্ব ভাগধান' প-র। ৭।
'পিরাকে' প-র।

ोका

৫—৬। "লোঙরি" ইত্যাদি। ছে স্বি । জুবি
শ্বরণ করিবা শ্রীকৃষ্ণকে কহিবে—অপুক্ষ কি ছঃও
ভাবিরা (প্রণরিনীকে) পরিভ্যাপ করে । (অর্থাৎ
বহিও প্রণরিনীর রূপ-৩৭ না থাকার, ভাবার সহিভ

সন্মিলন স্থ-জনক না হইয়া ছঃথের কারণ হইয়া থাকে, তথাপি শ্রেষ্ঠ নারকের এরপ ধর্ম নহে বে, সেই চঃশ মনে করিয়া পদান্রিতা নারিকাকে পরি-ভাগে করেন !)

শ—৮। "বো" ইত্যাদি। কে সহংবি। বে বাক্তি বুজিমান্ হন, (তিনি) খলের বাক্যে অবধান করেন অধাথ ঐ বাকা সভা, কি মিধ্যা, ভাষা বিচার করিলা দেখেন। (পুতরাং খল বাক্তি আমার কেনে গুণাম করিলা খা;কলে, সেক্সন্ত আমি অবিচারে পরিভালো নহি)।

৯—> । "নাবি" ইত্যাদি। আমি অবলা নারী আবি কি বলৈব ? (আমার প্রাণেশ্বর) ভূমি রদনার আনন্দ-জনক গুণের আকর ! (অর্থাং ভূমি নিজ শুণে আমার সকল অপুলাধ মার্জনা করিবে)।

১১—১২। "মধুব" ইতাদি। (ছে স্থি!)
তুমি মধুব বাগ বাগরা একজ্ঞাকে ব্রাইনে বে, তুমি
(শ্রীরাধার) দোব ও তোমার কোপের স্পতিঅস্পতির বিচার করিয়া, (বদি কর্ত্তব্য হয়), এইক্লা (আচ্নণ) কর।

वानने ।>

গুরুত্রন পরিজন কেং নাহি গঞ্জ (क॰ नाहि कद्राय विशान। আপন অপ্যণ ষণ করি মানলু श्राप्त्र ना खारलू व जान । স্থি হে কামুকে কহবি সন্থান। এত দিন প্ৰেম গোপত করি রাধলু व्यव एकत मूर्वा भव्याम । अ। ় **৩**৭° লাগি প্রাণ তৃণহঁ করি মানপুঁ কি করব কুলবভি-ছাভি। कर कविएमध्य অমুভবে জানপু পিরিভিক বৈছন্দ ভাতি !

120012001

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র পুথির ১৪৮৬ সংখ্যক পদ।
২-০। 'কো'প-র। ৪। 'অব্যশ'খ, ঘ। ৫।
'ভাবই'খ, ঘ, চ।৬। 'অব' ইত্যাদি হলে 'অব্হ'
ডেল'খ, ঘ। ৭। 'এইন' প-র। ৮। 'এছন'
প-র।

यहरे ।)

কোতৃকে দুহুঁ কুল- কমল তেয়াগলুঁ
বো পদ-পক্ষ আশ।
পাছক মীন দীন জমু লাগল
না গুণল মরণ-তরাস ॥
সজনী নিক্রণ-হাদয় মুরারি।
অব ঘর যাইতে ঠাম না পাইয়ে

পরিজন দেওই গারি॥
গগনক চান্দ পাণিতলে বারলুঁ
সাগরে নগর-বেভার।
অমিয়া-ঘট বলি হাথ পসারলুঁ

পায়লুঁ গরলক ধার ॥১৬৯॥৯৬৭॥ পাঠান্তর

১। এই পদটি ক, ৰ ও চ পুৰিতে নাই; ঘ পুৰি হইতে পদ-সংখ্যার পুরণার্থ উদ্ধৃত হইল।

वैवात ।>

সঞ্জনিং কাসুকে কহবি বুঝায়।
ব্যোপিয়া° প্রেম-বিজঃ অঙ্কুরে মোড়লিণ
বাঢ়ব॰ কোন উপায়ুণ ॥
তৈল-বিন্দু বৈছে পানি পসারলণ
তৈছন তুয়া অসুরাসে।
সিকভা জল বৈছে খণহি শুখায়ল
ঐছন ভোহারি সোহাগে ॥
কুল-কামিনি ছিলুঁ কুলটা ভৈ গেলুঁঁ
ভাকর বচন লোভাইণ।

আপন করে হাম
কাসুসেং প্রেম বাঢ়াই ২০ ॥

চোর-রমণি জমু১০
মনে মনে বোরই
অথবে বদন ছাপাই ২০ ।

দৌপক লোভে
শালভ জমু ধারল ১০
নো ফল ভুক্জইতে চাই ॥
ভণয়ে বিস্তাপতি
ইহ কলিযুগ-রিভি
চিন্তা না কর কোই ।
আপন করম-দোষ
আপহি ভুক্জই
বো জন পরবশ হোই ১২৭০॥৯৬৮॥

পাঠাস্তর

১। ইছা প-র পুথির ১৪।৮৮ ও ৪০।৯১ সংখ্যক পদ। প-র পুথিতে নিয়লিখিত অভিরিক্ত কলিবারা এই পদটি আরম্ভ করা হইয়াছে; যথা,—

অগোর চন্দন তহু অফুলেপন
কো কছে শীতল চন্দা।
পিশ্প বিনে সো পুন আনল বরিধ্যে
বিপদে চিনিয়ে ভাল মন্দা॥

২। 'গুন সজনি' প-র। ৩. 'রোনি' প-র। ৪।
'প্রেমের বাজ' ক, চ; 'প্রেমবাজ' ব, প-র। ৫।
'ভাললি' ব। ৬। 'বাচব' ক, প-র; 'বাড়ব'
ঘ। ৭। 'বাঢ়ব' ইত্যাদি স্থলে 'এ অতি কোন
বড়াই' প-র। ৮। 'তৈলবিন্দু' ইত্যাদি ক্লিটি
প-র পূথিতে নাই। ৯। 'কুলকামিনি' ইত্যাদি
স্থলে প-র পূথির পাঠ যথা—

'কুলৰতি হোই কুলটা-পদ পাওপু'

১০। 'তাকর' ইত্যাদি দ্বলে 'কাম্থ সঞ্জে লেহ
ৰাড়াই' প-র। ১১। 'আপন করে' ইত্যাদি
পংক্তিবর প-র পুথিতে নাই। ১২। 'কাম্থক'
ব, দা। ১৩। 'বড়াই' ঘ; 'বাড়াই' চ। ১৪।
'চোর-রমণি জম্ম' দ্বলে 'চোরজন-প্রিয়া বৈদে' প-র।
১৫। 'বাপাই' প-র। ১৬। 'ধারই' প-র।
প-র পুথির ৪০।১১ সংখ্যক পদে 'দীপক লোভে

ইত্যাদি পংক্তি ছয়টি নাই ; উহার হুলে নিম্নলিখিত পংক্তিগুলি দৃষ্ট হয় ; যথা,— 'এখন তখন করি দিবদ গোঙায়লুঁ দিবদ দিবদ করি মাদ। মাদ মাদ করি বরিখ গোঙায়লুঁ হোড়লুঁ জিবনক আলা॥ বরিখ বরিখ করি জনম গোঙায়লুঁ জরা জারত তমু পালে। হিম গরল জমু হিম গিরি বরিখরে কি করবি মাধবি-মাদে॥'

शंकांत्र ।>

মনে ছিল না টুট্ব নেহা।
স্কলক পিরিতি প্যাণকং রেহা।
তাহে ভেল অতি বিপরীত।
না জানিয়ে ঐছন দৈব-গঠীত ।
এ স্থি কহবি বন্ধুরে কর যোড়ি।
কী ফল ওপ্রেমক অঙ্কুর মোড়ি ॥ গ্রা
যদি কহ তুর্ত অগেয়ানা।
হাম সোঁপল হিয় নিজ করি জানি॥
বিভাপতি কহে লাগল ধন্দা।
যাকর পিরিতি সো জন অস্কা॥

পাঠাস্কর

১। ইকা প-র প্থির ১৪৮৯ সংখ্যক পদ। ২। 'পাবাণ সম' ক। ৩। 'দৈবগঠিত' ক, प; 'দৈব ক্রিড' প-র। ৪। 'কি ফল' ক, খ। ৫। 'আঁকুর' খ। ৩। 'হিয়া' ক।

वानक ।>

পহিলে পিয়া মোর মুখে মুখে থেবলও তিল এক না ছোড়ল অস। অপক্লপ প্রেম- পালেও তমু গাঁথল অব ডেজল মোর সঙ্গ ঃ সঙ্গিনি হাম জিয়ব কপি লাগি।

যা বিনে তিল এক রহই না পারিয়ে

সো ভেল পর-অফুরাগী ॥ গ্রু ॥

অঙ্গুলক আঙ্গুডি সো ভোল বাহুটি

হার ভেল অভি ভার।

মনমথ বাণহি অন্তর জর জর

সহই না পারিয়ে আর ॥১৭২॥৯৭০।
পাঠান্তর

১। ইছাপ-র পুথির ১ গান । সংখ্যক পদ।
২। 'মুখ'ক, প-র। ৩। 'হেরি রহে' প-র।
৪। 'আনশে'ক; 'ফাঁদে' চ। ৫। 'স্থি'ক,
খ,চ। ৬। 'অক্সি'প-র। ৭। 'অক্স'প-র।

পুনশ্চ সখ্যক্তিঃ তথা মিলনম্।

এ সথি কাহে করসি অমুষোগে।
কানুসে অবহি করবি প্রেম ভোগে ॥
কোনেই লেয়ব সথি তুক্ত কি পিয়াই।
হাম চললু তহি থির কর হিয়া ॥
কানু সমিণে যাই মিলল সবিং।
প্রেমক রাভ কহল সব তুখি ॥
শুন ভহি কানু মিলল ধনি-পাশ।
বিভাপতি কহে অধিক উলাস ॥১৭৩॥৯৭১।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৪।৯৫ সংখ্যক পদ।
২। 'কোলে' ক, খ। ৩। 'কোনে' ইত্যাদি
ছলে প-র পুথির পাঠ যথা—'কোন লওব ধনি
ভোহারি পিরা'! ৪। 'তাই' ক। ৫। 'কার
সমিপে' ইত্যাদি ছলে ক, খ, খ, চ পুথির পাঠ যথা,
'এত কহি কারু পালে মিলল সোই সধী।'
'এত কহি' ইত্যাদি পাঠ ছলোভল-ছই; বোধ হর,
'কহি কারু পালে' ইত্যাদি প্রকৃত পাঠ হিল। ৬।

'ছ্ৰি' পাঠ সকল পুথিতেই দৃষ্ট হয়; স্থতরাং 'দৃৰি' বা 'দোথি' পাঠ সমীচীন হইলেও প্রমাণাভাবে উহা গুহীত হইল না।

বিহগড়া।

নব অনুরাগে মিলল ছত্ত কুঞে।
আবেশে কহয়ে ধনি রস পরিপুঞ্জে।
বন্ধু হে কি বলিব ভোরে।
ভোমা বিনে দেখোঁ মুঞি সব লান্ধিয়ারে ॥ধ্রু॥
পাইয়াছি ভোমারে বন্ধু না ছাড়িব আর।
যে বলুং সে বলুং মোরে লোকে ছ্রাচার॥
এক ভিল ভোমা বন্ধু না দেখিলে মরি।
ছাড়িয়া কেমনে যাব পরাধান নারী॥
হিয়ার মাঝাবে খোব বসনে ঝাঁপিয়া।
প্রেমদাস কহে রাই দড়ং কর হিয়া॥

115981129211

ইতি আক্ষেপামুরাগঃ সম্পূর্ণ:। ইতি একাদশপল্লবঃ।

পাঠান্তর

>। 'দেখো' ক, ঘ। ২-৩। 'বলু' চ। ^{৪। 'দ}ঢ়'চ।

> ততঃ পুনশ্চ অভিসারামুরাগঃ রাত্রো যথা।

> > **बि**रगीत्रहकः।

यहरे ।>

চল দেখি গিয়া গোরা অতি মনোহরে। অপক্ষপ ক্ষপ গোরা নদীয়া নগরে॥ চল চল কবিল কাঞ্চন জিনি অক। কে দেখি ধৈরজ ধরে নরান-ভরক॥ আজামূলস্থিত ভুজ কনকের স্তম্ভ।
অরুণ বসন কটি বিপুল নিতম্ব॥
মালতীর মালা গলে আপাদ দোলনি।
বাস্থ কহে চল দিব পরাণ নিছনি॥১॥৯৭৩॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৪২৩ সংখ্যক পদ।

उषा वात्र 15

চলু নব নাগরি-মালা।
গোরা-রূপ হিয়ে উজিয়ালাং॥
গুরুজন-ভয় নাহি মান।
হেরইতে কয়ল পয়ান॥
অপরূপ স্থরধুনি-তার।
বহতহি মলয়-সমার॥
সকল ভকতগণ মাঝ।
নাচত গোরা বিজরাজ
হৈরি সভে চমকিত ভেল।
নয়ন নিমিষ হরি গেলং ।২।৯৭৪॥
পাঠাধর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪২৪ সংখ্যক পদ। ২। 'উজিয়ারা' খ, প-র-সা। ৩। 'লেল' প-র-সা।

> তত্ৰ শ্ৰীমন্ত্যা যথা। ধাৰী।

কামু-অমুরাগে হৃদয় ভেল কাতর রহই না পারই গেহে^২।

গুরু-ফুরুঞ্জন-ভর কছু নাছি মানরে

हित° नोटि मश्रकः (पर≅°॥ (प्रथ (प्रथ नव॰ व्यञ्जतांगक बोड°।

খন আদিয়াৰ ভুলগ-ভয় কত **শত** তৃণ্**ত্না° মানয়ে ভীত ॥ এ**শ ॥ স্থিগণ স্থ

তেজি চলু একসরিশ

হেরি সহচরিগণ যায়।

অদভুত প্রেম-

তরকে তরঞ্চিত

তবছ সঙ্গ নহি পায়॥

চললি কলাবতি অভিশয় রস-ভরে

পন্থ বিপথ নাহি মান।

জ্ঞানদাস কহ

এহ অপরুপ নহ

মনহি উজোরল কান ॥৩॥৯৭৫॥ পাঠাস্কর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৪২৫ সংখ্যক পদ।
২। 'বেছ' ক, প-র-সা। ৩। 'চীর' ক, থ,
প-র-সা। ৪। 'বেছ' ক, প-র-সা। ৫। 'নব'
শক্ষ ক. ব, চ ও প-র-সা পুথিতে নাই। ৬। 'অফ্রাগ রীত' ক, খ। १। 'ভ্লছ না' ফ্লে ভ্লছ'
ক; 'ভ্লছ' না' খ; 'ভ্লছ' প-র সা। ৮। 'স্থিপ্ল' ইত্যাদি ফ্লে ক পুথির পাঠ ঘ্লা,—'স্থীগ্ল
ভেজি চন্তু এক শ্রী'।

(क्रांत्र 1)

নব অনুরাগিণি রাধা।
কছু নাহি মানরে বাধা।
একলি বয়লি প্যান।
পান্থ বিপথ নাহি মান॥
তেজল মণিময় হার।
উচ কুচ মানরে ভার॥
কর সঞ্জে কঙ্কণ মুদরি।
পান্থহিঁ তেজলি সগরিং॥
মণিময় মঞ্জিরং পায়।
হরহিঁ ভেজি চলি যার॥
যামিনি ঘন-আজিয়ার।
মনমথ হিয়েং উজিয়ার॥
বিভিনি বিথারিত বাট।
তথ্যক জায়ুধে কাট॥

বিভাপতি মতি জান। ঐছে না হেরিয়ে আন ॥৪॥৯৭১॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪২৬ সংখ্যক পদ। ২। 'সারি' থ। ৩। 'মঞ্জীর' ক, খ। ৪। 'দুরহি' ক, থ। ৫। 'হেরি' ক, প-র-সা।

তত্র সঙ্কেতকুঞ্জে শ্রীকৃষ্ণোৎকণ্ঠা।
ছুণানী।>

রয়নিং ছোটি অতি ভারু রমণী।
কতি খনে লাওব কুঞ্জর-গমনী॥
ভীমণ ভুজজমণ সরণাণ।
কত সক্ষট তাৎেণ কোমল-চরণাণ॥
বিহি পায়ে করেঁশ পরিহার।
অবিবিনেণ স্থানর করু অভিসার॥ধ্রা॥
গগনে সঘন মহি পক্ষা।
বিঘিনি বিধারিতংগ উপজ্বে শক্ষা॥
দশ দিশ ঘন-আজিয়ারংগ।
চলইতে খলই লখই নাহি পারংগ॥
সব জনিংশ পালটি ভুললিংগ।
আওত মানবি ভাল তংগ লোলি॥
বিভাগতি কবি কহই।
প্রেমহি কুলবতিংশ পরাভব সহই॥ধ॥৯৭৭।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পূথির ১৪২৭ ও প-র প্ৰির ১৫।২৪ সংখ্যক পদ। ২। 'রাভি' প-র; 'বরাবহি' প-র-সা। ৩। 'রীম' ধ; 'ভিত' প-র। ৪। 'ফুফফিম' ধ, ঘ। ৫। 'লবণা' ধ, চ। ৬। 'কত' ইত্যাদি ফলে 'বাটহি শক্ষট' প-র। ৭। 'বচনা' ধ। ৮। 'করি' ক, প-র-সা। ৯। 'আবিঘনে' ক, চ। ১০। 'বিধারভ' ক। ১১। 'আবিঘনে' ক, ধ, ঘ, চ, প-র। ১২। 'পার' ফ্লে 'পারা' ক, ধ, ঘ, চ, প-র-সা। ১০। 'সব জনি' ছলে
'সব জন' প-র-সা; 'সজনি' সা-প ২০১ গুপি। ১৪।
'সব জনি' ইত্যাদি পংক্তিছর প-র পুথিতে নাই।
১৪। 'জাওত মানবি ভানত' হলে 'আওত মানবি
ভাসত' প-র-সা; 'আওত য়ান বিভানত' সা-প
২০১ পুথি। ১৬। 'কুলবভি' হলে 'কুলবধু' খ, ঘ।

টাকা

১১-১২। "সৰ জনি" ইত্যাদি। এই পংক্তি ছুইটির অর্থ লইয়া বিশেষ গোলযোগ আছে; বিভা-পতির পদাবলীর সম্পাদকগণ নানা জনে নানারূপ অর্থ করিয়াছেন: কিন্তু নিরণেক্ষ ভাবে বিচার করিলে সেই স্কল অথের কোনটিই স্মীচীন বলিয়া বোধ হয় না। আমাদিগের বিখাদ যে, মুদ্রিত পাঠে লিপিকর-প্রমাদ আছে। গুরাচান পুথির 'ন' ও 'ন' অক্ষরের প্রভেদ অতি সামান্ত: অনভিজ্ঞ লিপি-করের হাতে পড়িয়া সেই প্রভেদ লুপ্ত হওয়া ও 'ভাৰ ত' পাঠ 'ভাৰত' পাঠে পরিণত হওয়া কিছুই বিচিত্র নহে। 'ভাল ড' পাঠ স্বীকার করিলে এরপ অর্থ হইবে বে,—'শ্রীরাধা (ভয় হেতু) প্রত্যাবৃত্ত হইয়া (সঙ্কেত-কুঞ্জে আমার সোৎকণ্ঠ-ভাবে অবস্থান ইত্যাদি) সকল বিষয় পাছে ভূলিয়া গেল! (এরূপ इक्ति) व्यानित्न मत्न कतित. त्न विनक्षण हक्ष्मा वर्षार छरक्रा-भानिनी वटि।'

সা-প ২০১ সংখ্যক পুথির পাঠ গ্রহণ করিলেও প্রার এইরূপ অর্থ ই ছইবে। 'তানড' বা 'বিভানড' শক্ষের অর্থ 'বিভার করে' বা 'প্রকাশ করে'; রতরাং 'আগুত রান বিভানত লোলি' পাঠের 'রান' শক্ষি স্পষ্টতঃ 'জান' কিংবা 'জান' শক্ষের হলে লিপিকর-প্রমাদ গণ্য করিলে বথাক্রমে অর্থ হইবে—(শ্রীরাধা) জাদিলে অপুর্ব লোলতা প্রকাশ করিবে, (ভবিষ্যুৎ-সামীপ্যে বর্ত্তমান প্রয়োগ) কিংবা 'শ্রীরাধা আদিলে জানিব (সে) লোলতা প্রকাশ করিতেছে।' 'আগুত জানবি ভানত লোলি' পাঠ করনা করিলেও ঠিক এইরূপ অর্থ ই ছইবে। এই সকল পাঠের মধ্যে আম্বরা 'আগুত মানবি

ভাশ ত শোলি।' পাঠই সমীচীন বশিয়া বিবেচনা করি। ঃ.♥

শ্রীরাগ 1১

একলি কুঞ্জহি কান।
পথ গেরি আকুল পরাণ॥
মনমপে জর জর ভেল।
তৈখনে কুন্দরি গেল॥
কেরই নাগর কান।
কোর অমিয়া-সিনান॥
নব অমুরাগিনি নারি।
কি কহব কহই না পারি॥
নাহ-দরশেং ভেল ভোর।
কো কহ আরহি-ওর॥
সহচরিগন পিছে গেল।
হেরি ছক্ত আনন্দ ভেল॥
পূরল মন-অভিলাষ।
জ্ঞান কহই সধি পাশ॥৬॥৯৭৮॥

হ:ঠাস্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১৪২৮ সংখ্যক পদ। ২। 'দরশনে'ক,চ।

याननी ।>

মাধব কি কহব দৈব-বিপাক²।
পথ-আগমন কথা কত না কহিব হে°
বিদ হয় মুখ লাখে লাখ ॥ ঞ ॥
মিন্দির তেজি যব পদ চারি॰ আওলুঁ
নিশি হেরি কম্পিত অফ।
ভিমির ত্রন্ত পথ হেরই না পারিয়েণ
পদমুগে বেড্ল ভুজক ॥
একে কুল-কামিনি ভাহে কুল-বামিনি
সোর গহন অভি দুর।

আর তাহে জলধর বরিখয়ে ঝর ঝর

হাম যাওব° কোন পূর ॥

একে পদ-পক্ষ পদে বিভূষিত

কণ্টকে জরজর ভেল।
ভূয়া দরশন-আশে কছু নাহি জানলুঁ *

চির ভূখ অব› ছর গেল॥
ভোহারি মুরলি যব শ্রাবণে প্রবেশল
ভোড়লুঁ গৃহ-স্থ আশ।
পাছক দুখ১১ তৃণ- হুঁ করি না গণলুঁ ১২

কহতহি গোবিন্দ দাস ॥৭॥৯৭৯॥
গাঠাস্কর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪২৯ ও প-র পুথির ১৫।২৬ সংখ্যক পদ। ২। 'দৈবক পাক' প-র-সা। ৩। 'পথ' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ,—'পথে যত অন্তর্ম তাহা বা কহিব কত'। ৪। 'ছই' প-র। ৫। 'হেরই' ইত্যাদি স্থলে 'লথই না পারই' প-র। ৬। 'থরতর' প-র। ৭। 'রহব' শ-র-সা, প-র। ৮। 'পুর' ক, থ, প-র-সা, প-র। ৯। 'ছুয়া' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ—'ছুয়া মুখ দরশনে সব স্থথ পাওব।' ১০। 'সব' প-র। ১১। 'ছথ' ক, খ, প-র-সা, প-র। ১২। 'পছক' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ—'বৈছনে আওলুঁ তৈছনে দেখিলুঁ'।

ততঃ সম্ভোগঃ।

বিহাগড়া।>

কিবা সে দোঁহার রূপ।

কিশোর-কিশোরা- রূপ গসারই

সরস রসের কূপ। গুল।

অরুণ-কিরণেং মলিন ইন্দু

কুমুদ মুদিত লাজে।

চান্দের ভরমে চকোর মাতল

ইন্দীবর হাসে মাবেল।

চান্দের উপরে চান্দ পেখল हेन्द्रूद्र^७ উপরে শশী। প্রেমের হ্যাবেশে পিয়ে রস-স্থা খঞ্জন-যুগল পশি॥ যমুনা-ভরজে व्यक्तम উদয় তারার পদার তথা। অরুণ ঝাঁপিয়া তিমির রহল কিয়ে অদভুত কথা। স্থমেরু-শিখর কনক-গতায় ঘনের জনম তায়। মুকুতা ফলিল ঘনের লগায় কেবা পরতীত যায়॥ ८म द्राधामाध्य-রসের বৈভব কহিতে শক্তি কায়। না জানে সাঁতার রসের পাথারে ডুবল শেখর রায় ॥৮॥৯৮०।

পাঠাস্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৪৩০ সংখ্যক পদ। ২। 'কিরণ'ক। ৩। 'ইন্দু'থ, ব, প-র-সা। ৪। 'উদয়ে'ক। ৫। 'রস'ক।

টাকা

৪—१। 'অরূণ' ইত্যাদি। অরুণ অর্থাৎ
প্রীরাধার ললাটাইত সিন্দুর-বিন্দুর জ্যোতির ধারা
ইন্দু অর্থাৎ তৎসংলগ্ধ শ্রীক্লফের ললাট-স্থিত চন্দনবিন্দু নিপ্রভ হইল। (ইন্দুর নিপ্রভাতা দর্শনে)
কুমুদ অর্থাৎ প্রীরাধার নেত্র লজার মুদিত
হইল। (এ স্থলে অতিশরোক্তি অলঙ্কারের ধারা
প্রীরাধার সম্ভোগ-স্থ-জনিত নেত্র-নিমালন ব্যঞ্জিত
হইতেছে)। চকোর অর্থাৎ প্রীরাধার মুখচজ্রের
ক্থাপারী শ্রীক্লফের বদন চক্র-প্রমে অর্থাৎ
প্রীরাধার বদনের সহিত চজ্রের সামৃষ্ঠ দর্শনে
ক্রাভ হইরা (অধ্যর-মুধাপানে) মন্ত হইল;

'(ইছা দেথিয়া) ইন্দীবর অর্থাৎ শ্রীরাধার নয়ন মধ্যে । থাকিয়া (কৌতুক হেতু) ছাসিতে লাগিল।

১২—১৫। "যমুনা" ইত্যাদি। যমুনা-তরকে

অগং স্থনীল শ্রীক্লফের দেহের উপরে শ্রীরাধার দোহল্যমান হারের মধ্য-মণিক্রপ হর্যের উদয় হইল এবং দেই স্থলে হারের মুক্তা-রাজি-ক্রপ ভারাগণের বিস্তার হইল। (শ্রীরাধার উত্মুক্ত বেশ-শাশ-রূপ) তিমির (আন্দোলন-বশতঃ) তাঁহার (হার-মধ্য-মণি-রূপ) স্থাকে আচ্ছাদন করিল—কিক্রপ অন্তত কথা! ১৬—১২। "কনক-লভায়" ইভ্যাদি। (শ্রীরাধার কুশ দেহ-রূপ) স্থণিভায় (স্তান-রূপ) প্রমেক-শিধর,—ভাহাতে (কেশ-পাশ-রূপ) মেম্বের উদ্ভব; দেই মেদ্ব-লভায় অর্থাং বিকাপ কেশ-কলাপে (শিরো-ভূষণ) মুক্তা-জালের উৎপত্তি হইল; (এইরূপ অন্ত কথা) কে বিখাস পাইবে?

(क्षांत्र 1>

ভূমি বৃন্দাবন র্তি র**ণ-রঞ্চ** রণ-বাজন পিকু-রাব। দোসর মনমথে চঢ়লং মনোরথে পরিমলে অলিকুল ধাব॥ দেখা রাধামাধ্য মেলি। চরিত নাহি সম্ঝিয়ে ছুত্কর চপল किए व कन्ड किए व किला धा ক্ৰবি কুচ-ক্ঞুক জরজর চন্দন বিপুল পুলক ফ্ল-বাণ। তুত্ত মণি-কিফিণি ছ্ছ নৃপুর-ধনি কঙ্কণ-বলয়া-নিসান॥ হ্ছ ভুজ-পাশ পরি তুহুঁজন বন্ধন অধর-ভূধা করু পান। চিকুর শিখি-চন্দ্রক আকুল বস্ন (गाविम्ममाम त्रम गान ॥२॥२४)।

পাঠান্তর

১। ইছাপার পুথির ১২।০ সংখ্যক পদ। ২।
'গ্রহুঁচ চূল' ক, গ। ৩। 'দেখ স্থি' প-র। ৪।
'ক বিরি কচ-ক ঞূক' স্থলে 'কর কুচক ঞূক' ক;
'ক বচহি ব ঞূক' থ, ঘ। ৫। 'চিকুর শিধি-চ ক্লক'
স্থলে 'র ভনময় অভরং' প-র।

নৰ অমুরাগী নব অমুরাগ। মীলল ছক্ত তমু গলে গলে লাগ॥ ইত্যাদি পূৰ্বেবাক্তপদানি গেয়ানি।

তথা রাগ।
রাধামাধব রতি-রণ বিরমে ।
বৈঠল মাধব রাধা বামে ॥
বেরি সহচরি কোই চামর বিজই ।
বয়ান পাখালি বসনে কোই মোছই ॥
কোই সখি দেয়ল তামুল বয়নে ।
আনন্দে হেরই চরচর নয়নে ॥
কোই সভি দেয়ত গন্ধ স্থবাসে ।
চরণ সেবন করু বলরাম দাসে ॥১ •॥৯৮২॥
ইতি অভিসারাসুরাগান্তে মিলনম্ ।
ইতি অদিশপল্লবঃ ।

ত্যথ অভিসারোৎকণ্ঠা। শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

মলার 13

বিরলে বসিয়া গোরা রায়।
আপাদ মস্তক পুলকে পুরিত
প্রশেশ ধারা বহি যায়। গ্রান্থ।
সহচরগণে কছরে বচনে
রহিতে নারিয়ে ঘরে।
নালের নন্দন পাই দরশন

ত্রেং সে পরাণ ধরে॥

অঞ্চে বিলেপন কস্তবী চন্দ্ৰ गत्न नीनमनि-माना। এ সাজ সাজায়েণ অসের ছটায়ে ভুবন করিলে আলা॥ দেখিয়া গৌর ভাবিয়া অন্তর বসনে ঝাঁপয়ে তফু। চাঁচর চিকুর বেড়িঃ নানা ফুল जलाप विक्रो जमू গোরাঙ্গ স্থন্দর সঙ্গে সংচর ञ्जधूनो-ोटज ५८० । ভাবাবেশং মন আকুল বচন এ দাস মোহন বলে ৷ ১১৯৮৩৷ পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপৃথির ১৪০১ সংখ্যক পদ। ২। 'সবে' ক, খ, প-র-সা। ৩। 'সাজ্রে' ক, খ, চ, প-র-সা। ৪। 'বেড়ি' ক। ৫। 'ভাবা-বেশে' ক, প-র-সা।

अवगवे ।)

গগনে অব ঘন মেহ দারুণ সঘনে দামিনি ঝলকই। কুলিশ-পাতন-भवन यन यन প্রন খরতর বলগই ॥ সজনি আজু গুরদিন ভেলং। হ্মারি কান্ত নি-তান্ত আগুসরি मद्भाव-कूक्षरि (भन । धा তরল জলধর वित्रिक्ष यात्र यात्र গরজে ঘন ঘন ঘোর। শ্রাম নাগর धकि देक्ड्र পশ্ব হেরই মোর 🛭 সঙ্গি মসু তমু অবশ ভেল জমু जवित्र धत्रधत्र काँश।

এ মর্ গুরুজনঘার ভিমিরহি ঝাঁপ ॥

তুরিতে চল অব কিয়ে বিচারহ
জিবন মরু আগুসার।
রায় শেখর - বচনে অভিসর
কিয়ে সে বিঘিনি বিধার ॥২॥৯৮৪॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৩২ সংখ্যক পদ।
২। 'সজনি আজু গ্রদিন ভেল' হইতে 'গরজে ঘন
খন ঘোর' পর্যান্ত পাঁচটি পংক্তি থ পুথিতে নাই;
উহার হণে থ পুথির পাঠ, যথা—'সক্তনি আজু গ্রদিন ঘোর।' ৩। 'জীবন' ক, চ, প-র-সা।
এই পদটি বিষম-মাত্রিক ত্রিপদী-ছন্দে রচিত;
ধ্বব বাতীত ইহার প্রত্যেক চরপ-ছরে নিম্ন-লিখিতরপ
মাত্রা-বিভাগ দৃষ্ট হয়; যথা,—

0+8 0+8 0+8+81

স্থতরাং 'জিবন' স্থলে 'জীবন' পাঠ গ্রহণ করিলে ছন্দোভঙ্গ হয়। ৪। শ্রীমৃক্ত নগেক্ত বাবু 'রায়-শেষর' স্থলে 'কবিশেষর' পাঠ ধরিয়া এই পদটি বিভাপতির রচনা বলিয়া স্থির করিয়াছেন; কিন্তু এখানে ছন্দ-স্মুসারে যে 'কবিশেষর' পাঠ হইতে পারে না—তাহা লক্ষ্য করেন নাই।

তিরোধা ধানশী।>
বিরবির বরিথে সঘনে জল-ধারা।
দশ দিশ সবহুঁ ভেল আন্ধিরারা।
এ সধি কীয়ে করব পরকার।
অব জনি বাধয়ে হরি-অভিসার। গ্রুণ।
অন্তরে শ্যাম-চন্দ পরকাশ।
মনহি মনোভাব লেই নিজ পাশ।
কৈছনে সংক্ষতে বঞ্চয়ে কান।
সোঙরিতে জর জর জনির পরাণ।

ঝলকই দামিনি দহন সমান।
বনঝন শবদং কুলিশ ঝনঝান ॥

ঘর মাহা রহইতে রহই না পার।

কি করব এ সব বিঘিনি বিথার ॥

চচ্বং মনোরপে সারথি কাম।

তুরিতে মিলায়ব নাগর ঠাম ॥

মন মাহা সাথি দেয়ত পুনবার।

কহ শেখর ধনি কর অভিসার ॥৩॥১৮৫॥

পাঠান্তৰ

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৪০০ সংখ্যক পদ। ২। 'শক্ষ'ক। ৩। 'চঢ়ল'প-র-সা।

कारमार । कानड़ा ।>

ক্ষরে ডম্বর ভরু নব মেই।
বাহিরে তিমিরে না হেরি নিজ দেই॥
অন্তরে উয়ল শ্রামর-ইন্দু।
উছলল মনহিঁ মনোভব-সিকু॥
অব জনি সজনী করহ বিচার।
শুভখণ ভেল পহিল অভিসার।
ফুল্ডখণ ভেল পহিল অভিসার।
ফুল্ডখণ ভেল পহিল অভিসার।
ফুল্ডখণ ভেল পহিল কভিসার।
ফুল্ড পহিরায়হ নীল নিচোল॥
কী ফল উচ-কুচ-কুকুক ভার।
ফুর কর সৌতিনি মোতিম-হার॥
ডুল্ড স্থা দেখহ দেহলি লাগি।
গুরুজন অবর্ত খুমল কিয়ে জাগি॥
চলইতে দীগ-ভরম জনি হোয়।
গোবিন্দলাস সঙ্গে চলু গোর॥৪॥৯৮৬॥

পাঠান্তর

)। এই পদটি ৩৪২ সংখ্যক পদ-রূপে ইতি-পুর্ম্পে উদ্ভ হইরাছে; স্থতরাং পাঠান্তর ও টাকা উক্ত পদে জইবা।

তথা রাগ ৷১

মন্দির-বাহিরং কঠিন কপাট।
চলইতে শঙ্কিল পঞ্চিল বাট॥
তহিঁ অভি তুরতর বাদর দোলণ।
বারি কি বারইং নাল নিচোল॥
ফুন্দরি কৈছে করবি অভিসার।
হরি রহ মানস-স্থুরধূনি পার॥
ঘন-ঘন ঝন-ঝন বজর নিপাত।
ভূনইতে প্রবণ মরমং জরি যাত॥
দশ দিশ দামিনি দহনং বিথার।
হেরইতে উচকইং লোচন-ভার॥
ইথে যবং স্থুন্দরি তেজবি গেহ।
প্রেমক লাগি উপেখবি দেহ॥
গোবিন্দদাস কহ ইথে কি বিচার।
ছুট্দ বাগ কিয়ে যতনেং নিবার॥৫৮৯৮৭॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ২২৭,৪১৫ ও প-র পুথির ১৫।৪ সংখ্যক পদ। ২। 'বাহিরে' খ, চ। ৩। 'তহিঁ' ইত্যাদি হুলে 'তাহে স্মৃতি বাদর দরদর বোল' প-র-সা; 'তাহে অতি বাদর হুরহুর বোল' প-র। ৪। 'থারি কি বারহ'' হুলে 'বারি কি বারবি' খ; 'বারিক বারণ' প-র। ৫। 'শুবণ মরম' হুলে 'শুবণে মরমে' ক। ৬। 'দুহুই' ক, প-র-সা। ৭। 'চমক্ই' প-র। ৮। 'বদি' ক, খ; 'জনি' প-র। ৯। 'ব্ডল' ক, চ, প-র-সা, প-র।

शननी ।>

কুল-মরিযাদ্থ- কপাট উদঘাটলুঁ
তাহে কি কাঠকি বাধা।
নিল মরিযাদ- সিন্ধু সঞ্জে পঙরলু
তাহে কি তটিনি অগাধা।
সহচরিদ মঝু পরিধণ কর দুর।

ষৈছে ক্রম্ব করি পত্ব হেরত হরি সোঙরি সোঙরি মন ঝুর॥ ধ্র॥ কোটি কুম্বম-শর বরিখয়ে দ যতু পর তাহে কি জলদ-জল লাগি। যাক হৃদ্যু ২ সহ (अम· परन - पर তাহে কি বজরক> আগি । জীবন সোঁপলুঁ यङ् भन्डत्न निज তাহে কি তমু অনুরোধ। कर्डे धनि ७. जिमत्रे সৌবিন্দদাস সহচরি পাওল বোধ॥ ৬॥ ৯৮৮॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুথির ২২৮, ৪:৬ ও প-র পুথির ১৫।৪ সংখ্যক পদ। 'ধানদী' হলে 'কেদার' প-র। ২। 'ক্ল-মরিয়াদ' (প-স) হলে 'ক্লবতি কঠিন' ক, খ, ঘ, চ, প-র। ৩। 'কপাটকি' প-র-সা; 'কপাটক' প-র। ৪। 'ক্ল'প-র-সা। ৫। 'ঘর' প-র-সা। ৬। 'পউরস্থ' ক; 'পওরিল্' প-র-সা; 'শৈরল্' প-র। ৭। 'ধ্যুনা' প-র-সা। ৮। 'সক্রনি' ক। ৯। 'কৈছে' ক; 'উছে' প-র-সা। ১০। 'পরিথয়ে' থ; 'বরিথত' প-র-সা। ১১। 'দহনে' ক, ঘ। ১২। 'হ্লয়ের' ঘ, প-র। ১৩। 'বয়র্কি' চ। ১৪। 'অবসর' প-র-সা; 'আঞ্সর' খন্র।

गिका

১—৪। "কুল-মরিষাদ' ইত্যাদি। কুল-মর্থাদা-ক্লপ কঠিন কপাট উদ্ঘাটন করিয়াছি,—তাহাতে কাঠের অর্থাৎ কাঠ-কপাটের বাধা কোন্ ছার ? নিজের মর্থ্যাদা-রূপ সিদ্ধ হইতে উত্তীর্ণ হইয়াছি,— ভাহাতে অ্পাধ নদী কোন্ ছার ?

তত্রাভিগারঃ। কাষোদ। নীলিম মৃগমদে তুমু অমুলেপন নীলিম হার উজোর।

ভুজযুগ মণ্ডিড नील यलग्रगरन পহিরণ নীল নিচোল॥ স্থান্দরি হরি-অভিসারক লাগি। নব অমুরাগে গোরি ভেল শ্যামরি কুত্ যামিনি ভয় ভাগি॥ অলিকে হিলোলতং নীল অলকাকুল নাল তিমিরে চলু গোই। नोल नलिनि जय শ্যামর-সায়রেণ লখই না পার্ই কোই । नील खमद्रगन পরিমলে ধাবই চৌদিকে করত ঝকার। অভয়ে অমুমানল গোবিন্দ দাস রাই চললি অভিসার 🛮 ৭॥৯৮৯॥ পাঠান্তব

১। 'অগ্লক' ক। ২। 'হিলোলিড' ক। ৩। 'শ্রামর-সায়রে' স্থলে 'শ্রাম-সিদ্ধু-রসে' ক,চ। টীকা

১২—১৫। "নীল ভ্রমরগণ" ইত্যাদি। ক্বঞ্চৰণ ভ্রমরগণ সৌরভ জ্ঞে চৌদিগে ধাবিত হইতেছে (এবং) ঝক্কার করিতেছে; অতএব (সহচরীস্থানীয়) গোবিশ-দাস অসুমান করিলেন বে, জীরাধা অভিসারে চলিয়াছেন। (এ স্থলে 'মীণিত' নামক অলকার হইয়াছে)।

(क्षांत्र १३

গুরুজন-নয়ন বিধুস্তাদ মনদ।
নাল নিচোলে কাঁপিং মুখ-চনদ ॥
কুন্ত্ং-বামিনি ঘন তিমির হুরন্ত।
মদন-দীপ দরশায়ল পছ ॥
চললি নিতদ্বিনি হরি অভিসার।
গতি অভি মন্তর আরতি বিধার ॥ ধ্রু ॥
রস-ধাধসে চলু পদ হুই চারি।
লীলাকমলং ভেজল বরনারি॥

পরিহরি মৌলিক মালতি-মাল।
তেজল মণিময় গীমক হার॥
নব অনুরাগ-ভরম ভরে ভোরি।
নিন্দরে পীন পরোধর জোরিদ॥
বেশ-শেষ রন্থ নীলিম বাদ।
মিললি নিকুঞ্চে কহু গোবিন্দদাস দে॥১৯০॥

১। ইহা প-র-সা পুণির ৪৪৮ ও প-র পুণির
১০.১২ ও ১৫.১৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ঝাঁপণি'
ক; 'ঝাঁপিলুঁ' থ। ৩। 'দহ'ক। ৪। 'চললি
নিত্দিনি' ফলে 'চলু গজগামিনি' প-র। ৫। 'নীল-কমল' থ, প-র। ৬। 'ডোড়ল' প-র-সা, প-র।
।। 'ডরম ভরে' ফলে 'ভরমে ভেল' ক। ৮।
'গোরি' প-র (১০৷১২ সংখ্যক পদ)। ৯। 'মিল্লি'
ইত্যাদি ফলে 'অভরণ সহফ' প-র (১১৷১৫ পদ)।

পাঠাহর

অথ শ্রীকৃষ্ণোক্তিঃ।

পঠমপ্ররী 12

অথর ভরি নব নীংদ ঝাঁপং।

কত শত কোটি শবদেণ জিউ কাঁপে।

তহিঁ দিঠি জারত বিজ্বিক জালা।

ইথে জনিং ছোড়বি মন্দিরণ বালা॥

এছন কুঞ্জে একলি বনমালি।

অন্তর্ম জর লর পন্ত নেহারি॥

ভামইণ ভুজজম নিশি আন্ধিয়ার।

তহিঁ বরিখত অবিরত জলধার॥

গাঁতর মাণ ভেল আঁতরণ বারি।

কৈছে পভারবণ সো স্কুমারি॥

ত্তিণি গুণিণ আকুল চলল মুরারি।

মীললণং আধ পদ্থে বরনারি॥

গোবিন্দ দাস কহই পুন্ণ ধন্দ।

প্রেম পরীখত মনমধ্য মন্দ ॥১৯৯১॥

পাঠান্তব

১। ইছা প-র-সা পুণিতে 'গগনছি নিমগন দিন-মণি-কাঁতি' ইত্যাদি ৯৯৪ সংখ্যক পদ। 'পঠমঞ্জনী' ছলে 'কেদার' প-র । ২। 'ঝাঁপি' প-র-সা, প-র । ৩। 'লবদ' ক। ৪। 'কাঁপি' প-র-সা, প-র । ৫। 'জানি' ক। ৬। 'ছোড়বি মন্দির' হলে 'মন্দির ছোড়ছ' প-র । ৭। 'ভ্রমর' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৮। 'না' ক, প-র । ৯। 'আতর' ঘ, প-র-সা, প-র । ১০। 'গোলারব' ক, 'গোভারব' খ, প-র । ১১। 'গিল গণি' ক, খ, প-র-সা। ১২। 'মিলল' ক, খ, প-র-সা, প-র । ১০। 'গণি গণি' ক, খ, প-র-সা। ১২। 'মিলল' ক, খ, প-র-সা, প-র । ১০। 'সব' প-র-সা।

(FRIA)

ছহাঁ জন আওল কুঞ্জক মাহ।

অপরুপং কো বিহিও রস নিরবাহ॥
ঝর-ঝর বরিথে গগনে জল-ধান।
দুমিনি দহই ঝা কে অনিবার॥
ঐছে সময়ে বর রাধা কান।
কুঞ্জক মাঝে বৈঠি এক ঠাম॥
ছহাঁ তমু মাললং মনমধে মাতি।
ছহাঁ পরিরস্তন সমরক ভাতি॥
অপরুপং ছহাঁজন নিধুবন-কেলি।
গোবিন্দদাস হেরই স্থি মেলি॥১০॥৯৯২॥
গাঠাজ্ব

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৩৪ সংখ্যক পদ। ২। 'অপেরপ'ক, থ, প-র-সা। ৩। 'কো বিছি' স্থলে 'ছত্ জান' প-র-সা। ৪। 'মিশ্ল'ক, খ, প্র-সা। ৫। 'অপ্রপ'ক, থ,প-র-সা।

এভদ্দিনান্তরং সম্ভোগপদং গেয়ম। দিনান্তরে। स्वत्वत्वो।>

মেঘ-যামিনি চললি কামিনি পৃষ্টিরি নীল নিচোল রেই।

কুস্থম-শায়ক সঙ্গে নায়ক ছোড়ি মঞ্জির° লোল রে ॥ চল উলট-পদ গুরুয়া কুচ-ভরে পীন জঘনক ভার রে। হেরিং দামিনিং ফটিক-ভক্ত জানি চমকি ধরু নিরধার⁹ রে॥ भीभ जन् जानि प्रिंचि क्रिन-मि वाम कब कि दा वालि दा। জানি যুবতী' এহি ফণি-পতি১১ সন্থনে ওমু উঠে কাঁপি রে॥ ভেটল ফুল্ল ভি১২ প্রাণ-বল্লভ পুরল মনমথ । এছন পাই গেহ্স সফল করু দেহ বদত ২৬ গোবিন্দ দাস রে ॥১১॥১৯৩॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১ং।২১ সংখ্যক পদ। এই পদের প্রত্যেক অব্থা ও ব্থা চরণে নিয়লিথিত রূপ নালা দৃষ্ট হয়; বথা,—

৩+8 ৩+8 (অব্যা-চরণ)
৩+৪+৩+২ (ব্যা-চরণ)

२। প-র পূথিতে যুগা-চরণগুলির শেবে 'রে' নাই;

স্থেতরাং উহার যুগা-চরণগুলিতে হুইট মাআ কম

আছে। ৩। 'মজীর ক, ४; 'মিলির' প-র। ৪।
'চল উলট-পদ' ছলে 'চলিতে পদ টলে' প-র। ৫।
'হেরিয়া' ক। ৬। 'বামিনী' ক। १। 'ধক নিরধার' ছলে 'ধর নীরধার' ক। ৮। 'আম' ক, ধ,
প-র। ৯। 'করে' ক। ১০। 'আনি যুবতী'
ছলে 'আনল যুবতী' ক; 'লানল যুবতি' ঘ, চ।
১১। 'এহি ফ্লিপতি' হুলে 'বিষম অহিপতি' প-র।
১২। 'ভেটল হুলভি' হুলে 'ভেট বহিঁ হুহু' প-র।
১০। 'পুরল মনমধ' হুলে 'ছুহু' পুরল মন' ক;
'পুরব মনোরধ' প-র। ১৪। 'অছন' ইত্যাদি হুলে
'এছন বছু লেহ' প-র। ১৫। 'কক দেহ' হুলে
ভিছু বেহ' প-র। ১৬। 'ভক্ত' প-র।

অত্ত সম্ভোগপদানি গেয়ানি। অথ বর্ষাকালোচিত-দিবাভিসারঃ। সিদ্ধা।>

গগনহি নিমগন দিনমণি-কাঁতি।
লখই না পারিয়ে কিয়ে দিন রাতি॥
ঐছন জলদ কয়ল আধিয়ার।
নিয়ড়হি কোই লখই নাহি পার॥
চলু গজ-গামিনি হরি-অভিসার।
গমন নিরকুশ আরতি বিধার॥
চৌদশে অথির পবন করু দোল।
জগ ভরি শীকরনিকর হিলোল॥
চলইতে গোরি নগর পুর বাট।
মন্দিরে মন্দিরে লাগল কণাট ॥
যব ধনি কুঞ্জে মিলল হরি পাশ ।
ছরহি ছবে রছ গোবিক্দদাস ॥২২।৯১৪।
পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ৪৫০ ও প-র প্রির ১৫।৩২ সংখ্যক পদ। 'সিক্স্ড়া' ফ্লে 'ধান এ' প-র। ২। 'বুঝিয়ে' প-র। ৩। 'ঘোর' প-র-সা। ৪। 'মদন' প-র। ৫। 'চৌদিসে' ক। ৬। 'ভরু' ক, ঝ, য়, চ। ৭। 'পুট' ঝ। ৮। 'হেরি হেরি' প-র। ৯। অভংশর প-র-সাও প-র প্রিডে নিয়লিধিত অভিরিক্ত কলিট দেখাবার, যথা,—

'জানসু গুণবতি পুণকণ সোই।
হরদিন কাছক গুড দিন হোই॥'
১০। 'ষব ধনি' ইত্যাদি কলির পরিবর্ত্তে প-র-সা
পুথিতে 'অম্বর ভরি নব নীরদ বাঁাপি' ইত্যাদি ৯৯১
পদটি লিধিত হইয়াছে।

অস্তোচিত-সম্ভোগঃ।
নগড়ী।>
নগিল দিনমণি প্রাতহিং নীর।
তহিঁ অতি দর দর বহুত সমীর।

রাধা মাধব রভি-রণ-ধীর।

তুহুঁ পরবেশল কুঞ্জ-কুটীর ॥

নিধুবন-কেলি মিলিত এক সান।
পরাভব পাওল কিয়ে পাঁচবাণ॥

রাধা মাধব° তুহুঁ ক বিলাস।
ভাহি রসিক্গণ অধিক⁸ উলাস ॥১৩॥৯৯৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪০৫ সংখ্যক পদ।
২। 'পরতহি' খ, ছ। ৩। 'রাধা মাধ্ব' হলে
'রাধামোহন' ক, খ, ছ, চ। ৪। 'তাহি' ইত্যাদি
ছলে 'তাহা হেরি পোবিন্দ দাস' প-র-সা।

অথ শীতকালোচিত-দিবাভিসারঃ।

ত্পালী।

হরি রন্থ কাননে কামিনি লাগি।

জাগরে জর-জর মনসিজ-আগি॥

দারুণ গুরুজন-নয়ন নিপাত।

না মিলল সুন্দরি তৈ গেল পরাতং।

আজি ভেল ভালে কুঝটি-আজিয়ার।

ঐচ্ছে সময়ে ধনি চলু অভিসারণ॥

বিঘটি মনোরথ অবইতেও কান।

ধনি চলু আন হলে মাঘ-সিনান॥

যব দুছুঁ মালল অনজন পদ্ধ।

দরশনে মীটল বিরহ দুরস্ত।

যব চুছ হরখে ভরখে করু কোর।

विषि कि घडेन करकात्रक दकात ॥

भावित्ममात्र छुलक त्रत्र गांव।

পাঠান্তর ১। ইহা প-র-দা পুৰির ৪০৫ ও প-র পুৰির ১৫।৩৩ সংখ্যক পদ। ২। 'প্রভাত' ক, প-র-দা,

প-র। ৩। 'ঐছে' ইভ্যাদি ছলে 'অবভনে রাই

ভালন পঠই মদন-পরতাব 1/81৯৯৬॥

নির্ভই অভিসার' প-র-সা; 'কয়লছি রাই দিনছি অভিসার' প-র। ৪। 'অব ইথে' ঘ, চ। ৫। 'আন মান' ক, ৬, প-র-সা; 'আনমান' ঘ; 'আন-য়ন' চ। ৬। 'বিঘটি' ইত্যাদি হুলে 'বিঘটি বিঘটল' ঘ; 'বিঘটছি ঘটল' প-র। १। 'ভাগল' ক, প-র। ৮। 'ঘটছি' প-র।

টীকা

৫—৬। "আবি" ইত্যাদি। আবদ (প্রাতে) ভাগর অক্সই কুআ্টিকার অক্কার হইল; (স্থামর ব্রিয়া) ঐ সময়ে শ্রীরাধা অভিসারে চলিলেন।

ং—৮। "বিঘটি" ইত্যাদি। মনোবাছা ব্যর্থ হইরা শ্রীক্লফ (সঙ্কেত-কুঞ্জ) ইইতে আদিবার কালে শ্রীরাধা (গৃহ ইইতে) অক্সছলে মাঘ-মানে চলিলেন।

৯—১০। "বব" ইত্যাদি। বধন উভ্রে (দৈবাৎ) পরম্পারের পথে (ঘাইতে বাইতে) সন্মিলিভ হইলেন, (তথন) পরস্পারের দর্শনে দারুণ বিরহ বিদ্রিত কঠন।

>>>
>>>
>> শৰ্ব" ইত্যাদি। বধন (দর্শনজনিত) আনন্দেও (অপরে দেখিবে বলিরা) ভরে
উভরে উভরকে ক্রোড়ে ধারণ করিলেন,—(তধন
মনে হইল) চক্রবাক-যুগল (রজনীতে) বিচ্ছির
ছইরা কি (দিবসে) সন্মিলিত হইল ?

দিনান্তরে।

थाननी ।>

সহজই শীত সময় অতি হীমং।
তাহাধিক পবন বাঢ়ায়ত সীম।
কুষটি ভেল তহি দশ দিশ ব্যাপি।
দিনমণি-কিরণ সবহ রহ ছাপিঃ।
রাই করল স্থে হরি-অভিসারং।
স্সময় জানি অব তাক সঞ্চার। ধা।
কছু নাহি দীশইং গতিং অনিবার।
স্থাধ দেখায়ল সদস্ধ দিশার।

কুত্ম-পরশে যোই বরণিত ধহাই।
এতত্ত্ তুহিনে পদ নিরাপদ সোই ॥
ঐছে মিলল বর যুগল কিশোর।
রাধামোহন পত্ত আনন্দে ভোর॥১৫॥৯৯৭॥
পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-দা সুথির ১৪০৬ ও প-র পুথির ১৫।০৪ সংখ্যক পদ। ২। 'হিম' ক, ঝ, প-র-দা, প-র। ০। 'তাহে ধিক' থ, ঘ, প-র। ৪। 'ঝাপি' প-র। ৫। 'রাই করল' ইত্যাদি হলে 'রাই কমলমুখী হথে অভিসার' প-র। ৬। 'দিশই' ক, চ, প-র; 'দীশহ' ধ; 'দিবসই' প-র-সা। ৭। 'রাভি' প-র। ৮। 'প্রেম' প-র। ৯। 'তর্লীভ' প-র। ১০। 'গোবিল্দ দাস' প-র।

১—২। "সহজ্ঞাই" ইত্যাদি। শীত-কাল স্বভাৰতই অভি শীতল, তাহাতে (হিমালয়ের) বায়ু (শৈত্যের) সীমা আরও বৃদ্ধিত করিতেছে।

টাকা

৭—৮। "কছু" ইত্যাদি। কিছুই দৃশ্য হই-তেছে না; (অপচ) শ্রীরাধার গতি ফাল্ত হইতেছে না; (কেন না, দিগ্দশক কলপ স্থাপ দেখাইলেন)।

৯--> । "কুন্থম" ইত্যাদি। (শ্রীরাধার) বেই চরণ কুন্থমের স্পর্শে এণিত অর্থাৎ এণবৃক্ত হর, সেই চরণ (প্রেমোৎকণ্ঠার প্রাবল্যে) এরূপ হিমের মধ্যেও নিরাপদ অর্থাৎ অবিচলিত রহিয়াছে।

ভবা রাগ।
রাধামাধব করু রস-পুঞে।
হিম-ঋতু-দিনহিঁ মিলল ছহুঁ কুঞ্জে।
নিবিড় আলিসনে শাভ নিবারণ।
এক মুখে ঘাম আরেং শিতকার॥
ঐছনে কভহুঁ করত সঞ্চার।
হ্বেড-পরোনিধি ছহুঁ ভেল পার।
হুহুঁকর গুণাও ছহুঁ করুও পরখংস।
রাধামোহন-পহু ছহুঁ অবভংস ॥১৬॥৯৯৮॥

পঠিক্তির

১। 'অনিবার' ক, খা ২। 'আবার' ক। ৩। 'গণ' ক। ৪। 'জন' ক, চ।

অথ বর্ষা কালোচিতে। যথা।

ত্পালী।>

চলু গজ-গামিনি হরি-অভিসার।
গমন নিরকুশ আরতিং বিধার॥ গ্রুঃ।
পক-পিছল পথ গুরুয়া নিভস্ব।
পড়ু কত বেরি নাহি অবলন্ধ॥
বিজুরি-জোতি দরশায়ল দেহে ।
উঠইতে চাহে জলধারক থেহা ॥
গৈচনে মীলল নাগর পাশ।
গোবিন্দদাস কহ পুরল আশা॥১৭॥৯৯৯॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ৪৬৬ ও প-র পুথির ১ং।২২ সংখ্যক পদ। প-র-সা পুথিতে এই পদের প্রারজ্ঞে নিম্নলিখিত চারিটি অতিরিক্ত পংক্তি দৃষ্ট হর; যথা,—

'মন্দির বাহির পদ ছই চারি। বারি খনাখন মেহ ভক্ত বারি॥ এক গুণ তিমির লাখ গুণ ভেল। উতর দখিন ভান দ্রহি গেল॥' ২। 'মদন' প-র। ৩। 'এহ' পার-সা।৪। 'এহ' ক, খ, খ, চ।

जैका

৫—৬। "বিজ্বি" ইত্যাদি। বিহাতের হাতি (অন্ধলারের মধ্যে) শ্রীরাধার দেহকে দৃষ্টিগোচর করাইল। (ভূপতিতা মুগ্ধা শ্রীরাধা) বৃষ্টি-জলের ধারা অবলম্বন করিরা উঠিতে চাহিতেছেন।

হংই।> আজু কৈছে তেজলি গেছং। কে জানে কৈছন ভোহারি সিনেহ°॥ শুরুজন-ভয়ে কি না কাঁপণ।

হান-আন্থ্যিরে সবহুঁ দিঠি ঝাঁপ ॥

কুহুঁ কৈছে হেরলি রাতি।

মরমছি উয়ল মনমধ-বাতি॥

দূতরু পস্থ সঞ্চার।

চচ্ল মনোরপে ইথে কি বিচার॥

একলি আগুলি এত দূর।

আগে করই হুহুঁ কোর।

মীলল হুহুঁ জনা তুমু ডুমু জোর॥

রাধামাধ্ব-ভাষ।

না বুঝলা মুগধল গোবিন্দ্র্লাস॥১৮॥১০০০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪২২ ও প-র পুথির ১- ৷ হ৪ সংখ্যক পদ। ২। 'আলে' ইত্যাদি (প-র-সা) স্থলে 'আলু কৈছে স্থলরি তেজলি গেহ'ক, খ, ঘ, চ; 'আলু কৈছে ধনি' ইত্যাদি প-র। প-র-সা পুথি ব্যতীত অভাভ পুথির পাঠে ছন্দোভঙ্গ ঘটে। পদামূহ-সমুদ্রের পাঠ পদরসসারের অফ্রপ। ৩। 'স্থনেহ' ক, খ, চ। ৪। 'কাঁপি' খ, প-র-সা, প-র। ৫। 'ঝাঁপি' খ, প-র-সা, প-র। ৬। 'ছতর' ক। १। 'ছহু' ক। ৮। 'না বুঝাণ' ছতের' ক হব' প-র।

শ্রীকৃষ্ণং প্রতি দখ্যক্তিঃ।

কেলার।>
কণ্টক গাড়ি কমল সম পদতল

মঞ্জিরং চারহি কাঁপি।
গাগরি-বারি ঢারি করু পীছল

চলতহি অঙ্গুলি চাপিঃ॥

মাধব তুয়া অভিসারক লাগি।
দূতর পন্থ-গমন ধনি সাধরে

মন্দিরে বামিনি কাগি॥

করযুগে নয়ন মুন্দি চলু ভাবিনি
তিমির-পয়ানক আশে।
কর-কঙ্কণ পণ ফণি-মুখ-বন্ধন
শিথই ভুজগ-শুক পাশে॥
শুক্তজন-বচন বধির সম মানই
আন শুনই কহ' আন।
পরিজন-বচন' মুগধি সম হাসই ২২

গোবিন্দ্রদাস পর্যাণ॥১৯॥১৯॥১০০১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ৪৬২ ও প-র পৃথির ১০।২০ সংখ্যক পদ। 'কেদার' স্থলে 'শ্রীরাগ' প-র। ২। 'ন্প্র' প-র-সা, প-র। ৩। 'করু পীছল' ফলে 'করি পিছল' ক, চ। ৪। 'ঝাঁপি' ক। ৫। 'কর-ভলে' প-র-সা, প-র। ৬। 'ভামিনি' প-র-সা, প-র। ৭। 'পয়ান গভি' প-র। ৮। 'পশে' প-র-সা। ৯। 'ভাষয়' প-র-সা; 'ভাম-য়' প-র। ১০। 'শুয়ই কহ' স্থলে 'শুনত কহে' প-র-সা; 'শুনত কহ' প-র। ১১। 'বচনে' খ, ঘ: ১২। 'পরিজনে' ইত্যাদি স্থলে প-র-সাও প-র পৃথির পাঠ, যথা— 'পরিজন-হাসে মুগ্ধ জলু হাস্থে'।

निका

১—৪। "কণ্টক" ইত্যাদি। (স্কুমারী প্রীরাধা
অন্ধলারার্ত, সর্পসন্থল, কণ্টকাকীর্ণ, পিছিল বনপথে
অভিদার অভ্যাস করার উদ্দেশ্তে কি কি কার্য্য
করিয়াছেন, স্থা তাহা বর্ণন করিতেছেন) প্রীরাধা
(গৃহালনে) কণ্টক রোপণ করিয়া (শক্ষ নিবারণ
জক্ত) নুপুর বসনাঞ্গলে আচ্ছাদন অর্থাৎ বন্ধন করিয়া
কলসীর জল ঢালিয়া পিছল করেন এবং প্রের স্থার
(স্কোমল) পদত্তে আসুল চাপিয়া চলেন।

৮—১১। "করবুগে" ইত্যাদি। (প্রীরাধা)

অক্ষকারে গমনের আশার করবুগল ছারা নিজের

চক্ষু মুদ্রিত করিয়া চলেন এবং নিজের করের (স্থবণ
মর) কঙ্কণ মূল্য দিয়া সর্প-গুরু সাপুড়িয়াছিগের

নিকট (মন্ত্রৌষধি ছারা) স্পদিগের মুখ-বন্ধন শিথিতেছেন।

১২ — ১৫। "গুরুজন" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা)
গুরুজনের বাক্য বধিরের স্থার গ্রহণ করিতেছেন,—
এক শুনিরা অক্স উত্তর দিতেছেন; নিজের স্থীদিগের
(উপদেশ) বাক্যে মুগ্ধার হার হাসিতেছেন
অর্থাৎ সেই বাক্য হাসিয়া উড়াইয়া দিতেছেন; (এ
বিষরে) গোবিন্দদাস প্রমাণ! ('গোবিন্দ দাস
প্রমাণ' বাক্যের সহজ অর্থ স্থীস্থানীর গোবিন্দ দাস
শ্রীরাধার এই অপুর্ব অভিসার-দীলা প্রত্যক্ষ করিয়া
এই পদে উহা বাক্ত করিতেছেন)।

তথা রাগ ৷>

ভীতক চীতং ভুজগণ হেরি যো ধনি চমকি চনকি ঘন কাঁপ। **অব** অক্ষিয়ারে আপন তমু ছাপই**ং** কর দেই ফণি-মণি ঝাঁপ ॥ মাধব কি কহব তুয়া অমুরাগং। তুয়া শভিসারে অবশ নব নাগরি• জीवहे वह भूगजांगा ॥ अ ॥ যো পদতল থল-কমল-স্থকোমল ধরণি-পরশে উপচন্ধ। অব কণ্টকময় সঙ্কট বাটছি আয়ত বায়ত্ত নিশক। মন্দির মাঝ সাজ্ঞ নাহি ভেজভ (पर्वा मान्द्रा पृत्र। অব কুন্ত-যামিনি চলয়ে একাকিনি (गाविन्मनाम कर कृ ब्र॰ ॥२०॥> • २॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪২৫, ৪৬৪ ও প-র পুথির ১০।১৯ সংখ্যক পদ। ২। 'চিত' ক, প-র-সা, প-র। ৩। 'ভুলগ' ছলে পদামৃতসমূজ গ্রাহে 'পুতলি' পাঠ গৃহীত ও ব্যাখ্যাত হইরাছে। 'পুতলি' পাঠ গ্রহণ করিলেও বধন উহার অর্থ 'কুজলের মৃষ্ঠি' না করিলে অসকতি হইরা পড়ে, তথন পদকরতক, পদরসমার ও পদরত্বাকর অফুলারে 'কুজল' পাঠই সমীচীন বোধ হয়। ৪। 'আপন তমু ছাপই' ফ্লে 'আপন তমু রাপই' ক, চ; 'বসনে তমু ছাপিরে' প-র-সা। ৫। 'তুরা অফুরাগ' ফ্লে 'ধনী অফুরাগি' প-র-সা। ৬। 'তুরা' ইত্যাদি ফ্লে 'তুরা অমুরাগ রভদে নব নাগরি' প-র। ৭। 'জীবই' ইত্যাদি ফ্লে 'জিবইতে বছ পুণভাগি' প-র-সা। ৮। 'বাত' চ, প-র-সা, প-র। ৯। 'সাঁজ' ধ, চ, প-র-সা (পাঠান্তর); 'সাঁবে' প-র। ১০। 'ফুর' ক, চ, প-র-সা, প-র।

টীকা।

১—৪। "ভীতক" ইত্যাদি। বে স্থন্দরী ভিছি
অর্থাৎ গৃহের প্রাচীরের চিত্রিত ভুজ্জন দেখিয়া
চমকিয়া চমকিয়া পুন: পুন: কম্পিত হয়,—(সে)
এখন অন্ধকারে নিজের দেহ লুকাইয়া হাত দিয়া
বিষধর সর্পের মন্তকস্থিত মণি চাপা দিতেছে।
(মণির আলোকে পাছে শ্রীবাধাকে কেহ দেখিতে
পার, দেই আশহার তিনি উহা আছ্যাদিত করিতেছেন)।

গান্ধার।১

যব ধনি ঘর সঞ্জে ভেল বাহার।
ঝর ঝর বরিখে জলদ অনিবার ॥
কর ঠেলনং নছে ঘন আহ্মিয়ার।
দিশ দরশায়ল মদন দিশার ॥
কি কহব মাধব পুণ-ফল ভোরি।
এতহুঁ দূর তরিং তোহে মিলু গোরি॥
খালকত বিজুরি নরন ভরুচয়।
চলইতে খলইং সঘনে মহি পঙ্ক॥
উঠইতেং ফণি-মণি উজরং ছেরি।
কনক-দণ্ড বলি ধরু কত বেরি॥

ঐছনে সৌপলুঁ তোহে নিজ দেই।
অপরুপ ঐছন ভোগারি স্থনেই ॥
এত দিনে প্রেমক পরিচয় ভেল।
গোবিন্দদাস ভরম হুরে গেল॥

ং২১॥১০০০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র সা পুথির ৪৫২ সংখ্যক পদ।
২। 'ঠেরল' দ। ৩। 'দুর তরি' হলে 'ত্রতরা'
প-র-সা। ৪। 'খলমে' ফ; 'খলত' প-র-সা।
৫। 'উঠই' খ। ৬। 'উজোর' ক, খ; 'উজর' চ।
৭। 'হলেহ' ক, খ, চ, প-র-সা, পর।৮।
'দুরে' ক, খ, প-র-সা, প-র।

অত্র সম্ভোগপদানি গেয়ানি।

অথ গ্রীষ্মকালোচিত-দিবাভিদারঃ। ৰরাড়ী।১ মাথহি তপন তপত পথ-বালুক আতপ দহন বিথার। ননিকং পুতলি তমু চরণ কমল জমু দিনহি° কয়ল° অভিসার॥ হরি হরি প্রেমক গতি অনিবার। কামু-পরশ রদে পরবশ রসবতি বিছুরল সবহুঁ বিচার ॥ ধ্রু ॥ ওঁকু**জন-**নয়ন-পাশগণৎ-বারণ মারুত-মণ্ডল-ধূলি। ^{©।} পয়ে**॰ মে**नि চলनि বর রজিণি পদ্বহি গেও সবং ভূলি॥ যত যতদ বিঘনি জিতলি অমুরাগিণি गांधिम मन्जिल-मलः। गांविन्मनाम कहरे अव ममूबि

হরি সত্তে রসময় তম্ম ।২২।১০০৪।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪৪৯ ও প-র পুথির ১৫।৩ সংথাক পদ। ২। 'স্নীক' থ, প-র; 'নোনীক' ক; 'নোনিক' চ। ৩। 'তবহি' দ, প-র-সা, প-র। ৪। 'চললি' প-র-সা, প-র। ৫। 'গাগগণ' ক, চ। ৬। 'তা পদ্ধে' দ্লেল 'তাহিক' থ; 'তোহা পর' প-র-সা; 'তা সঞ্জে' প-র। ৭। 'পথছথ গেলহি ভূলী' প-র। ৮। 'মত কত' প্রতি হলে 'মত স্ব' ক; 'জয় জয়' থ; 'কত কত' প-র। ৯। 'তয়' প-স।

টীকা

১—৪। "মাধহি" ইত্যাদি। মন্তকোপরি স্থ্য; পথের বালুকা উত্তপ্ত; স্থ্য-কর অধি বিস্তার করিতেছে; (প্রীরাধার) দেহ নবনীতের পুত্তলিকা, — চরণ পদ্মের ভার (স্ক্রেমন),—(এ অবস্থারও তিনি) দিবাভাগে অভিসার করিলেন!

৮—>>। "গুরুজন" ইত্যাদি। বাতাবর্ত্ত অথাৎ
ঘূর্ণা বৃায়ুর ধূলি গুরুজনদিগের নম্বন-রূপ দাঁদগুলির
নিবারক (হইল); জভিদারানন্দযুক্তা এরাধা সেই
ধূলিমন্ন বাতাবর্তের সহিত মিশিয়া অভিসারে গমন
করিলেন এবং পথেই সকল (প্রতিবন্ধকতার কথা)
ভূলিয়া গেণেন !

১২—১ঃ। "যত যত'' ইত্যাদি। অমুরাগবতী শ্রীরাধা যত কিছু বিদ্ধ, সব ক্ষম করিলেন ও কলপের (বশীকরণ)-মন্ত্র সাধন করিলেন; গোবিন্দাস ক্ছিতেছেন- এখন (শ্রীরাধা) হরির সহিত রসমর তন্ত্র অর্থাৎ আনন্দ-জনক কাম-তত্ত্বের অনুশীসন ক্ষন!

তথা রাগ।>

রাধামাধ্য মালন ভেল।
নিদাঘক দুখং সবস্ত হৃত্রেও গেল॥
উহি পুন সরোবর-মন্দির মাঝ।
জল-কণ-শীকরণ-নিকর বিরাজ॥

সৌরভ মেলিত গন্ধবহ মন্দ। কি করব দিনমণি-কিরণক বন্ধ॥ তহিঁবর স্থ্রত বাপিশ অবগাহ। রাধামোহন পহুঁ রসিক স্থনাহণ॥

120120001

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪০৭ সংখ্যক পদ।
২। 'হংখ' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'দূরে' ক,
প-র-সা। ৪। 'জল' ইত্যাদি হলে 'জল কলসী
কর' চ। ৫। 'সৌরডে' ক, খ, প-র-সা। ৬।
'বারি' ক, চ, প-র-সা। ৭। 'সুলেহ' প-র-সা।

অথ উৎকণ্ঠায়াং ভ্রমাভিসার:।

দুত্যুক্তিঃ।

তথা রাগ ৷১

স্থান কৈছন আরতি তোর।
বিঘটিত ঘটিত সাজ নাহি জানল
ভূলল শাধব মোর॥
বিপরিত চীর পহিরি হরি সাজল
হল্ত অন্ধদ হল্ত কাণে।
সীথি বলার করি হাথেণ সাজাওল
কুণ্ডল মুদরিক ভানে॥
কিছিণি-জাল মাল করি পহিরল
হার সাজাওল হাতে।
চূড়ক সাজ করি চরণহি পহিরল
মঞ্জির পহিরল মাথে॥
পুরুষ উত্তর নাহি দীগ দিগান্তরণ
নব অনুরাগক লাগি।
বল্লভদাস কহ চঢ়ল মনোরধে
সৃষ্ট দূরহি ভাগি ॥২৪॥১০০৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪০৮ সংখ্যক পদ।
২। 'ভুলল' ক, প-র-সা। ৩। 'বাহে' ক, চ,
প-র-সা। ৪। 'করি' শব্দটি ক, খ, চ ও প-র-সা
প্থিতে নাই। উহা ব্যতীত ছন্দোভল মটে। ৫।
দিগ দিগন্তর' ক, প-র-সা; 'দিগ দীপান্তর' খ;
'দীগ দীগান্তর' চ।

शाननी ।>

কামুক ইহ উত্তক্তিত জানি।
বিছুরল স্থানরি আপনার বাণী ॥
কি কহিতেই কি কহয়েই নাহিক থেই।
বিছুরল অভরণ আপনক দেই ॥
কামুক নেহ হদয় মাহা জাগ।
সো রূপ নিরুপম নয়নহি লাগ॥
কহইতে চল চল রহ রহ বোল।
লহে লেহ কহইতে দেহ দেহ বোল।
সাজহুই কহইতে ভাজহুই ভাষ।
আনহুই বাণি জানুই বাল জাগ।
কহব সহচরি বল্লভ দাগ॥

120120091

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৪৩৯ সংখ্যক পদ।
২। 'করিতে' খা ৩। 'হর' ক। ৪। 'নাল'
ঘ; 'সাক্ষ সাক্ষ' প-র-সা। ৫। 'ভাক্ট' ক;
'ভাক্ ভাক' প-র-সা। ৬। 'আনহি' ক, খা १। 'বাণি জান' হলে 'বাণী জাল' ক, খ; 'বাণী জান' প-র-সা।

ক্ষোর।> মণিময়ং মঞ্জির যতনে আনি ধনি দো পহিরল° ছুই হাত । কিছিণি গীম-হার বলি পহিরল
হার সাঞ্চাওল মাথং॥
ফুল্পরি অপরুপ পেথলু আজ।
হরি-অভিসার-ভরম-ভরে ফুল্পরি
বিভুরল সাজ বিসাজ॥ ধ্রু॥
খন আধ্বিয়ার রক্ষনি জনিও কাজর
গরজত বরিখত মেহ।
বিষধর ভরল ফুভর পথিদ পাঁতর
একলি চললি তেজি গেহ॥
চঢ়লি মনোরপে দোসর মনমপ্প
পন্থ বিপথ নাহি মান।
গোবিন্দ্দোস কহই অজ-নাগরিক্ণ
ভৈছনে ভেঠলি কান॥২৬॥১০০৮॥

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৪০ সংখ্যক পদ।

২। 'মণি' ক, চ। ০। 'পহিরম্' ক। ৪।
'হাডে' প-র-সা। ৫। 'মাখে' প-র-সা। ७।
'বন'ধ, ছ; 'জিনি' প-র-সা। ৭। 'হরড' ধ,
হ, প-র-সা; 'হরডর' চ। ৮। 'পহ' ধ, ছ।
১। 'মনমখে' ক, ধ, প-র-সা। ১০। 'ধনি এছন'
গ-র-সা।

পাঠান্তর

এীরাপ 15

রাই সাজে বাঁশী বাজে পড়ি গেওং উলও।
কি করিতে কিবাও করে সব হৈল জুল।
মূকুরে আচরিও রাই বান্ধে কেশ-ভার।
পারে বান্ধে ফুলের মালা না করে বিচার।
করেতে নূপুর পরে জজ্জেও পরে ভাড়।
গলাতে কিন্ধিণী পরে কটিভটে হার।
চরণে কাজর পরে নয়নে আলভা।
হিয়ার উপরে পরে বছরাজ-পাতা।
শবিণে করয়ে রাই বেশর সাজনা।
নাসার উপরে করে বেশীর রচনা।

বংশীবদনে কহে যাঙ্ড° বলিহারি। শ্রাম-অসুরাগের বালাই লৈয়া মরি ॥ ॥২৭॥১০•৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৪১ সংখ্যক পদ।
২। 'পড়ি গেও' ফ্লে 'না পড়িল' ক, ঝ, য়, চ।
'না পড়িল' পাঠে অর্থ-সঙ্গতি ঘটে না। এই বাঙ্গালা
পদে হিন্দী 'গেও' শন্দের ব্যবহারও চিন্ধনীর বটে।
সম্ভবতঃ 'পড়ি গেল' প্রকৃত পাঠ হইবে। ৩। 'গুল'
প-র-সা। ৪। 'কিনা' ক, প-র-সা। ৫। 'ফাচারে'
ক, প-র-সা। ৬। 'কডে' প-র-সা। १। 'যাই' ক।

বেলাবলী 12

বিপরিত বেশে মিলল ধনি মাধব
মাধব বিপরিত বেশ।
ভূলল সরস সম্ভাষ হাসময়
জমু নহ আরতি লেশ।
সজনীং অপরুপণ প্রেম বিচারি।
দোঁহ দোঁহা হেরি স্তম্ভ ভেল কলেবর
চাত-পুতর্লি সম থারি। শ্রুণ।
বহুখণে সহচরি-বচনহি তুহুঁ জন
ধাই কয়ল তুহুঁ কোর।
ভৈছন তুমু তুমু লাগি রহল তুহুঁ
তুহুঁ দোহাঁ ভাবে বিভোর।
বিছুরল কেলি-বিলাস রস-লালসং
রহলহি কোরে আগোরি।
গ্রুহন সহচরি শেজে শুভারল
বল্লভ হেরি বিভোরি।২৮॥১০১০॥

পাঠান্তর

)। हेहा প-त-मा পूथित > 88२ मःशाक शव। २। 'मजनि' क, थ, ठ, भ-त-मा। ७। 'ज्ञभक्रभ' क, थ, ठ, भ-त-मा। ४। 'टिडहरन' क, (বিছুরল' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি চ ও প-র-সা প্রথিতে নাই।

কেদার 1১

কত্ত যতনে তুত তুত ততু তেজ।
বৈঠল সরস কুসুমময় শেক ॥
বিপরিত চরিত হেরি সখি হাস।
তমু তমু তেকি অতমু পরকাশ ॥
সহচরিগণ কহ তুত জন-রাত।
শুনইতে তুত জন চমকিত-চাত ॥
লাজহিঁ সুন্দরি না কহয়ে বাণি।
তেজল ভূষণ বিপরিত জানি ॥
উপজল কতত্ত হাস পরিহাস।
কত কত কোতুক মদন-বিলাস॥
রাধামাধ্বং প্রেয়-তরক্ষ।
হেরই বল্লভং সহচরি সক্ষ ॥২৯॥১০১১॥

ইতি ভ্রমাভিসারঃ।

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৪৩ সংখ্যক পদ। ২। 'রাধানাধ্য ছক্' প-র-সা। ৩। 'বল্লভদাস' প-র-সা।

> অথ জ্যোৎস্নাভিদারঃ। প্রকারান্তরং যথা।

> > তথা রাগ। ১

অবতং রাজপথে পুরজন জাগি।

চাঁদ-কিরণ জগমগুল লাগি।

রহিতে সোয়াথ নাহি নৌতুন নেহং।

হেরি হেরি স্থানরি পড়ল সন্দেহ ॥ গ্রাম কামিনি কয়ল কত্যে পরকার । পুরুষক বেশে করল অভিসার। ধামিলিণ লোল ঝুট করি ২ন্ধ।
পহিরণ বদন আন করি ছন্দ॥
অন্ধরে কুচ নাহি সম্বরু গেলণ।
বাজন-যন্ত্র হৃদয়ে করি নেল॥
ঐছনে মালল কুঞ্জক মাঝ।
হেরি না চিহ্নইণ নাগর-রাজ॥
বেরইতে মাধব পড়লহি ধন্দ।
পরশিতে ভাঙ্গল হৃদয়ক দন্দণণ ॥
বিভাগতি কহ তব কিয়ে ভেলি।
উপজল কত কত মনমথ কেলি।

1500150521

পাঠান্তর

পুনশ্চ দিনান্তরে।

ত্বং কুচ-বল্লিত-মোক্তিক-মালা।
প্রিত-সান্দ্রীকৃত-শশি-কর-জাণা॥
ছরিমন্তিসর স্থ-দরি সিত-বেশা।
রাকা-রজনি এজনি গুরুবেষা॥ এ ॥
পরিছিত-মাহিষ-দথি-ক্লচি-সিচয়া।
বপুর্বিত-ষন-চন্দ্রন-মিচয়া॥

কর্ণ-করম্বিভ-কৈরব-হাসা।
কলিত-সনাতন-সঞ্জ-বিলাসা॥৩১৫১০১৩॥
পাঠাম্বর
১। ইছা প-র পুথির ১৫।২০ সংখ্যক পদ।
টীকা

১-৮। 'অমিতি"। (হে রাধে।) তং কুচয়ো: বলিতা (গতিবেগেন উল্লেফ্টিডা) মৌক্তিক্ষালা যন্তা তাদুনী। পুন: कोषृशी १— श्विर्डन (श्रेयकार्ट्यन) সাক্রীকৃতঃ (নিবিড়ীকৃতঃ) চল্লকরাণাং জালঃ (সমূহঃ) यक्ष छातृमी। (रु स्टब्स्ति ! निटर्दमा (७ झर्दम-ধারিণী) তাং গ্রীক্লকাং অভিদর (তদস্তিকং গচ্ছ) এষা রাকা-রন্ধনিঃ (পূর্ণিমা-নিশা) গুরুঃ (উপদেষ্টা) অঞ্নি (কাতঃ । বাকারজন্তাঃ ভ্রুত্বেন ভ্রুতি-সারোপযোগাৎ অভিসাঝেপদেষ্টুত্বং বোধ্যম্। ত্বং পুন: কীদৃশী ?—পরিছিডং মাহিষ-দধি-ক্লচি দিচয়ং (বসনং) যয়াসা। পুনশচ বগৃষি (দেহে) অপিতঃ ঘনঃ চন্দন-সমূহো যয়া সা। পুনশ্চ কর্ণয়োঃ কর-ষিতাভ্যাং (সংযুক্তাভ্যাং) কৈরবাভ্যাং হাস:(প্রকাশ:) ষস্তা: সা। পুন্দচ কলিত: (জনিত:) স্নাত্নস্ত (ঐক্কভ) সঙ্গে বিলাদো यद्या সা। পকে কলিত: সনাতনক্ত (ভব্নামকগোকামিন:) সঙ্গঃ (স্থীভাবেন সাহচর্যাং) তত্র বিলাসে। যরা সা।

অমুবাদ

১—৮। (গতি-বেগে) তোমার কুচবুগে মুক্তাহার বল্লিত হইতেছে; তোমার ঈবৎ-হাস্তে চন্দ্রকিরণ আরও খনীভূত হইতেছে; হে শুল্ল-বেশধারিণী স্থলরি! তুমি (এখন) শ্রীক্ষের নিকটে
অভিসার কর; এই পূর্ণিমা রক্ষনী (ভোমার অভিসার-কার্য্যের) উপদেষ্টা হইরাছে! তোমার পরিধের
বসন মাহিষ দ্ধির স্থায় শুল্ল-কাস্থি; দেহে খনচন্দনাস্থলেপন অপিত হইরাছে; তোমার কর্ণ-শ্বত
কুমুদের খেত-শোভা প্রকাশিত হইরাছে এবং তুমি
সনাতন-সঙ্গ-বিলাস্ক বর্দ্ধিত করিরাছ।

'সনাতনসগ-বিবাস' পদটি শ্লিট। ইহার
 এক অর্থ 'সনাতন অর্থাৎ আদি পুরুষ ক্রীকক্ষের

তথা রাগ।

কুণ কুস্থমে ভরু কবৰিক ভার॥ ইত্যাদি পূর্বেবাক্তং গেয়ম্ "

ज्रीली ।>

গুরু তুকং বঞ্চ উজোরলা চন্দ।

ত্বজন নিয়ন পদহি পন কন্দ ॥

তাহে লাত তুরতর পত্ত সঞ্চারণ।

তাহি কলাবতি চলু অভিদার ॥

কি কহব মাধব প্রেমক রীত।

তুয়া অমুরাগিণি ক্রিভুবন জীতা ॥ ধ্রা ॥

ঘাহাঁ ধনি শধ্যে ভাঙ ধনান।

সাধ্যে ধাওয়ে কাতা পাঁচবাণ॥

সো ভোহে কুঞ্ছে মিলল নিরবাধ।

গোবিন্দদাস কহ পুরল সাধ ॥৩২॥১০১৪॥

পাঠা গুর

১। ইগাপ-র-দাপুথির ৪৬১ ও প-র পুথির
১০ বিং সংখ্যক পদ। ২। 'ছর' চ। ৩। 'বঞ্চন'
প-র-দা। ৪। 'উজোর বর' প-র-দা, প-র।
৫। 'ওক্ষন' ক, খ। ৬। 'ডাংহ অতি' ইত্যাদি
পংক্তি ছইটি প-র পুণিতে নাই। ৭। 'জিড' ক,
খ, প-র-দা, প-র। অতঃপর প-র দা ও প-র
পুথিতে নিম্বলিখিত অতিরিক্ত কণি ছইটি দৃষ্ট হয়,
মধা—

'পতিভূজ ভূজগবদ্ধ করে তোড়ি।
চরণক বাতে কুলাচল ডারি॥
তাহে কি কহব লঘু মন্দির-কপাট।
তব্নে মরিযাদে সিদ্ধু দেই বাট ॥'

সহিত সংস্থাগ-বিগাদ'। অপর অর্থ-সনাতন-নামক গোস্বামীর সাহচর্য্য-জনিত বিশাস।

পুনশ্চ দিনান্তরে।

শীরাগ।১

চিকুর-তরক্ষক-ফেন-পটলমিব

কুত্বমং দখতী কামম্থ।

নটদপসব্যদৃশা দিশতীব চ

নৰ্ত্তিত্বতত্মবামন্ ॥

রাধা মধুর-বিহারা।

হরিমুপগচ্ছতি মন্থর-পদ-গতি-

লঘু-লঘু-তর্নিত-হারা ॥ধ্র•॥

শঙ্কিত-লঙ্ক্তিত-রস-ভর-চঞ্চল-

मध्य-मृगख-लर्गन।

মধু-মধনং প্রতি সমুপহরন্তী

क्वलग्र-माम बरमन ॥

গত্রপতি-ক্লন্ত্র-নরাধিপমধুনাতন-

महनः मधुटत्र ।

রামানন্দ-রায়-কবি-ভণিতং

কুখয়তু রস-বিসরেণ।

11 b C o C fi ce |

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ৪৪৮ সংথ্যক পদ। ২। দৈশতী কামং' (জ: বঃ) ছলে 'দশতি সকামং' ক, ধ, ধ, চ, প-র-সা। ৩। 'নটদপস্বা' ইত্যাদি (ম, জ: বঃ) পংক্তিমুগ্রের পাঠ জ্বাত্ত পুথিতে নিতান্ত বিক্রত। ৪। 'নরাধিপ' ইত্যাদি (জ: বঃ) ছলে 'নরাধিপমধুনা তন্ত্মধুরং' ক, ধ, ব, চ, প-র-সা।

गिका

১—> ধ। "চিকুরে"ত্যাদি। মধুর-বিহারা
মধুরসভোগবতী গ্রীরাধা মহর-পদগত্যা অরারং
কম্পিতঃ হারো বস্তাঃ তাদৃশী হরিরুপগচ্ছতি গ্রীকৃকাস্কিং গতা। কীদৃশী গ্রীরাধা ? চিকুরাণাং (কেশানাং)
তর্গকেরু (ক্ষুবীচিরু) তরপারমানকেশেরু ইত্যর্থঃ
ক্ষেপটগমিব (কেনপ্রমিব) কামং অত্যর্থঃ
কুরুমং শুকুপুসারাকিং ব্যতী (ধাররতী) তথা ক্ষুর-

হামনেত্রেণ বামা-রহিতং কলপং নর্তিতুং আদিশতীব উপদিশস্তীব। পুন: কীদৃশী ? শহিত: লব্জিতত্তবা রসভবেণ চঞ্চলঃ যো মধুরো দৃগন্তলবঃ কটাক্লেশ-ত্তেন (করণে ভৃতীয়া) মধুরাপাকদৃষ্ট্যতি ভাব: মধুস্দনং প্রতি রসেন (অমুরাগেন হেতুনা) কুবলয়-माम (नीरनार्यन मानार) प्रमूपश्वको (जेपरोक-য়ন্তী)। অত্র শ্রীরাধায়া নীলনলিনাভকটাক-পরম্পবৈব কবিনা কুবলম্নাম-রপেণ বর্ণিতেতি বোধ্যম্। রামানন্দরায়াধ্যকবের্ভণিতং গীতং মধু-**रत्र** त्र त्र-विश्वरत्र (त्र न-विख्वरत्र) व्यसूनां उनमहनः (ইদানীস্তনকন্দর্প: কন্দর্পস্থাভিনবাবতার্মিতার্থ:) 'গলপতি'রিভি গজপতি-ক্ল-নরাধিপং স্থমতু। বিশেষণেনান্ধিতঃ বো ক্ষত্রনরাধিপঃ প্রতাপক্ষ্যনর-নামৈকদেশগ্ৰহণে নামমাত্রগ্রহণ্য পতিস্তম। সিদ্ধত্বাৎ কল্প-শব্দেন প্রতাপক্রাে গম্যতে।

অহ্বাদ

১—১৫। শ্রীরাধা তরকারমান কেশ-কলাপে ফেনরাজির প্রার্থ (খেড) কুস্মসমূহ ধারণ করিরাছেন এবং নিজের ম্পান্দমান বাম নেত্র ছারা খেন রতিবির্ছিত কন্দর্পকে নর্ত্তনের জক্ত উপদেশ করিতেছেন। স্থমধুর-সম্ভোগ-শালিনী শ্রীরাধা মছর-পদ-সঞ্চারে স্কোহার ঈবং দোলাইয়া শ্রীক্রফের নিকট উপনাত হইতেছেন। তিনি কিঞ্চিং শজ্বিত ও লজ্জিত রস চঞ্চল স্থমধুর কটাক্ষ-রাজি ছারা প্রীতিবশতঃ শ্রীকৃত্তকেন। রামানন্দ রার কবির রচিত এই সকীত স্থমধুর রস-বিত্তার ছারা কন্দর্পের অভিনব ক্ষরতার গর্পতি প্রতাপক্ষত্ত নৃপত্তিকে স্থাধান কক্ষক।

(क्षांत्र।)

কলয়তি নয়নং দিশিং দিশি বলিতম্। পদ্ধন্দনিব মৃত্ব-মারুত-চলিতম্। কেলী-বিশিনং প্রবিশতি রাধা। প্রতিপদ-সমুদ্ধিত-মনসিজ-বাধা। ধ্রা বিনিদধতীত মৃত্ত-মন্থর-পাদম্। রচরতি কুঞ্জর-গতিমসুবাদম্॥ জনয়তুত কুদ্র-গজাধিপ-মুদিতম্। রামাননদ-রায়-কবি-গদিতম্॥৩৪॥১০১৬॥

পাঠাত্তর

১। ইহাপ-র সাপুথির ১৪৪৫ সংখ্যক পদ। ২। 'নিশি'প র-র-সা। ৩। 'বিনিদধতী' (জঃ বঃ) ছলে 'বিনিদধতি' ক, থ, ব, চ, প-র-সা। ৪। 'জনম্তি' ক।

টীকা

১—৮। "কলয়তী"ভাদি। প্রতিপদং (প্রতিপদ-ভাদে) সম্বিতঃ সমৃত্তো মনসিজস্ত কন্দর্পন্ত বাধা (পীড়া) ৰস্তাঃ সা রাধা কেনীবিপিনং (কেনিন্তু রুং) প্রবিশতি। পুনঃ কিং করোতি ?—মৃত্নারুতচালিতং মৃত্-পবন-চঞ্চলং প্রজ্ঞানিব নিলোং-পলমিব দিশি দিশি বলিতং চতুর্দিক্ প্রেরিতং নয়নং কলয়তি (ধারমতি) নিকুঞ্জে শ্রীক্রফাঃ ক্র তিষ্ঠতী-ভালানতী বলবছৎকঠয়া দিশঃ পশ্রতীতি ভাবঃ। পুনঃ কিং করোতি ? মৃত্-মন্তর-পাদং (মন্দমন্দরবাং) বিনিদধতী (বিশ্বস্তম্ভী) ক্রেরগতিং অমু ক্রেরগমনং লক্ষাক্রত্য বাদং (বিবাদং) রচয়তি (গলগতিং অমু-তাতি ভাবঃ)। রামানন্দরায়কবেরিদং বাক্যং ক্রেপ্পাকাধিপশ্র মুদ্ভিং (হ্র্বং) জনয়তু।

অন্থবাদ

১—৮। গ্রীরাধা মৃত্পবন-চালিত নীলোৎপলের প্রার নিজের নরন চারি দিকে প্রেরণ করিতেছেন। প্রতিপদ-বিক্ষেপে তাঁহার কল্প-পীড়া উভ্ত হই-তেছে; তিনি কেলিকুল্লে প্রবেশ করিতেছেন। তিনি বৃহমন্থ্যভাবে চরণ নিক্ষেপ করিরা কুঞ্জর-গতিকে পরাজিত করিতেছেন। রামানন্দ রার কবির এই বাক্য গল্পতি প্রতাপক্ষত্রের আনন্দ উৎপাদন ককক।

মায়ুর।১ সম-বয় বেশ-ভুষণ্-ভূষিত-ভন্ম স্থিগণ সঞ্চ মেলি। গজ-গতি^ও নিন্দি[®] গমন অতি স্থান্দর[©] কিয়ে জিত-খঞ্জন-কেলি । দেখ রাই করল অভিসার। শিরিষ-কুত্ম জিনি কোমল পদতল বিপথে পড়ত অনিবার ॥ধ্রু॥ যো থল-কমল পরশে অতি কোমল ঝামর ভই উপ5 क। সো অব যাই। তাই। কঠিন ধরণি মাহা ডারত বড়ই নিশক। ঐছন ভাতি মিলল কুঞ্জ মাহা দুভিক যাহাঁ উপদেশ। ভণ রাধামোহন তঁহি যো আচরণ হাম কিয়ে পায়ব উদেশ।

পাঠান্তর

১। 'মায়ুবী' ক। ২। 'ভূষণ' ক, খ। 'ভূষণ' পাঠে ছলোভক ঘটে। ৩। 'গলপতি' খ। ৪। 'নিন্দিড' (পাঠান্তর—ক, খ, খ, চ, ১০৫৬ সংপদ)। ৫। 'গমন' ইত্যাদি 'গমন স্থমছর' (পাঠান্তর—ক, খ, খ, চ, ১০৫৬ সংপদ)। ৬। 'অতি কোমল' হলে 'হকোমল' (পাঠান্তর—ক, খ, খ, চ, ১০৫৬ সংপদ)।

119611303911

অত্ত সম্ভোগপদানি গেয়ানি।
পুনশ্চ দিনাস্তরে।
তিসিরাভিসারে দৃত্যুক্তিঃ।
বনাড়া।>
রিভি-স্থধ-সারে গভমভিসারে
মদন-মনোহর-বেশম্।

ন কুরু নিত্সিনি গমন-বিলম্বন-মসুসর তং হৃদয়েশম্॥

धीद-भभीदन यमून!-जीदन

বপতি বনে বনমালী।ধ্রা

নাম সমেতং কৃত সঙ্কেতং

বাদয়তে মৃহ বেণুম্।

বহুমমুতে নমু তে তমু-সঞ্চ-

পবন-চলিতমণি রেণুম্॥

পত্তি পত্ত্তে বিচলতি পত্তে

শক্ষিত-ভবত্রপ্যান্ম।

রচয়তি শয়নং সচকিত-নয়নং

পশ্যতি তব পত্থানম্॥

मूथतमधीतः छाज मञ्जोतः

রিপুমিব কেলিষু লোলম্।

চল সখি কুঞ্জং সতিমিরপুঞ্জং

শীগ্র নীল-নিচোলম্॥

উরসি মুরারেরুগহিত-হারে

ঘন ইণ তরল-বলাকে।

তড়িদিব পীতে রতি-বিপরীতে

রাজসি প্রকৃত-বিপাকে॥

বিগলিত-বসনং পরিক্ত-রসনং

ঘটয় জঘনমপিধানম্।

किमलग्र-भग्नत शक्क-नग्रत

নিধিমিব হর্ষ-নিধানম্।

হরিরভিমানী রজনিরিদানী-

মিয়মপি যাতি বিরামম্।

কুরু মম বচনং সত্তর-রচনং

প্রয় মধুরিপু-কামম্॥

শ্রীজয়দেবে কৃত-হরি-সেবে

ভণতি পরম-রম্পীয়ম।

প্রমুদিত-হাদয়ং হরিমতি-সদয়ং

नम् रङ्ग - कमनी व्रम् ॥ ७५॥ > ० ১৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৫।১০ সংখ্যক প্_{ষ।} 'ৰরাড়ী' স্থলে 'পঠমঞ্জরী' প-র।

টাকা

জয়দেবের শ্রীগীতগোবিন্দ সর্ব্বত্ত ব্রহন্ত ব্লিয়া এ স্থলে টীকা ও অমুবাদ দেওয়া হইল না।

ভূপালী।১

স্থিগণ-বচনে বনায়ল বেশ।
বিরচিল কবরি আঁচরি নিজ কেশ।
ভালহি দেয়ল সিন্দুর-বিন্দু।
চন্দন-বেখ শোভয়ে আধ ইন্দু॥
কত কত অভরণ সাজায়ল অলে।
হেরইতে মুর্ছয়েং কতক্ত অনক্ষে॥
নীল-বসনে তমু ঝাঁগলি গোরি।
চললি নিকুঞ্জে শ্রাম-রনে ভোরি॥
মদনমোহন-মনমোহিনি নারি।
ভ্রামদাস কহ যাভ বলিহারি॥৩৭॥১০১২॥

পাঠান্তর

ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৪৮ সংখ্যক পদ।
 ব্রক্ত্রে ক; ব্রত্ত প-র-সা।

বেলোরার।১

সাজলি রসবতি রঞ্জিণি রামাং।

মন্দ মন্দ গতি নুপুর-কলরবলচ্ছিত-রাজহংসকুল বামাণ ॥ গ্রন্ধ।

চম্পক কনক কেশর-কুস্থমাবলি
ক্রুচি জিনি স্থান্দর অপাঘন সাজে।

অলিকুল অঞ্জন জলদ নীলমণি
ছবিচন্থ-নিন্দিত বসন বিরাজে॥

অমল ইন্দিবর- দল লোচনমুগ

কত কত শশি জিনি কম্প-ব্য়ানী।

অরুণ-ছবি নিন্দই সিন্দুর-বিন্দু ष्रहि-त्रभी किं (विश वेभी ॥ মধুর মৃতু হাসনি বিদ্রুগ-**অধরে** म्भन श्रुमामिनि ममन करत्। তার⁸-হার মণি-কুণ্ডল লম্বিত কত মণি দরপই দরপবরে॥ চৌদিশে সহচরি যন্ত্ৰ বাজায়ত ধিরে ধিরে॰ রসবতি চলত সমাজে। বল্লভ ভণভ প্রবেশলি নিধুবনে হেরি কত রতিপতি ভাজল লাজে 🛭 106130201

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১৪৪৯ সংখ্যক পদ। ২। 'বামা' খ, চ। ৩। 'রামা' ক, খ, চ। ৪। 'ভার' ঘ, প-র-সা। ৫। 'ধীরে ধীরে' ক, খ, প-র-সা।

यहरे ।)

মিললৈ নিকুঞ্জে রাই কমলিনী।
দোহে দোহাঁং পায়ল পরশ-মণি ॥
দরশনে হছ মুখ হছ প্রেমে ভোর।
নয়নে ঝরয়ে দোহাঁর আনন্দ লোর ॥
সরস-সম্ভাষণে উপজ্ঞল রক্ষ।
উথললঃ হছ মন মদন-তরক্ষ ॥
সহচরিগণ সব আনন্দে ভাস।
হছ মুখ হেরই নেরোভ্য দাস ॥৩৯॥১০২১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৫০ সংখ্যক পদ। ২। 'দৌহে' ক, চ। ৩। 'ছুইার' ক, চ। ৪। 'উহনন' প-র-সা। ৫। 'নেহারই' প-র-সা।

মঙ্গল 15

ও মুখ শরদ-স্থাকর-সুন্দর है निमिन-मन गर्छ। ও ততু নবঘন-স্থান রঞ্জিত ইহ থির দামিনি পুঞে॥ (मर्भ त्राधामाध्य (काति। তুহুঁক পরশ-রসে তু**হ**ঁ পুলকাইড**ং** ত্ত দোহাঁ রহল আগোরি ।ধ্রা। ও নব নাগর भव शहन वांगत ইং সে কলাবতি-সীম। ও অতি চতুর-শিরোমণি বিদগধ এ সব গুণহি গরীম ॥ भध्रत त्रमावतन শ্যাম-গোরি-ভন্ম ত্বহু নৰ কিশোরি কিশোর। নৱোত্তম দাস আশ চরণে রন্ত শ্রীবল্লভ-মন ভোর ॥৪০॥১০২২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১৪৫১ সংখ্যক পদ। ২। 'পুলকায়িত' ক। ৩। 'গরিম' ক, খ, প-র-সা।

পুনশ্চ দিনান্তরে।

कनामी।

বয়স সমান সজে নব রজিণি
সাজলি শ্যাম-দরশ রস লোভে।
কোই রবাব মুরজ সরমগুলং
বীণণ উপাল্প হাত পর শোভে।
ভালে বনি আওয়ে ব্যভামু-ভনি।
চরণ-কমল-ভলে অরুণ বিরাজিভ
মঞ্জির-রঞ্জিত মধুর-ধনিণ এঞা

গতি অতি মন্তর
নীলং বসন মণি-কিঙ্কিণি বোলে।
গজ-অরি মাঝরিং উপরে কনয়া-গিরি
বীচহি হুরধুনি মুকুতা-হিলোলে॥
রবি-মণ্ডল-ছবি জিনি মণি-কুণ্ডলং
হুন্দর সিন্দুর ভালিরে ভালে।
গোবিন্দদাস কহ ভূললং অলিকুল
বেতৃল কবরিক মালতী-মালে॥
॥৪১॥১০২৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪৫৭ সংখ্যক পদ।

হ। 'হ্রমণ্ডল' ক। ৩। 'বীণা' হ। ৪। 'ধ্বনি'
ক, ধ। ৫। 'অসিড' প-র-সা। ৬। 'নাঝারি'
ক, ধ, প-র-সা। ৭। 'রবি-মণ্ডল' ইত্যাদি হলে
'রবি-মণ্ডল' চবি জিনি মণি-মণ্ডল' ক; 'রবিমণ্ডল
জিনি ছবি কুণ্ডল' ঘ; 'রবিমণ্ডল ছবি কুণ্ডল ঝলমল' প-র-সা। ৮। 'হ্রম্মর' ইত্যাদি হলে 'সিন্দুর
বিশ্ব ভালি রে ভালে' ধ, ঘ; 'হ্রম্মর সিন্দুর বিশ্ব
ভালিই ভালে' ক। ১। 'ভ্লল' ক, ধ, প-র-সা।

विश्वांश ।

রাই কনক-মুকুর-কাঁতি। শ্যাম বিলাসিতে স্থাপর তমু সাজয়ে কতেক ভাতি। নীল বসন রতন ভূষণ जनरम मामिनी मारज। বিচিত্ৰ বেণী চাঁচর কেশেরং ছলিছে হিয়ার মাবে। রসের আবেশে গমন মৃত্যু হেলি ছুলিও চলি যায়। আধ ওচুনি **ঈষত হাসিয়া**• विक्रम-मञ्जूदन ठाव ।

সি থায়ে সিন্দুর নয়ানে কাজর
তাহে চন্দনের রেখা।
নব জলধরে অরুণ-কোরে
নবীন চাঁদের দেখা॥
শ্যামানন্দ ভণে নিকুঞ্জ-ভবনে
কলপ-তরুর মূলে।
রসের আবেশে বৈসে বিনোদিনী
শ্যাম নাগরের কোরেদ ॥৪২৮১০২৪।

পাঠান্তর

১। 'দরশনে' খং প্রাঃ পুথি। ২। 'কেদর'
খ; 'কেশেতে' খং প্রাঃ পুথি। ৩। 'হেলি ছলি'
হলে 'হেলি দোলি' খ, ছ; 'ভাবে ঢুলি' খং প্রাঃ
পুথি। ৪। 'হাসিনী' খং প্রাঃ পুথি। ৫। 'নব
জলধরে' ইত্যাদি ছলে—'অরুণের কোরে নব জলধর' খং প্রাঃ পুথি। ৬। 'রুদের আবেশে' হলে
'হাসিতে হাসিতে' ছ। ৭। 'বসিলা' খ, ছ। ৮।
'কোলে' খং প্রাঃ পুথি।

স্বত্ত সম্ভোগপদানি গেয়ানি। পুনশ্চ জ্যোসাভিদারো যথা।

বেলোরার 15

সধি মাধব নিকট গমন করিং
তুরিতহিঁ এমতি করবি চতুরাইং।

যদবধি গগনে উদিত নহেং হত-বিধু
হরি অভিসারবি সময় জানাই॥

মদন-দহনে তমু অবিরত দাহই
পরাণক ছুখ তুহুঁ জানসি চীতং।

ইং তাহে নাহি জানাওবি অন্তর
হাম বাহে কুলবতি-পথে উপনীত॥

এত শুনি দুতি চলল অবিলয়নে
জাসি ভেল উপনিতং সামুক পাশ।

নয়ন-ভরত্তে সকল সমুঝারল
পুন হেরি কুমুদ কহে পরকাশ ॥
কুমুদিনি শুণ পরি- মলে জগ জীতল
কাহে বিলমায়ঙ শামল ভূল।
দৃতিক বচনে চলল বরনাগর
ভুরতহি গৌর হাদয় পরসয় ॥৪৩॥১০২৫॥
পাঠাছর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৫২ সংখ্যক পদ।
২। সকল পুথিতে 'স্থি' ইত্যাদি পাঠ দৃষ্ট হইলেও
সন্তবতঃ 'এ স্থি' ইত্যাদি প্রক্রুত পাঠ হইবে; কেন
না, 'স্থি' ইত্যাদি পাঠে প্রথম চরণে তুইটি মান্তা ক্ম
হর। ৩। 'তুরিতহিঁ' ইত্যাদি স্থলে 'তুমি তহিঁ'
ইত্যাদি ক, খ, ম। ৪। 'উদিত নহে' স্থলে 'উদিত নয়' ক; 'উদয় নহে' ম, চ। ৫। 'চিত'
ক, খ, প-র-সা। ৬। 'উপনীত' ক। १। 'গ্রপ'ম। ৮। 'বিফ্লার্যত'ক, খ, ম, চ।

निका

৯—১৬। "এত" ইত্যাদি। দৃতী ঐ কথা তিনিয়া অবিগছে চলিলেন এবং প্রীক্ষেত্র নিকট আসিয়া উপস্থিত হইলেন; (তিনি) নম্নের চঞ্চল ইলিত ছারা তাঁহার সকল অভিপ্রার প্রীক্ষণকে অবগত করাইলেন; প্নশ্চ কুমুদের দিকে দৃষ্টিপাত করিয়া স্পাইভাবে বলিলেন—'কুমুদিনী তাহার ৩৭ ও সৌরভ ছারা জগৎ জয় করিয়াছে,—(এ অবছার) স্থামবর্ণ ভূল কেন বিলম্ব করিতেছে গ্রাপ্তীর এই বাক্যে নাগর-শিরোমনি সম্বর প্রীরাধার সঙ্কেত-কুল্লে) গমন করিলেন; (ইহাতে স্থী-স্থানীর পদক্ষা) গৌরের ক্ষম্ব আনন্দিত হইল।

रक्त ।

স্থা পথ হেরই

তুরিতে করহ অভিসার।

গপন উপরে

কিলা কিরণ পরচার॥

সমূচিত বেশ করহ বর চন্দ্রন কপুর-খচিত করি অঙ্গ। ছ্গ্ৰ-ফেন-সিভ অম্বর পহিরছ কুঞ্জহি চলহ নিশক। **ठ**त्रग-कमत्ल नृ-পুর তেজি স্থন্দরি চল তাহে শবদ-রহিত। এতহিঁ বচনে চললি গজ-গামিনি मनिष-माप जेलिनिज। নয়ন কমল-মুগ-খঞ্জন-গঞ্জন সচকিত হেরত গোরি। গৌরমোহন অন্ত-মানই আনবি শ্রাম-নয়ন চিত চোরি ॥৪৪॥১•২৬॥

(क्षांत्र १५

কুন্দ কুমুদ গজ-মোতিম হার।
পহিংল হৃদয়ে ঝাঁপি কুচ-ভার॥
খোরহিং শশধর-কিরণ বিধার।
কৈচন সময়ে কয়ল অভিসার॥
চৌদিকে সচকিত-নয়নে নেহার।
মদন-মদালসে চলই না পার॥
মিললি নিকুঞ্জে কুঞ্জ-নৃপ পাশ।
কহ কবিশেখর কেলি-বিলাস॥৪৫॥১০২৭॥
পাঠান্তর
১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৫৪ সংখ্যক পদ।

२। '(थात्रहें' क ; (थात्रहिं' ठ।

চলইভে চরণ मर्च हलू मधुकत মকরন্দ-পানকি লোভে। সোরভে উনমত ধরণি চুম্বয়ে কত যাহাঁ যাহাঁ পদচিক শোভে। জিনি সৌদামিনি? কনক-লভা জিনি বিধির অবধি রুপং সাজে। किकिनि जनजनि বঙ্করাজ-ধনি চলইতে স্থমধুর বাজে। হংসরাজ জিনি গমন স্থলাবণি অবলম্বন স্থি-কান্ধে। মিললি নিকুঞ্জ-বনে व्यवस्थात ७८१ পুরাইতে শ্রাম-মন সাধে 18 ৮ ১০২৮ ॥ অত্র সম্ভোগপদং সম্ভবপরং গেয়ম। ইতি তৃতীয়শাখায়াং ত্রয়োদশপল্লবঃ। পাঠাশ্বর ১। 'কনক-লভা' ইভ্যাদি আটটি পংক্তির इरम व পुवित्र शार्ठ, यथा--'লোচনে অঞ্চন **খ্যন-গ**ঞ্জন রঞ্জন বসন বিহাজে। কিঞ্চিণি রণরণি বঙ্করাজধনি চলইতে সুমধুর বাজে॥ কনক-লতা জিনি জিনি সৌদামিনি विधित्र व्यविध क्रम त्राट्य। অনস্ত দাস ভণে গমন নিকুঞ্জ বনে পুরাইতে খ্রাম-মন-সাধে। ২। 'কুপ' স্থলে 'কুপ' ক, চ।

অথ রূপোলাসঃ।

শ্রীমদেগারচন্দ্রঃ।
ধাননী।
গোরাচাঁদ কিবা ভোমার বদন-মগুল।
ক্ষক-ক্ষল কিয়ে শ্রদ-পূর্ণিমা-শ্রী
নিশি দিশি করে ঝলম্বা ॥ ঞা ॥

ভোমার বরণখানি জমু হরিতাল জিনি किए प्र थित्र विक्री किनिया। কিয়ে নব গোরোচনা কিয়ে দশবান সোণা মনমথ-মন-মোহনিয়া ৷৷ অমিয়া-মধুর ভাষা খগপতি জিনি নাসা তুলনা না হয় ত্রিভুকনে। আকর্ণ নয়ান-বাণ ভুক্ত-ধন্ম-সন্ধান किंगिक श्रीत्य नाती-मटन । আগামুলম্বিত ভুঙ্গ বিলেপিত মলয়জ অঙ্গুরী বলয়া তাহে সাজে। সিংহ জিনি মধ্য সরু হেম-রম্ভা জিনি উরু চরণে নৃপুর বঙ্করাজে॥ জিনি ময়মত্তঃ হাতী হংসরাজ জিনিং গতি দেখিয়ে এ হেন রূপ-রাশ। কহুয়ে গোবিন্দ ঘোষ মোর মনে সম্ভোষ নিছনি যাইয়ে হেন বাসি ॥১॥১০২৯॥ পঠিক্তির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৫৫ সংখ্যক পদ। ২। 'তহু'প-র-সা। ৩। 'নারীর মনে' খ, খ, প-র-সা। ৪। 'মদমন্ত' ক, খ। ৫। 'হংসরাজ জিনি' ফলে 'হংস জিনিয়া' ক, খ। ৬। 'দেখিয়া' ক, খ, খ, চ।

यहरू ।

আহা মরি গোরা-রূপে কি দিব তুলনা।
তুলনা নহিল যে ক্ষিল বান সোণা॥
যেঘের বিজুরী নহে রূপের উপাম।
তুলনা নহিল রূপে চম্পকের দাম ॥
তুলনা নহিল স্বর্ণ-কেডকীর দল।
তুলনা নহিল গোরোচনা নিরমলা॥
কুকুম জিনিয়া অজ-গন্ধ মনোহরা।
বাহ্য কহে কি দিয়া গঢ়িল বিধি গোরা॥
॥২৪১০৩০॥

ভাটিরারী।১

ওহে গৌর বসিয়া থাকহ নিজ ঘরে। দেখিয়াও রূপ ঠাম মোহে কত শত কাম युवि देशत्रक किरम धरत ॥ धर । হেরিয়া বদন-ছাঁদং उपय ना करत हान्य লাজে যায় মেঘের ভিতরে। সোদামিনী চমকিল চম্পক শুখাঞাত গেল ' লাজে কেহ সোণা নাহি পরে॥ ভাঙ্ গ-ধতু ভ ক্সমায় ইন্দ্ৰ-ধনু লাজ পায় দশনে মুকুতা নাহি গণে। দেখিয়া চাঁচর কেশ চামরী হাড়িল দেশ চঞ্চল জলদ আন ভাবে॥ मृगान राभाग्र नाटक দেখিয়া যুগল ভুজে রজ-ভূমি জিনিল হিয়ায়। হরি হেরি মধ্যদেশে কন্দরাতে পরবেশে উরুতে কি রাম-রম্ভা ভায়। স্থল-পদ্ম আদি বচ তরুতে শুখায় কত না ভোলয়ে হেরি পদপাণি। শুন গৌরস্থন্দর এই ভোমার কলেবর ভুবন-বিজই অনুমানি ।৩॥১০৩১॥ পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৫৭ সংখ্যক পদ। ২। 'টাদ'চ। ৩। 'গুণাইরা' খ, চ, 'গুণাই' প-র-সা। ৪। 'ভাঙ' ক, প-র-সা। ৫। 'চমরী' ক, খা ৬। 'ডোলার' প-র-সা। ৭। 'বিজ্ঞাী' ক।

ভৰা মাৰ ৷১

দামিনি-দাম-দমনং-ক্লচি দরশনে
সূত্রে গেও দরপক দাপ।
সোন কুফুম তাহে কোন গণিয়ে বের
প্রান্তর-অক্লণ-সন্তাপ ।

গোরা-রূপে যান্ত বলিহারি।
হৈরি স্থাকর মুরছি চরণ-তলে
পড়ি দশ-নথ-রূপ-ধারী ॥ গ্রুণ ॥
স্বরণ-বরণ কেরি নিজ কুবরণ
মানি আপন মনতাপে ।
নিজ-তমু জারি ওসম সম করইতে
পৈঠল অনল-সন্থাপে ॥
যা সম বিধিক অধিক নহেশ অমুভবি
তুলনা দিবার নাহি ঠোর।
জগদানন্দ কলুঁ পলুঁক বুলনা পলুঁ
নিরূপম গোরকিশোর ॥৪।১০০২॥

পাঠাস্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৪৫৮ সংখ্যক পদ। ২। 'মদন'খ। ৩। 'দ্রে'ক; 'দ্র'খ, ছ। ৪। 'শোণ'ক; 'সৌন' প-র-সা। ৫। 'গণিলা' চ। ৬। 'মনস্তাংপে' ক। ৭। 'জারল' খ। ৮। 'নাহি'ক, প-র-সা।

>--৪। "দামিনি" ইত্যাদি। (ত্রীগোগালের)
বিদ্যাৎপুঞ্জন্মী কান্তি দর্শন করিয়া (সৌন্দর্যোর)
গর্মা কারীর দর্প বিদ্যিত হইল; সেই কান্তির নিকট
শন-পুশা কিংবা প্রস্তাতের অরুণ-কিরণ কে গণনা
করে?

তথা রাগ ৷১

গৌর কলেবর

চিকুর ঐছে নেহারি।
(জমু) হেম মহিধরদেই উর পর ডারি॰ ॥
পীন উর উপবীত-শীতিম রক্ত ।
(জমু) কনয়-ভূধর

হর-তর্জিনি গল ॥

আধ অম্বর

আধ সম্বরণ

আধ অস স্থােীর।
(জমু) জলদ সঞ্জে অভি বাল রবি-ছবি
নিকসে অধিক উজাের ॥

অগত-আনন্দ পত্ক পদ-নধ
লধই > এছন ছন্দ।
(জমু) মীন-কেতন করু নিমঞ্কে

পাঠান্তর

Бत्रा (परे प्रभ हम्म ॥८॥)०७०॥

১। ইছা প-র-সা পুথির ১০৫> সংথ্যক পদ।

এই পদের প্রত্যেক অবুগা ও বুগা চরণে বথাক্রমে

নিম্লিখিত মাতা আছে; বথা,—

৩+৪ ৩+৪ (অবুগা চরণ)
৩+৪+৩ (বুগা চরণ)
২। 'মহীধর' ক, খ। ৩। 'শেধরে' চ। ৪।
'ক্লেই' ইত্যাদি স্থলে 'দেই উক' ইত্যাদি ক, খ, খ;
'ক্লেনিমনমণ ঢাবি' প-র-সা। ৫। 'শীভিম রক'
কলে 'শিভিম বক' কা প-র-সা। 'মীভম্মতক' গাল।

ছলে 'শিতিম রক' ক, প-র-সা; 'সীতমতক' থ, ব।

। 'অধ্বে' প-র-সা। १। 'সহক' প-র-সা।

৮। 'তন্থ' প-র-সা। ১। 'কগদানক্ষ' ব, চ।
'ক্লগদানক্ষ' পাঠে বতি-ভল বটে। ১০। 'হেরি'
প-র-সা। ১১। 'নিরম্পন' ক, ধা

টাকা

>--৪। "পৌর" ইত্যাদি। (ঐগোরান্দের)
দেহ পৌর-বর্ণ; মস্তক ও কেশ এরপ মনোহর দেখিভেছি, খেন স্থবর্ণ-গিরির শিখরে (কেছ) চামর
(সেই গিরির) বক্ষ পর্যান্ত ঝুলাইরা দিয়াছে।

৫—৮। "পীন" ইত্যাদি। (তাঁহার) বিশাল বক্ষে উপবীতের খেত-শোভা প্রাপিত হইরাছে; বেন স্থব-গিরিকে বেষ্টন করিরা স্থর-নদী গলা শোভা পাইতেছে। অথ শ্রীরাধিকায়াঃ সপ্থ্যক্তিঃ।

কাষোদ কদর্শ।>

থনি ধনি কো বিহিং বৈদগধি-সাথে।

মদন স্থা-রসে যো নিরমাওল

তুয়া মুখ-মণ্ডল রাধে ॥ গ্রুণ ॥
ভালং আধ-ইন্দু-অমিয়া আগোরল
ভাঙ, তিমির ঘন ঘোর ।
কিরণ-বিকাশিত শ্রুতি-কুবলয় পরি

থাবই নয়ন-চকোর ॥
নাসা-শিখর সমুখে উদিত পুন

সিন্দুর-ভাসু উলোর ।
অহনিশি বদন-কমল ভহিঁ বিক্সিত
শ্রাম শ্রুমর নাহি ছোড় ॥
অরুণ-কিরণ পুন অধরে হেরি হেরি

ছার-ভর্নিণি-তারে ।

পাঠান্তর

গোবিন্দদাস কহ ধীরে ॥৬॥১০৩৪॥

কুচযুগ-কোক শোক নাহি জানত

১। ইহা প-র পুথির ১৬৬ সংখ্যক পদ। 'কামোদ কল্প' ছলে 'কাম কল্প' ক। ২। 'বিধি' খ। ৩। 'ভালে' খ, খ, প-র। ৪। 'ফুরে' ক।

गिका।

১—৩। "ধনি ধনি" ইত্যাদি। হে শ্রীরাবে! বৈদ্য্যীর আকাজ্জার বে কল্প স্থা-রস বারা তোরার মুখ-মণ্ডল নির্মাণ করিল, (তাহার তুলনার) বিধাতা অর্থাৎ ব্রন্ধা কে? (এইরপ অম্বৃত্তমর নির্মাণ কোনল কেবল স্থরদিক কলপের পক্ষেই সম্ভবপর, অরদিক শ্রোচীন ব্রন্ধার পক্ষেইহা নিতান্তই অসম্ভব)। তুলনা ক্রন,—

'ৰডা: নৰ্গবিধৌ প্ৰশাণতিরভূচজো সু কাবিপ্ৰথ: বুলারৈকরন: বরং সু মদনো বানো সু পুলাকর:!

বেদাভ্যাসজড়ঃ কথং সু বিষয়ব্যার্ডকৌতৃহলো নিৰ্মাতং প্ৰভবেষনোহ্যমিদং ক্লপং পুৱাণো মুনি:॥ ৪—১৫। "ভাল" ইত্যাদি। (ব্রহার স্টিতে চক্র ও ক্র্যের, জ্যোৎসা ও অন্ধকারের যুগপং উमग्र এवः চকোর ও চক্রবাকের যুগপৎ খানন্দ সম্ভবপর নহে; এ স্থলে তাহাও দুষ্ট হইতেছে.— মুতরাং এরাধার রূপ ব্রহ্মার স্ট নহে—ইহা ৰেধাইবার অন্ত সধী বলিতেছেন) ভোমার ললাট অর্ধ-ইন্যুর অর্থাৎ অইমীর চত্তের অমৃত এবং তোমার ভ্রমুগল (অষ্টমী-রব্দনীর) খোর অরকার সঞ্চিত করিয়া রাখিয়াছে; তোমার (ললাট-রূপ চন্দ্রের) কিরণে প্রক্ষৃতিত কর্ণের নীলোংপলের উপরে (ভোষার) নেত্র-ক্লপ চকোর ধাবিত হই-ভেছে। (নয়ন আকর্ণ-বিস্তৃত বলিয়া কবি লুপ্তোৎ-প্রেকা অনুকারের সাহায্যে চকোর নীলোৎপলের मधुनात्नत बन्न शांविक स्टेरक्ट विन्ना छे ९८ ११ का করিতেছেন)। (তোমার) নাদিকা-রূপ স্বর্ণ-গিরি-শ্লের সমুখে আবার সিন্দুর-বিলুরূপ হুর্যা উদিত হইয়াছে ও সেধানে দিবারাত্রে (সম-ভাবে) ভোমার ৰ্থ-ৰূপ পদ্ম প্ৰশক্ষিত ব্ৰিয়াছে ; (স্ত্ৰাং) ব্ৰুফবৰ্ণ ভ্ৰমর (অপর অর্থে-- শ্রীকৃষ্ণরপ ভ্রমর) উহাকে পরিত্যাপ করে না। (তোমার) মুক্তা-হার-রূপ ভটিনীর কুলে (ভোমার) কুচৰব্রপ চক্রবাক-ব্গল (ডোমার) অধ্যের (আরক্তিমতা-রূপ) অরুণ-কির্ণ पिरिया (प्रिया (पृथ्व र अयाय) भार कारन ना ;---গোবিশ্ব-দাস ধীর-ভাবে এই কথা বলিতেছেন।

विहात ।>

এ ধনি না করু পসাহন সানং।
এতত্ত্ব নেহারি মুগধ মধুসুদন
দিন রজনী নাহি জান। প্রা
সিন্দুর-ভরুণ-অরুণ-ক্লচি-রঞ্জিত
ভাগ স্থাকর-কাঁডি।

সো ঘন চিকুর-ভিমির-ঘন-কুছিভ
ইং অতি অপরুপ ভাতি ॥
লোচন-যুগল কমল কিয়ে কুবলয়
খঞ্জন চারু চকোর।
কাজক - আলে পড়ত কিয়ে সংশয়
ততহিঁ অমই অলি-জোর ॥
তবহু বেদ হাসি অধর দরশায়সি
অরুণিম কোমুদি-কাতি।
মোহিভ জনকে কি ফল পুন মোহন
গোবিদ্দদাস নাহি ভাতি ॥৭॥১০০৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৬৮ সংখ্যক পদ। ২।

'এ ধনি' ইত্যাদি (প-র) হলে 'এ ধনি না কক্ষ
পদাহ নয়ান' ক, খ, ঘ, চ। সংস্কৃত 'প্রদাখন'

শব্দের অপভ্রংশ হইতে 'পদাহন' শক্ষ ও উহার অস্ত্য
ন-কারের লোপ ছারা 'পদাহ' শক্ষ দিছ হইলেও
এ স্থলে দাধারণতঃ প্রদাধনের কথা না এলিয়া নয়নপ্রদাধনের উল্লেখ করার সঙ্গতি দেখা বায় না;
স্থতরাং প-র পুথির পাঠই সমীচীন বটে। ৩।

'স্কারি' প-য়; ৪। 'দিন রক্ষনী' হলে 'দীন
রক্ষনি' ঘ। ৫। 'চয়' প-র। ৬। 'আকর' ঘ।

৭। 'পড়ত' ইত্যাদি হলে 'গড়ব যব আকুল' প-র।
৮। 'তব্দ বে' স্থলে 'তব্দি লো' ক, প-র;
'তব্দি বে' খ।

টাক 1

১—৩। "এ ধনি" ইত্যাদি। হে ছম্বরি!
অন্ত সাক্ষ-সজ্জা করিও না; ইহা অর্থাৎ তোমার
স্বাভাবিক রূপ দেখিরাই শ্রীকৃষ্ণ মোহিত হইরাছেন,
—দিবা কি রাত্রি আনেন না! (অর্থাৎ তিনি এরপ
সুধ্র হইরাছেন যে, তাঁহার অতি স্থুণ জ্ঞানও বিল্প্ত
হইরাছে।)

ততো রূপোল্লাদেন অভি**দারোপ-**যুক্তং বেশং রচয়তি।

ष्ट्रज़े।

সিচয়মুদঞ্য ক্রন্যাদপ্লম্।
বিলিখান্যভূত-মকরাক্সম্॥
ইহ নহি সঙ্কুচ পক্ষ-নয়নে।
বেশং তব করবৈ রতি-শয়নে॥
রাধে দোলয়ন কিল কপোলম্।
তিবং রচয়ান্যহমবিলোলম্॥
তব বপুরস্থ সনাতন-শোভম্।
জনয়তি হাদি মম কঞ্চন লোভম্॥৮॥১০৩৬॥

টাকা

১-৮। "সিচয়"মিত্যাদি। (হেরাধে!) খং ভব হাদয়াৎ (বফোদেশাৎ) দিচয়ং (বসনং) অরং ৰথা ভাৎ তথা উদঞ্জ (অপদারয়); কন্মাৎ 🕈 -- অহং তত্র অন্ততং (বিচিত্রং) মকরাকরং মকরা-कांत्र-िक विनिधामि (घनठन्तन त्रत्मामि)। (इ श्रा-तिर्छ। हेर (अब ध्रमांश्त) निरं मङ्ग्र ন সন্ধৃতিতা ভব; কম্মাং ? তব রতি-শয়নে (রতি-শ্ব্যাবিষয়ে) বেশং কর্মটব (রতি-শ্ব্যোচিতং) বেশং রচরামীতি ভাব:। হে রাধে। দং কপোগং (গগুং) न किन (मानव (न भक्षानव) अहः अविरनानः काइकानः वर्षा छा ९ छथा हिन्दः ब्रह्मिम । कर्णान-দোলনে চন্দন-চিত্রজালম ফুলরং আদিতি ভাব:। অন্ত সনাতনশোভং স্থচিরস্থারি-মণ্ডনং সনাতনাৎ শ্রীকৃষ্ণাৎ শোভা যত্ত তৎ শ্রীকৃষ্ণেন কৃত-শোভং ইতি ভাব: তব বপু: (অঙ্গং) মম হৃদি ক্ষন লোভং (কামপ্যনিক্তিনীয়াং লালসাং) জনয়তি (উৎপাদরতি)। পকে সনাতনেন কবিনা (স্থী-স্থানীয়েন) রচিতা শোভা যত্র তং তাদৃশং বপুঃ।

অমুবাদ

>--। হে শ্রীরাধে। তুনি বক্ষঃস্থল হইতে
বসন কিঞ্চিৎ অপসারিত কর; আমি (সেখানে)

বিচিত্র মকর-চিত্র অভিত করিব। হে ক্ষণ-লোচনে ! ইহাতে সন্তুচিত হইও না; আমি ভোমার রাতি-শংঘ্যাচিত বেশ রচনা করিতে চাহি। ভোমার কপোল সঞ্চালিত করিও না, আমি উহাতে দ্বি-ভাবে চিত্র রচনা করিব। অভ ভোমার দ্বির-শোভা-যুক্ত দেহ আমার ক্ষরে কি এক গোভ ক্ষ্মাইতেছে।

এই পদটি বে শ্রীক্ষের উক্তি, তাহা একটু প্রাণ্ধান করিলেই প্রভীত হইবে; স্থতরাং পদের টীকা তদমুসারেই করা হইরাছে। বৈফবদাস বে কি অন্ত ইহা স্থীর উক্তিরপে সন্ধিবেশিত করিয়াছেন, তাহা বুঝা যার না।

> তত্ত্বাভিসারঃ। বেলোয়ার।

কঞ্জ-চরণযুগ যাবক-রঞ্জন

খঞ্জন-গঞ্জন মঞ্জির বাজে।
নাল বসন মণি-কিক্ষিণি-রণরণি

কুঞ্জর-গমন দমন খিনং মাঝে॥

সাজলি শুাম বিনোদিনি রাধে।

সক্ষহি রক্জ-তর্মজিণি রক্জিণি

মদন-মোহন-মন-মোহন ভাঁদে॥

কনক-কটোর চোর কুচ-কোরক

কোরে উজোরল মোভিম-দাম।

ভুক্তযুগ খীর বিজুরি পরি মণিময়

কঙ্কণ ঝনকিতে চমকিত কাম।

মধুরিম হাস স্থধারস-নিরসন।

দশন-জোতি জিতি মোভিম-কাঁতি।

মুভগ কপোল লোল মণি-কুণ্ডল

দশ দিশ ভরল নয়ন"-শর-পাঁতি I

কাঁপলং কবরি ভালে অলকাবলি
ভাঙ্গু-ধনুয়া জন্ম মনমথ সেবি।
গোবিন্দদাস হৃদয়ে অবধারলং
মুরতি শিক্ষার-দেবণ-অধিদেবি॥

1 FO C [6]

পাঠান্তর

১। 'কুজার-দমন-গমন' ক, ধ। ২। 'ক্ষীণ' ক; 'ক্ষিণ' ব। ৩। 'মনমোহিনী' ধ; 'মনমোহিনি' ব; 'মন' চ। ৪। 'কুসুম' ব। ৫। 'ঝাঁপলি' ক, চ। ৬। 'অবধারলি' ক। ৭। 'দেবী' ধ।

বিহার্গড়া ৷১

এ ধনি আঁচিরে বদন ঝাঁপাউং।
ল্বধল মধুপ চকোর বিধুস্তদ
অনত অনত চলি যাউও॥
মুখ-মণ্ডল কিয়ে শরদ-সরোক্তহ
ভালহি অটমিক চন্দ।
মধুরিপু-মরমেও ভরম যাহাঁও ঐছন
ভাহে কি গণিয়ে মতি-মন্দ॥
জনি কহ গরবে পাণিতলে বারব
ও থল-কমল-উজোর।
তহিঁ নখ-চাঁদ-ভরম ভরে ঐছনও
ভতহিঁ পড়ত জনিও ভোর॥
ভাঙু-ধনুয়া কিয়ে স্তকু ধুনায়দি
যভু শরে গিরিধর কাঁপ।
সো কিয়ে অতনু-পতগ-শিরে ভারদি
গোবিন্দদাস-হিয়ে ভাপ॥১০॥১০৩৮॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র পুথির ১৬।৭ সংখ্যক পদ। ২। বিশিশঙ'ক ; 'বিশিশঙ'চ। ০। 'ৰাঙ'ক । ৪। 'মরম'ক । ৫। -'আহি' প-র। ৬। 'আরুল' প-র। ৭। 'আনি'ক।

ोक।

>-- ০। শা ধনি ইতাদি। হে অসারি! তুমি অঞ্চ দাবা বদন আবৃত কর; সূত্ত অমর, চকোর ও রাজ অভাকা হানে চলিয়া যাউক!

৪—१। "মুখ-মগুল" ইত্যাদি। (ইছা)
মুখ-মগুল, কি শরৎ-কালের পল । ললাট, কি আইমীর চন্দ্র হে বেধানে (চতুর-চ্ডামণি) প্রীক্ষক্ষের
মনেই এইরূপ ভ্রম হয়, তাহাতে বৃদ্ধিনীনকে
(অর্থাং ভ্রমর, চকোর ও রাহকে) কি গণনা
করিব । অর্থাং ভ্রমর ইত্যাদির বে ভ্রম অব্যিবে,
তাহাতে কি সন্দেহ আছে।

৮—১১। "জনি" ইত্যাদি। গর্ম হেতু বলিও
না বে, (উহাদিগকে) কর-তল দারা বারণ করিব;
(তাহাতেও অনর্থ ঘটিবে; কেন না,) তোমার সেই
কর-তল স্থল-পদ্মের হায় উজ্জন (কান্তিবিশিষ্ট);
তাহাতে নথ-চক্র শোভা পাইতেছে। স্প্তরাং ঐরপ
লম-বশতঃ মৃশ্ব হইয়া পাছে তাহারা বাইয়া পদ্মে।

১২—১ং। "ভাঙ্" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা স্থীর পরিহাস-বাক্য শুনিরা জা কুঞ্চিত করার, স্থী প্নরার পরিহাস করিয়া বলিতেছেন) হে স্থানরি! ভোমার জা-রূপ ধ্যু কি জ্যু কম্পিত করিতেছ। বে ধ্যুর শর-বর্বনে (অর্থাৎ কটাক্ষ-বালে) স্বরং গিরি-ধারী অর্থাৎ বীরশ্রেষ্ঠ শ্রীকৃষ্ণ কম্পিত হন, তুমি (মশা মারিতে কামান দাগার স্থার) সেই শর কি জ্ঞু কন্দর্প-রূপ পতকের মন্তকে নিক্ষেপ করিতেছ। (ইহাতে) গোবিন্দল্যের সদ্বে ক্লেশ হুইতেছে।

यहरू ।)

হন্ত ন কিমৃ মন্থরয়সি সন্ততমভিজন্ম।
দন্ত-বোচিরন্তরয়ভি সন্তম্মসমনলম্ ॥
রাধে পথি মৃক ভূরি সন্তমমভিদারে।
চারয় চরণালুকুহে ধীরং কুমারে ॥ এ ॥
সন্তমু ঘন-বর্ণমভূল-কুন্তল-নিচয়ান্তম্ ।
ধ্বান্তং তব জীবজু নথ-কান্তিভিরভিশান্তম্ ॥

সসনাতন-মানসাত্ত• যান্তী গত-শঙ্কম্। অতীকুরু মঞ্-কুঞ্জ-বসতেরলমক্ষম্॥১১॥১০৩৯॥

পঠিক্তির

১। ইছা প-র-সা পূথির ১৪৬১ ও প-র পূথির ১৫।১৭ সংথ্যক পদ। 'স্ছই' স্থলে 'স্থিনী' দ, চ; 'আশাবরী' প-র। এই সংস্কৃত পদের প্রত্যেক চরণে নিম্নলিথিত রূপ মাত্রা-বিভাগ দৃষ্ট হয়, যথা,—৩+৩+৩+৩+৩+৪=২২ মাত্রা। ২; 'কিং' ক, চ; 'কিল' প-র-সা। ৩। 'রোচিরস্করয়ভি' ফলে 'কচিরস্করয়ভি' ক, চ, প-র সা, প-র; 'ফচিরস্করয়দি' ধ। 'ফচি' পাঠে ছলোভস ঘটে। ৪। 'ধীরে' ক, ধ, প-র-সা। ৫। 'সসনাতনমানসাঞ্জ' (প-র) স্থলে 'সা সনাতনমানসাঞ' ক, ধ, ঘ, চ,

हो का

>-- b । "रुख" ामि । (रह द्रार्थ !) रुख हेकि খেদে। সম্ভঙং (সভতং) অভিজ্ঞ : (অভিভাষিতং) किम् (क्षः) न महत्रप्रति (न निवर्ठप्रति) छख কিং দুৰ্ণমিতি চেত্তজাহ—তব দস্ত-রোচিঃ (দুশ্ন-ছাতি:) चनद्रः (वहनः) मखमनः (चक्कातः) অস্তরণতি (বিদুরম্বতি)। (দশন-কাশ্ব্যা) বিদু-রিভাক্ষকারে ব্যুনি ত্বাভিদার: সুলভপ্রচারো ভবিষ্ট ঠীতি ভাব:। হে রাধে! তং পথি (বন্ধ নি) **অভিসা**র-বিবরে ভূরি (প্রভূতং) সম্ভ্রমং (ভরং) মুঞ্চ (ভাজ) কিঞ্চ তব স্থাকুমারে (স্থামলে) চরণাস্ক্রে (পাদাস্তোকে) পদ্মবং ফ্রোমলং পদ-ৰন্দমিত্যৰ্ব: ধীরং যথা ভাৎ তথা চারম্ব (সঞ্চাল্য)। নমু দক্তকান্তিৰ্মরা পিছিতা নথকান্তিপিধানে কোহভূা-भात रेखि टिख्वार-**७**व चनवर्गः ((मच-क्रि) অতুল-কুন্তল-নিচয়ান্তং (অতুপম-কেশ-সমূহ-প্রান্তং) সম্ভন্ন (বিস্তারর) নখোপরীতি ভাবঃ। তেন কিং ভাদিত্যতাহ—তব নথ-কাম্বিভি: অভিশাহং मिर्वात्रिष्टः श्वीखः (छिमितः) कौरकु कथिकः সর্বং সভতাম। অভ সর্কনাশোন কার্য্য: স্বীয়া-

ভিদারামূক্দথাদিতি ভাব:। সসনাতনং (সনাতনবুক্তং) মানসং (চিন্তং) বড়াঃ সা দং অভ গতনহং
(বিগত-ভরং) বথা ভাব তথা বাস্তী (অভিসরতী)
মজ্-কুঞ্জ-বসতেঃ (অন্দর-কুঞ্জ-গৃহক্ত) অবং (কোড়ং
মধামিতি ভাবঃ) অস্পীকুক্ক (আকুক্র)।

অমুবাদ

১-৮। হে প্রীরাধে! হার! তুমি কেন
অনর্গন আলাপ একটু বন্ধ কর না? ভোমার
দশন-কান্তি প্রভূত অন্ধকার বিদ্রিত করিতেছে!
তুমি পথে অভিসারের প্রবন্ধ আশ্বা পরিত্যাগ কর
ও ভোমার স্কোমল পদ-গঙ্ক ধীর-ভাবে চালনা
কর। ভোমার মেঘ-বর্ণ অতুলনীয় কুন্তলের
প্রান্ত নথ-রাজির উপর প্রসারিত কর,—ভোমার
নথ-কান্তির ঘারা নিবারিত অন্ধকার জীবিত থাকুক।
সনাতন-গত-চিন্তা তুমি অন্ত নিঃশঙ্ক-ভাবে অভিদার
করিয়া মনোহর কুঞ্ক-গৃহের জোড়কে অন্ধৃত কর।

(क्संब 15

কলয়তি নয়নং দিশি দিশি বলিতম্।
পক্ষমিব মৃত্ব-মারুত-চলিতম্ ।
কেলী-বিপিনং প্রবিশতি রাধা।
প্রতিপদ-সমুদিত-মনসিজ-বাধা ॥ এ ॥
বিনিদ্ধতী মৃত্ব-মন্থর-পাদম্।
রচয়তি কুঞ্জর-গতিমনুবাদম্ ॥
জনয়তু রুজগজাধিপ-মুদিতম্।
রামানন্দ-রায়-কবি-গদিতম্ ॥১২॥১০৪০।

পাঠান্তর

১। এই পদটি ১০১৬ সংখ্যক পদ-রূপে ইতি-পূর্বে উচ্ত হইরাছে; স্বতরাং পাঠান্তর, টাকা ও অন্ত্রাদ উক্ত পদে এইবা।

পূর্ব্বরাগাভিদার:।

শহরাভরণ।>
এ ধনি পছমিনি পড়ল অকাজ।
জনি ভেটহং হরি কুঞ্জকরাজণ ॥ গ্রদ ॥
তুহুঁ গজ-গামিনি মতি অতি ভোর।
উচ কুচ-কুল্ড-গরবে নাহি ওর ॥
বৌবন-গরবে নাণ হেরসি পন্থ।
পরিমলে বাসিত করসি দিগন্ত॥
যব তোহে করব অরুণ দিঠি-ভল।
নিয়ড়ে না হেরবি সহচরি সক্ষ।
সো খর-নখর পরশ যব হোতি।
এ কুচ-কুল্ডে না রাখবণ মোতি॥
গণ্ডে করব যব দশনক ঘাত।
মুরছি পড়বি তহিঁ ধরণি নিপাত॥
গোবিন্দদাস যবহুণি গোঙরাব।

17017 0871

পাঠান্তর

অধর-স্থা দেই তবহি জিয়াব॥

১। ইহা প-র পুথির ১৬।১০ সংখ্যক পদ।
'শহরাতরণ' হবে 'ধানশ্রী' প-র। ২। 'ভেটত'
ক, ধ। ৩। 'কুশ্লক রাজ' হবে 'কুশ্লক মার' ক,
চ। ৪। 'গ্লেবে না' হবে 'মদে নাহি' প-র। ৫। 'রাথবি' ক, ধ। ৬। 'তহিঁ' শস্ল ক, ধ পুথিতে নাই। ৭। 'তবহুঁ' প-র। ৮। 'দেই তবহি'
হবে গুনহি' প-র।

অস্ত মিলনম্ ।

থাননা ।

নৃপুর-কলরব শুনইতে মাধবং
কুঞ্জক হোই বাহার ।

চলইতে থলই বলইণ সব স্থাভরণ

অধ্য নহত সম্ভারণ ॥

সজনি অদভূত কামুক নেছ।
আগুসরি আদর ভাবহি বাদর
কি করব না পায়ই থেছ। এ ।
কর গহি সঙ্কেত লেই॰ পরবেশই
করু নিরজন নিজ হাত।
শীকরযুত সর-সিজ-দলে বাজইদ
মলয়ল লেপই গাত।
রাই পুন দরশ-পরশ রসে নিমগন
লাজহি অবনত মুখা।
হেরি রাধামোহন সোই স্থেশাভন শ
মাটব পুরুবক দূখণ ॥১৪॥১•৪২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৬২ ও প-র পুথির ১৫:০৯ সংখ্যক পদ। ২। 'চমকই' প-র-সা; 'চমকিত' প-র। ০। 'কুঞ্লসে' প-র। ৪। 'পড়ই' ক। ৫। 'সাজ্ঞার' ও, 'সজ্ঞান' প-র। ৪। 'পুন' প-র। ৭। 'কুঞ্ল নিরজন' বলে 'কক্ষ নীরাজন' ক, চ; 'করই বিজন' প-র। ৮। 'শীকরযুত' ইত্যাদি হলে 'শীক্ষযুত সরসীদলে বীজই' ক, চ, প-র-সা। ৯। 'মুগ' ক, ব, প-র-সা, প-র।
১০। 'হেরি' ইত্যাদি হলে প-র পুথিব পাঠ ব্যা—
'গোবিন্দ দাস হেরি সোই লোভন'। ১১। 'হ্ধ' ক, ব, প-র-সা, প-র।

শ্রীকৃষ্ণদ্যোক্তিঃ রূপোল্লাদঃ।

७वा दोत्र ।>

তুয়া মুখ চাঁদ কমল আদি কবলই
নিবিড় চামর জিভি কেশ।
কনক কমল অলি জিনিং অলকাবলি
শ্রুণতি অছু গিধিনি বিশেষ।
তক্ষণি-মুকুট-মণি গোরি।

জ্মপুগ নরতনে° কাম-ধমুগ কম্পিত পরাণ-পুতলি তুহু মোরি॥ গ্রু॥ **ठक्क नग्नन इन्होत्त निक्र इ** গণ্ডহি জিতল মুকুর। নাসা ভিলফুল° অধর পভারকুল শ্বিত জিতি^{*} অমিয়া কপুর^{*}। কুন্দ করগ-বিজ জিতি বিজ-লাবণি কণ্ঠহি কন্থক শোভা। বাহু মুণাল করযুগ পক্ষজ मयू मन-मधुकत-(लांडा ॥ কুচযুগ কোক লোম ভুঞ্জিনি ত্রিবলি ত্রিবেণী-বিলাস। মাঝ বর সিংহ নিতম্ব করি-কুস্ত উরু রম্ভা করু উপহাস 🛚 পদ থল-কমল নথ জিত' চাঁদ কত লাবণি অমিয়া-ভরক। রাধামোহন পত্ত কংইতে ঐছন ভাবে অবশ ভেল অন্স ॥১৫॥১০৪৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৬০ সংখ্যক পদ।
২। 'অতি প-র-সা। ৩। 'জবুগ নরতনে'
ছলে 'জবুগল রাডনে' ক; 'জবুগল রডনে' থ; 'জবুগল নবডেনে' চ। ৪। 'কাম-ধহ্ম' ছলে 'তহ্ম
অতি' ক। ৫। 'ভিলক ছ্ল' থ। ৬। 'অত'
ব, চ। ৭। কিপুরি' ক। ৮। 'বীজ' ক, থ।
১। 'অতি' ক, খ।

शामनी ।)

নির্মিল কো বিধি কেলি-কলানিধি

মণ্ডল কিলোর কিশোরী।

সূহঁ লোহাঁং নির্ধি পুলককুলে আকুল

হাসি কহই গিরিধারী ॥

শুন শুন হুন্দরি রাধে। তুয়া মুখ-মাধুরি লেশ নাহি হেরি কমল মুকুরবর চাঁদে। গ্রু যো বিধু শোভিত সোই কলঙ্কিত বিরহি-বিদারণ-শূল। নিরখি বদন তব সোই জুড়ায়ত ইপে শশি না ভেল তুল । मद्राप्त मिलन भद्राम यमि कल-कन মাৰ্জ্জন-বিহিনণ অদার। তুয়া মুখ মলিন কবছাঁ নহে স্থলারি नोद्र निष्य উक्षियात ॥ নিতি নিতি নলিন মলিন জল মাঝহিং **८७** जरे जिल मधुभान। তুয়া মুখ-কমল বিমল নব পরিমল মঝু মন মধুপ সমান # শুনি ধনি বাণি অলস দিঠি-পঙ্কজ প্রেয় সহত্রি হেরি হাস। নির্বিতে শ্রাম প্রসারসে মাতল কহতহিঁ নম্পন দাস ॥১৬॥১•৪৪॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৪৬৪ সংখ্যক পদ।
২। 'ছ্হাঁ' ক, চ। ৩। 'ছুল' ক, খ, প-র-সা।
৪। 'বিনহি' প-র-সা। ৫। 'মলিন' ইত্যাদি
হলে 'মলিনী জল মাজহি' প-র-সা।

গাভার।>
শুন শুন নাগর সকল কহিতে পার
কে বুঝিবে বচন-তরক।
একে তুহুঁ বিদগধ তাহে প্রিয়ন্ত্রদং
তাহে কত রসবতি সক।
মাধব রসিক রসায়ন-বাণী।
ব্রক্তবধু-বদন , বিমল বর রাজীবিং
ভাহে ভ্রমর ভূহুঁ কানি। ধ্রা

জাড় নয়ন করি অলক তিলক হৈরি
মুচ্কি মুচ্কি করু হাস।
সো হসনায়ত অধরে মিলায়ত
তঁহি মধু-মঞ্ল ভাষ ॥
তাপনি-তীর তার নিতি ধায়সি
তাহে এত শীতল দেখি।
স্বরধুনি দেবি সেবি কিয়ে স্থমধুর
পুছহ নন্দ⁸ এক সাথি॥১৭৮১০৪৫॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৬€ সংখ্যক পদ।
২। 'প্রিয় সম্বদ' ব। ৩। 'বিমলবর রাজীব' স্থ্পে
'বিমল প্রাজিত' চ; 'বিমল রাজিত' প-র-সা। ৪।
'নন্দন' প-র-সা।

পুনশ্চ শ্রীকৃষ্ণস্থোক্তিঃ। বালা ধানশী।>

ফুলরি, আন-গুণে নহেই মোর বচন মধুর।
তুরা পরসাদে সাধ সব পুর ॥
আন-সঙ্গ কভুই না কছবি মোর।
চাঁদ না তেজই কবহাঁ চকোর ॥
তুরা গুণ-গারন বয়নই হামার।
তুরা হৃদি শীতল পঙ্কজ-হার॥
তুহাঁ দরপণ বিমু সব আদ্মিয়ার।
মিছ নহ নন্দই কহয়েই কত বার॥
॥১৮॥১০৪১॥

পাঠাম্বর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৬৬ সংখ্যক পদ। ২। 'নহ'ক,চ, প-র-সা। ৩। 'কব'প-র-সা। ৪। 'বরান'চ। ৫। 'দরশন'ক,খ, প-র-সা। ৬। 'নক্ষন'প-র-সা। ৭। 'কহত'প-র-সা।

कृषानी ।>

হত্ঁ রসে ভোর হেরি পাঁচ-বাণ।
কেলি-কলা লিয়ে করত সদ্ধান।
দেখ পুন চেতন ছত্ঁ অবলম্ব।
পুনহি অচেতন যব পুন চুদ্ব॥
বিপুল পুলক বর স্বেদ-সাঁচার।
চির থির নয়নে নার অনিবার॥
কাঁপই থরহরি গদ-গদ ভাষ।
ছত্ঁ ছুহাঁ পরশনে কতত্ত উলাস॥
আন-আন-সঙ্গ-রঙ্গে জরু অঙ্গ।
কো করু অনুভব প্রেম-তরক্ষ॥
নিতি নিতি ঐছন হোয়ত বিলাস।
কব হেরব রাধানোহন দাস॥১৯১১০৪৭॥

পাঠান্তর

১। এই পদটি ইতিপুর্বে ৭৬২ সংখ্যক পদ-ক্লপে উদ্ধৃত হইয়াছে; প্রতরাং পাঠান্তর ও টীকা উক্লপদে এইবা।

বিহাগড়া।১

রভি-ত্থ-শয়ন-নিবেশহি হৃদ্ধরি
প্রমুদিত-মানস ভেলি।
বিছুরল আন আন কেলি-কৌতুক
অনুগত নিধুবন কেলি॥
অদভূত মদন-বিলাস।
রাইক দেহ-দণ্ড পরিশোভিত
শ্রমজল-মুকুতা বিকাশ॥
নিমিলিত নয়ন বয়ন-বর শোভন
অলখিত সহজহি হাস।
অনধিন বাহ্-বল্লি অরু সব অঞ্জ
তে উহু রহত উদাস॥

বিগলিত অঙ্গ-রাগ অক্স অভরণ বিগলিত কুঞ্চিত-কেশ। রাধামোহন চিতে নিতি নিতি ভাবই ঐছন প্রোম-আবেশ ॥২০॥১০৪৮॥

ইতি রূপোল্লাসঃ।

পঠিবির

১। এই পদটি ইতিপূর্বে ৭৮০ সংখ্যক পদ-ক্লপে উদ্ভ হইয়াছে; স্থতরাং পাঠান্তর ও টাকা উক্ত পদে এইবা।

অথ রূপোল্লাদঃ প্রকারান্তরং যথা।

अभएको ब्रह्मः।

बद्रांडी ।ऽ

নিরূপম স্থন্দর গোর-কলেবর মুখ জিভি^২ শারদ-চন্দ। কুন্দ-করগ-বিজ**ং** নিন্দি স্থশোভিড

কুন্দ-করগ-বিজ্ঞ নিন্দি স্থালেভিড অভিশয় দন্ত স্থছন্দ॥ কুঝলুঁ কাম পুন সাধে।

অমিয়াক সার ছানি নিরমায়ল বিহি-সিরঙ্গন ভেল বাধে ॥ গ্রুদ ॥ অকলক চান্দ ভানে বিধুস্তুদ

ধাবই পরশক লাগি।

নিকটহি বাই হেরি তছু মাধুরি

ভছু ৰুর-ভয়ে পুন ভাগি । প্রতিবোগি॰ আদি নাম-দোৰ শত

প্ৰাওবোগি আদি নাম-দোৰ শ গুণ ভেল⁹ যাক ধেয়া**চ**ন।

সেই চরণ-গুণ কলিযুগ-পাবন কল্ল রাধামোহন গানে ॥২১॥১০৪৯॥

পাঠান্তর

)। देश श-व्र-मा शूचित २१७० मरश्यक शहा २। 'क्टिं' या २। 'तीक' कृष्, श-व-मा। श 'বুঝল' ক, প-র-সা। ৫। 'ধাওই' ধ, চ।
 ৬। 'প্রতিবোগী' ক, ধ। १। 'ভেলহি' ক, চ।
 টীকা

৫— १। "বুঝলুঁ" ইত্যাদি। বৃঝিলান, प्रशः কল্মপ সাধ করিয়া অমৃতের সারাংশ ছানিরা লইয়া (তত্মারা শ্রীগোরালের রূপ) নির্দ্ধাণ করিল,— ব্রহ্মার ক্ষষ্টি ব্যর্থ ছইল। (অর্থাৎ কল্মপ ই কেবল এইরূপ অমৃত্রময় রূপ নির্দ্ধাণ করিতে পারেন; ব্রহ্মার এরূপ সাধ্য নাই। ১০৩৪ সংখ্যক পদের ১—০ পংক্তির টীকা দ্রষ্টব্য)। তুলনা কক্ষন,—

'ধনি ধনি কো বিছি বৈদগধি-সাধে। মদন অংধা-রসে বো নিরমাওগ

जूबी भूथ-मधन बार्य ॥ अन ॥

— প-ক-ত, ১০৩৪ সংখ্যক পদ।
১২—১৩। "প্রতিৰোগি" ইত্যাদি। রাধামোহন ঠাকুর লিখিয়াছেন,—'প্রতিষোগ্যপ্রসিদ্ধানরা
দোষা কবিতায়াং সন্তি তথাপি তচ্চরণগুণবর্ণনাৎ
সর্ব্বে নিরস্তা ইত্যর্থ:।' অর্থাৎ কবিতার 'প্রতিবোগী', 'অপ্রসিদ্ধ' প্রভৃতি দোষ বাঁহার চরণ-খণবর্ণন শারা নিরস্ত হইয়াছে।

শ্রীকৃষণ্ড রূপম্।

वित्रांत 13

হ্ব-পত্তি-ধনু কি শিখগুক চূড়ে।
মালতি-যুরি কি বলাকিনি উড়েং॥
ভাল কি ঝাপল বিধু আধ-খণ্ড।
করিবর-কর কিয়ে ও ভূজ-দণ্ড॥
ও কি শুমাম নট-রাজ।
জলদ কলপ-তক্ত ভক্তণি-সমাজ॥ ধ্রু॥
কর-কিসলয় কিয়ে অক্তণ-বিকাশ।
সুর্গলি-পুর্লি কিয়ে চাভক-ভাব॥

হাদ কি ঝরয়ে অমিয়া মকরন্দ।

হার কি তারক-দোতিক ছন্দ ।

পদ-তলে কি থল-কমল ঘন-রাগ।

তাহে কলহংস কি নুপুর জাগ॥

গোবিন্দদাস কহয়ে মতিমন্ত।

ভূলল যাহে বিজ রায়ঃ বসন্ত ॥২২॥১০৫০॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র পুথির হাংহ সংখ্যক পদ। ২। 'উড়ে' ক, থ, চ, প-র। ৩। 'দ্যোতিক' ক, থ; 'মোতিম' প-র। ৪। 'রাজ' ক, থ, চ, প-র।

শ্রীকৃষ্ণস্থ অভিগারঃ।

তথা রাগ।>

কাননে সবছ কু কুম পরকাশং।
শারি শুক পিককুল-মধুরিম-ভাষ ॥
মউর মউরিগণ ঘন দেই নাদং।
শুনইতে কাতর ভেল উনমাদ ॥
দেখ দেখ নাগর-রাজ।
চললহি সঙ্কেত-কুঞ্জক মাঝ ॥ গুং ॥
কিশলয়-পুঞ্ছি শেক্ষবর কেল।
তঁহি পরং বৈঠি পুন তর্মিত ভেল ॥
পথ হেরি আকুল বিকল পরাণ।
অবহু মান ক্ষল পরকাশ।
চৌদিশে হেরই গোবিন্দদাস ॥২০॥১০৫১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৪৭ নংখ্যক পদ।

१। 'কাননে' ইত্যাদি ছলে 'কাননে ভেল সব কুত্ম

বিকাস' প-র-সা। ৩। 'মউর' ইত্যাদি ছলটি পংক্তি

ইলে প-র-সা পুৰির পাঠ, বধা—

'গুঞ্চ ভ্ৰমর ভ্ৰমরি উত্রোল। মধু-লোভে মাতি রন্থ মালভি-কোল। তাহি গমন কক বিদগধ-রাজ। কক্ষক নৃপ্র অধিরত বাজ। অমি অমি বৈঠলি নিবিড় নিক্জে। শেজ বিছারল কিসলর-প্রে॥'

শ্রীমত্যাঃ আগুদুত্যাঃ উক্তি:।

গান্ধার ৷১

কালিয়-দমন জগতে ভুয়া ঘোষই সহচরি শুনইতে কাণে। তুয়া সঞেং বাদ করিয়া ধনিং আওত মনমণ **চ**ট ३ दें भिटिन ॥ মাধব শতরে কহিয়ে তৃয়া লাগি। ত্রিবলিক মাঝে লোম-ভুজ্ঞিনি হেরইতে তুর্ কনিং ভাগি ॥ ধ্র ॥ নয়ন-কমল পর যুগল-ভুজগবর কাঞ্চর-গরল উগারি। মদন-ধনন্তরি আপে যব আওব সো বিশ্ব তবহি না সারি॥ বেণি-ভুঞ্জগবর পিঠ পর দোলত हित्रिम्न अधिल शिशारम । শুনইতে নাগ-দুমন-ভমু কম্পিত কহত্হিঁ গোবিন্দদাসে 12812০৫২1 পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপ্থির ১৬৭১ সংখ্যক পদ। ২। 'সনে' ক। ৩। 'সভে' থ, খ। ৪। 'কানি'ক। ৫। 'মদন' খ, চ।

নকা

>—8। "কালিয়" ইত্যাদি। প্রোচীন সমরে
সাপ্ডিয়াদিগের মধ্যে মাঝে মাঝে প্রতিথশিক।
হইত; তাহাতে এক পক্ষ অপর পক্ষকে পরাজিত
করার জন্ত অনেক ভর-মন্ত্র প্রয়োগ করিত ও ৩৭
দেখাইবার জন্ত উত্তর পক্ষকে উভয় পক্ষের প্রমন্ত

ভয়ানক ভয়ানক বিষধর সর্পের সহিত ক্রীড়া করিতে হইত। এই 'বাদ' বা প্রতিধন্দিতার নাম 'ঝাঁপান'। উভয় পক্ষ মাঁচার উপর চড়িয়া এই ক্রীড়া করিত বিলয়া ইহাকে 'ঝাঁপান চড়া' বলা হইত। প্রীরাধার আপ্তান্তী প্রীরাধার সহিত প্রীক্রফের সস্তোগক্রীড়াকে পরিহাস করিয়া 'ঝাঁপান চড়া'-রূপে বর্ণন করিয়া বলিভেছেন) হে প্রীক্রফা। ভোমাকে ফগতে (সর্পপ্রেষ্ঠ) কালিয়-নাগের দমন-কারী বলিয়া ঘোষণা করে—(আমাদিগের) সবী (প্রীরাধা) (এই কথা) কাণে শুনিবা মাত্র ভোমার সঙ্গে প্রতিধন্দিতা করিয়া, কন্দর্পের ঝাঁপানে চড়িয়া (এখানে) আসিভেছেন।

🕶 বা বাগ।১

রাইক আগমন-বাত।
শুনইতে উলসিত গাত।
ভাহে কহই নব-কাম।
নাগ-দমন মঝুনাম।
খগ পতি রহু মঝুপাশ।
সবহুঁ সে করব গরাস।
বিকট মকর পুন হোয়।
এক না রাধব সোয়।
দৈব করয়ে যব আন।
দংশয়ে হামারি বয়ান।
রসনা-ধনস্তরি আগে;
ভহিঁ পুন অমিয়া লাগাবে।

নিরবিষ হোয়ব ভায়। জীতব এহিত উপায়॥ এত শুনি সহচরি গেল। গোবিন্দ অমুমতিং দেগ ॥২৫॥১০৫৩। পাঠাস্কর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৭২ সংখ্যক পদ।
২। 'নব-কাম' স্থলে 'নব কান' চ, প-র-সা। ৩।
'গোবিন্দ অফুমভি' স্থলে 'গোবিন্দদাস মভি' ক।

শ্রীমভ্যাঃ অভিসারঃ। बीदांग 13 নিরুপম কাঞ্চন-রুচির কলেবর लावित वत्रिन ना ८ शहर। নিরমল বদন হাস-রস-পরিমলে মলিন স্থাকর অন্বরে রোই॰॥ আজু বনি নব রঙ্গিণি রাই। স্ঞিনি সকল শিক্ষারিণি সাই ॥ লোলঃ অলক তিলকাবলি বঞ্জিত সীথহি° কাঞ্চন-কমল উজোর। লোচন-মধুকরি চলত ফেরি ফেরি শ্রুতি-কুবলয়-পরিমলে কিয়ে ভোরঃ শ্রামর-চীত-চোর কুচ-কোরক नौल निरुशल-रकारत कक्नु वाम। যাবক-রঞ্জিত অরুণ চরণ-তলে कि नितमक्षव ° (शांविन्मनाम ॥२७॥) • ८॥। পাঠান্তর

১। ইছা প-র পুথির থাৎ সংখ্যক পদ।
২। 'হোর' প-র। ৩। 'মলিন' ইত্যাদি স্থল 'অম্বরে স্থাকর রোর' প-র। ৪। 'লোলত' পর।
৫। 'সিল্বহি' প-র। ৬। 'অক্প' ইত্যাদি স্থলে চির্থ-সরোক্ষ্' প-র। ৭। 'নির্মঞ্ব' ত্তে 'নির্মঞ্ব' প-র।

সিমুড়া ।১ শরদ-স্থাকর মণ্ডল-মণ্ডন थ धन वहन-विकाभर। অধবে মিলায়ত শ্যাম-মনোহর চীত চোরায়নিও হাস॥ আজু নব খ্যাম বিনোদিনি রাই। তমু তমু অতমু-যুথ-শত-সেবিত नावित वज्रित ना यारे ॥ ध्रम ॥ কবরি-বকুল ফুলে আকুল অলিকুল मधु भिवि भिवि छे उरताल। সকল অলঙ্কতি কঙ্কণঃ ঝক্কতি किकिनि तनत्रनि दर्गन ॥ পদ-পক্ষ পর মণিময় নৃপুর পুরিত ংখঞ্চন-ভাষ। মদন-মুকুর জমু নখ-মণি-দরপণ नीक्नि ' त्राविन्ममात्र ॥२१॥>० ५०॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৬০ সংখ্যক পদ। ২।
'মগুল-মগুন' ইত্যাদি হুলে 'বদনমগুল থগুন'
ইত্যাদি ক; 'মগুল-মগুন বদন চাঁদ বিকাশ' প-র-সা।
°। 'চোরায়লি' খ। ৪। 'করুণ' ক, খ। 'কনক'
ক, (পাঠান্তর)। ৫। 'রণঝণ' ক, খ (পাঠান্তর)
'বনঝন' প-র-সা। ৬। 'ক্লিনী' প-র-সা। १।
'নিছনি' ক, খ, প-র-সা।

মার্ব।>
সম-বর বেশ-ভূবণ-ভূবিত-তনু
সখিগণ সঙ্গহি মেলি।
গজ-গতি নিন্দি গমন অতি স্থন্দর
কিয়ে জিত-খঞ্জন-কেলি॥
দেখ রাই করল অভিসার।
শিরিব কুস্থম জিনি কোমল পদতল
বিপ্রেণ পড়ত জনিবার এশঃ

বো থল-কমল-পরশে অতি কোমল
কামর ভই উপচন্ধ।
সো অব যাহাঁ তাহাঁ কঠিন ধরণি মাহা
তারত বড়ই নিশস্ক॥
ঐছন ভাতি মিলল কুঞ্জ মাহা
দৃতিক যাহাঁ উপদেশ।
ভণ রাধামোহন তহিঁ যো আচরণ
হাম কিয়ে পায়ব উদেশ ॥২৮॥১০৫৬॥

১। এই পদটি ইতিপুর্বের ১০১৭ সংখ্যক পদক্রপে উদ্ধৃত হইরাছে; স্থতরাং পাঠান্তর উক্ত প্রে
অংইবা।

(करांत्र ।

ছহ দোহাঁ দরশনে উলসিভ ভেল। আকুল অমিয়া-সাগরে ডুবি গেল ॥ এন। वर्ष मिठि वर्ष मूर्य অবধি নাহিক স্থাৰ পুলকে পুরল ছহু তত্ত। त्वज्ञ मधोत्र शेष्टे रेयहन ठाटमन हाउ ভার মাঝে সাজে রাধা কামু॥ দোহাঁর রূপের ছান্দে মদন পড়িয়া কান্দে স্থাকর কিরণ লুকায়। দোহাঁর সুখের বাণী অমিয়া-অধিক শুনি मधोगन व्यवन खूड़ांग्र ॥ দোহাঁর মাধুরী-গুণে উলসিভ স্থীগণে নানা ফুলে দোঁহারে সাজায়। ञ्चगिक हम्मन मिश কর্পুর তাম্ম লৈয়া विभाशिका (मैंशिद्र (यागांग्र । मानिनो चारेन धाका ললিতা-ইন্সিত পাঞা বিনি স্থতে গাঁপি ফুলহার। হিয়ার উপরে দোলে **(मश्रम (मैशित गरम** দেখি জাখি শীড়ল সভার ৷২৯৷১০৫৭৷

পাঠান্তর

১। 'इहं' क, हा २-७-৪। 'स्निहेंकि' इटल 'इहेंकि' क, हा

তথা রাগ।

রাধামাধব স্থমধুর-কেলি।

তুহুঁ রূপে তুহুঁ জন মানন ভেলি ।

উলসিত বিনদং নাগরবর কান।
কহই অমিয়া-বাণি হসিত-বয়ান॥
স্থানির কি কহব ভোহারি বাখান।
স্থানির কি কহব ভাহারি বাখান।
স্থানির কি কহব ভাহারি বাখান।
স্থানির কি কহব ভাহার পরতেক।
করহি স্থানুস্থানির ভাহার এক হোয়।
ক্ষিত কেশ দরশে এক সোয়॥
স্থানির পরাভ্ব ভাই৬ চলি গেল ।
কহর কবিশেখর কি কহব কান।
লাখ বয়ানে নহত পরিমাণণ ॥৩০॥১০৫৮॥

পাঠান্তর

১। 'গণ' च। ২। 'বিনোদ' ক। ৩। 'শুকুমা' ক। ৪। 'কুম্ম' ধ। ৫। 'কিরণে' ধ, च। ৬। 'হোই' প-র-সা। ৭। 'পরিণাম' ক, ব, চ।

পুনশ্চ।

শীরাগ।>

ন্থামূখি কো বিহি নিরমিল বালা।
অপারূপ রূপ মনোভব-মক্সল

ত্রিভূবন-বীঞ্ছং মালা।ধ্রু।
স্থান্যর বদন চারু অরু লোচন
কাজারে রঞ্জিত ভেলা।

কনক-কমল মাঝে কাল-ভূজলিনি
শ্রীযুত-ধঞ্জন-ধেলা ॥
নাভি-বিবর সঞ্জেও লোম-লতাবলি
ভূজগি নিশ্বাস পিয়াসাও।
নাসা-খগপতি-চঞ্-ভরম-ভয়ে
কূচ-গিরি সান্ধিং নিবাসা ।
তিন বাবে মদন জিতলও তিন ভূবনে
অবধি রহল দউ বাবে।
বিধি বড় দারুল বধিতে রসিক জন
সোঁপল ভোহারি নয়ানে॥
ভণয়েও বিভ্যাপতি শুন বর যুবতি
ইহ রস কো পয়েও জান।
রাজা শিবসিংহ রূপনারায়ণ
লছিমা দেবি পর্মাণ।৩১॥১০৫৯।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪ ৭৬ এবং প-র পুথির
১৬ ২ সংখ্যক পদ। ২। 'বিজয়ী' ক ; 'বিজই' চ,
প-র-সা, প-র। ৩। 'দে' প-র-সা। ৪। 'বিয়মা'
খ, ঘ। ৫। 'সাধি' প-র। ৬। 'তিজল' ক। १।
'দৈ' ক ; 'দোউ' খ। ৮। 'কহ' প-র। ১।
'যুব্তি' ক, খ, প-র-সা, প-র।

বিহাগড়া 15

শুনহ স্থাবি কি রূপ তোর।
হৈরিতে হরল মরম মোর।
মদন-সদন বদন-চান্দ।

স্থার সে মুরতি স্থরত ফান্দ।

স্পান তরুণ অধ্য-কাঁতি।

নিন্দিত-মোতিম দশন-পাঁতি।

তীলং-কুস্থম-স্থম নাসা।

গ্রাম চাঁচর চিকুর-পাশা।

ভামল কমল লোচন ভোৱ।
তরল করল হাদয় মোর ॥
ক্রচির চিবুক মধুর গীম।
বিধিক শিলপও-শক্তি-দীম ॥
কনক-দাড়িম কুচক জোরণ।
মুনিক মানস-চতুর-চোর ॥
ভণয়ে বল্লভ না লভং বাক।
মদন দেয়ল জয়-পভাক ॥৩২॥১০৬০॥

পাঠান্তর

১। ইকা প-র-সা পূথির ১৪৭৭ সংখ্যক পদ।
২। 'তিল' ক, খ, প-র-সা। এই পদের প্রত্যেক
চরণে ত্রিমাত্রিক চারিটি গণ আছে; স্থতরাং 'তিল'
পাঠে ছব্দোভল ঘটে। ৩। 'নিলিপ' ঘ, চ। ৪। 'ওর' ঘ; 'রোর' চ। ৫। 'না লভ' ছবে 'না লব বাক' ক; 'নাল' ঘ।

তিরোপা ।>

আঁচরে বদন ঝাঁপায়হং গোরি।
রাজা শুনইছে চান্দকি চোরি ॥গ্রা॥
ঘরে ঘরে পহরি ছোড়ি গেল জোর ।
আবহি দেখব ধনি নাগরি ভোয় ॥
হাসি স্থামুখি না কর বিজোরি ।
বাণিক ধনি ধনি বোলবি মোরি ॥
অধর সমীপ দশন করু জোতি।
সিন্দুর সমিপ বসায়লি শোতি ॥
শুন শুন স্থন্দরি হিত উপদেশ।
অপনে হোয়ে জনি । বিপদক লেশ।
চান্দক আছয়ে ভেদ কলছ।
ও যে কলছিড । ভূতুঁ নিকল্ছ॥
রাজা শিবসিংহ লছিমা দেবি সল্প ।
ভণরে ব্রিভাপতি মন্ত নিশ্ব ॥৩০।১ ৬১।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ১৪৭৮ ও প-র পুলির ১৬৪ সংখ্যক পদ। ২। 'র্রাপহ' ক; 'হাপারহ' ধ। ৩; 'কুনইতে' ক; 'শুনিয়াছে' প-র; 'শুনল' প-র-সা। ৪। 'পহরি' ইত্যাদি হলে 'পহর গেলছি জোর' প-র। ৫। 'দেধব ধান' হলে 'না দেখিল' প-র। ৬। 'কর বিজোরি' হলে 'করবি জোরি' ঘ; 'করবি য়োরি' চ। 'হাদি' ইত্যাদি পংক্তি ছুইটির হলে প-র পুলির পাঠ, যধা—

'হাসি হাসি স্থামূখি না করবি আন। সাথি দেওব ইথে তোহারি বয়ান॥'

१। 'মেরি' খলে বিভাপতির অধিকাংশ মৃদ্ধিত সংস্কারণে 'গোরি' পাঠ দৃষ্ট হয়, কিন্ধ আমরা 'বোরি' পাঠ কোন পুলিতেই প্রাপ্ত হই নাই। ৮। 'দশন করু' স্থলে 'দশনক' ব। ৯। 'সমিপ বসায়লি' হলে 'সামে পসায়ল' প-র। ১০। 'আনি' প-র-সা। ১১। 'কলকী' ক; 'কলকি' ম, চ; 'কলকিনি' প-র-সা। ১২। 'দেবি সঙ্গ' স্বলে 'কঞা' প-র।

১--- ২। "আঁচরে" ইত্যাদি। ছে গৌরাদি!
তুমি অঞ্চল ধারা বদন আফোদিত কর; (কেন না)
রাজা চালের চুরি শুনিতেছেন, অর্থাৎ চালের চুরি
শুনিয়া উহার বিচার করিতেছেন!

৩—৪। "বরে" ইত্যাদি। (চান্দের চোর কোথার আছে,—তাহা অন্সন্ধান করার উদ্দেক্তে) প্রহৃষ্ট প্রতি ধর দেখিয়া (চান্দের চোর না পাইরা) ছাড়িরা গেল; হে স্থানরি নাগরি! (সে) এখনই তোমাকে দেখিতে পাইবে।

e-- । "হাসি" ইত্যাদি। হে স্থামূপি!
(তুমি) হাসিয়া বিছাৎ (প্রকাশ) করিও না;
(আমার কথার উপকারিতা বুঝিতে পারিয়া) আমার
কপার ধন্ত ধন্ত করিবে!

ততঃ সম্ভোগঃ।

(क्शंत्र 1)

স্থদ বৃশ্ববিন স্থময় শ্রাম। স্থময়ি রাধা ভহিঁ ব অমুপাম। छुएँ भिल (कलि-विलाम कक्र । ছুত্ অধরামতে ছুত্ মুখ ভরু । ছ্ছ অঙ্গ পুলকিত বিলাসে বিভোর। विनिष्नि द्रांश विनिष्धा-टकांत्र॥ प्रहाँ (किन-পिঙিত রূপে গুণে সম। বিলাস রভস•-রসে কেহ নহ° কম । হ্মরত মুরত হু ত্ব করু পরকাশ। রতিপতি-হৃদয়েত• লাগত। তরাস 🛭 অদভুত পরিরম্বণে ধনি লাজ। मृशूत ऋणू ऋणू किकिनि वाज ॥ এক-ভমু এক-মন একহি পরাণ। ছুত্ত তমু এক ভেল বিহি-নিরমাণ ॥ শ্রম-জলে ভীগল ছুহু জন-গায়। ছুত্ত রতি-সায়রে ওর না পায় ॥ क्ट लाउँ। पृषि नमाधन । किन। ष्ट्रहें कन-रितरन (भवत रिश्न ॥**७८॥**১०७२॥

ইভ্যাদি রূপোল্লাস:। ইভি তৃতীয়-শাখায়াং চতুর্দ্দশপল্লব:।

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুৰির ১৪৭৯ সংখ্যক পদ।

২। 'অতি' প-র-সা। ৩। 'রভসে' च; 'বিক্রম'
প-র-সা। ৪। 'নহে' ক। ৫। 'রুকত' চ;
'বুরতি' প-র-সা। ৬। 'রুদরত' খ, চ; 'রুদর' च।
१। 'লাগল' च, প-র-সা। ৮। 'রুপু রুপু' ছলে
'ক্ছবুরুপ' ক; 'বরু বরু' খ। ৯। 'ভিগল' ক, খ,
প-র-সা। ১০। 'হুইা' ক। ১১। 'চুছি সমাধ্ন'
ছলে 'চুছন সমাধ্নি' প-র-সা।

অথ নিত্যরাসঃ সর্ব্বকালোচিতঃ।
তদ্ধচিতঞ্জীগোরচন্দ্রঃ।

ছুড়া।>
দেখত বেকত গোর-চন্দ
বেঢ়ল ভকত^২-নখত-র্নদ
অধিল-ভূবন উঙ্গরকারি
কুন্দ^৩-কনক-কাঁতিয়া।

কুণ্দ - কন্দ-বিধাভয়। অগতি-পতিত-কুমদ-বস্থ হেরি উছল রসক সিস্কুণ হৃদয়-কুহর-তিমির-হারিণ

উদিত দিনহিঁ রাতিয়া।
সহজে স্থানন্দে মধুর দেহ
আনন্দে আনন্দে না বান্ধে থেহ
চুলি চুলি চুলি চলত খলত

মত্ত-করিবর-ভাতিয়া।
নটন ঘটন ভৈ গেল ভোর
মুকুন্দ মাধব গোবিন্দ বোল
রোয়ত হসত ধরণি খসত

শোহত পুলক-পাঁতিয়া ।
অসম-মহিমা কো কর্ত্ত ওর
নিজ পর ধরি করই ১০ কোর
প্রেম-অমিয়া হরধি বরধি

তরখিত মহি মাতিয়া।
বো^{১১} রসে উত্তম অধম ভাস
বঞ্চিত একলি গোবিন্দদাস
কো ভানে কি^{১২} খেনে ভোন গঢ়ল^{১৩}
কাঠ-কঠিন ছাতিয়া ॥১॥১০৬৩॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র পুথির ভাষ্ট ও ১৫।> সংগ্রহ পদ। ২। 'বেক্ড' প-র, ১৫।১। ৩। 'রুক্' প-র, ১৫।১। ৪। 'হেরি উত্তল রস্ক সিপ্স' ব্লে 'হেরি উছল রসিক্সিত্ম' ক, ধ; 'হেরি উছল রসিক্সিত্ম' ব; 'হেরতউ ঐছন' ইত্যাদি প-র। ৫। 'হ্বদ্রম' ইত্যাদি স্বলে 'তিমিরহারি উজরকারি' প-র ১৫।১। ৬। 'ঢুলি ঢুলি ঢলি' স্বলে 'ঢুলি ঢুলি' ক, ধ। ৭। 'শেভত' ক। ৮। 'মহিম' ক, ব; 'মহিমা' ধ, চ; 'মহি' প-র ৬।৪২; 'অসিম' প-র ১৫।১। ৯। 'করু' প-র ১৫।১। ১০। 'করত' থ, প-র। ১১। 'তেম' ক, ধ। ১০। 'কোন গঢ়ল' স্বলে 'কোন পড়ল' প-র ১৫।১।

শীরাপ 1>

মুরলি বোলায়ত পরম মধুর মৃত্ व्यथन-स्थाभदत धतिया। ধ্বনি শুনি ধরণি धत्रल श्रुल-कांभिनि চোঙক পড়ল জগ ভরিয়া॥ नीथ निकटि नव त्रक्रिया। পদের উপরে পদ তরুমূলে শ্রামচাঁদ লীলা-ললিত তিরিভঙ্গিয়া° ॥ধ্যা পঞ্চানন চজু-রানন নারদ ধ্বনি° শুনি স্থরপতি ধন্দে। ধল ফুলে মগন मकल वृन्तावन তরু সঞ্জে ঝরে মকরন্দে। গুনিয়া বংশীর গান মুনিজন ভুলে ধ্যান (यांगीख मूनीख मूक़ हांग्र। রায়শেখর বোলে বাঁশী শুনি কে না ভুলে কুলবতী কি বাঁচিবে তায় ॥২॥১०৬৪॥ পাঠান্তর

মাযুদ্ধ।১ नव-योवनि धनि क्या किनि लोवनि মোহিনিই বেশ বনায়লিও তাই। মনমথ চীত ভাত নাহি মানত কুঞ্জরাজ পর সাজলি রাই॥ চললि° निक्छ क्श्वत-वत्र-गमनो। যুবভিযুপ মেলি° গাওত বাওত চলত চিত্র-পদ বিদগধ রমণী ॥ধ্রু॥ হেরই শাদ হ্রত-রণ-পণ্ডিত शंजि मनन-मर्प मार्जल वाला। রতি-রণ-বীর ধীর সহচরি মেলি বরিখয়ে নয়নে কুত্রম-শর-জালা ॥ নয়নে নয়নে বাণ ভুজে ভুজে সন্ধান তমু তমু পরশে নাহিণ জন্ন ভন্ন। গোবিন্দদাস চিতে > অব নাহি সমুঝল বাজত কি কিণি কে ন ১২ ভরজ ॥ 110112 . 961

পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা প্থির ৪৫৮ ও প-র প্রথির ৪২০৫ সংখ্যক পদ। ২। 'মোহন' ক; 'মোহনী' চ; 'মোহনী' প-র-সা। ৩। 'বনারই' প-র-সা। ৪। 'মিলিল' প-র-সা, প-র। ৫। 'য়্বভির্থ মেলি' ফলে 'য়্বভির্ত মেলি' ক, খ; 'য়্বভির্থ মেলি' ফলে 'য়্বভির্ত মেলি' ক, খ; 'য়্বভির্থ শভ' প-র-সা, প-র। ৬। 'হেরইডে' প-র। ৭। 'মাভল' ক। ৮। 'মালা' প-র। ৯। 'বছনে' প-র। ১০। 'পরশে নাহি' ফলে 'পরশনে হেরি' প-র। ১১। 'কেহ' প-র। ১২। 'কোন' ক।

विश्वकृत ।>

দেখ রিং স্থি শ্রাম-চন্দ ইন্দু-বদনি রাধিকা। বিবিধ যন্ত্র গাওল্লে রাগ-মালিকা। মন্দ-প্ৰন

কুঞ্চ-ভবন

কুত্ম-গন্ধ-মাধুরী।

মদন-রাজ নব সমাজ ু

ভ্রমরা-ভ্রমরিণ-চাতুরী॥

ভরল ভাল গভি তুলাল

নাচে নটিনি নটন-শুর।

প্রাণ-নাথ করত হাত

রাই তাহে অধিক পুর॥

অফে অফে পরশে ভোর

কেন্তু রহত কার্ত্ত কোরণ।

জ্ঞানদাস কহত রাস

বৈছন জলদে বিজুরি জোর॥

181130661

পঠিস্কির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৮২ ও প-র পুথির ৩৮/১২ সংখ্যক পদ। ২। 'দেখ রি' ফ্লে 'দেথবি' ক; 'দেখ রী' খ, ঘ; 'দেখ দেখ' প-র। ৩। 'নব সমাল' ফ্লে 'রভস মাঝ' খ, ঘ। ৪। 'লেমরা ক্রমরি' ফ্লে 'ল্মর ল্রমণ' ক, চ। ৫। 'কেছ্' ইত্যাদি ফ্লে 'দোহাঁর আনন্দে নাহিক ওর' প-র।

টাকা।

৫ — ৮। "মন্দ" ইত্যাদি। কুঞ্জ-গৃহ মন্দ-প্ৰন-বুত্ত, — উহাতে কুস্থম-গদ্ধের মাধুর্য্য (রহিরাছে); মদন-রাজ অর্থাৎ মদনের অধীখর শ্রীক্কঞ্চ ও নব-বুব্তিগদের সমাজ অমর-অমরীর চাতুর্য্য-শানী।

৯—১২। "তরগ" ইত্যাদি। চঞ্চল তাল ;—
মোহন গতি,—নটন-নিপুণা (ব্রজালনা) ও নটনবীর (প্রীকৃষ্ণ) নাচিতেছেন; তাহাতে প্রাণনাথ
(প্রীকৃষ্ণকে) (অনক্তর্সাধারণ) রূপ-শুণের ছারা
হত্তে করিরা অর্থাৎ বশীকরণ পূর্বকে শ্রীরাধা (সেই
রাস-লীলার) শ্রেষ্ঠ (স্থান) পূর্ণ করিতেছেন!

তথা দ্বাগ ৷১

মত্ত মধুকর বিবিধ শুঞ্জর

কোকিলা পঞ্চম গায়।

নানা তরুকুল বিক্সিত ফুল

খসিং পড়ু শ্ঠাম **গায়**॥

শ্রাম গোরি গোম গোরি শ্রাম

निष्टत हक्ष्म भ्रमि।

কনক-ল হায় বেতৃল বৈছে

रेख नीलम् ॥

কবহুঁ গোরি ভোরি চলভ

কবছঁ চলভ কান।

রসের আবেশে অবশ অক

ওর নাহিক পান ॥৫॥১০৬৭॥

পঠিস্তির

)। देश প-त्र-मा পূথির ১৪৮৩ সংখ্যক পদ। २। 'স্থি'থ।

তথা রাগ ৷১

নব নায়রি নব নায়র

নৌতুন নব নেহা।

জাঁখে জাঁখে নিমিখে নিমিখে

विषुत्रन निष (परा ।

নৌতুন গণ নৌতুন বন

নোভূন সখি গানে। ভা দিগ দিগ ভা দিগ দিগ

त्था मिश मिशर दथा मिश मिश

তাল ফুকারই বাদে 🛭

নৌতুন রস কেলি-রভগ নৌতুন গতি ভালে।

নোপুন সাত ভালে। জিমি ধো জিমি থো জিমি জিমি

বাওড॰ সুধি তালে।

हक्ष्म मनि-

কুণ্ডল চল

চঞ্চল পট-বাস।

দোহঁ দোহাঁ-কর

ধরিয়া নাচত

ৰেরত অনন্তদাস ॥৬॥১০৬৮।

পাঠান্তর

১। প-র-সা পুথিতে এই পদটি ১০৬৭ সংখ্যক পদের শেষাংশক্ষণে লিখিত হইরাছে। ২। 'তা দিগ দিগ'ইত্যাদি হলে 'তা দিগ দিগ থো দিগ দিগ'ক, প-র-সা। ক ও প-র-সা পুথির তালের বোল অপেকা ধ, ব ও চ পুথির বোল বিগুল আছে; হুতরাং উহা 'চতুরক' গীতের বোলের ভার 'হন্' লমে অর্থাং বিগুল ক্রন্ত-ভাবে উপ্পারিত হইবে। ৩। 'ফুকরই' ক, ধ, প-র-সা। ৪। 'তালে' ব, চ। ৫। 'জিমি' ইত্যাদি হলে 'জিমি ধো জিমি জিমি, থো জিমি থো দুমি' থ, ব। এই পদটির প্রত্যেক অর্থা চরলে চারিটি তিমাত্রিক গণ আছে; হুতরাং ও ব পুথির চতুর্মাত্রিক বোলে ছলোভন্স বটে। ৬। 'বাওল' ক, ধ, ব, চ। ৭। 'ভালে' ব, চ। ৮। 'দোই দোই।' হলে 'হুহে হুহা' ক। ২। 'নাচরে' ক, চ।

মলার শক্রাভরণ ৷১

বাজত ভাল রবাব পাখোয়াজ নাচত যুগল কিশোর। वय (रुला(रुलि নয়ন চুলাচুলি ছহু দোহাঁ মুখ হেরি ভোর। कोिक्टम मिथ दमिल গাওত বাওত করহি করহি কর জোর। নবঘন পরে জন্ম ভড়িভ লভাবলি ত্বহু ক্লপত অধিকঃ উলোর॥ বীণ উপাত্ত মুরজ সর-মণ্ডল বাজত পোরহি থোর। পনন্তদাস-প্রভূ রাই-মুখ নিরখই

যৈছন চাক্ষ চকোর 1912 ০৬৯1

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৪৮৪ সংখ্যক পদ। ২। 'ছহা'ক। ৩। 'রূপ'ক, খ, প-র-সা। ৪। 'অভি'ক, খ; 'আভি'ব, চ। ৫। 'বীণা'খ, ব, প-র সা।

মলার।১

শ্রাম রাস-রস-রন্সিয়াং। নব যুবরাজ যুবতি সন্সিয়া ॥ধ্রু॥ চঞ্চল-গতি চরণে চল্ড

সঙ্গিত হুরন্দিয়া।

নাচে মনোহর-গতি° **অঙ্গ-ভিন্না।**

বাণ অধিক

বিবিধ যন্ত্ৰ

বাওয়ে উপান্ধিয়া।

মধুর তাতা

रेष रेष रेष

বোলতঃ মুদলিয়া।।

কান্তু লপত স্থরণ মোহন

लाल मिक्षत्र मान ति ।

কুচির তাতা **থৈয়া থৈ**য়া **থৈ**য়া

গাওত হ্বর তানণ রিদ॥

ব্যভামু-নন্দিনি কিশোরি গোরি

গাওত অমুপাম রি ।

শিবরাম আনতেদ নাহিক ওর হেরত রাস-ধাম রি^১ ॥৮॥১০৭০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৮৫ সংখ্যক পদ।
২। 'রাস-রন্ধিয়া' ক, চ, প-র-সা; 'সারন্ধিয়া' থ।
৩। পর-সাপুথিতে 'গোরি' শব্দ দৃষ্ট হয়। ৪।
'বলে' থ। ৫। 'স্র' ঘ, চ। ৬। 'রে' ক।
৭। 'স্তান' ক, চ। ৮-৯-১•। 'রে' ক।

বিহাগড়া।১

বাবে গিড়ি গিড়িং দিং দ্রাম্থ দ্রাম দ্রিমি দ্রিমি কট দিদি দ্রাম্ উঘটতঃ পটতাল মুদক

রজ রভস-মূল ॥ধ্রা॥

তা তা খোলিং খোলি খোলি ননন ঝিঝিং ননন কাঙ্কত নন ঝননং ননন

मनमथ-मन ज्ला ।

হর্ষ পরশ সরস হাস নয়ন ছয়ল> রতি-বিলাস> চঞ্চল পট-অঞ্জ মণি-

কুণ্ডলতেঁ১১ ফুল১২ 🛭

ভারক>৩-মণিহারক>৪ শশি ঝিলমিলি দপিদার>৫ কলসি>৬ পুঞ্জ পুঞ্জ মঞ্জুল অতি

গুঞ্চতি অলিকূল ১৭।

তাতা থৈথৈ শাদ নপুর শ গান মান তানং মধুর

ধ্বনি শুনি শিবরাম-অন্তরে

আনন্দেতেং ভূল ॥৯॥১ • ৭১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৮৬ সংখ্যক পদ।
২। 'পিছি গিছি' ফলে 'গৃছি গৃছি' च, চ। ৩।
'দিং জাম' ফলে 'দাং' ক, খ, চ, প-র-সা। ৪।
'গু ঘটণ্ড' প-র-সা। ৫। 'ভোল' ক, চ; 'ভোলি'
খ, প-র-সা। ৬। 'ঝিঝি' ক; 'ঝিঝি' च; 'ফি
'ফি' চ। ৭। 'নন ঝনন' ফলে 'নানাঝন' প-র-সা।
৮। 'ভূল' ক, খ, চ, প-র-সা। ৯। 'ছলর' ক;
'ছল' চ। ১٠। 'য়ভি' চ। ১১। 'কুখলাভে'
ক, চ, প-র-সা; 'কুখলভে' ঘ। ১২। 'কুখলাভে'
খ, চ, প-র-সা। ১৩। 'ভাকর' ক। ১৪।

'মিনিহার' ক, থ, চ, প-র-সা। ১৫। 'লাপ' প-র-সা। ১৬। 'কলসী' ক, খ, 'কলসি' চ। ১ং। 'অলিকুল' ক, থ, চ, প-র-সা। ১৮। 'থৈ' খ। ১৯। 'নৃপ্র' ক; 'স্প্র' খ, প-র-সা। ২০। 'তাল' প-র-সা। ২১। 'আনন্দিত' প-র-সা।

(क्षांत्र ।)

বাজে ধৃংনিং ধৃংনিং
থটতাং তাগর্ধো নাগর্ধো
নাগর্ধোণ ধুকা ধুয়া বেণ ॥ঞা
বীণ উপাক্ত
তাজ ডক্ফ রবাব যে।
বাজে থো দ্রিমি দ্রিমিধো তথৈ তথৈ তথ তা
থো পো বোল মুদল যে॥
কনক-কঙ্কণ কিজিণি কিনিকিনি
ঝননন মঞ্জির-রাব যে।
রাধা-কর ধরি স্থাড়-শিরোমণি
নাচত কহই প্রবন্ধ যে॥

কৰহাঁ তাল কছই নট-শেখর কৰহাঁ চন্দ্ৰমূখি গাওই বে।

আনন্দ-সাগতের সগতে স্থাকর শিবরামদাস মনং ভাওই• যে ।

15-15-921

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৪৮৭ সংখ্যক পদ। ২। 'ধটা' ক, খ, খ, চ। ৩। 'নাগর্ধো' শক্ষ ও প-র-সা পুথিতে নাই। ৪। 'জে' খ, খ, চ, প-র-সা। ৫। 'মনে' ক, খ, প-র-সা। ৬। 'ভাও' ক, খ, খ, চ।

সিমুড়া ।১

জলদহি জলদ বিজুরি দিঠি-ভাপক মরকত কনয় কঠোর। এ দুহুঁং তমু মন-নয়ন-রসায়ন নিরুপম নওল কিশোর ॥ দেখ সখি রাধামাধব-ভাতি। কো বিহি নিরমিল কোন ঘটাওল শ্যামর-গোরি-সন্ধাতি⁸। यर्गे पूछ् पूछ् ८१ति नग्नन- व्यक्षाल ভति। আন-আন পিবইতে চাহ। ভমু ভমু পৈঠত সঘন আলিঙ্গনে কৈছে হোয়বদ নিরবাহ। আরতি অধর-স্থারস পিবি পিবি দুছঁক পিরিতি - উনমাদ। (गाविन्मनाम कर्श्य व्यक्षिक त्रम-व्यादवर्गः) किरम ना कक़ भव्रमान २२॥ ५० १०॥

পাঠান্তর

১। ইहा প-র-সা পুথির ১৪৮৮ ও প-র পুথির ১২।৬ সংখ্যক পদ। ২। 'এ ছহ' স্থলে 'এডহ' ক। ৩। 'দেশ স্থি' ক, ধ, খ, চ ও প-র পুথিতে নাই। ৪। 'সাজ্যাতি' চ; 'সাঙ্গাতি' প-র। ৫। 'প্রি'প-র-সা। ৬। 'হছ দোহা'ব ; 'হহঁরপ' প-র। १। 'স্থন আলিঙ্গনে' স্থলে 'স্থনে আলি-পিত'ক, খ, च, চ, প-র-সা। ৮। 'কৈছে হোরব' ম্বলে 'কৈছে হোগত' ক, ধ, চ, প-র-সা; 'পুন देकरह रहांख ' भ-त्र । २०। 'मनन' भ-त्र । ১०। 'ভণ' প-র। ১১। 'অধিক' ইত্যাদি হুলে 'হেন লর মঝুমন' প-র। ১২। 'কিরে' ইত্যাদি হলে 'অতি রদে অতি পরমাদ' প-র।

টাকা

b-81 "अनम्हि" हेलामि। जनम जनमहे (স্বাৎ স্থামবর্ণ হইলেও জলদের ভারই নিক্ট); বিচ্যুৎ (উজ্জল হইলেও) দৃষ্টির পীড়াজনক ; মরকত (ও) বর্ণ (বর্ণাক্রমে এক্কাড ও প্রীরাধার অঙ্গকান্তির ज्ननाष्ट्रण क्टेरम् ९) कठिन ; (किस्) धट उछात्रत দেহ — নয়ন ও মনের আনন্ত্রনক; (প্রত্রাং) নবীন কিশোর ও কিশোরী উপমা-রহিত।

कारमाम 15

একতাল ধরা।

কদম্ব-ভরুর ডাল ভূমে নামিয়াছে ভাল ফুল ফুটিগ়াছে সারি সারি। পরিমলে ভরল मकल वृद्धावन কেলি করে ভ্রমরা ভ্রমরা॥ রাই কামু বিলসই রঙ্গে। কিয়ে হুত্ঁ বাবণি रेनमगिंध धनि धनि॰ মণিময় অভরণ অসে ॥ ध्रः॥ ধরি প্রিয়° গিরিধর রাইর দক্ষিণ কর मधूत मधूत छिल याग्र। আগে পাছে সখীগণ করে ফুলং বরিষণ **दकान भश्री ठामत छ्लाग्र**॥ চন্দ্ৰ-কৰে স্থলীতল পরাগে ধুসর স্থল मिश्य (विमोत्र छेशद्र । রাই কামু-কর ধরিও নৃত্য করেণ ফিরি ফিরি পরশে পুলক অক্স ভরে'॥ করে করি স্থীগণ मुगमा ठन्न বরিধয়ে ফুল গন্ধরাকে। खाम-क्रल निन्तू निन्तू (माएड जारं) गुन-इन्तू व्यस्त्र भूत्रलो नाहि नार ।।। কুম্থমিত বৃন্দাবন 401-12, 114 পরাগে ভরল>> অধ্যকুল। মন্দির স্থন্দর যেন রতনে খচিত গেম নরোত্তম-মনোরপ পূর্ব্য ॥১২॥১০৭৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র সা পুথির ১৪৮৯ ও প-র পুথির

২৫।১৮ সংখ্যক পদ। ২। 'কিরে ছ**র্ছ' ছলে '**কিবা ক্লপ' প-র-সা। ৩। 'কিরে ছর্ছ' ইভ্যাদি পংক্তিবর ছলে প-র পুথির পঠি ঘথা,—

'নৃত্যাবেশে বৈদগধি ধনি ধনি অ্বদনি
অভরণ বাজে আজে আজে ॥ জে॥'

৪। 'পছ' প-র-সা। ৫। 'পুলা' প-র-সা। ৬।
'জোড়ি' প-র-সা; 'জুড়ি' প-র। ৭। 'নৃত্য করে'
অলে 'গতি চিত্র' প-র। ৮। 'তহু' প র-সা, প-র।

১। 'ধরে' প-র। ১০। 'করে' প-র-সা, প-র।
১১। 'ভরল' ক, ধ, চ। ১০। 'কুক্মিড'
ইত্যাদি কলিটির হুলে প-র পুলির পাঠ, যথা,——

'হাস বিলাস রস কলা স্থমধুর ভাষ লোচনে মোহন লীলা ধরু। ছহঁ রূপ লাবনি হেম মরকত জিনি নরোত্যম মনোর্থ ভরু ॥'

C#813 13

কানন-ভ্ৰমণ নটন সূত্ৰ মেলি।
কাতিশয় প্ৰামযুত সূত্ৰ হৈ গোলি।
সূত্ৰ জন বৈঠল মণিময় কুঞা।
কুম্ম-শেজ পারে আনন্দ-পুঞো।
চামর বীজাইং কেহ সূত্ৰ অব্দে।
কোই তামুল দেই প্ৰেম-ভর্জে।
কত কভ কোতুক হাস পরিহাস।
নির্থই আনন্দে উদ্ধব দাস ॥১৩॥১০৭১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৯• সংখ্যক পদ। ২। 'বীজয়ে' খ, ঘ, চ।

অথ বিপরীত-রতি।

গাননী।

মর্ পদং দংশল মদন-ভূজন ।
গরনাহি ভরল অবশ ভেল অক ।

তুহঁ বদি স্থলারি করসি উপায়।
মুধ্গল জন তব জীবন পায়। থা।
পহিলহি বাঁরেবি দীঠি পসারি ।
করে কর পঞ্জনে ভাব সম্ভারি ॥
শ্রেম-জল অঙ্গহি করবি বিথার।
কুচ্মুগ-কলসে করবি পানি-সার॥
খর নখ-রঞ্জনি ভুয়া নখ মানি।
ঝারবি নিরবিষ উর পর হানি॥
যতনে অধর ধরি অধর-রস দেবি।
অধরক দংশে অধর-বিষ নেবি॥
রক্জনি উজাগরি রহবি অগোরি।
গোবিদ্দাস গুণ গাওব ভোরি॥

1128113-961

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২৮৪, ১৪৯১ ও প-র পুথির ২৪।৮ সংখ্যক পদ। ২। 'পদে' ঘ; 'মন' প-র-সা; 'মনে' প-র। ৩। 'গরলে' প-র। ৪। 'দগধল' পর। ৫। 'ঝারবি' ইত্যাদি ছলে 'ঝাপথি দিঠে পসারি' ক, চ; 'হেরি ঝাড়বি দিঠি সারি' প-র-সা, প-র। ৬। 'করে' ইত্যাদি ছলে 'করে কর পঞ্জনে ভার সম্ভারি' ক; 'করে কর মঞ্জনে ভার সম্ভারি' ক, 'করে কর মঞ্জনে ভার সম্ভারি' প-র-সা, প-র। १। 'দংশনে' ক, ধ; 'দংশন' ঘ, চ।

Picale I

রতি-রগ-উচিত শরনহি নাগর
বাচত বিপরিত কেলি।
অমুনর কতহুঁ করয়ে জনি হসি হসি
মুখহি মুখহি করি মেলি ॥
তানি হসি শশি-মুখি লাজহি কুঞ্জিত
অবনত করত বয়ান।
জিয়ইতে উপবাসি দারিদ বৈহন
মাগ্যে ভোজন পান ॥

८मथ ८मथ देवमश्रीय-त्रव्य ।

কামকলা-গুরু রসিক-শিরোমণি না হোড়ই সো রস চক্ষ³। গাল পরশি পুন রাই মানায়ল

পাদ পরশি পুন রাই মানায় নিজম্বখ বহুত জানাই।

ভণ রাধামোহন তছু স্থাধ সূথি উহ অভয়ে সে হোত বাধাই ॥১৫॥১•৭৭॥

পাঠাম্বর

১। 'कोউইডে' कः, 'किউইডে' চ। २। 'त्रम एक' ऋग 'नक' चे।

টাকা

১৪—১৫। "ভণ" ইত্যাদি। রাধামোহন কহি-তেছেন,—উনি (অর্থাৎ শ্রীরাধা) তাঁহার (অর্থাৎ শ্রীক্ষের) স্থাধ স্থাী; অত এব সেই (প্রীক্ষের প্রির) বাধাই অর্থাৎ আনন্দ-উৎসব (উত্তুত) হইল। 'বাধাই আনন্দবিশেষ:'—পদামুভসমূল-টীকা।

श्वर्कत्रो ।>

উদসল কুস্তল-ভারা।
মূরতি নিলার-লখিমিং অবভারা॥
অতিশয় প্রেম-বিকারা।
কামিনি করত পুরুখ°-বিহারাণ॥
কামিন করত পুরুখ°-বিহারাণ॥
বাম্ন-কলে থৈছে দৃধকণ ধারা॥
ক্চ-কুস্ত পালটলণ বয়নাণ।
রস-অমিয়া জন্ম চারল ময়নাণ॥
প্রিয়তম কর্মণ তহিঁ দেবা।
সরসিজ মাহে জন্ম রহল ১০ চকেবা॥
কৃষণ কিজিনি বাজে।
জয় জয় ডিণ্ডিম মদন সমাজে॥
রসিক-শিরোমনি কান।
ক্বির্শ্বন রস ভাব॥১১॥১০৭৮॥

পঠিক্তির

১। ইহা প-র পুথির ২৫।১০ সংখ্যক পদ।
'গুর্জ্জরী' হলে 'বেলোয়ার' প-র। ২। 'মুর্জ্জিরী' হলে 'বেলোয়ার' প-র। ২। 'মুর্জ্জির' হলে 'বেলোয়ার' প-র। ২। 'মুর্ক্জ্জির' ক, ঝ, চ, প-র। 'পুরুশ' পাঠে ছলোভঙ্গ ঘটে। ৪। 'বেবছারা' প-র। ৫। 'দেলত' ঝ; 'ভোড়ল' পর। ৬। 'ফুর্ক্জ্জুর্ক্তরাদি পংক্তিচ্তুইর পদামৃতসমুদ্রের টীকার ব্যাখ্যাত ছইলেও লিপিকর-ভ্রমে উহার মূলে পরিতাক্ত ছইন্যাছে; গুজ্জাপ সাহিত্য-পরিবদের বিস্থাপতির পদাবলীতে এই পদটি পদক্রতক্ত হইতে উদ্ধৃত হইরাছে বলিয়া উল্লেখ থাকিলেও ভ্রম-ক্রমে উক্ত পংক্তিচ্তুইর পরিত্যক্ত ছইরাছে। ৯। 'নরনা' ক। ১০। 'প্রিয়ত্ম কর' হলে 'প্রিয় মরক্ত' প-র। ১১। 'কনক' প-র।

विका

১—২। "উদস্ব" ইত্যাদি। 'উদস্ব কুন্তৰ-ভায়া ইত্যাদিনা বিগ্নিতক্বরী। শৃশারনন্ত্রী: মৃঠিমতী স্বধনপ্তার্ণা রাধানোহন ঠাকুরের টাকা।

৭-- ৮। "কুচকুড" ইত্যাদি। কুচকুড ও বদন বিবর্তিত হইল। 'ময়না মদন: অমৃতরসং কলসধারমা দদাতীব' রাধানোহনের টাকা;—অর্থাৎ মদন
কুচ-রূপ কুন্ত হারা অমৃত-রূদ ঢালিল—এইরূপ বোধ
হুইতেছে। (পুথোংপ্রেকা অল্কার)।

৯—> । "প্রিরতম" ইত্যাদি । প্রিরতমের
(গুগল) কর তাহাতে প্রদের হইরাছে; বেন সরদিজ-বুগণের মাঝে (জারক্রিম) চক্রবাক বুগল
রহিয়াছে । পদামূত-সমুদ্র-কার রাধানোংন ঠাকুর
'দেবা' শক্টিকে সংস্কৃত জীড়ার্থক 'দিব' ধারু হইতে
নিশার বিশেষ্য-পদ মনে করিয়া উহার অর্থ 'জৌজন'
লিখিয়াছেন । এরূপ প্রেরোগ মৈথিল-ভাষার দেখা
বার না।

जूलांजो ।ऽ

বিগলিত-চিকু মিলিত মুখ-মগুল

চাঁদে বেঢ়ল ঘনমালা।
মণিমর-কুণ্ডল শ্রেবণে ছলিত ভেল
ঘামে তিলক বহি গেলা।
ফুল্দরি ওয়া মুখ মঞ্চলদাতা।
রিভ-বিপরীত-সময়ে যদি রাখবি
কি করব হরি হর ধাতা। প্রা
কিন্ধিণি কিনি কিনি কঙ্কণ কণ কণ
কল-রব নূপুর বাজে।
নিজ-মদে মদন পরাহব মানল
জয় জয় ডিগ্রিম ুবাজে।
তলে একু জঘন সঘন-রব করইতেং
হোয়ল সৈনক ভক্ষ।
বিস্তাপতি-পতি ও রস-গাহক
যামুনে মালল গজ-তরঙ্গ ১৭॥১০৭৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুধির ২০।১১ সংখ্যক পদ। ২। 'কহইডে' ক। 'ভলে একু' ইভ্যাদি কলিটির স্থলে প-র পুধির পাঠ বধা,—

'ভড়িত শতাতলে জনদ সাভাওল আতরে বহু জলধারা। তরল তিমির শশি হবে গরাসল চৌদিগে খদি পড় তারা॥ অশ্ব প্ৰল ধরাধর উল্টল ধরণী ডগমগ ছোলে। পরতর প্রন স্মার বহে বহুবেগে **Бक्षत्रिशंश कक्क (ब्रांट्स** ॥ প্রশাসপরোধি অবধি জলে ভাগল ব্দৰ নাহি যুগ অবসান। রতি বিপরীত কথা কো পাতিয়াওব

কবি বিভাপতি ভাণ॥'

প-র পুৰির উদ্ভ কণি ভিনটি পদকরভক্ষর ১০৯৬

সংখ্যক পদে ২য়, ৩য় ও চতুর্থ কলিয়পে উদ্ভ কইয়াছে।

টাক।

৫—१। "স্থলরি" ইত্যাদি। রাধানেছন
ঠাকুরের ব্যাধ্যা—'রতি বিপরীত সময়ে ধদি রাধবি
অর্থাৎ তদ্রসং ধদি স্থগরসি তদা হরিহ্রাদয়ঃ বিং
করিস্থান্তি কিমৃত ত্বাধীনোহহং।' রাধানেছন
ঠাকুরের প্রতিপাদিত 'রাধবি' শব্দের 'স্থগিত করিবে'
অর্থ এ স্থলে সংলগ্ন হয় না। এ স্থলে 'রাধবি'
শব্দের অর্থ 'রক্ষা করিবে' বা 'পালন করিবে'।
তুলনা কঙ্কন,—
'আলোলামলকাবিলিং বিলুলিতাং বিভ্রুক্তলংকুঞ্জং
কিঞ্জিয়ুই-বিশেষকং তম্পতরৈঃ স্বোভ্রান্তি বির্ভিত্তারে
তথা যথ স্বরতান্ত-তান্ত-নয়নং বক্তন্থ রতি-ব্যভারে
তথ স্থাং পাতু চিরার কিং হরি-হয়-ব্রহ্মাদিভিট্রেবিত্তা'।

--- অয়কশতক।

বিহাগড়া 15
সৌর দেহ স্থশ্যামসুন্দর নাহ রে।
ব্যাল উপরে তড়িত সঞ্চল
সরূপণ ঐছন আহ রে॥
শীঠ পর ঘন শ্যাম বেণী
নির্থিণ ঐছন ভানরে।
(জমু) উজরণ হাটক- পাটণ কর গহি
লিখন লেখুণ পাঁচ-বাণ রে॥

খণ ন' থির রক্ত সন্থন সঞ্চর মণিক মেখল-রাব রে। ময়ন-রায় ত্র- ছাই কছ কছ'

জ্বন যশ রস গাব রে॥ ন বরু: তথ্ব-সান মানিয়ে

সিংহভূপতি ভাণ রে ॥১৮॥১০৮০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র পুথির ২৫।৯ সংখ্যক পদ। ২।
'ক্রাক স্বদনি' ফলে 'হধারস স্বদনি' ক, খ।
'ন্ধার স্বদনি' খ, চ। ৩। 'বরপ' ক, খ।
৪। 'দেখিরে' প-র। ৫। 'অজর' ক, খ, ছ, চ।
৬। 'পাঁতি' ক, খ, ঘ, চ। ৭। 'লিখন লেখু' ফলে
'লিখন লিখু' খ; 'লিখন লিখ' প-র। ৮। 'খণ ন'
ফলে 'খলন' ক, চ; 'খনন' খ, ঘ। ৯। 'কহ
কহ' ফলে 'দেই দেই' খ, ঘ। ১০। 'অক্র' ক;
'বর' প-র। ১১। 'রভ্স' প-র।

টীকা

৭—৮। "জমু" ইত্যাদি। 'অজর হাটক পাঁতি কর গহি অনখর-অর্পত্রং করে গৃহীতা লিখনং নিজ-পরাজয়মতকং ব্যলিখত পঞ্চবাণঃ'—রাধামোহন ঠাকু-রের টীকা। অর্থাৎ বোধ হয়, যেন (পৃষ্ঠরূপ) অনখর অর্পত্র করে গ্রহণ করিয়া কন্দর্প (বেণীরূপ) নিজের পরাজয়মতক লিপি লিথিয়াছে। পদ্রয়াকর পৃথির 'উজর' ও 'পাট' পাঠ উৎক্রইতর বলিয়া মূলে গৃহীত হইয়াছে। 'উজর হাটক-পাট' অর্থাৎ উজ্জন অর্থের প্রক্রন।

शाननी ।

বদন সোহায়ল শুনজল-বিন্দু।
মদন মোভি দেই পূজল ইন্দু ॥
প্রিয়-মুখ সমুখহি শুদ্দন ওজ।
চাঁদ অধােমুখে পিবই সরােজ ॥
রভি-বিপরীভ বিলম্বিভ হার।
কনক-লভা পরি দুখক শার॥
কিছিনি-শবদ নিভছহি সাজ।
মদন-বিজই গ্রণ-বাজন বাজ॥
বিগলিভ চিকুর মাল ধরু জ্লা।
জমু যামুন জলে গল-ভরক ॥
স্কবি বিভাগতি এছ রস জান।
জলদে বাঁপল জমু চপল মুঠান ॥১৯॥১০৮১॥

পঠিক্তির

১। 'সেহিগিল' ক, থ, খা ২। 'সমূধ' ক;
'অমুধহি' চ। ৩। 'ছধক' ক, খা ৪। 'বিজ্ঞী' কা ৫। 'ছধতবল' ক; 'দুধ তবল' চ। ৬। 'ইছ' ক, খ, চ।

মলার।

রতি-অবসানে বৈঠি শ্যামপ্রন্দর
পৌছরে নিজ করে ঘাম।

জমু বিজ-রাজ পুজই বর কোকনদে
পরাভব পাইয়া কাম॥
অপরূপ নাগর-প্রেম।
না জানিয়ে কি করব বৈছন দারিদ
পাইয়া ঘট ভরি ছেম॥ঞ্রঃ
বীজনে মৃত্তর পবন করই পুন
চন্দন গাভ লাগায়।

খপুর কপুরযুত পর্ণ স্থালেভি ভ

মুখ ভরি প্রচুর যোগায়॥
ঐছন বহুবিধ করিয়া স্থানেন
পুন লই দ্রল শয়ন।
কহ রাধামোহন কব হব শুভ দিন
যবহিঁ পায়ব দরশন ॥২০॥১০৮২॥

পাঠান্তর

১। 'পুজ ই' ক, খা ২। 'জণক্লণ' ক। ৩। 'পূৰ্ব' ক, খ; 'পল' যা ৪। 'পূন লই' (প-স) হলে 'পুনহি' ক, খ, খ, চ। 'পুনহি' পাঠ ছন্দোভল-হট।

त्रमालमः ।

(क्षांत्र 13

রাস-জাগরণে

নিকৃঞ্জ-ভবনে

আলুর্যা আল্স-জরে।

শুতলি কিশোরী আপনা পাসরি शर्ताननार्**षत्र ८० दित्र** । স্থি হের দেখসিয়া বা। निमा यात्र धनाः **ठाँप-वन्नी** म्याम-ञद्भ विद्या था॥ ध्रम ॥ করিয়া শিপান নাগরেৰ বাহু বিথান° বসন ভূষা। নিখাসে তুলিছে রতন•-বেশর° হাসিখানি তাহে মিশা^৮ n নিতে চাহে হরি ১৫ পরিহাস করি সাহস না হয় মনে। না করিছ রোল ধীরি করি১১ বোল माम खगताय^{३२} ७८० ॥२५॥১०৮०॥

পাঠান্তর

)। हेहा श्र.ब-मा श्रूथित ১৫৩० मःश्राक श्रम। '(कन्दि खुरन '(होड़ि' भ-त्रमा। २। 'बानुका' कः 'बाडेनारे' १-त्र-मा। ७। 'धाननात्वत्र' कः, थ, घ, ठ। ८। 'निन्त' रेजानि ऋत्न 'निन्त आनि ञ्चलित भ-त-मा। १। 'विश्वात' क, थ। ७। 'নাশার' থ। ৭। 'নিখাসে' ইত্যাদি ছলে প-র সা পুৰির পাঠ যথা---'নাকের নিখাসে বেশর ছলিছে'। ৮। 'হাসি' ইত্যাদি হলে 'মুথে হাসি আছে মিশা' थ, घ; 'भूरथ व्याय शांति मिना' भ-त्र ना। ১। 'অতুমান' প-র-সা। ১০। 'চুরি' প-র-সা। ১১। 'धीरत धीरत' भ-त मा। ১२। 'माम कशवांथ' ऋला 'कानमान बन' क ; 'बिक ह छोमारम' भ-ब-मा । हछी-দাসের মুক্তিত সংশ্বরণগুলিতে এই পদটি চণ্ডীদাসের বলিরা গৃহীত হইয়াছে। প্রাচীনতর খ, খ ও চ পুৰিত্ব প্ৰমাণাত্মসারে ইহা জগল্পাণ দাসের রচিত विश्वादे अञ्चयान द्व ।

কেখার।

व्यानरमः १७७न स्मारक सम्बन्धारमः । উরে উর দোকে দোকা বরালে বরালে ॥ ছুহুঁক উপরে দোহেঁ ছুহুঁ শির রাখি।
কনয়া-জড়িত যেন মরকত কাঁতি #
রতি-রসে পণ্ডিত নাগর কান।
রতি-রণে পরাভব ভেল পাঁচ-বাণ।
স্বোদ-মকরন্দ বিন্দু বিন্দু গায়।
নরোত্তম দাস করু চামরের বায়।

184061551

পাঠান্তর

১। 'অলসে' च। ২।'শরনে' **ব।** ৩।'গ্রু দোহা' च। ৪। 'রসে' ক, ব।

> রসালদোপযুক্তরূপং যথা। শ্রীগোরচন্দ্র:।

> > टिक्टवरी ।ऽ

সোঙ্জো নব গৌরচন্দ্র*
নাগর বনয়ারি*।

नवहोश-इन्द्र

নবদ্বীপ-ইন্দু করুণা-সিদ্ধ ভক্ত-বংসলকারী । এ ॥

> বদন-চন্দ অধর রক্ষ নয়নে গলত প্রেম-তরক্ষ চন্দ্র কোটি ভান্থ কোটি

> > শোভা[•] নিছয়ারি[•]।

কুম্ম-শোভিত চাঁচর চিকুর
ললাটে তিলক নাসিকা উজাের
দশন মোতিম আমিয়া হাস
দামিনি ঘনয়ারিশ ॥

মকর-কুণ্ডল বলকে গণ্ড মণি-কোন্তভ-দীপ্ত কণ্ঠ অরুণ বসন করুণ বচন

শোভা অভি ভারি। মাল্য-চন্দন-চচ্চিতি অঞ্চ। লাকে লজ্জিত কোটি অনক। অক্তদ> বলয়া রতন>• নৃপুব যজ্জ-স্ত্রধারি॥

ছত্র ধরত ধরণিধরেন্দ্র
গাপ্ত যশ ভকতবৃন্দ
কমলা-সেবিত পাদ্বন্দ্ব
বলিয়ে ১ বলিহারি।
কহত দান কৃষ্ণদাস
গৌর-চরণে করত আশ।
পতিত-পাবন নিভাই চান্দ
প্রেম দানকারী ॥২৩॥১০৮৫॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপ্থির ১৪৯৪ সংখ্যক পদ।

২। 'সোঙর' ক, খ, প-র-সা। ৩। 'গৌরচক্র'
(প-র-সা) হুলে 'গৌরহ্মন্দর' ক, খ, ঘ, চ। ৪।
'বনগারি' খ, ঘ, প-র-সা; 'বনগুরারি' চ। ৫।
'বচ্ছলকারী' প-র-সা। ৬। 'মুখশোভা' ক, খ।
१। 'নিছগুরারি' খ, চ, প-র-সা। ৮। 'ঘনগুরারি'
খ, চ, প-র-সা। ৯। 'চল্লন' ক, খ, ঘ, চ। ১০।
'তরল' খ। ১১। 'বলিরা' ক, খ, ঘ, চ।

ख्या होत्र ।>

গোবিন্দ-মুখারবিন্দ
নিরখি মন বিচারেঁ বি ।
চন্দ্র কোটি ভামু কোটি
মদন কোটি ওয়ারেঁ । ॥
মুন্দর কপোল লোল
পক্ষজদল-নয়না।
অধ্যবিশ্ব মধ্র হাল
কুন্দকলিক-দশনা ॥

মণি-কুণ্ডল মকরাকৃত

অলক-ভৃত্বপুঞ্চা।
কেশরকোণ তিলক বৈনো

সোণে মড়িং গুঞ্চা॥
নব জলধর তড়িদম্বর

গলে বনমালা শোহে।
লীলা-নট সূরকে প্রভ্

পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৪৯৫ সংখ্যক পদ।
২। 'বিচারো' ক! ৩। 'মদন কোটি' ফ্লে
'মদনকো' প-র-সা। ৪। 'আবো' ক। ৫।
'কেশরকোহ' প-র-সা! ৬। 'সোণে মড়ি' ফ্লে
'সোণে মড়ি' ক; 'সোণায়ে মড়ি' প-র-সা।

তথা রাগ। রাধা-মুখ কঙল বিমল নিরখি চিত রিঝাওয়ে । কোটি চন্দ্ৰ কোটি ভাগ मनन इवि निइडिट्सर ॥ ভাল স্থন্দরু অতি মনোহর क्रवलग्रम्म-नग्रनो । অধর অক্লণ মুকুতা দশন शंग अभिग्रावग्रनी শ্রবণ-ভূখণ জিনি রনি-ছবি বেশরযুত । নাসা। ঘন মুগমদ-ভিলক অলক খলিত চাঁচর কেশা। किनि नरघन नौल प्रमन গলে গজমোতি-হার। ত্রিভুবন-মন-মোহিনি রূপ উদ্ধৰ বলি হার ।২৫।১০৮৭।

পাঠান্তর

১। 'রিঝাঙে' ক, খ। ২। 'নিছাঙে' ক, খ। ৩। 'ফুক্রি' চ। ৪। 'কেশরযুক্ত' প-র-সা।

ভৰা রাগ ৷১

দেখ রি সখি কঙল-নয়ন
কুঞ্জমে বিরাজ হেঁং ॥ গ্রু ॥
বামেতে কিশোরি গোরি
অলস-অজ অতি বিভোরি
হেরি শ্রাম-বয়ন-চম্দ

মন্দ মন্দ হাস হেঁ। অন্তে অন্তে বাহে° ভীড় পুছত বাত অতি নিবীড়ঃ প্রেম-ভরতে চরকি পড়ত

কঙল মধুপ সন্থ হেঁ॥
শারি শুক পিকু করত গান
ভ্রমরা ভ্রমরি ংগরত ভান
শুনি ধনি* ধনি উঠি বৈঠত
চোর চপল যাত হেঁ।

শ্রীগোপাল জ্টু-আশ বৃন্দাবন কুঞ্জে বাস শয়ন সপন নয়ন হৈরি

ভূলল মন আপ হেঁ॥২৬॥১০৮৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৯৬ সংখ্যক পদ।
২। 'হে' ক, খ, প-র-সা। ৩। 'বাহেঁ' খ।
৪। 'নিবিড়' ক, খ, প-র-সা। 'নিবিড়' পাঠে
ছক্ষোভদ ঘটে। ৫। 'ভঙরা ভঙরী' প-র-সা।
৬। 'ধ্বনি' ক, খ; 'গুনি' ঘ। ৭। 'নরনে' প-র-সা। ৮। 'ভুলণ' ক, খ, প-র-সা।

বিভাষ ৷১

হেরি হত নিশি অবসান
তৈখনে তেজল শ্যান।
সব সহচরিগণ মেলি
করি কত কৌতুক কেলি॥
মন্দিরে করন্ত প্যান
করে কর ধরিং ধনি কান।
হেরি যত্ন তুত কৈ ব্যান
কি করব তাক বাধান ॥২৭॥১০৮৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১৭৯৭ সংখ্যক পদ। ২। 'কর ধরি' স্থলে 'কত ধনি' ক।

टिज्यवी ।>

রাধিকা-মুখারবিন্দ
কোটি ইন্দু লাজে।
নয়ন-যুগল অতি রসাল
বিবিধ রত্ন কঠমাল
উমগতি অতিং প্রোম-বিবশ
যৌবন-মদণ গাজে॥
মণি দামিনি নছঙং দশন
পহিরিং গোরি নীল বসন
কঙ্কণ কিঙ্কিণি মুপুর আদিণ

মধুর মধুর বাজে। নিরথি মুকুন্দ ছবিকে রঙ্গণ লাজে লজিত কোটি অনক তাতে কনয়ণ-মুকুর অঙ্গ

দামিনি ধন সাকে ।। ২৮।১ ০৯০।

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পৃথির ১৪৯৮ সংখ্যক পদ। ২। 'উদপতি অতি' হলে 'উদতি পৃতি' প-র-সা। ৩। 'দদে' প-র-সা। ৪। 'লসভ' ক, খ, 'লহড' প্র-সা। ৫। 'পহিরে' ক, চ, প্-র-সা। ৬।
'য়ুপুর আদি' ছলে 'নুপুর' থ, ছ; 'নুপুরাদি' চ। ৭।
'ছবিকে রল' ছলে 'ছবিতরক্ষ' ক, প্-র-সা। ৮।
'লজ্জিত' ক, থ, চ, প্-র-সা। ৯। 'কনক' ক;
'করল' প্-র-সা। ১০। 'দামিনি' ইত্যাদি হলে
'বিবিধ মঞ্জির বাজে' ক, চ, প্-র-সা।

তথা রাগ।১

চললহি মন্দিরে নওল কিশোরি। হেরইতে হরি-মুখ অলস বিলোচন চেতন-রতন চোরায়লিং গোরি ॥ ঝামর বদন শ্যাম-ঘন-চুম্বনে প্রাতর-ধুসর-শশধর-কাঁতি। চম্পক-মাল ললিভ-করে বারই পরিমলে শুবধল মধুকর-পাঁতি ৷ বিগলিত কেশ বেশ সব খণ্ডিত নখ-পদ-মণ্ডিত হৃদয় নেহারি। পীত বদনে চমকি ভমু ঝাঁপই রস-আবেশে চলু চলই নাও পারি ॥ নত লত হাসি সম্ভাষই সহচরি সচকিত-লোচনে দশ দিশ চাই। গোবিন্দদাস কহই जनि शुक्रजन⁸ জাগৰ চলহণ ভুরিতে ঘর বাই ॥ 129170971

ইভি তৃতীয়-শাখায়াং পঞ্চদশপল্লবঃ। পাঠান্তর

)। ইহা প-র পৃথির ৩৯।১৭ সংখ্যক পদ। ২।
'চোরাওলি' খ, চ। ৩। 'চনু চনই না' খনে
'চনই নাহি' প-র। ৪। 'গোবিক দান' ইত্যাদি
বনে 'গোবিক দান কহ কানৰ শুকুজন' ক, খ, চ।
ব। 'কাগব চলহ' খনে 'চলহ' ক, খ, চ; 'কানই
বৈঠে' দ।

অস্টেচিত-রসোদগারঃ। শ্রীগোরচন্দ্র।

বিভাৰ 15

আরে মোর গোর কিশোর।
রজনী-বিলাস-রস-ভাবে বিভার ॥ খ।।
কংইতে গদগদ কহই না পার।
নিরজনে বসিয়া নয়নে জলধার।
প্রেমালসেও চুলু চুলু অরুণ নয়ান।
কহইতে রসরসও বিরস বয়ান।
চিকিত-নয়নে পত্ত চৌদিশে নেহারে।
চতুর ভকতগণ পুছে বারে বারে।
কি আছে মনের কথা কহনেও না যায়।
এ রাধামোহন পত্ত গোরা-শুণ গায়ও।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৯০ সংখ্যক পা ২। প-র-সা ব্যতীত অক্তান্ত পুথিতে 'ঞ' নাই। এ 'রসালদে' প-র-সা। ৪। 'কছইতে রসরদ' স্থং 'কছই সরদ রদ' ক; 'কছইতে সরদ' চ। ৫ 'প্রেড্' ক, খ, খ, চ। ৬। 'বুরন' প-র-সা। ৭ 'গোরা-গুণ গার' স্থেল 'চ্কিত জ্বর' প-র-সা।

আদো সখ্যক্তি:।

विष्ठाव ।>

কহ কহ স্থি নিক্ঞ্ল-মন্দিরে
আজু কি হোয়লং ধন্দ ।
চপলে ঝাঁপল জনু অলখর
নাল উত্তপল চন্দ ॥
ফ্লী মণিবর উগরেণ নির্থি
শিখিনী আনত গেল ।
ফুমেরু উপরেণ ফুর-ভরন্ধিণী
কেবল ভরল ভেল ॥

কিছিণী কছণ
নুপুর অধিক তাহে।

স্থকাম-নটনে তুরিজ্ঞতিকর্ত্

ঐছন সকল শোহে

না কর• গোপন নিজ পরিজন
ইহ বুঝি অনুমান•।
বিভাপতি-কৃত কুপায়ে তাহারি
কোন জন ইহা গান• ১২॥১০৯৩॥

পঠিস্তির

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৫৯১ সংখ্যক পদ।

'২। 'ছইল'ক, প-র-সা। ৩। 'উরগে'ঘ় ৪।

'শিখরে'প-র-সা। ৫। 'তুরিজ্ঞতিক্ত' ঘ। ৬।

নোকর' হলে 'নায়ক'ক। ৭। 'অফুনায়' প-রসা। ৮। 'গায়'প-র-সা।

निका

৩—৪। "চপলে" ইন্ড্যাদি। যেন চপলায় জল-ধরকে (এবং) চন্দ্র নীলোৎপলকে আবৃত করিল। (এ স্থলে শ্রীরাধা চপলা ও চন্দ্রব্ধে এবং শ্রীক্রফ জলধর ও নীলোৎপল-ক্রপে বর্ণিত হইরাছেন)।

e—৮। "কণী" ইত্যাদি। কণী অর্থাৎ শ্রীরাধার উন্মক্ত বেণী মুক্তা-কাল কিংবা পূজা-সমূহরূপ মণি উদ্গীরণ করিতেছে,—দৃষ্টি করিয়া শিথিনী অর্থাৎ শ্রীক্তকের ময়্র-পূচ্ছ-শোভিত কেশ-কলাপ অম্বত্র গেল অর্থাৎ বিশ্রন্ত হইরা পড়িল এবং স্থামেক অর্থাৎ কুচের উপরে হার-তর্গিণী অর্থাৎ মুক্তাহার শুধু চঞ্চল হইল।

৯—১২। "কিঞ্চিণী" ইত্যাদি। তাহাতে কিঞ্চিণী, কন্ধণ ও নৃপুর অধিক কল-ধ্বনি করিতেছে; কন্দর্পের স্থল্পর নৃত্যে (বেরূপ) তৌর্যাঞ্জিক অর্থাৎ নৃত্যা-গীত ও বান্ধ, ঐক্বপ সকল শোভা পাইতেছে!

১০—১৬। "না কর" ইত্যাদি। গোপন করিও না; (ভোমার) নিক পরিজন (আমরা) এই সভোগ-লীলা অহমানে বুরিতেছি। (এই গীত) বিভাগতির রচিত; তাঁধারই কুগাভে (নাম-প্রকাশে ন্দনিচ্ছুক ?) কোন ব্যক্তি (ভাষান্তরে ?) ইছা গান করিতেছেন।

বিভাগতির পদাবলীর সম্পাদক শ্রীর্ক্ত নগেন্ত্রনাথ গুপ্ত মহাশর শেব পংক্তিটির 'কে ন জান ইছ
গান' পাঠ গ্রহণ করিয়া ঐ পাঠে লিপিকর-প্রমাদ
থাকা অহমান করিয়াছেন। বস্ততঃ এই পদটি জবিকল বিভাগতির রচিত হইলে 'কুপায়ে তাহারি কে ন
জান ইহ গান' বাক্যাংশের কোন সার্থকতা থাকে
না; স্থতরাং এই পদটিতে কোন অজ্ঞাতনামা কবি
কর্ত্ত্বক বিভাগতির মৈথিল পদের ভাব তাবান্তরিও
হইরাছে, এইরূপ অহ্মান অধিকত্র সন্সত নহে কি প

বিভাষ ৷১

আজুক রজনীং নিধুবনে খানি कदल वित्नाम द्राम। রসের সাগরে ডুবায়ল পোরে ভুললঃ আগন বাস॥ শুনহ মরমিণ সোই। তুহুঁ সে আমার প্রাণের দাসর তেঞি সে তোমারে কই ॥ ध তাহার সাধন-বচন যতেক তাহা কি কহনে যায়। রতি বিপরীত লাগিয়া নাগর ধ্যুল° হামারি পায় ॥ বশ যে হইয়া ভাহারি পিরিভে করিলু ভাহারি মত। না জানিলুঁ মুঞি তাহার স্থাই আপনি হইলু রভ 🛚 इट्या । विकन মোর শ্রমজল মোছয়ে আপন করে। जाशनि वीक्षत्र বীজন লইয়া

আমার ছরম-ডরে॥

সে সব কাহিনী কহিতে আপনি
অবশ হইল^{১১} অজ ।

এ রাধামোহন-দাস কি শুনব^{১২}

এ সব প্রেমক রজ ॥৩॥১০৯৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৫৯২ ও প-র পৃথির ১০৯০ সংখ্যক পদ। ২। 'রজনি' খ, চ; 'জামিনি' প-র। ৩। 'ড্বাইরা' প-র। ৪। 'জ্লকু' চ; 'চলল' প-র। ৫। 'সরস' প-র। ৬। 'পরাণের' ক, খ। ৭। 'ধরল' ক। ৮। 'পিরিভি' খ। ১। 'র্থেভে' প-র। ১০। 'দেখিরা' প-র-সা। ১১। 'হইছে' প-র। ১২। 'এ রাধামোহন' ইত্যাদি পংক্তি ছইটির স্থলে প-র পৃথির পাঠ, যথা—

'গোবিস্পাস কি কহব সব

এ হেন প্রেমক রক 🖍

यहरे ।>

কি কহব রে সখি কেলি-বিলাস।
বিপরিত হারত নারর-অভিলাষ ॥ধ্য।
মাতল নারর চুরে রহু॰ লাজ।
অবিরত কিন্ধিনি কন্ধণ বাজ ॥
শুনইতে ঐছন লহু লহু ভাষ।
হহু মুখ হেরইতে উপজল হাস ॥
শুন-জল-বিন্দু মুখে ফুন্দর জোভি॰।
কনক-কমলে বৈছে ফুটি বহু মোভি ॥
কুচ্মুগ কনক-ধরাধর জানি।
ভাজি পড়য়ে জমু পহুঁ দিল পানি ॥
ভণহুঁ ৷ বিজ্ঞাপতি শুন বরনারি।
নহিলে ব্সিক্> কৈছে তোহারি মুরারি॥

পাঠান্তর

11867.941

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৫৯৩ ও প-র পুৰির ^{১০)৬৮} সংথাক পদ। ২। প-র ব্যতীত অভাত

ভাটিরারি ৷১

স্থি হে কি কৃহৰ নাহিক ওর। স্বপন কি পরতেক কহইং না পারিয়ে किरय़° व्यक्ति निकृष्टे कि॰ मृत्र ॥ध्या ভড়িত-লতাতলে তিমির সাস্তায়লং তাঁতরে হুরধুনি-ধারা। তরলু ' তিমির শশি সূর গরাসল চৌদিগে খদি পড়ু দ তারা॥ অম্বর খদল ধরাধর উলটল ধরণি ডগমগ ডোলে। খরতর-বেগ স-भोत्रग मक्षक চঞ্চরিগণ করু রোলে॥ প্রলয়-পয়োধ জলে জমু বা পিল ইহ নহ যুগ-অবসানে। কো বিপরীত কথা পতিয়ায়ব্যু

কৰি বিভাপতি ভাগে ।৫॥১•৯৬॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৯৪ সংখ্যক পদ।
২। 'লখই' প-র-সা। ৩। 'কি' ক, খ, খ, চ।
৪। 'কি' খ্লে 'হি' প-র-সা। ৫। 'ডিমির
সাস্তারল' খ্লে 'অলদ সম্ভোজল' প-র-সা। ৬।
'জাতরে' খ, চ। ৭। 'ডক্লণ' প-র-সা। ৮। 'খিদি

পড়ু'ছলে 'সঞ্জ' প-র-সা। ১। 'পরতীত' ছ। ১০। 'পাতিয়ারব' ক, খ, চ, প-র-সা।

টাকা

৪—১১। "তড়িড" ইত্যাদি পংক্তিশুলিতে প্রীরাধার ক্লশ-তম্ তড়িৎ-লতা, প্রীক্লম্ভ তিমির, প্রীরাধার মুক্তা-হার স্থরধুনী-প্রবাহ, শ্রীরাধার উল্পুক্ত কেশপাশ তরল তিমির, প্রীরাধার ললাটের চন্দন-বিন্দু শনী, নিন্দুর-বিন্দু স্থর অর্থাৎ স্থ্য, প্রশানাচ্চাত কুস্থমাবলি তারা, অখর (বস্ত্র) অখর (আকাশ), কুচমুগ ধরাধর অর্থাৎ পর্বাত, নিতম্ব মেদিনী, নিখাস-বায়ু ধরতর পবন ও ভ্রণ-শিঞ্জিত ভ্রমর-ধ্বনির্দ্ধে 'অতিশরোক্তি' অলকারের সাহাধ্যে বর্ণিত হইরাছে।

১২—১৫। "প্রান্তর" ইত্যাদি। ইহা বুণের অবসান নহে,—(তথাপি) বেন (বেদ-প্রবাহরুপ) প্রান্তর-কালীন সমুদ্ধ-জবল জাচ্ছাদন করিল। কবি বিছাপতি কহিতেছেন, (এই) বিপরীত (এক জর্মের বিকল্প, জন্ম অর্থে বিপরীত-সম্ভোগের) কথা কে প্রত্যার করিবে? [ইহার তাৎপর্য্য এই বে, কেবল প্রান্ত-কালেই পূর্ব্য-বর্ণিত নানা বিকল্প ঘটনা দৃষ্ট হব, কিন্তু এ হলে যুগান্ত ব্যতীতপ্ত প্রান্তরর বিকল্প কার্যাগুলি দৃষ্ট হইতেছে, স্মৃতরাং ইহা কে বিশাস করিবে?]

শ্ৰীবৃক্ত নগেল বাৰুর গৃহীত "প্ৰণয়-প্রোধি-জনে" পাঠ কোন পুথিতেই দৃষ্ট হয় না এবং উহার অর্থণ এ স্থলে তাদৃশ স্থসদত নহে।

वैशांश 13

আমার পিয়ার কথা কি কহিব সই।
যে ভার চিতে তাহাই করি স্বতস্তরী নইং॥
তাহার গলার ফুলের মালা
আমার গলায় দিল।
ভাহার মত মোরে করি
সে মোর মত হৈল॥

ভূমি সে আমার প্রাণের অধিক,
তেঞি সে তোমার° কহি।
এই° যে কাজ কহিডে॰ লাজ
আপন মনেই রহি॥
তাহার প্রেমের বশ হইয়া
ধে কহে তাহাই করি।
চণ্ডীদাস কহয়ে ভাষ

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৯৫ সংখ্যক পদ।
২। বৈ ভার' ইত্যাদি ছলে বৈ হন্ন ভাহার চিতে
স্বভন্তরী নই।' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'সাপনার'
প-র-সা। ৪। 'ভোমারি' ক, খ। ৫। 'এ' দ, চ,
প-র-সা। ৬। 'কহইতে' ক, খ।

পুনব্যক্তরূপেণ সথীং প্রতি কথয়তি।

এ কথা করিবে সই এ কথা কহিবে।

অবলা এতেক তপ করিয়াছে কবে॥

পুক্রব পরশং হৈয়া নন্দের কুমার।

কি ধন লাগিয়া ধরে চরণে আমার॥

কাহারে কহিব স্থিপ মরমের কথা।

নাগর হইয়া দেয় মোরণ চরণে আলতা।

আপন চূড়ার বৈশ বনার আমারেণ।

রমণী হইয়া বেনণ রহে মোর কোরে।

কহিতে সরম সই কহিতেণ সরম।

আমারে আচরেশ সই পুক্রব-ধরম।

আমারে আচরেশ সই পুক্রব-ধরম।

আনদাস কহে শুন শুন বিনোদিনি।

জিতে কি পাসরাশ বার কামু শুণমণি।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুরির ১৫৯৬ ও প-র পুরির ১৯৫০ সংখ্যক পদ। ২। 'পরেস' প-র-সা, প-র। । 'সুঞি' পর। ৪। 'দের মোর' হলে 'মোরে দের' প-র-সা। ৫। 'বনার আমারে' হলে 'বনারে আমারে' ক, চ; 'দের মোর শিরে' প-র। ৩। 'রননী' ইভ্যাদি হলে 'আপনি রমনী হৈরা' প-র। ।। 'বলিভে' প-র। ৮। 'আমারে আচরে' হলে 'মোরে আচরিভে বোলে' প-র-সা। ৯। 'জিভে কি পাসরা' হলে, 'জিভে পাসরা না' ধ।

शर्वमञ्जूषे ।>

কুচযুগ চারু ধরাধর জানি।
হাদি পৈঠব জনিং পছঁ দিল পাণি ।

যামবিন্দু মুখ হেরয়ে নাহ।
চুখরে হরবেং সরস অবগাহ।
বুনাই না পারিয়ে পিয়া-মুখ-ভাব।
বদন নেহারিতে উপজয়ে হাস।
আপন-ভাব মোহে অমুভাবি।
না বুঝিরে ঐছনেং কিয়ে হুখ পাবি॥
তাকর বচনে কয়লুঁ সব কাজ।
কি কছব সো সব কছইতে লাজ॥
এ বিপরীত 'বিভাপতি ভাগ।
নাগরি রমইতে 'ভর নাহি মান॥৮॥১০৯৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৯৭ সংথ্যক পদ।
'গঠনজনী' ছলে 'বিভাৰ' প-র-সা। ২। 'জানি'
পাঠ সকলগুলি পুথিতে ছুট হইলেও উহা ছন্দোভলছুট বলিয়া 'জনি' পাঠই সমীচীন বোধ হয়। ৩।
'হরবে সরস' ছলে 'হরব সরস' ক। ৪। 'এছন'
ক, ধ, দ, চ,। ৫। 'বিপরীত পছ' প-র-সা।
৮। 'মরইভে' ধ।

बीतांत्र 12

আজু মরু সরম ভরম রহু দুর। আপন মনোরও সো পরিপুর॥ কি কহব রে সখি কহইতে হাস। সব বিপরিত ভেল আজুক বিনাস।ধ্রা জলধর উলটি পডল মহি মাঝ। উষল চাকু ধরাধর-রাজ ॥ মরুকত-দরপণ হেরইতে হাম। উচ নিচ° না বুঝি পড়লুঁ সোই ঠাম । भून व्ययमानित्य नागत कान। তাকর বচনে ভেল সমাধান॥ নি-বাদে বাস পুন দেয়ল সোই। लांटक ब्रह्में हिए यानन त्याहे । সোই রসিকবর কোরে আগোরি। আঁচরে শ্রম-জল মোছল মোরি॥ मुक् मुक् विकरेख घूमल शम। ভণয়ে বিভাপতি রস অমুপাম ॥৯।১১••॥*

ইত্যাদি বিপরাত-রসোদগার।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৯৮ সংখ্যক পদ।
২। 'উন্নল' ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'নীচ' ক,
খ। ৪। 'মুছ্ মুহু' ফ্লে 'মুছু' ক। ৫। 'ঘুন্ন'
ক, খ, চ, প-র-সা। ৬। অতঃপর ক, চ পুথিতে
নিন্নলিখিত প্রাকিপ্ত পংক্তিগুলি মুন্ত হর, ন্ধা—

তথা বাগ।

'নিলজে কহিন্দ সধি রাধিং হিরার। কীবন নিছিরে বাহে ইং কি তাহার॥'

निवा

१-৮। "মরকত" ইত্যাদি। আমি (अक्ट्रक्त रक्तः स्वतंत्र) মরকত-দর্শণ দৃষ্টি করিয়া, উচা-নীচা বুরিতে না পারিয়া নেই হলে পতিত হইলাম। (দর্শণত্ব প্রতিবিশ্ব উণ্টা-ভাবে দৃত্ত হর বনিয়া প্রতি- বিষে শগান প্রীক্তঞ্বে উপবিষ্টবৎ ও উপবিষ্ট আপনাকে শ্যানবৎ কান করিয়া পতিত হইলাম!) তুলনা করুন,-

"প্রতিবিশ্বিত-প্রিয়া তমু সকৌস্তভং জয়ণ্ডি মুরভিদো বক্ষ:। পুরুষায়িতমভ্যক্ততি नक्षीर्यक्षेका मूक्षभिव ॥"—व्याधा-मर्थनं हो । ৯-->। "পুন" ইত্যাদি। (কিন্তু স্পৰ্শবারা) অনুমান করিতেছি, (নিয়-স্থিত ব্যক্তি) নাগর শীক্ষণ! (ইহাতে আমি লজ্জাতুরা হইলেও) তাঁহার (অন্থনয়)-থাক্যে (কার্য্যের) সমাপ্তি इहेग ।

১১—১২। "নি-ব্যঃস" ইত্যাদি। তিনি (আমার) বস্ত্রহীন (অকে) বস্ত্র ছিলেন; (কেন না) আমি লজ্জার তাঁহার বকে (আমার) মূখ ঢাকিয়া রহিয়া-ছিলাম। ['লাজে রহলু' ইত্যাদি বাক্যে অতি স্থলর 'মভাবোক্তি' অলম্বার রহিয়াছে]।

অথ এ কুষণ্ড রু সাদ্যারো যথা। তত্বচিত-শ্রীগোরচন্দ্র:।

বিভাষ ৷১

व्यशक्तभ भावाहाटम्म ।

বিভোর হইয়া রাধার প্রেমে তার গুণ কহি কান্দে ।ধ্রা नग्रान गनाय প্রেমের ধারা পুলকে পুরল অঙ্গ। খেনে গরক্রয়ে (थरन रम कैं। भरत्र উপলে ভ:ব-ভরঙ্গ 🛚

পারিষদগণে কহয়ে যতনে রাধার প্রেমের কণা।

গোরাজ নাগর ভ্যানদাস কৰে বে লাগি আইলা এথা ||১০||১১০১||

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৯৯ সংখ্যক পদ। ২। প-র-সা ব্যতীত অভাত পুথিতে 'ঞ' নাই। ৩। 'চান্দ' প-র-সা।

সিত্বড়া ছটা ।১

আজুকার নিশি নিকুঞ্জেত বসিং कदल° विविध द्राम । রসের সাগরে ভুবাইয়া⁸ মোরে বিহানে চলিলা বাস॥ শুন হে স্থবল স্থা। (म **(इ**न ञ्चन्पत्री* গুণের আগরি পুন কি পাইবা দেখা 1 মদনে আগলি গলে গলে মিলি চুম্বন করল যত। কেশ বেশ আদি বিথার হইল তাহা বা কহিব কত। অশেষ বিশেষে বচন কহিয়া> व्यादवरम् । नहेश्रा दकादत्र । হিয়া জুড়াইল> অঙ্গের>২ পরশে **क्म्यान विमित्रि ३** छाट्य ॥ চণ্ডীদাসে কছে> শুন হে নাগর এ বড় লাগল ধন্দ। সে রাধা রমণী রস-শিরোমণি> ভোমারে করিল বন্ধ ১১১১১০২॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬০০ ও প-র পুথির ১৩।৭৩ সংখ্যক পদ। ২। 'নিকুঞ্জেত বৃসি' স্থলে 'নিকুঞ্জে আসি' ক ; 'নিকুঞ্জেড আসি' চ ; 'নিকুঞ্জেডে विन' भ-त । ७। 'कत्रन' भ-त । । 'जूबाईन' क, চ, প-র-সা। €। 'नात्रद्री' প-র-সা। ७। 'আংগারি' च, भ-त्र-मा। १। 'हरेव' भ-त्र। ৮। 'सहस्म'

ইত্যাদি স্থলে 'মদন আনলে লাগে গলে গলে' প-র।
১। 'কররে' প-র। ১০। 'বচন কহিয়া' স্থলে
'বচন কহিয়ে' প-র-সা; 'বে কিছু কহল' প-র।
১১। 'আমারে' প-র। ১২। 'সে অফ' প-র।
১০। 'ডুবাইল' ক, চ, প-র-সা। ১৪। 'পাসরিব'
প-র। ১৫। 'চগুীদাস কহে' স্থলে 'কহে বিজ্ঞাপতি'
প-র। ১৬। 'সে রাধা' ইত্যাদি স্থলে 'রাধা
বিনোদিনি রসিক রমণি' প-র।

व्यक्ति। ।

ত্বলের সনে বসিয়া শ্রাম।
কহরে রঞ্জনি-বিলাস কাম।
সে যে স্থাননি সুন্দরি রাই।
আবেশে হিয়ার মাঝারে লাই।
চুম্বন করলং কতন্ত ছন্দ।
রভসে বিহসি মন্দ মন্দ ।
বছবিধ কেলি করল সোই।
সে সব সপন হোয়ল মোই।
কোর ভিজ্মণ কুটিল দীঠ॥
সে ধনিং হিয়ার মাঝারে জাগে।
বিক্রাপতি কহে নবিনং রাগো॥১২॥১১০৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬•১ সংথ্যক পদ। ২। 'ক্রসু' প-র-সা। ৩। 'মিঠ' ক, থ। ৪। 'ভাল বিভলিম' ধ। ৫। 'দে ধনি' ফলে 'ধনী' ক; 'ধনি' চ। ৬। 'নবীন' ক।

গঠনএর ।>
কি কব রাইয়ের গুণের কথা।
সব গুণে তারে গড়িলে ধাড়া।
এ রাস-বিলাস করিল যত।
এক মুখে তাহা কহিব কড়।

কিবা সে মধুর নটন গান।
অমিয়া-অধিক করিলু পান।
সে সব কহিতে হিয়া না বান্দে।
দরশন লাগি পরাণ কান্দে।
শুন হে পরাণ-বল্লভ স্থা।
সে ধনা পুন কি পাইব দেখা।
নয়ন-বাণে সে হানল যবে।
বিভোৱ হইয়া রহিলু হবে।
চুম্বন করল যখন ধনা।
অথির তবহু কছু না কানি।
দৃঢ় আলিজনে হরল জ্ঞান।
বিপরীত কবিরঞ্জন ভাগ ৪১৩৪১০৪৪

পাঠ 'স

১। ইহাপ-র-সাপুঝির ১৬০২ সংখ্যক পদ। ২। 'নয়ন বাণ'ক, ধ, চ, পুর-সা।

युष्टे ।

রাধার প্রেমের ভরেই বিনোদ নাগর।
ধরি স্থবলের করেই কংতর-অন্তর ॥
দৌহে চলি আয়লং নিকুপ্তকং মাঝ।
রাইকুণ্ড-ভারে সেই ব্সিলা রস-রাজ ॥
বুন্দা দেবি ভহি মালদং ঘাই।
ভাহে মিনভি বহু করক কানাই॥
শুনিদ আওল সোই রাইক পাশ।
উদ্ধব দাস কহ মধুরিম ভাষ ॥১৪॥১১০৫॥

প্রিক্তর

১। ইহাপ-র-সাপুপির ১৯০০ সংখ্যক পদ।
২। 'তবে' কা ০। 'কর' প-র-সা।৪। 'আপুণে'
চা ৫। 'নিকুল' ক, থ, প-র-সা। ৬। 'সে'
শক্টি ঘ পুথিতে নাই। ৭। 'মিসণ' কা ৮।
'শুনির' ক, খ, খ, চ।

कांटबाब ।>

স্করি ভূরিভহিঁ করছ পরান।
সবহঁ তিরিধ-ফল খামি-স্মঙ্গল
ভামুক কুণ্ডেই সিনান এক।

গ্রুছন বচন কছল যব সো সধি
গুরুজনে অমুমতি মাগি।
বহু উপহার স্থকপুর্ব চন্দন
লেওল ভামুক লাগি॥
সবহঁ সধী মেলি দেই হুলাহুলি
চলতহিঁ পস্থক মাঝ।
সো বর-স্করে করি পথ চাকুরি
মিলায়ল নাগর-রাজ॥
রাইক বদন-চান্দ হেরি মাধব
পূরল সব অভিলাষ।
ছুহুঁ দরশনে চুহুঁ আরতি নব নব
কহতহিঁ গোবিন্দদাস॥১৫॥১১০৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্রথির ১৬০৪ সংখ্যক পদ। 'কামোদ' দলে 'তথা রাগ' ক; 'পঠমঞ্জরী' প-র-সা। ২। 'কুখ' প-র-সা।

कुभागो ।>

দোহার ছলহ ছহু দরশন ভেল।
বিরহ-জনিত ছুখ সব ছবেং গেল।
করে ধরি বৈসায়ল বিচিত্র জাসনে।
রমরে রতন-ভাম রমণি-রতনে।
বছবিধ বিলস্যে বছবিধ রজ।
কমলে মধুপ যেন পাওল সজ।
নয়ানে নয়ান ছুহাঁর বয়ানে বয়ান।
ছুহুঁ গুণে ছুহুঁ গুণ ছুহুঁ জবে গান।
ভুগরে বিভাপতি নাগর ভোর।
বিজ্ঞান-বীজাই নাগরি ঠোর ।
বিজ্ঞান-বীজাই নাগরি ঠোর ।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্ৰির ১৩০৫ সংখ্যক পদ।

হ। 'বৃরে' ক। ৩। 'বৈসারলি' ক, খ। ৪।
'বিজয়ী' ক; 'বিজহ' প-র-সা। ৫। 'নাগরি ঠোর'
হলে 'নাগর চোর' ক; 'নাগরি চোর' ব। প্রাচীন
প্রথিতে অনেক হলেট 'ঠ' অকরটির শিরঃহিত বক্র
রেখা দৃষ্ট হর না; স্নতরাং ঐ সকল হলে উহা 'চ'
অকর বিলয়া সহজেই ভ্রম হইতে পারে। এইরপ
ভ্রম হইতেই 'ঠোর' হলে ক, ব পুৰি ও বিভাগতির
মুক্তিত সংস্করণের হাজ-ফনক 'চোর' পাঠের উৎপত্তি
হইরাছে।

है का

৯—>•। "ভণরে" ইত্যাদি। বিভাপতি বিশিতেছেন—নাগর মুখ হুইলেন; ত্তিভ্বন-পরান্ত্রী ক্রফ নাগরী শ্রীরাধার স্থানে (পরাজিত হুইলেন)। ধ পুথির পত্তপ্রান্তে 'ঠোর' শব্দের অর্থ 'ঠাই' নিধিত আছে। 'ঠোর' শব্দের মুংপত্তি ও প্রবােগ পরিশিটে 'পদাবলি-শন্তবাবে' ফ্রইব্য।

তত্ৰ জল-ক্ৰীড়া।

তছ্চিত-শ্রীগোরচন্দ্র:।

गांत्रक । >

জলকেলি গোরাচান্দের মনেতং পড়িল। পারিবদগণ সঞ্চেশ্বজলেতে নামিল। কারোণ অঞ্চে কেহো কেহোণ জল পেলিণ মারে।

গৌরাজ পেলিয়া⁹ জল মারে প্রথাধরে । জল-ক্রীড়া করে পোরা হরবিভ-মনে। হলাহুলি বোলাবুলি করে জনে জনে । গৌরাজচান্দের লীলা কহনে না যার। বাস্থাদেব বোবে ভহিঁ পোরা-শুণ গার । ৪১৭৪১১০৮৪

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র সাপুথির ১৬ ৩ সংখ্যক পদ। ২। 'মনেতে'ক, খ। ৩। 'সঙ্গে'ক, প-র-সা। ৪। 'কার'ক। ৫। 'কেহ কেহ'ক, চ। ৬। 'ফেলি'ক, চ। ৭। 'ফেলিয়া'ক, চ।

व्यागावही ।>

রাধা সখি জল-কেলিয়ু নিপুণাং।
ধেলতি নিজকুণ্ডে মধুরিপুণা ॥ধ্র॥
কুচ-পট-লুপ্তন-নির্ম্মিত-কলিনা।
আয়্ধ-পদবা-বোজিত-নলিনা॥
দৃঢ়-পরিরস্তণ-চুম্বন-হঠিনা।
হিমাণ-জল-সেচন শ-কর্মাণ কঠিনা॥
স্থ-ভরত-শিথিল-সনাতন-মহসা।
দয়্তি-পরাজয়-লক্ষণ-সহসা॥১৮॥১১০৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬০৭ ও প-র পুথির ৩২।২ সংখ্যক পদ। ২। 'জলকেলি হুনিপুণা' ঘ। ৩। 'লুট্টিড' প-র। ৪। 'শ্রম' প-র। ৫। 'দিঞ্চন' প-র-সা। ৬। 'ভব'প-র-সা, প-র।

টাকা

১—৮। শ্রীরাধামোহন ঠাকুরের টীকা বথা— 'তত উভয়োর্জনবৃদ্ধং দর্শরতি 'রাধে'ত্যাদি। হে সাধ। জলকেনিবৃ নিপুণা শ্রীরাধা শ্রীক্রফেন সহ নিজকুণ্ডে থেলতি পরম্পারং নানাভল্যা জলমুং-ক্ষপতি। কীলুন্দেন १—কুচরোঃ পটলুঠনেন কঞ্-নিকাকর্বনেন নির্দ্মিতঃ কলিঃ কলহো বেন। সা চ কীলুনী ?—আর্থস্থাত্ত জলকাপাত্রত পদব্যাং পথি বোজিজং ভরিবারক্ত্বেন নির্দ্মিতং নলিনং বয়া। ইচ্পরিরম্ভপচুক্বরার্ছঠোহস্তাতীতি তথা তেন। অত্র নিমিন্ত-সপ্তমী। শীতলকলসেককর্ম্মণি মৃত্য। মুধাতি-শব্দে শিব্দিং স্নাভনং নিত্যং মহত্তেক্তো বস্তু তেন। 'মহত্ত ৎস্বভেক্তরো'রিভাষরঃ। পক্ষে ভরারা গোত্থামিনা সংহতি খেষার্থ:। দয়িতত পরাক্ষ-চিক্নে সহাত্য।।"

অমুবাদ

১--৮। ছে স্থি! বিবিধ জ্বল-কেলিতে নিপুণা এীরাধা নিজ-কুণ্ডে এীক্কফের সহিত ক্রীড়া করিতেছেন। প্রিয়ত্ম জাঁহার কুচ-বদন অপদ্রণ করিতে উন্মত হইলে, তিনি তাঁহার সহিত (কুত্রিম) কলহ করিয়া কমল-সমুচত্রপ অস্ত্র বর্ষণ করিয়া নিবারণ করিতে চেষ্টা করিতেছেন। প্রিয়তম গাঢ় চুম্বৰ ও আলিখনের নিমিত্ত বল-প্রয়োগ করিলে. তিনি (তাঁহার প্রতি) সবেগে শীতল জল সেচন করিতেছেন। স্থাতিশযা হেতু প্রিয়ন্তমের ক্রীড়া-বেগ শিথিল হইলে তিনি তাঁহার পরাক্ষরে লক্ষ্ণ দর্শনে হাজমুঝী হইতেছেন! (অপর পক্ষে অর্থ--প্রিয়তমের পরাজয়-লক্ষণ দর্শনে তিনি আনন্দ-ভর-মছর স্নাত্তন গোঝামীর স্হিত হাস্ত করিতেছেন!)

मात्रण ।>

রাধে নিজ-কুণ্ড-পর্নাস স্থুজীকুরু রক্ষং।
কিঞ্চ সিঞ্চ পিঞ্ছ-মুকুটমঙ্গাকুতং-ভঙ্গং।
অত্য পশ্য ফুল্ল-কুগ্থম-রচিতোন্নত-চূড়া।
ভীতিভিরতি-নাল-নিবিড়-কুগুলমমুগুঢ়া॥
ধাতু-রচিত-চিত্র-বীথিরস্তাস পরিলানা।
মালাপ্যতি শিথিল-বৃত্তিরজনি ভূজ-হানা।
শ্রীসনাতন-মণিরত্বমংশুভিরতিচ গুং।
ভেজে প্রতিবিশ্ব-জাব-দ্যাত্রব গণ্ডং॥

o C C C # 6 C

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-দা পুথির ১৬০৮ সংধ্যক পদ। ২। 'মুক্টমলাকড' (প-স) ছলে 'মুক্টমলাকুক' ক, ঝ, চ, প-র-না; 'মুক্ট ভলীকুক' ঘ। টাকা

১-৮। শ্রীরাধামোহন ঠাকুরের টীকা, বথা-'তত: কাচিৎ সৰী ত্ৰীকৃষ্ণত পরাক্ষঃ স্চয়স্তী প্ৰীমতীং প্ৰতি পুনৰ্জলদেকাৰ্বং 'রাধে নিজ কুণ্ডে'-ত্যাদিকমাহ। হে রাধে। নিজকুগুপর্সি রুঙ্গং चनरमकरकोमनः जुन्नोकुक वर्षत्र। शिक्षमुकृष्ठेर জীকৃষ্ণ সিঞ্চ। কীদৃশং १—অম্বীকৃত-ভঙ্গং স্বীকৃত-পরাকরং। ভঙ্গ-চিকান্তাহ। অস্ত একুফক্ত কল্ল-কুম্মেন রচিতা উন্নতচ্ডা অতিনীশনিবিডক্ষলময় শক্ষীকৃত্য ভীতিভিগু ঢ়া সংশ্বপ্তা পুকায়িতা ইতাৰ্থ:। তথা ধাতুভিবৈবিকৈ রচিতা চিত্রপঙ্কিরস্কসি পরিশীনা নিমগ্রা ভীতিভিরিতি সর্বত্ত যোঞ্চাম। 'বীৰি: পঙ্কো গৃহাঙ্গে চ হ্লপ-কাস্তারবর্থনো'রিভি বিখ:। মালাপি ভূপবিহীনা সভী শিধিল বৃত্তিরঞ্জন স্লানবদনা জাতা। 'ভৃত্ববিহীনে'ত্যনেন ভৃত্বানাং প্রায়নং স্চিতং তেন সর্ক্সহায়ানাং পরাক্ষয়ো বৃত্ত:। বৎ শ্রীসনাতনক্ত শ্রীকৃষ্ণক্ত মণিরত্বং মণিশ্রেষ্ঠং কৌশ্বভং অংশুভিশ্চঙাং পঞ্চসি তদপি তব গঙাং প্রতিবিশ্বভাব-কপটাৎ ভেজে ত্বাং শরণং গতমিতি পশ্র। 'কণটোহন্ত্রী ব্যাক্তদন্ত্রোপধয়' ইত্যমর:। পক্ষে শ্রীসনাত্তনগোস্বামিনো মণিঃ শিরোমণিঃ শ্রীরুষ্ণঃ তত্ত রত্ম।

অসুবাদ

১-৮। হে প্রীরাধে! তুমি নিজ-কুণ্ডের জলে ক্রীড়া-কৌশল বিস্তার এবং স্বীক্রত-পরাত্তর দিথি-शृष्ट्शांती श्रीकृत्कत चान कन-त्महन कता (१४. স্ল-কুম্ম-রচিত ইহার উন্নত চূড়া ভয়ের জ্ঞাই ত্বনীল নিবিড় কুস্তলের মধ্যে লুকাল্লিত হইলাছে। ইহার গৈরিক-রচিত চিত্ররাজি (ভরের জন্তই) জলের মধ্যে বিলীম এবং মালা শিখিল-গ্রন্থি ও लमत-त्रहिष्ठ रहेत्राष्ट् ! अष्ठाष्ट्राचत अकृत्कत मनि-শ্ৰেষ্ঠ (কৌন্তভ,—অপর পক্ষে—সনাতন গোস্বামীর শিরোমণি শ্রীকৃষ্ণের রত্ন) প্রতিবিশ্বছলে ভোমার **अटलब भवन गरेबाटा**।

धानमी ।১

নাহি উঠিল দোঁহে কুণ্ডক তীর। তকু তকু লাগল পাতল চীর॥ তাজে বনায়ল নব নৰ বেশঃ কুঞ্চক মাঝে করল পরবেশ ॥ বিবিধ মিঠাই কতত উপহার। ভোজন করু তঁহিং কত পরকার 🛚 রাইক যতনে সোই শ্রামরায়। বত্বিধ ভূজলও হরিষ-হিংার 🛭 যো কছু শেষ রহল পুন থারি। স্থি স্থেও ভোজন করল বহনারি। তামুল খাই শয়ন চুত্ত কেল। আলসে আকুল দোঁহে নিন্দ গেল 🛭 স্থিগণ তাহিঁ শ্যুন করু কুঞ্চে। কুস্থম-শেজ রচিত রসপুঞ্চে॥ নিতি নিতি ঐছন ছুহুঁ ক বিলাস। বীজন করতহিঁ গোবিন্দদাস ॥২০॥১১১১॥ ইতি তৃতীয়-শাখায়াং ষোড়শপল্লবঃ।

পাঠা শ্বর

)। ইহাপর-সাপুথির ১৬০৯ সংখ্যক পদ। २। 'कक छहिं' ऋता 'कब्रछहिं' थ। ७। 'बूबन' ক; 'ভোজন করু' থ, য; 'ভোজন' প-র-সা। ৪। 'रुहिं' क. थ. ह।

অথ জন্ম-লালা। वार्ता श्रीवरिषठहळ्य यथा। নিশ্বড়া 15 এ তিন ভুবন মাঝে व्यवनी-मधल गांख তাহে পুন অতি অমুপাম। শোক চুখ আপত্ৰয়

বার নামে শাস্ত হয়

হেন সেই শান্তিপুর গ্রাম ।

কবের পণ্ডিভ তায় শুদ্ধ-সত্ব বিজরায় নাভাব দেবী ভাষার গৃহিণী। শান্তিপুরে করিণ স্বিভি কৃষ্ণ-পূজা করে নিডি ভক্তি-হান দেখিয়া অবনী॥ কলি-হত জীব দেখি মনে তুখ পায় অতি ভক্তো আরাধয়ে ভগবান। সেই আরাধন-কাজে নাভা পেবী-গর্ভ মাঝে মহাবিষ্ণু হৈলা অধিষ্ঠান ॥ শুক্লা সপ্তমী দিনে মাথ মাস শুভক্তণে অবতীৰ্ণ হৈলা মহাশয়। হৈলা হর্ষত-মতিং দেখিয়া পণ্ডিত অতি নয়নে আনন্দ-ধারা বয়॥ আনন্দ পাইল মনে আচন্বিতে জগ-জনে কি লাগিয়া কেহো নাহি জানে। এ বৈক্ষবদাসে বলে উদ্ধার হইবে হেলে পতিত পাৰ্যণী দীন হানে ॥১॥১১১২॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬১০ সংখ্যক পদ। ২। 'লাভা' ক। ৩। 'করে' ক। ৪। 'লাভা' ক। ৫। 'হরিষ মভি' খ, দ। ৬। 'এ বৈক্ষব-দাসে' ছলে 'বৈঞ্চৰের দাসে' খ, দ।

क्नानि ।)

কুবৈর পণ্ডিত প্রতি হর্ষত দেখিয়া পুজের মুখ।
করি জাতকর্ম যে আছিলং ধর্ম বাঢ়য়ে মনের স্থখ॥
সব ক্ষকণ বন্ধন-কমল-শোভা।
শাকাসুলক্ষিত বাস্ক স্থলিত

कश-कन-मन-दर्गाको ॥

নাভি স্থগভার পরম সুন্দর नग्रन कमल जिनि। অরুণ চরণ নখ-দরপণ জিভি কত বিধুমণি॥ মহাপুরুষের চিহ্ন মনোহর দেখিয়া বিশ্বয় সভে। বুঝি ইহা হৈতে জগত ভরিবে এই করে অমুভবে 🛭 যত পুরনারী শিশু-মুখ হেরি° व्यानन्म-माग्रददः ভाদে। না ধরুয়ে হিয়া পুন পুন গিয়া नित्रश्राय अनिभिर्य ॥ করে পরিহারে তাহার মাতারে কহে হেন স্থত যার। ভার ভাগ্য-সামা কি দিব উপমা ভূবনে কে সম তার। স্ব' নারাগণ এতেক বচন কহে গদ গদ ভাষা । বুঝল কারণ জগত-ভারণ माम देवखरवत्र व्यामा^२ ॥२॥১১**५७॥** পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬১১ সংখ্যক পদ।
২। 'বে আছিল' ফ্লে 'বেবা বিখি' খ; 'বেবা ছিল'
প-র-সা। ৩। 'বত পুরনারী' ইত্যাদি পংক্তি
চারিটি খ পুথিতে নাই। ৪। 'সাগরে' ক, প-র-সা।
৫। 'ক্রি' খ, প-র-সা। ৬। 'তাহার' ইত্যাদি
ফ্লে 'তাহার মাতার করি পরিহার' প-র-সা। १।
'ক্রে' প-র-সা। ৮। 'ভাব' প-র-সা। ৯।
'বুঝিল' ঘ। ১০। 'আন' প-র-সা।

यहरै ।)

নাহি কুষ্ণ-নাম-ভয় বিষয়ে সকলং মত্ত खिलम्य इरेन खरनो । কলিকাল-সর্প-বিষে मक्ष कीव मिथाविरम না জানয়ে কেবা⁸ সে আপনি ॥ নিজ কন্যা-পুজোৎসবে ধন-ব্যয় করে সভে নাহি অন্য শুভ কর্মলেশ। যক্ষণ পুজে মছ্য মাংসে নানা মতে জীব হিংসে এই মত হৈল সর্বব দেশ। দেখিয়া করুণা করি কমলাক নাম ধরি অবতীর্ণ হৈলা গৌড় দেশে। সাক্ষোপালে অবতার ব্ৰহ্মবাজ-কুমার করাইব এই অভিলাবে ॥ সর্ব্ব-আগে আগুয়ান জীবের করিতে ত্রাণ শান্তিপুরে করিলা প্রকাশ। সকল তুক্কতি যাবে সভে কুষ্ণ-প্রেম পাবে कटर मीन देवखदवत्र माम ॥०॥১১১৪॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬১২ সংখ্যক পদ। ২। 'সকলে' ক; 'সকলি' ধ। ৩। 'মেদিনী' প-র-সা। ৪। 'কিবা' থ। ৫। 'জন্ম' প-র-সা।

তথা রাগ ৷>

জয় জয় অবৈত আচার্ব্য দয়াময়।

অবতীর্ণ হৈলা জীবে হইয়া সদয়॥

মাথ মাস শুক্লপক্ষে সপ্তমী দিবসে।

শান্তিপুরে আসি প্রভু হইলা প্রকাশে॥

সকল মহান্ত মাঝে আগে আগুয়ান।

শিশুকালে পুইলা পিতা কমলাক্ষ নাম॥

কলি-কাল-সাপে জীবে করিল গয়াস।

দেখিয়া কয়ণা করি হইলা প্রকাশ॥

#2<<<#r/>#8#>>>>&#

रेजापि श्रम् ।

পাঠক্তির

১। ইছাপ-র-সাপুণির ১৬১৩ সংখ্যক প_{দ।} 'ভৰা রাগ**' হুলে** 'শ্রী' খ।

ততঃ শ্রীনিত্যানন্দচন্দ্রাবির্ভাবঃ।

শ্ৰীরাগ।১ রাতদেশেং নাম এককো গ্রাম হাডাই পণ্ডিত-ঘর। শুভ মাঘ-মাসি श्का जरग्रामभो জনমিলা হলধর। হাড়াই পণ্ডিত অতি হর্ষিত পুজ্র-মহোৎসব করে। धत्रगी-मखन করে টলমল আনন্দ নাহিক ধরে। শান্তিপুর-নাথ মনে হরবিত করি কিছু অমুমান। অন্তরে জানিলা বুঝি জনমিলা কৃষ্ণের অগ্রঞ্জ রাম ॥ বৈফ্টবের মন হৈল প্রসয় আনন্দ-সাগরে ভাসে।

পাঠান্তর ১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬১৪ সংখ্যক ^{পদ।} ২। 'রাঢ়দেশ' ক, প-র-সা।

करह छूथी कृष्णनारम । ८। ১১:७॥

হইবে উদ্ধার

श्रहें।)

এ দীন পামর

ভূবন-আনন্দ-কন্দ বলরাম নিভাগন্দ অবতীর্ণ হৈলা কলি-কালে। ঘূচিল সকল চুখ দেখিয়া ও চান্দমুখ ভাসে লোক আনন্দ-হিলোলেণ ।

क्य क्य निज्ञानम त्राप्त । অঙ্গুলে চান্দের পাঁতি তনক-চম্পক-কাঁতি রূপে জিতল কোটি কাম ॥ গ্রু। शृर्ग-ठन्म किरम त्निथ ७ गुथ-मधन (मि **पिचल नग्रान ভाঙ, धरू**। আগাসুলস্বিত ভুজ তল থল-পক্ষ কটি খীণ করি-অরি° জমু॥ ভকত-ভ্ৰমর বুলে চরণ-কমল-ভলে আধ বাণী অমিয়া প্রকাশ। इंड कलियुग-कौरव উদ্ধার হইবে এবে करह मीन छुशी कृष्णमांत्र ॥७॥১১১१॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৬১৫ সংখ্যক পদ। 'থংই' হলে 'ঐরগ' প-র-সা। ২। 'হৈল' ক, খ। ৩। 'সাপরে' প-র-সা। ৪। প-র-সা ব্যতীত অন্তান্ত পুথিতে 'ঐ' নাই। ৫। 'ঐরি' ক; 'রৈরি' চ। ৬। 'আনিরা' থ। ৭। 'হইল' ক; 'হইব' প-র-সা।

थामणी ।>

আগে জনমিলা নিতাইচান্দ।
পাতিলা অমিয়া করুণা ফান্দ ॥
নারীগণ সভে দেখিতে যায়।
সভাবে করুণা-নয়ানে চায়॥
দেখিয়া সে ঘরে আসিতে নারে।
রূপ ছেরি তার নয়ান কুরেই॥
দেখি সভে মনে বিচার করে।
এই কোন মহাপুরুষ-বরে॥
দেখিতে দেখিতে বাঢ়য়ে সাধ।
ঘরে আসিবারে পড়য়ে বাদ॥
মানে করি ইহায় হিয়ায় ভরি।
ময়ানে কাজর করিয়া পরি॥

কত পুণ্য কৈল ইহার মাতা।

এ হেন বালক দিলা বিধাতা ॥

এত কহি কারু নয়ান দিয়া।
আনন্দের ধারা পড়ে বাহিয়া॥
কারু স্থন বাহি তুগ্ধ করে।
কেহো যায় তারে করিতে কোরে॥
এ সব বিকার রমণীগণে।
শিবরাম আশা করয়ে মনে ॥৭॥১১১৮॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৬১৩ সংখ্যক পদ। ২। 'ঝরে'ক,চ।

তথাহি জ্রীচৈতন্য-ভাগবতে যথা ।
রাঢ় মাঝে একচাকা নামে প্রাছে গ্রাম।
তহিঁ অবতার্ণ নিত্যানন্দ বলরাম ॥
হাড়াই পণ্ডিত নাম শুদ্ধ বিপ্ররাজ।
মূলে সর্বর পিতা তানে কৈল পিতা-ব্যাজ ॥
মহা জয়জয়-ধ্বনি পুষ্পা-বিরষণ।
সম্বোপে দেবতা শে করিলা তখন ॥
কুপা-সিদ্ধু ভক্তিদাতা জ্রীবৈষ্ণব-ধাম।
অবতার্ণ হৈলা রাঢ়ে নিত্যানন্দ রাম ॥
সেই দিন হৈতে রাঢ়-মণ্ডল সকল ।
পুন পুন বাঢ়িতে লাগিল স্থমস্পল ॥
॥৮॥১১১৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুঁথির ১৬১৭ সংখ্যক পদ।

হ। 'মধ্যে' ব; 'দেলে' প-র-সা। ৩। 'তহি'

ইত্যাদি হলে 'তাহে' ইত্যাদি ক, খ; 'তাহা অবতীর্ণ

হৈলা নিত্যানন্দ রাম' প-র-সা। ৪। 'সকলে' ক,
ব। ৫। 'পুনঃ পুনঃ' ক। ৬। 'পুমললে' ক,
ব।

12042257

অথ জ্রীচৈত শচন্দ্রস্থ জন্মলীলা। ভাটগরি।>

ফাল্পন পূর্ণিমা তিথি হান্তগ সকলি।
জনম লভিবে গোরা পড়ে হুলাহুলিং।
লভিবে জনম গোরা যাবে সব হুগ।
শব্দ হুন্দুভি বাজে পরম হরিষে।
জয়-ধ্বনি হুরকুল কুহুম বরিষে।
জয়-ধ্বনি হুরকুল কুহুম বরিষে।
আবালবনিতা আদি নরনারীগণ।
শুভক্ষণ জানি গোরা জনম লভিলং।
পূর্ণিমার চন্দ্র যেন উদয় করিলং।
হরি হরি ধ্বনি উঠে ভরিয়া ভুবন।
দীন হীন উদ্ধার হইবে ভেলং আশ।
দেখিয়া আনন্দে ভাগে জগরাথ দাসং॥

পাঠান্তর

11056611611

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬১৮ সংখ্যক পদ।
২। 'হড়াহড়ি' প-র-সা। ৩। 'লভিলা' ক,
প-র-সা। ৪। 'করিল' ক, প-র-সা। ৫। 'হেন'
ছ। ৬। 'দেখিরা' ইত্যাদি স্থলে 'আনন্দে তাসে
পত্ত জগরাধ দাস' প-র-সা।

कुड़ी 13

জয় জয় কলরব নদিয়া নগরে।
জনম লভিলা গোরা শচীর উদরে।
ফাল্পন-পূর্ণিমা ভিথি নক্ষত্র ফাল্পনি।
শুভক্ষণে জনমিলা গোরা বিজমণি।
পূর্ণিমার চন্দ্র জিনি কিরণ প্রকাশ।
দূরে গেল অন্ধকার পাইয়া নৈরাশ।

ছাপরে নন্দের ঘরে কৃষ্ণ অবভার।
যশোদা-উদরে জন্ম বিদিত সংসার॥
শচীর উদরে এবে জন্ম নদীয়াতে।
কলিযুগের জীব সব নিস্তার করিতে॥
বাহুদেব ঘোষ কহে মনে করি আশা।
গৌর-পদ-ঘন্দ মনে করিয়া ভরোসাং॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬১৯ সংখ্যক পদ। ২। 'ভরদা'ক, খ,প-র-সা।

क्लानि ।>

পূর্ণ-চন্দ্র গৌরহরি নদিয়া-উদয়-গিরি কুপা করি করিলা উদয়। পাপ-তম হৈল নাশ ত্রিজগতে উল্লাস জগ ভরি হরি-ধ্বনি হয়। হেন কালেং নিজালয়ে উঠিয়া অহৈত রারে নৃত্য করে আনন্দিত মনে। रुविमान देलग्रा नदन ভঙ্কার গর্জন রবে কেনে নাচে কেহো॰ নাহি জানে। দেখি উপরাগ-রাশি শীত্ৰ গন্ধাঘাটে আগি আনন্দে করিল গলামান। পাঞা উপরাগ-ছলে আপনার মনোবলে ত্রাক্সণেরে করে নানা দান ॥ प्रिचि मदन विश्वव জগত আৰন্দময় ঠারে-ঠোরে কছে হরিদাস। তোমার ঐছন রক্ত भारत मन भरतम বুঝি কিছু কাজে আছে ভাষ॥ আচাৰ্য্য-রত্ন শ্রীবাস হৈল মনে কুখোরাগ यारे ज्ञान करत्र शकाकरण । देकन इति-मङ्गीर्धन जानरम विश्वल-मन नामा मान देवन महनाबहन ॥

এই মত জক্ত তথি যার যেই দেশে স্থিতি
তাহাঁ তাহাঁ গণীই মনোবলে।
নাচে করে সন্ধীর্ত্তন আনন্দে বিভোল ১১ মন
দান করে প্রাহণের ছলে ॥১১॥১১২২॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬২০ সংখ্যক পদ।

২। 'হেন কালে' স্থলে 'সেই কালে' প-র-সা। ৩।
'নিজালয়' প-র-সা। ৪। 'রায়' প-র-সা। ৫।
'কেহ' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'দেখি' ইত্যাদি
অবশিষ্ট কলিগুলি প-র-সাপুথিতে নাই। १। 'মনবলে' খ। ৮। 'কৈল' খ। ৯। 'ভিডি' ঘ;
'ভিথি' চ। ১০। 'ভাহা ভাহা' ক। ১১।
'বিহ্বল' ক, চ।

দিনাস্তরে। বিভাব বা তুড়ী।১

হের দেখসিয়া নয়ান ভরিয়া কি আর পুছসি আনে। নদিয়া নগরে শচীর মন্দিরে চাম্দের উদয় দিনে॥

কিয়ে লাখবান ক্ষিল কাঞ্চন ক্ষপের নিছনি গোরা। শচীর উদর- জলদে নিক্সিল

থীরং বি**ফুরি পারা**॥

কত বিধুবর বদন উজোর নিশি-দিশি সম শোভে।

নয়ান-জ্রমর শুভি-সরোরুহে

ধায় মকরন্দ-লোভে ॥ আজামুলন্থিত ভুক্ক সুনলিত

শাভি হেম-সরোবর।

পাঠান্তব

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬২১ সংখ্যক পদ। ২। 'স্থির' ক, চ। ৩। 'ঐ'র' প-র-সা। ৪। 'উক'ক, থ, খ, প-র-সা। ৫। 'মনহর' ঘ।

কুহিলা চ

প্রকাশ হইলা গৌরচন্দ।
দশ দিশেং বাড়িলং আনন্দ॥
রূপ কোটি মদন জিনিয়া।
হাদে নিজ্ক-কার্ত্তন করিয়া।
আজি প্রমধুর মুখ জাঁাখ।
মহারাজ-চিহ্ন দব দেখি॥
শ্রীচরণে ধ্বজ বন্ধ্র শোহে।
দব অঙ্গে জগ-মন মোহে॥
দূরে গেলং সকল আপদ।
ব্যক্ত হইল সকল সম্পদ॥
শ্রীচিত্ত নিত্যানন্দ জান।

► বৃন্দাবন তছু পদে গান॥১৩॥১১২৪॥ পাঠাস্কর

)। देश भिन्त-माधूनित ১७२२ मःशाक भवा २। 'विर्गि' क, च, ठ, भन्त-मा। ७। 'वाड्वि' च; 'वाड्वि' भन्त-मा। ८। 'भव' च।

^{গ্রহণন্তা।}> শ্রীচৈতক্য অবতার শুনি লোক নদিয়ার

উঠিল পরম মঞ্চল রে।
সকল-তাপ-হর শ্রীমুখ স্কার
দেখিয়া হুচল বিভোর রে॥
অনস্ত ব্রহ্মা শিব আদিং বৃত দেব
সভাই নর-রূপ-ধারা রে।
গায়েন হরি হরি গ্রহণ ছল করি
লখিতে কেহোণ নাহি পারি রে॥

কেহো করে স্তুতি কারো॰ হাতে ছাতি কেহো চামর চুলায় রে। কেহো পুষ্প বরিষে পরম হরিষে কেহো নাচে কেহো গায় বায় রে । **म**न मिट्रा थाय লোক নদিয়ায় করিয়া উচ্চ হরি-ধ্বনি রে। এক ঠাঞি বরে কেলি মানুষ দেবে মেলি व्यानरम नवशीपश्रुतो (त्र ॥ শচীর অঙ্গনে मकल (नवश्रुत প্রণত হইয়া পড়িল রে। লখিতে কেহো নারে গ্রহণ-অন্ধ কারে पुरुष रे दे दिन्द राजिय र अला दिन । সকল শক্তি সক আইলা গোরাঙ্গ পাষ্ডী কেহো নাহি জানে রে। রান্ত ধরল ইন্দু প্রকাশেদ নাম-সিফু कलि-मर्फन वादक्ष वाना (त्र 1>81)>>१०।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬২০ সংথ্যক পদ।
২। 'আদি করি' প-র সা। ৩। 'গ্রহণের'
প-র-সা। ৪। 'কোই' থ, ঘ, চ। ৫। 'কার'
ক। ৬। 'এক ঠাঞি' হলে 'একঅ' প-র-সা।
৭। 'চৈতভ্য' ক, থ, প-র-সা। ৮। 'প্রকাশ'
ক। ৯। খপুথি ছাড়া অক্সান্ত পুথিতে 'বাজে'
শব্দ নাই।

তথা রাগ ৷১

তুন্দুভি ভিণ্ডিমিং মন্ত্রী জয়-ধ্বনি
গাওয়ে মধুর বিধান রে।
বেদের অগোচর ভেটিব গৌরবর
বিলম্মে নাহি আর কাল বে।

আনন্দে ইন্দ্রপুর মলল-কোলারন সাজ সাজ বলি সাজ রে। বহু পুণ্যভাগে চৈত্তত্য প্ৰকাশে পাওল নবদ্বীপ মাঝ রে॥ অভোগ্যে আলিগন - চুম্বন ঘনে ঘন লাজ কেহো নাহি মানে রে। निष्या-পুরবাসী আপন পর নাহি জানে রে॥ ঐছন কোতুকে দেবতা নৰবীপে আওল শুনি হরি-নাম রে। পাইয়া গৌর-রদে বিভোর পরবংশ তৈতত্ত জয় জয় গান রে । দেখিলা শচী-গৃহে গোরাক পরকাশে একত্রে কত কোটি চান্দ রে ।। মাসুষ-ক্লপ ধরি গ্রহণ-ছল করি বোলয়ে উচ্চ হরি-নাম রে॥ সকল শক্তি সঙ্গে আইলা গৌরাঙ্গে পাষণ্ডী কেহে। নাহি জানে রে। শ্রীতৈত্য নিত্যানন্দ অবৈত আদি ভক্ত-বুন্দ वृन्तविन्ताम खण गान दत्र ॥১৫॥১১२७॥ ইত্যাদি শ্রীষ্ণবৈত-নিত্যানন্দ-(गोत्रहळ्य जग्न-लोग। ইতি তৃতীয়-শাখায়াং সপ্তদশপল্লবঃ। পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬২৪ সংখ্যক পদ।
২। 'ডিভিম'ক, দ, চ। ৩। 'মহরি' প-র-সা।
৪। 'মধু' খ। ৫। 'বিশাল' প-র-সা। ৬।
'আনন্দ'প-র-সা। ৭। 'পুণ্য ভাগ্যে' ক; 'পুণ্য ভাবে' প-র-সা। ৮। 'অনভে' প-র-সা। ৯। 'কৌতুক' ক। ১০। 'এক্তে' ইত্যাদি হলে 'এক্তে বৈছে কভ কোটি চাক্ষ রে' ক; 'এক্ত ঐছে কোটি চাক্ষ রে' চ।

অথ এ কুষ্ণস্থ জন্ম-লীলা।

नटन्मां ९ मवः ।

অস্তোচিত-শ্রীগৌরচন্দ্র:।

কল্যাণী।১

পুরুব জনম-**मियम (मिश्रा** আবেশে গৌর রায়। নিজগণং লৈয়া হর্ষিত হৈয়া নন্দ-মহোৎসব গায় ॥ বাজয়ে রসাল খোল করতাল कीर्खन जनम-लीला। গোগান্ধ-স্থন্দর আবেশে আমার গোপ-বেশ নির্মিলা॥ মুত ঘোল দধি গো-রস হলদি अवनी मांबादव छालि। কান্ধে ভার করি তাহার উপরি নাচে গোরা বনমালী # করেত**ু লগু**ড় নিতাই স্থন্দর আনন্দ-আবেশে নাচে। রাম গোরীদাস রামাই মহেশ নাচে তার পাছে পাছে[।] ॥ হেরিয়া যতেক नोलाहल -- (ला क প্রেমের পাথারে ভাসে। দেখিয়া বিভোর আনন্দ-সাগর

পাঠান্তর

এ জগমোহন দাসে ।১॥১১২৭॥

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৬২৫ সংখ্যক পদ।
২। 'ছিলপণ' ক, খ, ঘ, চ। ৩। 'করেডে'
প-র-সা। ৪। 'পিছে পিছে' প-র-সা। ৫।
'নীলাচল' প-র-সা। ৬। 'এ জগমোহন দাসে'
ছলে 'গার বৃন্ধাবন ছাসে' প-র-সা।

বিভাগ 15

নিশি-অবশেষে জাগি বরজেশবি
হেরই বালক-মুখ চান্দে।
কভন্ত উল্লাস কহই না পারিয়েং
উপলই হিয়া নাহি বান্ধে ॥
আনন্দ কো করু ওর।
শুনি ধনিই নন্দ গোপেশব আয়ল
শিশু-মুখ হেরিয়া বিভোর ॥
দুলা
চলতহি খলত উঠত খেনে গারতং
কহি সব গোকুল-লোকে।
আয়ল বন্দিগন বোগন সভ্জন
করতহি জাত বৈদিকে॥
দুধি স্বত নবনি হরিন্তা হৈয়ক্লব
ঢালত অফন মাঝে।
কহং শিবরাম দাস জ্ঞানন্দে নাচত
গাওত ব্লবর-রাজে ॥২॥১১২৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুপির ১৬২৬ সংখ্যক পদ।
২। 'পারই' প-র-সা। ৩। 'ধ্বনি' ক। ৪।
'গিরত' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'কহ' ইত্যাদি
স্থলে—'কহ শিবরাম দাস অব আানন্দে নাচত গাওত
ব্রহ্মবর-রাজে॥' ক, খ, ঘ, চ।

ধাননা।

নন্দ স্থনন্দ যশোমতি রোহিণি
আনন্দ করত বাধাই।

গোকুল নগর-লোক সব হর্ষিত
নন্দ-মহলং চলু ধাই॥
গোরোচনা জিনি গোরি স্থনাগরি
নব নব রুজিণি সাঞ্চ।

নন্দ-সূন্ত সবে হের্ইতে আনন্দে
লোক চলত প্রথ মারা॥

আনন্দে কো করু ওর।
পত্তহি গান ওনে কত করতহিঁ
মন-স্থে সব জন ভোব ॥ ধ্রু ॥
আওল নন্দ-মহল মহা আনন্দে
অজনে ভেল উপনীত।
বশোমতি রোহিণি লেই সব গোপিনি
করতহি সব জনে প্রাত্ত ॥
বশোমতি-বয়ন হেরি সভে পূহত
কৈছন বালক দেখি ।।
জনম সফল তুয়া আনন্দ ধন জন
পুণ্য ভ্বনে কত লেখি ।।
গোপ গোপিগণ দধি স্তুত মাধন
ঢালত ভারহি ভার।
কহ শিবরাম সকল তুখ মাটল ২
আনন্দে কো করু পার॥৩:১১২৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬২৭ সংখ্যক পদ।

হ। 'মহলে' ধ, প-র-সা। ৩। 'সাত' হা।

হা 'ম্ল' ক, থ, চ; 'শুল' প-র-সা। ৫। 'আনশ্দ'

ক, ধা ৬। 'গমনে' ধা ৭। 'তাল' প-র-সা।

৮। 'জন' ক, চ। ৯। 'গুছত' ক, চ, প-র-সা।

১০। 'তোর' প-র-সা। ১১। 'দেখি' ক, থ, চ!

জনম সকল' ইত্যাদি পংক্তিব্রের স্থলে—'শুনি

কুসোম্ভি আনন্দে অতি দেখহ বালক মোর॥'
প-র-সা। ১২। 'মিটব' ক, 'মিটল' চ।

टिश्रवी।>

পুত্রমুদারমস্ভ যশোদা।
সমন্দনি বল্লব-ভতিরভিমোদাং ॥ৠ॥
কোহপুগেনয়ভি॰ বিবিধমুপহারম্।
নৃত্যতি কোহণি অনো বছবারম্ ॥

কোহপি মধুরমুপগায়তি গীতম।
বিকিরতি কোহপি সদধি-নবনীতম্ ॥
কোহপি তনোতি মনোরথ-পূর্ত্তিম্।
পশ্যতি বোহপি সনাতন-মূর্তিম্ ॥৪॥১১৩०॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুণির ১ ২৮ সংখ্যক পদ।
১১৩০।১১৩১ সংখ্যক পদৰর নরহরি চক্রবর্তীর 'ভব্জিরন্ধাকর' গ্রন্থে (রামনারায়ণ বিভারত্বের সংস্করণ)
২৭৮ পৃঠার উদ্ধৃত হইরাছে! ২। ভ-র গ্রন্থ ব্যতীত
অহাত্য পুথিতে 'ঞ' নাই। ৩। 'কাপ্যুপনয়ডি'
ক; 'কোপ্যুপনয়ভি' প-র-সা।

निका

> — ৮। "পুল্র"মিত্যাদি। বশোদা উদারং
মহাস্তং পুলং অংশত প্রশ্বতবতী। বলব হতিং গোপসমাজ: অতিমোদা প্রকৃষ্টহর্ব: সমজনি জাতঃ।
কোহপি বিবিধমুপহারং উপনম্বতি সমাগত বিজাদিতাঃ
বিতরতি। কোহপি জনো বহুবারং হর্ষাতিরেকাং
বারং বারং নৃত্যাতি। কোহপি মধুরং গীতং উপগায়তি কোহপি দল্লা সহ নবনীতং বিকিরতি দল্পিনবনীতাদিকং ভূমৌ বিকীধ্য মঙ্গলমাচরতীতি ভাবঃ।
কোহপি মনোরপপুর্তিং বাঞ্ছিতপুরণং বাচকানামিতি
শেষং তনোতি বিদ্ধাতি কোহপি স্নাতন্মৃত্তিং
প্রকৃষ্ণং পক্ষে স্নাতনগোস্থামিনঃ আরাধ্যমূর্তিং
প্রকৃতি।

অহুবাদ

১—৮। বশোদা পুত্র-রত্ন প্রস্ব করিলেন;
গোপগণ আনন্দোৎফুল হইলেন। কেহ বিবিধ
উপহার আনয়ন ও কেহ বারখার নৃত্য করিতেছেন।
কেহ মধুর স্বরে গান করিতেছেন ও কেহ দধির
সহিত নবনীত ছড়াইতেছেন। কেহ (বাচকদিগের)
বাহ্নিত-পুরণ করিতেছেন; কেহ বা সনাতন-মূর্জিকে
দেখিতেছেন।

আশাৰরী।১

বিপ্র-বৃন্দমভূদলয়ভিং-গোধনৈরপি পূর্ণম্।
গায়নানপি মবিধান্ ব্রজনাথ তোষয় ভূর্ণম্॥
সূমুরদ্ভূত৽-স্থানারেছিলিঃ নন্দরাজ ওবায়ম্।
দেহি গোষ্ঠ-জনায় বাঞ্জিতমুৎসবোচিত-দায়ম্
॥ গ্রা

তাবকাত্মজ-বীক্ষণ-ক্ষণ-মন্দি মধিধ-চিত্তম্। যন্ন কৈরপি লব্ধমর্থিভিরেতদিচ্ছতি বিত্তম্ ॥ শ্রীসনাতন-চিত্ত-মানস-কেলি-নাল-মরালে। মাদৃশাং• রতিরত্র তিষ্ঠতু সর্ববদা তব বালে॥

পাঠাস্তর

101125021

টাকা

১—৮। "বিপ্রবৃক্ষ"মিত্যাদি। হে ব্রজনাথ ব্রজেশর নকা। বিপ্রবৃক্ষং ব্রাক্ষণসমূহঃ অলফার-গোধনৈঃ পূর্ণং পুরিতাভিলায়ঃ অভূৎ জাতঃ মধিধান্ মৎসদৃশান্ গায়নান্ গায়কান্ অপি তুর্ণং সম্বরং তোবয় য়য়াদিদানেন প্রীণয়। হে নক্ষরাজ। তব অয়ং হয়ঃ ক্ষরায় অভূতস্ক্রয়ঃ অপুর্বস্থাকঃ অজনি লাতবান্। অতঃ গোঠজনায় গোপজনায় বাঞ্ছিত-মতীয় উৎসবোচিত-ধনং দেহি। তাবক্স বংসম্বর্দ্ধিনঃ আয়য়য়য় বীক্ষণ-ক্ষপেন দর্শনানক্ষেন নক্ষতে মোদতে ইতি তথা মহিধানাং জনানাং তিত্তং মং কৈরপি আবিভিন্যিকে: ন লক্ষং প্রাপ্তং এতং এতাবং বিত্তং ধনং ইছেতি অভিলবতি অঞ্জনত্ত্রভিং ধনং কাজ্মতাতি ভাবং। প্রী: সনাতনী ষ্ক্র স্থা প্রক্রম্ভবিধ্ প্রাক্ষণ বিব্রং ধান নিসময়ালঃ নীলময়ালবৎ প্রীক্ষণঃ

ভদ্মিন্। পক্ষে শ্রীসনাতনক্ত গোলামিনঃ চিন্ধমেৰ মানসং মানসগরক্তম্মিলিতাদি শেবং পূর্ববং। তব অত্র বালকে মাদৃশাং ত্রিভাপকাতরালাং ইতি ভাবঃ রতিরহুরাগঃ সর্বাদ তিওঁতু স্থিরীভবতু।

অহবাদ

—৮। হে ব্রজেখর! বিপ্র-রুক্স অলছার ও গোধনে হ বারা পরিত্থ হইমাছেন; (এখন) মাদৃশ গায়কদিগকেও সত্তর সহত্ত ককন। হে নক্ষরাক্স! আপনার এই পুত্র অতি অপুর্ব্ধ সৌক্ষ্যাশালী জ্বাল্লান্ডন; আপনি গোপগণকে উৎসবোচিত অভীপ্ত ধন দান করন। আপনার পুত্র-দর্শনানক্ষাৎকুল্প মাদৃশ জনের চিত্ত, যাহা অত্যে পার নাই, এইক্রপ বিভ্রু কামনা করিতেছে। ক্রফাগত-চিত্ত বাক্তিগণের চিত্তক্রপ মানস-সরোবরের স্থনীল মরাল (অপর পক্ষে— দনাতন নামক গোস্থামার চিত্তক্রপ মানদের স্থনীল মরাল) আপনার এই বালকের প্রতি মাদৃশ জনের অনুরাগ সর্বাল অবিচলভাবে অবস্থান কর্মক।

ष्ट्रको ।>

🕨 জয় জয় ধ্বনি ব্রক্ত ভরিয়া রে। উপনন্দ **অভিনন্দ अनम नमन नमा** পঞ্চ ভাই নাচে বাহু তুলিয়া রে ॥ ধ্রু॥ ञ्चलवानि त्रांश नव যশোধর যশোদেব নাচে নাচে আনন্দে ভুলিয়া রে। नाटि दत्र नाटि दत्र नन्म मटक देवश दर्शान-इन्स হাতে লাঠি কাম্দে ভার করিয়া রে॥ সূতিকা-গৃহেতে धात्र ८थरन नाटि ८थरन शांग्र गित्रदम् वालक-मूथ द्हित्रम् द्व। দধি হ্রথা ভারে ভারে जनएत्र व्यवनो भएत्र কেহ শিরে ঢালে দধি ভুলিয়া রে॥ व्याउन भीदन भीदन লগুড় লইয়া করে नत्मत कननो नाट वत्रोग्रमाः वृष्त्रिः दत्र । অজকার•-ধ্বনি করি যত বৃদ্ধ গোপ নারী আশাধ করয়ে শিশু বেঢ়িরা রে।

নাচে গায় শত শত
ধেনু ধায় উচ্চ পুচ্ছ করিয়া রে।
ভোর হৈল গোপ সব অপরূপ নন্দেৎসব
এ দাস শিবাই নাচে ফিরিয়া রে॥

॥७॥५५७१॥

1191121001

পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা প্রথির ১৬৩ সংখ্যক পদ।

হা পঞ্চ ভাই' ছলে 'সবে মেলি'ক, ঝ, চ; 'পাঁচ
ভাই' হা ৩। 'ফিরফো' ক, ঝ। ৪। 'বরিমিনি'
ক, ঝ, চ, প-র-সা; 'বরীমনি' হা ৫। 'বুড়িমা'
হা ৬। 'জয়কার' ক, চ। ৭। 'বেড়িমা' ক।

स्भन्न 1>

স্বর্গে ছুন্দু ভি বাজে নাচে দেবগণ।
হির হরি হরি ধ্বনি ভরিল ভুবন ॥
ব্রহ্মা নাচে শিব নাচে আর নাচে ইন্দ্র।
গোকুলে গোয়ালা নাচে পাইয়া গোবিন্দ ॥
নন্দের মন্দিরে গোয়ালা আইল ধাইঞা।
হাতে লড়িং কান্ধে ভার নাচে থৈয়া থৈয়া।
দিধি ছুগ্ধ স্থুত ঘোল অঙ্গনে ঢালিয়া।
নাচে রে নাচে রে নন্দ গোবিন্দ পাইয়া॥
আনন্দ হইল বড় আনন্দ হইল।
এ দাস শিবাইর মন ভুলিয়া রহিল॥

পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬০১ সংথ্যক পদ। 'ঝুমর' ছলে 'তুড়ী' প-র-সা। ২। 'লাঠি' ক, থ, ছ,চ। ৩। 'থেইয়াথেইয়া' ছ,চ।

क्लानी।>

ষশোদা-নন্দন দেখি আনন্দে পূর্ণিত জাঁখি কৌভূকে নাচয়েং গোপ-রাণী। তৈল হরিদ্রা পায় সভে সভার অলে দেয় হলাহুলি দিয়া জন্ধ-ধননি॥ কেহো নাচে কেহো গায় কেহো নানা বাছ বায়
নন্দের আনন্দের নাহি সীমা।
উৎসব করয়ে রোলে ঘন ঘন হরি বোলে
কি কহিব যশোদার মহিমা॥
অধিল-ভূবন-পতি অনাথ জনার গতি॰
সকল দেবের শিরোমণি।
আজু শুভ দিন মোরে হৈলা প্রভু নন্দ-ঘরে
বড় ভাগ্যবতা নন্দ-রাণী ॥৮॥১১৩৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৬৩২ সংখ্যক পদ। ২। 'নাচে' ক। ৩। 'অধিল-ভূবন-পতি' ইত্যাদি কলিটি প-র-সা বাতীত অক্সাক্ত পুথিতে নাই, তং-ক্লে 'ইত্যাদি' শব্দ আছে।

वृध्व मर्था ।>

যোগমায়া ভগবতা দেবী পৌর্ণমাসী।
দেখিয়া যশোদা-পুক্ত নন্দ-গৃহে আসি।
সভে সাবধান করি যশোদারে কহে।
বহু পুণ্যে এ হেন বালক মিলেই ভোহে।
বহু আশার্বাদ কৈলা হর্মিড হৈয়া।
রূপ নির্থয়ে স্থাধ এক-দিঠে চাইয়া।
এ দাস শিবাই বলে অপরূপ হেরিই।
দেখিয়া বালক-ঠাম যান্ত বলিহারি।

পাঠান্তর

ISPOCICE

১। ইহা প-র-দা পূথির ১৬৩৩ সংখ্যক পদ। ২। 'মেন' প-র-দা। ৩। 'এ দাদ শিবাই' ইত্যাদি ভণিতার কলি প-র-দা ব্যতীত অঞ্চায় প্ৰিডে নাই।

আশোরারী।১

ব্রজরাজ-কোডর। গোকুল-উদয়গিরি-চাঁদ উলোর ॥ अ^३॥ কোটি ইন্দু জিনি মুখ তমু জলধর। একত্র উদয়ে আলো° করিয়াছে ঘর । मुथ नील-मरत्राक्षर विखू व्यथत । অরুণ-কমল শ্রুতি নয়ান ভ্রমর॥ করভ জিনিয়া কর রক্তপল্পবর। নীল ধরাধর উর⁸ নাভি সরোবর । সিংহের শাবক কটি অতি মনোহর। উলটি কদণী উরু দেখিতে স্থন্দর। ও থল°-কমল জিনি চরণ রাতুল। হেরিয়া উদ্ধব পত্ত চিত মন ভুল 🛚

পাঠান্তর

1100122001

11006611661

১। ইহা প-র সা পুথির ১৬৩3 সংখ্যক পদ। ২। প-র-সাব্যভীত অক্সাক্ত পুথিতে 'ঞ' নাই। ৩। 'আবল' ক, থ, খ, প-র-সা। ৪। 'উরু' क, थ, च, भ-द्र-मा। १। '६ धन' एटन 'डेबन' **१-द्र-मा** ।

অথ জীরাধিকায়া জন্মোৎসবঃ। তত্র শ্রীগোরচন্দ্র:।

গোরা-রূপে কি দিব তুলনা?। ভূলনাৰ নহিল যে ক্ষিল বান পো ॥ মেখের বিজুরা নহে রূপের উপাম। তুলনা নহিল রূপে চম্পকের দাম 🛭 कुलना नहिल अर्गः-८कडकीत प्रमा। তুলনা নহিল গোরোচনা নিরমল। कुक्रम किनिश वक्र-शक्ष मत्नारता। বাস্থ কৰে কি দিয়া গঢ়িল বিধি গোরা।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা প্রথির ৩৭৭ ও ১৬৪১ ও প-র পুথির ২I১ সংখ্যক পদ। ২। 'উপমা' क, খ, খ, চ। ৩। কৈষিল বান' স্বলে কৈসিদ কাঁচা' প-র। ৪। 'রূপের' প-র-সা; 'রূপে' প-র। ে। 'অব্দ-গরূপ ফ্লে 'রূপ অভি' প-র-সা, প-র।

> "গাও রে গৌবাস-গুণ গাও। গাইয়া দেখ কেমন জুড়াও ॥" ইত্যাদি পূর্ববাপরং গীয়তে।

कमाधि ।>

ভাদ্র-শুক্রাষ্ট্রমী তিথি বিশাখা নক্ষত্ৰ ভথি শ্রীমতার জনম সেই কালে। মধ্যদিন-গত রবি দেখিয়া বালিকা-ছবি **जग्न जग्न (पटे क्**पृट्टल ॥ প্রতি ঘরে প্রতি ঘরে° বৃষভাগু-রাজপুরে क्य ब्राट्स जीबाट्स ब्राट्स ट्वाटन । वाका देशा महास्थी ক্লার শ্রী-মুখ দেখি দান দেই ব্ৰাহ্মণ সকলে। নগরের যত নারী নানা দ্রব্য হস্তে করি আইলা সভে কীর্ত্তিদা'-মন্দিরে। दिनव देशना अमुकृतन व्यत्नक श्रुत्गात करन এ হেন বালিকা মিলেও ভোরে॥ এহোত শমুৰ নয় भारमञ्ज्ञ भरन दश्न लग्न कान इरल क्वा अनमिला। না করিছ সংশয় খনখাম দাস কয় कुछ-श्रिया मनय रहेना ॥>२॥>>७৮॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬৪৩ সংখ্যক পদ। २। 'भूरत्र' क, ब, ब, ह। ७। 'श्रुं वरत्र' इरन 'ब्राइ' क, थ, ब, ह। ८। 'हाल-पूर्य' क, थ, ब, চ। ৫। 'কৃতিকা' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'বেছ' প-র-সা। ৭। 'এহত' প-র-সা। ৮। 'বনরাম' প-র-সা।

व्याटमात्रात्री ।>

অর জয় ব্যভাপু-তনি।
অবনী উয়ল থির বিজুরী জিনি॥
অরণ অধর মুখ চন্দ্র জিনি।
উগারে অমিয়া তাহে ঈষত হাসনি॥
নয়নযুগল শ্রুতি অতি মনলোভা।
কর-পদতল এই অই পল্ল-শোভা॥
মুখ-ইন্দু গগুযুগ ভালে অর্ক্র চান্দে।
কর-পদ-নথে কত বিধু পড়ি কান্দে॥
কনক-মূণাল ভুজ নাভি সরোবর।
এ দাস উদ্ধব হেরি চিত্ত মনোহর॥

1120122021

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৪৪ সংখ্যক পদ। ২। 'জয়জার'হলে 'জয়' ক, খ, ঘ, চ। ৩। 'হেরিচিড'হলে 'কহে বিচিঅ' খ।

सूमन 12

বৃষ্ভাপু-পূরে আজুং আনন্দ বাধাই।
রত্মভাপু স্ভাপু নাচয়ে ভিন ভাই॥
দধি স্বত নবনীত গো-রস হলদি।
আনন্দে অজনে ঢালে নাহিক অবধি॥
গোপ গোপী নাচে গায় যায় গড়াগড়ি।
মুখরা নাচয়ে বুড়ী হাতে লৈয়া নড়ি॥
বৃষভাপু রাজা নাচে অন্তর্গ-উল্লাসে।
আনন্দ বাধাই গীভ গায় চারি পালে॥
লক্ষ লক্ষ গাবী বৎস অলম্ক্ত করি।
আক্ষেপে করমে দান অপেনা পাসরি॥

গায়ক নর্ত্তন ভাট করে উতরোল।
দেহ দেহ লেহ লেহ শুনি এহি বোল।
কন্মার বদন দেখি কীর্ত্তিদা জননা।
আনন্দে অবশ দেহ আপনা না জানি।
কত কত পূর্ণ-চন্দ্র জিনিয়া উদয়।
এ দাস উদ্ধব হেরি আনন্দ হৃদয়।

#>81>>8ep

ইভি জন্মলীলা।

তৃতীয়-শাখায়াং অফীদশ-পল্লবঃ।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুণির ১৬৪৬ সংখ্যক পদ। ২। 'আব্দি' ক, প-র-সা। ৩। 'আনন্দ' প-র-সা। ৪। 'ক্সভিকা' ক, চ, প-র-সা।

অথ বাৎদল্যং কৌমারকালোচিতং যথা।

बिरगीत्रहसः।

पृद्धी ।३

এক মুখে কি কহব গোরাচান্দের লীলা।
হামাগুড়ি যায় নানা রক্তে শচার বালাং।
লালে মুখ ঝর ঝর দেখিতে স্থানর।
পাকা বিসুফল জিনি স্থান্ত অধর।
অজদ বলয়া শোভে স্থান্ত যুগলে।
চরণে মগরা খাড়ু বাঘনধ গলে।
বোহদেব ঘোষ কহে নিছনি আপনা।

পাঠান্তর

12825821

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৪৮ সংখ্যক পদ। ২। 'হামাগুড়ি' ইত্যাদি পংক্তির স্থলে 'হামাগুড়ি দিরা নানা রকে করে থেলা॥' প-র-সা। ৩। 'মালে' ক, চ। ৪। 'কুক্তর' ক, খ, খ, চ। नाहिकां (यानावात ।)

নাচত মোহন নন্দ-ছলাল মেরো কান। নাগা-বিরাঞ্জিত মোতিম-ভূষণ किं मार्क चूत्रूक तमाल । युन्मत्र छेत्र भन्न वन्न त्रम्त्र-नथ-भन সরক্তর রতন-মঞ্চীর। নব নব বচছগ-পুচছ ধরি ধায়ত পতन व्यक्ति धृति • धृत्र व भदोत ॥ মরকত চান্দ মুক্রণ মুখ-মগুল পরিসর কুঞ্চিত অলক-হিলোল। ত্রজ-রমণী পরবেধধ করায়ত নয়ন ফিরায়ত আধ আধ বোল n অভিনৰ নীল জলদ জিনি তমুক্তচি কহিল নহিল রুপ্দ কিয়ে নিরুমাণ। কত কত ভকত যতন করি ধাতিত সবে চুড়ামণি দাসের এই নিবেদন 🛭 1121122851

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬৪৯ সংখ্যক পদ।

২। 'মোর' প-র-সা। ৩। 'যুক্সরক সান' প-র-সা।
'হলাল' শব্দের মিলে 'রসাল' শক্ষ বারা কলিটি শেষ
করার বুঝা বাইতেছে বে, প্রথম পংক্তির 'মেরো
কান' অংশটি গীতের আথর-ক্রপে প্রযুক্ত হইরাছে।
আধুনিক রীতি অমুসারে উহা বন্ধনী-চিক্লের মধ্যে
রাথার বোগ্য। ৪। 'বৎস' ক, ৫, ৫, ৮। ৫।
'অকলি' প-র-সা। 'অকুলি' পাঠে ভাল অর্থ হয়
না; বোধ হয়, 'অলনে' শুদ্ধ পাঠ হইবে। ৬।
'র্ণি' শক্ষ ও প্রথিতে নাই। ৭। 'মুথর' ও।
৮। 'রুপ' ও, চ, প-র-সা; 'রুপে' ক। ৯।
'বারঙ্গ ক।

বিভাব ৷১

বাল গোপাল রক্তে नम-तय मधार मटक হামাগুড়ি আঞ্চিনায় বেলায়। ভেজিয়া মাধন সরে তুলিয়া কমলঃ-করে মৃত্তিকা মনের স্থাে খায়॥ বলরাম তা দেখিয়া यत्भाना निकटि याग्राव किंशा छोडेए। वर्षे कथा। শুনি তবে যশোমতী আইলা তুরিত গভি भागान चारेष्ट्र मारि यथा॥ মায় দেখি মাটি ফেলে না খাই না খাই বোলে আধ আধ বদন ঢুলায়। मुथ नित्रथरप्र वानी ধরিয়া যুগল পাণি मन-कृत्थ करत्र शंग्र शंग्र ॥ এ খির নবনী সর কিবা নাহি মোর ঘর মৃত্তিকা খাইছ কিবা হুখে। পিতা যার ত্রপ্প-রাজ কি ভার এমন কাজ श्वित्ल रहेरव मरन दूर्थ ॥ এতেঁক বলিয়া রাণী क्रिंग कित्र नोममिन ছল-ছল ভেল তু নয়ান। এ উদ্ধব দাস গাঁতে যশোমতা হরষিতে অনিমিখে নেহারে বয়ান ১৩১১:৪৩১ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৫০ সংখ্যক পদ। ২। 'বেশ' ক। ৩। 'আলিনা' ক, চ। ৪। 'কোমল' ক। ৫। 'যাঞা' ক। ৬। 'নিরখিয়া' ক,খ।

তথা রাগ ৷১

বদন মেলিরা গোপাল রাণী পানে চার।
মুখ মাঝে অপরূপ দেখিবারে পার।
এ ভূমি আকাশ আদি চৌদ্দ ভূবন।
ফুরলোক নাগলোক নরলোকগণ।

অনস্ত ত্রক্ষাণ্ড গোলোক আদিং যত ধাম।
মুখের ভিতর সব দেখে নিরমাণ॥
শেষ মহেশ ত্রক্ষা আদি স্তুতি করে।
নন্দ যশোমতী আর মুখের ভিতরে॥
দেখি নন্দ ত্রজেখরী বচন না ক্ষুরে।
স্থপ্রপ্রায় কি দেখিলুঁ হেন মনে করে॥
নিজ-প্রেমে পরিপূর্ণ কিছুই না মানে।
আপন তনয় কৃষ্ণ প্রাণ মাত্র জানে॥
ডাকিয়া কহয়ে নন্দে আশ্চর্য্য বিধান।
পুত্রের মঙ্গল লাগি বিপ্রে করং দান॥
এ দাস উদ্ধবে কহে ত্রজেখরীর প্রেম।
কিছু না মিশায় প্রেন জাসুন্দ হেম॥

1181177881

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৫১ সংখ্যক পদ।
২। 'বোলোকাদি' ঘ। ৩। 'ব্ৰঞ্জেশ্বরীর' খ,
প-র-সা। ৪। 'করে' ক, খ, চ। ৫। 'ব্ৰঞ্জেশ ক, খ, ঘ, চ। ৬। 'না মিশার' হলে 'নাহি
সীমা' ক: 'না মিসরে' প-র-সা।

गिका

১৫—১৬। "এ দাস" ইত্যাদি। উদ্ধব দাস কহিতেছেন বে, ব্রজেশরী বশোদার প্রেম বেন (নির্মাণ) জাধুনদ-খর্ন,—উহাতে কিছুই মিশ্রিত হর না; অর্থাৎ আধুনদ-খর্নে বেমন মলিনতা মিলিতে পারে না, সেইরূপ বশোদার এই বাৎসল্য-প্রেমেও ঐশর্য্য প্রভৃতি অন্ত কোন ভাব মিশ্রিত হইতে পারে না; ওজ্জ্মতই নিজ্প পুত্রের ঐশর্য্য-দর্শন তাঁহার চিত্তে ক্লিক বিশ্বর ব্যতীত অন্ত কোন ভাব উৎপাদন করিতে পারে নাই।

বিভাৰ ৷১

কোলেভেং করিয়া রাণী নিরপয়ে মুখ। স্থাপর সায়রে ভূবে পাসরে সব ছখ। মায়ের কোলেতে গোপাল মুখ পসারিল।

এ ভব-সংসার সব তাহাতে দেখিল।

ই কি ই কি বলি রাণী হিয়ায় লইল।

স্থপন দেখিল কিবা ব্ঝিতে নারিল।

থুতু সুতু দেয় রাণী বসনের দশি।

দেখিয়া মায়ের রীত ও না মুখে হাসি।

ঘনশ্যাম দাস আশা করে এই মনে।

কবে বা সেবিব আমি ঘশোদা-চরণে।

101 >> 801

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-দাপুথির ১৬:২ সংখ্যক পদ। ২। 'কোলে' ক, খ, খ, চ। ৩। 'দেখিয়' ক, চ। ৪। 'ঘনরাম' খ, প-র-দা। ৫। 'য়ই' প-র-দা।

कलकरमा यथा।

ভাটিগারি ৷১ এক দিন মথুরা হৈতে ফল লৈয়া আচন্দিতে व्यादेना (म कन द्विवादा । ডাকে পুন পুন সেং कल (लंश कलर (लंश नामारेला नटमन क्रुग्रादन ॥ ব্ৰজ-শিশু শুনি তায় ফল কিনিবারে ধায় বেতন লইয়া পরতেকে। কিনি কিনি ফল খায় আনন্দিত হিয়ার প্সারি বেডিয়া একে একে ॥ ধাম্য লইয়া একাঞ্চলি শুনি কৃষ্ণ কুতৃহলী কর হৈতে পড়িতে পড়িতে। ফল দেও বলে হাসি পসারিত নিকটে আসি ধান্ত দিল ফলাহারী° হাতে॥

ধান্ত লৈয়া ফলাহারী পুন পুন মুধ ছেরি
নিমিষ তেজিল পসারিণী।
এ দান উদ্ধন কয় কছিলে কহিল নয়

जूवनत्मां**रन ज्ञ**ाथांनि ॥७॥>>৪७॥

পঠিক্তির

১। **ইহাপ-র-সাপ্**থির ১৬৫৩ সংখ্যক পদ। ২। 'লেহ' ক। ৩। 'পসার' **ছ**। ৪। 'ফল্ছারী' প-র-সা।

তথা রাপ ।>

ফল লেহ ফল লেহ ডাকে ফলাহারীং।
চুতে ধাতা শুধা করে আইলা ঞীহরি।
পসারে পেলিয়াও ধাতা ফল দেহ বোলে।
আনিমিখে পসারিণী সে মুখ নেহালে॥
নয়নে গলয়ে ধারা দেখি মুগখানি।
কার ঘরের শিশু ভূমিও যাইয়ে নিছনি॥
কোন পুণাবতী ভোমাও করিলেক কোলে।
কাহারে বলিয়া মা স্তন পান কৈলে॥
ঘনরাম দাসেও বোলে শুন পসারিণি।
ফলের সহিত কর জীবন নিছনি ৭॥১১৪৭॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬৫৪ সংখ্যক পদ।

१। 'ফলহারী' প-র-সা। ৩। 'শুধ'ক; 'হুধা'

१। ৪। 'ফেলিয়া' ক, ধ, ঘ, চ। ৫। 'ডোমার'
প-র-সা। ৬। 'ডোমার' প-র-সা। १। 'ঘনভাম দাসে' ক, ঘ, চ।

यरहें 13

ও মোর সোণার চাঁদ কি ভোর মায়ের নাম
কার ঘরে হৈশ উতপতি।
বছ কাল তপ করি কে পুজিলেং হরগৌরী
কোন পুণ্য কৈল সেই সতী।
ভোমারে করিয়া কোলে কত শত চুম্ব দিলে
নয়ানের জলে গেল ভাসি।
পাইয়া মনের মুখে স্তন দিল চান্দমুখে
মুঞি ষাই হব তার দাসী।

এত কহি ফলাহারী ফল দিল কর ভরি
প্রেম-ভরে গরগর চীত।
ক্ষাচন্দ্র ফল হাতে খাইতে পথে
আসি নিজ-গৃহে উপনীত॥
ফল দেখি যশোমতী আনন্দে না জানে কতি
সাওয়াইয়া প্রেম-স্থথে ভাসে।
ধতা সেই ফলাহারী ফলে পাইলদ নন্দহরি
কহে কিছু ঘনরাম দাসে ॥২॥১১৪৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র মাপুথি ১৮৫৫ সংখ্যক পদ।
২। পুলিল'ক। ১। কিলহারী প-র-মা। ৪।
'দেন'ক, চ। ৫! 'আসি নিজ-গৃতে' স্থলে 'নিজ-গৃতে হৈলা' প র-মা। ৬। 'ফলহারী' প-র-মা।
৭। 'ফল'ক, খ, প-র মা। ৮। 'খাইল'প-র-মা।
টিকা

১৫—১৬। "ধতা" ইত্যাদি। সেই ফল-বিক্রেজী ধতা; (কেন না) ফলের ৭, মানন্দ-নন্দন জীক্তফকে প্রাপ্ত হইলেন। (প্রীক্রফের দীলা অপার বলিয়া) ঘনরান দাস (যথা-সাধ্য) কিঞ্ছিৎ বর্ণনা করিতেছেন।

कृष्टिनी 13

ডালা হৈল রভনে পূরিত।
ফলাহারীং সবিশ্ময়-চিত্ত ॥
আপনা আপনি করে খেদ।
মনে মনে ভাবে নিংবেদ।৯॥১১৪৯॥

পাঠান্তব

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬১৬ সংখ্যক পদ। ২। 'ফলহারী'প-র-সা।

৩---৪। "আপনা আপনি" ইত্যাদি। ডালা রত্বপূর্ণ দেখিরা ফলবিফেত্রী আননদ প্রকাশ না করিয়া থেদ করার তাৎপর্য্য এই যে, তাঁহার তথন
মনে হইল—আমি কি হতভাগিনী! স্বয়ং ভগবান্কে
পাইরাও পাইলাম না; যদি তাঁহাকে চিনিতে
পারিতাম, তাহা হইলে ছার ধন-রত্ন না চাহিয়া
তাঁহার পদ-সেবা মাগিয়া লইতাম। উহা না করিতে
পারার তাঁহার মনে নির্কেদ-ভাব আসিল।

অথ কোমার-পোগণ্ড-কালোচিত-বাৎসল্যং যথা।

শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

মায়ুর।১

কিয়ে হাম পেখলুঁ কনক-পুতলিয়া।
শচীর আফিনায় নাচে ধূলি-ধূসরিয়া॥
চৌদিকে দিগন্থর বালকে বেঢ়িয়াই।
ভার মাঝে গোরাই নাচে হরি হরি বলিয়া॥
রাতৃল কমল-পদে ধায় বিজমণিয়া।
জননী শুনয়ে ভাল নূপুরের ধ্বনিয়াই।
বাহুদেব ঘোষে কহে শিশু-রস জানিয়া।
ধত্য নদিয়ার লোক নবন্থাপ ধনিয়া॥

পাঠান্তর

11006611061

১। 'মাউর' ঘ, চ। ২। 'বেড়িয়া' ঘ, চ। ৩। 'গৌর' ঘ। ৪। 'নুপ্রের ধ্বনিয়া' স্থলে 'নুপ্র-স্থধ্বনিয়া' ক।

তথা রাগ ।১

শচার আজিনায় নাচে বিশ্বস্তর রায়।
হাসি হাসি ফিরি ফিরি মায়েরে লুকায়।
বয়ানেং বসন দিয়া বোলে লুঁকাইলুঁ।
শচী বোলে বিশ্বস্তর আমি না দেখিলুঁ।

মাথের অঞ্চল ধরি চঞ্চল-চরণে।
নাচিয়া নাচিয়া যায় খঞ্জন-গমনে।
বাস্থদেব ঘোষে কছে অপরূপ শোভা।
শিশু-রূপ দেখি হয় জগ-মন-লোভা।
। ১১॥১১৫১॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৫৭ সংখ্যক পদ। ২। 'বদনে'প-র-সা।

মায়ুৰ (১

পঞ্চ-বরিখ-বয়সাকুত-মোহন ধাবমান পর-অঞ্চনা। পায়স পাণি উর্থলে মাখন খায়ত মিটায়ত বয়না ॥ দোলে দোলে মোহন গোপাল। প্রখরত চরণ-গতি মুখর কিন্ধিণি কটি (लाउँ न दलालाय वनमाल ॥ अ ॥ সোণায় বাদ্ধিলা ভাল রুক্ত-নথ উরে মাল পিঠে দোলে পাটকি থোপ। খেনে আলগছি দেই খেনে ভূমে গড়ি যাই থেনে পরসর খেনে কোপ। নন্দ স্থনন্দ যশোমতি রোহিণি আনন্দে স্থত-মুখ চায়। নয়ন-দৃগঞ্চল কাজরে রঞ্জিত হাসি হাসি বদন দেখায়। কুস্তলে রভন মণি ঝলমল⁸ দেখি। কুণ্ডলে উচ্ছল গণ্ড কালর আঁখি। ঘনরাম দাসে বোলে শুন নন্দরাণি। ত্রিজগত-নাথ নাচাও করে দিয়া ননী H 11202015

পঠিস্থির

>। ইহা প-র-সা পুলির ১৬৫৮ সংখ্যক পদ। এই পদটি লিপিকর-জ্ঞমে শ পুলিতে বর্জ্জিত হইরাছে। ২। 'আরত' ক। ৩। 'নধর' প-র-সা। ৪। 'ঝণমলি' প-র-সা। ৫। 'কাজবেরহ' প-র-সা।

বাটিকা।১

চপলহি নন্দ-নন্দনং মতি ভাওয়ে। বহুবিধ বালক সঞ্চ রঞ্চ অঙ্গ দোলাইয়া আওয়ে ॥ ধ্রু॥ হেরি হরধিত অতি রাণি যশোমতি বাছ পসারিয়া ধাওয়ে। কটি-ভটে কিন্ধিণি ত্মুকুর-রণরণি অরুণিত-চরণ নাচাওয়ে॥ এক ক**রে ল**বনি আর করে গায়স **८थलन मिश्रा याता ७८ग्नः।** গারতং আধ আধ কর বদনহি রহি রহি আধ আধ খাওয়ে ১০॥১১৫৩॥ পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৫৯ সংখ্যক পদ। ২। 'নন্দন'ক,খ, প-র-সা। ৩। 'চরণে'ক, খ।৪। 'বাচরে'ক; 'বাচওরে'খ। ৫। 'গিরড' ক,পর-সা।

মাযুর।১

ধাতু প্রবাল-দল নব গুঞ্জাফল
ব্রজ-বালক সজে সাজে।
কৃটিল কুন্তুল বেঢ়ি শমণি মুকুতা ঝুরি
কটিতটে খুকুর বাজে।
নাচত মোহন বাল গোপাল।
বরজ-বধ্ মেলি দেওই করতালি
বোলই ভালি রে ভাল।
নন্দ শ্বন্দ হত-মুখ চায়।
অরুণ দৃগঞ্চল কাজরে রঞ্জিত
হালি হালি দশন দেখায়।

বংশি কহই সব ব্রজ-রমণীগণ
আনন্দ-সায়রে ভাস।
হেরইতে পরশিতে লালন করইতে
স্তন-থিবে ভাগল বাস ॥১৪॥১১৫৪॥

পাঠাস্তর

)। देश প-त-मा পূ(चत्र ১৬৬० मश्त्राक श्रष्टा २। 'णूखत्र' व। ०। '(परें' क, প-त-मा। ८। 'मनम्प' थ।

বিভাব ৷১

হোর দেখ বাছার স্কৃতির কর্ডল আঁথি বিধির করণ এক ঠাম। বুঝিয়া সে মুনিরাজ আমার মনের সাধ গোপাল বলিয়া থুইল নাম। অতিশয় শিশু-মতি মন্দ মন্দং গভি किंग-७८ किंकिंगी वाटक । কম্ব-কণ্ঠ পরি মোতি°-মালবর লব্ভি রুকু-নথ সাজে॥ অনেক সাধ করি করে নবনিত ভরি দেয়লুঁ ভোজন লাগি। খিতিতলে ডারত সো নাহি খাওত ইহ মোর করম অভাগি ৷ মাত খদোমতি বংশি কহয়ে শুন (धार्शात हत्राण करत्रीण स्मर्गा। ভুবন-বি**মোহন** এ ভুয়া নন্দন পুণ-ফলে পাওই কেবা ॥১৫॥১১৫৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬৬১ সংখ্যক পদ।
২ 'মল মল' হলে 'চলে মল মল' প-র-সা। ৩।
'মোতিম' ক, চ; 'মোতি' প-র-সা। ৪। 'মাতা'
ক। ৫। 'বংশি' ইত্যাদি পংক্রির হলে 'বংশীবদ্ধ

ক্ষত্তে শুন ওতে যশোষতি প-র-সা। ভ। 'ক্রঙ' প-র-সা।

ভাটিরারি 15

खांन नार्ट (त नार्ट (तर नम-छुनान। চৌদিগে বেচুল ব্রজ্ব-রমণাগণ যশোমতি দেই করতাল।। রুতুর ঝুতুর ধ্বনি ঘাঁঘর কিফিণী গতি নট খঞ্জন-ভাতি⁸। হেরইতে অখিল-নয়ন মন ভূলয়ে ইহ নব-নীরদ-কাঁতি॥ করে করি মাখন দেই রমণিগণ খাওই নাচই রঙ্গে। পক্ষজ-স্থললিত ধ্বজ-বজ্ঞাকুশ-চরণ চালই কত ভঙ্গে। কুঞ্চিত কেশ বেশ দিগন্থর* কটি-তটে ঘুঙ্গুর সাঞ্চ। यः नि करहे किए জগ-জন-মঞ্চল শ্রবণে স্থধা সমণ বাজ ॥১৬॥১১৫৬॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৬২ সংখ্যক পদ।
২। 'নাচে রে নাচে রে' ফ্লে 'নাচ রে নাচ রে'
ক। ৩। 'ঘাঘর' ঘ, চ। ৪। 'ভাঁতি' ক, চ।
৫। 'ভূলরে' ক, খ; 'ভূলত' প-র-সা। ৬।
'নিগাঘর' ঘ, চ। ৭। 'হুধা সম' ফ্লে 'হুধামর'
প-র-সা।

পুনশ্চ দিনান্তরে।

মায়ুর 15

দধি-মন্থ-ধ্বনি শুনইতে নীলমণি আওল সজে বলরাম। বশোমতী হৈরি মুখ পাওল মরমে তুখ চুম্বয়ে চান্দ-বয়ান। কহে শুন যান্ত্ৰমণিং ट्यादित क्षित क्योद ननो খাইয়া নাচহ মোর আগে। নবনী-লোভিত হরি মায়ের বদন হেরি কর পাতি নবনীত মাগে॥ রাণা দিল পুরি কর খাইতে রঞ্জিমাধরু অতি সুশোভিত ভেল তায়⁸। খাইতে খাইতে নাচে কটিতে কিঙ্কিণী বাৰে হেরি হর্ষিত ভেল মায়॥ नम्म- जूलांग नात् जांग । ছাড়িল মন্থন°-দণ্ড উপলিল মহানন্দ সঘনে দেই করতালি। ধ্রা। গদ গদ কহে রাণী দেখ দেখ রোহিণি याद्या नाहिष्ड एम्थ भाता। রোহিণী আনন্দময় ঘনরাম দাসে কয় রুহু ভেল প্রেমে বিভোর ॥১৭॥১১৫৭॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ নর-সাপৃথির ১৬৬০ সংখ্যক পদ।
২। 'ষত্মিণি' ক। ৩। 'ৰঙ্কিমাধর' প-র-সা।
৪। 'রার' ক, খ। ৫। 'মথন' প-র-সা।
৬। 'স্বনেহ' প-র-সা। ৭। 'ৰাণী' প-র-সা।
৮। 'প্রেমেতে' প-র-সা।

পঠमঞ্জী ।>

নাচে রে নাচে কে মোর রাম দামোদর।
যত নাচ তত দিব ক্ষীর ননী সর ॥
আমি নাহি দেখি বাছা নাচ আর বার^২।
গলায় গাঁথিয়া দিব মণিময়° হার ॥
তাতা থৈয়া থৈ° বোলয়ে নন্দ-রাণী।
করতালি দিরা নাচে রাম যতুমণি ॥
রাম কামু রে মোর রাম° কামু।
মণিময় ঝুরি॰ মাথে ঝলমল তমু

ADPAD SON

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬১৪ সংখ্যক পদ।
২। 'নাচ আবে বার' ছলে 'নাচন তোমার' প-র-সা।
৩। 'গল্পমতি' প-র-সা। ৪। 'তাতা থৈয়া থৈ'
ছলে 'তাতা থৈয়া তাতা থৈয়া' প-র-সা। ৫।
'গুরে রাম' প-র-সা। ৬। 'ঝুলি' প-র-সা।

व्हिनी।

नव-नीव्रष-नील स्रुठान ७५। ঝলমল ও মুখ চান্দ জমু॥ শিরে কুঞ্চিত কুম্বল-বন্ধ ঝুটা। ভালে শোভিত গোময়-চিত্ৰ ফোঁটা ॥ অধরোজ্জ্বল রঙ্গিম বিস্থু জিনি°। গলে শোভিত মোতিম-হার মণি 🛭 ভুজ-লম্বিত অঙ্গদ মণ্ডনয়া । नथ · हट्यक ॰ गर्यत - विश्व धनग्रा ॥ হিয়ে হার রুরু-নথ রত্ন জড়। কটি কি কি পি ঘাঁঘর তাহে মড়া ॥ পদ - নৃপুর বঙ্করাজ হুলোভে । থল-পঞ্চজ-বিভ্রমে ভূক লোভে ॥ ব্ৰজ-বালক মাখন লেই করে। সভে**> খায়ত** দেয়ত শ্যাম-করে ॥ विश्रात नम्म-नम्मन এ छवरन। **भन-भिवक (मेव नृभि:१ ७८० ॥) २॥)) ४३॥** পাঠান্তর

)। देश প-त-मा পूबित ১७६८ मरश्यक शहारा प्रिकास सु, ह, ७। 'क्रिन' क, स, भ-त-मा। ८। 'हन्द' से। ७। 'त्राप्ता' क, स, ह, भ-त-मा। ८। 'हन्द' से। ७। 'त्राप्ता' क, स, ह, ह। १। 'राप्ता' क, 'सहा' भ-त-मा। ৮। 'भरह' स, ह। २। भरद' क।

ভটিয়ারী ৷১

নাচত মোহন নন্দ-ছুলাল। রক্ষিম চরণে মঞ্জির ঘন বাজ্ত কিঙ্কিণি তাহিঁ রদাল ॥ স্থল-পদ্ধজনণ জিনিয়া চরণতল অরুণ-কিরণ কিয়ে আভা। তাহার উপরে নথ-চান্দ স্থগোভিত্ত হেরইতে জগ-মন-লোভা মণি-অভরণ কভ অঙ্গহি ঝলকভ নাসায় মুকুতা কিবা' নোলে। মামামাবলি ठान्म-तमन जुलि नवोन (कांकिला (यन (वांदल ॥२०॥) ১৬०॥ ইতি তৃতায়-শাখায়াং উনবিংশতি-পল্লবঃ।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৬৬ সংথ্যক পদ। ২। 'শোভিতদেখি' ধ। ৩। 'ক্১' পর-সা। ৪। 'কোকিল'ক, ধ, ঘ, চ।

অথ বাৎসল্যরমঃ প্রকারান্তরং যথা। শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

ভাটিয়ারি 1>

গোৱা নাচে শটার ছ্লালিয়া।

চৈটিদিকে বালক মেলি সঙ্গে দেই করভালি

স্বিবোল হরিবোল বলিয়া ॥ গ্রু ॥

স্থান করিয়া মায় পরাইছে ধড়া গাছি আঁটি ॥

স্থান চাঁচর কেশ প্রলিভ তমু।

স্থান-মোহন বেশ স্কুক কাম-ধমু॥

রক্ত কাঞ্চন নানা অভরণ

আলে মনোহর সাজে।

রাভা-উভপল চরণ-যুগল

তুলিতে নূপুর বালে।

শচীর অক্সনে

নাচয়ে সম্বনে

বোলে আধ আধ বাণী। বাহ্নদেব ঘোষে বোলে ধর ধর কর কোলে গোরা মোরঃ পরাণের পরাণি॥ ॥১॥১১৬১॥

পঠিক্স

১। ইহাপ·র-সাপুৰির ১৬৮० সংখ্যক পদ। ২। 'চতুকা' চ। ৩। 'পরাঞাছে' ক। ৪। 'গোরা' ক।

ভথা রাগ।>

যমুনার জলে গেলা যশোদা বোছিণী।
শৃষ্ম ঘর পাঞা লুটে এ ক্ষার নবনী ।
পিঁ ড়ির উপর পিঁ ড়ি উদ্ধল দিয়া।
তমু ত শিকার ভাগু লাগি না পাইয়া॥
নড়িতে ছেদিয়া ভাগু হেটে পাতে মুখ।
হেনই সময় দেখে জননী সম্মুধ ॥
মায়ের শবদ শুনি যাহু ধন নাচে।
ধড়ার অঞ্চল দিয়া চাঁদ-মুখ মোছে॥
এমনে কেমনে গোপাল লুকাইবা আর।
তোমার বুক বাহিয়া পড়ে গো-রসের ধার॥
ঘনরামদাসে বোলে শুন যশোমতি।
মায়ারপে তোমার ঘরে অধিলের পতি॥

পাঠান্তর

12122621

১। ইহাপ-র-সাপুশির ১৬৮২ সংখ্যক পদ।
২। 'এ ক্ষীর নবনী' হলে 'ক্ষীর সর লনী' প-র-সা।
৩। 'ডলে' প-র-সা। ৪। 'হেনই সমর দেখে'
ছলে 'হেনই সমর হইলাগোপাল' ব। ৫। 'পিড
থড়ার' ব।

यहरे।

অরণ অধর উরে নবনী লাগিয়াছে রে
মরি মরি বাছনি কানাই।
হেরি যশোমতা প্রেমতে পূরিত আঁখি
আয় কোলে বলিহারি যাই।
করেণ মোছে অধর মিঠাইং।
আয়ুণ মোর বাছনি কানাই ॥৩॥১১৬৩।

পাঠান্তর

১। 'কর'ক, চ, প-র-সা। ২। 'মোছাই' ক; 'মোছই' থ। ও। 'আবে' ব,চ।

ঐীরাপ ।>

ত্ব বাহ্য পদারি আগে যায় নন্দরাণী। ধরিতে ধরিতে ধরা না দেয় নীলমণি । গুহে পড়ি গড়ি যায় দধি নবনীত। কোপ-নয়নে রাণী চাহে চারি ভীত॥ ट्रिक्ट देव नवनी-८ठावा विल शास्त्र धार । এ ঘর ও ঘর করি গোপাল লুকায়॥ নজি হাতে নন্দরাণী যায় খেদাজিয়া। অখিল-ভুবন-পতি যায় পালাইয়া। এ তিন ভুবনে যারে ভয় দিতে নারে। (म इति भागाका याग्र जननोत्र एति ॥ ৱাণীর কোল হইতে গোপাল গেলা পলাইয়া। আকুল হইলা রাণী গোপাল না দেখিয়া। घद्म घद्म উक्षिन मक्न शाकून। ভোমা না দেখিয়া প্রাণ হইল আকুল ॥ कांत्र घटन चाह रंगाशांन र्यान धाक पिथा। ভোমার মায়ের প্রাণ যায় বিদরিয়া 🛭 ঞ্জীদাম ডাকিয়া বোলে কানাই আমাদের• ঘরে। সভাকার প্রাণ গোপাল সুকাইল মান্তের ডবে।

ঘনরাম দাসে কহে পির কর মন। প্রেমের অধীন গোপাল পাবে দরশন॥

18:22581

পাঠান্তর

 ইছা পার-সা পথির ১৬৮৭ সংখ্যক পদ।
 পার-র-সা পুথিতে নিয়লিথিত কলি বারা পদটি আরম্ভ করা হইরাছে। যথা,—

"ৰন্ধন ছাড়িয়া দিয়া গোপাল নিল কোলে।
কোল হৈতে নামি গোপাল ধাইয়া চলিলে॥"
পদকরতক্ষ-গ্রন্থে বৈষ্ণবদান শ্রীক্ষেত্র বন্ধনলীলার
পদ সন্ধিবেশিত করেন নাই; বোধ হয়, সেই
জন্তই অসঙ্গতি-ভয়ে এই পদটির প্রথম ছই পংক্তি
পরিত্যাগ করিয়াছেন। পদাংশ-বর্জনের এইরূপ
দৃষ্টান্ত একান্ত বিরল নহে। ২। 'বোলে' ক, চ;
'বল' ঘ। ৩। 'আমার' ক, প-র সা। ৪। 'ঘনরাম দাসে' ইত্যাদি ভণিতার কলিটি কেবল ঘ
পুথিতেই দৃষ্ট হয়।

সিদ্ধুড়া।

আমি কিছু নাহি জানি ভাপিয়াছে ক্ষীর ননী
তোমারে সোধাই ইহার কথা।
না দেখি গোকুলচাক্দ কেমন করয়ে প্রাণ
বোল না গোপাল পাব কোথা॥
আমি কি এমন জানি কোলে লৈয়া যাত্মণি
বাছারে করাইছি স্তন পান।
মোরে বিধি বিভৃষিল উথলি গো-রস গেল
ভা দেখি ধরিতে নারি প্রাণ॥
ভূলিলাম রোহিণীর বোলে

গোপাল নামাঞা কোলে
সে কোপে কোপিত যাতুমণি।
কোপিত নয়ান-কোণে চাইয়াছিল আমা পানে
আমি কি এমন হবে জানি !

ভৌমরা করিছ খেলা

গোপাল আমার কোথা গেলা দঢ় করি বোল এক বোল। ঘনরাম দাসে কহে আকুল হইলা সভে রাখালের মাঝে উতরোল ॥१॥১১৬৫॥

शनभो ।>

कि विलिशा नम्मतानी হারাইয়াছ নীলম্পি কানাই বিনা না রাখিব হিয়া। ক্ষুধা বল্যা ভাইয়াং গেলা সেই হৈতে বৈয়াছে খেলা আম্বা বৈয়াছি মুখ চাঞা ॥ হেদে শ্রীদামের মা ক্ষন গো রোহিণি বা এ পথে দেখাছ গোপাল মোর। আর এক বিপরীত যাইতে না দেখি পথ কাল হৈল •য়ানের তে ব ॥ শ্নর্মিয়া শোক-নদী जाङ किलाईमा निधि বিধি ভাহে না দিলা সাঁভার। স্তন ফাটেও ক্ষীর-ভরে এ ত্ৰখ কহিব কাবে চलिया याहेट नाति व्यात ॥७॥১১८७॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৯০ সংখ্যক পদ। ২। 'ভাই' ক, চ; 'ভাষা' প-র-সা। ৩। 'ছটি' ক, খ, বু, চ, প-র-সা।

बाननी ।>

ঘরে ঘরে উকটিতে পদচিত্র দেখি পথে
সকলেণ-নয়ানে নেহারে।
আহা মরি হায় হায় মুঞ্ছিয়া পড়ে তায়
কান্দে পদচিত্র শৈয়া কোনে॥

সলিযার কিবা দোষ মায়েরে করাছ রোধ কোথা আছ বোল ডাক দিয়া। यि शिक मान दोष ক্ষেম ভাই সব দোষ যশোদা মায়ের মুখ চায়া।। শুনিয়া শ্রীদামের কথা মরমে পাইয়া বেথা তুরিতে আইলা নীলমণি। মরণ-শরীরে যেন পাইল পরাণ দান শুনিতেইং নুপুরের ধ্বনি॥ বসিলাও মায়ের কোলে गमगम वानी वादन অনেক সাধের যাত্রমণি। সব ধন সম্পদ সকল তোমার আগে চল যাই করিগা⁸ নিছনি ॥ ধরিয়া বলাইর হাতে - দাডাঞা মায়ের আগে নচিতে লাগিলা চুই ভাই। ঘনরাম দাসে কয় হইলা আনন্দময় গোপালের বলিছারি যাই ॥৭॥১১৬৭॥

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৮৯১ সংখ্যক পদ।
এই পদটি ক পুথি ও তদম্বাদী বটতলার মুদ্রিত
গ্রন্থে পূর্ব্ব-পদের শেষাংশরূপে লিখিত হইয়াছে।
অক্তাক্ত সকল পুথিতেই ইহা অতত্র পদ। ২।
ভিনিয়া ক, ঝ, অ, চ। ৩। 'বসিয়া ক, ঝ।
৪। 'করিয়ে' ক, প-র-সা।

পাঠান্তব

शाननी ।>

কত ভলী জান গোপাল নাচিতে নাচিতে।
অরুণ-কিরণ দেখিং চরণ তুলিতে॥
বাঘণ-নথ মণিহার হিয়ার মাঝে দোলে।
চরণে নৃপুর কিবা রুণু বৃন্ম বোলেং॥
গোপাল নাচিছে তুড়ি দিয়াং।
কোথা গেলা নক্ষরায় আনন্দ বহিয়া যার
দেখলিয়া নরান ভরিয়া॥

চিত্র বিচিত্র নাট চরণে চাঁদের হাট
চলে যেন খঞ্জনিয়া পাখী।
সাধ করিয়া মায় নৃপুর দিয়াছে পায়
পা খানি তুলিয়া নাচ দেখিও ॥৮॥১১৬৮।

তাত। থৈ থৈ তাতা থৈ থৈ বোলে নন্দরাণী। করতালি দিয়া নাচে রাম যাত্মশি॥

ইত্যাদি গেয়ম।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬৯৬ সংখ্যক পদ।
২। 'দিছে' ক, খ, খ, চ। ৩। 'ব্যাড্র' ক, খ,
খ, চ। ৪। অতঃপর প-র-সা পুথিতে নির্দিখিত
কলিশুলির ঘারা এই পদটি সমাপ্ত করা হইরাছে
যধা—

'হেন কালে নক্ষরায় আইল বাধান হৈতে।
কেমন নাচিলি বাপ নাচ আমার সাক্ষাতে।
গোঠে মাঠে বাইতে তোরে সঙ্গে করি নিব।
ফিঠ লনী হুগ্ধের সর নিতি খাইতে দিব॥
কেমনে নাচিলি বাছা নাচ আর বার।
তবে সে গঠিয়া দিব গলমতি হার॥'

ংগাপান' ইত্যাদি হলে প-র-সা পুরির
পাঠ বর্ধা—'দেশ্বসিরা রামের মা গোপান' ইত্যাদি;
প-র-সা পুরিতে 'দেশ্ব সিরা' ইত্যাদি পরবর্ত্তী
কলিগুলি হৃতত্ত্ব (১৯৯৫ সংখ্যক) পদরূপে লিখিত
হুইরাছে। ৬। অতঃপর প-র-সা পুরিতে নিয়লিখিত ভণিতার কলিটি দৃই হর, বর্ধা—
'বাছ-পদ-ভিক্ত তার
পৃথক পড়িরা বার

ধ্বৰ-বজাত্ব তাহে সাজে।
বাদবেজ দাসে কর নাটুরা গোবিক রার
প্রেমভরে অধিক বিরাজে ।

व्यथ (गार्का के मी-यांवा।

अभरमगीत्रहः।

जूशानी ।>

গোরাজ-চান্দের মনে কি ভাব উঠিল।
পুরুব-চরিত্র বুঝি মনেতে পড়িল ।
গোরীদাস-মুখ হেরি উলসিত হিয়াই।
আনহ ছান্দন ডুরি বোলে ডাক দিয়া ॥
আজি শুভ দিন চল গোঠেরে যাইব।
আজি হৈতে গো-দোহন আরম্ভ করিব ॥
ধবলী সাঙলী কোথা শ্রীদাম স্থদাম।
দোহনের ভাগু মোর হাতে দেহ রাম ॥
ভাবাবেশে বেয়াকুল শচীর নন্দন।
নিত্যানন্দ আসি কোলে করে সেই ক্ষণ॥
চৈতন্দ্রদাসেতে বলে ছান্দনের দড়িই।
হারাইল গৌরীদাস গোপী কৈল চুরি ॥

1696616

পাঠাক্ত

)। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭০০ সংখ্যক পদ। ২। 'হয়া'খ। ৩। 'ডুরি'প-র-সা।

ভাটিয়ারি ৷১

নন্দের মন্দিরে আজু বড়ই আনন্দ।
রাম-কৃষ্ণ-হাতে দিব গোদোহন-ভাও।
প্রভাতে উঠিয়া নন্দ লৈয়া গোপগণ।
পাত্র মিত্র সহিতে বসিলা সভা-জন।
বড় করি বড়েক আন্ধান মুনিগণে।
আনাইলা নন্দ্রোর করি নিমন্ত্রণে।
বাম কৃষ্ণ বন্দ্রিকান মুনির চরণে।
মুনিগণে করে শুন নন্দ মহামতি।
আজি শুভ দির হন্ধ শুক্লাকীনী তিপি।

পুত্র-হত্তে দেহ গোলোহন-ভাও আৰ।
গোষ্ঠপুত্রা মহোৎসব কর মহারাজ।
পাইয়া মুনির আজ্ঞা নন্দ মহালর।
মহামহোৎসবে করে আনন্দ অদর।
চৈডগুলাসের মনে পরম উলাস।
দেখিব নয়নে গাবীং-দোহন বিলাস।

100122901

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭•১ সংখ্যক পদ। ২। 'গাজী'প-র-সা।

जरकरती ।>

ডাকিয়া তখন নিজ প্ৰজাগৰ

আজ্ঞা দিল ত্রগ-রাজ।

বস্ত্ৰ অলকার

নানা উপহান্ত

করহ গোষ্ঠের সাজ।

শুনি গোপী বত

আনন্দিত-চিত

যৌতুক থালীতে ভরি।

नटन्मत्र छवटन किना पत्रणटन

দিব্য বাস ভূষা পরি॥

नरमत्र गृहिगी

यटनामा, द्रांशि

अञ्चा किनियानि भएन।

হরিদ্রা কুকুম

গন্ধ উত্বৰ্তন

দিলা রাম-ক্রয়্য-অকে।

স্বাগিত জলে

ধান্য দূৰ্ববাদলে

স্নান সমাপন করি।

প্ৰিয়া বসন

মণি-অভয়ণ

গোষ্ঠেতে চলিলা হরি ৷

নন্দ মহামতি

মৃনির সংহতি

সভাসদ-গণে লৈয়া।

নানা বাত্য বাজে

मक्रम स्माटन

(शार्ष्ठ व्यदिनिमां बांवन ।

1175117741

যশোদা রোহিণী (गांशिनी मिनी মঙ্গল-দ্রব্য সহিতে। নানা উপহারে বস্ত্র অলঙ্কারে গোষ্ঠে হৈলা উপনীতে मिया व्यामिश्रान অগোরঃ চন্দনে স্থান কৈলা পরিষ্ণার। দিব্য চন্দ্রাভপ নিবারি আতপ উপরে বান্ধিল তার॥ शांभिल कमली জল ঘট ভরি সহিত থামের দল। রত্ন-পীঠোপরি বৈলে রাম হরি হৈল মহা কোলাহল ॥ স্বর্ণ-সূত্রেণ করি ছান্দনের ভুরি রত্নের দোহন-ভাগ্ত। মুনি-আজ্ঞামতে রাম-কৃষ্ণ-হাতে वानत्म पिटलन नम ॥ বেদ পাঠ করি ব্ৰাহ্মণ সকলি करत्र व्यागीर्वतान-ध्वनि । নৰ্ত্তক গায়ক **छो**षि याठक শব্দ চতুর্দ্দিকে শুনি 🛦 স্বর্গে স্থরগণ পুষ্প বরিষণ করিয়া হথেতে ভাসে। ত্রিভুবন ভরি আনন্দ সভারি करात्र टेव्डिग्रमात्म ॥>>॥>>१>॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭০২ সংখ্যক পদ।
'অরজয়তী' ফলে 'আহিরী' প-র-সা।২। 'কিলঘাদি'
প-র-সা। ৩। 'সভাসভগণে' ব, চ।৪। 'আন্তর্জ'
ব। ৫। 'গিড়ি পরি' প-র-সা। ৩। 'হাল'
প-র-সা।

छथा जात्र ।>

তবে নন্দ শীত্র আনাইলা ছুই গাই।
ধবলা সাঞ্জলা বংসং সহিত তথাই ॥
স্বর্গি-সন্ততি সেই মহা গ্রুমবর্জী।
স্বর্গাস্থা পূর নবীন যুবজী ॥
ছুই গাই ছুই ভাই ছান্দনে ছান্দিয়া।
দোহন করিলা গাবী আনন্দিত হৈয়া ॥
দোহনকরিলা গুই ভাশু ক্লেণেকে পুরিল।
প্রথম দোহন ছুগ্ধ আক্লণেরে দিল ॥
তৈতেলাসেতে কহে গাবীর দোহন।
দেখি ব্রজ-বাদিগণের জুড়াইল মন॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭০৩ সংখ্যক পর। 'তথা রাগ' স্থলে 'আহিরী' প-র-সা। ২। 'বছ' প-র-সা। ৩। 'হুই' প-র-সা। ৪। 'ক্ষেণেকে' ই।

छथा द्रांग ।>

আইলা সকলে নদের মহলে नम जानमि छ-मन। প্রথমে পৃজিল ভ্ৰাহ্মণ সকল **मिट्नन व्यानक थन ॥** হ্বৰ্ণ র**জ**ত গাৰী ৰৎস কড नकाधिक পরিমাণ। मिक्ना महिं অলমার যত बाचारण कत्ररय मान । खद्वीमि बानक নৰ্ত্তক গায়ক গোধনে ভূষিল সভে। করাইং জোজন নানা মিফ্ট-অন विषात्र कत्रिमा छट्य । স্থাগণ বাস কুঞ্চ বলরাম

করিল ভোজন-কেলি।

নন্দ যশোমতী করিল আর্ডি
গোপ-গোপীগণ মেলি ॥

খন্য ব্রক্ত জন খন্য সে বোক্লপুর ।

খন্য গাবীগণ যম্নী-পুলিন
এ দাস তৈতন্ত ফুর ॥১৩৪১১৭৩৪

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭০৪ সংখ্যক পদ। 'ডথারাগ' হুলে 'আহিরী' প-র-সা। ২। 'করাইল' ক। ৩। 'সাথ' খ'; 'রাম' প-র-সা।

অথ বৎসচারণাদি। ভত্নচিত-শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

ভাটিয়ারী ৷>

ভালিরে নাচে বে^২ মোর শচার তুলাল।

চঞ্চল বালক মেলি সুরধুনা-তারে কেলি

হরিবোল দিয়া কর-তাল।

কুটিল কুন্তল শিরে বদনে অমিয়া করে

রূপ জিনি সোণা শতবান।

বতন করিয়া মায় ধড়া পরাইছে ভায়

কাজরে উজোর তুনরান।

ভূজে শোভে ভাড় বালা গলে মুকুভার মালা

কর-পদ কোকনদ জিনি।

সভে কহে মরি মরি সাগরে কামনা করি

বেন স্ভুভ পাইল শচী রাণী ১১৪।১১৭৪॥

পাঠান্তর

)। देहा भन्त्र-मा भूषित्र ১१०८ मश्याक भव। १। 'मारह (ब' क, थ, ठ, भन्त-मा। शनन ।>

ও গোই মা আজি আমি চরাব বাছর। পরাইয়া দেহ ধড়া মন্ত্ৰ পড়ি বান্ধ চূড়া চরণেতে পরাহ নুপুর॥ অলকা ভিলক ভালে বন-মালা দেহ গলে শিকা বেত্র শেণু দেহ হাতে। ञीनांग इनांग नांग 💌 স্থবলাদি বলরাম সভাই দাঁড়াইয়া রাজপণে॥ বিশাল অৰ্জ্জুন জান কিন্ধিণী অংশুমান मानिया मजारे गार्क यात्र। গোপালের কথা শুনি সজল-নয়নে রাণী অচেতনে ধরণী লোটায়॥ চঞ্চল বাছুরি সনে (कमरन धारेबा बरन কোমল হুখানি রাজা পায়। विश्रमाम रचार्य वर्ण এ वग्रम गार्क रगरन প্রাণ কি ধরিতে পারে মায় ॥১৫॥১১৭৫॥ পাঠান্তর

ী । ইহাপ-র-সাপুথির ১৭০৬ সংখ্যক পদ ২। 'আবগো'ক। ৩। 'কমল'খ, খ,প-র-সা।

क्र । हे ब्र

গোপাল নাকি যাবে দুর-বনে।
তবে আমি না জাব পরাণে ॥ এল ই
দ্বি-মন্থন-কালে সন্মুখে বসিয়া খেলে
আজিনার বাহির হৈয়া
যদি গোপাল খেলে গিয়া
তবে প্রাণ ধরিতে না পারি ॥
গোপাল যাবে বাখানে কি শুনিলাম এবণে
যাত্ব মোর নয়ানের তারা।
কোবে থাকিতে কত চমকি চমকি উঠি ।
নয়ান-নিমিধে হই হারা ॥

গোপাল আমার পরাণ-পুতলী। ভোমারে সোঁপিয়া রাম কিছুই সন্দেহ নাইদ তমু প্রাণ করয়ে ব্যাকুলিশ ॥১৬॥১১৭৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭০৭ সংখ্যক পদ।

২। প-র-সা ব্যতীত অক্সাক্ত পুথিতে 'এ' নাই।

৩। 'নাই' চ। ৪। 'রাঞা' ক; 'বাইরা' চ,
প-র-সা। ৫। 'বাবে বাথানে' হুলে 'বাইবে বনে'
প-র-সা। ৬। 'ভনি রে' প-র-সা। ৭। 'উঠে'

ব। ৮। 'ক্ছিই সন্দেহ নাই' হুলে 'কিছু ভর
নাহি চিতে' প-র-সা। ৯। 'বিকৃলি' ক, থ,
প-র-সা।

ভাটিমারি ৷১

বলরাম ভূমি নাকি আমার প্রাণ লৈয়া বনে বাইছ। বারে চিয়াইয়া ত্ত্ব পিয়াইতে নারি তারে তুমি গোঠেরে° সাজাইছ ॥ বসন ধরিয়া হাতে ফিরে গোপাল সাথে সাথে पट्छ पट्छ प्रम वात्र थात्र । এ হেন ছুধের ছাওয়াল वटमदत्र विकास किया रिएटव मजिरव वृक्षि मांत्र ॥ কড জন্ম ভাগা করি व्यात्राधियां इत्रत्रीवी তাহে পাইলাম এ ছঃখ-পাসরা। **टक्मटन देश्ब्रक श**दव মায় কি বলিতে পারে বলে বাউক এ ত্রহা - কোভরা। शंखतात्म शंखतात्म (थरम বরে বাইতে পথ ভূলে

श्रुं हों हों अपूर्य मित्रा काटमा।

বাপনা বাপনি পড়ে কালে।

ष्ठ्ठत्रत्वे मार्ग त्वज्

পাউলাইয়া কটি-থড়া

শ্রীদাম স্থদাম দাম স্থবল আদি বলরা।
শুন তোমার যতেক রাখাল।
বংশীবদনের বাণী কান্দি কছে নন্দরাই
আছু রাখি যাও বে গোপাল ॥১৭॥১১৭॥

পাঠকৈর

১। ইহাপ-র-সা পুথির ১৭০৮ সংখ্যক প্র ২। বিলরাম রে' প-র-সা। ৩। পরাণ ক, চ 'রোপাল' প-র-সা। ৪। 'রোঠে' প-র-সা। ৫ 'হর্ম' প-র-সা। ৬। 'বনে' ক। ৭। 'রুরি প-র-সা। ৮। 'কত জন্ম' ছলে 'জনম' ক, ধ, ব চ। ৯। 'হুম' ক, চ। ১০। 'ছাওয়ালে ইত্যাদি অভি হুল্বর কলি ছুইটি কেবল প-র-সা পুথিতেই দুই হয়। উহাদিগের পরিবর্জে ব পুথিতে নিম্নলিধিত প্রক্রিপ্ত-লক্ষণাক্রান্ত কলিটি দুই হয়,

'ব্দল থাইতে গিয়াছিল আনলে বেটিয়াছিল ছই হাতে আনল ধরি পিরে। নন্দের ভাগাবলে যশোদার পুণাফলে ভেঞি সে গোপাল মোর ব্লিষে॥'

छवा प्रांत्र 1>

নন্দরাণি গো মনে না ভাবিছ কিছু ভরং।
বেলি-অবসান কালে সোণাল আনিয়া দিব
তোর আগে কহিলুঁ নিশ্চর ॥এ॥।
সোণি দেহ মোর হাতে আমি লৈরা বাব সাথে
যাচিয়াণ খাওয়াব খীর ননী।
আমরাণ জীবন হৈতে অধিক জানিয়ে গো
জীবনের জীবন নীগমণি ॥
সকালে আনিব ধেতু বাজাইবণ শিলা বেণু
গোচারণ শিখাইব ভাইরেরেণ।
গোণ-কুলে উত্তপতি গোধন-চারণণ বৃধি
বিসাধা খাকিতে নাইণ্ খরে ॥

শুনিয়া বলাইর কথা মরমে পাইয়া বেথা ধারা বহে জারুণ নয়ানে। এ দাস শিবাই বোলে রাণী ভাসে প্রেম-জলে হেরইতে কানাইর বয়ানে ॥১৮॥১১৭৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭০৯ সংখ্যক পদ।
। 'না ভাবিহ' ইত্যাদি স্থলে 'কিছু না ভাবিহ ভর'ক। ৩। কেবল প-র-সা পুৰিতে 'শু' আছে। ৪। 'বাচার্যা' স, চ। ৫। 'আমার' ক। ৬। 'বাজাইরা' ক, খ,। १। 'ভাইরারে' প-র-সা। ৮। 'চরশে' প-র-সা। ৯। 'নাহি' ক, খ।

মারুর ।>

কান্দিয়া সাজায় নন্দরাণী।
হৈরি হলধর পানে ধারা বহে তুনয়নে
মুখে না নিঃসরে কিছু বাণী ॥ প্রুং ॥
অলকা ভিলক দিতে মুখ ঘামে আচ্থিতে
দেখিয়া বিভোর যশোমতী।
নারিলেণ পাঠাইতে বনে দেখিয়া সে মুখ পানে
শিশুগণে করয়ে মিনভি ॥
তান-কীরে আঁখি-নীরে বসন ভিজিয়া পড়ে
বেশ বনাইতেং কাঁপে কর।
কান্দি গদগদ কহে আজি রাখি যাহ সভে
শৃশ্য না করিছ মোর ঘর ॥১৯॥১১৭৯॥

পাঠান্তর

ইহা প-র-সা পুৰির ১৭১০ সংখ্যক গদ।
 বেবল পু-র-সা পুরিতে 'ঞ' আছে। ০।
 'নারিব' প-র-সা। ৪। 'বানাইতে' প-র-সা।

नामान ।>

ব্দতরণ পরাইতে ব্দতরণের শোভা। প্রতি-বৃদ্ধ চুখইতে মুদেং হয় লোভা। বান্ধিতে বিনোদ চূড়া নির্ম্বিতে কেল।
আঁথিযুগ ঝরঝর না হইল বেল।
পরাইতে নারে রাণী রক্ষ পীত ধড়া।
ক্ষীণ মাজাও দেখি ভয়ে ভালি পড়ে পারা।
পরাইতে নূপুর কমল সে চরণ।
নারিলুঁ বিদায় দিতে কহে ঘন ঘন।
স্তন-ক্ষীরে ভিজিল রাণীর সব বাস।
নিছনি লইয়া মরু ঘনরামদাস॥২০॥১১৮০॥

পাঠান্তর

)। ইको প-র-সাপুখির ১৭১১ সংখ্যক প্র। ২। 'মন'ব,চ। ৩। 'মাঝ'ব।

श्रीवात्र १३

গোপালেই সাজাইতে নক্ষরাণী না পারিল।

যতনে কানাই-চূড়া বলাই বান্ধিল।

আবদে কুগুল দোলে গলে গুঞ্জাহারই ।

পীত ধড়া আঁটিয়া পরায় কটি-তটে।

বেত্র মুরলা হাতে শিলা দোলে পিঠে।

ললাটে তিলক দিল শ্রীদাম আসিয়া।

নুপুর পরায় রালা চরণ ধরিয়াই।

ঘনরাম দাসে বোলে কান্দিতে কান্দিতে।

অমনি রহিল রাণী বদন ছেরিতে।

পাঠান্তর

142122621

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৭১২ সংখ্যক পৰ। ২। 'গোপালকে' প-র-সা। ৩। 'ঋণব্যুর' ক, খ। ৪। 'ধ্রিরা' প-র-সা।

19家 15

বিশিনং গমন দেখি হৈয়া সকরুণ আঁথি কান্দিতে কান্দিতে নান্দিতে নন্দরাগী।

গোপালেরে কোলে লৈয়া প্রতি-অঞ্চে হাত দিয়া রক্ষা-মন্ত্র পড়য়ে° আপনি ॥ এ ছখানি রাজা পায় ত্রক্ষা রাখিবেন তায় জাতু রকা করু দেবগণ। কটিভট স্থল্ঠর রকা করু যভেরগর कपग्र जार्थन नाजाग्रण ॥ ভুজযুগ নথাঙ্গুলি রক্ষা করু বনমালী क्री' मूथ ब्राथ् ि मिनमि। - মস্তক রাথুন শিব পৃষ্ঠদেশ হয়গ্রীব অধ উর্জ রাখু চক্রপাণি॥ कलि कलि शिवि वतन রাখিবেন জনাদ্দনে मण मिट्रा मण मिकशाल। খত শত্ৰু হউ শিত্ৰ রকা করু সর্ববত্র নহে ভূমি হও তার কাল। এই সব মন্ত্ৰ পড়ি প্রতি-অক্টে হস্ত ধরি शामरप्रत्र रकाँ है। खाल मिन। मन्द्रशेषी প্রেমময় এ দাস মাধ্ব কয় বলরামের ১০ হাতে সমর্পিল ॥ **ルタイルンントイル**

পাঠাত্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৭১০ সংখ্যক পদ।
২। 'বিপিনে' প-র-সা। ৩। 'পঢ়রে' খ। ৪।
'আপুনি' থ, চ। ৫। 'কঠ' ক, খ। ৬। 'রাখ'
ড়; 'রাখুক' প-র-সা। ৭। 'রাখুন' ক। ৮।
'কল' ক। ৯। 'হঙ্গপ-র-সা। ১০। 'বলরামে'
ড়, খ, খ, চ।

তথাহি শ্লোক:।

শৃণু বল মম বাক্যং বালকানাং বলী সং গিরি-বন-জল-মধ্যে রক্ষ কৃষ্ণং মদীরং। ইতি বল-জর-যুগো কৃষ্ণ-পাণিং নিধার নমন-প্রতিভ-ধারা নক্ষ-জারা প্রতাত ।

कारमाप 13

প্রণতি করিয়া মায় 'চলিলা যাদব রায় আগে পাছে ধায় শিশুগণ। घन वांद्य भिष्मा दव्य गंगरन दंशा-भूत-दिव् শুনি সভার হর্ষিত মন॥ আগে আগে বৎসপাল পাছে ধায় ত্রজ-বাল হৈ হৈ শবদ ঘন ব্লোল । मक्रिए (म वनदाम মধ্যে নাচি যায় স্থাম ব্রজ-বাসী হেরিয়া বিভোর ॥ নবীন রাখাল সব আবা আবা কলরব শিরে চূড়া নটবর-বেশ। আসিয়া যমুনা-ভারে নানা রক্তে খেলা করে কত কত কোতুক বিশেষ॥ (करश यांग्र व्रय-ছाटम কেহো কারো চড়ে কান্ধে কেছো নাচে কেছো গান গায়। এ দাস মাধব বলে কি শোভা যমুনা-কুলে

পঠিস্বির

150122201

রাম কানাই আনন্দে খেলায় ৷

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭১৫ সংখ্যক পদ।
প-র-সা পুথিতে 'শূবু' ইত্যাদি সংস্কৃত শ্লোকটিকে
অতম্র (১৭১৪ সংখ্যক) পদরপে গণনা করা হইরাছে। ২। 'শুনি সভার' হলে 'শ্লুরুদর' ক, ধ;
'শ্লুবলের প-র-সা। ৩। 'বোল' ধ। ৪। বিভোল'
ধ, চ; 'বিহেবাল' প-র-সা। ৫। 'কার' ক।

ভাটিয়ারি ৷>

সকল রাধান মেলি ধেলা আরম্ভিন। রাম কানাই ছুই-ভাই ছু দিলে দাঁড়াইলং। শ্রীদামে কানাইয়ে ধেলা বলাইয়েং ক্রলে। শ্রেই মত আর সব শিশুস্থে ব্যেক্তি কানাই হারিয়া কাকে করয়ে জ্রীদানে ।
হবল হারিয়া কাকে করে বলরানে ।
বংশীবটের তলে রাখিবারে যায় ।
হেরি সব শিশুগণে শিলা বেণু বায় ।
জ্রীদান কানাইর কাকে হইতে নামিল।
আবা আবা রব দিয়া নাচিতে লাগিল ॥
এ দাস মাধব বলে অপরূপ নহে।
প্রেমের অধীন কানাই সাধু লোকে কহে ॥

পাঠান্তর

1281726811

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭১৬ সংথাক পদ।
২। 'গুদিগো দীড়াইল' ফ্লে 'গুই দিগে হইল' প-র-সা। ৩। 'বলাই' ক, চ,প-র-সা। ৪। 'শীদাম' ছ। ৫। 'বলরাম' ছ। ৬। 'কানাই' ক, ধ, ছ, চ।

महिल 12

নিরমল যমুনা-জল মাহা খেরই আপন আপন তমু-ছাহ^২। নয়ন করি বঙ্কিম দশনহি অধর কোপ করয়ে পুন ভাহ॰॥ রলঃ করি রহতহিঁ খেণে ভিরিভঙ্গ (थरन (थरन (वनू वाकांग्र। होलन (परे उपरि থেণে ভক্লবর ब्रिक्टिक हर्न (मानाय ॥ विष्यंदे नम-जूनान । গলে গুঞ্চাবলি শৃক মুরলি করে **(होमिट्श विक्र अक्ष वाम ॥२०॥>>৮०॥** ইভি তৃতীয়-শাধায়াং বিংশভিপন্নব:। পঠিবির

১। ইহা প-ম-সা পুৰির ১৭১৭ সংখ্যক পৰ।

२। 'हाद' क, ब, इ, भ-त्र-मा। ७। 'कार' क,

খ, চ, প-র-সা। ৪ বিজিশ ক, খ। ৫ । কির-ডিচি কা ৬ । বিজিম প-র-সা। ৭ । বিহরজে ক, খ।

অথ সখ্যরসঃ গোঠ-গ্যনং যথা।
শ্রীগোনচক্রঃ।

ৰেলোয়াৰ 15

আজু রে গৌরাঙ্গের মনে কি ভাব উঠিল।
ধবলী সাঙ্গা বিল সঘনে ডাকিলং ॥
শিক্ষা বেণু মুরলা করিয়া জয়-দ্বনি।
হৈ হৈ বলিয়া গোরা ফিরায় পাঁচনা ॥
রামাই ফুন্দরানন্দ সঙ্গের নিত্যানন্দ।
গৌরীদাস অভিরাম সভারং আনন্দ।
বাহ্নদেব ঘোষ কহে মনের হরিষেং।
গোষ্ঠলীলা গোরাচাঁদেং করিলা প্রকাশেণ।
॥১৯১১৮৬॥

পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা প্রথির ১৭১৮ সংখ্যক পদ।
২। 'হাকিল' প-র-সা। ৩। 'অভিরাম সভার'
স্থলে 'অভিরামের বাঢ়িল' ছ। ৪। 'মনের হরিবে'
স্থলে 'মনে করি আন্ন' প-র-সা। ৫। 'মহাপ্রাফু'
প-র-সা। ৬। 'প্রকাশ' প-র-সা।

कुणानो ।>

নীল পীত ধড়া নন্দ পরায় আপনি।
চন্দন-তিলক দেই যশোদা রোহণী।
চূড়ায় ময়ুর-পুচহুং গলে গুঞ্জা-হার।
চরণে নূপুর রাণী দেই দোগকার ।
বোপালে সালাঞা রাণী দোলমাল হিয়া।
একবার কোলে আয় রে মা মা বলিয়া।
।২১১১৮৭।

্ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুৰির ১৭১৯ সংখ্যক পছ। ২। 'ৰউরের পাথা' প-র-সা। ৩। 'লোহার' খ,চ।

यहरे ।

বের আর রে বলরাম হাত দে মোরং মাথে।

বড় রাধিয়া প্রাণ দিয়েও তোর হাতে।

আর এক কথা কহি শুন হলধর।

বশোদার বালক বলি না ভাবিহ পর।

বাচিরা নবনী দিহ নিকটে রাধিবেং।

বেলি অবসান হৈলে সকালে আসিবেং॥

10177551

পাঠান্তব

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭২০ সংখ্যক পদ। ২। 'বারের'ক,চ। ৩। 'দিসু'প-র-সা। ৪। 'বাথিহ'প-র-সা। ৫। 'আসিহ'প-র-সা।

बिवान 13

আমার শপতি লাগে না ধাইহ ধেনুর আগে পরাণের পরাণ নীলমনি।

ক্রিকটে রাধিহ ধেনু পুরিহ মোহন বেণু বরে বসি আমি যেন তনি ।

বলাই ধাইবে আগে আর শিশু বাম ভাগে প্রিদাম ফ্রদাম সর্বং পাছে।

ভূমি ভার মাঝে ধাইর॰ সঙ্গ হাড়া না হইর॰ মাঠে বড় রিপু-ভর আছে।

ব্যাণ হৈলে লইরাণ খাইরং

পথ পানে চাহিদ যাইর শভিশর ভূণাকুর পথে। কাঙ্গ বোলে বড় থেমু কিরাইডে না বাইর কাঞু হাঁড ভূলি বেহ বোরণ সাথে। থাকিবে ভরুর ছার বিনতি করিছে মার রবি বেন না লাগরে গার। যাদবেক্সে সজে লইস্ল>২

> ৰাধা পানই>• হাতে থুইয়>• বুঝিয়া যোগাবে রাজা পায় ॥৪॥১১৮৯॥

পাঠান্তৰ

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭২১ সংখ্যক পদ।
২। 'ভার' প-র-সা। ৩। 'ধাইরো' চ; 'রইও'
প-র-সা। ৪। 'হইও' প-র-সা। ৫। 'কুধা'
ক, খ। ৬। 'চাহি' ক, খ; 'চাহিরা' প-র-সা।
१। 'আইর' ए। ৮। 'চাহিরা' ए। ৯। 'বাইও'
প-র-সা। ১০। 'বেহু মোর' হলে 'বেরে মারের'
প-র-সা। ১১। 'থাকিও' ক; 'থাকিহ' চ;
'বিসহ' প-র-সা। ১২। 'লেহ' প-র-সা। ১০।
'নুপুর' প-র-সা। ১৪। 'বেহু' প-র-সা।

ভাটিয়ারি ৷১

নাজ নাজ বলিয়া পড়িয়া গেল নাড়া।
বলরামের শিক্ষাতে সাজিল গোয়াল-পাড়া।
হাস্বা হাস্বাং রব যে উঠিল ঘরে ঘরে।
নাজিয়া কাচিয়া॰ সভে ছইলা বাহিরে।
আজি বড় গোকুলের রজ রাজপথে।
গোধন চালাঞা সভে চলিলা এক॰ নাথে।
কাঁচনী পাঁচনী কারু॰ হাতে শিক্ষা বেপু।
কাঁচনী পাঁচনী কারু॰ হাতে শিক্ষা বেপু।
নাজার সমান বেশ বয়্মস এক ছান্দ।
ভারাগণ বেড়িয়া॰ চলিলা ভামচান্দ।
ধাইয়া বাইয়া কেছ ধেমু বাহুড়ায়।
ভারাবাস এক ভিতে দাঁড়াইয়া চায় ॥৫॥১১৯০॥

পাঠান্তর

)। देश शन-मा श्रुवित २१२२ मरवाक शह। २। हाना हाना वा ७। कोविवा वा 8। 'अक्टे' था १। 'कांत्र' का ७। '(विकृ (वन, च।

নাচত গায়ত

বেণু বাজায়ত

ধেযু চালায়ত রঙ্গে। ভোকন-সন্ধার >

লৈয়া আগুসার

योगरवन्त्र हलू मरक ॥१॥১১৯३॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭২৪ সংখ্যক পদ। 'তেরট' হলে 'তেউট' চ; 'তেউড়ি' প-র-সা। ২। 'গোঠে রে' হলে 'আজু গোঠে' হ। ৩। 'স্ব' শব্দ হ, চ পুথিতে নাই। ৪। 'মাৰে' প-র-সা। । 'গুলাই' ক, চ।

ভাটিরারি ৷১

ভালি রে গোপাল চ্ড়ামণি।
বংশীবটের মাঠে গোঠের সাঞ্চমি ॥ এবং ॥
বান্ধিয়া মোহন চ্ড়া গুঞ্জার আটনি।
বরিহা বকুলমালে ঈবং টালনি ॥
গলায় ফুলের দাম গো-ধূলি সব গার।
নাচিয়া বাইতে সেং মঞ্জীর বাজে পার॥
মণিময় অভরণ শ্যাম কলেবর।
ভড়িতে অড়িত যেন নব জলধর॥
সভার সমান বেশ নাটুয়া-কাচনিং।
সঘনে প্রন-বেশে ফিরায় পাচনি ॥
ভজ-বালকের সজে বজে চলি বায়।
নবচন্দ্র দাস পায় পড়িয়া লোটার॥
॥৮॥১১৯৩॥

পাঠাক্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭২৫ সংখ্যক পদ।
২। কেবল প-র-সা পুৰিতে 'ক' আছে। ৩।
'বিনোদ' প-র-সা। ৪। 'নে' শক্টি প-র-সা পুৰিতে
নাই। ৫। 'কাছনি' ক। ৩। 'বাণক' ক, থ,
দ, চ।

ख्यां तात्र ।>

আজু বন বিজই রাম কামু।

আগে পাছে শিশু ধায় লাখে লাখে ধেমু॥

সমান বয়েস বেশ সমান রাখাল।

সমান হৈ হৈ রবে চালাইছে পাল॥

কারু নীল কারু পীত কারু রালা ধড়িং।

মুরক্স চতুনাং মাথে বিনোদ পাগড়িং॥

কারু গলে শুঞ্জাগাভাং কারু বনমালা।

রাখালের মাবেং নাচিছে চিক্ণ কালা॥

নৃপুরের ধ্বনি শুনি মুনিং-মন ভুলে।

ঝাপিল রবির রথ গো-খুরের ধুলে॥৬৮১১৯১।

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুণির ১৭২৩ সংখ্যক পদ। ২। 'ছড়ি' খ। ৩। 'চডুলা'চ। ৪। 'পাশুড়ি' খ। ৫। 'হার' খ। ७। 'হাঝোরে' প-র-সা। १। 'মুনির' প-র-সা।

ভাটিয়ারি। তেরট।১

(गार्ट्यदेश माजन (गार्थाम । ४विन माङ्गलि পিউলি বলিয়া हैं।कार्त्व अव॰ त्रांशांग ॥ अ ॥ কাক্ল কান্ধে coলি বিনোদ পাগড়ি কাক্ল গলে গুঞাগাভা । কাৰু নীল পীত খেত লোহিত ৰটি-ভটে ভাল শোভা। পুরিছে বিষাণ ভাইয়া॰ বলরাম कानारे भृतिष्ठ (वर्)। শ্রবণ ভূলিয়া উচ্চ পুচছ করি আগে চলে সব ধেয় ।

मात्रण ।>

ও রাম কানাই কালিন্দীরং তীরে। শ্বেত শ্রাম প্রই ভাই চান্দে মেঘে এক ঠাঞি শিশুগণ তারা যেন ফিরে: এ॰ ॥ অঞ্চলি পুরিয়া খায় কেছো জলপানে ধায় (कर्दा (प्रथ निक अञ्च-हाग्रा । তরক উঠিছে ঘন ব্যুনা আনন্দ-মন **(मिथ खज-वांम (केत्र भागा ॥** জুলিল কানাইর বানা ঠাত্রি ঠাত্রি রাখালের থানা স্থবলের থানা সভার আগে। ভার বাদে বলরাম মাৰো রাজা শ্যাম-ধাম রাখাল বেড়িল লাখে লাখে। কেছো হাতী ঘোড়া হয় রাখাল রাখালে বয় কেহে। নাচে কেহে। গায় গীত। কেছো বায় শিকা বেণু বনে বাজা হৈল কামু বলাই হইলা তার মাত ॥ বসিলা রাখাল-রাজ কেছো বলে সাজ সাজ অহুর উপরে দেও° হানা। দধি ত্রগ্ধ কাঢ়ি খায় वश्नी वहरन शांत्र কংসের যোগান দিতে মানা ॥ 18666161

পাঠান্তর

- ১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭২৬ সংখ্যক পদ।
২। 'কালিন্দি' ব। ৩। 'চাঁদ মেব' ক। ৪।
কেবল প-র-সা পুথিতে 'ঐ' আছে। ৫। 'উঠিছে
লন' ছলে 'উঠে বন বন' প-র-সা। ৬। 'বংগ'
ক, ধ; 'বোনে' ব, চ। ৭। 'দেহ' প-র-সা।

शांवनी ।)

বসুনাক জীর তক্ষডল স্থাীডল আসিয়া মিলল হোনং ভাই।

मटि वान खान कि (थना (थनादि (alm আজু খেলিব এই ঠাঞি ॥ কারু কোচডেডে ভেটা কডি রামচাকি দাড়াগুলি কেহো কেগে পাচনি ফিরায়। রাম কানাই কুতৃহলে ছুই ভাই ছুই দলে শিশুগণ করে ধাত্রা ধার ॥ को कुरक रिजारिक नि নিজ অন্ন হেলাহেলি Cकर Cकर लाष्ट्रिश श्रुकांत्र। গেঁড়ুয়া বলাই করে সব শিশু খরে খবে লোফে গেঁড়ু মত্ত বলাই ॥ সাতলি ভাকলু বলি ভাকে মহামন্ত বলী कोमिर्ग **भए** धाख्या धाइे । এক শিশু কহে শুন সাতলি পা গাছি পুন মার যদি কানাইর দোহাই ॥১০॥১১৯৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭২৭ সংখ্যক পদ।

২। 'হুই' প-র-সা। ৩। 'থেলাবি' ক, খ, চ,
প-র-সা। ৪। 'কারু' ইত্যাদি হলে 'কারু কাছরেত' ইত্যাদি ক; 'কারু কাঁছড়েড়' ইত্যাদি খ,
চ; 'কারু কোছে' ইত্যাদি প-র-সা। ৫। 'দিপে'
ক, খ, চ, প-র-সা। ৬। 'নাটুয়া' প-র-সা। ৭।
'সব শিশু' হলে 'শিশুগণ' ঘ। ৮। 'সাঞ্জি' ক।
১। 'সাঙলি' ইত্যাদি পংক্তিবর ক, চ পুথিতে নাই।
অতঃপর খ, ঘ পুথিতে নিম্নলিখিত অভিরিক্ত পংক্তিঘর দৃষ্ট হয়, বথা—
'কেহো ধার ছরাছরি কেহো ভঙ্ক লক্ষ করি
পাছে পাছে মন্ত বলাই।'
প-র-সা পুথিতে উদ্ভূত পংক্তিবরের পরিবর্জে পুনরার 'সব শিশু' ইত্যাদি পংক্তিবর লিখিত ইইরাছে। ভাটিয়ারি ৷১

আরে মোর রাম কানাই। যম্না-ভীরের ছায় খেলে দোন ভাই॥ সভাই সমান খেলু বাটিয়া লইল। হারিলে চড়িব কাল্কে এই পণ কৈল ॥ य कन शदिर छाटे कारक कवि लाव°। বংশীবটের তলে বাথিয়া আসিবে ॥ চুই দিগে চুই ভাই আসি দাঁড়াইলা। যার যেই খেলু• সৰ বাঁটিয়া লইলা॥ শ্রীদাম স্থদাম আদি কানাইর দিগে হৈল। স্তবল বলাইর দিগে নাচিতে লাগিল। শ্রীদাম ক**হে আ**মরা কানাইর দিগে হব। কানাই হারিলে উহার কান্ধে না চডিব। এমতে বাঁটিয়া খেলু খেলা আরম্ভিলা। मध्य गञ्जीत नाम (थिनश हिनला ॥ घनत्राम मान करह दम्बिश वलारे। আপনি সাতলি ভালি হারিলা কানাই।

122122861

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭২৮ সংখ্যক পদ।
২। 'তরুর' খ, চ, প-র-সা। ৩। 'থেড়ু' প-র-সা।
৪। 'নিবে' ক, খ। ৫। 'তলে নিয়া' ক, খ।
৬। 'থেড়ু' প-র-সা। ৭। 'আর' ক, খ, চ,
প-র-সা। ৮। 'থেড়ু' প-র-সা। ৯। 'সাওলি'
ক, খ, সাঁতেলি' খ; 'সাঙ্গি' চ; 'সাঁওলি' প-র-সা।

eteche.

আজি খেলার হারিলা কানাই। ইবলে করিয়া কাজে বসন আঁটিয়া বাজে বংশীবটের তলে যাই। গ্রা শ্রীদাম বলাই লৈয়া চলিতে না পারে ধাইয়া
শ্রম-জল-ধারা পড়ে অজে।

এখন খেলিব যবে হইব বলাইর দিগে

আর না খেলিব কানাইর॰ সজে॥

কানাই না াজতে কভু জিভিলে হারয়ে ভজু

হারিলে জিভয়ে বলরাম।

খেলিয়া বলাইর সজে চড়িব কানাইর কাজে

নহে কাজে নিব ঘন-খাম॥

মন্ত বলাই-চান্দে কে করিতে পারে কাজে

খেলিভে যাইতে লাগে ভয়।

গেড়য়া লইয়া কবে হারিলে সভারে মারে

ঘনরাম দাস দেখি কয়॥১২॥১১৯৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭২৯ সংখ্যক পদ।
২। কেবল প-র-সা পুথিতে 'ঞ' আছে। ৩।
'থেলিব কানাইর' হলে 'থেণাৰ কার্য' প-র-সা।

मोबन ।>

ভাগ্যবতী ষমুনা মাই।

যার এ কুলে ও কুলে ধাওয়া ধাই॥

শ্বেত শাঙল দোন ভাই।

যার কলে দেখে আপন ছাই॥

যমুনার জলে কিবা শোভাই।

এ ধতুনক্ষন-মনলোভা॥১০॥১১৯৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৭০ সংখ্যক পথ।
২। 'বার' শব্দ ব পৃথিতে নাই। ৩। 'নিক আক'
ব; 'আপনার' চ। ৪। 'বমুনার' ইত্যাদি
কলিট কেবল প-র-সা পৃথিতে আছে। অভঃপর
উহাতে নির্দাণিত থাকিও কলিট দুই হর, ব্ধা—
'নিধানক দানের হর তথি।
কলে দেখি কতেক বুরতি ল'

नियानम पान देवकवर्गात्मत्र शत्रवर्शी नगरतत्र वाकि ; স্থভরাং বৈঞ্বদানের 'পদকরতক্র' গ্রাহে নিয়ানন্দ দাসের ভণিতাবক রচনা সন্নিবেশিত হওয়া অসম্ভব। প-র-সা পুথিতে এই পদে বছনন্দন দাসের ভণিতা আছে: তৎপরে আবার নিমানৰ দাসের ভণিতার কোন সাৰ্থকতা দেখা যায় না। নিমানন্দ দাস এই পদের পুথ-আর ভণিতাটির উদ্ধার করিয়াছেন বলিয়া এই পদের শেষে নিজ-নামান্বিত অপর ভণিতা সংবোজিত করিরাছেন কি ?

অথ বনভোজন।

খেলা সমাধিয়া শ্ৰমযুত হৈয়া नशांगन देलगा नदन । ভোজন-সন্তার ছিল ভাবে ভার Cकांकरन विश्वा द्रावा । ষমুনা-পুলিনে (विष् त्रशागरन মাবে করি বৈসে কামু। পাড়ি বনপাত তাহে নিল ভাত कल खित्र भिका (वर्ष । गव गथा त्यनि করিয়া মণ্ডলী ভোজন করয়ে হুখে। ভাল ভাল কৈয়া मूथ टेहर टेनग्रा সভে দেই কামু মুখে। সভৈ কৰে ভাই আমার কানাই মোরে বড় ভাল বালে। বামার সমূৰে বসি খায় হুখে नमा ब्रट्ड ट्यांब शाटण । এহি করি মনে কররে ভোকনে আনন্দ-সাগরে ভাসে। বিশ্বস্তর দাস করি মনে আশ ब्रट्ट ख्वरणब शीरण ॥>८॥> >>>।

শহরাভরণ। সম ভাল।১

ভোর আইঠাং বড় মিঠা লাগে কানাই রে। খাইতে বড় স্থখ পাই তেঞি তোর আইঠা খাই খেত্যে খেতো বেঁতে হৈতে দিতে হৈল

ভা**ই রে**° ॥ধু॥

ও রাকা অধর মাকো ना जानि कि मधु बाह আমরা তোরঃ চান্দ-মুখের বালাই যাই রে। अष्टेश जामानिरग । ८ । এই উপহার নেও এ দাস উদ্ধবে কিছু দিতে চাই রে ॥

100261951

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭৩১ সংখ্যক পদ। २। 'व्याहेर्व' च; 'व्याका' ठ; 'बार्का' भ-त-मा। ৩। 'বেত্যে' ইত্যাদি ছলে 'ধাইতে বেঁতে হৈতে मिल्ड' हेजामि क; '(थल दौट हहेल मिड' ইত্যাদি ৰ; 'ৰেত্যে বেঁতে হৈতে দিতে' চ; 'ধাইতে দিতে' প-র-সা। ৪। 'ভোমার' ক। ং। 'কাও' খ; 'নাও' च; 'কেও' ক। ৬। 'আমার দিগে' ।।

क्यां जात्र ।> ভোকন সমাপি সবছঁ ব্ৰজ-বালক देवर्वन नीशक हान । कालिन्मि-नीत-मभीत वश्रे मुक् শীতল করু সব গার # স্কর ভাগ-শরীর। শ্ৰীদামক কোরে অলসে ভহি শৃভলং ত্বল-কোরে বলবীর ॥এ॥ নব নব পল্লব লেই স্থাগণ वीकरे वृद्धं कन-करक। (क्विन खमत कांगू-मूथ दहित दहित * शिवरे भवग-खबर्क्क ।

আলস তেজি বৈঠল নন্দ-মন্দন
দূরহিঁ গেও সব ধেতু।
হেরইতে যতনে একযোগ কারণে
বারই মোহন বেণু ॥১৬॥১২০১॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৭৩২ সংখ্যক পদ। ২। 'শুভল' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'কাননে' প-র-সা।

वर्षा जोत्र ।>

সৰ সহচর সনে বেণু বাজাওরে।
প্রেমহি কোই কামু-গুণ গাওরে ॥
কোই কোই নিরখয়ে কামুক মুখ।
খেলই কোই ভত্ত মন স্থ ॥
কোই চক্রাবতং লগুড় কিরায়।
কাহুঁক কান্ধে কোই° চড়ি যায়॥
থৈছে সখা সহ খেলয়ে কান।
মোহন রাম-কামুক গুণ গান॥১৭॥১২•২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৩০ সংখ্যক পদ।

২। 'চক্রবর্ণ' ক, খ, খ; 'চক্রবর্ত' চ। 'চক্রবর্ণ'
ও 'চক্রবর্ত' পাঠে ছম্মোভল ঘটে। 'চক্রবর্ত' শব্দ সংস্কৃত 'চক্রবর্ত্ত' শব্দের অপ্রংশ। ৩। 'কোই চড়ি' হলে 'চড়ি কোই' ক, খ, খ, ট।

ক্সৰ ভাটনারি।>

আছু বনে আনন্দ বাধাই। গাড়িয়া রিলোদ খেলা। আনন্দেং হইলা ভোলা ছুর বলে পেল সব গাই॥এ ধেতু না দেখিয়া বনে স্থকিত রাধালগণে শ্ৰীদাম স্থাম আদি সভে। কানাই বলিছে ভাই খেলা ভালা যাবে° নাই व्यानिव त्याधन त्वनू-ब्राट्य ॥ भव ८४मू नाम टेकग्राः अधरत मूत्रली टेलग्रा ডাকিয়া পুরিল উচ্চম্বরে। শুনিয়া বেণুর রবণ ধায় ধেমু বৎস সব পুচ্ছ ফেলি পিঠের উপরে॥ ধেতু সব পারি সারি হান্বা হান্বা রব করি माँ एविन कृष्यत्र निक्रि। इक्ष व्यति भएए वाँए । ८ अटमत खत्रक छेट्ठ স্নেহে গাবী শ্রাম-ব্রুস চাটে॥ দেখি সব স্থাগণ আবা আবা ঘনে ঘন কামুরে করিল আলিঙ্গন। প্রেমদাস কছে বাণী কানাইর মুরলা শুনি পশু পাখা পাইল চেডন ।১৮।১২•৩।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৩৪ সংখ্যক পদ। ২। 'সভাই' থ, প-র-সা। ৩। 'হবে' ক, থ, প-র-সা। ৪। 'কহিরা' ঘ; 'কয়্যা' চ। ৫। 'রবে' ঘ। ৬। 'সবে' ঘ। ৭। 'ধ্বনি' প-র-সা।

সিশ্বড়া ।>

শ্রুতি-অবতংস অংস পরি লখিত

মুরলা অধর স্থরজ।

চরণে লখিত পিতং ধটিকর অঞ্চল

গো-ধূলি-ধূসর শ্রাম-অজ ।

থেমু চরাওত বেগু বাজাওত

কানাই কালিন্দি-তারে।

ধবলি সাঙলি বলি দীগণ নেছারই
সরকাই মন্দ পতীরে।

ভূমে আয়োগিত করপুত-লগুড় কটি-অবলম্বন-কারী। বাম-চরণ পর मिथ्य ठव्रम श्रामि वज-खन कग-मन-हाती ॥ ব্ৰজ-বালক সঞ্জে রক্ষে কত ধাওত मख जिश्ह-गिष्डि गम्दन। চান্দ-মুখের ঘাম বামকরে বারই त्रहरे लश्च हिलादन ॥ উচ্চ পুচ্ছ করি ধেমুগণ ধাওত চাহত ঝরঝর দীঠে। অনম্ভ দাস কহ কামু-মুখ হেরি হেরি পুচ্ছ নাচাওত পীঠে ॥১৯॥১২০৪॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭৩৫ সংখ্যক পদ।
২। 'পীড' ক, চৃ। ৩। 'ধটিকর' হলে 'ধরি
কর' ক; 'ধরি করু' থ, প-র-সা; 'ধটির' ছ।
ধটিকর = ধটির। ৪। 'দিঘ' ক; 'দিঘ' চ, প-র-সা।
৫। 'ডোনে' ঘ, চ। ৬। 'জিনিরা' ক, ধ।
৭। 'হিলোনে' চ; 'হিলনে' প-র-সা। ৮। 'দিঠে'
ক, চ, প-র-সা। ৯। 'পিঠে' ক, প-র-সা।

मक्त्रकारी।>

স্থাগণ সঙ্গে রজে এজ-নন্দনং
থেসু চরাওত কালিন্দি-তীরে।
সম-বয়-বেশ কেশ পরি চন্দ্রক
গজবর-গমনে চলই থিরে॰ ধীরে।
দাম শ্রীদাম মহাবল কোকিল
সবহুঁ স্থা সঞ্জে বছবিধ খেল।
কর চরণে মহি॰ ধরই ধবলি সম
কোই বৎস কোই বুব সম ভেল।
কোই কোকিল সম গরজই কুছ কুছ
কোই ময়ুর সম নৃত্যু রসাল।

ঐছন ক্রীড়নৈ নিমগন সব জন

দূর কানন মাহা চলু সব পাল।

যম্না-ভরক রল হেরি কোই কোই

জল মাহা পৈঠি করয়ে জল-খেলা।
ঐছে আনন্দে বিহরে ত্রজ-বালক
দাস অনস্ত-চীত হরি নেলা ॥২০॥১২০৫॥

পাঠাক্তব

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৪৬ সংখ্যক পদ।
২। 'বছনন্দন' ক; 'কত ধারত' প-র-সা। ৩।
'ধীরে' ক, ধ, প-র-সা। ৪। 'মহী' ক। । 'কৌড়ন' ব। ৬। 'মহা' ব। ৭। 'করল' ক,
ধ; 'করত' প-র-সা। ৮। 'থেলত' প-র-সা।
৯। 'অনস্তক চীত' চ; 'অনস্ত চিত' ব; 'অনস্তক

विज्ञांत 15

যমুনার তীরে কানাই শ্রীদামেরেই লৈয়া।
মাধামাথি রণ করেই শ্রামযুত হৈয়া॥
প্রথম রবির তাপে শুখাইল মুখ।
দেখি সব স্থাগণের মনে হইল দুখ॥
আর না খেলিব ভাই চল বাই ঘরে।
স্কালে বাইতে মা কহিয়াছেই সভারে॥
মলিন হইল কানাই মুখানিই ভোমার।
দেখিয়া বিদরে হিয়া আমা সভাকার॥
বেলি অবসান হৈল চল খরে বাই।
কহে বলরাম দূর বনে গেল গাই॥

123132061

পাঠান্তর

) देश श-त-जा श्रुवित ১१०१ जश्याक शर। २। 'ञ्जिनास' व; 'हिलाम' श-त-जा। ७। 'कृति' थ, व । ८। 'क्टेबाट्ट' श-त-जा; ८। 'त्रूकानि' व।

অথ উত্তর গোষ্ঠ ৮

তথা বাপ ৷১

পাল জড় কর শ্রীদাম সান দেওং শিক্ষায়।
সম্বনে বিষম থাইও নাম করে মায়।
আজি মাঠে আমাদের বিলম্ব দেখিয়া।
হেন বুঝি কান্দে মায়ও পথ পানে চাইয়াও।
বেলি অবসান হৈল চল যাই ঘরে।
মায়ে না দেখিয়া প্রাণ কেমন জানি করে।
বলরাম দাস কহে শুনি কানাইর বোল।
সকল রাখাল মাঝে পড়ে উত্রোল।

পাঠান্তর

1221122091

১। ইহাপ র-সাপুণির ১৭৩৮ সংখ্যক পৰ। ২। 'দাও' ঘ,চ। ৩। 'লাগে' ঘ। ৪ 'মাতা' ক; 'মা'চ। ৫। 'চাঞা' ক।

টাকা

২। "স্বনে" ইত্যাদি। আমি বার্থার বিষম থাইতেছি,—(তাহাতে অন্থমান হইতেছে বে) মাতা আমার নাম অরণ করিতেছেন। (কেহ একাগ্র-মনে দ্রন্থিত প্রির জনকে অরণ করিলে, তাহার বিষম গাগে— এইক্লপ প্রচলিত সংস্কার আছে।)

कांद्रिशति ।>

চাঁদ-মুখে বেণু দিয়া সব ধেন্থ নাম লইয়া
ভাকিতে লাগিলা উচ্চস্বরে।
শুনিয়া কানাইর বেণু উর্জমুখে ধায় ধেন্থ
পুচ্ছ ফেলি পিঠের উপরে ।
শ্বনান বেণু-রব ব্বিয়া রাখাল সব
ভাসিয়া মিলিল নিজ-মুখে।
বে বনে বে ধেন্থ ছিল কিরিয়া একতা কৈল
ভালাইলা গোকুলের মুখে।

খেত-কান্তি অনুপাম আগে ধার বলরাম
আর শিশু চলে ডাহিন বাম।
শ্রীদাম ফুদাম পাছে ভাল শোভা করিয়াছে
তার মাঝে নবঘন-শ্যাম।
বন বাজে শিঙ্গা বেণু গগনে গো-ক্ষুর-রেণু
পপে চলে করি কভ ভঙ্গেং।
যতেক রাখালগণ আবা আবা ঘনে ঘন
বলরাম দাস চলু সঙ্গেও।১২০৮॥
পাঠান্তর

>। ইহাণ-র-সাপুথির ১৭০৯ সংখ্যক পদ। ২। 'ভক্লি' প-র-সা। ৩। 'স্কি' প-র-সা।

পৌরী।>

বন সঞ্জে আওত নন্দ-তুলাল। গো-ধূলি-ধূসর শ্রাম কলেবর আজামুলন্বিত বন-মাল ॥ধ্রু॥ খন খন শৃঙ্গ বেণু-রব শুনইডে वत्रकर-वानिशन थाय । মঙ্গল পারি मोभ करत वधुगन॰ मन्दित नाइत माज्य ॥ मूथ किनि विश्ववन পীতাম্বর-ধর नव-मञ्जूति व्यवज्ञः । শিখণ্ডক-মণ্ডিভ চূড়া ময়ুর-বায়ই মোহন বংশ। বাল বুদ্ধ জন বরজং -বাসিগণ অনিমিখে মুখ-শশি হেরি। চান্দ অনু পাওল ভূথিল চকোর मिम्दित ना हलार्य कि वि ८गार्ठ भन्नदबन्न গোগণ সৰছ मिमरत हन् नमनान। যশোষতি আওল আকুল পত্তে মোহন-ভণিত রসাল ॥২৪।১২০৯॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৭৪∙ সংথ্যক পদ। ২। বৈজ'ক, খ, খ, চ। ৩। বৈধুগণ'ক, খ। ৪। ক্তি'ঘ। ৫। বৈজ'ক, খ, ঘ, চ। ৬। নোচনরে' ফ্লে 'নাচরে' কঁ।

(भोत्री ।)

নক্ষ-ছলাল বাছা যশোদা-ছলাল।

এত ক্ষণ মাঠে থাকে কাহার ছাওয়ালং॥
রতন-প্রদীপ লৈয়া আইলা নক্ষরাণী।
এক দিঠে দেখে রাজা চরণ ছখানিও॥
নেতের আঁচলে রাণী মোছে হাত পা।
তোমার মুখের নিছনি লৈয়া মরিও যাউক মা॥
কহে বলরাম নক্ষরাণী কুত্হলে।
কত লক্ষ চুত্ব দেই বদন-কমলে॥২৫॥১২১৩॥

পঠিক্তির

 ১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৪১ সংখ্যক পদ।
 ২। 'ছালাল' ছ। ৩। 'এক দিঠে' ইত্যাদি ছলে 'গদগদ কঠ নানিকসরে বাণী॥' (পাঠান্তর—ক)।
 ৪। 'মরে' ক; 'মর্যা' খ, চ।

টাকা

৪। "এক দিঠে" ইত্যাদি। বশোদা এক দৃষ্টে

 ত্রীকৃক্ষের আরক্তিম চরণ-যুগল দেখিতে লাগিলেন—
 পাছে বন-অনণ-কালে উহাতে কণ্টকাদি বিশ্ব হইরা

 খাকে । জুলনা করুন,—

শনব ভূপান্থর কত ভূকিল চরণে। এক-দিঠি হৈয়া রাণী চাহে চরণ পানে।"
—প-ক-ত, ১২১২ সংখ্যক পদ।

क्लांचे ।>

পক্দীপে নিরম্পন কেল। কড শত চুম্ব বরন পর দেল। কোরে আগোরি স্থত মন্দিরে গেল।
বহু উপহার থারিং পর দেল।
রাম কানাই অজ-বালক সজেও।
ভোজন কয়ল কতহুঁও রসরজেও।
কাতরে তবহিও পুছরে নন্দরাণী।
গদগদ কণ্ঠ না নিকস্বরেং বাণী।
স্তন-খিরেং ভীগলং পহিরণ-চীর।
ঝরঝর নয়নে গলয়ে ঘনংও নীর।
আকুল ভইং তব পুছতংং বাত।
মোহন নির্থই রোহিণি সাধ্যুও।

126122221

পঠিকির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৪২ সংখ্যক পদ।
২। 'পার' ক, চ। ৩। 'সল' प। ৪। 'বহুত'
ক, খ। ৫। 'রসরল' प। ৬। 'ভবহু' ক, খ।
৭। 'সররে' प। ৮। 'ক্ষীরে' ক, চ। ১।
'ভিগল' ক, প-র-সা। ১০। 'বহু' প-র-সা। ১১।
'হোই' প-র-সা। ১২। 'পুছত' ক, চ, প-র-সা।
১৩। 'সাত' খ, চ।

পৌরী।১

কোন বনে গিয়াছিলা ওরে রাম কামু।
আজি কেন চান্দ-মুখের শুনি নাই বেণু।
ক্ষীর সর ননী দিলাম আঁচলে বাদ্ধিরা।
বুকি কিছু খাও নাই শুখাঞাছে ছিয়া।
মলিন হৈয়াছে মুখ রবির কিরণে।
না জানি কিরিলা কোন গহন কাননে।
নব ভূগাস্কুর কড ভূকিলং চরণে।
এক-দিঠিং-হৈরা রাণী চাহে চরণ পানে।
না বুকি ধাইয়াছ কড ধেমুর পাছে।
এ দাস বলাই কেনে এ ছখ দেখাছেং।

এ দাস বলাই কেনে এ ছখ দেখাছেং।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৭৪৩ সংখ্যক পদ। ২। 'জুঁকিল' ক। ৩। 'এক্দিঠ' ক, খ, চ, প-র সা। ৪। 'দিরাছে' ব।

शननी ।>

ওগো মা ভোমার গোপাল কিবা জানয়ে মোহিনী। আমরা সক্রের ভাইত তমুত নামন পাই ভোমারে ভুলাবে কত খানি॥ তৃণ খাইতে ধেমুগণ यिन योग्र पृत्र वन কেহ ত না যায় ফিরাইতে। পুরয়ে মোহন বেণু তোমার ছুলাল কামু ফিরে ধেন্ম মুরলীর গীতে 🛭 আমরা ফিরাইতে ধেনু তাহা নাহি দেয় কানু मन किर्त्र छ्वल्ब भाष्ट्। ञ्चल कतिया (कारल (श्राम गमगम र्वाल না জানি মরম কিবা আছে । কিবা লীলা করে এহ বুঝিতে না পারে কেহ অপরূপ চরিড বিহরে । वनताम मात्र ७८०० वनाई माना नाहि जातन আনে কিবা বুকিবে অস্তরে॥ 124122201

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৭৪৪ সংখ্যক পদ।
 ২। 'বিহারে' খ, চ, প-র-সা। ৩। 'বোলে' ক,
 চ, প-র-সা।

ইনন কলানী।>
রাণী ভালে আনন্দ-সাগরে।
বামে বসাইয়া স্থাম দক্ষিণে বসাইয়া রামং
চল দেই মুখ-জুধাকরে ॥ এব ॥

ক্ষীর ননী ছেনা সর আনিয়া সে থবে থব আগে দেই রামের বদনে।
পাছে কানাইর মুখে দের রাণী মন-স্থাপেণ নিরথয়ে চাঁদ-মুখ পানে।
গোপের রমণী যত চৌদিগে শত শত মুখ হেরি লহু লহু বোলে।
মাতা যশোমতী মেলি মলল হলাছলি আরতি করয়ে কুতৃহলে॥
ব্যালিয়া রতন-বাতি করে সবে আরতি হরষিত যশোমতী মাই।
কহে বলরাম দাসে আনন্দ-সাগরে ভালে দোইংরপের বলিহারি বাই ১২৯০২২১৪৪

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১২১৪ সংখ্যক পদ। 'ইমনকল্যানী' স্থনে 'ইহমন কল্যানী' চ। ২। 'ক্লিনে বসাইয়া রাম' স্থলে 'ক্লিনেডে বলরাম' প-র-সা। ৩। 'মহাস্থ্যে' ক, ধ। ৪। 'র্ছ' ক,'প-র-সা।

(कवल मधावां मना-त्रम यथा।

क्लावि।>

জয় জয় রাম কানাই ছুই ভাই।
কলিতে হইলা দোহেঁ চৈততা নিভাই।
পঞ্চ রসে মাতাইলা অধিল জুবন।
সে কুপা নহিলে ইহা জানিবে কোন জন।
১০০ ১১২১৫৪

ইতি তৃতীয়-শাখায়াং একবিংশভিপল্লবঃ। পাঠাবৰ

)। देश न-क्रमा नृथित १९८७ मरवाक नव।

116526181

चर्ष मधा-वांश्मना-तम श्रकातांखत यथा।

গোঠৰিহারাদি। व्याप्ति मश्र अपु। ভাটিরারি ৷১ গোর কিশোর পুরুব-রসে গর গর मत्न (जन (गार्ठ-विशंद्र। माम औमाम खुरम रान छाकरे नग्रद्ध गलद्य कलश्रंत । বেত্র বিষাণ বেণু । লেই সাজহ যায়ৰ ভাঞি⁸ সমীপ। গৌরীদাদ সাজ করি তৈখনে গৌর নিকটে উপনীত ॥ ভেষ্যা অভিয়াম বদন ঘন বাওই নূপুর চরণহি দেল। নিত্যানন্দ-চন্দ্র পর্ট আগুসরি थविल थविल थिने (कल II নদিয়া-নগর-লোক সব ধাওত (रब्रहेट (गोतक त्रथ । माम क्रमबाथ हान्म (मारुनि त्नरे যাওব সব অমুসঙ্গ ॥১॥১২১৬)

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭৪৯ সংখ্যক পদ।

২। 'বিশান' খ, খ, চ; 'বিশান' ক, প-র-সা।

৩। 'সাঞ্চ' ক, খ, চ, প-র-সা। ৪। 'ভাজীর'

ক, খ; 'ভাজির' চ। ৫। 'ভাই' ক, খ, চ,
প-র-সা। ৩। 'বলনে' ক। ৭। 'নুপুর' ইত্যাদি

হলে 'চরণে ছপুর আনি' খ। ৮। 'ধ্বনি' ক, খ,
প-র-সা।

डवा जान ।>

ৰোঠে আমি বাৰ মা গো গোঠে আমি বাৰ। জীবাৰ কুদাৰ সংল নাছুৱি চনাৰ ॥ চ্ড়া বানিং দে গো মা মুরলা দে মোরং হাতে।
আমার লাগিয়া শ্রীদাম দাড়াইয়া॰ রাজপণে।
পীতধড়া দে গো মা গলায় দেহং মালা।
মনে পড়ি গেল মোর কদন্থের তলা ॥
শুনিয়া গোপালের কথা মাতা যশোমতী।
সাজায় বিবিধ বেশে মনের আরতি ॥
অলে বিভূষিত কৈল রতন-ভূষণ।
কটিতে কিছিণা ধটা পীতং বসন॥
কিবা সাজাইল রূপ ত্রিভূবন জিনি।
পূষ্প গুল্পা শিশি-পুচ্ছ চ্ডার টালনি॥
চরণে নূপুর দিলা তিলক কণালে।
চন্দনে চর্চিত্ত অল রত্ম-হার গলে।
বলরাম দাসে কয় সাজাইয়া রাণা।
নেহারে গোপালেরং মুখ কাতর পরাণি।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৫০ সংখ্যক পদ।
২। বৈস্থাপ ব, চ। ৩। বেগাপ থ। ৪। কাড়াঞাপ
ক। ৫। কোপেইত্যাদি হলে পেরার মাথে।
গলার দার ব; কে গো মা মোর গলার দেই
প-র-না। ৬। নীলাপ-র-না। ৭। গোপালা
ক, চ, প-র-না।

সিমুড়া 1>

শ্রীদান হুদান দানং শুন ওরে বলরান
মনতি করিয়ে তো সভারে।
বন কভ॰ অভি দূর নব তৃণ কুশাঙ্করণ
গোপাল লৈয়া না যাইহ দূরে ॥
স্থাগণণ আগে পাছে গোগাল করিয়াণ মারে
ধীরে ধীরে করিহণ গমন।
নব ভূণাঙ্কুর আগে রালা পার জানি লাগে
প্রের্থাধ না মানে মোরণ মন ॥

নিকটে গোধন রাখ্য

মা বল্যা শিক্ষায় শতাক্য শ ঘরে থাকি শুনি যেন রব। বিহি কৈলে শতাপ-জাতি, গোধন-পালন বৃত্তি তেঞি বনে পাঠাই যাদব শ ॥ বলরাম দাসের শ বাণী শুন ওগো শ নন্দরাণী মনে কিছু না ভাবিহ ভয়। চরণের বাধা লৈয়া দিব আমরা যোগাইয়া তোমার আগে ক্ছিল শ নিশ্চয়॥

101175724

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৫১ সংথাক পদ।

২। 'দাস' শদ থ পুথিতে নাই। ৩। 'কতি' च।

৪। 'কুশ ভূণান্ত্র' च। ৫। 'সথা সব' च।

৬। 'কইরা' প-র-সা। ৭। 'করির' ঝ, চ। ৮।
'মারের' ক, ঝ, চ, প-র-সা। ৯। 'রেখ' च;
'রাইথো' প-র-সা। ১০। 'বলে' ক; 'বৈল্যা' চ।

১১। 'শিকাতে' ক, ঝ, চ, প-র-সা। ১২।
'ডেকো' ক; 'ডেক' च; 'ভাইকো' প-র-সা।

১৩। 'কৈলা' ক; 'কৈল' চ। ১৪। 'পাঠাই বাদব'
খলে 'পাঠাইরা দিব' ক। ১৫। 'বলরাম দাসের'
খলে 'এ দাস বলাইর' ঘ। ১৬। 'শুন' ঘ। ১৭।
'কিছিল্ল' ক।

धाननी ।>

নাজল রাধালগণ নিতি নব নৃত্নং
নদের অলনে সভে বার।
কানাই কানাই বলি করে অল হেলাহেলিও
আনন্দে ললিওও গীত গার ।
গোপালেরে সাজাইরা চাঁদ মুধ মোছাইরা
ভালে দিল চল্দনের বিন্দু।
দব জলবর বেন চলিয়া বাইতে হেনও
উদয় হইল মুগ ইন্দু।

তুই ভাই সাজিয়াণ তায় হাসিয়া হাসিয়া বায়
করেণ কর করি একবন্ধ।
দেখিয়া বালক সব শুনি শিলা বেণু-রব
সরপুরে লাগে বহু ধন্দ ।
ব্রজ্ঞ-নারীগণ সব যার বেই বালক
সভাকার বিয়াকুল চিত।
ঘনরাম দাস ভণে হৈয়া আনন্দিত মনেদ
নির্ধই দোহাঁকারণ রীত ৪৪৪১২১৯৪

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুৰির ১৭৫২ সংখ্যক পদ।
২। 'নৌতুন' ক, চ। ৩। 'কানাই' ইন্ড্যাদি
স্থলে 'অন্ন হেলাহেলি কানাই কানাই বলি' ব।
৪। 'আনন্দে ললিড' স্থলে 'রাধাল আনন্দে'
প-র-সা। ৫। 'বাইডে হেন' স্থলে 'বাইছে হেন'
ক, প-র-সা; 'বাইছেন' ধ, চ। ৬। 'সাজি'
ক, ঝ, প-র-সা। ৭। 'ফ্রি' ক, প-র-সা।
৮। 'হৈরা আনন্দিত মনে' স্থলে 'আনন্দ হইরা
মনে' ধ। ১। 'ফ্রাঁকার' ক, চ।

ভাটিয়ারি ৷১

সকালে আসিহং গোপাল ধেমুগণ লৈয়া।
আভাগিনী বৈল ভোষারং চাঁদ-মুখ চাইয়া।
খাকিহ শ্রীদানের সজে চরাইহ বাছুরী।
জোরে শিলা রব দিহ পরাণে না মরি।
এ খীর নবনী এইং খাইবারেং দিলুঁ।
ভূমি যাবে দুর বনে আমি ভাবি মর্লু।
॥৫॥১২২০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৫০ সংখ্যক পথ। ২। 'আনিহ'প-র-সা। ৩। 'তোর' খ। ৪। 'চাঞা'ক; 'চাহিয়া' খ। ৫। 'রে' প-র-সা। ৬। 'থাইতে ডোরে'ক, চ। ७वा जान ।>

নন্দরাণি বাহ গো ভবনে ।
তোনার গোপাল আনি দিব বৈলি অবসানে ॥
লৈরা বাছি তোনার গোপাল রাখিব বসাইয়া ।
আমরা ফিরাব ধেনু চাঁদ-মুখ চাইয়া ॥
লৈরা যাইতে তোনার গোপাল পাই বড় হখ ।
বেণুতে ফিরার ধেনু এ বড় কোতুক ॥
যে দিন বেবা মনে করি কানাই ভাহা জানে ।
খুখা লাগিলে অন্ন কোথা হৈতে আনে ॥
এক দিন দাবানলে মরিভাম পুড়িয়া ।
ভাহাতে রাখিল গোপাল > কেমন করিয়া ॥
নন্দরাণি ভেঞি ভোমার গোপাল লৈয়া যাই।
সঙ্গেতে সাজিল পাছে এ দাস বলাই ॥

পাঠান্তর

16175571

३। ইহা প-র-সাঁ পুণির ১৭৫৪ সংখ্যক পদ।
 - ২। 'নক্রাণি' ইত্যাদি হলে 'কাহ পো তবনে রাণি কাহ পো তবনে।' ই। ৩। 'বাইছি' প-র-সা।
 ৪। 'বসাঞাে' ক। ৫। 'চাঞাে' ক। ৬। 'গাই বছ' হলে 'বছ পাই' ক, চ। ৭। 'বেণু-রবে' ই। ৮। 'বে' ই। ৯। 'হইলে' প-র-সা।
 ১০। 'কানি কোঝা' প-র-সা। ১১। 'কানাই' ব।

তুপালী।১

আজু গোঠেরেং সাজল দোন ভাই।
নাম কানাইং গোঠে সাজে
বোড়ং শিক্ষা বেণু বাজে
বরজে পড়িল খাওয়া খাই ॥ এং ॥
চৌদিকে অল-বধ্ সকল গায়ভ
মুরহিভ কতহঁ নয়ান।
আগে লাখে লাখেং খেলু গগনে উঠিছেং রেণু
বিকাশনে করে বেদ গান ॥

মুবহর হলধর ধরাধরি করে কর
লীলায় দোলায় দিল অক ।

ঘনায়া ঘনায়া কাছে মউরা মউরী শলাচ
চান্দে মেযে দেখি এক সল ।

হবল তুলিল বানা যেখানে বলাইর থানা
রাখালের কান্ধে ভাল সালে ।
রাম কানাই কুতুহলে সাজিলা যে আগু দলে
বলাইর যুগল শিলা বাজে ॥ ৭৮১২২২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭৫৫ সংখ্যক পদ।
২। 'গোঠে' খ, ঘ। ০। 'কাফু' খ। ৪।
'কোরে' ক, খ, ঘ, চ। ৫। কেবল প-র-সা
পুথিতে 'ক্র' আছে। ৬। 'আগে লাবে লাবে'
হলে 'লাবে লাবে বার' প-র-সা। ৭। 'উড়িছে'
প-র-সা। ৮। 'লিলারা দোলারা' প-র-সা। ৯।
'ঘনাঞা ঘনাঞা' ক, 'ঘনারা ঘনারা' ঘ। ১০।
'মউরা মউরা' হলে 'আনন্দে ময়্র' ক, ধ; 'নান্দে
মউরি' য়, চ।

তথা রাপ ৷১

কানাই বলাই চলে দোন ভাই विनाग्न बहेश माग्र। স্লেহাধিক অতি নন্দ বশোমতী সজে সজে চলি योत्र । কত যে যতনে পিভা মাভাগণে निक गुट्ट भागेरिया। মত বলরাম অভিশন্ন প্রেম বিচিত্ৰ ভৈগেল হিয়া ৷ (वद्राकुन-मानः সহিত সগণে⁴ जन-बाज (शना चत्र। ভাহার পিরিভে অগ্নেয়ান°-চিত্তে किति हरण ब्लथत ।

ভূলিয়া সধারণ প্রেমের আবেশে কানাই চলিলা বনে। বলাই ফিরিল কিছু না জানল এ দাস উদ্ধবে ভণে॥৮॥১২২৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৭৫৬ সংখ্যক পদ।
 ২। 'ব্যাকুল নয়নে' ক; 'বেয়াকুল মন' প-র-সা।
 ৩। 'সগণ' প-র-সা।
 ৪। 'আগে আন' च।
 ৫। 'স্থায়' প-র-সা।

ভাটিরারি ৷১

শিক্ষা বেপু বেত্র বাধা কটিতে জাঁটিয়া।
সাজল রাধালরাজ সজে শিশু লৈয়া।
শ্রীদাম ডাকিয়া বলে ভাইরে কানাই।
এ সব রাখাল মাঝে বলাই দাদা নাই॥
ভূমি যদি বেণু পূরি ডাক এক বার।
বড় মনে সাধ আছে ভালি খাব তাল॥
শ্রীদামের কথা শুনি হর্ষিত হৈয়া।
হাসি পূরে বেণু দাদা বলাই বলিয়া॥
ঘনরাম গালের মন করে উচাটন।
দাদা রে বলাই বলি ডাকে ঘনে ঘন ॥
॥॥১২২৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৫৭ সংখ্যক পর। 'ভাটিরারি' হলে 'ভথা রাগ' ক। ২। 'বলরাম' প-র-সা। ৩। 'বলে খন' হলে 'শিভগণ' ক, খ, চ।

नावण ()

বট ভাণ্ডিরে খাবি ধলাই আর রে কার। ররজ-বালক সব ভোর মুখ চার। ধেমু তৃণ নাহি খায় তোহারি ধেয়ানে।
উচ্চ-পুচ্ছে ধায় সব ব্রজ্ঞ-পুর পানে।
যমুনার ভীরে যত রাখালের মেলা।
নাহিক নটন গীত নাহি কারু খেলা।
ভো বিমু নাহিক স্থুখ গহন কাননে।
যাদবেক্স ভাকে ঝাটণ দেও দুরুশনে।

1135561061

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৫৮ সংখ্যক পদ। ২। 'উচ্চ পুছহ' ক, প-র-সা। ৩। 'ঝাটি' প-র-সা।

তথা রাগ।১

ধাইয়াং আইল নন্দরাণী কেশ নাহি ঢাকে।
বাছার মুখের বেণু ভোরে কেনু ভাকে ॥
কানাইর মুখের বেণু শুনিয়া বলাই।
মাতল রোহিণী-স্ত ডাকে ভাই ভাই ॥
শিক্ষা-রবে বোলে কেনেং ডাক রে কানাই।
নিকটে ঘাইছিং আমি আর ভয় নাই॥
ঘনরামং দাস বোলে শুন যশোমতি।
জান না এমতি হয় রাধালের পিরিতিং॥
॥১১॥১২২৬॥

পঠিক্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭৫৯ সংখ্যক প্র।
'তথা রাগ' হবে 'ছুড়ী' খ; 'মঙ্গণ' প-র-সা। ২।
'ধাই' খ, প-র-সা। ৩। 'বোলে কেনে' হবে
'ক্হে কেন' ক, চ; 'কেন কেন' খ। 'আসিছি'
ক, চ; 'আসেছি' প-র-সা। ৫। 'বলরাম' প-র-সা।
१। 'মতি' ক, চ; 'রিতি' প-র-সা।

वक्त 13

বাঁকুয়াং পাঁচনী হাতে রকিয়া রাখাল সাথে वाहित देहलां दर्शिक्ति-नम्पन। भिष्म पिया है। ए-यूटब উভ করি দিলা ফুকে भिका-तरव (छिमिम गगन ॥ পরিধান নীল ধটী গলে শেভে হেম কাঁঠি কোটি চক্র জিনিয়া বদন। আৰুৰ্ণ শোভিত ঠান আঁথিয়ুগ খুৰ্মান শোভে কত রতন-ভূষণ 🛭 দেখিতে লাগয়ে সাধ धक कारन दर्शकनम व्यात कारण भकत-कृशन। জিনি ময়-মত হাতী গমন মন্তর-গভি थत्री कत्राय देलमल ॥ বাহির হৈলা বলরাম না দেখিয়া ঘন-শ্যাম **८थारम इनइन कुनग्रन।** खानमारमर्ज⁸ क्य মিলিলা রাখালময় माटक कति नटम्बत नम्पन ॥১२॥১२२१॥ পাঠান্তব

)। देश প-त्र-मा পुषित्र ১१७১ मःश्वाक शहा প-র-সা পুথিতে নিয়লিথিত পরার বারা পদটি আরম্ভ क्बा रहेबाट्ड, बबा-

'বাম ককে শিকা বলাইর কাপে রালা ফুল। বিহানা বাকণী পানে ছই ঞাখি রাতুল ॥' ২। 'ৰাখুৱা' প-র-সা। ৩। 'ৰাহির হৈলা' ছলে 'বেইরাইল রে' প-র-সা। ৪। 'ভানচক্র বাস' প-त्र-मा। 'मिनित्रा' क, थ।

দেশবয়াড়ী।>

কত কোটি চন্দ্ৰ জিনি **উজোর বাদন খানি** -मझ-इंटिन भटत मीन थेंगे। কর পদ হুরাভূল विमि (कांक्मप कुन विटनांव-फ्रट्भंत्र भाविभागि ।

वनाहे भद्रादिए जहिना कान्यन শ্ৰীকরে চম্পক বেড়া চাঁচর চিকুরে চড়া শিখি-পুচ্ছ উড়িছে প্রনে।ধ্রা কনক অঞ্চল বালা भटन देवकश्रसी माना मकत-कृधन अक कारन। কান্ধে শোভে শিক্ষা বেত্র বুর্ণিভ রাতুল নেত্র রাতা উত্তপল আর কাণে। বাধানে আসিয়া হুখে भिना निम ठाँप-मूर्य ডাকে শিক্ষা ধাও ধাও বলি। শুনিয়া শিক্ষার রব थारेल थवली मव **मिल राम दाथान-मखनी**॥ হাঁকি নিজ নিজ পাল সব করি সমিশাল সভে মেলি করি এক ছাঁদ^e। বলাই রক্তিয়া বড়ি হাতে নিল্' ছান্দন-ডুরি চলিলা যেমন পোণার টাদে । সকল রাখাল সচ্ছে পরম কোতৃক রঙ্গে তাল-বন পানে ঘন চায়। রূপ গুণ বেশ দেখি তুড়ায় ভাপিত আঁখি প্রেমদাস কি বলিবে ভার ॥১৩॥১২২৮॥

পাঠান্তর

১। हेरा श-त-मा श्रुवित ১१७२ मःबाक शरा। '(मन वत्राक़ी' ऋरम 'वत्राक़ी' म। २। 'वनारे' " শব ব পুৰিতে নাই। ৩। 'বাধানে' क, ধ, চ, 8। 'स्मिमान' ह। ६। 'हात्म' 'हिंग' क, थ, श-ब-मा। १। 'বেন' च। ৮। 'চান্দে' প-র-সা।

আসিয়া বলাই বলে কানাই ওরে ভাইয়া। আমারে ডাকিয়া ছিলা কিসের লাগিয়া। शामित्रा कामारे वर्ग वनारे अस्त्र करि। ८४पुर गामिया गटेंड छान यहा बोहे ।

শুনিরা বলাই॰ মনে হরষিত হৈয়া।
সামাইলাণ তাল-বনে কোতুক লাগিয়া॰ ॥
ক্ষিয়া আইল ধেমুক বলাই দেখিয়া।
লীলায় মারিল ভারণ পুচ্ছ ঘুরাইয়া॥
ভাল ফল লৈয়া সভে করিলা ভোজন।
ঘনরাম দাস হেরি আনন্দিত মন॥

128125591

পঠিস্তির

১। ইহাপ-র সাপুথির ১৭৬০ সংখ্যক পদ।
২। বিলাই' ক। ৩। কোনাই' ক। ৪।
বিলাই মনে' হলে বিলাইর কথা' ক। ৫। প্রবেশিলা' প-র-সা। ৬। কেরিয়া' ক, খ, চ,
প-র-সা। ৭। তারে প-র-সা।

ভাটিরারি ৷১

চলিলা রাথালগণ বথা গিরি গোবর্জন
ধেকুগণ ধায় আগে আগে।

ঘন বায় শিক্ষা বেণু গগনে গো-কুর-রেণু
চরণে শরণ মহী মাগে॥

যমুনার তীরে তীরে গোগণ আনন্দ চরে
পাছে পাছে ধার রামকামু।

শ্রীদাম স্থদাম দাম ধাইছে ডাহিন বাম
উভ করি মুখে দিয়া বেণু॥১৫॥১২৩০॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুণির ১৭৬৪ সংখ্যক পদ। 'ভাটিরারি' হুর্লে 'বরাড়ী' প-র-সা।

वानचे ।>

নানা খেল্পা খেল্পা শ্রমমূত হৈয়া বসিলা ভরুর মূলে। মলয়-পাবন বহরে সখন

इरम चत्रम আলসে বলাই শুইলা স্বল-কোরে। কানাই দেখিয়া আকুল হইয়া পাদ সম্বাহন করে॥ নবীন পল্লব लहेया जीमाम ं मघरन कंबरय वीग्र। বসন ভিন্ধাঞাং যতনে খানিয়া মোছারত বলাইর, গার ॥ ध्येम मृद्र रान नीजन इहेन वनतारमत्र औ-अन्। সব স্থাগণ হরসিত মন শিवाই (न**খर्य तक ॥**) ७।) २०) ॥ পঠিবির

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৭৬৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ভিপালা'প-র-সা। ১। 'মোছফে' প-র-সা। ৪। 'বলাই'ক,চ।

> অথ যজ্ঞপত্নী-অন্ন-ভোজন ভাটনার ৷>

ब्रीनम -नमन ক্রি গোচারণ मलिन ७ मूथ-मन् । সঙ্গে হলধর স্ব স্হচর বংশীবট -তলে বসি।। পুধায় আকুলং সকল রাখাল কহয়ে ভেজিয়া লাজ। হৃদয় বুঝিয়া কি খাবে বলিয়া **পুছ**য়ে রাখালরাজ ॥ অন্ন খাইতে চাই বটু কৰে ভাই বদি খাওয়াইতে পার । গোধন চরাই তবে স্থুখ পাই

किছ ना हारिएय जावर ॥

ৰটুর বচন শুনিয়া তখন
হাসি নবঘন-শ্যাম।
এ উদ্ধবদাস চির দিন আশ
পূরাহণ মনের কাম ॥১৭॥১২৩২॥
পাঠাত্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৬৪ সংখ্যক পদ। ২। 'নক্ষের' প-র-সা। ৩। 'খিলি তক্ষ' ঘ। ৪। 'আসি' প-র-সা। ৫। 'ব্যাকুল' ক। ৬। 'হৃদর বুঝিরা' ছলে 'ক্ষদরে ঝুরিরা' প-র-সা। ৭। পোরো' প-র সা। ৮। 'আরো' প-র-সা। ১।

গ্ৰীরাগ-একতালী তাল।১

'পুরাও' ক, চ, প-র-সা।

শ্ৰীদাম স্থদামে ডাকি কহয়ে কানাই। যাজ্ঞিক নিকটে চাহি অন্ন আন যাই । কহ গিয়া যান্তিক ব্ৰাহ্মণগণ আগে। রামকৃষ্ণ খুধায় ভোমারে অল মাগে ॥ শুনিয়া শ্রীদাম গিয়া মুনিং বরাবর। রামকুষ্ণ অন চাহে° কি কহ উত্তর ॥ মুনি কৰে কোন রামকৃষ্ণ কহ শুনি। বলে ত্রজরাজ-স্থৃত পরিচয় জানি ॥ व्यक्रग-नग्रत्न भूनि मरकाथ-वहन। বজ্ঞ-অগ্রভাগ চাহে গোপের নন্দন I দেবভারে অন্ন নাছি করি সমর্পণে। গোপ কাভি আপে মাগে ভয় নাহি মনে " निन्मा छनि श्रीमामापि कितिया चाहेना। মুনির ভৎ সনা রামকৃষ্ণেরে কহিলা ॥ অম নাহি দেয় আর কহে কটুবাণী। শুনিয়া উদ্ধবদাসের কাতরণ পরাণি 🛭

122175001

পাঠাতর ১। ইহা প-ম-সা প্রথিম ১৭৬৭ সংখ্যক পদ। ২। 'র্নির' প-র-সা। ৩। 'বাঙ্গে' প-র-সা। ৪। 'পোরাল' প-র-সা। ৫। 'আবুকুল' প-র-সা।

তথা রাগ ৷১

শুনিয়া শ্রীদামের কথা অন্তরে পাইয়া বেখা কহে ভূমি যাহ পুনর্বার। যাহাঁ যজ্ঞপত্নী রহে कर कुछ अज्ञ ठार्ट क्शनित्व देनत्रांभ नत्र कात्र ॥ শুনি আর বার ধাইং যজ্ঞপত্নী-ছানে যাই৽ কৃষ্ণ-আজ্ঞা কহিলা সম্বর। কহি তোমাদের আগে রামকুষ্ণ অল মাগে ইথে মোরে কি কহ উত্তর ॥ শুনি কৃষ্ণ-পরসক প্রেমে পরিপূর্ণ অক থরে থরে থালী সাকাইয়া। দিব্য অন্ন ভরি ভরি চলিলা যে সারি সারি কুল-ভম্ম লঙ্জা তেয়াগিয়া॥ আর এক মুনির নারী তার পতি করে ধরি वाधिना निर्द्धन-गृट्ट छादा। নিজ তমু তেয়াগিয়া यारेवादत ना भारेग्रा শ্রীকৃষ্ণ ভেটিগ দেহান্তরে॥ নানা অন্ন ব্যঞ্জন रेनग्रा मूनि-পত्नीगन যেখানে বসিয়া রামকামু। নবখন-শ্যাম দেখি প্রেমে ছল ছল আঁথি সমর্শিল অন্ন সহ ওমু । নিরখিয়া খ্যাম-রূপ কি কোটি কন্দর্প-ভূপ भ**प्त-**जल कदाय नि्हिन। এ উদ্ধবদাস কয় निश्ति नशिनः नम् व्यथित व्यभिग्ना-त्रम-थनिष् ॥১৯॥১२७॥॥ পাঠাতর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৬৮ সংব্যক পদ। ২। 'ধাইরা' প-র-সা। ৩। 'ধাইরা' প-র-সা। ৪। 'বাকে' ব। ৫। 'পূর্ব, হৈল' প-র-সা ৬। 'সংহ' ক, খ, চ, প-র-সা। १। 'লখিলে লখিল' হলে 'নিখিলে নিখিল' হ; 'লিখিলে লিখন' প-র-সা। ৮। 'খানি' প-র-সা।

পরিসরে'চ। ৮। 'মগন' ইত্যাদি ছলে 'নিষপন রুমণীর মন'ক, ধ;'নিমগন রুমণি-মিন-মন' ছ।

यज्ञ ।>

নবখন জিনি ভসু मिथन करत्राज त्वन স্বলের কান্ধে বাদ-ভুজ। চ্ড়া বান্ধাং শিখি-পুচছ বরিহা মালতী-গুচছ ভাত ভূক নয়ান অমুজ॥ অলকা তিলক ভালে কাণে মৰুর-কুগুলে পাকা বিন্ধু জিনিয়া অধর⁸। দশন মুকুভা-পাঁতি কন্থ-কণ্ঠ শোভে অভি মণি-রাজ হিয়া পরিসর ॥ বনমালা ভহিঁলকে সারি সারি অলি চুম্বে ক্ষীণ কটি স্থপীত বসন। নাজি-সরোবর পাশে ত্রিবলী-লতিকা ভাসে मगन ब्रम्गी-मीन-मन् রামরস্তা উরু-ছাম্দে কত বিধু নখ-চান্দে चक्रग-कमल भए-उता। দাড়াঞা কদম্ব-তলে বঙ্কিম লগুড় হেলে तत्र-जत्री नग्रान-वक्षात । ত্রিভন্ত-ভলিম রলে (वर्भ नहेवत्र-व्यक्त হাসিয়া মধুর মৃত্ বোলে। এ দাস উদ্ধৰ ভৰে ष्ट्रलिल त्रमगीगरण क्रिश दिश्य ना हत्य ।२०॥>२०८॥ পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৭৬৯ সংখ্যক পদ।
২। 'বাদ্ধা' দক্ষ ক পৃথিতে নাই। ৩। 'ভলী'
ক, ৬, চ, প-র-সা। ৪। 'জধরে' ব,চ। ৫।
'কঠে' ব। ৬। 'লোভা' ক,চ, প-র-সা। ৭।
'হিবা প্রিসর' হলে 'হিবার উপরে' ব; 'হিবা

शंघरक्ति।

यखा-পত्नी व्यव मिया নয়ান-ইঞ্চিত পায়া নিজ গৃহে করিলা গমনে। जन পाই वन मांट्य जानत्म वाशासनाटम স্থা সহ বসিলা ভোজনে॥ অগ্রন্থ শ্রীবলরাম কৃষ্ণ করি নিজ বাম टोनिएग दबछिया नव नथा। আনিয়া পলাশ পাত বাঢ়িলা ব্যঞ্জন জাত কি আনন্দ নাহি তারঃ লেখা। খাইতে খাইতে হুখে কেহণ দেই কারু মুখে বতা ভোজন রস-কেলি। খাইতে খাইতে আগে• ব্যঞ্জন যে ভাল লাগে প্রশংসি প্রশংসি ভাল বলি 🛭 কক্ষতালি দিয়া দিয়া ভূপ্তয়ে আনন্দ হিরা হুংখর সাগর মাঝে ভাসে। ভোজন হইল সায় আচমন কৈলাণ ভাষ গুণ গায় এ উদ্ধৰ দাসে ॥২১॥১২৩:॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৭৭০ সংখ্যক পদ। ২। 'পাঞা' ক; 'পাইরা' চ। ৩। 'আনন্দ' থ, খ। ৪। 'আর' থ। ৫। 'কেছ' থ। ৬। 'ফ্থে' প-র-সা। ৭। 'ক্রি' প-র-সা।

তাথ বন-বিহার যথা।

ছটা।

রাখালে রাখালে মেলা খেলিতে বিনোদ খেলা

অতিশয় শ্রম সভাকার।

ননীর পুত্নী শ্রাম ববির কিরণে যাম

শ্রমে যেন মুকুজার হার।

ক্রীদাম আসিয়া বোলে বৈসহ তরুর তলে कानांचे बहेटव मार्ट्ड वाका। ষম্না-পুলিনে ভাই কংসের দোহাই নাই কেছ পাত্ৰ মিত্ৰ কেছ প্ৰ**লা**। ৰনফুল আন যত সপত্ৰ কদম্ব শভ অপোক-পল্লব জাত্র-খাখা। শুনি শ্রীদামের কথা সকল আনিল তথা নবগুঞ্চা-গুচ্ছ শিখী-পাখাই ॥ গাঁথিয়া ফুলের মালে কদম্ব-তক্ষর তলে রাজপাট করি নিরমাণ্ড। এ উদ্ধৰ দাসে ভৰে कक्कडोलि चरन चरन व्यांचा व्यांचा वांकांग्र वंग्रान ।२२।১२०१॥

পাঠান্তৰ

)। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৭১ সংখ্যক পদ।
 । 'নব' ইত্যাদি স্থলে 'নবগুল্প শিথিপুদ্ধ পাথা' ।।
 'করি নির্মাণ' স্থলে 'করিল নির্দাণ' প-র-সা।

वाननी ।>

বিবিধ কুষ্ম দিয়া সিংহাসন নিরমিয়া
কানাই বসিলা রাজাসনে।
রচিয়া ফুলের দাম ছত্র ধরে বলরাম
গদগদ নেহারে বদমে।
আশোক-পল্লব করে স্থবল চামর করে
স্থানের করে শিথি-পুচছ।
ভারসেন গাঁথি মালে পরার কানাইর গলে
শিরে দের গুঞ্জাকল-শুচছ।
ভারস্কাং পুভি বানা ঠাঞি ঠাঞি বসাইলা থানা
আজা বিনে আসিভে না পার।
জীলাবাদি দুভ হৈরা কানাইর দোহাই বিরা
চারি পালে সুরিয়া বেজারুঃ।

করমুগ মৃড়ি তথি অংশুমান করে স্তাতি

নাজ-আজ্ঞা বচন চালার।
বটু করে বেদ-ধ্বনি পড়ে আশ্বীর্বাদ-বাঁশী
দাম ৰহুদাম নাচে গায়।
অতি মনোহর ঠাট নিরমিরা রাজপাট
কতেক হইল রস-কেলি।
এ উদ্ধবদাস কয় স্থ্য-দাস্থ-রসময়
সেবরে সকল স্থা মেলি ॥২৩॥১২৩৮॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুশির ১৭৭২ সংখ্যক পদ। ২। 'ডোকক্কক' খ,চ।

माबक 15

মোহন যমুনা-মাঠে অশোকের বন।
নবীন পল্লব সব অতি স্থশোভন ॥
তার মধ্যে তুই ভাই কৃষ্ণ বলরাম।
সখা সচ্ছে বিহররে অতি অনুপাম ॥
নবীন-জলদ-খ্যাম-তন্ম মনোহর।
ধাড়ু-রাগ-নবং-গুঞ্জা-শৃল্প-বেণুধর ॥
কদম্ম-মঞ্জরী কাণে শিধি-চক্র চুড়ে।
পীতবাস পরিধান বনমালা উরে ॥
জীদামের অংসে বাম ছন্ত-পল্ল দিয়া।
দক্ষিণ হন্তেত এক পল্ল মুরাইরা ॥
দাঁড়াইয়া তক্র-তলে সল্লে বলরাম।
নব মেহে চান্দে কিয়ে জেল এক ঠাম ॥
আহীর-বাশক সব বেণ্ট্ চারি পাশ।
মনের ছরিবে দেখে নবচক্র দাস ॥

পাঠান্তর

. 158175031

>। देश न-ब-ना श्रवित २१४० नश्तुम्भ नव। २। विभि-नव-वर्षः (क्षेत्रक्षः न्युक्ता) १ (दक्षः ধর' ক। ৪। 'অংক' ব, প:র-সা। ৫। 'রাম' ক, চ; 'ডেহ' প-র-সা। ৬। 'বাম হক্ত' প-র-সা। ৭। 'মেব চাক্ষ' প-র-সা।

विश्वात ।>

পীত-ধটা হেম-কাঁঠি ছান্দন ভূরি মাথে।
গাবী-দোহনং-ভাগু শোভে বাম হাতে॥
শিলা বেণু মুরলী দক্ষিণ কক্ষ-মূলে।
ধবলি বলিয়া ধায় কালিন্দীর কুলে॥
লক্ষিত শুঞ্জার মালা গোরোচনা ভালে।
গোধূলি-ধূসর অল কাণে ফুল-ভালে॥
ছান্দনের ভূরি আর রালা লড়ি হাতেও।
নবচন্দ্র দাস রহে চাহি এক ভিতে॥
॥২৫।১২৪০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৭৪ সংখ্যক পদ।
 ২। 'লোহনের' প-র-সা। ৩। 'হান্দনের' ইত্যাদি
ভণিতার কলি কেবল প-র-সা পুথিতে দৃষ্ট হর।

श्रीशंचात्र ।>

निरुग्र (मिन পাল জড় করি नामारेल यम्नात्र करल। करत्र जनभारन चानटम टगांगटन পিও পিও সভেং বোলে॥ জলে পেট ভরি উচ্চ পুচছ করি উপৰে উঠিল ধেমু। হেলিয়া হেলিয়া° রাখাল বেলিয়া चन बान्न भिका त्वर् ধেসু খাইরা খাইয়া° মৰ তুণ পাইয়া खनदत्र यमूना-छोदत्र। ক্ৰি গোচারণ म्यामन गटक किर्व ।

বেলি অবসান দেখি বলরাম

ধেমুগণ লৈয়া ফ্থে।

কৃষ্ণ মাঝে করি স্থাগণ খেরি

চলিলা গোকুল মূখে॥

গোঠে প্রবেশিয়া গোগণ রাখিয়া

পাথেতে মিলিলা মায়।
পুত্র কোলে নিলা পরাণ পাইলা

দাস গোবর্জন গায় ॥২৬॥১২৪১॥

ইতি ভৃতীয়-শাখায়াং ঘাবিংশতিপল্লবঃ।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৭ঃ সংখ্যক পদ।

২। 'সদা' প-র-সা। ৩। 'ছলিরা ছলিরা' ক, খ,
চ; 'ভূলিরা ভূলিরা' প-র-সা। ৪। 'থাইরা
ধাইরা' হলে 'ধাওরাইরা' প-র-সা। ৫। 'পোপাল'
প-র-সা।

অথ গোবৰ্দ্ধন-যাত্ৰা। তত্ত্বভিত-শ্ৰীগোরচন্দ্ৰঃ।

शिनापात्र ।>

দেখ দেখ অপরূপ গোরাজ-বিলাস।
পুন গিরি-ধারণ পুরব লীলা-ক্রেম
নববীপে করিলা প্রকাশ । গ্রন্থ ভক্তি গোবর্জন পূজা কর জগ-জন
এই বিধি দিলা কলি মাঝে।
শ্রেবণালি নব অল করাতরুময় শৃকং
পঞ্চ-রস ফল ভাবে সাজে ॥
পুলক-অঙ্কুর শোভা অশ্রু-জল মনোলোভা
মন্দ্র বায়ু বেপপু স্থুন্দর ।
নিজেক্রির-উপচারে সেব সেই গিরিবরে
ব্রেম্-মণি পাবে ইক্ট-বর ॥

দেখিয়া লোকের গতি কলিযুগ-স্থুরপতি কোপে তমু কম্পিত হইল। কুমতি-ইন্দ্রাণী সাথে **অধরম-**ঐরাবতে সসৈয়েতে পাজিয়া আইল ॥ কাম-মেঘ বরিষণে ক্রোধ-বন্ত নিক্ষেপণে লোকের হইল বড়॰ ভর। লোভ-মোহ-শিলাঘাতে মাৎসর্যাদি-খর-বাতে रेथर्वा धर्मा छेएए नित्रखत ॥ **बि**रगीताच प्रयाग्य জানিয়া জীবের ভয় উপায় চিखिला मटन मटन। ভক্ত-ভাব-সারোদ্ধার নিজে করি অপ্রাকার ভক্তি-গিরি করিলা ধারণে॥ ভাহার আশ্রয়ে লোক পাসরিল ছঃখ শোক कलि-छग्न थशिल जकला। ভবে কলি-দেবরাজ পাঞা পরাভব-লাজ স্থাতি করে চরণ-কমলে # অপরাধ ক্ষমাইয়া⁸ কৰে কিছু দীন হৈয়া যত জীব প্রভুর আশ্রয়। বেবা তব গুণ গায় তাহে মোর নাহি দায় এই সভা করিল নিশ্চয়। প্রভু তারে দয়া কৈল ধতা কলি নাম গুইল व्यक्षां निरं ८ घाष्ट्रम अश्मात । গোৰ্ব্ধন-লীলা-ছলে চৈডক্মদাসেডে বলে यूर्ण यूर्ण कीरवत छक्कांत ॥>॥>२8२॥

পাঠান্তর

)। देश भ-त-ना भूषित २११० नश्याक शव। 'श्रीनाकात' करण 'यानमी' भ-त-ना। २। 'यन' क, थ, ठ, भ-त-ना। ७। 'तहा' थ, भ-त-ना। ह। 'रक्ताहेबा' क, थ, ठ।

ভথা রাগ ৷১

গাও রে গাও রে হুখে কুফের চরিত। গিরি গোবর্জন-যাত্রা মনোরম শ্রবণ-মঙ্গল গীত। প্রণ। এক দিন ত্রজে ইন্দ্ৰ-পূজা কাজে সাজে গোপ গোপী যত। জানিয়া কারণ नटमत्र नमन ক্ৰেন আপন মত। শুন ব্রজ-রাজ গোপের সমাক ना शृंक प्राप्तत त्राका। মোর লয় মনে গিরি গোবর্দ্ধনে সাবধানে কর পূজা ৷ এহি দে উচিত মোর অভিমত পাইবে বাঞ্ছিত ফল। নানা উপহারে বস্ত্র অলঙ্কারে **अक्टब मिक्सि हल ॥** विध्य एम मान হইবে কল্যাণ মা ভাবিহ আন চীতে?। करर क्रक्षमान সভার উল্লাস শ্রীবাস-বচন-রীতে ॥২॥১২৪৩॥ পাঠান্তর)। रेहा भन्द्र-मा भूषित्र ১१११ मश्याक भन्।

क्यां साथ ।>

२। 'हिएक' क, व, भ-ब-मा।

কি আনন্দ আন্তু বৃন্দাবনে।
গিরি-গোবর্জন-পূজা না বার কহনেই এই।
দক্ষ আদি গোপ গোপী একতা হইরা।
গিরি-গোবর্জন পূকে নিকটে বাইরা।
দিন্টার প্রদার আনি ধরিলা সকলে।
ক্ষ-ত্ব পার নানা খাত কোলাবলে।

হেনই সমরে কৃষ্ণ দেব-মারা মতে।
আরোহণ একরপে করিলা পর্বতে॥
বেখি গোপ গোপীগণে প্রণাম করিলা।
সভে কহে গোবর্দ্ধন মূর্ত্তিমন্ত হৈগা॥
প্রণাম করিয়া কহে নন্দের নন্দন।
বেখ দেখ কি ভাগ্য যভেক গোপগণ॥
যত ব্রক্ত-বাসী সভে পাইয়া আহ্লাদ।
পর্বতের স্থানে মাগি নিল আশীর্বাদ॥
নানা দ্রেয় অলক্ষারে সাজায়া গোধনে।
বেদের বিহিত দান দিলেন ব্রাক্ষণে॥
কৃষ্ণের সহিত তবে গেলা গোবর্দ্ধনে।
ইন্দ্র-মথ-ভক্ত-কথা কৃষ্ণদাস ভণে॥

11885611011

পঠিক্তির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৭৮ সংথ্যক পণ। ২। 'গিরি-গোবর্জন' ইত্যাদি পংক্তিটি কেবল প-র-সা পুথিতেই দৃষ্ট হর। অক্তান্ত পুথিতে 'কি জানন্দ' ইত্যাদি পংক্তির পরেই 'ঞ'।চহু আছে।

তথা রাগ। ১

যত গোপগণ পুজে গোবৰ্দ্ধন ना देकल हैटन्द्रत श्रृजा। পাই অপমান **कार**भ कल्लमान^२ मिना (मरवद्र द्रांका ॥ कुष्ठ-निमा करत মহা অহম্বারে অজ্ঞানে মোহিত হৈয়া। ক্ৰে গোপ-পুরী মহাবৃষ্টি করি আজি ডুবাইব বাঞা। ডাকি মেঘগণে যতেক প্ৰনে আজা দিলা হুর-পতি। শিলা-বৃত্তি ক্রি ভাল ভ্ৰম-পুরী বাহ বাই শীত্র-গভি।

আপনে তখনে চড়িয়া বারণে वकु रुख (मवन्नाक। সঙ্গে সেনাগণ ছাইয়া গগৰ আইল গোকুল মাঝ॥ **ठ**ञ्जर्षिरग स्मरच थांत्र वांत्र् - त्वर्ग मित्न देशन व्यक्षकात । খর বরিষণে বজের কেপণে ভান্দিল ঘর ভুয়ার 🛭 প্রলয়ের হেন বৃষ্টি-ধারা ঘন বঞ্জনা চিকুর পড়ে। হাহাকার করি পথাপথ ছাড়ি खनवांनो नव नटफ् । পড়িয়া সকটে कृरकात्र निक्रि আইলা গোকুল-বাসী। মূপে মূথে কভ ধেমুগণ যত দাঁড়াইল নিকটে আসি 1 কুক্ত মহামতি গোকুলের পতি কর পরিত্রাণ বোলে। চৈতভোৱ দাস করি এই আশ এবার রাখ গোকুলে 181>২৪৫1

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৭৯ সংখ্যক পদ।
২। 'কম্পবান' প-র-সা। ৩। 'বাহনে' ক, ধ;
'বিমানে' প-র-সা। ৪। 'বাউ' ए; 'বহ' প-র-সা।
৫। 'বেপনে' ए। ৩। 'চিক্সর' প-র-সা। १।
'লড়ে' প-র-সা। ৮। 'বুথে বুথে কড' হলে 'বুথ
বুথ কুড' প-র-সা। ৯। 'টেডভ্রনাস' ক।

क्या जान ।>

নন্দ আদি গোপ গোপী বইলা বিকল। দেখিয়া জানিলা স্থক ইন্তে^২ করে বল ॥

এতেক ভাবিরা কৃষ্ণ নন্দের নন্দন। **এक रुख जुनिया भित्रना (गावर्कन ।** कम्मुरकत श्राप्त गिति धतिया रको इरक । সভারে ডাকেন আর জননী জনকে। আইস আইস সভে শিশু বৎসগণ লৈয়া। এই গঠে থাক আসি নির্ভয় **হ**ইয়া° ॥ (श्रीभंशन वर्ण कुक एन ८इ वहन। হাত হৈতে তোমার° যদি পড়ে গোবৰ্দ্ধন॥ সকল গোকুল-পুরী বাবে রসাভলে। কিসে হৈতে° রক্ষা তায়° পাইবা সকলে ॥ कांग्मिया यर्गामा रमवी करह रगांशनर्ग । একাকী পর্বত কুফ ধরিব² কেমনে ॥ কোথা রেণ্ড কৃষ্ণের প্রিয় শ্রীদান স্থদান। সভে মেলি গোবর্জন ধর বলরাম ॥ চৈতগ্ৰদাসেতে কৰে শুন যশোমতি। গোকুল রাখিতে ভুয়া সহায় শ্রীপতি ৷

16125861

পঠিবির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৮০ সংখ্যক পদ।

২। হৈক্রে ক। ৩। 'এই' ইত্যাদি পংক্তি হলে
'আনার নিকটে সভে থাকর আসিরা' প-র-সা।

৪। 'ভূরা' ব। ৫। 'হবে' প-র-সা। ৬। 'ভবে'
প-র-সা। ৭। 'পাইবে' ক, থ, চ, প-র-সা।
৮। 'রাণী' প-র-সা। ৯'। 'ধরিবে' ক, থ, প-র-সা।
১০। 'কোথা রে' হলে 'কোথার' প-র-সা।

कथा जान ।>

বেন কালে স্থী মেলেং রাই-কনক-গিরি
আচ্ছিতে করশন দিলা।

কাড়াঞা স্কণের তরে ধরি সহচ্যী-করে

মুখ বিনি শুলী বোলকলা

রাই নিব ফুমের-ফুঠান। স্মিত-স্বরধুনী-ধারে त्राम्य व्यवना वाद्य হেরি হেরি তৃষিত° নয়ান• ॥ নৰ অনুৱাগ-বাতে শ্বির নাহি বান্ধে চিত্তে भागविना निक मविवात । কাঁপে ততু পরহরে পর্বত ডোলরে করে भाग्रांत्य श्रांति भव्यांति ॥ লগুড় লইয়া করে কেহো কেছো গিরি খরে উদার ত্রজের গোপগণ। ननिज (मवी (ये इंमि मा शहेलां १ जाटम जानि वाहरवा कविना व अनुर्मन । ভাব সম্বরিয়া হরি রাখিল গোকুল-পুরী रेट्याद्य कतिया भवाक्य। হৈতক্মদাদের বাণী ত্রিভুবনে জয়-ধানি গোবর্জন-লীলা রসময় ১৩ ৫৬॥১২৪৭॥

পাঠান্তর

>। देश श-त-ना श्रीवंत्र >१৮> नःश्वाक श्रीवं २। 'सिनि' च; 'सिनि' श-त-ना। ०। 'त्र्य' देखानि दरन 'त्र्य रच जिनिता सिनकना' श-त-ना। ३। 'दर्शत' क, ठ; 'दर्शतन' थ। ८। 'फ्लिब' क। ७। 'नतारन' थ। १। 'कारश छन्न' दरन 'कारश्म' थ। ৮। 'ख्लानत' क, थ, श-त-ना। २। 'दर्शत' दरन 'रचती' क, थ, च, ठ। २०। 'विष्णदेना' क, ठ; 'खांकादेता' च। >>। 'तांदरत्व' क; 'तांदरत्वत' श-त-ना। >२। 'कतिता' क। >०। 'नीना तनवव' दरन 'नीनांत्र नवव' क।

তথা নাগ।>
জর জর অফেন্স-নন্দম।
অজের জীবন প্রোণ-থন ।
শরিবার সহ অজ-বাসী।
গর্জ বৈতে উঠিলা হর্মী

(महबादन नीमांत्र विदति। অপিলেন গোবৰ্জন গিরি 🛭 নন্দ আদি যতং গোপগণে । जानीकील करत कांग्रमत्न । (करहा (करहा करत्र चालिकन । স্থাৰ্গ স্থাতি করে দেবগণ। য়ােশালা বােহিণী হর্ষ পাঞা। हैं।ए-यंथ हम्बद्य हांशिया u আনন্দেতে নাচে বিভাধরী। পুষ্প বর্ষে অপ্সরাঃ কিন্নরী। দেববাজ পাঞা পরাভব। कत्र घुष्डि॰ करत नाना खर । নিজ অপরাধ কেমাইয়া। (गला जाभनात गण देलवा ॥ তৈত্তস্থানেতে ইহা গায়। ৰূপে ৰূগে ভক্তের সহায় ॥৭॥১২৪৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা, প-র-সা পুথির ১৭৮২ সংখ্যক পদ। ২। 'স্ব' প-র-সা। ৩। 'আনন্দেতে নাচে' হলে 'আনন্দে নাচেন' হ। ৪। 'অপছরি' প-র-সা। ৫। 'বোড়ে' চ।

भून» यथा।

398 IS

ক্ষের আদেশ পাঞা ইন্দ্র-যজ্ঞ নিবারিরা
নক্ষ আদি বত গোপগণ।
নানা উপহার লৈক্ষা সকলে একত্র হৈরা
আইলেন বথা গোবর্জন ।
সহস্র সহস্র জন বাজে জন ব্যক্তন
এক ঠাঞি লৈরা করে বালি।
দথি-ছুখ-সরোবর রোটা-বালি বরে ধর
হরিবে সাহারং জল-বাসী ঃ

শ্রীকুষ্ণের অন্তিমত পাক কৈল বস্তু মত সুপান্ত° পায়স শিখরিণী। ব্যঞ্চনের কত কুপ পৰ্বত সমান স্তুপ অন্নকোটি করিলা সাজনি 🛚 নানা বাছ্য বাজে কত নৰ্মকী নাচৱে খড সহস্র সহস্র লোকে গায়। যত গোপ গোপীগণ व्यक्तक ज्ञान আনন্দ অবধি নাহি পায়। ধেমু বৎস সাজাইয়া কভ স্বৰ্ণ-মুদ্ৰা লৈয়া ত্রান্সণেরে দেই নন্দরায়। মহা মহোৎসব রোল কে কার শুনয়ে বোল এ মাধ্ব দেখিয়া বেড়ায় ৯৮।১২৪১।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৮৩ সংখ্যক পদ। ২। 'না-ধার' ক। ৩। 'স্পাশু' ক, ধ, দ, চ; 'শুপার' প-র-সা। বোধ হর 'স্পার' গুদ্ধ পাঠ হইবে। ৪। 'ক্ষর্রোটা'প-র-সা।

श्रीवात्र ।>

নানা মত অন্নকোটিং করিয়া সাজন।
গোবর্দ্ধনে বিপ্রগণ কৈল সমর্পণ ॥
মুর্ত্তিমন্ত গোবর্দ্ধন আপনে আইলা।
অন্ন ব্যপ্তন সব ভোজন করিলা ॥
প্রসন্ধ হইয়া বর দিলা গোপগণে।
দেখি ব্রজ-বাসীগণ সবিম্মন্ন মনে ॥
কৃষ্ণ করে এই শৈল কর নমস্মার।
মাগি বর লেহ সভে যে ইচ্ছা বাহার ॥
বর দিয়া গোবর্দ্ধন অন্তর্দ্ধান হৈলাও।
প্রণাম করিয়া সভে বিম্মন্ন হইলা ॥
গোবর্দ্ধন,-প্রসাদ সভে করিলা ভক্ষণ।
আনন্দিত ব্রজ-বাসী প্রসন্ধ হৈল মন ॥

1212401

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুণির 3°৭৮৪ সংখ্যক পদ। ২। 'অরবোটা' প-র-সা। ৩। 'বৈলা' খ, চ। ৪। 'গোবর্ডনের' প-র-সা।

शांवणी ।>

श्रुका देकना रंगावर्कन যত ত্ৰজ-বাসীগণ ना कतिल हैट्यत चर्कनः করিল শৈলের পূজা শুনি ইন্দ্ৰ মহারাকা ক্রোধ করি ডাকে॰ মেঘগণ॥ मरात्कार्य रेज्यस्य প্রলয়-কালের মেঘ ठांत्रि करन जिल्ला कानिन। অভি কোপ_s-মন করি নন্দের গোকুল-পুরী · **जुवाहेर** जारत बाजा मिन ॥ ভবে দেব হুরপতি আনি ঐরাবত হাতী वांभणि कतिला वादताहर। গোধন নাশিতে মেঘ বায় অতি বায়-বেগ উপনীত নন্দের ভবনং 🛚 প্রনে করিয়া কড় উড়াইল বুক্ষ ঘর मूबन-धात्रांत्र शर् कन। ঝনকি তড়িত পাত ঘন হয় বজাঘাত करन पूर्व देशन छक्त चन । कृटकात्र जाएमम शाहा। दगांधनां मि नव देनहा (शावर्षान्त्र महेना भन्न । কুক্-চন্দ্ৰ অভি ত্ৰন্তি প্ৰাৱিয়া বাম হস্ত **प्रतिरमन** शिवि ८शांवर्षन ॥ তার নধ্যে গোপগণ ८४कू वदम धन जन সশক্তিত হইয়া রহিলা। बुष्टि कविश् भवरीन रैटाएव माउ पिन श्रीखर जाशनि मानिना ॥३०३**३**३०३३०

)। देश मन्त्रना श्रवित ३१४८ अरवीय श्रह

২। 'অশ্চন' প-র-সা। ৩। 'ফোখ করি ছাকে'
ছলে 'ডাকে খন খন' প-র-সা। ৪। 'ফোখ' ক।
৫। 'ছবন' খ, চ। ৩। 'জছ' প-র-সা। ॥
'ঝড়কি' প-র-সা। ৮। 'সগু' প-র-সা। »।
'করে' প-র-সা। ১০। অভঃপর খ পুথিতে 'ইভ্যাদি
শীক্রক্ষমকলে।' ও খ পুথিতে 'ইভ্যাদি।' পাঠ
দুই হয়।

তথা রাপ ।>

পর্বত-গভরে থাকি অন্ধ-বাসীগণ।
কৃষ্ণ রাখিলেন প্রাণ এই সভার মন॥
পরাভব মানি ইন্দ্র গেলা নিক্ক-ছান।
ধেমু বৎস লইয়া উঠে যভ গোপগণ॥
নন্দ যশোমতী অতি হর্ষিত হৈয়া।
বহু দান কৈল কুষ্ণের কল্যাণ লাগিয়া॥

122175651

ইভি তৃতীয়-শাধারাং ত্রয়োবিংশভিপল্লবঃ। পাঠান্তর

)। हेहां भ-त-ना भूषित २१४७ मश्याक भाग

অথ শরৎকালীয়-পূর্ণিমায়াং ম**হারাগঃ।** তছচিত-**শ্রি**গৌরচন্দ্রঃ। ছু**ট**়।

বৃদ্ধাবন-দীলা পোৱার মনেতে পজিল।

যমুনার ভাব স্থরধুনীয়ে করিল ।

স্থানর দেখি বৃদ্ধাবনের ম্যান্ত।

সহচরগণ গোপীগণ অসুমানং ।

গোল করতাল গোরা স্থানিক করিলা।

ভার, নাকে নাচে গোরা স্থান করিলা।

যাস্যান্ত নামে আরে করতে বিনার

পাঠান্তর ১। 'সমানে' ব, চ। ২। 'অভুমানে' ব, চ।

TCAIR I নাচত গোর রাস-রস অন্তর গতি অতি ললিত ত্রিভঙ্গী। वत्रक-ममाक वमिश्रिश देवहन তৈছন অভিনয়-রঙ্গী। (तथ (तथ नवदीश माता। বাওত গাওত মধুর ভকত শত মাঝহি বর-বিজরাজ ১৫% ভা ভা জিমি জিমি মাদলং হুবাঞ্চত ঝুতু ঝুতু তুপুর রসাল। রবাব বীণাণ আর সর-মগুল হুমিলিত করণ করতাল। এ হেন আনন্দ না হেরিয়ে ত্রিভুবনে ় নিরুপম প্রেম-বিলাস। ও হুখ-সিক্ষু পরশ কিয়ে পাওব কৰ রাধামোহন দাস ||২||১২৫৪॥

পাঠান্তর

)। 'नमाबा' क, च। २। 'मृत्रक' क, ठ। ७। 'बीग' क, च, ठ। ৪। 'कक्र' थ।

অভিদার।

কাবড়া।>
শরদ-চন্দা পবন মন্দা
বিপিনে ভরল কুন্তম-গন্ধ
ফুল্ল মলিকা মালতি যুথি
মন্ত-মধুকর-ভোরণিও।
হেরভা রাতি ঐছন ভাতি
শুদা মোহন মদনে মাতি
মুরলি-গান পঞ্চম তান
কুলব্ডি-চিড চোরণিও।

শুনত গোপি প্রেম• রোপি মনহি মনহি আপন সোপ তাঁহি চলত যাঁহি বোলত মুরলিক কল শোলনি ।। বিসরি১১ গেহ নিজ্ঞ ১২ দেছ এক নয়নে কাজর-রেছ বাহে রঞ্জিত কঙ্কণ একু১৬ একু কুগুল ডোলনি । भिथिल-इन्म निविक वन्ने বেগে ধাওত যুবভিবুন্দ খসত বসন রসন চোলি>• গলিভ বেণি লোলনিং। তত্হিঁ ১৮ বেলি স্থিনি মেলি কেন্ত কান্তক পথ না হেরি এছে শলল গোকুল-চন্দ त्ग्रिक्ममाम् गाञ्जिक् ॥ ०॥ ३ २००॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ১৫০০ ও প-র পুলির

৩৮।২ সংখ্যক পদ। 'কানড়া' হুলে 'টোড়ি রাগ'
প-র-সা; 'কেদার' প-র। ২। 'রুতি' ক, চ;
'জোতি' খ; 'জুলি' খ, প-র-সা। ৩। 'জোরণী'
ক, খ, ড়, চ, প-র। ৪। 'হের' থ; 'হেরই' প-র।
৫। 'চোরণী' ক, খ, য়, চ, প-র। ৬। 'প্রোমহি'
খ। ৭। 'মনহি মনহি' ঘ। ৮। 'আপনা' ক।
১। 'মুরলিক কল' হুলে 'মুরলি কনক' প-র-সা।
১০। 'লোলনী' ক, খ, য়, চ, প-র। ১১। 'বিছুরি'
ক, খ, য়, চ। ১২। 'নিজহি' প-র-সা, প-র।
১৩। 'কয়ণ একু' হুলে 'মজির এক' প-র। ১৪।
'জোলনী' ক, খ, ড়, চ; 'হোলনি' প-র-সা, প-র।
১৫। 'নিবি নিবছা' প-র-সা, প-র। ১৬। 'চৌনি'
প-র-সা। ১৭। 'লোলনী' ক, খ, য়, ঢ়, প-র;
'ললনি' প-র-সা। ১৮। 'ভবহি' প-র। ১৯।

'ঐছনে' ক, ধ, प, চ, প-র-সা। २०। 'বোলনী' ক, ধ, प, চ; 'গারনি' প-র-সা।

महाति । ১

বিপিনে মিলল গোপ-নারি
হেরি হসভং মুরলিধারি
নিরধি বয়ন॰ পুছত বাত
প্রেম-সিন্ধু গাহনি॰।
পুছত সবকং গমন-খেম৬
কহত কীয়েণ করব প্রেম
ক্রেক সবছঁ কুশাল বাত
কাহে কুটিল চাহনি৽॥
হেরি ঐছন৽ রজনি ঘোর
তেজি তরুণি পতিক কোর
কৈছে পাওলি৽ কানন ওর্ণং
থোর নহত কাহিনি৽।
গালিত-ললিত-কবরি-বন্ধ্বঃ
কাহে ধাওত যুবতিবৃদ্দ
মিদিরে কিয়ে পড়ল দক্ষাং

বেঢ়ল বিপথ-বাহিনি> ।
কীয়ে শরদ> চান্দনি রাতি
নিকুঞ্জে ভরল কুস্থম-পাঁতি
হেরত খ্যাম অমর>৮-ভাতি

বুৰি আওলি সাহনি ।

এতই কহত ২ না কহ২ কোই
রাখত কাহে মনহিং গোই
ইহহি আন নহই কোইং

रगाविन्ममान गांडनि^{२०} ॥८१४२०७॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ র-সাপুথির ১৫০১ ও প-র পুথির ওচাত সংখ্যক পদ। 'মলার' ফ্লে 'তথা রাগ' প-র-সা, প-র। ২। 'হাসত' য, প-র। ৩।

'বিয়ান' ক, চ। ৪। 'পাহনী' ক, ধ, ঘ, চ; 'গাওনী' প-র। १। 'मकन' भ-द्र-मा। ७। 'ርጥዛ' ኞ | 9 | 'कहड कीख' ऋल 'कहड কিৰে' क; 'কছ অব কিৰে' প-র। 'नकन' भ-त्र। अ। 'ठाहनो' क, थ, ब, ह, প-র। ১০। 'হেরি এছন' স্থলে 'ছেরত এছে' প-র-সা; 'ছেরত ঐছন' প-র। ১১। 'পাওল' च, ह। ১२। 'टेक्ट्इ' हेन्डानि ऋत्न 'काट्ड आवनि কানন ওর' প-র-সা, প-র। ১০। 'কাহিনী' क, খ, ঘ, চ, প-র। 'থোর' ইত্যাদি স্থলে 'কছ না (थांत्र काश्नि)' श-त । '३८। 'तृत्त्र' क, च, घ, घ, ১৫। 'ৰন্দ' ক, খ, পার-সা। ১৬। 'বাহিনী' ক, খ; 'বাহনি' চ; 'বাহনী' ধ। ১৭। 'কীরে শরদ' স্থলে 'কিরে শারদ' ক। ১৮। 'ভর্ম' প-র-সা; 'শ্রম' প-র। ১৯। 'সাহনী' কি, খ, ৰ, চ, প-র; 'শোভনী' পাঠান্তর থ: 'সাছিনি' প-র-সা। ২০। 'এত হঁক হত' ছলে 'এত হি কহি' প-র-লা, প-র। ২১। 'না কহ' ছলে 'নাহক' চ। ২২। 'মোহে' প-র। ২০। 'ইহহি' ইভ্যাদি यान 'हेरहे जान न हारे काहे' व, ह; 'हेरहि আন কোহি না হোই' প-র-সাঃ 'শুনি আনন বিরদ হোই' প-র। ২৪। 'গায়নী' ক, ব, চ; 'গাওনী' 위-로 I

विका

৩—৪। "নিরখি" ইত্যাদি। (শ্রীক্রঞ) পোণা-সনাদিগের বদন নিরীকণ করিরা বার্তা জিজাদা করিতেছেন,—(যেন) প্রেম-দিল্লুতে অবগাহন।

শেন শুক্ত" ইত্যাদি। (প্রীক্ষণ) সকলের গমন-কুশল বিজ্ঞানা করিতেছেন এবং বলিতেছেন, (ডোমাদিগের) কি প্রীতি-স্চক কার্ব্য করিব? বজের সকলের মকল-বার্বা বটে ত १—কেন কুটিল দৃষ্টিপাত (করিতেছ?) তুলনা করুন,—
'যাগতং বো মহাজাগাঃ প্রিয়ং কিং করবাণি বঃ। বজ্ঞানাময়ং ক্চিদ্ ক্রভাগমনকারণ্য,।'

---- विनडांशवड, ১०१२॥>१।

৯—১২। হিছেরি" ইত্যাদি। এক্সপ খোর (অক্কার-বুক্ত) রজনী দেখিরা, যুবতী (তোমরা) খামীর ক্রোড় পরিত্যাগ করিয়া কির্নুপে কানন-প্রাক্তে উপস্থিত হইলা

শু—(ইহা) অর কথা নহে।

১৩—১৬। "গলিড" ইত্যাদি। স্থন্দর কবরীবন্ধন অলিত হইগ্নছে—এরপ ব্বতি-বৃন্ধ (তোমরা)
কি জন্ত (বনে) ধাবিত হইতেছ; গৃহে কি কল্
উপন্থিত হইগ্নছে? বিপথ-গামিনী অর্থাৎ কুল্টা
ত্রীগণ কি (তোমাদিগকে) বেষ্টিত করিয়াছে?
(কুল্টাদিগের সাহচর্য্য কুল্বতীগণের গৃহ-ত্যাগের
বলবৎ কারণ বটে।)

১৭—২০। "কীরে" ইত্যাদি। কিংবা (আঞ্জ)
শরৎকালীর জোৎসাময়ী রজনী; কুস্থম-সমূহে কানন
পরিপূর্ব করিয়াছে; শুমান্দ (শ্রিক্রফকে) ভ্রমর(প্রের) ভার দেখিয়া আধীনা (তোমরা) বোধ
হর, (এথার) আসিয়াছ! ('হেরড' ভাবে
সপ্তমী)।

২১—২৪। "এতছ" ইত্যাদি। (প্রীকৃষ্ণ) ইহা কহিলে, কেহ (কিছু) কহিলেন না; (তথন প্রীকৃষ্ণ বলিলেন) কেন (মনের কথা) মনে গোপন করিরা রাখিতেছ ? এখানে অক্ত কেহই নাই!— গোবিন্দদাসের এই গান।

यान्य ।>

প্রছন বচন কহল যব কান।
ব্রজ-রমণীগণ সজল-নয়ান ॥
টুটলং সবছাঁ মনোরখ-করণি।
অবনত-আননে নখে লিখু ধরণি॥
আকুল অন্তর গদগদ কহই।
অকরুণ-বচন-বিশিখ নাহি সহই॥
শুন শুন কুকপট শুামর-চন্দ।
কৈছে কহসিং ভুহাঁ ইহ অমুবদ্ধং॥
ভাঙ্গলি কুল-শিলং মুরলিক সানেং।
কিছেরিগণ জন্মু কেশ ধরি আনে॥

অব কহ কপটে ধরমযুত বোল।
ধার্মিক হররে কুমারি-নিচোল।
ভোহে সোঁপিত জিউ তুয়া রস পাব।
তুয়া পদ ছোড়ি অব কো কাইঁ৷ যাব॥
এতত্ত কহল ত্রজ-যৌবত মেল।
শুনি নন্দ-নন্দন হর্মিত জেল॥
করি পরসাদ ভহি করয়ে বিলাস।
আনন্দে নির্ধয়ে গোবিন্দদাস॥१॥১২৫৭॥

পাঠান্তর

> ইহা প-র-সা পুথির ১৫ • ৪ সংখ্যক পদ।

২ । 'টুটল' ক ; 'ছুটল' প-র-সা। ৩ । 'কহন্ত'
প-র-সা। ৪ । অভঃপর প-র-সা পুথিতে নিম্ন-লিখিত কলি ঘারা এই পদটি শেষ করা হইরাছে।

হথা,—'নয়নে গলয়ে জল বুক বারা পড়ে।

কালরে মজিল কুচকুন্থুম পাধালে ॥'
প-র-সা পুথিতে অতঃপর 'বধা রাগ। পরমধার্শ্রিক
হরা ধরম নিধাও হে। জ্ব ॥' পংক্তি দারা একটি
নৃতন পদ আরম্ভ করা হইরাছে। ৫। 'কুলনীল'
ক, ধ। ৬। 'মুরলিক সানে' হলে 'মুরলীর পানে'
প-র-সা। ৭। 'কপটে ধরমবুত' হুলে 'ধরম
কপটবুত' প-র-সা। ৮। 'জীউ' ক, ধ, প-র-সা।
৯। 'কহত'ক, ধ। ১০। 'কবি'ক।

মহারাদঃ।

কামেন।>
কাঞ্চন মণিগণেই জমু নিরমাওল
রমণী-মণ্ডল সাজ।
মাক্ষহি মাঝ মহামরকত-মণিই
শুসামর নটবররাজ ॥
ধনি ধনিই অপরুপ রাস-বিহার ॥
ধীর বিজুরি সঞ্জে সঞ্চরুই জলধর
রস বরিষয়ে জনিবার ॥ এ ॥

কত কত চান্দ তিমির পর বিলসই
তিমিরক্ত কত কত চান্দে ।
কনক-লতারে তমালত দ কত কত
হত হত তমু তমু বান্ধে ॥
কত কত পত্মিনি পঞ্চম গাওত ।
মধুকর ধরু শ্রুতি-ভাব।
মধুকর মেলি কত পত্মিনি । ।।।১২৫৮॥
পাঠান্ধর

১। ইহাপ-র-সা পুথির ১৫১৫ ও প-র পুথির ৩৮। সংখ্যক পদ। 'কামোদ' হুলে 'ধাননী' প-র-সা। ২। 'মণিগণ' ক, প-র-সা। ৩। 'সম' ক, খ, চ, প-র-সা। ৪। 'ধনি ধনি' প-র-সা পুথিতে নাই। তৎ হুলে 'রুক্ষাবনে' প-র। ৫। 'চক্ষণ' ক, প-র-সা। ৬। 'তিমিরহি' ক। ৭। 'চাক্ষণ' প-র। ৮। 'তমালহ' ছ। ১। 'বাদ্ধ' প-র। ১। 'পঞ্চম গাওড' হুলে 'বারত গারত' প-র-সা। ১১। 'কমলিনি' প-র।

অত্যন্তরে অন্তর্কানং যথা।

CHRISTS

রাস-বিহারে মগন শ্রাম নটবর
রসবতি রাধা বামে।
মগুলিং ছোড়ি রাই-কর ধরি হরি
চললি আন বন°-ধামে ॥
যব হরি অলখিত ভেল।
সবহঁ কলাবতি আকুল ভেল অতি
হেরইতে বন মাহা গেল। জ্রা।
স্থিপণ মেলি সবহঁ বন চুঁড়ইং
পূছ্ইং তক্ষণণ পাল।
কাহা মন্ম প্রাণ-নাধ ভেল অলখিতং
না দেখিয়া জিবন নিরাশ ॥

কৰ কৰ কুস্থম-পুঞ্চ তুৰুঁ ফুলিভ শ্যাম-ভ্ৰমন কাৰ্হা পাই। কোন উপায়ে নাৰ মনু মীলব> উদ্ধাবদাস তাহাঁ যাই ॥৭॥১২৫৯॥ পাঠান্তন

১। ইহা গ-র-সা পুথির ১৫১৭ সংখ্যক পদ।

২। 'মগুল' ক, ধ; 'মগুলী' প-র-সা। ৩।
'আন বন' হলে 'নিকুল' গ-র-সা। ৪। 'সকল'

ব। ৫। 'চুড়ই' ব, চ। ৬। 'পুছুই' ক, ধ,
প-র-সা। ৭। 'কাহাঁ' ইত্যাদি হলে 'কাহাঁ মঝু প্রাণনাথ ভেল অতি অল্থিত' ক, ধ। ৮। 'কুল' প-র-সা। ৯। 'কোন উপারে' হলে 'কোনছ উপার' প-র-সা। ১০। 'মিলব' ক, চ, প-র-সা।

क्या जात्र ।

পনস পিয়াল চুভবর চম্পক व्यत्नांक वकून वक नीन। একে একে পৃছিয়াং উত্তর না পাইয়া আওল তুলসি সমীপ॥ জাতি যৃথি॰ নব-মল্লিক॰ মালতি शृंहन मझन-नश्रादन। উতর না পাই পতিনি সম মানই **मृत्रिं कत्रन भग्नात्न** ॥ পুন দেখে তরুকুল অভিশয় ফলফুল-ভবে পড়িয়াছে মহি-মাঝ। কামুক হেরি প্রণাম করল ইয ध भर्ष हनन खन-त्रांन এত কৃষি বিরুদ্ধে বেয়াকুল অভিশন্ন खक-त्रमगीत्रन द्वाता। উদ্ধবদাস বহ খ্যাম ভেল অলখিও क्षि धर्म मीनव भाष्त्र स्था १४। १२७०।

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১৫১৮ সংখ্যক পদ।
২। 'পুছিরা' ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'যুখী'
ক। ৪। 'মলিকা' ক, খ, প-র-সা। ৫। 'পাইরা'
ক, চ। ৬। 'দেখি' প-র-সা। ৭। 'মিলব'
ক, প-র-সা।

छ्या त्रांत्र ।>

মুখে যুখে রক্তিণি বরজ-বর-কামিনি যামিনি কানন মাহ। সব জন পরিহরি কুঞ্চে চলল হরি করে ধরি রাইক বাহ। प्रक्रमी.º व्यव हित (कान कानन माहा (गल। গুণবৃতি গুণহি মনহি মন বান্ধল নাগর অমুকৃলঃ ভেল ॥ ঞ । ঠামহি ঠাম চরণ-চিহ্ন হেরই রাই করল যাই। কোর। কুম্ম ভোড়ি বছ বেশ বনায়ল হ্বরত-রভসে ভেল ভোর॥ কিশলয়-শেক ঠামহিঁ ঠাম হেরই টুটল° কত ফুলমাল°। দুহ অঞ্পরিমলে কামন বাসল शक्षद्य मधुकत-कान ॥ धनि धनि व्रमनि-भिरवामनि सम्मिवि कांत्रांथल मनमथ (पर । (भाभानमात्र कर ७ नरहित नरू রাধামাধ্ব সেব ॥৯॥১২৬১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৫১৯ সংখ্যক পদ।
২। 'বুৰে বুৰে' ক। ৩। 'সজনি' ক, ব, চ,
প-র-সা। ৪। 'অলুক্ল' ক, ধ। ৫। কেবল
প-র-সা পুৰিভে 'জ' চিক্ আছে। ৩। 'টুটল'

ক, চ, প-র-সা। ৭। 'কুলবান' প-র-সা। ৮। 'কান' প-র-সা। ৯। 'পোণালদান' ইত্যাদি ফলে 'গোণালদাস কহন্তে সহচন্তি সহ' প-র-সা।

थाननी ।>

সকল রমণিগণ ছোড়ি বর-নাগর রাইক কর ধরি গেল। বনে বনে ভ্রমই কুমুমকুল ভোড়ই (कम-(वम कत्रि (मल । চলইতে রাই চরণে ভেল বেদন কান্ধে চড়ব মন কেল। বুঝইতে ঐছে বচন বহু-বল্ল ভ নিজ তমু অগখিত ভেল। না দেখিয়া নাহ তাহিঁ ধনি যোগত হা প্রাণনাথ উতরোলে। ব্ৰজ-রমণীগণ না দেখিয়া মন-ছুখে ভাসল বিরহ-হিলোলে ॥ উদ্দেশে কেই কোই বনে পরবেশিয়া হেরল রোদতি রাধা। मिश्राम (मिल संत्रि भन्न ल्रेहे॰ **उद्य**वनाम हिटल वांथा । > ॥ > २ ४ २॥

পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫২০ সংখ্যক পদ। ২। 'বুৱইতে ঐছে' হলে 'বুৱাইতে ঐছন' প-র-সা। ৩। 'তাহি' ৼ, 'তহি' প-র-সা। ৪। 'ব্রহাক রমণ'থ। ৫। 'সূঠই' ক, চ, প-র-সা।

তথা রাখ।>

সভে মিলি বৈঠন কালিন্দি-ভীর। কার কার সবহঁ নয়নেং বহ নীর॥ কাই। গেও নাহ° ছখ-সাগরে ডারি। অবলা-মতি কৈছে তরইতে পারি°।

বিবছ-বিয়াধি° -বিরামক লাগি। গাওত তছু গুণ যামিনি জাগি॥ विध-जन वानि वर्ष खद्य दाथि। অব কাহে মার্সি অক্রণ-আঁখি॥ যবন্ত চলসিও বন গোধন সাধ।, নিমিখে মানিয়ে জমু যুগ-শত যাত। অব কৈছে ভুয়া বিমে ধরৰ পরাণ। তব বচনামুত্র না করিয়ার্থ পান ॥ ८७ भव²-भक्क (कांमन कांनि। স্তন-যুগে রাখিতে ভয় অমুমানি ॥ देक्ट्र कफेक-वटन कन्नि विश्वतं । সোভরি সোভরি জিউ ধরই না পার>> ॥ এত কহি রোয়ত গদ গদ ভাষ। কহ রাধামোহন দাসক দাস #১১#১২৬৩#

পঠিস্তির

১। हेहां প-त-नां পुचित्र ১৫२১ मरशाक शहा २। 'नवन' घ। ७। 'नाथ' क, ४, च, ठ। ८। 'অবলা' ইত্যাদি হলে ঘ পুৰির পাঠ বথা—'পহিলে बिवार भागाँठ भून माति।' १। 'भटवार्थ' थ, प। 'চলল' প-র সা। ৭। 'চরণামৃত' প-র-সা। ৮। 'कतिरत्र' क। २। 'छव' श-त्र-मा। ১०। '(वहांत्रि' म। ১১। 'नात्रि' ह।

बबाढी ।>

় তব কথামুডং ডপ্তজীবনং कविकित्रीष्ठिः कन्मश्राभशः। শ্রবণমক্ষলং শ্রীমদাততং **जू**वि शृंशिख त्व ज़ूबिमा कनाः । পাঠান্তর

১। এই শ্ৰীমণ্ডাগৰতীয় শ্লোকটি প-র-সা

हेर्राटक चठड भए-क्रांभ श्लीक क्रिएंग २८म भन्नावित्र निर्किष्टे भए-मरशा वाष्ट्रिया यात्र । তথাপি भएक ब्र-তক্র সকলগুলি পুথিতে গ্লোকটি উদ্ধৃত হওয়ার উহা আমরাও উদ্ধৃত করিলাম। ২। 'কবিভিন্নী-ড়িতং' হলে 'কৰিভিন্নীরিতং' ক, ধ, চ পুৰি।

विक!

"ভবে"ভ্যাদি। শ্ৰীকৃষ্ণং প্ৰতি গোপী-জন-বাক্যম। তব কথা এব অমৃতং ভূরিদাঃ পূর্বজন্মনি বহ-দাতারো জনা পরম-স্কৃতিন ইত্যর্থ: ভূবি সংসারে আততং বিস্তৃতং যথা স্যাৎ তথা গৃণস্কি প্রাপ্ন বস্তি। क्थामृडः कीमृनम् ? उश्चानाः সংসারানলদ্ধানাং कोवनः कोवनबरकोवधः कविष्ठित्रं कामिष्ठिबीष्टिष्ठः স্তাহ্য কলাষাপ্ৰহ পাপনাশনং শ্ৰীম্থ সৌভাগ্যাম্পদং কল্যাণাবহমিতি ভাব:।

অমুবাদ

সংসারে বাঁহারা পর্ম-পুণাবান্ ব্যক্তি, তাঁহারাই এদ্ধাদির প্রশংসিত ক্সুব-নাশন, প্রবণ-মুদ্দ ও কল্যাণকর আপনার কথামৃত প্রভূতরূপে লাভ कवित्रा शंदकन !

বিহাগতা 13

অক্সামক্ষ্মামন্তরা মাধবো মাধবং মাধবং চাস্তবেপাক্ষনা। ইখমাকল্লিতে মণ্ডলে মধ্যগো **(त्रश्ना जःकर्शा (प्रवकी-मन्पनः ॥** 11212481

পাঠান্তর

 हेर्हा भ-त्र-मा भूबित ३६२७ मःश्वाक भए। টাকা

১--৪। "অখনা"বিত্যাদি। মাধবঃ অখনাং क्रमताः क्रमता श्राप्तित्रवाननावत्रत्र मध्यवी । 'व्यव-(त'क) वात्र-(वार्श विक्रीता। ज्यामना ह मांथवर मांथवर পুৰিতে উদ্ভ এবং চ পুৰিতে গণিত হয় নাই। অস্তরেণ প্রভাকমাণব প্রকাশরোঃ মধাবর্জী। 'অর-

রেণে'তাব্যমবোগে বিতীয়া। ইখং অনেন প্রকারেণ আকলিতে রচিতে মণ্ডলে চক্রাকারেণ রাস নৃত্যে মধ্যগো মধ্যবর্তী সন্ দেবকীনন্দন: শ্রীক্রফঃ বেণুনা সংজ্ঞা গানং ক্রতবান্। "অক্ত সর্বব্রজাগনা-মধ্যগতত্বং অলাতমিব দর্শনং চক্রভ্রমন্তারেন নৃত্যবিশেষকোণ-লেনেতি বোধ্যং ন বৈখার্থ্যে ।" ইতি রাধানোহনঃ।

অমুবাদ

প্রত্যেক ব্রদাসনা-ব্রের মধ্যে প্রীক্ষণ ও বছরপে প্রকাশমান, প্রত্যেক শ্রীকৃষ্ণব্রের মধ্যে ব্রদাসনা— এইরপে সংগঠিত রাস-মণ্ডলের মধ্যগত হুইয়া দেবকীনন্দন শ্রীকৃষ্ণ বংশীর গান বিস্তার ক্রিলেন!

তাৎপৰ্ব্য-ব্যাখ্যা

রমণীব্য পরস্পরের কর ধারণ করিয়া মণ্ডলা-কারে যে নৃত্য করেন, উহাকে রাদ বা মণ্ডগী-নৃত্য বলা হয়। সহস্ৰ সহস্ৰ ব্ৰদাননাদিগের সম-ভাবে व्यानम-वर्त्तन कतिए हरेल, बीक्क छांशांपरशत প্রত্যেকের সহিত যুগপৎ নৃত্যাদি করিতেছেন, তাঁহাদিপের মনে এই বিখাদ উৎপাদন করা আৰম্ভক। অবগ্ৰ শ্ৰীভগবানের পিক্ষে ইহা অসম্ভব नरह। 'दर्गाराभेदान कृत्कन जानाः मर्या इत्ता-ৰ্ষা:। প্ৰবিষ্টেন পূৰীতানাং কণ্ঠে স্থানিকটং গ্ৰিয়: ॥' এই ভাগৰতীয় শ্লোকের শ্রীধর-স্বামি-ক্লত ব্যাখ্যার আভাবে বুঝা ৰাম্ন ৰে, এক্সিঞ্চ বোগ(মানা) ৰাবা ৰুগপৎ বহু মূৰ্ত্তি পরিপ্রাহ করিয়া এই কার্যা সিদ্ধ क्रिवाहित्यन । क्रिक श्रीकृष्णगीमात्र वित्यवनगी সনাতন গোস্বামী ও বিখনাথ চক্রবন্তী শ্রীক্রফের মধুরভাবাত্মক ত্রল-লীলার এখর্য্য প্রকাশ অবৌক্তিক मरन कतिका. व्याच्या कतिबारकन रा, वच्छाः अवहे কৃষ্ণ নৃত্য-পটুতা হেডু এক সমরেই সকল গোপী-দিপের নিকটে আছেন বলিয়া প্রতীত হইয়াছিলেন। বিখনাথ চক্রবর্তীর মতে পুর্কোক্ত ভাগবতীয় শ্লোকের 'ক্ষেন' ও পরবর্ত্তী 'তত্তাতিশুগুভে তাভির্ভগবান্ (एवकी खुळ:। याधा मनी नार (इयानार महायात-কতো ৰথা ॥' লোকের 'মহামারকড:' এই এক-वहनाख शब-वत्र वाता अहे अधिआतहे ऋहिक हत्र।

বস্ততঃ প্রশিধান করিলে টীকাকারদিগের এই মতবিরোধের বিশেষ সার্থকতা দেখা বায় না। বে
অভূত নৃত্য-কৌশল ধারা নর্ভক ব্গণৎ সহস্র সহস্র
প্রকাশরণে প্রতিভাত হইতে পারেন, তাহা
অলৌকিক ও তজ্জুরুই অতিপ্রাক্ত বলিয়া স্বীকার
করিলেও বোধ হয় কোন ধোম হয় না। বস্ততঃ
শীক্ষ্য-চরিজের বহু অবদান তাহার পক্ষে সহক ও
স্বাভাবিক হইলেও সাধারণ মানবের পক্ষে যে একান্ত
অসাধ্য ও অসম্ভব, ইহা অবশ্যই স্বীকার করিতে
হইবে।

ভথা রাগ ৷১

যভ নারীকুল বিরহে আকুল रेभत्रक भतिएक नांदत्र। রসিক নাগর ৰুঝিয়া অন্তর্ मंड़िल यम्ना शादत ॥ কদম্বের তলে বসি কোন ছলে मृद् मृद् वाटम वाना । শুনিতে শ্রবণে ভ্ৰ-বধুগণে তাহাই মিলল আসি মরণ-শরীরে পরাণ পাইল क्षेत्र मरहं एडलि। বন-দাবানলে পুড়িয়া বেমন व्याभिया-माय्रद्ध ८किन ॥ চাভকিনী-গণত ८इति नव∙चन মনের আনন্দে ভাগে। वनन ञ्चन किनि भंभधत हरकाविनी हावि॰ शार्म ∎ বিরহে তাপিত ভেল ভিরপিভ वितर्थ व्यभिग्रा-व्रामि। च्यारमञ्ज रहरन छानशंत्र करह वाथ क्रेयल हाति ।>०।>२७०।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৫২২ সংখ্যক পদ। ২। 'সমর' প-র-সা। ৩। 'ব্রজবধ্গণ' প-র-সা। ৪। 'চারু' प; 'চাৰু' প-র-সা।

বেলোয়ার।>
বাজত ভক্ষ রবাব পাথোয়াজ
করতল তাল ভরলং একু থেলি।
চলত চিত্র-গতি সকল কলাবতি
করে করে নয়নে নয়নে করু খেলি।
নাচত শ্রাম সজে অজ-নারি।
জলদ-পুঞ্জে জমু তড়িত-লতাবলি
জল-ভক্ষ কত রক্ষ বিধারি। গ্রুণ

শ্রম-জল চল চল বদনত চন্দ্র ।
রস ভরে গলিত ললিত কুচ-কঞ্ক
নীবি খসত অরুণ কবরিক বন্ধ॥
তুহাঁ সুহাঁ সরস পরশ-রস লালসে
আলিফাই রহ তমু লাইং।

नहेन-हिर्लाल-लाल मिन-कू थल

পোবিন্দদাস প**ত মু**রতি মনোভব কত যুবতী• রতি• আরতি ৰাঢ়াই॥

112812561

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ৩৮।৬ সংখ্যক পদ।
২। 'চরণ' প-র। ৩। 'শ্রমক্ষণ' ইত্যাদি ক্লে
'শ্রমক্ষণে চরচর সুখ-ক্ষরবিন্দ' প-র। ৪। 'ক্ষন'
ঘ; 'উক্ল' চ। ৫। 'আলিক্ট' ইত্যাদি ক্লে
"'তক্ষ তক্ষ আললে রহ তক্ষ লাই' ক, খ; 'আললে
বহুত ললাই' চ। ৬। 'বুবতি' ক, খ; 'বুবতি' ঘ।
'বুবতি' পাঠে ছন্দোভদ ঘটে। ৭। 'মতি' খ।

(पन श्रीकृति।

বলায়ানাং নৃপুরাণাং কিন্ধিণীনাঞ্চ বোষিতাং। সপ্রিয়াণামভূচ্ছব্দস্তমুলো রাস-মণ্ডলে ॥ ॥১৫॥১২৬৭॥

नेका

"বলমানা" মিত্যাদি। রাসমগুলে সঞ্জিরানাং ক্রফস্থিতানাং বোবিতাং দ্বীণাং বলমানাং ক্রভ্রণানং নূপুরাণাং পদভূষণানাং কিছিলীনাং ক্রিভ্রণানাং চ নৃত্য-বেগ-চঞ্চলানামিতি ভাবঃ ভূম্লঃ সন্ধীর্ণঃ বলম-নূপুরাদি-শিক্ষিত-মিঞ্জঃ শন্ধেইভূৎ নিনাদে। জাতঃ।

অমুবাদ

রাস-মওলে শ্রীক্তফের সহিত সম্বিলিতা ব্রদান্দনা-দিপের বলর, নৃপ্র ও কিছিণীর ধ্বনি-মিশ্রিত শব্দ উদ্ভূত হইল।

(क्षांत्र।)

কালিন্দি-ভীর স্থীর সমীরণ
কুন্দ কুমুদ অরবিন্দ বিকাশ।
নাচত দোরং ভোরণ মন্তং মধুকর
শুক সারিকং পিকু-পঞ্চম ভাষ ॥
মধুবনেণ নিধুবনণ-মুগধ মুরারি।
মুগধ গোপ-বধু অধিক লাখ সঞ্জে
রজে বিহুরে বুখভামু-কুমারিদ ॥ এ ॥
নাচত নটিনি গাওয়ে নট-দেখর
গাওত নটিনি নাচেণ নট-রাজ।
শ্রামর গোরিণ্ণ গোরি সঞ্জে শ্রামর
নব জলধরে জমুণ্ণ বিজুরি বিরাজ ॥
হেরি হেরি অপরুপণ্ণ রাস-কলা-রস্ণ
মনমধে লাগল মনমধ্য ধন্দ।
ভূললাণ গগনেশ্য সগণেণ রজনীকর
চৌদিশেণ্টিক্মত দীপধরণ চল্দ ॥

ভারা-গণ সত্থে ভারা-পতি হেরি
লাজে লুকায়ল দিনমণি-কাঁতি।
গোবিন্দ দাস পত্ত জগ-মন-মোহনং
বিহরইং ভেল কলপ সম রাতি ॥
॥১৬॥১২৬৮॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৫৪৭ ও প-র পুথির ৩৮/৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ময়র' ক। ৩। 'ভোর' শব্দ প-র-সা পুথিতে নাই। ৪। 'মত্ত' শব্দ থ পুৰিতে নাই। ৫। 'শারি শৃক' ব, চ; 'গুক সারি' প-র-সা। ७। 'सधुत्र' क। १। 'निधुत्रत्न' थः 'নাচড' প-র-গা। ৮। 'কিশোরী' প-র-সা. প-র। ১। 'গার' कः 'গারে' চ। 'নাচত' প-র। ১১। 'শ্রামর গোর' ক. ५: ভোষক গোরি' প-র-সা; 'গ্রাম গোরি' প-র। >२। 'देव(क' भ-द्रा >ा 'दान' भ-द्रा >8। 'विनाम मत्नाहत्र' श-द्र। ১৫। 'उँव्रन' श-द्र-मा। ১৬। 'मगर्प' भ-द। ১१। 'मगर्प' भ-द-माः 'भंगरन' भ-ता ১৮। '(ठोबिरंग' क, ठ। ১৯। 'होश श्रवि इन्ह' कः 'होश श्रव इन्ह' श-व। २०। 'क्श-मन-स्थाहन' करन 'नहेरतु-स्थत् भन्त । २०। 'বিছরিজে' প-র।

ীকা

e—१। "মধ্বনে" ইত্যাদি। রাধানোহন ঠাকুর লিখিরাছেন,—'বধুবনে মথুরামগুলে তক্তমে নিধুবননার গুণবদে মুগধ মুঝো হরিরিতি। ব্যা নিধুবনমুঝা 'রতং নিধুবনং মৃত'মিত্যর্থা। অর্থাৎ 'নিধুবন-মুগধ' শন্মের অর্থ মধুবন-ছিত নিধুবননামক উপবনে' কিংবা নিধুবন শব্দ অভিধানে 'ক্স্রত' অর্থে প্রসিদ্ধ বলিয়া 'প্রস্ত-মুঝ'। 'অধিক লাখ সঞ্জে' বাক্যের অর্থ 'লক্ষ সংখ্যা অপেক্ষাও অধিক'।

১২-১৫। "ছেরি" ইত্যাদি। অপূর্ব রাস-কলা-উৎসব দৃষ্টি করিতে করিতে সন্মধের অর্থাৎ কন্দর্শের চিজে মন্মণ অর্থাৎ অপ্রাক্ত মদন (প্রাক্তম্ব)
ধাঁধার ভার বোধ হইল ! (প্রীভগবানের নিকাষ
প্রেম-লীলা যে, কন্দর্শের নিকট হবোধ্য বলিরা
প্রতিভাত হইবে, তাহা সহজেই অন্থমের)। গগনে
নিজের গণ অর্থাৎ নাত্রসমূহের সহিত নিশাকর
চক্র (রাস-লীলা-দর্শনে) মুগ্র হইলেন এবং প্রদীপধারী অর্থাৎ মশাল্ডির ভার, (রাস-ত্বলী আলো
ক্রিড করিয়া) টোদিগে ঘুরিতে লাগিলেন।

CHRIS IS

মণ্ডিত-ছন্নীষক-মণ্ডলাং ।
নটয়ন্ রাধাঞ্চল-কুণ্ডলাং ॥
নিধিল-কলা-সম্পদি পরিচয়া ।
প্রিয়সখি পশ্য নটভি মুরজয়ী ॥ এ ॥
মুক্তরান্দোলি ভ-রত্ন-বলয়ং ।
সনয়ন-বলয়ং । কর-কিশলয়ং ॥
গতি-ভলিভিরবশীকৃত-শনী ।
ভগিত-সনাতন-শক্ষর-বনী ॥১৭॥১২৬৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫১৫ ও প-র পুথির ৩৮।১৫ সংখ্যক পদ। 'কেদার' হলে 'ভৈরবী' প-র। ২। 'মগুলা' প-র-সা। ৩। 'কুগুলা' প-র-সা। ৪। প-র পুথি ব্যতীত অক্সান্ত পুথিতে 'প্র' নাই। ৫। 'বলয়া' প-র-সা। ৬। 'সনয়ন' ইত্যাদি হলে 'সনয়ন চলয়ন' ক, প-র; 'সনয়ন চলয়ন' ধ, চ; 'সনয়ন বলয়ন্' ঘ। ৭। 'কিশলয়া' প-র-সা।

निवा

১—৮। "মণ্ডিভে" ত্যাদি। মঞ্জিতং শোভিতং হলীবক মঞ্জণ রাদ-চক্রং বরা তাং চলকুঞ্জনীং চঞ্চকরণভিরণাং শ্রীরাধাং নটম্বন্ নিধিল-কলা-সন্ধানি সমস্ত-কলা-সন্ধান্ত পরিচন্ত্রী পারদর্শী সুরারিরুঠিভি--হে প্রিমুস্ধি! পশ্চ। কথং নটভি?

— মৃহকারং বারং আন্দোলিতং রত্বলয়ং বজিন্।
প্রশ্চ নয়নেন সহ বলয়ৎ বিবৃর্ণয়ৎ করকিশলয়ং
বজিন্। তৎ য়ণা ভাং তথেতি ক্রেয়া-বিশেষণং। মৃরআয়ী পুন: কীদৃশঃ ?— গতিজ্ঞীতিঃ নৃত্যকালীনালসঞ্চালন-বিশেবৈঃ অবশীক্ষতঃ কামাকুলীক্ষতঃ শশী
চল্লো যেন। প্রশ্চ হলিতঃ নিম্নায়েছেকাৎ জড়ীক্ষতঃ
সনাতনঃ তয়ামকো যোগীখায়ঃ পকে তয়ামকঃ কবিঃ
শঙ্কণত যেন স চাসৌ বশী চেতি তাদৃশঃ। 'ক্ষ্যবিক্রীড়িতং বীক্ষ্য ব্যম্হান্ ধেচরজ্বিঃ। কামার্দিতঃ
শশাক্ষত সগণো বিজিতোহ্তবং ॥' ইতি শ্রীদশমে
শ্রীক্ষকবাক্যমন্থসক্ষেম।

অভুবাদ

১—৮। হে প্রিয়-স্থি। দেখা রাদ মগুল-শোভিনী চঞ্চল-কুগুলা শ্রীরাধাকে নর্ভিত করিয়া নিখিল-কলা-পারদর্শী মুরারি নৃত্য করিতেছেন। নৃত্যবেশে তাঁহার রত্ম-বলর বার্হার আন্দোলিত ও নরনের সহিত কর-পল্লব বিঘ্রণিত হইতেছে। জিতেক্রির ভাঁহার নৃত্যকালীন অঙ্গভঙ্গী দর্শনে শশাক্ষ কামাকুল এবং সনাতন ও শঙ্কর স্তর্জীভূত হইতেছেন।

विष्णाडा । अवसा

কণু রুণু রুণু রুণু বুণু বুণু বুণু করণ কর রণরণি।

কম কম ঘাঁঘর ঘাঘটি কটি কিছিনি

করণ বুমর ধননি ॥

ডগ মগ ডগ মগ ডফ ডিমিকি ভূমি
পী পী বেণু-নিসানে।

চলত চিত্র-গতি নর্ত্রন-পদ অভি

মাধব ইহ রস গানে ॥১৮॥১২৭০॥

পাঠান্তর

১। 'বিহাগ' ক। ২। 'উআরে' ৰ।

৩। 'ভিকি' চ। ৪। 'আ ইরা আ ইরা' ক্লে
'আইয়া ইয়া' ক, ধ, চ। ৫। 'ঝুত্ব ঝুত্ব
ঝুত্ব' ফলে 'ক্তু ক্তু কত্ব ক্র' ক, ধ, চ। ৬।
'বাঘাটা' ক; 'বাঘটা' ধ, চ। ৭। 'পি পি' ক।

বিহুপড়া ৷১

চৌদিকে চারু

রিজনি কন্ত গায়নিং।

ক্রেন্তাণ থৈয়া থৈয়া বোলনি।

মাঝে বিরাজে শ্রাম স্থাড় শিরোমনি।

কিঙ্কিনিং কিনি কিনি বোলনি।

ভোগরং ন ধোগ্গা ঘেটিঙা ঘেটিভা বেটি
তী বেনে নাঙ্ তীস্তম্ম তীস্তম নাঙ্।

গরণ খেনাতীনি ভা খিটি তৃমং তীম্মর ঝাঁ।

বর্ণিত রাস বিভাপতি সূর।

রাধামোহন দাস রস-পুর ॥১৯॥১২৭১।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-নাপুথির ১২০৭ সংখ্যক পদ।
'বিহগড়া' হলে 'ডুক' প-র-না। ২। 'গাউনি'
ক, ব, ব, চ। ৩। 'কেডা' হলে 'ক্রডাডা' ক,
ব, চ; 'কুডিডা ক্রতিতা' প-র-না। ৪। 'বাকে

ক্ষণ ক্ষ' প-র-সা। ৫। 'তাগর' ইত্যাদি অবশিষ্ট পংক্তিভালি প-র-সা পুথিতে নাই।

(क्षांत्र १३

ও নব-জলধর অন্ধ।
ইহ থির বিজুরি-তরক ॥
ও বর-মরকত ঠান।
ইহ কাঞ্চন দশবান ॥
রাধামাধবং মেলি।
মুরতি মদন-রস কেলি ॥
ও তমুও তরুণ তমাল।
ইহ হেম যৃথি রসাল ॥
ও নব পতুমিনি সাজ।
ইহ মত্ত মধুকর রাজ॥
ও মুধ চান্দ উজোর।
ইহ দিঠি লুবধ চকোর॥
অরুণ নিয়ত্তে পুন চন্দেও।
ব্যাবিন্দদাস রহু ধন্দ ॥২০।১২৭২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পৃথির ১২/৫ সংখ্যক পদ।
 ২। 'রাধানাধ্ব' ফ্লে 'দেখ রাধানাধ্ব' প-র।
 ৩। 'নব' প-র। ৪। 'ছন্দ' খ।

এরাগ ।>

রাস-অবসানে অবশ ভেল অস।
বৈঠল ছত্ঁ জন রভস-তরক'।
শ্রেম-ভরে অক বাম বহি যার।
কিন্ধরিগণ করু চামরের বায়।
শৈঠল সবত্ঁ যমুনা জল মাহ'।
শামি-সমরে ছত্ঁ করু অবগাহ'।
মান্তি-মগন জলে মণ্ডলি কেল'।
ছত্তুঁ হতুঁ মেলি কর্ইণ জলখেল।

কণ্ঠ-মগন জলে করল পয়ান।
চুম্বরে নাহ তব সবহু বয়ান।
ছলে বলে কামু রাই লেই গেল।
যো অভিলাস করল ছহু মেল।
জল সঞ্জে উঠি সভে মাহুই শরীর।
জমু বিধু-মণ্ডিত যামুন তারু ॥
রাস-বিলাস করি পানি-বিলাস।
দাস অনস্তুক পুরল আশ ॥২১॥১২৭৩॥

পঠিক্তির

১। ইহাপ-র-দাপুথির ১৫১৮ সংখ্যক পদ।
২। 'রভস-তরক' হলে 'স্থীগণ সক' প-র-সা।
৩। 'ষাই'প-র-সা। ৪। 'কর অবগাই' প-র-সা।
৫। 'অঞ্চলি ফেলি'প-র-সা। ৬। 'করল'প-র-সা।
দ। 'তব' ক, ধ, চ; 'স্ব' প-র-সা।
৮। 'যামুন নীর'ক, চ; বিমুনাক তীর'প-র-সা।

८क्षांत्र १३ কেলি সমাধি^২ উঠল ছহুঁ তীরহি বসন ভূষণ পরি অস। রতন-মন্দির মাহা বৈঠল নাগর করু বন-ভোঞ্চন⁹-র**জ**॥ व्यानत्म (को कक्ष ७३। বিবিধ মিঠাই খার বহু বনফল जुक्षरे नन्त-किटणात्र ॥ अ ॥ মাগর-শেষ লেই সব রঙ্গিণি ভোজন করু রসপুঞ্চ। ভোজন সমধি তামুল সভে খাওল শুভলিং নিজ নিজ কুছে। ললিতানন্দ কুঞ্ল যমুনা-ভট• শৃতল যুগল কিশোর। দাস নরোত্তম করতহি সেবন व्यनम नवन (रुवि (छात्र । १२॥) २१८॥

পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৫২১ সংখ্যক পদ।
'কেদার' স্থলে 'বেহাগ' প-র-সা। ২। 'সমাধি'
স্থলে 'সমাধিয়া' প-র-সা। ৩। 'করু বন-ভোজন'
স্থলে 'করল ভোজন' প-র-সা। ৪। 'সজিনী'
প-র-সা। ৫। 'শুতলি' ক, খ, প-র-সা। ৬।
'বামুন-ভট' ক, খ, ঘ, চ।

कारमाम 13

কমুম-আসন হেরি বামে কিশোরি গোরি रेवर्ठम कूक्ष-कूछीरव। চিবুকে দক্ষিণ কর ধরি প্রিয় গিরিধর यूथानि निष्या (लडे भिरव । (त्रथ मिथ अश्रुक्तश हार्या । প্রেম-জলধি মাঝে जुरल दृष्ट् कम मनम् পिष् राम कार्य ॥ রভন পালক পর শেজ বিরাজিও শৃতল যুগল কিশোর। শ্মের মধুর মুখ-পঞ্জ মনোহর মরকত কাঞ্চন জোর ৷ প্রিয় নর্ম-সহচরি वीजन कदत धति বীজই মারুত মন্দ। শ্ৰম্-জল সকল करनवत्र मीठेन হেরই পরম আনন্দ।

> ন্দ্ৰনা ৷> কোমল-শশি- কর-রম্যা-বনাস্তর-মিশ্মিত-গীত-বিলাসং ।

প্রিয়জন সেবই বিধানে ॥২৩॥১২৭৫॥

(म वन-मधुत्रिम-भारन।

আল পদ-পক্ত-

নিন্দ গেও স্থিগণ

মরোত্তম দাস

निक निक कुरक्ष

তুর্ণ-সমাগত-বল্লব-যৌবত-বীক্ষণ-ক্বত-পরিহাস॥ জয় জয় ভাতু-ত্বতা-তট-রঙ্গ-মহানট इन्पत्र नन्प-कूमात्र। শরদলীকুত-দিব্য-রসাবৃত-৩ মক্লণ - রাদ - বিহার । এ। গোপী-চুম্বিত রাগণ-করম্বিত মান-বিলোকন-লীন। গুণ-বর্গোন্নত-রাধা সক্ষত (मोक्ष-मण्यामधीन ॥ ভবচনামূত-পান-মদাহ্যত-বলয়ীকুত-পরিবার। স্থর-তরুণীগণ-মতি-বিক্ষোভন খেলন-বল্লিত-হার॥ অমু-বিগাহন-নন্দিত-নিজ-জন-মথিত-যমুনা -তার। হুখ-সন্বিদ্যন শূর্ণ-সনাতন निर्याल-नोल-भवोत ।२८॥১२१७॥ ইত্যাদি শর্থকালীয়-মহারাসঃ।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র পুথির ৩৮।>৪ সংখ্যক পদ।
২। 'রসাপ' ব। ৩। 'রসামৃত' ব। ৪। 'মঞ্জ'
ক, ব। ৫। 'রাজ' ব। ৬। 'বাস' ব। १।
'মুরামৃত' ক, ব, ব। ৮। 'বিলোভন' চ। ১।
'বামুন' ব, প-র-সা।

ीका

১—২০। "কোমবে"ত্যাদি। আবে) এবপদং ব্যাধ্যারতে — ভাতুত্তভারাকটমেব রলঃ নর্কনরানং তত্ত্ব মহানট নটলিরোমবে হে স্থানর নৰাজন শ্রীকৃষ্ণ ঘং কর অব সর্বোৎকর্বেণ বিরাশ্ব। ঘং কীদৃশঃ ?—শরদি অলীকৃতঃ দিব্যোনাপ্রাকৃতভাইনরপোর্ভতা সকলো রাসবিহারো বেন তৎসবোধনা।

भूनः कीवृभः १ -- ८कामन-मनि-कटेतः त्रत्या ख्नारत গীভবিহারকারিন্। তুর্ণদমাগত গোপ-ষুবতিসমূহক ভাবীকণাম পরিহাপ-কারিন। হে হে রাগকরম্বিত রাগাণাপকারিন গোপীচুম্বিত কান্তানাং মানজ পর্বান্ত বিলোকনেন লান কুভান্তর্জান ছে। তপ্ৰবৈশিক্ষতদা অসমোদ্ধগুণবত্যা রাধ্যা সহ সক্ত হে। ভক্তা যা সৌস্দ-সম্পৎ প্রেম-সম্পত্তিঃ ভক্তা অধীন। যথা গুণবর্গোলভারাং রাধারাং সঙ্গতা या जोक्षपत्रम्मद जमशीन रह। 'कश्माविव्रिम मःमावः বাসনাবন্ধশৃঞ্জালাং। হাধামাধায় হৃদয়ে তত্যাক এক-क्षत्री:॥" रेकामि अवरमय-(शारकन ओक्स्का রাধাপ্রেমাধীনত্বং কুটমেব। ভাসাং গোপীনাং বানি ব্চনামূভানি ভেষাং পানেন ধো মদক্তবিষয়কেন প্ৰেৰা মন্ততা তেনাজত তাদাং দদখানীত হে। বলগী-কুত: মণ্ডলাকারেণ স্থাপিত: পরিবার: গোপাগনা-রূপ-পরিক্রো বেন তৎসম্বোধনং। ন্থরতক্ণীনাং ৰৎ মতিবিক্ষোভনং বুদ্ধিচাঞ্চ্যকারকং থেলনং রাস-नर्खनः (छन विद्यात: छन्नफ्रनगीला शास्त्रा वगा ७९-मरवाधनः। अपूरिशाहरनन अन-क्रोएवा निक्टेणः श्रीनिटेडः निवक्टनम खिडः यम्नाडीतः यन उ९-সংখাধনং। সূধং আননঃ স্থিৎ জ্ঞানং ত্রোর্থনঃ শাক্ষানন্দবিজ্ঞানরূপ ইত্যর্থঃ পূর্ণঃ আপ্রকামঃ সনা-ভনক্তে ভৎপ্ৰোধনং। পক্তে সুধস্থিদ্বনেন পুৰ: কুতাৰ্থীক্কতঃ সনাতননামা ক্ৰিৰ্যেন তৎসংখ্যাধনং। मिर्चन-नीनभंदीय अभन-स्नीन-करन्यत्र।

অমুবাৰ

> — ২০। বমুনা-তট-রক্ত্মির নটরাল হে

ক্ষের নক্ষ্মার ! তোমার জয় হউক। তৃষি

শরৎকালে অপ্রাক্ষত-রস-পূর্ণ মক্ষক্ষনক রাস-বিহার

প্রকাশিত করিবাছ। তৃমি কোমলচন্দ্র-কিরণ ঘারা

স্থায় বন-স্থলীতে গীত-বিলাসের অফ্টান ও দ্বরার

সহিত স্মাগত গোপ-ব্রতিগণের ভাব-পরীক্ষার

নিমিদ্ধ পরিহাস করিবাছ। হে গোপীচ্ছিত রাগা
লাপ্রারী শ্রীকৃষ্ণ। তৃমি প্রিয়াগণের পর্ক্তাব

দর্শনে অন্তর্ভিত হইরা শ্রণ-প্র-ব্রেশ্যা শ্রীরাধার

সহিত সমিলিত এবং তাঁহার প্রেম-সম্পদের অধীন ছইরাছ। তুমি গোণীগণের তৎকালীন প্রেম-পূর্ণ বচনামূত-পানে বিমুগ্ধ হইয়া তাঁহালিগের সমীপে উপস্থিত ও তাঁহালিগের বারা পরিবেটিত ছইয়াছ এবং তুমি স্থরাঙ্গনা-গণের চিডোমানক ক্রীড়া বারা চক্ষণ-হার-বিশিপ্ত হইয়া বিরাক্ষ করিতেছ। ডোমার ক্রল-কেলির বারা আনন্দিত গোপাগনারূপ পরিজ্ঞন বারা বমুনার তার-তৃমি স্থশোভিত হইয়াছে। ছে নির্ম্মণ-নীল-কলেবর শ্রীক্ষণ। তুমি চিদানক্ষ-মূর্তি ও পূর্ব-সনাতন। (পক্ষে—তুমি চিদানক্ষ বারা কবি সনাতনকে ক্রতার্থ করিয়াছ।)

ন্ট্রীতৈওক্ত-নিত্যানন্দ-চরণ-ধ্যানেন এড্নগৌতসংগ্রহঃ।

> অথ পুনশ্চ রা**সঃ।** শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

> > कारमाम ।

দং দ্ৰিমিকি ক্ৰিমিণ মাদল বা**ল**ভ কভ্**হ**ঁতান স্থাস্থা^২।

অধিল ভুবনক নাথ নাচত শ্রীবাদ আদি সতে গামুয়া° ॥

জামু-লব্বিত বা**হ**-যুগল কলিত কলধোত ঠামুয়া।

অরণ-অন্বরে ভূবন ওপমণি বৈছে প্রাতরণ-ভাতুরা।

খণহি কম্পিত খণহি পুলকিত খণহি করযুগ-চালমা^৫।

খণছি উচ করি বোলই হরি ছরি পুরব-প্রেমক পালনা ॥

हीत बन्दर्शक डीक्स बदेशक

भएक महहत्र (मनित्रो ।

ক্তরে রামানন্দে কুলিশ সরসরে

দারু দরবিত কলিয়া ॥২৫॥১২৭৭॥

পাঠাম্বর

১। 'জিমি' ফলে 'জিমি জিমি' ক, ধ, চ। ২। 'তান ফ্তার্য়া' ফলে 'তাল ফ্তার্যা' ক, ধ। ৩। 'গাফ্রা' ব; 'গাফ্ঞা' চ। ৪। 'পাতর' ক,ধ। ৫। 'কর্গুলানা' ব। ৬ 'দর্বতি' ক,ধ।

(करोत्र 15

একে দে মোহন যমুনাং কুল আরে দে॰ কেলি-কদম্ব-মূল আবে সেং বিবিধ ফুটল ফুলং আরে সে শরদ-যামিন। ভ্রমরা ভ্রমরি করত রাব পিকু কুন্ত কুন্ত করত গাব সঙ্গিনি রঞ্জিণি মধুর বোলনিং विविध कांग भाषानि । বয়দ কিশোর মোহন ঠাম নির্থি মুর্ছি পড়ত কাম সজল-জলদ-শ্যাম-ধাম शियुलभ वनन मामिनि। भाडनभ्र धवनभ्र कालिभ्र (शांत्रि বিবিধ বসন > বনি কিশোরি নাচত গারত রস-বিভোরি> जवर ^{१७} वत्रक-कामिनि । বিণা কপিনাসং পিনাক ভালংদ সপ্ত-সূর্ঞ বাজত তাল **এ সর-মগুল মন্দির।** ডক্ফং मिलिरे किछ्र रेर गाय्नि। भूभूत धूक्तर अधूत Cale यानन नननर नहेन (लालर হাসি হাসি কেহং করত কোল ভালি ভালি । বোলনি।

বলরাম দাস পঢ়ভংশ তাল গাওত মধুর অভি রসাল শুনত শুনতংশ জগত উমত হৃদয়-পুতলি দোলনি ॥২৬॥১২৭৮॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুৰির ৩৮।১১ সংখ্যক পদ। २। 'वमूनांब' क, थ। ७-८। ং। 'ফুল' ক, ধ, চ, প-র। ৬। 'রাব' চ। ৭। 'মধুর বোলনি' ছলে 'সঞ্জি ধার' প্রা ৮। 'বিবিধ' ইত্যাদি স্থলে 'গাওত বিবিধ রাগিণী' 'युन्सव' भ-व। > । 'পিয়লি' প-র। ১১। 'শাঙলি' প-র। >२। 'धवनि' भ-त्र। ১**०। 'कांनिम' क, ४, 5। ১৪। 'वन्रत्न**' ১ং। 'করত কেলি' 'সঙ্গিতি' প-র। ১৭। 'বিমা কপিনাদ' ভূদে 'विनोक विभाग' भ-ता ১৮। 'त्राव' भ-ता ১৯। 'বীণা সপ্তস্থা' প-র। ২০। 'ডম্ভু'ক; 'ডম্প' **छ। २२। 'क्लि' क, ४। २२। 'कब्रफ' भ-त्र।** २०। 'वांतर' भ-ता २८। 'यन यम बान' भ-त। २६। '(जान' शन्त्र। २७। '(क्ह' क्, ५। २१। 'ভালি ভালি ভালি' খ, খ, চ; 'ভাল ভাল' প-র। २৮। '११ के ७' थ ; 'भफ़ ७' ह। २२। 'फ़ूगफ' क, 4, 4, 51

তথা নাগ।>
নাচত বুখভামুং-কিশোরি
অঙ্গে অঙ্গে বাহু জোরি
মেব উপরে হৈছে দামিনি
কিরভ ঐছন ভাতিয়া।
ভক্ল ভমাল শ্রামনাল
মাবে রহভ ধরত ভাল
ভালি ভালি করত রহভ
গমদ মন্থর পাডিয়া।

মুপুর বলয়া কছণ সাজ কন কন কনদ কিজিণি বাজ তালে রিকাত্ত স্থাড়শেখর

তালে রিকাড ই স্থাত্শেখর ও
ভূবল জলদ-কাঁতিয়া ও ।
বসন ভূবল কবরি-ভার
খোলি পড়ত বার বার ও ই
হসত খসত কোই পড়ত
রিজিণি র্জে মাতিয়া ॥
তাল মূদক্ষণ ডক্ষ বাজ্ঞ ও
বিণা পাখোয়াজ মধুর গাজ ও
সব স্থিগণ স্থিয়া ।
রস-ভবের উহণ খীণ ও অক্ষ
রাই বৈঠলি শ্রাম স্থ

কামু-অকে অজিয়া^২• ॥২৭॥১২৭৯॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ও প-র :পুৰির ৩৮।১ সংখ্যুক পদ। ২। 'ব্যভাহ' ক, ধ, ব, চ, প-র-সা। ৩। 'বৈছে দামিনি' স্থলে 'জম্ तोशियनी' भ-द-मा ; '(यन मोशियन' भ-द । 8 l 'ভাঁতিরা' চ; 'পাতিরা' প-র-সা। ৫। 'মাঝে' প-র। 🗣। 'বছত' প-র; 'বছ' প-র-সা। ৭। 'পাঁতিয়া' চ; 'ভাতিরা' প-র-সা, প-র। ৮। 'কন কন কন' ছলে 'কুত্ব কুত্ব কুত্ব' প-র-সা; 'রুত্ব কুত্ব কুত্ব' প-ता । 'बोसङ' क, थ, घ, छ। २०। 'ख्राद-শেখন্ন' প-র। ১১। 'রসিকসিন্দ্রা' প-র-সা; 'রসক সিত্রমা' প-র। ১২। 'বারহি বার' প-র-সা, প-র। ১৩। 'ভাল মুদদ' ছলে 'বিবিধ ভাল মিলি' প-র। ১৪। 'ডম্ফ বারু' ছলে 'পাবঙারু' প-র-সা; 'পাধারু' প-র। ১৫। 'বিনা' ইত্যাদি चरन 'छन्फ वीना सावत शाब' भ-त्र-मा ; 'वीन ७७ কতহি বাজ' প-র। ১৬। 'ভাসুনব্দিনি' প-র।

১৭। 'উলসই' প-র-সা; 'স্ব' প-র। ১৮। 'শিপিল' প-র। ১৯। 'রহত' প-র-সা; 'কান' প-র। ২০। 'কাফ্' ইত্যাদি গুলে 'আলে আল হেলিয়া' প-র।

বিহগড়া ৷ ১

সঙ্গে শোহনং नम-नमन নওল গোকুল-কামিনি। তপন-নিম্মিনি-তীরে ভালি বনি ভুবন-মোহন লাবণি ॥ ভাতা পৈয়া পৈয়াণ বাজে পাধাওজঃ মুখর কন্ধণ কিন্ধিণি। বিশসে গোবিন্দ প্রেম-আনন্দ সঙ্গে নব নব রঞ্জিণি ॥ তুত্ক অম্বর ণ্ডাত্রীবী ফাব भवत् यक्षण (पानिनः। ভরলদ শ্রেমজন ত্বত কলেবর মোতি মরকত হেম মণি । বাজত কিঞ্চিণি উর্হিঁ ১ লোলনি মুপুর-ধ্বনি অমুস্বিয়া। नग्रन-नाहनिभ्भ गीय-सामनि সলে রসবতি রকিয়া^{১২}॥ বিবিধ বিলস্ই ১৩ রাদে মধিব সক্তে সক্তিনি> মাতিয়া। শ্যাম-সুরতি नील प्रत्रभगः হেরত গোবিন্দ দাসিয়া।২৮।১২৮০।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ও প-র পুলির ০৮।১০
সংখ্যক পদ। 'বিহুগড়া' ফ্লে 'কেদার' প-র।
২। 'মোহন' প-র-সা। ৩। 'হাবৈ তাবৈ'
প-র-সা; 'তা ডা বৈ বৈ' প-র। ৪। 'বাজে
পাথাওক' ফ্লে 'মুদল বাজই' প-র-সা; 'মুদল
বাজত' প-র। ৫। 'চীক চিত্রিত' ইজাদি অব-

भिट्टे कनिकानित भतिवार्क भ-त-मा भूषिए निम-লিখিত পাঠ আছে; ৰখা,---'উরে লম্বিত कनक ठम्लाक-शांम कर्षम हम्मदन। লোহ কলেবর ভেল শ্ৰমকল মোতি মরকত কাঞ্চনে॥ রালে মাতল गरन यह बढ़ कुक्कानरन ब्रावह । ७० निबी निक চাতক ডাক্ক ভ্ৰম্বা পঞ্চম গায়ই॥ রাগ মুপ্তল গোপিনীকুল अधि मुद्भ नव त्रक्षिती। বোলে ভালি ভালি ছেট করতালি कामीमात्र वनि कारेनि ॥ ७। 'किकिक' भ-ता १। 'स्मान्त' भ-ता ৮। '(छन' भ-त्र। २। 'कांकरन' भ-त्र। ১०। 'উরছি রণরণি'প-র। ১১। 'চাংনী'প-র। ১२। 'निषया' প-त। ১**०। 'तार**न' ইত্যাদি

হুলে প-ৰ পুৰির পাঠ, বুণা---'রাসে মধুকর কুঞ্জে নাচত' >। 'त्रमबर्फि' भ-त्र। >८। 'मत्रभएन' भ-त्र। বিহগড়া।

> नाट दत्र नागत्र-भिरतामि । यूर्व यूर्व शास्त्रोत्रात श्वज तमने ॥ त्रक्रिम व्यथ्दत मृष्ट्र मधूतिम राम । বন্ধ নেহারণি পিরিভি-সম্ভাষ। থৈ ভাভা থৈ ভাভা কেহ কেহ বোল। वनश्रार-सूर्भुद्र मनि-किकिनि (वान । চৌদিগে গাওত কত কত রমণী। মাৰে বিরাজে খাম হুছড-শিরোমণি ॥ 11くなりろくレン1

পাঠান্তর)। 'वृ(थं वृ(यं) क। १। 'कनद्रा' क। (4814)

নটছিং নটবর রাস-মণ্ডল त्रमणि-मधन माय (त्र। হেম-করিণী-নিকর অন্তরে विरुद्ध कुळात्र-त्रांक दत्र ॥ ক্নয়া-কন্তণ सन्द्र यन यन त्रजन-किकिनि (वाम (त्र। দ্রিমিকি দ্রিমি দ্রিমি ভাগ ভাগেব बांग-बर्ग मन एकांब दब । গোরি গোপিনি বাছ স্থবলনি শ্যাম তরুণ তমাল রে। বৈছে যমুনাক মাঝে বিহরই कनकमग्र मित्रिशाल दत्र। স্থুভগং আনন যামময়-কণ मृषिष्ठ मननिक व्यवः। দাস অনস্ত কৰে ও রূপণ বরণি নছে

পাঠান্তর

वितर्भ कछ कछ त्रत्र ॥७०॥১२৮२॥

 'नरेश' ऋल 'नरेश' च, छ। 'नरेश' वांध इव ७६ शांठ इहेव। २। 'अ्डक' व। ७। '७ क्रभ' ऋरग 'क्रभ्त ' क, च ।

TICHTE I

ठमन होना কুত্বদ নব কিশলয় मन भवन भिक्-ताव। বরিহা কপোত জোরে জোরে নাচত চীতক নিজ পর্থাব # ভালি রে ভালি অভিনব মদন-সমাজে। রাধা রসবভি অভি রসে আরভি कामू त्रिक-वत्र त्रांट्य ॥ अ ॥ কুম্মিত কুঞ্চহি রঞ্জন মনসিক नव नव त्रिक्षि (मिनि।

রসময় ভ্রম কতত্ঁ রস মধুকরি

শুমি শুমি করু রস-কেলি ॥
ধনি রে ধনি রে ধনি ছেত্ঁ রুপ গোবণি
ধনি বৈদগধি কত ভাতি।
আর কেই কত্তঁ কত ছুত্ত রসে উনমত
ভ্রমন করে নাহি দিন রাতি॥
॥৩০॥১২৮৩॥

পাঠান্তর ১। 'রূপ'ক। ২। 'কেহ'খ।

তথা রাগ।

মনমথ-যন্ত্ৰ-স্থীর স্থনায়রি
শ্রামস্কর রস-সীম।
সব বৈচিত্র-কলা-রস-চাতৃরি
নাগরি গুণ-গরীমণ ॥
বিলসই রাসে রসিকবর কান।
রাই বিনোদিনি শোভই বাম ॥ ধ্রু ॥
নয়নক অঞ্জন কামু-কৃত রেখহিং
রাই তাহি ভেল ভোর।
প্রেমে পরশ-রস লিলাও-রস-লহরি
তৃত্ত তমু ভাবে উলোর ॥
চঞ্চল চারু চিকুরে শিখি-চন্দ্রক
স্কুম্মর সিন্দুর দাগ।
স্কুই ক্লেয়ে উদয় স্থ-সম্পদ
ভ্রান কহে ধনি অমুরাগ ॥৩২॥১২৮৪॥
গাঠান্তর

১। '৩০ণ গরিম' ক; '৩০ণ গরীম' ধ, ঘ। ২। 'রেখহি', ক, চ। ৩। 'লীলা' ক।

> হুংই। নাগরি নাগর খ্যাম রসরাব্দেও। রুক্তে মিলল চুক্ত মগুলি মাঝে।

অভিরসে পুলকিত অক।
উপজত কত কত মদন তর্কা।
বিগলিত কেশ-বেশ জেল অক।
রতি-রস-আবেশে বাঢ়ল ত্তুঁরকা।
রাসে রসিকবর বিলসই রাধা।
গৌর আধ ততু শ্রামর আধা। এল।
ত্তুঁ স্থে আপনে নাহি রস-ওর।
হেম মরকত জতু লাগল জোর।
ভূজে ভূজে বেঢ়ি অধর-রস নেল।
ত্তুঁ মুখ-চাঁদে ত্তুঁ চুম্বন দেল।
ত্তুঁক মরম ত্তুঁ জানল ভাল।
ভ্রান্দাস কহে মদন দালাল।৩০৮১২৮৫॥
পাঠান্তর

১। 'त्रत्रतारक' ऋरम 'त्रारक' क. ४।

८वटनाहात्र ।

রাস-বিলাসে রসিক বর-নাগর विलंगरे तमवि मात्य । कुछ विन वश वयम देवनगिष अविध कविशा धनि माटक ॥ এক অপরুপ রস এহ খিতি-মণ্ডলে মধুময় কুন্থমিত-কুঞ্চে। রাধা রাতি দিবস রস-আরতি भागत-घन-तम-**পুঞে** । অলিকুল-রবঃ শুক-রাব। (काकिलकुल शुक्र शक्षम गांव ॥ अ ॥ ফিরত মনোহর মউরক পাঁতি। मनन-हाँ भे भुरत्र मिन त्रां । বাজত বিবিধ যন্ত্ৰ একতান। নিজ সব সজে রজে রস গান । নারি পুরুষ ছ্রু ভাবে বিভোর। छानमात्र कर कि करव अत्रर 1081; २৮७। পাঠাত্তর

১। 'বর' ক, থ। ২। অবতঃপর ক, আ ও চপুথিতে নিয়লিখিত প্রক্ষিপ্ত পদটি দৃষ্ঠ হয়, যথা,—

সহজে শ্রাম মনোহর ছাল ।
লীলা-রন্তস মনোহর ফাল ॥
তাহে কত বেশবিশেব পরিপাটি।
হেমমণি রম্বণিক হৃদরক শাটি ॥
ধনি বনি আওল মোহন রার।
ব্রজ-বনিতা বনি সন্তি গায় ॥
ভালে বিভন্নিত চক্রক-চুড়।
কত কত মধুকর উনমত উড় ॥
কিরে ছির-হারক চক্রক-জোতি।
কম্মান্ধিরার তলে গক্ত-মোতি॥
কটি কিবিণি ধটি উপরে কাছ।
কর্মক সাধানিনি থির আছে॥
চরণকমল মণিমঞ্জির বোল।
ভানদাস আনন্দা উত্রোল॥

এই পদটি ধ পুথিতে নাই ও ইহার সহিত রাসদীলার পুর্বের ও পরের পদগুলির সামঞ্জ নাই।
ইহাকে প্রক্ষিপ্ত না বলিলে ২৪শ পল্লবের নির্দিপ্ত
পদসংখ্যা অপেকা একটি পদ বৈশী হইরা পড়ে;
স্থতরাং ত্রিবিধ কারণেই এই পদটি প্রক্ষিপ্ত বলিয়া
বুবা বাইতেছে।

क्राच्या ।

বিলসে গোবিন্দ

প্রেম-আনন্দ

मरण नव नव ब्रिजिशि

চাক্ল চিত্রিভ

ছুহুঁক অম্বর

প্রবনে কিঞ্চিত দোলনি। উরে লম্বিত হা

হার চম্পক-

नाम कर्तिम हन्मद्व।

ছুছঁক কলেবর

ভরল শ্রেম-জল

মোভি মরক্ত কাঞ্চনে।

कनक मत्रभग

ভাল বেচল

মাঝে শ্রাম নট-রাজ রে।

नविन कलश्दत

थीत विख्ती

নবিন শশধর সাজ রে 🛭

ৰলয়া রণরণি

কনক-কিঙ্কিণি

মুপুর-ধ্বনি অমুসন্ধিয়া।

নয়ন-চাহনি

প্রেম-দোলান

ट्यार नव नव ब्राक्टिया ॥७८॥১२৮१॥

পাঠান্তর

১২৮• সংখ্যক পদের ৫ সংখ্যক পাঠান্তর জইবা।

(बटनायांत्र ।

বিনদিনি রাধা নব নাগর কান।
নটন-বিলাস-উলাস পুলক-ভ্রুম
এক শকতি ছই একই পরাণ॥ ধ্রু॥
একে নব কুঞ্জ কুস্থম অতি মনহর
শুমরা শুমরিগণ গাওয়ে রসাল।
রতনক দীপ নীপ পর হিমকর
মদনদেব মোহন নটরাক্রুণ॥
বাক্রুত্র বলয় মুপুর মণি-কিন্ধিণি
শুগাম-বামে রক্ত গোরি কিশোরি।
ভূক্ত ছক্ত ক কার পর শোভই
নব বারিদে জমু বিনদং বিজুরি॥
মৃদ্ধ মুধুরিশ্যিত মিলিত-দৃগঞ্চল
আনন্দে হেরি ছক্ত ছক্ত বরান।
অধিল ভূবন স্থ-সাগরে শুভলং
ভ্রানদাস চিত্তে ঐছন ভান॥

পাঠান্তর

100125441

১। সকল প্ৰিতেই 'নটবাল' পাঠ আছে— ৰদিও তাহাতে হীন-বিশন দোব বটে। ২। 'বিনোব' ক। ৩। 'গুতল' ক, ধ। বিহণ্ডা।

ছহ জন নটন- পরিশ্রম অভিশয় প্রিয়-সহচরিগণ মেলি। নিকটহি যমুনা- নীর ফ্শীভল

বৈপুনি করত জল-কেলি॥ দেশ রাধামাধব রজে।

হেম-কমলিনি সঞ্চে নাল-কমল জমু
ভাসই ধমুনা-ভরকে॥
গ স্থিগণ করে করে বন্ধন

মাঝহি রাধা কান।

জল-মণ্ডুকং-ধনিও করে জল উছলনি আনন্দে কয়ল সিনান ॥ অপদ্ধপ শ্যাম- চরিত কোই সমুক্র স্থি সঞ্জে কেলি-বিলাস। স্ব জন মরমে নিকটে মঝু বিহরত

পঠান্তর

কহতিহঁ ইহ শুগমদাস ॥৩৭।১২৮৯।

১। 'স্নে' ক। ২। 'স্পুক' খা ৩। 'ধ্বনি' ক, খা

তথা রাগ।

রাধামাধব সখিগণ সক।
নাহি উঠল ভিরে মোছল অক।
সভে মেলি কয়ল বসন পরিধান।
করতহি বছবিধ বেশ বনান।
বৈঠল তুহুঁ জন নিরজন-কুঞ্জে।
রভন-পীঠ পর আনন্দ-পুঞে।
বছ উপহার ভাহি আনি দেল।
ভোজন কয়ল সখীগণ মেল।
ভোজন সারি শয়ন-পরিষকে।
মাপরি শুভলং নাগর-ক্ষেটা

ললিতা তামুল বীড় বনাই। উদ্ধবদাস কবে দেওব° বোগাই॥
॥৩৮॥১২৯০॥

পাঠান্তর

)। 'छोरत' क, था २। 'छछन' क। । । 'करव रम ७व' ऋरन 'करत रम छन' छ।

श्रुनम्ह ।

ধানশী।

শরদ-পূর্ণিমা নিরমল রাভি উলোর সকল বন।

মল্লিকা মালভী বিকসিত তথি^১ মাতল ভ্ৰমরাগণ ॥

তরুকুল ভাল ফুলং ভরি ভাল সৌরভ পুরিল তায়। দেখিয়া সে শোভা জগ-মন-লোভা

দোধয়া সে শেভা জগ-মন-লোজা ভূলিলা নাগর-রায়॥

নিধুবনে আছে রতন-বেদিকা
মণি মাণিকেতে বান্ধা।
ফটিকের তরু শোভিয়াছে চারু
ভাহাতে হীরার ছান্দা॥

চারি পাশে সাজে প্রবাল মুকুতা গাঁথনি• মাঠনি কত। তাহাতে বেঢ়িয়া কুঞ্জ-কুটীর

নেডের পতাক। উড়িছে উপরে কি তার কহিব শোভা। অতি রম্য স্থল বেদ°-অগোচর

কি কহিব তার আতা। মাণিকের ঘটা কিরণের ছটা

_ম্বত। এমতি মণ্ডপ-বর।

হইল বাউরী

স্থীর সহিত

হই আনমন

রন্ধন করিতে

মুরলী শুনিয়া

शाहेल जमनि

कलरखन्न मूटन

দেখিয়া তথ্য

क त्रण वहन

रानिया मागव-वाव ।

े विक हशीनांटन भार 18-152241

রাস-বিলসন

সহিতে না পাার মুরলীর ধ্বনি চণ্ডীদাস বোলে অতি অপরূপ পশিল হিয়ার মাঝে। নাহিক বাহার পর ১৩৯।১২৯১। বরজ-ভরুণী পাঠান্তর र्विन कूल्य नात्न । ১। 'खर्जि' क, ब, हा २। 'कन' ब, चा কেহো পতি সনে আছিল শয়নে ° ७। 'शंबनि' च, ह। ८। '(एव' थ। ত্যজিয়া তাহার সঞ্চ। কেহো বা আছিল कांट्यान । কহিতে রভদ-রঙ্গ। বিলসিতে মন রুমণী-মোহন কেহো বা আছিল ত্বথ-আবর্তনে हरेल मद्राम श्रुनि। চুলাতে রাখি বেসালি। शिया बन्मावटन বসিলা যতনে তেজি আবর্ত্তন রমিতে বরজ-ধনি ॥ **बेह्रान (म राम हिम ॥** পুরে বনমালী वधुत्र भूत्रशी কেহো শিশু লৈয়া কোলেতে করিয়া রাধা রাধা করি গান। ष्ठ्य कदारप्र भान। একাকী গভীর বনের ভিতর निश किल पूरम हिल (शन खरम বাজায় কতেক তান 🛙 শুনি মুরলীর গান। বাজিছে সখন অমিয়া-নিছন কেহো বা আছিল শয়ন করিয়া মধুর মুরলী-গীত। नग्रात्न आहिन निम्म । व्यविष्ठल कूल-রমণী সকল যেন কেহো আসি **টোরাই লইল**° শুনিয়া হরল চিত। মানসে কাটিয়া সিক্ষ⁵ I ভাষণে বাইয়া রহল পশিয়া কেহো বা আছিল বেকতে বাজিছে বাঁশী। ভেমতি চলিয়া গেল। আইস আইস বলি ডাক্রে মুরলী कृष्ठ-मूची देशम ষেন ভেল স্থ-রাশি॥ সব বিসরিত ভেল 🛭 আনন্দ-অবশ পুলক-মানস जकल त्रभगी স্কুমারী ধনি রাধে। কেহো কাহো নাহি মানে। হৈল বিসরিত গৃহ-কর্ম্ম বত ষমুনার কৃলে मकल कत्रिल वाद्य । মিলল শ্রামের সনে যতেক রমণী রাইরের অগ্রেতে ত্রজ-নারীগণ

কহয়ে সধুর বাণী।

किमन क्वार्य शानी

কিবা বাজে ভান

७३ ७३ ७न

পাঠান্তর

১। 'कब्रिएड' च। २। 'कब्रायम' क। ৩। 'বেন' ইত্যাদি স্থলে 'বেন চোরাই লইল' ক; '(व क्टर्।' देखानि च। ४। 'निन्त' क; 'नीन्त' थ। १। '(कह काहा' क; '(करही कारही' ह।

মকল।

ব্রজ-নাগরিগণ হেরি হর্ষিত মন নাগর নটবর-রাজ। উলাসহি নিমগন নটন-বিলাস-**ट्रोक्टिंग** त्रमणि-ममाञ ॥ করে কর ধরাধরি युष्य यूष्य भाव मछिल ब्रिहिया स्कान। উপান্ন পাখাওজ বাজত বীণ মাঝহি রাধা কান॥ গগনহিঁ । নিরমল শরদ-সুধাকর কাননে কুন্থম-বিকাশ। গাওয়ে অতি হস্তর কোকিল ভামর অমল কমল পরকাশ ॥ হেরি হেরি ফেরি ফেরি বাছ ধরাধরি নাচত রঙ্গিণি মেলি। নাগর রসময় জ্ঞানদাস কহ कक्र॰ कड (कोडूक-(कि ॥

পাঠান্তর

182175901

১। 'রম্বীগণ' ক; 'নারিগণ' থ, চ। ২। 'চৌদিৰে' ক। ৩। 'বুখে বুখে' ব। ৪। 'গগ-निर्वि च, ह। ६। 'ट्रक्ति एकति' इत्न 'क्ति किति' क; '(क्बि' व। ७। 'क्ब' क।

(क्लांच ।

শ্রামর-স্কল-কলারস-সাম। (भाति नागित कछ श्रमिट ग्रीम । হুত্ বনি বেশ বয়স এক-ছান্দ। রাজিত কঞ্চ মুঞ্চ মুখ-চাঁদ ॥ বিলসই° রাসে রসিক-বর নাহ। নয়নে নয়নে কত রস নিরবাহ॥ कुछ देवनगिध कुछ हित्य हित्य लाग। তুত্ঁক মরমে পৈঠে তুত্ত্ঁক সোহাগ। দুরুঁক পরশ-রসে দুর্ছ ভেল ভোর। বোলইতে বয়নে উগয়ে নাহি বোল ৷ পুরল ছহু ক মনোরখ-সিন্ধু। উছ্লিত ভেল তহি[®] সেদ বিন্দু বিন্দু । তুর্ত্ক পরশ-রঙ্গে তুর্ভ উমভায়। জ্ঞানদাস কহ মদন সহায় ।৪২।১২৯৪॥

পাঠান্তর

১। 'কুল' ঘ। ২। 'মুল' পাঠ সকল পুৰি-Cउरे मृहे इत्र । Cवांथ इत्र, 'मध्यु' एक शांक स्टेटन । ৩। 'বিলসহ' ব। ৪। 'ভেল তহিঁ' খণে 'হছঁ ভেন' ব।

युष्ट्रे ।

কুমুম নব পল্লৰ

কুঞ্জ-কুটীর ভ্ৰমরা ভ্ৰমরি কত রঙ্গে। পুরুখ যোড়ে যোড়ে সারি নারি শুক মউর মউরি কভং সঙ্গ ॥ রস অতি মোহন ভুবনে অমুপ রাস-ষড়-ঋতু নব নিভি নিভি। নিভি নব নিরবাহে রাই কাসু তাহে খেনে খেনে নবিন পিরিতি। পরশিতে গুণ দশ নয়নে নয়নে রস**°** ' বিহসিতে শত গুণ রঙ্গ। হুদ্র পরশাইতে (थरन (थरन खनरम ভাবে ভরয়ে হুহুঁ অস।

কোই কোই বাওত নাচত গাওত বিলসিতে বিগলিত বেশ। আবেশে অবশ তমু ভানদাস কহ তাহে কত কেলি-বিশেষ॥

1180122211

পাঠান্তর

১। 'কোরে কোরে' ব। ২। 'নউরি কত' গুলে 'ময়ুরীক' কঃ 'মউরিক' ব, চ। ৩। 'রোক' क, थ। 81 '(त्रांव' क, थ।

Bair 13

ভরি নায়রং-কোর*। বিলস্ট রাই° সুখের নাহি ওর ॥এ॥ ধনি বক্তিণি বাই। বিলসই হরি সঞ্জে রস অবগাই ৷ হরি মানস সাধা। বিলসই শ্রাম পরাজিত বাধা ॥ হরি ফুন্দর মুখে⁹। ভামুল দেই চুম্বই নিজ মুখে"। थनि त्रिणि (छोत्र। ভূলল গরবে কামু করি কোর॥ हुए हुए - खन भाग्रे । একই মুরলি-রক্ষে তুজন বাজায়॥ (कर करह मुंठ जार। · নাগরি-পরশে অবশ পিতবাস ॥ **(क्र कां**ष्ट्रि नाम (वर्षे । রাস-রসে আজু ভূলল কাসু ।

188175941

পাঠান্তর

)। देश भ-त भूषित १८।४ मरबाक भगा 'निवाम' चल 'रक्मांव' शन्त्र। २। 'छति नांवव' ছলে 'হরি নার্রি' প-র। ৩। ধ পুর্বিতে প্রভ্যেক

অবুগা চরণের শেবে (২) অর্থাৎ পুনক্**জি**র চিচ্চ আছে, স্থতগ্ৰাং ধ পুথির মতামুগারে ভিরি নারর-কোর ভরি নারর-কোর।' ইত্যাদি পাঠ বুরিতে হইবে। 81 'नावती' क, था १। 'विनमहे हित मार्का স্থলে 'হরি বিলস্ট কত' প-র। ৬। 'পরাভব' প-র। १। 'मूर्थ' প-त्र। ৮। 'हृषहे निक ऋर्थ' ऋरन 'ह्यन यन ग्रंब' श-द्र। 🔊। 'जूनन' क, ब। ১०। 'इह' रेडामि भववर्षी कनिश्वनि भ-व श्रविटड नारे, তৎপরিবর্জে নিম্নলিধিত ভণিতা দৃষ্ট হয়, ষ্থা---'বিদ্যাপতি কবি ভাব।

কহততি হেরত গোবিল্লাস ॥

क्ष हो।

वाकु अरमः वामन निर्ण। প্রেমে ভাসল সব বৃন্দাবন-বাদী । শ্রাম-খন বরিখয়ে কত রস-ধার। कारत तकिनि त्रांश विकृति मकात । कार्य भिष्म भव गमन स्वकः। गुगमत-हम्तन-भतिमल भद्र । দীগ° বিদিগ নাহি প্রেমের পাণার। ডুবল নরোত্তম না জানে সাঁভার ॥

পাঠাক্তর

186132391

>। 'ब्रह्मब्र' पा 'মুর্ক' ধ। ৩। 'सिन' का

থীৰাপ।

चारत, निकूक्ष-वरन ত্যামের সনে किक्रिश (पिथ्यू बोरे)। কেমন বিধাতা গঢ়লং মুর্তি লখই নাহিক যাই" ! কান্তুর বরণ **ठ**ण्लक-वज्ञी जारे।

মৃণি মরকড ঐছন রহল ঠাই ॥

কাঞ্চনে জড়িভ

কিয়ে অপরূপ

রাস-মণ্ডল

बम्गी मधन-चंछ।।

। পাইল **অ**চেডন•

দেখিয়া ও অঙ্গ-ছটা ॥

ৰদনে মধুৰ

মনম্প-মন

হাস অধ্যর

रुपरम स्परम मक।

কোন রূপবতী

রসের আবেশে

কুত্ম-শয়নে অক ৷

নবীন মেখের

নিবিড় আভা

তাৰে বিজুরি উলোই'।

দাস লোচনের

রাই সরবস

ও রদ-আবেশ মোই ।।৪৬॥১২৯৮॥

পাঠান্তর

১। 'কিন্ধপ রাই দেখিলু' ব। ২। 'বটন' ক; 'বটল' চ। ৩। 'লখই' ইভ্যাদি হলে 'পিরিভি লখিতে নারিলু' ব। ৪। 'মিশাই' ব। ৫। 'মনে' ক, খ, চ। ৬। 'চেতনে' ক, খ, চ। १। 'রোই' চ; 'বোই' ক, খ। ৮। 'আবেশে' ক, চ।

दक्षात्र ।

আজু ছছ ভালে বনি।

ছুহুঁ কান্দে ছুহুঁ ভুল দোঁহে দোঁহা প্রেম-পুঞ্জ লাবণ্য-সায়রে যৈছে চান্দ চান্দনিই ॥ এ॥

স্থান্দর সে মুখ ভাল ভিলক ত্রিভল লাল

স্থান্দরী-সিন্দুর-বিন্দু ইন্দু-বদনা।

শিরে শিখণ্ড বেণী মন্ত মউর কণী

অভিরসে অবশ বিনদ বিনদিনী॥

রস-ভরে পীনস্থানীই কম্পিত জ্বন দলি

কুটি টুটি পড়ে ভরে ফুকরে কিছিণী।

অরুণ চরণ-ভলে॰ ছুহুঁপ্রেম-রস-রকে। কুকুম-রঞ্জন নখ-মণি খনি খনি॥ ॥৪৭॥১২৯৯৫

পাঠান্তর

>। 'চজিনি' য। ২। 'পিনছনি' घ; 'পীন∙ ছনি' চ। ৩। 'ভৰি' ঘ। ৪। 'রকি' ঘ।

ততঃ সম্ভোগঃ।

ভূপানী।১

রাখাং-বদন হৈরি কাপু আনন্দ॰।
জলনিধি উছলই হেরইতে চন্দ॰॥
কতন্ত্র মনোরথ কৌশল কত রি॰।
কুম্ম্ব-শরে রাই কাপু অসম্বরি॰॥
পুলকে পুরলং তমু হৃদয় উলাস৮।
নয়ন চুলাচুলি আধ আধং হাস॥
সূত্র অভি বিদগধ অতুলনং নেহা।
রসের আবেশে বিছুরলং নিজ দেহা॥
হার টুটল পরিরস্তাং-কেলি।
মুগমদ চন্দন সব ছ্রেংং গোলিং৽॥
খসল কুম্ম কেশ ছত্র অভি ভোর।
নিলম্পিং৽ কাঞ্চন জড়িত উলোর॥
॥৪৮॥১৩০০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্ৰির ০৮০ ও প-র প্ৰির
০৭০ সংখ্যক পদ। 'ভূপালী' বলে 'ধান ব্রী' প-র।
২। 'রাই' প-র। ০। 'আনক্ষা' প-র। ৪।
'জলনিধি' ইড্যাদি বলে প-র প্রির পাঠ,—'জলবি
উচ্লে বৈছে হেরইতে চক্ষা।' ৫। 'কড রি'
বলে 'ক্রি' ক; 'ভরি' প-র। ৬। 'ক্স্বেশ'
ইড্যাদি বলে প-র প্রির পাঠ—'রাধা কাম ক্স্বেশপর স্বরি।'

৭। 'পুরিত' ক; 'পুরিল' থ, চ। ৮। 'উরান' ক, থ। ৯। 'আধ আধ' খলে 'লহ লহ' প-র। ১০। 'অত্ল' থ; 'অনবধি' প-র। ১১। 'রসের' ইত্যাদি খলে 'রস আবেশে বিসরি' প-র। ১২। 'দ্রে' ক, থ। ১৩। 'মুগমদ' ইত্যাদি খলে 'মুগমদ কুর্মে পরিমল মেলি ॥' প-র। ১৪। 'নীলমণি' খ, চ।

শক্ষাভরণ।

কুহুমিত মধুবন মধুকর মেলি। পিককুল গাওত মনমৰ-কেলি ॥ निश्वरन भूगथल नागति कान। এক-কলেবর ছুত্ঁ ওকই পরাণ এজা **ठांग्म कम्मन मन्म मनग्रज वाडि॰।** অতিরসে বাদর নহে পরভাতি৽ ॥ রাধামাধব মধুর বিলাস। শহু অবলোকনে মুত্র মৃত্র হাস। রূপ কলা গুণ ছতু সমতৃলং। প্রেম পরশ-রস আরতি অমূল 🛚 নিবিড় আলিজন কয়ল অপার। চুম্বনে বদনে রচয়ে সিভকার[।] ॥ পুরল মনোরথ বিগলিত স্বেদ। ছুছ ভুমু একই নহত লব ভেদ। বিগলিত কেশ বদন ভেল আন। জ্ঞানদাস কহ একই পরাণ ॥৪৯॥১৩০১॥

পাঠান্তর

্)। 'ছহ' শক্ষ ক, ধ পুৰিতে নাই। ২।
'একুই'ক। ৩। 'বাডে' ঘ। ৪। 'পরভাতে'
ক। ৫। 'সমজুক'ক, চ। ৬। 'করক' ক, ধ,
চ। ৭। 'দীতকার'ক।

fatra

বড় অপরপ দেখিলুঁ > সঙ্গনি নয়লি মনিকুশ্ব মাৰে।

इसनील-मि কনকে স্বড়িভ হিয়ার উপরে সাজে কুত্বম-শগ্ননে মিলিভ নয়নে উলসিত অরবিক্ষা।। শ্যাম-সোহাগিনী কোরে ঘুমায়লি চান্দের উপরে চন্দা^e ম কুঞ্ছ কুফুমিত স্থাকরে রঞ্জিত তাহে পিককুল গান। मत्राम मनन-वान দোঁতে অগেয়ান কি বিধি কৈল নিরমাণ # मन्म मलग्रक পবন বহ মৃত্ ও হুখ কো কক্ল অন্ত। দোঁহার তুহুঁ জন मद्रवम धन ক্ৰয়ে বায় বসস্ত ॥৫০॥১৩০২॥ ইভি তৃতীয়-শাখায়াং চতুর্বিংশভিপল্লবঃ।

পাঠান্তর

>। 'পেথিসুঁ'খ। ২।'নরলী'ক; 'নঙল' খ। ৩। 'কুঞ্জের' ক। ৪। 'অবেবিন্দ' ক। ∉। 'চান্দ'ক।

> অথ গোষ্ঠবিহারঃ। তহুচিত-শ্রীগোরচন্দ্র:।

> > ञ्हरे। ভাটিরারি।>

লাধবান-হেম- বরণ গোর-জুতিং
মুখ বর শারদ-চানদ।
অধিল ভুবন-মন- মোহন মনমণ্টমনমণ্ট রাজকি ছান্দ ।
দেশ গোরচন্দ্র নব কামণ।
আনন্দ-সার্ভ মিলিভ নববিপেণ
প্রকট ভাব অবিরাম ॥ এ ॥

সঙ্গবদ-স্থসময় হৈরি খেনে বোলত
হোরব গোঠ-বিহাবে।
পুন তব বোলত> সফল জিবন ২০ তদু
যো ইছ রূপ নিহারে॥
ব্রহ্মপতি-নন্দন চান্দ চলত বন
সৌধ উপরে চল ২০ যাই।
রাধামোহন ইছ রস ২৭ মাগ্রে
সোই চরণ জমু পাই ১১॥ ২০০০॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৮০৬ সংখ্যক পদ। 'প্রছই। ভাটিয়ারি' ছলে 'প্রছই' প-র-সা। ২। 'জ্যোতি' ক; 'মৃতি' চ; 'জুথি' প-র-সা। ৩-৪। 'মনরথ' প-র-সা। ৫। 'নব কাম' ছলে বর কান' প-র-সা। ৬। 'আনন্দ-সার' ছলে 'আজু সব মিলিড' প-র-সা। ৭। 'নবছীপে' ক, চ। ৮। 'সঙ্গর' ক, খ। ৯। 'রোরড' প-র-সা। ১০। 'জীবন' ক, চ। ১১। 'চলু' প-র-সা। ১২। 'বর' ক, খ।

মারুর ।১ (पर दिन खारक श्रीत- तिर । বিজয় করু নিজ হুতে গোধন সঙ্গে কি করব না পায়ই থেই ॥ধ্রু॥ মুখ ধরি চুম্বন করতহিঁ পুন পুন नग्रदन शंलार्य कल-धांत । ভীগিং পড়য়ে ঘন ন্তন-গভ বসন ক্ষীর-ধারণ অনিবার 🛭 বিনিহিত নয়ন ব্য়ন-কমল পর रेयहन हान्मः हरकात्र। कीरमः भून (इत्रव দিন-অবসানে অমুমানি হোয়ত বিভোর। প্রেম ঘটায়ল কো বিহি অদভূত छाट्ट श्रुन देव श्रवमात ।

ভণ রাধামোহন অসুদিন ঐছন হোয়ভ রস-মহিযাদ ॥২॥১৩০৪॥

পঠিস্তির

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৮০৭ সংথাক পদ। ২। 'ভিগি' ক, প-র-সা। ত। 'ক্ষীর ধারা' ক, চ। ৪। 'চন্দ্র' च; 'চন্দ' চ। ৫। 'কিরে' ক, প-র-সা। ৬। 'হোড' ক; 'হোওড' া, চ। ।। 'অজুড' ঘ, চ।

তথা রাগ। মওল ভাল।>

আজু বিপিনে যাওতং কান মুরতি মুরত° কুস্থম-বাণ অসু জলধর রুচির অক্স ভঙ্গি-নটবর-শোহনি। ইষত হসিত⁸ বয়ন-চন্দ তরুণি-নয়ন-ময়নণ-ফন্দ विष्यू-अधरत मूत्रलि-धूत्रलि ত্রিভুগন-মন-মোহনি ॥ কুন্ত্ম-মিলিড চিকুর-পুঞ চৌদিগে ভ্রমর ভ্রমরি গুঞ্জ পিঞ্চ-নিচয়-রচিত-মুকুট মকর-কুণ্ডল ডোলনি¹। চঞ্চল নয়ন খঞ্জন জোর সঘন্দ ধাওত ভাবণ-ওর গীম শোহত রতন-রাজ মোভিম-হার লোলনি> ॥ কটি পিত-পট>> কিন্ধিণি বাজ মদগতি অতি ২ কুঞ্চর-রাজ জামুঃ গ্লম্বিত কদম্ব-মাল মত্ত মধুকর ভোরণি>। छा इन १ - वजून ठ जून - कश्च ভক্লণ-ভরণি>ং-কিরণ গঞ্চ

গোবিন্দদাস-হৃদয় রঞ্জ^{১৬} মঞ্জ-মঞ্জির বোলনি ॥৩॥১৩•৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৭০।১৮০৮ ও প-র পুৰির হাত ও হণাত সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' ছলে 'कन्मान' भ-त्र-मा; 'माउत' भ-त्र। २। 'ब्यां ७७' क. थ. भ-ब-मा ; 'हनहे' भ-ब २१।०। ०। 'खबरु' খ। ৪। 'হাসত' ক। ৫। 'তক্লি-নয়ন-ময়ন' (সা-প. २०) नः পूथि) ऋल 'उक्ती-नम्रन-नम्रन' क, म, ह; 'ভক্ষণীগণ-নয়ন' थ: 'ভক্ষণিনয়ন বয়ন' প-র। ৬। 'ৰচিত' প-র। ৭। 'দোলনি' ক, খ, প-র ২।৫। ৮। 'সম্বন' ক, ধ, ঘ, চ। ৯। 'শোহত' (প-র ও गा-भ, २०२नः श्रुथि) ऋत्म '(भारत' क, थ, घ, ठ, थ-ब-मा) • । 'सामिन' थ-ब-मा ১६१०नः श्रम । ३)। 'शीख भंडे' क ; 'शीखशंडि' भन्त, २१।७। >२। 'মদগতি অতি' স্থলে 'ময়মন্তগতি' প-র-দাঃ 'মন্তগতি জিতি' প-র; 'মরমদগতি' সা-প ২০১ পুথি। ১৩। 'बनार' १-त २१।०; मा-१ २०> পृथि। >8। '(कांबगी' প-त २१।०। ১৫। 'अक्रम' প-त, जा-भ. २०५ श्रुवि। ५७। 'त्रक्षन' च. छ।

षुषी ।ऽ

গোঠেং বিজই ও অজরাজ-কিশোর।
জননী-বিরচিত ও বেশ উজোর ॥ধ্রু॥
আগে অগণিত কত গোধন চলিয়া।
গাছে অজ-বালক হৈ হৈ বলিয়া॥
সম-বয়-বেশ সবছ করে ছান্দ।
রাম-বামে চলু খ্যামর-চান্দ॥
মউর-শিশও চুড়ে ঝলমলিয়া।
মণিময় কুওল গণ্ডে টলমলিয়া॥
শির পর ছান্দ অধর পর মুরলি।
চলইতে পত্তে করে কত শুরলি ॥

কটি-ভটে পীত পটাম্বর বনিয়া।
মন্থর-গতি চলু গলবর । জিনিয়া।
মণি-মঞ্জির বাজত ক্লণিকুনিয়া ।
গোবিন্দদাস কহই ধনি ধনিয়া। ৪॥১৩০৬।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮০৯ ও প-র পুথির
২৭।২ সংখ্যক পদ। 'তুড়ী' স্থলে 'করুণ ভাটিয়ারি'
প-র। ২। 'গোঠ' ক, খ, দ, প-র। ৩।
'বিজ্ঞানী' ক। ৪। 'বিরাজিত' প-র। ৫। 'আগে'
ইত্যাদি স্থলে 'আগে আগে গোধন অগণিত চলিয়া'
প-র। ৬। 'এক' প-র। ৭। 'ধাম' প-র-সা।
৮। 'চাল্ফ' প-র। ৯। 'গুরুলি' ও । ১০। 'কুঞ্জর'
প-র। ১১। 'রণঝানিয়া' ক, ও । 'ফুনিকনিয়া' দ।

मलात्र ।>

গোঠে গোচরং গৃঢ় গোপাল। গণ্ডকিরি গুর্জ্জরি গাওত গমকে গোরি গোলত গান্ধার । গোপী-গোপ-গ্ৰীগণ8-গোপক গোকুল-গাম - বিহারি। গুঞা গৈরিক গোরদ-গরভিত रगारबाहन-क्रहि--धाती **॥** গহন-গ্রহাগত গোচারণ-রত গো-দোহন-গভিঃ-কারী। গো-গিরিধারি গুড় গরবাইত ১٠ खक्र-रगीवव-भवताती ॥ গজ-গতি-গামি গান-গুণ-গুন্ফিড্>> गगटन हत्रस खुत्रवृत्म । গোরস-গাছিস্ शित्री वत्र १०-नमन गांख्य मांन (गांविन्म ॥৫॥১७०१॥ পাঠান্তর

>। रेरा भ-त-मा পुषित्र ১৮১० ७ भ-त পुषिड

२१। द गरश्यक भए। 'मजाब' ऋटन 'मानव' भ त।

২। 'পোচারই' প-র। ৩। 'পোরিগণ' প-র-সা।
৪। 'গরিমগুণ' ক, ঝ, প-র-সা; 'পরীমগুণ' অ,
চ; 'গাবিগণ' প-র। ৫। 'গীম' প-র-সা। ৬।
'ভাবিত' প-র। ৭। 'ফ্রচির' ক, প-র-সা। ৮।
'গৃহাগত' প-র-সা। ৯। 'রভি' ক, ঝ। ১০। 'গো'
ইত্যাদি ফ্লে 'গো গিরি গুড় গুরুষা গরবাইত' প-র।
১১। 'গুল্ভিড' অ। ১২। 'গ্রাহি' প-র। ১৩।
'গোঠেমার' প-র।

अग्रकग्रस्थी ।>

মুদির-মরকত-**মধুর মূর**তি মুগধ মোহন ছান্দ। মল্লি-মালভি-মালে মধুকরং मछ मनमथ-काग्न । স্থুঘড়-শেখর শ্যাম স্থন্দর শরদ-শশধর-হাস। স্থবে**শ সম**-রস⁸ भटक भवग्रभ সতত হুখময় ভাষ ॥ঞ॥ চিকুর-চুম্বিত চিক্ণ চাঁচর চারু চন্দ্রক-পাঁতি। চকিত গাহনি চপল চমকিত চীভ-চোরক ভাতি। গিরিক গৈরিক গোরজ-গোরচন গন্ধ-গরভিত⁴ বাস। গরিম গুণ-গণন গোপ গোপন গাওত গোবিন্দদাস ॥৬॥১৩০৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮১১ ও প-র পুথির ২।১০ সংখ্যক পদ। ২। 'মধুমত' প-র। ০। 'সমবর' (পাঠান্তর—ক, ধ), প-র-না, প-র। ৪। 'সমবেশ' প-র। 'হুবেশ সমরস' হলে 'বরশ রসমর' প-র-না। ৫। 'চল্লিড' ধ। ৬। 'মগুডে' প-র। ৭। 'পদ্ধ গর্মিড' ধ; 'গোরস প্রভিত' প-র-সা, প-র। ৮। 'গোগণ' ष; 'গোপাল' প-র-লা। ৯। 'ঋণ-গান' ক, খ।

সারক।>

গোধন সক্তে त्राच्य यष्ट्रनम्बन् বিহরই যমুনা ঃভার। माम जीनाम স্থদাম মহাবল त्गांभ त्गांभांनः म्हां वनवोत्र॥ वाज्ञ घन घन विषाण (तन् । रेट रेट त्रव হামারব গরজন আনন্দে মগন চরত সব ধেমু ॥এ॥। সম-বয়^-বেশ কেশ পরিমণ্ডিভ চূড়ে^ শিখণ্ডক কুন্থম উজোর। মণিময় হার গুঞানব মঞ্ল হেরইতে জগ-জন-মন করু ভোর। কনক কটিণ কিন্ধিণি বলয় বিশাল म्পूद् क्रन् यूष्ट्र वाक । গোবিন্দদাস-গহ নিতি নিতি ঐছন विश्वरे नव-घन विभिन ममाय ॥ 11600611611

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮১২ সংখ্যক পদ।
২। 'নন্দনন্দন' ব, চ, প-র-সা। ৩। 'বামুন' ব;
'যমুনাক' প-র-সা। ৪। 'গোরাল' ক। ৫। 'সলে'
শব্দ চ ও প-র-সা পুথিতে নাই। ৬। 'নিসান'
ব; 'বিশাল' ক, চ। १। কেবল প-র-সা পুথিতে
'প্রু' আছে। ৮। 'রসমর' প-র-সা। ৯। 'চুড়' ব,
চ। ১০। 'কনক কটি' হলে 'কটি পর' প-র-সা।

অথ দিবাভিসারঃ।

श्वके मात्रण 12

তপনক তাপে তপত ভেল মহিতলং অতল বালুক দহন সমান। চঢ়ঙ্গ মনোরথে ভাবিনি চলু পথে তাপ তপন নাহি জান॥ প্রেমক গতি তুরবার³। নবিন-যৌবনি ধনি চরণ কমল জিনি তবহিঁকয়ল অভিসার ॥⊈॥ কুল গুণ গৌরব সভি-যশ অপ্ৰশ **जृ** १ कि व ना मानस्य त्रास्य। मरशमि ७ इनन মন মহা মদন ছোড়ল কুল-মরিযাদে। জাতল অমুরাগিণি কভত্ বিঘিনি সাধল মনমথ-ভন্ত। নিবারিতে স্থবদনি গুরুজন-নয়ন পাঠ করয়ে মণিমন্ত। কেলি-কলাবতি কুত্বম সর্রাস কুলে (कोणत्न कग्रन भग्रान। ষত ছিল মনর৭⁸ পুরল মনমথ

পাঠান্তর

ইহ কবিশেশ্বর গান ॥৮॥১৩১০॥

३। हेडा প-द-मा পुश्चित ১৮১० मरबाक भन्। 'ख्रुबंहे नांत्रक' ऋरण 'ख्रुबंहे नांत्रको' च। २। 'सही-ভল'ক। ৩। 'অনিবার' ক। ৪। 'অমুরথ' চ। ध। 'मत्नात्रथ' च, ठ; 'करूत्रथ' च, च।

7147 IS

त्रत्य नम-नमन् महत्त्र मरण কত কত মত করি থেল। সময় বুবিং তৈখনে রাইক গমন-আন ছলে আপহি গেল। मक्त दांत्र (पथ भी गनः-द्रकः। रेष्ट्रन जननिधि চাঁদক দরশনে উছলিত অধিক তরক' । প্র।

দূরহি ত্বহ মুখু হেরইতে তুওঁকর नग्रनिः वानमः नीत्र। ছহ অঙ্গ পুলকিত তুত্খরমাইভ কম্পিত হুহুঁক শরীর 🛭 কতভাঁযতনে ত্বভাঁ হোয়ল একঠাম ছু**হু রুপ**ণ পিবইতে চাহ॥ রাধামোহন পত্ত চ কুর-শিবোমণি খেলত রম অবগাহ 🛭 🗦 🗎 ১৩১১ 🛭

পাঠান্তর

 हेर्श श-त्र-मा श्रुचित्र >>> भःथाक श्रम । 'नाइक' ऋटल 'नातको' घ, छ। २। 'यञ्जका' क। ৩। 'मझनी হোর' স্থলে 'मझनि হোর' ক, খ; 'সজনি হর' চ, প-র-সা। ৪। 'মিলন' क, চ, প-র-সা। ৫। 'অধিক তরঙ্গ' হলে 'আর কড तक' भ-द-मा। ७। 'क्र ' क, भ-द-मा।

रावनी ।>

দুরহিঁ ছুই হেরি ত্বহু পুলকাইত ছ্ছ ভেল ভাবে বিভোর। नग्रटन नग्रटन यव छ्छ पाई। नित्रथर তব বহু আনন্দ-লোর ॥ मकनो (एथ द्राधामाध्य-(श्रम। ছহু নোহাঁ কি করব থেছ না পাওড जयु इन् मात्रिन-(रम 1810 ছ্ছ কর বচন রচন পুন গদ গদ হুছ অক ভেল ফুকম্প। হুছঁ দোহাঁ পরশিতে তুহঁ ভেল নিমগন এছন হোরত স্তম্ভ । অপরুপ বিধু-মণি ভূত্ত কিয়ে বিধুবর मयू मम कत्र ज्ञांभारम। রাধামোহন - পত্ত তুহুঁ অভি নিরুপম ত্রিভূবন করু অবভংসা । 12001101

পঠিস্তির

১। देश প-त्र-मा পूषित ১৮১৫ ও প-র পুषित
১৫।২৫ সংখ্যক পদ। ২: 'বহু' প-র। ৩।
'বোর' च। ৪। কেবল প-র-মা ও প-র পুষিতে
'গ্রু' আছে। ৫। 'ছহু' ইত্যাদি ফ্লে 'হহু'ক
ডেলছি কম্প' প-র। ৬। 'স্বর্গু' প-র। ৭।
'গৌবিন্দ দাস' প-র। ৮। 'অবশংস' ক, এ, চ,
প-র-মা; 'পরশংস' প-র।

7 17 13

ঘন ঘন চুম্বন ঘন পরিরম্ভণ जूरक जूरक मधन वकान। ঘাতন তুত্ত জনং घन घन नथ-भंद्र-আনন্দে আপনা নাও জান। অপরুপ নিধুবন-কেলি। দিনহিঁ হাধা মাধ্ব অতি রসে নিমগন मनन-कनन छुद्र ° (शिल । ध्रा তুত্ত দোঁহা উর পর নিচল-কলেবর করত সঘন সিতকার। থার বিজুরি কিয়ে অভিনব ঘনবর বেড়ি রহল অনিবার॥ मान यञ्चनमन কৰ সোই হেরব (शंग्रव (विन व्यवमान। তবছি নিবেদব শুক্ষুগ হেরি করইতে সো সমাধান ১১১৯১০১৩

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১৮১৬ সংখ্যক পদ।
'সারক' হলে 'সারকী' ধ, চ। ২। 'বন ঘন' ইতাদি
পংক্তি হইটির হলে—

'বন নথশর বাত ছহ' জন আনন্দ আপনা আপনা নাহি জান।' প-র-সা। ৩। 'নাহি' জ, খ, চ। ৪। 'অপরূপ' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'দুরে' জ, চ, প-র-সা। ৬। 'বির' ক, প-র-দা। ৭। 'ভব্চ' ক, খ, প-র-দা; ভিব্হি'চ।

१ इंडे ।

রাধা মাধ্য যার হত্ত মেলি।
নিদাঘক দাহ সারগ্র জুরেই গোলি॥গ্রা॥
তহিঁ পুন সরোবর মন্দির মাকা।
কল-জল-শাকর্ত-নিকর বিরাজ॥
সৌরজ-মিলিত সন্ধ্রহ মন্দ।
কি করার দিনমণি-কিরণক বন্ধ॥
তহিঁ বর গুরত-বাপিও অবগাও।
রাধামোহন পত্ত রসিক গুনাত॥১২॥১৩.৪॥
ইত্যাদি গ্রীজ্ঞ সময়োচিত-মিলনম্।

পাঠাস্তর

১: ইহাপ-র-সাপুশির ১৮১৭ সংগ্যক পদ।
২। 'দুবে' ক, প-র সা। ৩। 'কন-জল-শীকর'
ক; 'ফল-জল-শীকর' চ। ৪। 'বাণী' ৮,
প-র-সা।

টীকা

৩—৪। তিছিঁ ইত্যানি। ওপার শ্রেবরস্থিত
মন্দিরের মাঝে কল কর্থাৎ ক্ষোরারার জ্ঞল-কর্পা-সমূহ
বিরাজ করে। 'কল: শিল্প-বিশেষঃ ফুঝারা হাত
ক্ষোপ্তা তত্পজলক্ষা-সমূহৈবিরাজ্ঞানে।' ১তি
রাধামোহন ঠাকুরের টীকা। ৭। "তহি" ইত্যানি।
'স্থারত্বেব বালি দার্থিকা' ইতি রাধামোহন।

धाननी ।>

রাই নিয়ড় সঞ্জে চলু বরং কান।
সখাগণ মাঝহি কয়ল পয়ান।
ত্রহিং নেগরি ধেমুগণ ধায়।
স্হচরগণ সব মাললং ওায়ং॥
ধেমুগণ অঞ্চহিং দেওড় হাত।
উচ্চং পুচছ করি ধুনায়তং মাণ॥

সবহুঁ স্থাগণ পূ্ছত্ত্ব তাই।
কোন কাননে ছিলা ভাই কানাই॥
কাহে মলিন ভেল ভোহারি বয়ান।
যতুনন্দন হেরি আকুল পরাণ॥১৩১৩১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৮২৬ সংখ্যক পদ।
২। 'ধ্ব' ক, চ। ৩। 'দ্রহি' ক, খ। ৪।
'মিলল' ক, প-র-সা। ৫। 'আর' ঘ। ৬। 'সক্রহি'
ঘ। ৭। 'দ্রল' ঘ। ৮। 'উর্ক্ 'ক, থ, প-র-সা।
৯। 'ঢুলারত' প-র-সা। ১০। 'পুছ্ত' ক, চ,
প-র-সা।

কক্লণ ভাটিরারি।১

হিয়ায় কণ্টক দাগ

মলিন হৈয়াছে মুখ-শশী।

আমা সভা তেয়াগিয়া কোন বনে ছিলা গিয়া

তোমা বিনে সব শৃত্য বাসি॥

নবখন-শ্যাম তমু ঝামর হৈয়াছে জমু

পাষাণ বাজিয়াছে রাজা পায়।

বনে আসিবার কালে, হাতে হাতে সোঁপি দিলে

ঘরে গোলো ক বলিব মায়॥

বেলাব বলিয়া বনে আইলাম ভোমার সনে

বিসয়া থাকিব জ্ল-ছায়।

বনে বনে উকটিয়া তোর লাগি না পাইয়া

আমা সভার প্রাণ ফাটি যায়॥

1/81/0/61

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুখির ১৮২৭ সংখ্যক পদ।
২। 'বন্ধন নাগ' ক; 'বন্ধন রাগ' ধ, প-র-সা।
৩। 'বেকেছে' ক; 'বাজিছে' প-র-সা। ৪।
'ঘর' খ, চ। ধ 'থাক রে' প-র-সা। ৬। 'তলাসিয়'
প-র-সা।

অথ উত্তর-গোষ্ঠ-গৃহাগমনম্। শ্রীগোরচন্দ্র:।

তুড়ী।১

বেলি অবসান হেরি শচিং-নন্দন ভাবহিঁ গদ গদ বোল। কাপুক গমন-সময় অব হোয়ল रुनिरग्न (तनुकः त्रांन ॥ সজনি না বুঝিয়ে গৌরাঞ্গ-বিলাস। প্রেমহি নিমগন রহত্হি অনুখন কথিত নাহি অবকাশ ॥ধ্ৰা খেনে পুন কহই निकरे श्वित्य अवध ঘন হান্তা-রব রাব। হেরইতে শ্রাম-চদ্ৰ অমুমানিয়ে গোকুল-জন যত ধাব ॥ এছন ভাতি করত কত অনুভব যো রসে কৃত-অবভার। রাধামোহন-প্র দো বর শেখর ভৈছন সভত বিহার ১১৫॥১৩১৭॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮২৮ সংখ্যক পদ।
২। 'শচীনন্দন'ক। ৩। 'গুনিয়া' য়, চ।৪।
'ধেয়ক' প-র-সা। ৫। 'কভিছ' ক, খ। ৬।
'নিকট' ইত্যাদি হলে 'নিকটই গুনিয়ে' য়, চ;
'নিকটিছ গুনই' প-র-সা।

কাদতা বা পৌরী।১

গো-খুর-খুলি উছলি ভরু জ্বর
ঘনত হাথা-রবং হৈ হৈ রাব।
বেণু-বিষাণ- নিসান সমাকুল
সজে রজে সব সহচর ধাব।
বন সঞেও গিরিবরধর ঘর আওয়েও।

জলদ হেরি জমু হর্ষিত চাঙ্কি ব্রজ্বন্দাগণ মঙ্গল গাওয়ে ॥ধ্রু॥ কুটিল অলককুল গোরজ-মণ্ডিত° वर्श-मुक्ठे भरनारत हाना। বিপিন-বিহারি ছরম বরমাইত ঝামর নিল উতপল মুখ-চান্দ। ললিত মণি-কুওল কিশলয়-বলিত গগু-মুকুরে উজিয়ার। নটবর-শেখর (गाविक्समाम-পछ হেরইতে জগ ভরি মদন বিথার॥ 11 JC02115C

পাঠান্তর

১। ইহা প্র-সা পুৰির ১৮২৯ ও প্র পুৰির ৩৫।৩ সংখ্যক পদ। ২। 'রব' শব্দ প্র-র-সা পুৰিতে নাই। ৩। 'বনতে' প্রা ৪। 'বন সঞ্জে' ইত্যাদি এদ্ব-ক্লিটির স্থলে প্র-র-সা পুৰির পাঠ, বধা—

'বন সঞ্জে গিরিধর বরহি আয়ল জলদ হেরি জমু আওরে। সব জন হরষিত ব্রজ-রমণীগণ মূলল সব গুণ গাওরে॥' ধা 'মণ্ডিল' ব। ৬। 'বরিহা' ক। ৭। 'ছরমে' ক। ৮।, 'নীল' ক, ধা ৯। 'মুকুর' প-র।

পৌরী।>

ভরুণা-লোচন- ভাপ-বিমোচনহাস-স্থাকুর-ধারা।

মন্দ্র-মরুচ্চল- শিস্কু-কুভোজ্জ্লমৌলিরুদার-বিহারা।
স্থলরি পশ্য মিলভি বনমালা।

দিবসে পরিণভি- মুপগচছভি সভি
নব-নব-বিভ্রম-শালী। গ্রা

ধেমু-খুরোদ্ধৃত ২ রেণু পরিপ্ল জফুল-সরোকহ-দামা।
আচির-বিকসর লস্দিন্দীবরমণ্ডল-ফুন্সর-ধামা॥
কল-মুরলী-ক্তি- কৃত ভাবক-রতিরর দৃগস্ত-ভরজী।
চার-সনাতন- ভুমুরমুরঞ্জনকারি সুহৃদ্যাণ-স্ত্রী ॥: ৭॥১৩১৯॥

পাঠা রর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৮০০ ও প-র পুথির তথাৎ সংখ্যক পদ। 'গৌরী' হুলে 'মলার গৌরী চলত' থ, চঃ ২। 'খুরোদ্ধুও' (প-র) হুলে 'খুরোদ্ধুত' ক, থ, ঘ, চ, প-র-সা, প-র।

6 41

১-->৫। রাধামোহন ঠাকুর-ক্বত টীকা ব**থা,** --"ওতঃ শ্রীক্বফং দৃষ্ট্য প্রাদাদ-শিথরাক্টা ব্রহ্মদেব্যঃ 'ভক্ষণী-লোচন' ইভ্যাদিকং পরম্পরমৃচু:। তে স্করি! বনমাণী মিলতি বগৃংমাগছতীতি পশ্র। कीषुन:--- उक्नी-लांहनानाः उपिष्ठका या श्रान-সুধান্ধুরন্তদারণশীলঃ। তথা মন্দমরুতা চলেন চঞ-লেন পিছেন ক্বত উজ্জালা মৌলির্যন্ত স শোভন-বিহরণশীলঃ মহাবিহারী বা। তথা দিবদে পরিশতিং माञ्जः প্রাপ্তে সভি নবনববিজ্ञমো नौनाবিশেষো कावविर्णायां वा उत्युकः। (धन्नुश्रवाकृत्वन द्राप्ना পরিপ্লুতঃ তথা ফুল্ল-সরোকহদামা স চাসে) স চেতি। **७९कान**विकानि-लम्भित्रस्थनांभव स्मातः साम স্বৰূপং ৰক্ত তাদৃশ:। মধুরমুরলীশব্দেন কতা ভাৰকানাং ভবদীয়ানাং প্ৰীতিৰ্যেন সঃ। অত্য স্বন্ধি দৃগগুতরদী। চাকী হ'লরী সনাতনী তহুর্যভ পকে স্নাত্ননামানং গোসামিনং ত্নোতি অৰ্থাৎ সান্সং করোতি ধাতৃনামনেকার্থতা কলনা। তথা অহরলন-কারি-মুদ্দাণানাং সলী।"

অস্বাদ

১-->१। (इ ख्लाति ! एत्य, वनमानी चात्रसन

কারতেছেন। তিনি তকণীগণের গোচন-তাপনাশন হাস্ত-ম্ধাছ্র-ধারী, মল পবন-চঞ্চল শিধি-পুচেছ্
উজ্জল-চূড়া-বিশিষ্ট ও স্থান্ধর ক্রীড়াশীল। দিবাঅনসান হইলে তিনি নব নব বিলাস-বিভ্রম প্রাক্ষা থাকেন। তাঁহাব ফ্ল-পঞ্জল-মাল্য ধেছখুরোদ্ধুত খুলি ঘারা সমাত্ত হইয়াছে; তিনি অচিরবিক্সিত নীলোংপল পুঞ্জের ভার কাঞ্জি ঘারা শোভা
পাইতেছেন। তিনি মধুর মুরগী-রব ঘারা ভোমার
প্রীতি উৎপাদিত করিয়া, ডোমার পানে প্রশংশন:
বিহ্ম দৃষ্টি-পাত করিতেছেন; তিনি স্থানর সনাতনতম্ব (পক্ষাস্তরে—গোভামা সনাতনের আনন্দদারী)
ও চিত্তাম্রঞ্জনকারী স্ক্রণগণের ঘারা বেটিত
হইমা রহিয়াছেন।

दा हिंदू

গোঠেং প্রবেশ করায়ল গোগণ मधागप निष्क निष्क मिस्ति (शल। বৎসক বান্ধি ছান্ধি ধেমুগণ ঘন ঘন দোহন কেল। প্রশার শ্রামর-গঙ্গ। রঙ্গ পটাম্বর হার মনোহর (गा-भृति-धृमत अम ॥ ध ॥ নব নব পল্লব-গুচ্ছ-স্থমণ্ডিত চুড়ে শিশগুক বেঢ়ল দাম। মকরাকুত মণি-কুগুল দোলনি হেরই চমকি পড়য়ে কত কাম॥ . বন-ফুল-মাল বিরাজিত উর পর কিঞ্চিণি-রণরণি নৃপুর পায়। গোবিন্দদাস-পত্ জগ-মন-মোহন ব্রজ্বনমণাগণ হর্ষিত ভায়। 1020611461

পাঠাক্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৩১ সংখ্যক পদ। ২। 'গোঠ' খ। ৩। 'করারল গোগণ' স্থলে 'গোপ স্থাগণ' প-র-সা। ৪। 'স্থাগণ নিজ নিজ' স্থলে 'নিতি নিতি' প-র-সা।

> অথ দিনাস্তরে গোষ্ঠবিহারাদি। শ্রীগোরচন্ত্র।

> > হুৰ্ট সাৰুল।১

হ্মরধুনি-ভীরং তীর মাহা বিলসই नम-वय वीलक नत्र। বলিত হরি হরি ধনিত করতল-তাল-নাচত নটবর-ভঙ্গ। खग्न भहि-जन्मन⁸ ত্রিভূবন-বন্দন পূর্ণ পূর্ণ অবতার। জগ-অমুরঞ্জন ভব-ভয়-ভঞ্চন সংকীর্ত্তন পরচার॥ চম্পক-গৌর প্রেম-ডরে কম্পই ঝম্পই সহচর কোর। অঞ্চি অঞ্চ পুলককুল আকুল क्क-नग्रत्न कंक्र लाज ॥ ধনি ধনি ভাঙনিং চতুর-শিরোমণি विषग्ध-कोवन कीव। **८गाविक्सनाम** এ হেন রুসে বঞ্চিত অবহু শ্রবণে নাহি পাবু ॥১৯॥১৩২১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুশির ১৮৩২ সংখ্যক পদ।
২। 'ক্রর্থুনী-জীরে' ক। ৩। 'ধ্বনি' ক, ধ,
প-র-সা। ৪। 'শচীনন্দন' ক। ৫। 'ভাঙনি'
(প-স ও ব পুশি) হলে 'ভাবিনী' ক; 'ভাবিনি' ধ,
চ,প-র-সা। ৬। 'পিব' ক,প-র-সা।

শ্রীনিত্যানন্দচন্দ্রস্থা।

তথা রাগ।১

শোভা করে মুখ-শশী कमल किनिया आधि कक्रगांत्र मञा भारन हांग्र । বাত পসারিয়া বোলে আইস আইস করি কোলে প্রেম-ধন সম্ভারে বিলায় ॥ কাঁচনিং কটির বেশ শোভিছে চাঁচর কেশ বান্ধে চূড়া অতি মনোহর । বুঁক বাহি পড়ে লোরে नाष्ट्रेया-ठेमरक हटन বিবিধ জীবের তাপ-ছরঃ। হরি হরি বলং বলে ভাহিনে বামে অল দোলে त्राम (गोत्रोमारमत गमा सति। নিতাই প্রেমের ফান্দ वश्रमांथा गूथ-हान्य ভাব-সিক্ষু উছলে লহরী ॥ নিভাই করুণা-সিন্ধু পতিভ'ণ জনার বন্ধ কক্ষণায় জগত ডুবিল। প্রসাদ হইল ধন্দ महन-महारू ७ २ अक নিতাই ও জিতে না পারিল ॥২০॥১৩২২॥

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৮৩৩ সংখ্যক পদ। २। 'कांक्रनि' च, ह। ७। 'मरनांच्रत्र' च। ४। 'छान स्टब्न' थ। १। '(वान' भ-त-ना। ७। 'छाहिन' ৰ, চ। १। 'নিতাইর' ব। ৮। 'ভবসিছ্' ক, प, घ, छ। »। 'উছলে नहत्री' ऋल 'वनिहात्री' প-त्र-ना। ১०। 'व्यथम' প-त्र-ना। ১১। 'यरपत्र' ক। ১২। 'নিতাইহ' প-র-সা।

পাঠান্তর

पृष्ठी ।>

धीरत हमू माधन ষমুনাক ভীরে मन्म मध्र तिश् विष्टे दि । বরজ-বধু কামিনি ইন্দিবর°-নম্ন সম্মন ডেজিয়া বনে ধাওই রে।

অসিত অন্মধর অসিত সরসিরুহ অভসি-কুম্বম অহিমকর স্বভা-নিরণ। रेख-नीलमणि উদার মরকভ-

শ্ৰী-নিন্দিত বপু-আভা• রে॥ শিরে শিখওদল নব অঞাফল নিরমল মুকুভা লম্বিণ নাসাতলদ। নব কিশলয় অবভংস গোৱোচন

অলক তিলক মুখ শোভা> রে ॥ শ্রোণি পিভাম্বরণ বেত্রণ বাম কর कश्रु-कर्ण वनमाना मरनाश्त्रः। ধাকু-রাগ-বৈচিত্র> কলেবর

চরণে চরণ পরি শোভা রে॥ (गा-धृलि-धृमत विभाल वक्त थल) রজ-ভূমি জিনি বিলাস নটবর গো-ছান্দন রজু>৬ বিনিহিত কন্ধর क्राप खुवन-मनालाखांभ (द्र ॥

ত্রগা>৮ পুরন্দর দিনমণি শঙ্কর (या চরণার্ম্ম সেবে নিরন্তর>>। সো হরি কোতুক জ্ঞজ-বালক সাথেং

গোপ-নগরিং> অভিলাসা রে॥ দো পত্ঁ-পদতল-পরাগ-ধূসরংং মানস মন করু আশা নিরস্তর। অভিনৰ সংকৰি দাস জগন্নাথ कननि-कठेब-छग्र-नाभा दि ॥

1157170501

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৩৪ ও প-র পুথির ২৭।৮ সংখ্যক পদ। ২। 'বাৰ্ট' প-র-সা। ৩। 'हेस्मीवत्र' क। ८। 'वध्' क, थ, भ-त्र-ना, भ-त्र। 'অসিত কুত্ৰ অহি করত ভূতানি রে' ক, ধ; 'অতসীকুত্ম মহিষকর ভগানিরে' প-র-সা; 'অসিত কুমুম আহী মকর মুভানির' প-র।

'রাভা' চ। १। 'ক্ষিড' ক, প-র-সা; **위·경 1** ৮। 'নাসাতল রে' ৯। 'শোভনি' খ : ১০। 'গীতাম্ব' ক, খ। ১১। '(वर्ग' भ-त-मा। ১२। 'मरनाहत (त' क. প-র-সা। ১৩। 'বিচিত্র' প-র। ১৪। 'বক্ষত্রন' कः 'ককতল' প-র-সা, প-র। ১৫। 'নটবর রে' ক; 'নটবরে' প-র-সা। 'রজভূমি' ইত্যাদি স্থলে 'রক্তৃমি পর নাচত নটবর' প-র। ১৬। 'রজ্জু' ক, थ, भ-त्र-त्रां, भ-त्र । ১१। 'मरनारनांखा' क । ১৮। 'ব্রহ্মা' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ১৯। 'নিরস্তর রে' ক, প-র-সা। ২০। 'সো হরি' ইত্যাদি হলে **'কৌভূকে সোহরি বর**জ বেশ ধবি' প-র। ২১। 'গোপ-নগরি' হলে 'নন্দ মন্দির' প-র। ২২। 'দো প্রত্যাদি (প্র) পংক্তিবয় ক, ধ, ঘ, চ ও প-দ্ৰ-সা পুথিতে নাই।

শ্ৰীপাছার।১

खब-नम्मकि नम्भन भीलम्भी । इतिश-ठम्मन-छोमक खात्म तनी ।। শিখি-পুচছকি বন্ধনি বামে টলী । ফুল দাম নেহারিতে কাম ঢলী। অতি কুঞ্চিত কুম্বল লম্বি চলী । মুধ নীল-সরোরুহ বেটি অলী। **ज्ज-**मर्छ विष्धिष (इमम्पी) । নৰ বারিদ বিদ্যাত থার জনী>>॥ অতি চঞ্চল লম্বিভ পীত ধটী সং। 🌣 কল-কিঙ্কিণি সংযুত পীত কট্টি১০ 🛭 পদ-নৃপুর বাজ ভ পঞ্চ-শরং১৪। কর-বাদন নর্ত্রনাধ গীত বরং॥ পদ-নৃপুর বাজত পঞ্চরসে। किवा (वर्षु) विद्याशिष्ठ १ मे ११ म्हण । যোগি বোগ ভূলে মুনি ধ্যান টলে। ধার কামিনি কামনে ঙেজি কুলে ৷

গজ সর্প সঞ্জে গিরিরাক চলে।
স্থা>-রূপ-ভূ-বীরুধং পুল্প-ফলে ॥
স্থাসূর লজ্জিত শাস্ত মনে।
পদ-সেবক দেব নৃসিংছ ভণে ॥

• ॥২২॥১৩২৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৩৫ সংখ্যক পদ। २। 'नौनम्बि' क, भ-त-मा। এই भ्रम्षि '(ভাটक'-ष्ट्रान्य त्रिष्ठ ; हेशंत्र ०त्र, ७ंक्रे, २म ७ २२ म वर्ग अत्र ; স্তরাং অন্তা বর্ণটি শুক্ত হওয়া আবশ্রক। ১। 'হেরি'ক, ধ, পর-সা। ৪। 'বনি'ক, ধ, প-র-সা। ৫। 'পুছেক' ক, ধ, প-র-রা। ৬। 'টেলি' क, च, भ-त-मा १। 'हिन' क, च, भ-त-मा । ৮। 'ठिनि' क, अ, अ-त-मा। २। 'ञ्चिन' क, अ, अ-त्र-मा। >। '(रुसमनि' क, च, ठ, প-র-সা। ১১। 'बनि' क, थ, প-ब्र-मा। ১२। 'धरि' क, थ, প-ब्र-मा। ১০। 'কটি' ক, খ. প-র-সা। ১৪। 'পঞ্চশরং' ক, চ। ১৫। 'নৰ্স্তক' প-র-সা। .৬। 'কিবা বেণু' चरन '(रवपू' क, थ ; '(रवपूस्तिन' च । ১१। 'र्वाानिड' घा ১৮। 'मिश' क, थ, घ, প-র-সা। ১৯। 'শুক' প-র-সা। ২∙। 'ভূবিকৃধ' ক, প⊦র-সা; 'ভূবীकन' च ; **'ভূবী**রধ' थ।

টা কা

৭—৮। "ভূব" ইত্যাদি। (শ্রীক্ষের) ভূক রূপ দণ্ড ধারা অপ-রূপ মণি পরাজিত হইরাছে। (তাঁহার স্নীল অক ও পীত ধড়া) বেন নবীন মেধ ও হির বিহাৎ।

১৭—১৮। শগর ইত্যাদি। (প্রীকৃষ্ণের
দর্শন লালসা হেতু) গন্ধ সর্প প্রভৃতি প্রাণিগণ সন্দে
গিরিরাক হিমাচল অ্থ-জনক রূপথিশিষ্ট ভূমি, লতা
ও পূলা-ফলের সহিত সমাগত হয় অর্থাৎ তাঁহার
দর্শনানন্দে পৃথিবী পূলা-ফলে সরিপূর্ণ হইয়া উঠে।

विज्ञान ।>

শ্রুতিপাশ বিলাস মণি-মকরাকৃতি कुछन मधिज गर्छ (मार्टन। চুড়াং শিখি সাজনি নট-বেশ হুকেশ মালতি-মাল প্রসন্ন গলেও॥ বেণু বাজায়ত ধেন্দু চরায়ত कालिन्मि-छोत्र श्रुणीन ध-वरन। প্রিয় দাম শ্রীদাম স্থাম মহাবল এ সব গোপ স্থা সগণে ॥ অভি মন্দ স্থান্ধ বহে মলয়ানিল• উরত চূড়ে মউর-শিখও। धविन माङ्गि পিয়লি ডাকই মণি-মণ্ডিত করে পাচনি-দণ্ড॥ भिथि-शुष्ट्-भिरत्र नव-८भघ-क्रि**रि** मनि-कांक्ट्रि-कृषिक (त्रन्-कतः। সিভ-চন্দনে চর্চিড নীল-তমুং বনমাল্য **গলে** বর-পীত-পটং॥ 120120261

পাঠান্তর

১। ইহা প্-র-সা পুৰির ১৮৩৬ সংখ্যক পদ।
২। 'চূড়া' ক, ধ। ৩। 'নলে' ক, ধ, দ, চ।
৪। 'পুলিন' ক, ধ, চ, প্-র-সা। ৫। 'স্থনে'
প্-র-সা। ৬। 'অতি বন্দ' ইত্যাদি কলিট কেবল দ প্রবিতে আছে। ৭। 'শিধি-পুদ্ধ' ইত্যাদি প্লেটি প্-র-সা পুর্বিতে নাই।

नीवण 13

গিরিধর লাল গিরি পর খেলন ভক্ন হেলনং পদ-পদ্ধক দোলনিয়া। অভি বল হ্বল মহাবল বালক কান্ধে ছান্দ করে ভাড়া দোছনিয়া। গিরিবর নিকট বেলত খামকুম্বর খুৰ্ণিত নম্ন বিশালা। নোৰুন তৃণ হেরিয়া বসুনা-ভট **ठकल भाग (गांभाना ॥** স্থাগণ সজে त्राय नम-नमन উপনিত• যমুনা-ভার। পাঁচনি বেত্র বাম কক্ষে দাবই अञ्चल ভরি পিয়ে नोत ॥ প্রিয় বহুদাম এদাম মধুমকল তিরেশ রহি হেরত রঙ্গ। শ্রামল সুন্দর মুর্ভি মনোহর হেরি যমুনা অতি বাঢ়ল ভরক ৷ 12811/0261

পাঠান্তর

১। 'গিরিধর' ইত্যাদি পদটি প-র-সা পুথিতে ১৩২৫ সংখ্যক পদের শেষাংশ-রূপে দিখিত হইরাছে।
২। 'হিলন' ব, চ। ৩। 'ভাঙ' ক; 'ভাড়ে' ব, চ।
৪। 'খ্যামস্থলর' ছলে 'নন্দনল্পন' প-র-সা। ৫।
'ব্যুনা-তট' ছলে 'সব বন মাহা' ব। ৩। 'উপনীড'
ক। ৭। 'অ্লাম' ক, ব, চ; 'দাম স্থল্ম' প-র-সা।
৮। 'ভীরে' ক, চ, প-র-সা।

তথা রাগ। ১

গলিত রজত-গিরি জিনি তমু স্থান জামু লখিত বন-মাল।

নীল বসন বনি অপদ্ধাপ শোভনি

মরকতে ছীরং মিশাল॥

ধাওত ধবলি পাছে বলরাম।

চঞ্চল নয়ন চুলয়ে জমু প্রজ হেরি মুগধ ভেল কাম ॥ জা

উভ করে ধবলি শাঙলি বলি ডাকই

কোমল বংস লেই কাজে। সহনে ধসয়ে শিখি-

পিঞ্চ মনোহর

ছান্দন-ভুরি দেই বান্ধে।

বয়ান চান্দ অধর অসু বাস্কুলি

তাহে মধুর মৃত্ হাস।

বরিধরে অমিয়া শ্রবণ ভরি পীবইণ সহতর স্থল্পর দাস ॥২৫॥১৩২৭॥

পাঠান্তব

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৮৩৭ সংখ্যক পদ। ২। 'হীরক' ক; 'হারা' প-র-সা। ৩। 'ঢুলারে' ক, খ, প-র-সা। ৪। 'করি' ক, খ।৫। 'কেমন' প-র-সা। ৬। 'পুছে' ক। ৭। 'লিনি' ক, খ। ৮। 'নরন' ক, খ। ৯। 'পিবই' ক, প-র-সা।

ভাটিয়ারি ৷১

नील वनन

রভন ভূষণ

নাটুয়া মোহন বেশ।

वन-इटिन्हर

मनन कारमा

চামরী চাঁচর কেশ ॥

ভাহাতে বিনোদ চূড়া।

শিখণ্ড রচিত

গুঞ্জায় খচিত

বিবিধ কুহুমে বেড়া ॥ ঞ ॥

ग**थ-म** थट्न

এক' কুগুল

এক মঞ্চরি ফুল।

ठान्म-वम्दन

শিক্ষার নিসানে

ধাওয়ে ধবলিকুল॥

ৰধু-মক্তল

বামে স্থবল

সমূখে চিকণ কালা।

ভার মাঝে রাম

জিনি কোটি কাম

যমুনা হ - কুল আলা ॥

मधागन महन

जाशीरत्रतः वरम

यम्ना-श्रुमात्न देववा।

চরায়ে ধেতু

वाकारम् (वन्

मान चन्मरवः रेनवा ॥२७।५७३८॥

পাঠান্তর

ইছা প-র-সা পুথির ১৮৩৮ সংখ্যক পদ

 বাংলা বা ৩। বাংলা প র-সা। ৪।
 বিজ্ঞা বা ৫। বাংলাবে প-র-সা। ৬। বুঞ্জি

 ক; 'মঞ্জনী' খ, প-র-সা। ৭। 'ভাণ্ডির' ঘ।

৮। চিরার' ক, খ; 'চরাইছে' প-র-সা। ১।
 বিজ্ঞার' ক, খ; 'বাজাইছে' প-র-সা। ১০।
 বিজ্ঞার' ক, খ, প-র-সা।

पूड़ी ।>

চলত রাম স্থানর শ্রাম
পাঁচনি কাচনি বেত্র বেণু
মুরলি-খুরলি গান রিং।
প্রির শ্রীদাম স্থাম মেলি
তর্মিণ-ডনরা-তীরে কেলি
থবলি শাঙলি আও রি আও রি
ফুকরি চলত কান রিং॥
বিয়েসং কিশোর মোহন ভাতি
বদন-ইন্দু জলদ-কাঁতি
চার্যু-চন্দ্রিণ গুঞ্জাহার
বদনে মদন-ভান রি।
আগম নিগম বেদসার
লিলারণ করত গোঠ-বিহার
নিরমামুদ করত আল
চরণে শরণ দান রি॥২৭॥১৩২৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৩৯ সংখ্যক পদ। ২। 'বে' প-র-সা। ৩। 'ভক্ষণি' ক। ৪। 'বে' প-র-সা। ৫। 'বরেসে' ক, চ। ৩। 'চক্রিকা' খ। ৭। 'সীলার' ক, খ। थामनी ।>

মরকত রজত মিশাল।
খ্যাম রাম রূপ ভাল ॥
খ্য:সহি ভূজ অবলম্বি।
ছুহুঁ লুলিত ত্রিভঙ্গী ॥
হেলন কেলি কদম্ব।
বনি বনমালং বিলম্ব ॥
ছুহুঁ মুখ চান্দ উজোর।
খ্যামদাস-চিত ভোর ॥২৮॥১৩০০॥
পাঠাস্কর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৮৪০ সংখ্যক পদ।

१। 'विन वनशान' ছলে 'विन वनवान' প-द-मा।

व्यथ मानलीला ।

শ্রীগোরচন্দ্র।

মলার। সমতাল।>

হোর দেখ নব নব

গোরাজ-মাধুরি

ক্সপে জিভল কোটি কাম।

অঞ্চ অঞ

ঘামকুল সঞ্চরু

থৈছন মোভিম-দাম।

নয়নহি নিরং বহ কম্পই থির নহ

হাসি কহত মৃত্ বাত।

কো জানে কি° ক্ষণে ঘর সঞ্জো আয়লুঁ ঠেকি গেলুঁ শ্রামর হাত।

বেশক উচিত দান কভু না শুনিয়ে

কাহাঁ শীখলি অবিচার।

बुबि (क्थि निव्रक्त वन (म॰ গোবর্জন॰

সূটবি ভুত্ বাটপার।

কো ইহ ভাব- ভরছি ভরমাইত

কিঞ্চিত পাটল আঁখি।

ন্ধাধামোহন কিরে আনন্দে ভূবব^৮ ও রস-মাধুরি দেখি ॥২৯॥১৩৩১॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৪১ সংখ্যক পদ।
২। 'নীর'ক। ৩। 'কী' ঘ। ৪। 'শিখলি'
ক, চ, প-র-সা। ৫। 'বন সে' ক ও প-র-সা পুথিতে নাই। ৬। 'গোবর্দ্ধন কানন' প র-সা।
৭। 'সুট্বি'ক, প-র-সা। ৮। 'ডুব্ব' ক, চ, প-র-সা।

🔊 কৃষ্ণস্থ রূপং অস্ফোচিতং যথা।

शननी ।

মুদির-মরক ড

মধুর মূরতি

মুগধ মোহন ছান্দ।

মল্লি-মালতি-

মালে মধুক্তর

মত মনমথ ফান্দ।

ইভ্যাদি।*

অথ অভিসারাত্র্বন্ধঃ।

बाबने ।)

ञ्चमति छमर् जायूक क्या ।

তাপ দুরে গেল

সৰ ভাল হৈল

इंडा॰ उनकित यथा॥ था।

व्यक्तन छन्द्रय

ব্রাক্ষণ-নিচয়ে

আইল গোকুল মাঝ।

জরতীর° স্বানে

कति निर्वतरन

আপন মনের কাজ।

এই পদটি ইতিপুর্বে :০০৮ সংখ্যক পদক্রপে উদ্বৃত হইলেও সক্পগুলি পুর্বিতেই এ খলে
পুনরার উদ্বৃত হইলাছে। এই পদটি এ খলে গণনা
করিলে নির্দিষ্ট পদ-সংখ্যা বাজিয়া বার; অভয়াং উহা
এ খলে সম্পূর্ণ উদ্বৃত ও গণিত হইল না।

আমরা হরিবে গোবৰ্জন পাশে করিব যজ্ঞের কাম। ঘুত দিবে ৩থি যে গোপ-যুৰ্ভি रे**के** वंद्र भारत मान ॥ জটিলা শুনিয়া আমারে ডাকিয়া যভন করিয়া বৈল[ে]। গাবী-মুত লৈয়া বধুরে সাজাঞা তুরিতে তাহাঁই চৈল• ॥ সব সখীগণে এ সব বচনে बाइरयद्र कानन रहाय। গুণের সাগর সে ছেন নাগর **मत्रम ब्हेट्य (भाग्र ॥** অতিরসে ভরি এত মনে করি অঞ্ছ হুবেশ কেল। স্থতের পদার সাজাঞা সহর मा प्राप्त कि कि प्राप्त u এ কথা জানিয়া **८म ८य विद्या** निश বান্ধিয়া ও চূড়া-চান্দে। ञ्चवलामि लहेग्रा আধ পথে বাইয়া त्रहल मानीत हाटम ॥ বেশুর নিসান করয়ে সম্ম वाकांग्र ७ व्यय-जूती। এ যত্ত্ৰন্দ্ৰ করে দরশন নিষিত্ আনন্দে ভরি ॥৩০॥১৩৩২॥ পাঠান্তর हेरा श-त-मा श्रुचित्र २৮८२ मःचाक श्रम । २। 'खन खन' भ-त्र-मा। ७। 'हेर' भ-त्र-मा। ৪। 'স্বুবভীর' প-র-সা। ৫। 'কৈন' প-র-সা। ७। 'हन' प। १। 'ब्राहेब' क। ४। 'हात्म'

क्, थ, घ; 'ठाक' श-त्र-शा। २। 'हाक' श-त्र-शा।

कांद्रिवाचि ।> চললি রাজপথে রাই স্থনাগরি নাসবেশ করি অকে। স্থুত দধি চুগে সাজাইয়া পসরাং প্রিয় সহচরি° করি সঙ্গে । (वनन³ शाटित कारक বান্ধিয়া কবরীণ বেজিয়া মালতী-মালে। সিঁথায়* সিন্দুর লোচনে কাজর অলক তিলক চাক্ল' ভালে ৷ মণিময়-অভরণ প্রবণে কুণ্ডল गीरम ऋरतभन्नो रात । রূপ নিরুপম বিচিত্ৰ কাঁচলি পীন পয়োধর ভার । রাতুল আলভা চরণ-কমলে वाकनभ् नृशूत्र वादक । গোবিদ্দদাস ভণে ७ भ काभ दशेवरन ক্লিডব^{১২} নিকুঞ্জ-রাব্দে ১৩১॥১৩৩০॥ পঠিক্তির

বীরাগ।> অককুল-নন্দন চান্দ হাম পেখলুঁ অপরূপ কম কড বেরি।

তরক্তিম শোভন প্রতি মঙ্গ রক্ত পুরবর্ছি এতছ না হেরি॥ সজনীং কো ইছ মাধুরি অপার। যো হ্বধা-সিন্ধু विन्द्र नव भून भून মঝু আঁখি পিবই না পার ॥ঞ্॥ তমু তমু অতমু-যূপ কিয়ে সেবই কিয়ে রুপ আপহি সেব। কিয়ে স্থমনোহর কান্তি-রূপ-ধর किएय वत-तम- श्राधित्व ॥ এত কহি গোরি ভোরি পুন অনিমিখ-नयन- हरक कक् शान। কিয়ে রাধামোহন সো বচনায়তে শ্লাঘই⁸ পাত্ৰ কান ॥৩২॥১৩৩৪॥

পাঠা**ন্ত**র

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৮৪৪ সংখ্যক পদ। ২। 'সক্ষনি'ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'চ্যক' ক; 'চুসক' প-র-সা। ৪। 'লাখ্ডি'ক, খ, ঘ। টীকা

৮—১১। "তমু" ইত্যাদি। কন্দর্প-সমূহ কি (তাঁহার) প্রতি অন্ধ সেবা করিতেছে? কিংবা তিনি নিজেই নিজের রূপের সেবা করিতেছেন? (তিনি) কি (অনির্বাচনীয়) রূপ ও কান্তিধারী! (তিনি) কি শ্রেষ্ঠ (শুলার)-রূসের অধিঠাত্-দেবতা?

यत्राष्ट्री ।>

সহচরি সঙ্গে রজে চলু কামিনি দামিনি বৈছে উজোর।
গোবর্ত্ধন-ভট নিকট বাটহিং
লেই বজ্ঞ-মুভ ঘোরণ ॥
দেশ সুখি অপক্লপ রঙ্গ ।
নিক্লপম বিলাস বসায়নণ পিবইডে
দুহুঁ জন পুলুকিত জ্ঞা ॥

ত্ব সঞ্জে দরশন অনিষিধ লোচন
বহতহিঁ আননদ-নীর।
আনন্দ-সায়রে ডৃবলং ত্ত্ জন
বহু খণে ভৈ গেল থীর• ॥ গ্রা॥
অভিশয় আদর বিদগধ নাগর
রাই নিয়ড়ে উপনীত।
ইহ যত্ত্বনদন নির্ধই ত্তু অন
অভিস্থে নিমগন-চীত ॥৩৩॥১৩৩৫॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৮৪৫ সংখ্যক পদ।
২। 'নিকট বাটহি' ফ্লে 'নিকটহি বাট' ক,
প-র-সা। ৩। 'ঘোর'(প-র-সা) ফ্লে 'ঘোল' ক,
থ; 'পোর' ব, চ। ৪। 'নিকপম' ইত্যাতি ফ্লে
প-স গ্রন্থের পঠি—

নিকপম প্রেম- বিলাস রসায়ন পিবইতে পুলকিত আলে।' ৫। 'ডুবল' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'পির' ২, প-র-সা। ৭। •'চিত' ক, প-র-সা।

ত্রথ রূপোল্লাসঃ।

शाननी ।>

সিন্দুর-বিন্দু ञ्चन त्र वनत्व শাঙর চিকুর-ভারণ। জমু রবি শশি সক্ষহি উয়ল পিছে করি আধিয়ার ॥ द्रामा (इ॰ अधिक हिन्तम॰ (अन। কত নাণ বতনে কত অদমূত विकि विकि छोटिए सिन ॥ अ॥ हिट्यं ॰ याँ भाग्री উরজ-অঙ্কর (थात्र (थात्र) मत्रणात्र । ৰত নাং যতনে কত না গোপসি>৩ হিমে গারি না পুকার 🛭

চঞ্চল-লোচনে বৃদ্ধ নেহারণি>

অন্ত্রন শোভন ভার>

অনু ইন্দাবর পবনে পেলল>

আল-ভবে উলটায় ।

ভগ্ন বিস্থাপতি

এ সব এরূপ জান

রায় শিবসিংহ রূপনারায়ণ

লাহ্মা দেবি প্রমাণ ।৩৪৪১৩৩৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৪৬ ও প-র পুথির ১৬।० : मरश्रक भरा २। 'मांडन' क, स, ह, প-র-সা। ৩। ভারা প-র। ৪। আহিয়ারা প-র। ৫। 'রামা তে' ফলে 'রুধামুখি' প-র। ৬। 'চাকম' প-র-সা: 'চন্দ্রীমা' প-র। १। 'কভ ना' ऋ'न 'कडक' भ-त्र। । 'वह खांह' ऋ'न 'নিধি ভোরে' ক, ४; 'না ভোহারে' প-র-সা। ১। 'উর্জ-অভুর' ফ্লে 'উরত উর্জ' প-র। ১০। 'होरब' क, थ, श-ब-मा। >>। 'र्थात र्थाब' ऋग 'পুন পুন' প-র। ১২। 'কত না' ছলে 'কতহ' প-র। ১৩। 'না পোপদি' স্বলে 'লুকাওই' প-র। ১৪। 'हिशा' भ-त-भा; '८६म' भ-त । ১৫। '८नहा-রই' প-র। ১৬। 'শেভন তার' ফলে 'শেভন পার' ক, খ; 'শোভিত পার' প-র। ১৭। 'প্রনে (भनन' ऋरन 'भरत (भनिन' घ, ठ, भ-त्र-मा; 'भवत्न दिनम' भ ; 'भिड्रान (भनम' भ-त्र। ३৮। 'ক্ৰে' প্ৰা ১৯। 'গুনহ বুৰ্তি' ক্লে 'গুন ञ्चवहनि' भ-ता २०। 'এ नव' ইভাদি স্থল 'এ সৰ স্বৰূপ জান' ধ; 'তুরা রূপ স্বন্থপান' প-র। २)। 'त्रात्र' हेन्डावि ऋल প-त्र পूबित्र शांठ रथी-'मित्रा किवा निधि নির্মিল বিধি

যোহিতে নাগর কান ।' টীকা

>--৪। "অ্বনর" ইত্যাদি। (তোনার) ক্সবর বয়নে সিন্দুর-বিন্দু ও কেপ-ভার স্থামবর্ণ; (বোধ হয়) যেন (সিন্দুর-বিন্দু-রূপ) ক্র্যা (চন্দ্র-বিন্দুরূপ)
চল্লের সলে পশ্চান্তাগে (কেশ-পাশরূপ) অন্ধনার
করিরা উদিত হইল ! ("অন্তুতোপনা" অলম্ভার)।

৫---৭। "রামা" ইত্যাদি। হে ক্ল্লেরির (রবি ও চক্র একল উদিত হওরার) অধিক ল্যোৎসা অর্থাৎ প্রকাশ হইল ; না জানি কত বন্ধে বিধি ডোমাকে উহা (বহি = ওহি) দিয়াছেন!

वबाड़ी।>

বচন রচনগণ কাসুক্ মধুর শুনইতে নায়রিং ভোর। মধুরিম-হাস-মিলিভ নয়নে থোর চাহনি তাকর ওর ॥ मक्नी (का कह (श्रम-विनाम। হেরইতে ঐছন निक निक कीरन নীছন করু অভিলাধ ॥ প্র* ॥ নয়ন-শর বরিষণে তুহাঁ জন নয়ন হানল ছহ কর চীত। রস-আকুতে ভরি আন ছলে নাগরি অনতহি ভেল উপনীত। নাহ রসিক বর পত্ব আগোরল কহতহি চভুরিম বাত। আনন্দে নিমগন দাস বছনন্দন শুনতহি পুলকিত গাড় ॥৩৫॥১৩৩৭॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৮৪৭ সংখ্যক পদ।
২। 'কাহ্ব'ক, চ। ৩। 'বচন রচনপণ' হুলে
'বচন রচন' ক, ঝ; 'রচন শুনিতে' প-র-সা। ৪।
'শুনইতে নাররি' হুলে 'নাগরী হুইলা' প-র-সা।
৫। 'নীছন করু' হুলে 'নিছন করু' ক; 'নিছন
করি' প-র-সা। ৬। কেবল প-র-সা পুরিতে 'রু'
আছে। ৭। 'নরনে' ক। ৮। 'চিড' ক, প-র-সা।

সিমুড়া ।১

আহির্-রমণী যত চালাঞা বাহির পথ আপনে যাইছ॰ আন ছলে। वाह नाडा पित्रा यांड॰ मानी भारन नाहि हांख এত না গরব কার বলে। হেদে লো কিশোরি গোরি শুনহ বচন মোরি ভোর দান না করিব আন। এতেক শুনিয়া তবেদ হাসিয়া বোলয়ে সভে किया मान कह (मिश्र कान ॥ পুন হাসি কহে বাণী শুন অংহ বিনোদিনি অল্ল নিব্ তোহারি পিরিতে। সে বা যত দান চায় পীত-বাস কাম-রায় ভাহা পুন>**॰ না পারিবে দিতে ॥**>° এক লক্ষ দান তার গলে গলমোভিঃ - হার कुरे लक्क जिँबाग्र जिन्सूत। দান মাগে পীত-বাস তিন লক কেশপাশ চারি লক্ষ পায়ের নৃপুর॥ পাঁচ লক্ষ দান তারি ১ कुञ्चम-करती सूत्रि नरह कह (य दश উচিত। মোগা কর্মোণ রাজ-সেবা কাঁচুলীতে লুকা কিবাস্

কাঁচুলীতে লুকা কিবা^{১৮}
দেশাইয়া করাও পরতীত॥
কে^{১৯} জানে কিসের^২ দান,
কি বোল বলিলে কান^২

অন্ত হৈলেং আমি ভালে জানি। বদি পুন হেনং বোল মাধার ঢালিব ঘোলং হাসিল জনস্ত-প্রভূতিন ॥৩৬॥১৩৩৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প্ৰ-ব-না পুৰির ১৮৪৮ ও প্ৰ-র পুৰির ২৮।৪ সংগ্যক পদ। ২। 'আহীর' ক্ষ্যু 'আহিরি' প্ৰ-র-না। ৩। 'চালাইবা' ব, চ; 'চলাইরা' প্-র-না। ৪। 'আপ্রি চনবে' প্-র

ৰ। 'জুলে' প-র-সা। ৬। 'বার' ধ। ৭। 'বোলে' খ, চ। ৮। 'সভে' প-র। ৯। 'তবে' প-র। ১০। 'ওবে' ক, ধ, চ, প-র-সা; 'হের' প-র। ১১। 'লব' প-র। ১২। 'তোমার' ক। ১০। 'তুমি' ক, প-র। ১৪। অতঃপর প-র পুথিতে নিয়লিখিত কলিটি দুই হয়, বথা—

ণানীরে ভাড়াঞা গোরি নিতি বাও মধুপুরী হেন কান্ধ না হয় উচিত।

ভন ব্থভান্থর ঝি আঁচলে ঝাপিলে কি
দেখাইয়া কর পরতীত ॥'

১৫। 'গলার মোভির' প-র ৷- ১৬। 'কুমুম' ইড্যাদি
কলিটি প-র পুঝিতে নাই। ১৭। 'কৃমুণ' ব,
'কর' প-র-সা। ১৮। 'লুকি কিবা' প-র-সা।
১৯। 'কো' থ৷ ২০৷ 'কেশের' থ৷ ২০৷ 'কি
বোল' ইড্যাদি স্থলে 'কিবা বলিলেন' প-র-সা।
২২৷ 'নহে' প-র। ২৩৷ 'এমন' ঘ৷ ২৪৷ 'ডবে
পাবে প্রতিফ্ল' ক, খ, ম, চ।

च्याणे।

 चर्च उर तृम्मायन-পথে।

 निত নিতিও করি গতায়াতে॥

 याणि হাতে করি লাইরেও সোণা।

 जूমি কেনা কহে কোনাও লা

 जूমি দেখি পুছহ বড়াই।

 কিসের দান চাহেনও কানাই॥ এবি ॥

 সঙ্গে সংবেও স্থাতেরওও প্রসার।

 তাহে কেনে এতেক জ্ঞাল॥

 তুমি ত বরজ-ম্বরাল।

 তুমি তেনে করিবে অকাল॥

 সুর কর হাস পরিহাস।

 কহতহি ১২ গোবিক্ষদাস॥০৭॥১০০১॥

 পাঠাত্তর

১। देहा প-त-ना পृथित ১৮৪৯ ७ প-तु शृथित २৮१० गरशुक्र भग। २। 'अहिड' প-तु-ना क, । 'মিভি' শক্ষ প র-সা প্রিতে নাই। ৪। 'বর্দি'

শক্ষ ক, খ, চ ও প-র-সা প্রবিতে নাই। ৫। 'করি

লই যাই' ক, খ, চ; 'করি লইরা' ব; 'করা

লঞা' প-র; 'করি লরা' প-র-সা। ৬। 'হেন'

ব, চ। 'তৃমি' ইত্যাদি স্থলে 'কেছত না বোলে

কোন' প-র-সা। ৭। 'মাগেন' প-র। ৮। কেবল

প-র প্রিতে 'ঞ্জ' আছে। ৯। 'সভে' প-র-সা,

প-র। ১০। 'দ্ধির' প-র। ১১। অতঃপর প-র
প্রিতে নিম্নলিধিত পংক্রিবর দৃষ্ট হয়, যথা—

'সবে আছে স্বত হয় দৰি। ইহাতে পাইবে কোন নিধি॥' ১২। 'দেখতহ' প-র।

धननी : >

গরবহী সুন্দবি চললহ আন্তং নাগ্র পদ্ম আগোর। কহতহিঁবাত দান দেহ মঝু হাত আন ছলে কাঁচলি ভোড়েও॥ অপরুপ প্রেম-ভরক।

দান-কেলি-রস- কলিভ মহোৎসব বর কিলকিঞ্চিত-রক্ষ । শ । অলপ পটিল ভেল অথির দৃগঞ্চল ভ্রিজন-কণ প্রকাশ।

ধুনাইত ভুকা-ধনু পুলকে পুরলা তনু অলখিত আনন্দ-হাস॥

· ঐছন হেরি চকিত পুন তৈখনে• বাহুড়ল পদ ছুই চারি।

রাধা মাধব **চুত্ঁকর পদতলে** রাধামোহন বলিহারি ॥৩৮॥১৩৪০॥

পঠিবির ১। ইহা প-রংসা পুথির ১৮৫০ সংখ্যক পছা। ২। 'চলল আপন পথ' কঃ 'চলল আন পথে' শ,ব,চ। ৩। 'ডোর'ক, ব, চ। ৪। 'ফ্র' খ, খ, চ। ৫। 'পুরল' ক। ৬। 'তৈথন' ক, চ। ৭। 'পদতল' প-র-সা।

विवा

১—১৫। পদক্রতা রাধামোহন ঠাকুর শক্ত টাকার নিবিরাছেন,— "ততঃ গরবছি ফ্লবিশ ইত্যাদিনা তৎকোশনমুদাহরতি। অপুর্কোহরং প্রেম-বিলাসঃ বেন দানকেলিরনে কলিতো জনিতো বো মহোৎসবস্তত্র বরঃ কিলকিঞ্চিত্ত রকঃ কৌশলো জাতঃ। তল্লকণং বণা শ্রীমহজ্জননীলমণে),—'গর্কা-জিলায-কদিত-শ্বিতাছয়া-ভর-কুধাং। সঙ্করীকরণং হর্ষাহচাতে কিলকিঞ্চিতং॥' 'আনত' অক্তত্র। অত্যপ্রধাহন গর্কঃ ম্পষ্টঃ। 'অলপ পাটল' ইত্যনেন জোধঃ। 'তহি জল-কণ' ইত্যনেন রোদনং। 'ধুনাইত ভূক-ধমু' ইত্যনেনাস্থা। 'পুলতে পুরল' ইত্যনেনাভিশারঃ। 'অলথিত আনন্দ-হাস' ইত্যনেন শ্বিতং। 'তভ্রপনে বাহুড়ল পদ হুই চারি' ইত্যনেন ভরং ইতি সপ্ত।' টাকা প্রাঞ্জল বলিয়া অমুবাদ জনাবশ্যক।

ভাটিমারি ৷১

দানী হইয়াছ **এই मन्ति वस्त** ছুঁইতে রাধার অস। রাথাল হইয়া बाम-कूमाबी जटन কিসের রভস⁶ রজ। এমন আচর নাহি কর ডর খনাঞা পাসিছ কাছে। করিব গোচর গুরুবর আগে তখন জানিবাদ পাছে ॥ ছুইয় না ছুইয় না निज्ञ कानारे व्यामना भरतन नानी। পর-পুরুবের

সচেলে শিনান কৰি |

গিরি গিয়া যদি গোরী আরাধহ পান >> কনক-পুমে। কামনা করহ কাম-সাগরে (वनी-वन्त्रिकाव्यम ॥ সূর্য্য ২-উপরাগে मरख स्मारी ব্রাক্ষণে করহ সাত^{১৩}। ভোমার শক্তিঞ তভু হয়ে নহে ১৯ ब्राह-कारक मिटल हां ॥[>] বচন মানহ ८गाविन्स मारमञ না কর এমন তক। যোই নাগরী ও রসে আগরিণ কর্ছ তাক্র্য সঙ্গ ॥৩৯॥১৩৪১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-মা পুথির ১৮৫১ ও প-র
পুথির ২৮৮ সংখ্যক পদ। ২। 'এমন বলেতে'
প-র-মা। ৩। 'স্কে' ক, ধ, ঘ, চ। ৪।
'স্বরত কসের' প-র। ৫। 'আচার' ঘ। 'এমন
আচার' ইত্যাদি কলিটি প-র পুথিতে নাই। ৬।
'বনাইরা' ঘ, চ। ৭। 'গোচরে' ঘ। ৮। 'গোনিবে'
ফ। ৯। 'ছুইও না ছুইও না' ক; 'ছুর না
ছুর না' ঘ। 'ছুইর না' ইত্যাদি কলিটি প-র-মা ও
প-র পুথিতে নাই। ১০। 'সচেল' ঘ। ১১।
'পান কর' ক, থ, চ, প-র-মা, প-র। ১২। 'স্বরজ'
ক, থ, ঘ, চ, প-র-মা। ১০। 'সাথ' প-র-মা।
১৪। 'ভুলু তো না হুর' প-র-মা; 'ভবে হর নর'
প-র। ১৫। 'তুরা অধিকার' পর। ১৬। অতঃপর

গোএর মলা বলি তুলিয়া কেলাই
সেহ হর কাচা সোনা।

সুথের যার বলি বুছিরা ফেলাই
সেহর চাব্দের কোণা ন

বাছ গন্ধ নাই ভোষার কথার
মুচকি মুচকি হাস।

এ কপ দেখিরা আপনা চাছিতে, ছিছি কাজ নাহি বাদ : ১৭ ৷ 'আগোৱি' খ, প-র-সাং ১৮ ঃ 'তাহায়' প-র-সা, প-র :

ोका

১৪। "পান" ইত্যাদি। রাধানোংন ঠাকুর গিবিরাছেন, —'পান কনক ধুমে' ইতি কনকধুম-পানং অতি-কঠোর-ভপজাবিশেষ: বতেছেধামুখঃ সন্কনকবণধুমং পিবন্হর্লভাভিগবিত-সিদ্ধার্থ: তপতি।' অগাৎ 'কনক-ধুম-পান' শব্দের অর্থ অতি কঠোর তপজাবিশের,—বাহাতে উদ্ধান্ধ ও অধ্যের্থ-ভাবে থাকিয়া কনক-বর্ণ ধুম অধাৎ অমি-শিখার অব্যবহিত অ্পাভ ধুম পান করিয়া অভাই-শাভের কল্প তপজা করিতে হয়। "

शांत्री ।>

তোহারি হৃদয় বেণি-বদরিকাশ্রম উন্নত কুচ-গিরি কোরং। কনক-ধৃম পিৰি क्षमात्र वषन-छनि তত্ত্বি তপত জিউ॰ মোর। স্থন্দরি ভোহারি চরণযুগ° ছোড়ি। कारी छाँग या धर গোরি-আরাধনে ভূত সে ভিরিথময়ি° গোরি ॥ পা मुशमनः शदलनः সিন্দুর স্থান্তর এহি" সুরজ-গ্রহ আনি"। রাজহি দোঁপলু তুরা পদ-নখ-দিজ^১ -স্থন্দরি সহস্র>> পরাণি>ং ॥ मरकरे निभगन কাম-সাগরে হাম কাম পুরবি তুর্হ রাই। **ह३८१ नां १ ८**ठेमवि শ্যামর বলি অব'° (गांविसमात्र सूच ठाइ 1801) 9821

পাঠাক্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৫২ ও প-র পুথির ২৮।৯ সংখ্যক পদ। ২। 'জোর' প-র। ৩। 'মন' প-র। ৪' 'নিরড় অব' প-র। ৫। 'তিরিখমর' ক, খ, চ, প-র-সা, প-র। ৩। 'মৃগমদে' ক। ৭। 'মৃগমদবিন্দু সিন্দুর পর্মনন' প-র। ৮। 'এই' ক; 'সেই' প-র। ৯। 'জান' প-র। ১০। 'বিজ' ক, খ, চ, প-র-সা, প-র। ১১। 'সহজ' প-র। ১২। 'পরাণ' প-র। ১৩। 'স্তামক বোল' প-র। ১৪। 'নাহি' প-র।

मध्य ।>

স্থিগণ সমুখহিং কাতরে কামু যব ञ्चविनय् कत्रमहिँ मीर्र्छ । তৰ তহু অভিমত করইতে কোই স্থি গোপতে বচন কহু মীঠে ॥ স্থন্দরি অলখিতে হও তিরোধান। কুটিরে অতি গোপতে গিরিবর-কুঞ্জ-যাই রাথহ নিজ মান । এ॰।। চরিত বর গিরিধর ইছ অতি চপল-কিয়ে জানি করু বিপরীতে। 🗢 নি উহ স্থবচন ভীতহিঁ জমু জন রাই করল সোই নীতে॥ বুঝি পুন নাগর সব গুণ-আগর অলখিতে তহি উপনীত। দেখি স্থনাগরি রাধামোহন व्यानरम्य निमर्गन-होड ॥४५॥५७४०॥

পাঠাক্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৫৩ সংখ্যক পদ। ২। 'সমুখেহি' থ। ৩। 'সবিনর' য। ৪। 'ফিঠ' প-র-সা। ৫। 'কহ মিঠ' প-র-সা। ৬। 'আঙ' য। ৭। কেবল প-র-সাপুথিতে 'ক্র' আছে।

शामनी ।>

পরশহি গদ গদ নহি নহি বোল।
তমু-ভমু পুলকিত আনন্দ হিলোল।
কো করু অমুভব তৃহঁক বিলাস।
এক মুখে সিতকার এক মুখে হাস।
নিমিলিত নয়ন নয়ন করু থীর।
মণিত-বলিত মণি-মঞ্-মঞ্জীর।
নাগরি দেওল খন-রস দান।
রাধানোহন পহাঁ অমিয়া সিনান॥

188041581

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৮৫৪ সংখ্যক পদ। ২। 'মণি ভরণিত' ক; 'মনিত রনিত' খ, ঘ; 'মিণিত বণিত' প-র-সা।

भूनर्गार्छ-गमनम् ।

मात्रम ।)

মন্দের নন্দন যায় বেপু বাজাইয়া।
মরুক মেনং গৃহ-কাল দেখ বাছির হৈয়া।
কার ঘরের বন্ধুয়া যার রূপ দেখি বাইয়া।
বিদি না শুনং আমার বোল মরিবা ক্রিয়া।
নীল উত্তপল শুাম বসন শোভা ভালা।
খীর বিজুরি মেঘেণ করিয়াছে আল ॥
রতন-খিচনি মোহনং বাঁলী শোভে বাম হাতে।
চলিতে মা চলে অল দোলার্গ রাজপথে ॥
৪৪৭১/৩৪৫৪

পাঠাকর

১। ইহা প-র-সা প্রবির ১৮৫৫ ও প-র প্রথির ২৭।> সংথাক পদ। ২। 'য়য়ক বেন' প-র-সা; 'থাকুফ বেলো' প-র। ৩। 'য়েথো লাডাইয়া' প-র-সা; 'চল মেথি বাঞা' প-র। ৪। 'কার প্রাথবদ্ধ বার বেথ বারি হকা' প-র। ৫। 'বা ভূনি' প-র-সা। ৬। 'ছুকুল বাহিরা বার নরন না চাঞা' প-র। १। 'ছিরণ-ক্রিরণ শ্রামবরণ শোভা করে ভাল' প-র। ৮। 'মেবে বেন' প-র। ১। 'মোহন' শব্দ প-র পুথিতে নাই। ১০। 'লোলে' প-র।

ভাটিয়ারি ৷১

কালিক্ষী কিনারে নাগর ধায় ।
আমা পানে চাইয়া ঘনাইয়া বাঁলী বার ।
খেবে খেবে গ্রীদামের কান্ধে অবলবি।
খেবে খেবে বাঁলায় বাঁলী হইয়া ত্রিভঙ্গী ॥
নথ-মনি ইন্দু জিনি বাঁলা চরণেত গাজে।
ছ গাছি সোণার মুপুর না চলিতে বাজে॥
মনিমর অভরণ বসন পিয়লি।
নব কলধরে যেন গ পড়িছে বিজুরি॥

পঠিস্তির

188170861

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৫৬ ও প-র পুথির ২৭।১০ সংখ্যক পদ। 'ভাটিয়রি' হলে 'পঞ্চম' প-র। ২। 'ভাম বার' প-র। ৩। 'আমা' ইডাদি গংক্তির হলে—'আমা পানে চাঞা চাঞা ঘনাঞা ঘনাঞা বানী বার' ক; 'আমা পানে চাহিরা ঘনাইরা ঘনাইরা বংশী বাজার।' ঘ; 'আমা পানে চাহিরা ঘনাইরা ঘনাইরা বালার।' ঘ; 'আমা পানে চাইরা ঘনাইরা ঘনাইরা বালার।' ঘ; 'আমা পানে চাইরা ঘনাইরা ঘনাইরা বালার।' ঘ; 'আমা পানে চাইরা ঘনাইরা ঘনাইরা বালার। ব; 'আমা পানে চাইরা ঘনাইরা ঘনাইরা বালার। করিছে হইবে, ইহা প্রথম কলিটিবে আপদী ছলে রচিত হইবে, ইহা সম্ভব্যর বোধ হর মা; স্বভ্রাং প-র-সা প্রথম পার্টই স্বীচীন বোধ হর। ৪-৫। 'কলে কলে' ক। ৬। 'থাক ব্যাছুল' পার। ৭। 'চরণেতে' ক, খ, শ-র। ৮। 'দিলে' প-র। ৯। 'নাচনিতে' ব, খ, জ, প-র-সা। ১৬। 'মব কলধ্বে কছ' ক, ব, প-র-সা; 'নবীন মেবেতে কছ' গানা।

निका

৬। "হগাছি" ইত্যাদি। (শ্রীক্লফের চরপ্রব এরপ স্বচঞ্চল বে, বোধ ক্রের বেন) সোনার নূপুর হগাছি না চলিতেই বাজিতেছে। (এ হলে আভি-লরোক্তিমূলক প্রতীয়মান 'উৎপ্রেক্ষা'-আলম্বার বারা নূপুরের স্থান্ডকলতা-রূপ বস্ত ব্যঞ্জিত হইতেছে)। মৃত্যকালে সকল নূপুরই বাজিয়া থাকে; স্থতরাং "নাচনিতে' পাঠ ধরিলে অর্থের কোন বৈচিত্র্য থাকে না। প্রাচীন পৃথির 'ল' ও 'ন' প্রায় এক রক্ষ এবং অনেক সময়ে শক্ষাহরের মধ্যে ফাঁক না রাধা-তেই এই পাঠ-বৈষ্ম্যের উৎপত্তি হইরাছে।

তথা রাগ।>

নীল-কমল-দল

बिमूब-मशन

ঈ্ষত মধুর মৃত্ হাস।
নাচিতে নাচিতে যায় গো-ধূলি লাগাছে গার
আহীর-বালক চারিত পাশ।
ক্রিয়াই ক্রিয়াই ক্রিয়াই

মণিময় ঝুরি মাণে কনয়া পাঁচনি হাতে রতন-মূপুর রালা পায়। আগে আগে ধেমু ধায় পাছে বামা আমেরার

আগে আগে বেপু বার গাছে বার । বরিহা উড়িছে মন্দ বার ।

সভার সমান ঝুঁটা কপালে চন্দন-কোঁটা রাখাল কোন জনা বিনদিয়া ।

শ্ৰীদামের কান্ধে হাত ওই যায়›› প্ৰাণনাৰ বাই দিছেন চিনাইয়া চিনাইয়া›ং ■

181120891

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্রথির ১৮৫৭ ও প-র পুর্বির ২৭/১১ সংখ্যক পদ। 'তথা রাস' কলে 'কফৰা' প-র। ২। 'নীল-কমণ' ইত্যাদি কলিটির কলে প-র পুরির পাঠ, বধা—

'আহির-বালক চারি পাশ। দীল-কমল-দল শ্রীমুখ মওল ঈষত মধুর শ্বহ হাব।' ০। 'চারু' ব। ৪। 'সোনার' প-র। ৫। 'নাচিতে নাচিতে' প-র। ৬। 'বার' ক, ব, প-র-সা, প-র। १। 'পাছে' চ, প-র-সা, প-র; 'ধার' ক, ব। ৮। 'পোছ্লি-ধ্সর ভামকার' প-র। ১। 'র্ফা' ব; 'ঝোটা' প-র। ১০। 'বিনোদ রাবাল কোন জনা' ক, ব, ব, চ, প-র। ১১। 'বার মোর' প-র। ১২। 'বিরাছেন দেবাইয়া' প-র-সা; 'রাই দিছে চিনিয়া চিনিয়া' প-র।

তথা রাগ।১

মকর-কুণ্ডল মেলে কনক-কেতকী দোলে
কেওয়াই নহে কামের করাতি।
উপরে বিজুরি-ভাতি হেম-অভরণ-কাঁতি
গীত পিন্ধন কত ভাতি॥
সক্তান পেখলুঁ বরিহা চূড়া মালে।
মাতল ভ্রমর জানিই ঘুরিয়া বুলে
পড়ে জানিই নয়ন-কমলে॥
কুন্দে কুন্দাওল কালা কনক কেয়ুরই বালাই
ভাম-অভে করে ঝিকিমিকিই।
ক্রের সৌরভ পাঞা অলি-কুল্ম আইল ধাঞা
লাখে লাখে মদন ধামুকী॥৪৬৪১৩৪৮॥
গাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৫৮ সংখ্যক পদ।
২। 'কেরা' সা-প ২০১নং পুথি। ৩। 'কালে'
ক; 'করু' প-র-সা। ৪। 'কনি' সা-প ২০১ নং
পুথি। ৫। 'বিজুরি' চ, প-র-সা। ৬। 'মালা'
ক, ধ, প-র-সা, গ-র। ৭। 'ঝকমকি' সা-প
২০১নং পুথি। ৮। 'অলিরাল' ক, ধ, ঘ, চ,
প-র-সা, প-র।

ডথা রাগ।> কামুক গোঠ গমন ছেরি রাই। বিরছে বেয়াকুল মিরক্তনে বাই॥ তহি মৃথরা সখি সঞ্চে উপনীত।
রাইক মৃথ হেরি গদগদ চীত।
সো কহে কাহে বিলপদিং অসুরাগে।
হাম মিলায়ব তোহে কামুক আগে।
ধনি কহে এক দিন হেরিলুঁ তাহে।
উদ্ধব কহয়ে গোঠেত কানন মাতে।

168**0(11**681

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পূথির ১৮৫৯ সংখ্যক পদ। ২। 'বিলাপসি' ক; 'বিলসি' ধ। ৩। 'পোঠে' শক্ষটি ম পূথিতে নাই।

বরাড়ী।১

বড়ি মাইং কাসুরে পরাণ পোড়ে মোর। যমুনা-পুলিন বনে দেখ্যাছি রাখাল সনে (थला-त्रत्म देश्याहिल (छात्र^०॥ ছায়া অতি সুশীতল বংশী বটের তল তাহাতে যাইতে না। লয় মন। মুখানি ঘামিয়াছিল त्रवित्र कित्ररण ठान्म-ভোখে জাখি অরুণ-বরণ ॥ পীত ধড়ার অঞ্চল খানে ভিতিয়াছিল" ধূলার ধূসর শ্রাম-কারা। यनि नरहे लोक-खग्र মোর মনে হেন হয় আঁচর কাঁপিয়া করোঁণ ছায়া # কি করিব কোথা যাব এ তুখ কাহারে কৰ ना कहिएल महन दवश नार्ग। কি করিবে লোক-ভর वःशीवनदन क्य कह यादेश यटभागात आह्य १८०१०॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৬০ ৩ প-র পুথির ২৭।১০ সংগ্যক পদ। ২। 'মাই গো' প-র। ৩। 'ছইরাছে বিজোর' প-র। ৪। 'ভাতে বাজ্যে নাহি' প্ৰা ধ। 'ভোগে' প্ৰ-না; 'ভূষে' প্ৰ।
৬। 'অফ্ৰ ব্যন' প্ৰ-না; 'মলিন ব্যান' প্ৰ।
৭। 'থড়ার অঞ্ল ডার' প্ৰ। ৮। 'থামেডে
ভিলিয়াছে' প্ৰ। ১। 'না হয়' প্ৰ-ন্সা। ১০।
'ক্রো' ক; 'ক্ফ' খ; 'ক্রঙ' প্ৰ-ন্সা।

युष्टे ।>

কহিতে কহিতে এ সব কথা।

বিশুণ ভৈগেল অশুরে বেথা ॥

রূপের লাবণি অসীম গুণে।

সোঙরি ধৈরজ না ধবে মনে॥

পুন পুন গোঠং-গমন-লীলা।

কহিতে নয়ন নীরে ভরিলা॥

সখীগণ কহে প্রবোধ-বাণী।

হেরিয়া উদ্ধব আকুল প্রাণী॥৪৯॥১৩৫১॥

পাঠাত্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৬১ সংখ্যক পদ। ২। 'বোঠে' ক, খ, প-র-সা।

वाननी ।>

কাসুক গোঠ-গমনে ধনি রাই।
বিরহে বেয়াকুল থীর না পাই।
স্থিগণে কৰে হইং বিরহে বিভোর।
কৈছে মিলব আজু নন্দ-কিশোর।
জান্মক তাপ তব মিটব হামারও।
গোগণে কানন ভেল বিথার।
গোগণে কানন ভেল বিথার।
আজু কি করব মিলন বিচারও।
কৈছনে যাওব ইহ দিন মারও।
যতুনন্দন ভুয়া সঙ্গহি সাজও ॥৫০॥১৩৫২॥
গাঠান্তর

ইহাপ-র-সাপ্রির ১৮৬২ সংখ্যক পদ।
 ইহ'প-র-সা। ৩। 'ক্ষরক তাপ রিটব তব

মোর' ক, প-র সা। ৪। 'আৰু' ইত্যাদি পংক্তিটি ক ও প-র-সা পুথিতে নাই। ৫। 'কৈছে বাওব এই দিন মাঝার' প-র সা। ৬। 'বছনক্ষন' ইত্যাদি পংক্তির পরে প-র-সা পুথিতে নিম্নলিধিত পংক্তি দৃষ্ট হয়, ৰখা—'স্ব স্থা কক ধনিক সাহ'।

অথ দান-লীলা। সক্ষেত-মুরলী। ভছুচিত-শীগোরচক্রঃ।

(वटनोश्रोत्र १)

সোঙরি পুরব-লীলা ত্রিভক্স হইয়া।
মোহন মুরলা গোবা অধরে লইয়া।
মুরলীর রক্ষে ফুক দিলং গোরাচাঁদ।
অঙ্গুলী চালাএথ করে স্থললিত গান।
নগরের লোক যত শুনিয়া মোহিত।
স্বরধুনী-ভীরে ভরু লভা পুলকিত॥
ভুবন মোহুনং গোরা-মুরলীর করে।
গাস্থদেব ঘোষ ইথে কি বলিতে পারে॥
।০১॥১৩৫৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৬০ সংখ্যক পদ। ২।'দিয়া'ক। ৩।'জুবন মোহিল'(পাঠান্তর—চ)।

वित्रांग ।>

পেলা-রসে ছিলা কানাই শ্রীদামের সনে।

হেন কালে রাধারে পড়িয়া গৈল মনে।
আপনার ধেতু সবং সজিগণে দিয়া।
রাধা বলি বাজায় বাঁশী ত্রিভক্ত হইয়া।
রাধা বলি কানাই পুরিল মোহন বাঁশী।
শ্রীরাধিক র কাণে তাহা প্রবেশিল আসি।
শুনি ধ্বনি স্বদনী অধির ইইয়া।
বন্ধুরে আপনা দিয়া মিলিবং বাইয়াং।

রায় শেখর কতে এই কথা বটে।
চল সভে বাই আমরা যমুনার ভটে ॥
।৫২২১৩৫৪।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুথির ১৮৬৪ সংখ্যক পদ।

২। 'অ্বলের' (পাঠান্তর—ধ) প-র-সা। ৩।
'বচ্ছ' প-র-সা। ৪। 'মিলব' দ, চ। ৫।
'বন্ধুরে' ইত্যাদি হলে 'বন্ধুরে ভেটিৰ বারা আপনাকে
দিয়া' প-র-সা। ৬। 'এ কথাটি' প-র-সা।

৭। 'চলো আমরা বাই সভে কালিন্দীর তটে'
প-র-সা।

পান্ধার ৷১

মোহন মুরলী-রবেং আকুল হইয়া সভে व्यात हिन्छ धत्रत्य ना यारे। মথুরার বিকে যাই চল চল বড়ি মাই দান-চলে ভেটিব কানাই # **हमू वृष्डांगू-नमिनी**। আনন্দে আকুল চিত অঙ্গ ভেল পুলকিত अनिया शाविक शर्व मानी ॥अ॥ স্থত দধি ছেনা পুরিং স্থর্বের ভাগু **ভ**রি° সারি সারি পসরা উপর। ভাৰতে ওচনি ভালি বিচিত্ৰ নেভের ফালি प्रांभी भिरत करत अनम्म ॥ शांशनि छेम्बल करत নিতম-শুরুয়া-ভরে (यन मग्र-मख कतिनी। लाउन लाउं व शिर्क कांकानि नुकाय मूर्क ভাৰে শোভে বিচিত্ৰ কিছিণী। বেন মুকুভার দাম मूर्थ ह्यारेट याम (रन वृति कुमूरमत मधा। রহিয়া রহিয়া বার শীতল তক্তর ছায় यमूना-किनादन मिन दम्था ॥

নাগর আছিলা কভি দেখিয়া সে কুলবঙী দান ছলে আগুলিলা' আসি। দাস জগলাথে কয় মুখ নিরখিয়া রয় বেমন'' চকোরে মিলে শৰী।

1990/1091

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৬০ সংখ্যক পদ।
২। 'হ্মবে' প-র-সা। ৩। 'রহিতে নাদিল হুরে'
প-র-সা। ৪। 'প্রতি' প-র-সা। ৫। 'ছানা
আদি' প-র-সা। ৬। 'উড়নি' ক, ২, চ, প-র-সা।
१। 'ডালি' ক, ২, চ। ৮। 'কাকালি' ছ।
১। 'তথি' প-র-সা। ১০। 'আগ্রেরলা' প-র-সা।
১১। 'বেন' ক।

थानगै।>

চলইতে গজ-পতি বেচনেং যাহ।
কনক-মুকুর কত মুখ নিরবাহ।
অধর অরুণ-ছবি মাণিক° কাঁতি।
দশনে চোরায়সিং মোতিম পাঁতি।
এ ধনি কমলিনি কি বলিব আন।
সভে তোহে ছোড়ব গোরস-দান।
উর পর বিরাজিতং কনক-মহেশ।
চামর-ধাম স্থবাসিত কেশ।
সিন্দুর-বিন্দু ভাল পর শোভং।
দানি নাহি ছোড়েয়ে বিদ্রুম-লোভং।
দানি নাহি ছোড়য়ে বিদ্রুম-লোভং।
ব্যানক অঞ্জন কঠকং হার।
ইবে জনিং আছুরে কত্তরেং বেভার।
সধি সঞ্জেণ সুগতি করহং আন ঠামে।
ভ্যানদাস কহবংণ পরিণামে ॥৪৪॥১৩৫৬।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৬৮ ও প-র পুথির ২৮।১৫ সংখ্যক পদ। ২। 'বেড়দ' প-র-না। গাণিকের'ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৪।
 'চোরারল প-র। ৫। 'আবরু' প-র। ৬।
 'শোভা' প-র। ৭। 'লোভা' প-র। ৮। 'কঞ্ক' ক, খ; 'কাটক' প-র-সা। ৯। 'জানি' খ, ঘ, চ, প-র-সা, প-র। ১০। 'কহরে' ক, খ, চ, প-র-সা। ১১। 'সনে' ক, খ, প-র-সা। ১২। 'করবে' ক, খ, প-র-সা। ১০। 'জব করহ' প-র-সা।

তথা রূপোলাস। ^{বিশ্বভা}

আইসং বৈস তক্ত-মূলে শশি-মূখি রাই।
তোমার বদন-শোভার° বলিহারি বাই॥
চর চর কষিল-কাঞ্চন-ভতু গোরি॰।
ধরণী পড়িছে নব-যৌবন-হিলোরি॰॥
বদন শরদ-স্থানিধি অকলক।
মনমথ-মথন অলপ দিঠি বছ॥
আলো রাই কি বলিব আর।
ভূবনে দিবার নাহি ভূলনা ভোমার॥ প্র॰॥
কৃটিল কুন্তল বেঢ়ি কুন্তমের আদ।
ত্রক সিন্দুর সিলে॰ বড় পরমাদ॥
উন্নভ উরক্ত কিবা কনক-মহেল।
মূঠে॰ ধরিয়ে৽ কিবা খিন মার-দেশ॥
উল্টি-কদলী উক্তং> গুরুরা নিভন্থ।
আনদাসের পত্ জীরে এই>ং অবলম্ব॥

পাঠান্তর

116 30 (11 21

३। देहा श-द-ना शूचित २৮७१ नरशक शव।
३। 'लाहें' ह। छ। 'लाखा' क, श-द-ना।
६। 'लाहिं छह्' श-द-ना। ६। 'हिनक्ष' श-द-ना।
६। 'क्वम श-द-ना शूचिटक 'क' चांह्ह। १।
'निरंत' क, थ, श-द-ना। छ। 'क्रमते थ, य, ह, श-द-ना। ३। 'यूर्क' क, थ, ह, श-द-ना। २०।
'वितिहीं य, ह। २२। 'क्रमते व्यक्तिक नहिंदे।

मार्व ।>

কবরী ভয়ে চা-মরি গিরি-কলরেং মুখ-ভয়ে চান্দ আকাশ। **इति**शि नग्नन-**७**८ग्र স্বা-ভারে কোকিল গতি-ভয়ে গল বন^৫-বাস• ॥ সন্দরি কাছে মোহে সম্ভাষি না বাসি। তুয়া ডারেশ্ ইর সব তুর্হি**' পলায়ল** তুহুঁ পুন কাহে>> ভরাসি।এ। क्ठ-७ एत कमल- (कांत्रक १ कारण मृति तह १० घढे भः दिएम छ छ। एमः। माज्या श्रीकल গগনে বাস করু শস্তু গরল করু প্রাদেশ । जुब छात्र कनक-মুণাল পঙ্গে রছ কর-ভয়ে কিসলয় কাঁপে। বিহাপতি কহ্ম কত কত এছৰ क ब्रह्भ समन्भ शंबर (१९४० । hade chad

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ১৮৬৮ ও প-র পুলির
১৬)১ সংখ্যক পদ। 'নায়ুর' ছলে 'ভিরোধা
ধাননী' প-র। ২। 'কবরীক ভরে নিথি পেও গিরিকল্বের' প-র। ৩। 'আকালে' ব। ৪। 'ছর'
ব, চ। ৫। 'বর' চ। ৬। 'বালে' ব।
৭। 'এ ধনি ভুছ পুন কাছে না নভাবি'
প-র। ৮। 'ভরে' ব। ১। 'কাছে ন' ব। ১৫।
'রুক্ল' প-র। ১০। 'কাছে ন' ব। ১৫।
'কুক্ল' প-র। ১০। 'বিজি পের' প-র। ১৫।
'জালে' প-র-সা। ১৫। 'ভাজিন' গ-র। ১৬।
'গরাসে' প-র। ১৭। 'কবিশেবর ভব' প-র।
১৮। 'কবছ' প-র। ১৯। 'বদন' প-র। ২০।
'ক্র ভাপে' প-র।

বরাড়ী।১

ছেন ক্সপে কেন যাও মথুবার দিকে।
বিষম রাজার ভয়ে ঠেকিবা বিপাকে॥
দিনকর-কিরণে মলিন মুখখানি।
হেরিয়া খেরিয়া মোর বিকল পরাণী॥
বিসায় ভক্তর ছায় করহ বিশ্রাম।
শ্রেম-জল-বিন্দু যেন মুকুভার দাম।
বংশীবদনে কহে শুন হে নাগর।
বুকিলাম বট ভূমি রসের সাগর॥

1491100381

· পাঠান্তর ১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৬৯ সংখ্যক পদ।

क्षेत्रकात ।>

' না যাইয় না যাইয় রাইং বৈদ ভরু-মূলে। আদিতে পাইয়াছ বেঝা⁹ চরণ-যুগলে⁸॥ মণি মুকুতার দামণ অঙ্গ ঝলমলি। खरकत विषय (ठांत लहरवं नकलि ॥ **ठाँ**ठत ८करमंद (वनी क्रिट्ड कांमरवर्ष। ক্ৰীর ভরমে বেণী গিলিবে ময়ুরে॥ मीन अष्टनोत्र भारत मूथ भाषा करत्र । लोगांत कमन वनि मश्निटन खमरत ॥ क्ति-कुष्ड-मण्ड जिनि कुछ कूछ-गिति। **গজের ভরমে পাছে পরশে কেশ**ী॥ ৰ্জ্বন-গঞ্জৰ আঁথি>> অঞ্চন ভাল পোডে। विश्वित्वक बार्थ (रूम-रुतिगीत) १ (लाएक । সিন্দুরের বিন্দু ভালে^{১৩} ভামুর^{১৪} উদর। রবি শশী বলি মুখ রাজ গরাসয়> ঃ मिनिने-प्रमान बाहे छव सूथ करता। ভ্ৰমর ছাড়িবে কেনে^{১৬} রস নাহি পিলে^{১৭}। ভড়িত ভড়িত বসন ঘন উত্তে। পাইলে ইত্ৰেৰ বাৰ পাছে আমি পড়েংং

বংশীবদনে কৰে কহিলে সে ভাল>>। বিদগধ বট ভূমি ভাহা জানা গেল।৫৮॥১৩৬০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৭০ ও প-র পুথির २৮।>> मरश्रक भेषा 'श्रीनाद्याद्र' एटन 'भक्षम' भ-द्र । २। 'ना बाहरू ना बाहरू बाहे' क; 'ना बाख ना ষাও রাই' প-র; 'আইস আইস বিনোদিনি' ৩। 'আন্ত কাছে বাজে পাছে' প-র। भ-ब्र-मा, भ-ब्र । প-ब-मा। ७। 'हाक्रब' भ-ब-मा। १। 'निरंबक' थ। ৮। 'क्यरत्र'थ, श-त-मा। २। 'डेवृतिद' ষ; 'উড়নির' প-র-সা। ১০। 'নীপ' ইত্যাদি কলিটি প-র পুথিতে নাই। ১১। 'জাঁথে' প-র। ১২। 'ছেম হরিপের' ক; 'ছেন হরিণীর' প-র-সা। ১৩। 'ভাল' ক, চ। ১৪। 'রবির' প-র-সা। ১৫। 'মূৰ' ইত্যাদি স্থলে 'রাহু গিলিবে ভোমার' প-র। ১৬। 'ভ্রমর' ইত্যাদি স্থলে 'চকোর না हाफ़िरवक' क, थ, ठ, भ-त्र-मा ; 'ठरकात ना हाफ़िरव রাই'ব। ১৭। অভঃপর প-র পুথিতে নিম্নদিধিত া কলিটি দৃষ্ট হয়, বথা—

'নানা অভরণ অংশ করে ঝলমলি।

দাকণ অংজর চোরে সইবে সকলি॥'

১৮। 'পাইলে ছাড়িবে না দাকণ অমরে ''
পানা ১৯ ।

'গোবিন্দ দাসের বাণী শুন বিলোদিনি। শ্রাম সঙ্গে রস-রজে কর বিকিকিন ॥'---প্রা।

शांत्रकी 13

ওবে নাগর খনাইরা খনাইরাং আইস কাছে।
সোণার বরণ মোর দেখিরা কৈরাছ ভোর
ভরমে পরশ কর পাছে ॥এ।
আমরা ড॰ কুলবতা ভূমি সেং রাখার কাছি
কিবিকে কিবা কছা কারি ।

বাঙ্কনেভেশ্ চান্দ ধেন ধারতে কররে মন
সেইন্স দেখি তোমার কাহিনী ॥
সহলে চুলাও মাথা শুনিয়া না শুন কথা
পুসারি আসিছ্ শুটি বাছ।
না বুৰিয়া কর শুন বল পাইবা তাহার ফল
ভখন কথা না শুনিবে কেছ ॥
শুনিয়া কহয়ে শুনী শুন শুন বিনোদিনি
না শুরিবা আমারে বঞ্চিতে।
বিকি না ছাড়িবা তুমি আমি ভ্ৰম্প প্রের দানী
নিভুই ঠেকিবা মোর হাতে ॥৫৯॥১০৬১ ॥

১। ইছা প-র-সা প্থির ১৮৭১ সংখ্যক পর।
২। 'বনাঞা' ক, থ; 'বনায়া বনায়া' প-র-সা।
৩। কেবল প-র-সা পুথিতে 'শু' আছে। ৪। 'সে'
প-র-সা। ৫। 'ডো' প-র-সা। ৬। 'মতি'
প-র-সা। ৭। 'হয়' প-র-সা। ৮। 'বাঙনের'
ব; 'বামনে এ' প-র-সা। ৯। 'ডেঞি' প-র-সা।
১০। 'প্সারিয়া আইস' প-র-সা। ১১। 'না'
বৃধ্ধি করহ' প-র-সা। ১২। 'গুনি শুনি কহে'
প-র-সা। ১০। 'ডো' প-র-সা।

পাঠান্তর

व्याभावत्रो ।>

ওহৈ নাগর,

কেমনে ভোমার সঙ্গে পিরিতি করিবং।

মোণার বরণ

ছুইলে বণল পাছে হবং ॥এল।

ভোমার গলায়

আমার গলায়

গল-মোলা গাছি

আমার গলায়

গল-মোলা গাছি

ক্ষিক্টাা

বনের ফুলে

চ্ডাটি বান্ধিয়া আছ্

মউরের

স্পিত্র

নাহি অভরণ

সাক্ষিতি বনের সুলে।

চূড়াটি বেট্রা>
তাহে কি রমণী ভূলে ।
কি জানি কি করা। রাখালে ভূলাঞা>
আইলা কোন বনে থুঞা।
আমরা রাখাল নই চ্চুর>
ভূলাইবা কি বোল বলিয়া ॥৬০॥১০৬২॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৭২ ও প-র পুৰিত্ব ২৮I>• সংখ্যক পদ। 'আশাবরী' স্থলে 'আলোয়ারি' প-ब-मा ; 'ভাটিয়ারি' প-র । ২ । 'কেমৰে তোমার' ইত্যাদি পার-সা ; হলে 'তুমি রাখাল রাজ-নন্দিনি আমি কেমনে' ইত্যাদি প-র। ৩। 'সো**ণার** বরণ আমি' প-র। ।। 'অঞ্চনের পুর ভূমি' প-র। e। 'बूर्टल त्वांमन' हेजामि च ; 'क्राम बूला मिनन हर्व श-त। ७। 'श्रमात' म, ह। १। 'भात গলে' প-র-সা। ৮। 'নিক্ডিয়া' প-র-সা। »। 'ফুলের' প-র-সা। ১০। 'বাজিগছে' ব, চ। 'বাদ্ধিয়া আছ' শক্ষ হইটি প-র-সা পুণিতে নাই। ऽऽ। 'मशुव' क्र**ः** 'मडेद' **प, प, চ।** ऽर। 'পাখা' প-র-সা। ১৩ । 'সাধী' ক । ১৪ । 'ভূষণ' প-র। ১৫ । 'চুড়ার উপরে' প-র-সা; 'চুড়ার উপরে কত' প-র। ১৬। 'শ্রমর' ক। ১৭। 'কি আনি' ইত্যাদি কলি প-র পুৰিতে নাই। তৎস্থলে নিম্লিখিত কলি দৃষ্ট হয়, বধা—

'অবপা ভিতরে পাইরা অবলা বিবাদ না কর কালা। বংশীদানে কর ভাল না হইবে আমরা কুলের বাণা ॥"

>৮। 'চডুরি' ব।

নিৰ্গা—তেওই।) শুন লো সুন্দরি প্রেমেড আগরিব ভোমার অনুরাগে মরি। ভোমার লাগিরা সকল ছাড়িরা। আইলাম গোকুল পুরী॥ ভোষার কারণে কিরি বনে বনে
ধেনু রাখিবার ছলে।
ভাষিরা শুনির আদিরা লাগি না পাইরা
ছলে বসি তরুতলে ॥
রাই আমি সে তোমারণ দানী ।
সকল ছাড়িয়া রাধা নাম ধেয়াঞা
নামের মহিমা শুনিণ ॥৬১॥১৩৬৩॥
গঠান্তর

३। देश भ-त्र-मा भूथित ১৮१० मरश्यक भन्। ২। 'ৰা কৰি চাতুরি' প-র-সা। ৩। 'ভোমারি' क, थ। । । । अञ्चलक भ-त्र-मा প्विट नेबिनिविक অতিরিক্ত কণিখলি দৃষ্ট হয়, বথা---'মাগৱের বাণী छनि विस्मानिमी थ्याम इन इन चांथि। ভোষার ছবে ভ স্থাই ছথিত তোৰার স্থাধতে স্থা। খন হে নাগর महात्र जानत नता ना हाफ़िर छूनि। সকল ছাডিয়া ভোমার লাগিয়া ষ্থির পদারিণী আমি ॥'

উদ্ভ কৰি ছুইটি পরিভ্যাগ না করিলে পরবর্তী প্রের সহিত অসামঞ্চ হর বলিরাই, বোধ হর

বৈশ্বদাস উহা পরিভ্যাগ করিয়াছেন।

কানোগ।>

বেলে বে কিশোরি গোরি, ভোহে পরিহার করি
শুনি কিছু কর অবধান।
ও চান্দ-সুথের হাসি হৃদয়ে রহল পশি
বৈদগধি দগধেং পরাণ॥
নাই ভোমার বৈদগভা॰ কি কহিব ভার কথা
কহিতে উথলে হিয়া মোর।
না দেখিয়া ভোমারে পরাণ কেম্বন করে।
ভোমার গুণের নাহি ওর ।

বে জন প্রণত হর তাহারে তেজিতে নর

মনে বিচারত এই কথা।

তুমি যে কহাও বাণী তাহাই কহিরে জামি

নিশ্চর জামিহণ সর্ববধা ॥

বে পণ কর্যাত্বণ তুমি সেই পণ দিব জামি

তুমি মোরে দয়া না ছাড়িহণ।

জ্ঞানদাসেতেণ কর তুহুঁ তুমু একইণ হর
পরাণে পরাণে বাফা পুইত ॥৬২॥১৩৬৪॥

পঠিক্তির

১। ইহা গ-র-সা পুথির ১৮৭৪ সংখ্যক পদ।
২। 'বধ' ক; 'বধহ' খ, চ; 'না বধ' ছ। ৩।
'বৈদক্ষতা' ক। ৪। 'আনিও' ক। ৫। 'করহ'
ক, খ, চ, প-র-সা। ৬। 'ছাড়ির' ছ। ৭। 'আনদাস' ক, খ, ঘ, চ। ৮। 'এক' ক। ৯। 'শুইন' চ।

कारमाय--- मजन 13

কিছু বৈলং না হে কৈর° না হে
কথা শুনি ফাটে মোর বুক।
ভোমা না দেখিলে প্রাণ সদা করে আনহানণ
দেখিলে সে জিয়েণ চাঁদ-মুখ । এদ।
ভূমি জল আমি মীন আমি দেহ ভূমি প্রাণ
ভূমি চক্র আমি বেন নিশি।
কে জানে কে হেদে কেনেণ

তোহে পরিহার করি আধ তিল ডোমা বিলে

নবধান। আপনাণ জলম সম বালি ॥

হলমে রহল পশি সরল সারিকা হাম পঞ্চর ডোমার থেশে

পরাণ ॥ ডাহে বন্দীশ হইয়াছি হরি।

কি কহিব ডার কথা ডোমার বিলোগে হাম সমাই বিলোসী ছে

যো মোর। ডেঞি আনিণ মধির পলাকি।

পরাণ কেম্বন করে সাড়াঞা পর্যের মাঝে ডিলাঞ্জনি লিলাক লাজে

হিছি ওর ৪ ড্রেমা ডবে মাঝে ডিলাঞ্জনি লিলাক লাজে

বের দেখ ওহে শ্রাম, চুই বাউছে ১০ ভামার নাম
দাগিরা রাখিরাছি নিজ প্রাণ ॥
বৈরক্ত ধরিতে নার এক নিবেদন করি
না ছইও মোর বধের বধী।
বংশীবদনে কর এ কথা অশ্রথা নয়
এক জিউ চুই কৈল বিধি ॥৬০॥১৩৫৬॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৮৭৫ সংখ্যক পদ। ২। 'বল্য' ক, থ, চ। ৩। 'কৈছ' ঘ। ৪। 'আনচান' ক, খ। ৫। 'ফুড়ার' প-র-সা। ৬। 'কে লানে' ইত্যাদি হলে 'কি লানি এ দেহ' প-র-সা। । 'বদ্ধ' প-র-সা। ৮। 'বদ্ধ' প-র-সা। ৯। 'তাহে লানি' প-র-সা। ১০। 'বাল্যানি' ক; 'বাল্যাইরা' ঘ। ১১। 'বাল্যে' ক; 'বাল্যানি' ধ।

বাননা।>
তোমার বদন আনার জীবন
সরবস ধন তুমি।
তোমা ধরি চিতে খুঁ জিতে খুঁ জিতে
আদিয়া পাইলাম আমি ।
রাই হে. কি মোর করম ভাগি।
ব্রেকের জীবন সভাকার ধন
আসিরা পাইলাম লাগি ॥ধ্রু॥
কারিব্রের মত ফ্রিয়ে জগত

ভার মাবে বেন হেম-বরিষণ

চনক-মুঠের আশে।

विधि विनाजन शांटन ॥

এডকণে নোর আগ পূর্ব ভালল মনের ধবা।

क्टर महेरत (१२ इ.स. ७)

बाह जाबब-हत्य १६८१३७७७।

পাঠান্তব

)। देश श-त्र-ता श्रृचित ১৮१७ त्रश्यक श्रेत ।

जुनानी ।>

রাধামাধব নাপ-মূলে।

কেলি-কলা-রস দান ছলে।

ছরেং গেও সথিগণ সহিতে বড়াই।

নিজ্ত-নাপ মূলে বৈঠলণ রাই।

জ্জে ভূজে বেঢ়ি দোঁহার বয়নে বয়নণ।

কমলে মধুপ যেন হইল মিলনণ।

দোহার অধর-মধু দোঁহে করু পান।

নিজ অঙ্গে দিল রাই খন-রস দান।

মীলল ছত্ত জন পুরল আল।

আনন্দে সেবই গোবিন্দদাস ॥৬৫॥১০৬৭॥

ইত্যাদি অমুরাগযুক্ত-দানপর্যায়ো গীতঃ
বাপর-মনোহরসাহি-শ্রীসংকীর্তনামুসারেশ

ইত্যাদি অমুরাগযুক্ত-দানপর্যায়ো গাঁভঃ
পূর্ব্বাপর-মনোহরসাহি-শ্রীসংকীর্ত্তনামুসারেশ
এডদ্গাঁত-সংগ্রহঃ। তত্র সকলের পদের
ভণিতা নান্ত, কৈবলং গানামুসারেশ সংগ্রহঃ।

পাঠান্তর

১। হহা প-র-সাপুথির ১৮৭৭ সংখ্যক পদ।
'ভূপানী' ক্লে 'গোরী' ক, খ, প-র-সা। ২।
'দূরে' ক। ৩। 'নুঠই' ক, খ, খ, চ। ৪।
'ব্লানে ব্লানে' প-র-সা। ৫। 'বিলনে' প-র-সা।

व्यथ मान-(किनः श्रकातांखदः यथा।

তত্ৰ গৌৰচক্স।

यहरे 13

গৌরাফটালের মনে কি ভাব উঠিলং।
নদারার মাঝে গোরা দান সিরজিল ।
কি রসের দান চাহে গোরা বিজ-গণি।
বেত্র দিয়া আঞ্চিয়া রাধ্যে তরুণী।

দান দেহ দান দেহ বলি গোরা ভাকে।
নগরের নাগরী সব পড়িল বিপাকে॥
কৃষ্ণ-অবতারে আমি সাধিয়াছি দান।
সে ভাব পড়িল মনে বাহুঘোষে গান॥

144070871

পাঠান্তর

>। देश भ-ज्ञ-ना शृथित २৮१৮ मःशाक शृषः।
२। 'गेष्णिन' भ-ज्ञ-ना। ७। 'माश्राद्य' क, थ।

३। 'किरनत' क, थ, ठ, भ-ज्ञ-ना। ৫। 'मान
रक्ट बिन छाटक' भ-ज्ञ-ना। ७। 'मान रम्ह रमह
विन चन चन छाटक' भ-ज्ञ-ना। १। 'निम्ता'
भ-ज्ञ-ना।

শ্রীরাপ।>

কে যাবে কে যাবে বড়াই ডাকে উচ্চশ্বরে। मिथ क्या शुरू श्वाम मथुतात्र (विविद्युष् ! माकारेबा भगवा वारे फिल मामीव माटब⁸। চলিলা মথুরার° বিকে রলিয়া বড়াই॰ সাথে॥ পথে যাইতে কহে কথা কামু-পর্সঞ্জ। প্রেমে গরগর চিত পুলকিত অক। নবীন প্রেমের ভরে চলিতে না পারে। **इक्का इ**तिशे त्यन मोगण त्नहाद्व ॥ হোর কি দেখিয়ে বড়াই কদম্বের ভলে ।। ভড়িতে জড়িভ খেন নব জলধরে। ভাহার উপরে শেভে নব ইন্দ্র ধনু। वफारे वटन विक ना नटमत्र (वर्षे। कांगू ॥ মধুরার বিকে বাইভে > আর পথ নাই। পাভিয়া মঞ্চল-ষ্ট বস্থাছে ২ কানাই 🛭 বাহুদেৰ বোষ কছে দ্ধির প্সারিণি । পাভিয়া মঙ্গল-ষট বলিয়াছে দানী 1691১৩৬৯ 1

পাঠাৰর

३। देश প-ब-गा श्रीवत ३৮१৯ मृश्याकः
 भव । १। (बाद्य वन्तार व, ठ । १० । १विकिः)

করিবাবে' প-র-সা। ৪। 'বাবে' থ। ৫। 'নপুনা' ক। ৬। 'বড়াইর' থ। १। 'প্রেমে গ্রুগদ' প-র-সা; 'আনন্দে আকুল' থ। ৮। 'দিগ' ক, থ, ঘ, প-র-সা। ৯। 'নিহালে' ক। ১০। 'হোর' ইত্যাদি তিনটি কলি প-র-সা প্রিতে নাই। ১১। 'বাই' ক। ১২। 'বলেহে' ক। ১৩। 'বাহ্নেব' ইত্যাদি ভণিভার কলিটি কেবল প-র-সা প্রিতে দৃষ্ট হর।

ভাটদারি ৷>

এমনেং কেমনে যাব পথে খ্যাম দানী। আপন৷ খাইয়া কেনে আইলাম ভোমার সনে জাতি জাবনে টানাটানি । এ। ঘরে হৈতে বারাইতে⁸ কতং না বিপদ পৰে मानिनो हिल्या (गल वारम। তথনি বলিগাম আমি হাস্তা না শুনিলা ভুমি না জানি কি হয় পরিণামে चां कि कित्रशार्द्ध माना নীপ-মূলে করি থানা कानाइ देश्याद्य महानानी। আময়া সে কুলৰতী ভাহে নব যুবতী কি করিলে কিবাণ হয় জানি ৷ হাতে বাঁশী মুখে হাসি পথের নিকটে১১ বসি আঁথি-ঠারে ত্রিস্থবন ভূলে। ভারি ২ দিব ছেনা ১৬ দধি পসার পরশে যদি वां भं मिन यमूनात करन ॥ মনে না করিহ ভয় (गा-ब्रह्मन मानी मन শুন শুন রাই > বিলোদিনি। स्टब्रक्क माटन ट्वाटन বাট আইস ভক্তলে ষ্পানন্দে করহ বিকিকিনি ১৬৮১১৩৭০।

) । देश भन्न-ना श्रवित्र ३৮৮० मरबाक भन्न। २। 'वा गरब' भन्न-ना। ७। 'व्याबा' स्व १००० 'वादिसारेक्क' भन्न-ना। ७३ 'व्यक्क' स्वतना। 📭। 'হানিলা' প-র-সা। ৭। 'হবে' ক; 'হবে' 'বাটের' ইত্যানি কলিটি কেবল প-র-সা প্রিতে দৃষ্ট ধ, চ। ৮। 'রাজপথ করি' প-র-সা। ১। 'ভ' প-র-সা। ১০। 'কি না' ধ, প-র-সা। วว । 'के भरब' भ-ब-मा। २२ । 'शिवि' क, थ, स, ह। ১৩। 'ছানা' প-র-সা। ১৪। 'রাধা' প-র-সা।

वित्रांत 15

क्रभेष्ठे-मार्नितः ছत्न विभिन्न देत्रग्राट्य। o পথে কেমনে বাব দানা ছোয় পাছে॥ এমন হইবে বল্যা° আমি ত না° জানি। মধরার বিকে যাইতে পথে মহাদানী॥ বিকি শিখাইব বল্যা॰ লৈয়া আইলা সাথে। আনিয়া সোঁপিয়া দিছ রাখালের হাতে ! वः नीवप्रत्न वर्ल अन धनि अदि । দান সাধে ফিরে পথে রসিক কানাই॥

16250431

পাঠান্তর

১। इंडा भ-त्र-मा श्रुवित्र ১৮৮১ मश्याक भए। २। 'बानीब' क। ७। 'देवरम' श-ब्र-मा। ८। 'আমি নাহি' খ। ৫। 'ৰলি' ক, খ, চ, প-র-সা। 🎐 ৷ 'বংশীবদন' ইন্ড্যাদি ভণিভার কণিটি কেবল প-ব্ৰ-সা পুৰিতে দৃষ্ট হয়।

भोत्रात्र ।>

কোণা যাও গোয়ালিনি কোণা তোমার ঘর। কিলের পদরা দাসীর মাথার উপর॥ দ্ধি হয় খ্বত বোলে পসরাং আমার। কে ভূমি ভোমার বোলে ওলাব পসার। वाटिक वाटियान वामि भटनक महानानी। আজি দান দিতে হৈল শুন বিনোদিনি॥

190170921

' পাঠান্তর " । देश भन्न-मा श्रीवन २४४२ मरवाक भग।

बबाड़ी ।ऽ

চিকুরে চোরায়সি চামর-কাঁতি। দশনে চোরায়সি মোভিম-পাঁতি॥ এ গজ-গামিনি ভো বড়ি সেয়ানং। বলে ছলে বাঁচসি গিরিধর-দা**ন** ॥ অধরে চোবাযসি স্থর**স**ঃ পঙার। বরণে চোলয়সি কুকুম-ভার 🛚 কন্যা - কল্স দট । রস ভরি তাই। হৃদয়ে চোরায়সি আচরে ঝাঁপাইশ। তেরিজ অতি মন্থর গমন্থ-সঞ্চার। কোন তেজবংগ তোহে বিনহি বিচার। স্থবল লেহ তুর্ত গো-রস দান। রাই করহ অব কুঞ্চে পয়ান॥ याहै। टेवर्रेड मनमथ महाबाज। গোবিদাদাস কৰে গড়ল অকাল ॥

193130901

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুণির ১৮৮০ ও প-র প্রির ২৮।৭ সংখ্যক পদ। ২। প-র-সা পুথিতে এ পজ-গামিনি' ইত্যাদি পংক্তিশ্ব ধারা পদটি আর্ভ ক্রা হইয়াছে। 'সিয়ানি' প-র । ৩। 'দানী' প-র। 8। 'निन्तूर' भ-त-मा। ८। 'कनक' क। ७। 'कनरम' क, थ, घ, छ। १। 'नड' हेडामि 🔻 ३ 'ভট্ রস ভারি চার' প-র-সা । ৮ । 'ছাপার' প-র-সা। ৯। 'ভাছে' প-র-সা; '৻উ' প-র। >०। 'हत्रन' क, च। >>। '(छाड्च' श-त्र-ता) 'हाफ्बें' भ-व।

वानने ।>

স্থক্ষরি শুনিয়া না শুন মোর বাণীং। ना जान कानार পर्व नानी ॥

সিঁ বারণ সিন্দুর ভোষার নরানে কাজর।
হং লক দান ভার মার্গে গিরিখর।
হারের কাঁচুলি গলে গল্প-মোতি হার।
চারি গল্প দান মাগে করিয়া বিচার।
করের কন্তপ আর কটিতে কিছিন।
হরণ লালভা পারে রভন-নূপুর।
আই লক দান মাগে দানীর ঠাকুর।
এই সব দান বুলি দেহ দানি-রাজে।
আমি নিব দান ভোমার সলিনী সমালেও।
আমি নিব দান ভোমার সলিনী সমালেও।
ভামি নিব দান ভোমার সলিনী সমালেও।
ভামি নিব দান ভোমার সাক্রির কোন জনা।
ভূমি মহাদানী ভোমার ঠাকুর কোন জনা।
ভূমি মহাদানী ভোমার ঠাকুর কোন জনা।

পঠিকির

 ইহা প-র-লা পুৰির ১৮৮৪ লংথ্যক পদ।
 'ক্ষকরি' ইত্যাবি পংক্তি-বর ছলে প্-র-লা পুরির পাঠ ববা—

'বাৰ বেহ শুন বিনোদিনি।

শান না বে আমি এ পথের নহাবানী।'

া 'ক্পালে' প-র-সা। ৪। 'ছই' প-র-সা।

ো 'হিরাহ' প-র-সা। ৬। 'ছই' প-র-সা। ৭।
'আজি বান বুরি নিব স্থার স্বাক্তে' প-র-সা।

निष्ण ।

ত্ব ত্ব ত্ব হুজন কানাই

ত্বি সেণ্ নৃত্বণ দানী।

বিকি কিনির দান গো-রসেণ মানিরে

বেশের দান কভুণ নাহি ত্বি ভি
বি বার সিন্দুর নরানে কাজররক্ষণ আগড়ো পার।

(ই কিণ) বিকি কিনির ধন ধারীর বেশ্রকণ

ইবে কার কি বা কাল্য

বণি-পাতরণ স্বার্থ শার্ত্তা পাত্তা প

পাঠান্তর

১। ইহা পার-সা প্ৰির ১৮৮৫ ও পার প্ৰির ২৮।৫ সংখ্যক পদ। ২। 'গুন' শলটি পার-সা প্ৰি ব্যতীত অল্পান্ত প্ৰিতে নাই। ৩। 'গু' পার-সা। ৩। 'কড়' শল পার-রা। ৩। 'কড়' শল পার-রা। ৩। 'কড়' শল পার-রা। প্রিক' ক। 'লুবপ' পার-রা। প্রিক' ক। 'লুবপ' পার-রা। ৯। 'গুহে' ইত্যাদি পার রা আলে অভরণ' পার-রা। ৯। 'গুহে' ইত্যাদি পার রা কলে কলে কলে লার বাদে পার-রা। ৯০। 'লোলোকের প্রিক্তিণ' পার-রা। ১৯। 'লোলোকের প্রিক্তিণ' পার-রা। ১৯। 'লোলাকের প্রিক্তিণ পার রা কলা নাহি' পার । ১৯। 'লোলোকের প্রিক্তিণ পার । ১৯। 'লোলোকের বাকে' পার । ১৯। 'লোলোকের বাকে' পার । ১৯। 'লোলিকের পার । কলা কলা পার পার বাকে পার । ১৯। 'লোলিকের পার । 'লোলোকের পার । 'লোলোকের পার । 'লোলোকর । ১৯। 'লোলিকর' পার । ১৯। 'লোলিকর' পার ।

कार्टियाची । ३

নী। দানী দেখি কাঁসিছে পারীর ।

গা-রসেং মানিরে নাে বদি জানিভানং পাছে, এপথে বাজীক পাছে,

নাবি প্রনি । জবে মরেরং না রইভাব হাছির এ

নারনে কালক সরে বৈজে রানাইছেং ও চাকং-টেলিল নামে

ইাজি লিসীং শক্তিবন বাম্ব

विषम प्राचीत्रभ्य प्राप्त এক লয় আর চায়>২ ना भाहेरल कत्ररम् विवाह । मान निवात (वटन Cनय वाम मिवात (वटन (मय): একেক লক্ষের পরিবাদ^{্ধ} ॥

ম্ণি১৬-অভরণ ছিল ডরে ডরে সব দিল उम् नानो ना (नग्न ছाড़िया। মো> হইলাম সোণার গাছ

দানী ত না ছাড়ে পাছ্য ডালে মূলে নিবে> উপাড়িয়া। **পर्थ दे**वज्ञो महानानीरः घरत्र देवत्री ननिषनी (मट्ट्र देवती इडेल द्योवन। যমুনায় দিয়ে ঝাঁপ হেন মনে উঠে ভাপ ना त्रांशिव এ ছात्रर कीवन ॥ বলে হাত্ত্ত দিতে চার অবলা বলিয়া গায়^{২২} পসারিয়া আইসে চুটি বাহু।

মোর মনে হেন লয় জ্ঞানদাসেতেং কর **हाटम्स (यन शर्ताम्बर्यः व्हाल ॥१४॥)७१७॥**

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৮৮৬ ও প-র পুषित २৮।১৮ সংখ্যক পদ। `२। 'विष् मारे माने' ইত্যাদি প-র। ৩। 'এত না গণিল' প-র। ৪। 'चरत्र' च, ह। १। 'वात्राहर्रं, थ। ७। 'উচাল' প-র সা; 'এ চাল' প-র। ৭। 'বিটি' খ। ৮। 'নাপড়িল' 🔻 ; 'নাভণিলাম' প-র-সা। ৯। 'পলারা' প-র-সা, প-র। ১০। 'তেমতি' भ-त्र। ১১। 'विषय दिल प्रात्मत्र' भ-तःमां, भ-त्र। >২। 'একে বিলে আরে চার' প-র-সা; 'একে লর আরে চার' প-র। ১৩। 'করে পরমার' भ-ब-मा, भ-ब। **>८। 'नाब' क, च, भ-छ।** >८। 'একে কলছের পরমাদ' ক, চ; 'একেক লক্ষের 'আকে' প-র-সা, প-র भव्याप' प । ১७। ১৭। 'ৰুঞি' প-র। ১৮। 'কাছ' ক, ধ, চ। २०। 'टेरन नराशनी' >> । 'नदव' भ-व ।

ष, চ; 'ঐরী হৈল দানী' প-র-সা। ২১। 'পাপ' প-त्रमां, भात । २२ । '(पश्चिम्न छात्र' भ-त्र। २७ : '(कांग' भ-त । २८ । 'अभिनमहारम' প-द। २०। 'ठान्म शद्रारम रेगरह' भ-द।

बब्राड़ी ()

হেদে হে নিলজ কানাই

না কর এতেক চাতুরালী। যে না জানে মানসভাং তার আগে কহ কথা মোর আগে বেকত সকলি ॥ধ্রু॥ (तफ़ारेला गरू ेलग्रा (म लांक रफ़्लिला भूरेग्रा এবে হৈলা দানী মহাশয়। রাজপথ কর মানা কদম্ব-ভলায় থানা **प्रिटन** पिटन वांड्रिल विषय ॥ ভূমেতে না পড়ে পা আন্ধার-ৰৱণ কাল গা কুল-বধু সনে পরিহাস। व्याभनातक ठाख प्राचि এ রূপ নির্যাথয় वाहे और लाक नाहि वाम ॥

তার মুখে নাহি রা• মা ভোগার যশোদা नम (चार व्यक्तक निधि। কাজ কর জিনি **কংসে** জনমিয়া তার বংশে এ বুদ্ধি ভোমারে দিল বিধি॥

দেখা শুনা আট পর একই নগরে ঘর ঠিল আধ নাহি আঁখি-লাজ।

রাজারে না করে ভর রায় শেখরে কয় এ দেশে বসতি কিবা কাল ॥৭৫। ১৩৭৭॥ পাঠাম্বর

১। ইছা প্-র-সা পুথির ১৮৮৭ সংখ্যক পদ। ২। 'মাত্ৰতা' চ। ৩। 'গাবী' ক; 'পোক' च ; '(अस्थ' अ-त-ना। ४। '(तच ठांबा' अ-त-ना। विश्वामा ज्ञानी भ-त-मा । अ । 'वानी' প-त-ना। १। 'काममारिम छ' च; 'वश्मीवस्तम' भ-द-मा। ৮। 'क्द्र' क्।

দৌরাষ্ট্রী ।১

किलात वर् কহ লগু লগু ভোমারে সভাই জানে। কহিতে কহিতে অনেকং কহিছ ে এড না গরব কেনে ॥ পসরা লইয়া যাইছ চলিয়া मानोदत ना कत छय। রাজ-কাজ করি দান সাধি ফিরি এপা কিবা পরিচয়॥ এ রূপ যৌবনে নানা অভরণে যাইছ মথুরারণ বিকে। वृत्रि मान निव তবে যাইতেঃ দিব আমি ডরাইব কাকে। অমুল্য রতন করিয়া গোপন• রাখ্যাছ হিয়ার মাঝে। নিজ-ভালদ চাহ খসাই দেখাহ रेए कि जामात्र लाटक ॥ এত কহি হরি হু,বাহু পদারি রহে পথ আগুলিয়া। জ্ঞানদাসে কয় কিবা কর১১ ভয় যাহ হাত ঠেলা দিয়া ॥৭৬॥১৩৭৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুৰির ১৮৮৮ সংবাক পদ। ২। 'অনেকি' থ, চ। ৩। 'মথুৱা' ক, চ। ৪। 'ৰাইতে না' প-র-সা। ৫। 'কাথে' ঘ, চ। ৬। 'বতন' প-র-সা। ৭। 'রাখিছ' প-র-সা। ৮। 'লাভ' প-র-সা। ১। 'থসাইরা দেহ' প-র-**সা। ১**•। 'আঞ্চিরা' প-র-সা। ১১। 'কারে করো' প-র-সা।

रबाडी ।> হেদে হে মন্দের হুত কে তোমাং করিলে মহাদানী। দণ্ডে কাচ° নানা কাচ® না ছাড় রমণীরং পাছ व्याहरण ना वृत हिछ वानी । अ। শুনিয়াছি শিশুকালে পুতনা বধ্যাছ হেলে তৃণাবর্ত্তের লৈয়াছ পরাণ। এখনি নদ্দের বাড়ী দেখিয়াছি গডাগডি এখনি সাধিতে আইলা দান ॥ কাড়ি লব পীত ধড়া আলুয়্যা ও ফেলিব চূড়া বাঁশীটি ভাসাঞা> দিব জলে ৷ কুবোল বলিবা যদি মাথায় চালিব দ্ধি বসিতে না দিব ভক্নতলে॥ মোহন চাতুরী করি বাঁশীতে সন্ধান পুরি বুকে হান মনমথ-বাণ। त्रमणी-मधन कत्रि অভরণ লব কাডি>২ ভাল মতে সাধাইব> দান ॥ রাখাল বর্বর ভাতি ধেনু রাখ্য দিবা রাতি महिस (गांधन वदम्भः लक्षांभः। कूल-वधु मान हाम - है दिश नाहि गांक वाम এখনি কংসেরে দিব কয়্যাঞ ॥৭৭॥১৩৭৯॥ পাঠাক্তর

)। हेर्रा भ-द-मा পृथित ১৮৮৯ मृश्यांक भूग। ২। 'তেগমার' প-র-সা। ৩। 'ক্লর' প-র-সা। ৪। 'कांक' भ-त-ना। ६। ब्रिंगमी' क, ४, ठ, भ-त-ना। ৬। 'এখন' ক, চ; 'তথনি' ধ; 'অথনি' প-র-সা। গ। 'কলি কাগি' প-র-সা। ৮। 'অংশনি' প-র-সা।) 'निव' क। > । 'अन्तारेश' क; 'बांडेनारे' ग-त-ना। **२२। 'कानारेश' क**। २२। 'कांक्वि' व। oo। 'नियाहेव' भ-त्र-मा। ১৪। '(यद्भ वाय' च्टन 'বেছ রাবে' ক, ধ; 'নাঠে থাকো' গ-র-না। ১৫। 'बष्ट्' या २७। 'लक्श' यः, 'लटेवा' या २१। 'क्का' थः 'क्हेना' यः

एक्टे । ३

কি করবং সোরস দান।
আপনেও দিল সমাধান।
অধবে অমিয়া-রস ভোর।
যৌবনং যোধং আগোর।
ভোকে কহিং সুন্দরি রাধে।
হরি সঞ্জে না করু বাদেও।
ক্তুল চক্রং বিকাশে।
বেণি ভুজজিনি পালে॥
ভাঙ ধনুয়া জনু ভজ।
খর শর নয়ন-তরজ।
অতয়ে বুঝিয়ে রণ-আশংও।
কহভহি গোবিদদ দাস॥৭৮॥১৩৮০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প্-র-না পুথির ১৮৯০ ও প-র পুথির
২৮/৬ সংখ্যক পদ। ২। 'করিব' পর-না। ৩।
'আপনি' ক। ৪। 'বৌবনে' ক, খ। ৫। 'বোধি'
ক; 'বোডা' খ; 'কোধে' ঘ, চ। ৬। 'বেচে কহি'
ছলে 'গুন খুন' প-র। १। 'কর বাদে' প-র-না;
'কর বিবাদে' খ। ৮। 'পরে' প-র-না। ৯।
'শোভে' ইত্যাদি খুলে 'হার-মুরেখরী ধারে' প-র।
১০। 'চক্র' প্-র-না। ১১। 'রস আশ' খ; 'রণভাস' খ; 'মন আশ' প-র-না।

গঠনদুরী।>
রাই-মুখ ছেরি মুখনা কছে।
এত কি আমার পরাণে সহে।
রাখাল হইরা ছুইতে চার।
অব কি করব নাহি উপার ।
দানী অবসর ব্বিয়া কাজে।
সুকাহ বাইরাং নিকুঞ্চ মাবে ।

এত কহি সভে ধাইয়া চলে।
নিক্ঞে রাই লুকায় ছলে ॥
বিসিক নাগর বুঝিয়া কাজ।
লুকায়া। চলিলা কুঞ্জের মাঝা॥
রাই কামু তাইা দর্শ পাই।
রহে ছুহেঁ ছুহার বদন চাই॥
প্রতিঅকে দানা লইলা দান।
রতি রতি-পতি মুরতিমান॥
বে ছিল মানস প্রল আশ।
আনন্দে মগন শেখর দাস॥৭৯॥১৩৮১॥

পাঠারত

>। देश প-त-ना পুথির ১৮৯১ সংখ্যক পদ।
२। मुकाই वारं क, च; 'লুকার বাইরা' छ। ৩।
'मुकाঞা' क, च; 'मुकाইরা' छ। ৪। 'ছহু দোহাঁ'
क, च; 'দোহে দোহা' छ।

পুনশ্চ দিনাস্তে।

মারর।১

গোঠেং বিজই অজ- রাজ-কিশোরবর* বাজত বেশু বিষাণঃ।

করি কত ছল্ম পল্ল-মুখি নিকদই

হেরইতে বিপিনে পয়ান॥ স্কুন্দরি হেরই না পায়ল রক্ষ।

স্তুম্মর স্তবদন দ্রুড চলি গেও বন

না কানিয়ে কোন তরঙ্গ। প্রশ

মেঘ-নাদ শুনি বৈছন চাতকিনি

था छल शानिक चार्नि ।

मारु प्रस्थित भवत् प्रस्था प्रस्था । भवत् प्रस्था । भवत् प्रस्था । भवत् प्रस्था । भवत् । भवत

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুণির ১৮৯২ সংখ্যক পদ। ২। 'গোঠ' ব , 'গোঠেতে' প-র-সা। ৩। 'রাজ- কিশোর ক, প-র-সা। ৪। 'বিশান চ; 'নিশান'
प। ৫। 'পাশে' ক, ধ। ७। 'নিকিণ' ক। ৭।
'দেরত' প-র-সা। ৮। 'মেঘ-নান' ইত্যদি পংক্তি
চারিটির স্থলে প-র-সা পুথির পাঠ, যথা---

"মেখ-নাদ শুনি বৈছে চাতকিনি
ধাওল পানিক আসে।

ঐছন প্রেম আরতি নাই পাইরে
নিমিধে ত যুগ ছতালে॥

দারুণ দ্বিণ প্রবনে হুণ দেরও
ভৈ পেল তবহি নৈরাশে।

পৃষ্ঠি খরতর তাহে রবি প্রথর
কৃষ্ঠি গোবিন্দ দালে।"

पाननी कि

কামুক গোঠ-গমন তহি হেরইতেং অভি উতক্ষিত রাই। मिनदा निक मह-**চরি সনে বৈঠলি**° সো মুখ হৃদি অবগাই॥ সজনি কি করব অব হাম থেই। গুরুজনে বঞ্চিয়া देक्डन मोनव॰ শ্রামর রসময়-দেহ ॥ এ ॥ धेष्टन बहन রচন তব করইতে यूचेत्रा मिलल (माई॰ ठीम। ভাকর বদন হেরি তহি জানল পুরব সব মনকাম । মুখরা কহড° তব চল সভে বাওব

সঙ্গহি মোহন্দাস ॥৮১॥১৩৮৩॥ পাঠাছর

ভহিঁ সৰ বেচৰণ

্গোবৰ্জন গিরি পাশ।

দধি স্থুত গোরস

)। देश भ-त्र-ना श्रीवेत अध्यय मर्थाक भवः। २। 'छक्टि हित्रहेरक' वरण 'नाहि हित्रित्रा' क, ब, ह, भ त्र-ना। ७। 'मिन्दित्र' हेखानि व्हरण 'मिन्दित्र বৈঠলি নিজ সহচরি সনে' ধ। ৪। 'মিলব' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'তহি' প-র-সা। ৬। 'কছে' ব। ৭। 'সব' চ। ৮। 'তহিঁ' ইত্যাদি ছলে 'সাজাইরা পদার' প-র-সা।

वब्रांडी । >

দধি খ্বত গোরসে সাক্ষারা। পসার।

চীরহিঁ ঝাপন পদেওল তার ।

কিক্ষরিগণ সব শির পর নেল।

মুখরা সক্ষেধনি তহিঁ চলি গোল ।

সুহচরি সক্ষহি বিনোদিনি রাই।

দুরহি কামুক দরশন পাই ॥

পুলকে পুরল তমু গদ-গদ বোল।

ঘামহি জীগল নীল নিচোল ॥

কো ইহ কেলি-কদম্বক মূল।

নব মেঘে বিজ্বরি জড়িত সমত্ল ॥

বাহু জুলিয়া উহ ডাকরে কায়।

মুখরা কহরে ইহ নব রস রায়॥

পদ্বহি মাগরে গোরস দান।

মোহন কহে মোহে এছন ভান ॥

112170F81

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৯৪ সংখ্যক পদ।
২। 'সাজাঞা' ক, খ; 'সাজাইরা' ছ। ৩। 'বাপিরা'
ছ; 'বাপদ' প-র-সা। ৪। 'ভার' ছ, প-র-সা।
৫। 'কিছরগণ' ক, খ, প-র-সা। ৬। 'বনি ভহি'
ছলে 'ধনী' খ। १। 'ভূহ' প-র-সা। ৮। 'হই'
গ র-সা।

चररे ।)

কপট দানের ছলে দান সিরজিয়া। ঘট পাতি বসিয়া রৈয়াছে বিনোদিয়া।

वड़ाई प्रिश्ना कटह वहन हां जुड़ी। कांत्र घटतत वधू देलता यां अरक कति॥ এ রূপ বৌধনে কোথা লৈয়া যাও বধু। না জানি অস্তবে উহার কত আছে মধু॥ স্থকোমল চরণ-ভলিমা শোভা অতি। এ বেশে বাহির করে কেমন বা পতি। বড়াই কহে এত কথা কিবা প্রয়োজন। (यथारन रमधारन रकन ना कति[®] गमन³॥ পর-বধু প্রশংসিয়া ভোমার কি কাজ। ঘনায়্যা॰ আসিছ কাছে নাহি বাস লাজ। ভোর পিতা নন্দ রায় পরম উদার। ভাহার ভনর হয়্যা হেন ব্যবহার ঃ এই পথ দিয়া মোরা যাই মপুরাতে। পথেতে বিরোধ কর কুল-বধৃ সাথে॥ চাঁভুরী না কর কানাই চতুর সিয়ান । কংস রাজা শুনিলে লইবে জাতি প্রাণ্ণ।

পাঠান্তর

115013076H

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৮৯৫ সংখ্যক পদ।
২। 'ভদিমা শোভা' হলে 'শোভা দেখিরে সে'
প-র-সা। ৩। 'করে' প-র-সা। ৪। অতঃপর প-র-সা
পুৰিতে নিয়লিখিত ভণিতার কলি যারা এই পদটি
সমাধ্য করা হইরাছে; ব্ধা,—

"ৰংশীৰদনে ৰোলে কি কাল ভোষার। আমরা ৰাইৰ গো-রদ বিকিবার॥"

খ, চ ও প-র-সা পুথিতে 'পর-বধু' ইত্যাদি বাকি
চরপ্তলি খতর পদরপে লিখিত হইরাছে। ৫।
'খনাঞা' ক, খ; 'খনাইরা' খ। ৬। 'হইরা' খ।
৭। 'পথের' ক, খ, চ, প-র-সা। ৮। 'নিরোধ'
চ। ৯। 'সেরান' ক, খ। ১০। অতঃপর প-র-সা
পুথিতে নির্নিথিত ত্রিতার কলিট গৃষ্ট হয়;
ব্ধা,—

"বংশীবদনে বোলে ছাড় টাটপনা। ভূমি মহাদানী ভোষার ঠাকুর কোন জনা॥"

. शिवान 13

কানাই কন্ত ফরকাহ চুল।

দানী হইয়া
তার ধরম গণ্ডার মূল
ভাবে মেন
ভাবে ধরম গণ্ডার মূল
ভাবে মেন
ভানিয়া বাদ্ধাহ
ভালে।
ভাহার উপরে শিখা-পাখ্যের পাখা
জড়ান বকুল-মালে
এ ভাড় ভোড়ল বল্লা বাঘর

ইংগে আছে বুঝি ভাড়া। নন্দরাজ ঘরে নবনা খাইয়া

> ৈয়াছ উমাদ যাঁড়া^দ ॥৮৪।১৩৮৬। পাঠাবন

১। ইহা প-র-সা পূথির ১৮১৬ সংখ্যক শল।
২। 'হৈয়া সে', ক। ৩। 'তার' ইত্যালি হলে 'তার
ধরম গণ্ডা মূল' ক; 'অব ধরম গণ্ডা মূল' প-র-সা।
৪। 'মেনে' ক, খ; 'বেন' প-র-সা। ৫। 'বাজিছ'
প-র-সা। ৩। 'পাথের পাথা' চ; 'পাথা দেখি'
প-র-সা। ৭। 'অডান' ইত্যাদি হলে 'অডান বকুল
ফুলে' ক, খ, চ; 'লবক মালতি মালে' প-র-সা।
৮। 'সাড়া' খ, চ; 'সাড়া' প-র-সা। অতঃপর
প-র-সা পূথিতে নিয়লিখিত ভণিতার কলিটি স্ট
হর, বথা,—

ৰশোণা বেমন ছ-করে বাহিতো স্থাণিতো তোমারে কেবা। কহে মনোহর কেমন বাটপাড় বাটপাড়ি নিধি বাবা॥"

वैश्रीत 15

দানী কৰে ফির ফিরং না শুনরে রাই। বাস্তু প্রায়িয়া দানী রাখল ভাইণ।

कट्ट किरत भगारत विषातिः (मिथ धर्षा। আগে বুঝি নিব দান পাছে কব কথা 🛚 যত অভরণ গায় বেশ ভূষা আছে। সব লেখা করি দান দেহ মোর কাছে॥ নিতি নিতি গভায়াত কর এই ঠাঞি। এ পথে মদন-রাজ কভু শুন নাই। কত ভক্তে কথা কহ ভয় নাহি বাস। রাজ-অনুগত জনে হেরি পুন হাস। কাহার গরবে যাহ দিয়া বাছ নাড়া। ভূষণ যৌবন ধন সব হবে হারা ॥ तः**नी कहर**ण यूचि अत्रोक्षक देहल। পৰে বাটোয়ারি করা নহিবেক ভাল।

1166176231

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুর্বির ১৮৯৭ সংখ্যক পদ। २। 'किति किति' क। ७। 'उषाई' প-র-সা। ८। 'विशादा' क, च। १। 'शाकू' च, छ। ७। 'ताक' क। ৭। 'শুনি' ক, খ, প-র-সা।৮। 'সারা' প-র-সা।

ख्यां मार्ग ।>

রাজা এথা থাকে কোথা কেবা সাথে দান। किया ठायूर किया नयूर (क्या क्राय बान । কুল-নারী হেরি হেরি ঠারে কও কথা। नत्य वूड़ी शट नड़ी घन नाटड़ माथा । এখনি বাইয়া কৰ° গোকুল সমাজ। **किथा या**रिय मान माथा किथा यारिय मान । কোথা পলাইয়া যাবে স্থবল রাখাল। তিলেকে ভালিয়া বাবে সব ঠাকুরাল ॥ ব্দত্তরে আমার বোলে হও সাবধান। কুলবড়ী দেখি আর না করিছ আন । वः नीवमरन करह दकवा श्वरन कथा। **এখনি দেখিয়া লবে বেবা থাকে বথা #**

পাঠান্তর

३। हेरा भ-त-मा भूषित ১৮৯৮ मःश्वाक भन्। २। 'ठांड' श-त-मा। ७। 'किवा नव' चरन 'रकवा लंब प; 'किया नात' थ; 'किया नाख' भ-ब-मा। 8। 'करव' च ; 'करछा' भ-व-मा।

वबाडी ।>

বান্ধিয়া চিকণ চূড়া বনফুল তাহে বেড়া গুঞা-মালা তাহে বন-সোণাই। গোঠে থাক খেনু রাখ আপনা নাহিক দেখ বড় হেন বাসহ আপনা ॥ व्याह कानांहे विषय भाहेशा देशा (खाताः। আঁখি মটকিয়া হাস আপনা কেমন বাস আন হেন নহিয়ে আমরা ৷ঞ্ গাল্পের গরবে ভূমি চলিতে না পার জানি রাজ-পথে কর পরিহাস। রাজ-ভয় নাহি মান কংস-দর্বার জান ্দেখি কেনে নহ এক পাশ 🛭 চহুরে চাহুরী কত আর কছ অবিরভ काठा॰ काकारनत्र नमान। खाननाम करह হিয়ায় ক্ষিয়া লছ

काला नटर कविष् भाषान ॥৮१॥১०৮३॥ পাঠান্তর

 रेश প-ब-मा श्रुबित ১৮৯৯ मश्बाक भवा। ২। 'বন-সোণা' হলে 'বলো সোনা' প-র-সা। ৩। 'रेहरन' क, थ, छ। ४। 'र्खाना' क, थ, इ, श-ब-मा। e। 'काँठा' क, च, ठ। ७। 'कनिवा' च. **इ : 'क्त्रिवा' भ-ब-मा। १। 'काँडा' क, ५, ५।** ৮। 'क्निष्ठि' व. ह।

काहिबाति ।>

ওহে কানাই এ বুদ্ধি শিখিলা কারং ঠাঞি। भरवन नम्ये (मधि সহনে ফিরাও আঁখি पष् कर्नात शांख दोक नारे ॥अ॥

আন্ধার-বরণ গা ভূমিতে না পড়ে পা कि शतरव घन घन शम। বনে বনে চডাও গাই আপনাকে চিহ্ন নাই হায় ছিছি লাজ নাহি বাস : পেঁচ রাখি পর ধড়া টেড়া করি বান্ধ চূড়া কাণে গোঁজ বনফুল ভাল। ডিগর লইয়া সাখী বনে ফির নানা ভাতি বেচাইবে ব্রজ রাজের পাল ॥ বনে মাছে ফলগুলা তাহা তুলি পর মালা গারে সদা রাকা মাটী মাখি। . এত° বেশ ভূষায় কিষা পরনারী ভুলাইবা वः नीमारमद मरन राष्ट्र माथी ।

11661170301

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৯০০ সংখ্যক পদ।
২। কাক থা ৩। দিড়' খ, প-র-সা। ৪। চরার'
খা ৫। চিন' প-র-সা। ৬। কুলগোলা' ঘ, চ। १।
'এ' খ। ৮। 'মনে দের' হুলে 'মনে দেখ' চ;

তথা রাগ।১

স্থাও দেখি শ্বৰল সখা কার ঘরের এ হটীং। कि खाग कतिन (इ দেখিতে দেখিতে মোরে ধেপা কৈলে এই বে॰ মায়াটি° ॥ধ্ৰা লোক জন অগোচরে পার চোর চুরি করে ধন কড়ি সব লয় ছরি। দেখিতে দেখিতে মোর এ বডি বিষম চোর ভমু মন সব কৈল চুরি। मात्रादिक (वर्ण धविद्राटिक মার্যাণ নর এই বে निम्हम त्म वार्षात्रात्री वर्षे । সাবধানে দেখ ভাইয়া বল-বাস যুচাইয়া कि कि थन देशन निक ए ।।

এত বলি গোপী-নাথ निटंड हाट्ड शास्त्र बांड চুম্বন করিতে বারে বার। উচিত কহিল ভোৱে দান দিয়া যাও মোরে নহে ত উতার অলম্বার । শুনিয়া ললিভা বলে वन मार्च नरह जारन রাজ-পথে এত কি জঞ্চাল। আপন নগর ঘরে यमि नाशि भारे ८७।८व তবে সে জানিয়ে ভালে ভাল**।** मानो करह स्माहाई व्याटक रेलग्रा यात त्राकात कारक তবে সে জানবা ভালে তুমি। वःशीवम्य क्य মোরে না করিহ ভয় বিরোধ ভালিয়া দিব আমি ৮৯॥১৩৯১॥

পাঠান্তর

)। देश প-त-ना श्वित >> > সংখ্যक शव।
२। 'किंकि' क, ह; 'हेंकि' थ, च। ७। '(म' च। ८।
'(सम्राक्ति' च; 'साहेमांकि' च। ৫। '(सम्रा' च। ७।
'(सम्राद्वि' च। १। 'चत्व' भ-त ना। ৮। 'ভাবি जान'
च, ह।

वानने ।>

শুন শুন নীলক শ্ কান।
কা সংক্রে মাগহ দান ।
সবে দধি স্থাতের পসার।
কাহে করহ অবিচার ।
সহজই সূর্ত সে অধীর।
ধর কুল-বধুগণ "-চীর ।
বাক্র-ভয় নাহিক ভোকার।
পথ মাহা এতছ বেভার ॥
গোপ গোপালগণ সক।
অহনিশি কৌতুক রক ।
তেঞি সাহস এত ভেল।
পরশহ কুলবভি-চেল ।

বিপরিত কর পরিহাস।
কহ রাধাবল্লভ দাস ॥৯০॥১৩৯২।
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুৰির ১৯০২ সংখ্যক পদ।
২। 'নিলক' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'বধুগ্র' ক। ৪।
'পোরালাগ্র' ক। ৫। 'ভেঞিড' প-র-সা। ৬।
'বিপরীড' ক।

'রাই-মূখ হেরি মূখরা কহে' ইত্যাদি গেয়ম্। পুনশ্চ দান-কেলি যথা।

शहर ।>

ত্রিভূবন-বিজই মদন মহারাজ।
বৈঠল বুন্দাবনে নিকুঞ্জক মাঝ ।
ব্যোরস আওতং রসবতি ঠামণ।
হজিল: বিপিন-পথে সরবস দান ॥
ভোহে কহোঁও গোপিনিও আয়ানেরং রাণি।
কেমনে জানিবা দানা সহজে আয়ানি ॥
ভূছাঁ গজ-গামিনি হরি জিনি মাঝ।
নব বৌবন-মদে নাহি দেহ রাজ ॥
মোহেংও গিরিধর বলি সোঁপল কাজ।
ভাপনে আপন কথা কহিতেহ লাজ ॥
কেবল গোরস-দানে কেনে দেহ ভজ।
বিচারেংও চাহিরে দান প্রতি অক্তে অস্ত ॥
এ সব দানের কথা জানয়ে বড়াই।
গোবিন্দদাস কহংও চপল কানাই ॥

1060(1661

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৯ ৩ ও প-র পুৰির ২৮।২ সংখ্যক পদ। ২। 'আওল' ক। ৩। 'ঠান' প-র-সা ৪। 'পুজিল' প-র-সা। ৫। 'কহ' ক; 'ক্হে'ব; 'ক্হঙ' প-র-সা। ৩। 'আলো রাখে'

প-র। १। 'রারাণের' ছ। ৮। 'জানিবা দান' ছলে 'জানিবে জুমি' প-র। ৯। 'জুছ' ইত্যাদি ছলে 'এ পজগামিনি ধনি' প-র। ১০। 'মোরে' প-র; 'তোহে' জ। ১১। 'বিচারি' চ, প-র-সা। ১২। 'কছে' জ।

ভাটিরারি।১

माधव छूदार कत खेला नगान । সোই চাতুরিপনা कग मांश कांनिए যোই রাখয়ে নিজ মান । ধ্রা হাসি হাসি নিয়তে আসিছ অবলা হেরি॰ ভাল নহে• তোহারি । বেভার । লোক-লাজ ভয় এক বা মানসি ७ ॰ क्ला करम छुववांव ॥ নহোঁ প কুলটা হাম বর-কুল-কামিনি নিকটে ভাত-ঘর মোর। তুহুঁ বন-চারি তোর মতি চঞ্চল তাহে>ঃ সাহস এত তোর 🛭 শ্রুতি-সম্ভব> নহ ইহ স্ব কুবচন (वं भव कहिन मजू जार्ग। खानमान कह এছে কছসি কাছে>৮ আওলি নৰ অনুরাগেণ ১৯২৪১৩১৪৪ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুলির ১৯০৪ ও প-র পুলির
২৮।১৬ সংখ্যক পদ। ২। 'দুরে' ক। ৩। 'উলট নরান'
হলে 'না কর বরান' প-র। ৪। 'অবলা' প-র।
৫। 'আসিছ' ইত্যাদি হলে 'নিরড়ে ডুছ্ আওসি'
প-র। ৬। 'নহ' খ, চ। ৭। 'তোহার' খ, চ। ৮।
'তোহারি বেভার' হলে 'ইহ ব্যবহার' প-র। ৯।
'একই' প-র। ১০। 'উ' খ। ১১। 'কুলে' ক।
১২। 'দরবার' প-র-সা। ১৩। 'নহ' ক। ১৪।
'কি দেখি' প-র। ১৫। 'স্বর' ক। ১৮। 'বাং

ইত্যাদি ছলে 'এত সে না বোলহ' পর। ১৯। 'আওলি' ইত্যাদি ছলে 'ধনি কাফু ধনি অফুরাগে' প-র।

পঠমন্ত্রী 1১

নিতি নিতি যাও বাই মথুৱা নগরে।

ত্মত দধি তথে ঘোলে সাজাঞা পদারে।

আমি পথে মহাদানী বিদিত সংসাবে।

কার বোলে কোন ছলে যাও অবিচারে॥

দেহ মহাদান রাই বসিয়া নি : টে।

এক পণ অধিক কাহণ প্রতি ঘটে ॥

চির দিন আছে দান সমুখে আসাড়ি ।

অকে বন্ত-মূল ধন আর না : শাড়া॥

সেঁথার সিন্দুর দান কহনে না যায়।

নয়ানে কাজল-রেখে ধরণী বিকায়॥

কি বসিবে বল রাই না সতে বেয়াজ।

ভুমি ধনী আমি দানী ইথে কিবা লাজ॥

স্বিত চাহনি হাসি আধ আধ ক্থা।

ভ্যানদাস কহে দানী বিধ্য বিধাতা । ॥

1106:51:50

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-দা পুণির ১৯০২ ও পার পুণির
২৮।১৭ সংখ্যক পদ। 'পঠমঞ্জরী' স্থলে 'জীরাগ' পর।
২। 'ঘাহ' পর। ৩। 'এর্ম' ক; 'দ্ধ' ঘ। ৪;
'থালে' খ। ৫। 'দাকার্য়' চ। ৬। 'কর' ক, খ।
৭। 'ঘাটে' ঘ, প-র-সা, পর। ৮। 'চির দিন
আছে' ইত্যাদি হলে 'স্মুথে আচরে' ইত্যাদি
ক, খ, ঘ, চ। ৯। 'আবে' পর। ১০। 'বিষম
বিধাতা' হলে 'বাদ্ধ প্রমলতা' প-র।

निक1

৭—৮। "চির দিন" ইত্যাদি। দান অর্থাৎ শুল্ক প্রহণ করিতে হটলে ভিনটি জিনিস থাকা আবশ্রক,—(১) দানের প্রথা, (২) দান-প্রহণ-

কারীর সামর্থা, (৩ দান গ্রছণের উপযুক্ত জবা। এ স্থলে ঐ তিনটি জিনিদের কোনটির অভাব নাই— ইছা দেবাইবার জন্ত শ্রীক্ষণ বলিতেছেন,—চির দিন দান অর্থাৎ দানের নিয়ম আছে; সমুশে আযায়ী অর্থাৎ দণ্ডবারী রহিয়াছেন; ভার পরে শীরাধার অজে দানের উপযুক্ত বহু-মূল্য আলম্বার ও বস্ব র্তিয়াছে; প্রতরাং এ স্থলে দান ন: দেওয়ার কোনই কারণ নাই। ['পালাশো দণ্ড আয়াঢ়ঃ'; অমর-কোষ; 'অপাজিলায়াচ্ধর: প্রসন্তবাক্' কুমার-সম্ভব। একাসারার বৃত পলাশ-দ**ও হহতেই বোধ** হয় 'আবঢ়' (অপভংশে আগাড় ; শক্ষের সাধারণ দও ও 'আ্ব'ঢ়া', অপ্রংশে 'অ'্নাড়ি') শক্ষের সাধারণ प्रथानो वर्ग आमिशास्त्र। श्रीकृषा (बाद हम র্মাপকতা করিয়ার ।নজের হস্ত-স্থিত গো-চারণের যৃষ্টি অপুৰা বংশাটিকেই মণ্ড বলিয়া করিয়াছেন]।

▲ 경기 :

গণ ছাড় গতে কানাই কিবা বল কর।

যার বাহাব নতে না পাছিং তার করে ধর।

গোনি মরন হউ এ ছিলং কপালে।

ব্যভাব-শুভা-ভকু ছুইলে রাখালে॥

একে শে হোমাবে ভা । বাদেশ কংসাজর।

এ বোল শুনলে হৈবেদ দেশ হৈতে দ্র।

কে ভোমাবে বিষয় দিলে ফেল দেখিশ পাটা।

ভূমিও নুহন দানা আমরা নহি টুটাশ ॥

থাকিবা খাইবাস ঘদি যমুনার পানা।

গোপীগণে না রাখিহ ল ইউও দানীশং॥

1>811৩৯৬।

পাঠান্তর

১। ইতা প-র-সা পৃথিব ১৯০৬ ও প-র পৃথির ২৮/২ঃ সংব্যক পদ। 'শ্রীরাগ' ক্লে 'দিকুড়া' প-র। ২ । 'নিতে না পাণ্ড' ক্লে 'সইতে নার' প-র-সা। ৩। 'হাত' প-র-সা। ৪। 'হউক' প-র-সা।
৫। 'হার' প-র। ৬। 'ছুইবে' প-র-সা। १। 'না
বাসে' ক, খ। ৮। 'হুইবে' খ, চ। ৯। 'রাজ' প-র।
১০। 'তুমিও' ইত্যাদি হলে 'তুমি সে বড়ার পো আমি
কিলে টুটা' প-র। ১১। 'থাকিবে থাইরা' প-র। ১২।
'না ছুইও গোপিকার অল না হইও দানী' প-র-সা;
'গোপীগৰে না খাটাহ পর্থে হ্ঞা দানী' প-র।

পঠমঞ্জরী।১

जिल्हा ना याहेर उज़ारे धित ट्लामांत शाय ।
कि लागि नटम्पत्र ट्ला॰ धित्रा त्रश्य ॥
चरत्रत्र वाहिरतः टेकला॰ विलया क्रिया ।
जानिया ताथाटलत हाटल किला ट्य ट्लांशिया॰ ॥
जानिया ताथाटलत हाटल किला ट्य ट्लांशिया॰ ॥
जानिया ताथाटलत छोटल किला नाहि शांटि॰ ।
ट्लायाला हरेया मानी मान मार्थ बाटले ॥
जानिया ट्लायाला हरेया मानी मान मार्थ वाटले ॥
जानी टेह्या टकवा गेटन जाटलत वमन ॥
जानी टेह्या टकवा गेटन जाटल काटला ॥
वाली वाटल मान मानी जाटल गिज़रेया ॥
मानी नटह नैम्मळूल जाटल मांज़रेया ॥

116000011

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯০৭ ও প-র পুথির
১৮/১৯ সংখ্যক পদ। ২। 'বালা' প-র। ৩।
'রহর' প-র-সা। ৪। 'বাহির' প-র। ৫। 'কৈলা
মোরে' পর। ৬। 'আনিরা দানীর হাতে দিরা
মাও ছাড়িরা' প-র। ৭। 'এ দেশে' ইত্যাদি বাকি
চরপ্থলি পেবল প-র-সা পুথিতে আছে।

क्शनो ।)

হেম-ঘট পাইয়া পাথারে। চোরার মন সাত পাঁচ করে। তুমি ইহারং পুছহ বড়াই।

কিবা ধন মাগরে কানাই ।

মাকচের হাথে নারিকল ।

খাইত্যে সাধ ভান্সিতে নাহি বল ।

তুমি কি না জান বনমালি।

রাখালে কি ভজে চন্দাবলি।

সাপের মাধা(য়) মণি জ্লে ।

বড় কহে বাশুলির বলে ॥৯৬।১৩৯৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপ্থির ১৯-৮।১৯১১ ও প-র পথির ২৮।২১ সংখ্যক পদ। 'স্থিনী' স্থলে 'বরাড়ী' প-র। ২। 'উহায়' প-র-সা; 'দেখি' প-র। ৩। 'মাকেনে' প-র। ৩। 'মাকড়ের' ইত্যাদি কলিটি কেবল প-র পথিতে আছে। ৫। 'ভেটে' প-র। ৮। 'সাপের' ইত্যাদি ভণিতার কলিট শ্রীমৃক্ত শিবরতন মিত্র মহাশয় একখানা প্রাচীন পৃথিতে প্রাপ্ত হইয়াছেন। 'চণ্ডীদাসের পদাবশী'—বলীয়ন্মাহিত্য-পরিষদের সংস্করণ, পরিশিষ্ট। পৃঠা জেইবা।

টাক1

e-- । "নাকড়ের" ইত্যাদি। মাকড়ের অর্থাৎ
মর্কটের হাতে নারিকেল (বে প্রকার),—(মর্কটের)
থাইতে সাধ হয়, কিন্তু (নারিকেল) ভালিতে বলে
কুলার না (শ্রীক্রাঞ্চর শ্রীরাধাকে পাওয়ার বাশা
সেইরূপ অসম্ভব।)

শ-৮। "তৃমি" ইত্যাদি। ছে বনমালী। তৃমি কি কান না ? চন্দাবলি অর্থাৎ চন্দাবলিনারী ত্রীরাধা কি রাধানকে ভল্কনা করে ? ত্রীযুক্ত শিবরতন বাবুব প্রাপ্ত

'নিসেদ (?) নীলক বনমালি।
বাধানে কি ভেটে চন্দ্ৰাবলি॥'
পাঠের 'নিসেদ' ও 'বাধানে' শব্দ ছুইটি বে 'নিবেধ'
ও 'রাধালে' শব্দের স্থলে অওম পাঠ, তাহা সহবেই
বুঝা বার। বুলীর-সাহিত্য-পরিবদের প্রকাশিত

চণ্ডীদাসের 'প্রীক্ষকণীর্জন' গ্রন্থে 'চন্ডাবলি' শক্ষ কেবল প্রীরাধারই নামান্তরক্ষণে অনেক হলে ব্যব-হত হইরাছে এবং ঐ গ্রন্থে 'মর্কট' বা 'বানর' অর্থে অপভ্রংশ 'মাকড়' শব্দেরও কয়েকটি প্রয়োগ আছে। 'মাকড়' শব্দের এইরূপ প্রয়োগ চণ্ডীদাসের পরবর্ত্তা বালালা সাহিত্যে পাইয়াছি বলিয়া ত্মরণ হয় না। 'হেম্বট' ইণ্ড্যাদি পদটি প্রীরাধার স্থীর উক্তি; এ হলে চন্দ্রাবলিনামা প্রতিপক্ষ-নাম্নিকার কোন প্রসন্ধই নাই; স্থতরাং উল্লিখিত নানা কারণেই আমরা এই পদের 'চন্দ্রাবলি' শব্দের প্রতিপান্ধ প্রারাধা ও প্রটি বড়ু চণ্ডীদাসের রচিত বলিয়া সিজান্ধ ক্রিতে বাধ্য হইয়াছি।

পঠমঞ্জী ।>

আজি কেনে নাহি বাজাও বাঁণী।
অপাত্ম-ইপ্লিড ইষত হাসি॥
কিবা ভরসায় আইস কাছে।
না জানি মরমে কি ভাব আছে॥
পসরাং ছুইতে করহ সাধ।
বরাকের দানী সোণায় সাধ॥
মুখের হুখেতে কহিতেও চাও।
বিপরীত ইথে করিলে পাও॥
কালা হৈয়া এত রসের ভোরা।
খঞ্জন কমলে দেখিলা পারা॥
কি গুণ দেখাঞাও সঘনে চাও।
ছাতে কি চান্দের পরশ পাও॥
জ্ঞানদাস কহে পোণ-বিয়ারি।
বলিতে পারিলে এত কিং বলিং ১৭॥১৩১৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯১৪ সংথকে পদ। ২। 'পদার' ক, খ। ৩। 'কইতে' ক, খ, প-র-সা। ৪। 'গুণ দেখিয়া' খ; 'গুণেতে তুমি' প-র-সা। ৫। 'কি এডেক' ক, প-র-সা।

টাকা

৯—১০। "কালা" ইত্যাদি। তুমি কৃষ্ণকার হইয়া এক্রপ রসে বিভোব, (ইহা বড়ই বিচিত্র); বোধ হয় যেন, তুমি পল্মের মাঝে ধঞ্জন-পক্ষী দেখিনরাছ! (পল্মের মাঝে ধঞ্জন-পক্ষী দৃষ্ট হুইলে শাক্ষন-শাক্ষ অনুসারে দর্শকের বিশেব সৌকাগ্য স্থাচিত করে।) তুলনা কক্ষন,—

'একো হি ধন্ধনবরো নলিনীদলম্বো দুইঃ করোতি চতুরস্বলাধিপত্যম্ ।'

— শুলার-ভিলক।
স্থীর উক্তির অপর গুচু অর্থ ইছাও বটে বে, জুলি
বোধ হয়, এরাধার বদন-ক্ষলে ধ্রনের ভার চঞ্চল
নয়ন-ভলী দেধিয়াছ; তাই এরপ রূপে বিজ্ঞার
ইয়া পড়িয়াছ!

अवात 15

সংজই তমু তিরিভঙ্গ।

এমন ইইয়া এত রঙ্গ ॥

যবেং তুমি স্কলর ইইতা ।

তবে নাকি কাহারে পুইতা ॥

আপনা চতুর হেন বাস।

কি দেখিয়া কি বুকিয়া হাস॥

চাহিতে সঘনে আঁখি চাপ।

পর-নারা দেখিয়া না কাপ ॥

বে দেখি মরমে এই ভাব ।

তেতি বে বাতাসে রসে ভ্রম্॥

ভাননাস কহে শুন আমা ।

ভাবনা না ভাব অমুপাম ।

ভাবনা না ভাব অমুপাম ।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯১৫ ও প-র পুথির ২৮১২০ সংখ্যক পদ। ২। 'বছি' প-র। ৩। 'হইতে' প-র। ৪। 'ধুইতে'। অতঃপর প-র পুথিতে নির্নিধিত অভিনিক্ত ক্লিটি টুই হয়, বথা—

'পরশে ভোমার ঝুর্যা মরি। তেঞি দে তোমারে ভাল বলি॥' (দিখি খন' প-র। ৬। 'ভাবো' প-র-সা। ১৪। 'কমা' ক; 'কেমা' প-র-সা। १। 'वाकाम' क. श-द। ४। 'पुरवा' श-द-मा। ৯। 'রাই' প-র। ১•। 'কহিতে জানিলে এত कहें भन्द ।

ष्य श्रीकृरक्षां जिः।

यानचे ।>

कि लागिशार व्याह्मा पुत (पर्म। তোমার সহজ রূপ কাম হেরি কান্দে হে खूरन जूलल ७ ना (राज ॥ ध्रम **षाइम देवम॰ द्यांत्र कार्ट्ड द्रबीर प्र॰ मिलाउ পार्ट्ड** বদনে করিয়ে মন্দ বায়¹। এ চুখাত্রি রাজা পায় কেমনে হাঁটিছা তায় দেখিয়া হালিছে মোর গায়॥ কেমন তোমার ওক্তন

कि मार्थ माधिलभ धन কেনে বিকে পাঠাইল ভোমা। ভোর নিঞ্চ পতি যে কেমনে বাচিবে স পাঠাইয়া ত চিতে দিয়া খেমা ত হাসি হাসি মোড় মুখ বসনে ঝাঁপিছ বুক (पश्चित्रा इहेन् वफ प्रशी। कानमात्मात्क कम्र श्रमात्री (य अन इस

রসাল বচনে করে বিকি ॥৯৯॥১৪০১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯১৬ ও প-র পুথির र। 'नानि' भ-ता । '(ना' भ-ता ह। 'कुनिन' प, ह। ६। 'योगु क्योगु' १-द्र। ७। 'देवनक' क। १। 'बिरत छात्र' श-ब-ना। ৮। 'হাটিছ'ব; 'হাটিবে' প-র। ৯। 'কেমনে' প-র। ২৮/২৬ সংখ্যক পদ। ২। 'পর্য' প-র-সা;

১০। 'তোর' প্রে। ১১। 'সাধিব' প্রে। ১২। 'বাচয়ে' পর। ১৩। 'পাঠাইল' প-র।

धानभी ।>

विद्यापिन त्या वर्ष छेनात्र नानी। সকল ছাডিয়া দানী হইয়াছি ভোমার মহিমা শুনি ॥ধ্রু॥ অঞ্নে রঞ্জিত খঞ্জ-নয়ন ভাহে কটাক্ষের বাণ। নাসিকা উপরে অমূল্য মুকুতা উহার অধিক দান। অলকা উপরে কুটিল কবরী **७**टि ठम्मानत (देश)। পরশ্ব-দাপনিত क्रिनि ग्रथशनि (क करत मार्नित (लभा II পীন পয়োধর স্থমেরু-শিখর তাহে মুকুতার হারে।' রতন অধিক যতন করিয়া कि धन टेलग्रोड " टकाटन ॥ -চরণ উপরে কনক-নৃপুর চলিতে করয়ে ধ্বনি। করি আগুসার রুসের পদার প্রবোধ করহ দানী ॥ বংশীবদান करल यज्य अनह ब्राकाव वि। উচিত কহিতে সনে সন্দ ভাব जाँदल वाँशिला कि ॥> • ॥> 8 • २॥ পাঠান্তর ১। हेहा भ-त्र-मा भूषित ১৯১१, भ-त्र भूषित 'পরেদ' প-র। ৩। 'দর্পনি' च; 'দাপিনি' প-র। কেবল প-র পুথিতে আছে; তৎপরিবর্ত্তে প-র-সা ৪। 'নিজ' ক, ধা ধা 'কেডন' পর-সা। ७। 'कि धन' हेजामि भ-त्र ऋल 'अ धन लेगा बाउ'क, थ, घ; 'सन नहेबा' हेलामि श-त्र-प्रा। १। 'क्ट्रिंग' भ-त्र-मा। ৮। 'वाम' भ-त्र।

ভগা ঝাগ ৷ ১

ट्टाफ टमा विरामिति ध शर्थ किम्राउर যাবে ভূমি। गीउम कमय-उत्म বৈসহ আমার খোলে সকলি কিনিয়া নিবং আমি "প্রা ্ৰাভিল পথের ধূলা এ ভরু তুপর বেলা ক্যল জিনিয়া পদ ভোৱি। রোজে খামিয়াছে মুখ দেখি লাগে বড় ছুখ শ্রম-ভরে আউলাইলা কবরা ৷ গোঙারের ভয় গণে অমূল্য রতন সাথে লাগি পাইলে লইবে কাড়িয়া"। এই পথে মহাদানা তোমার লাগিয়া আমি তিল-আধ না যাও । চাড়িয়া॥ মধুরা অনেক পথ ভেজ অতা মনোরপ'' भात्र कार्ट्स देवम विद्याक्षिन । এই সে উ'চড ঽয় यः भी यम्दन क्य শ্রাম সঙ্গে কর বিকিকিনি ॥১০১॥১৪০৩॥ পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৯১৮ ও প-র পুথির ২৮।২৭ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' স্থলে 'প্রীরাগ' প-র। ২। 'কেন্নে' ক, ধ, প-র-সা, প-র। ৩। 'লব' প-র। ৪। 'ভরি' প-র। ৫। 'ছফর'। (त्या' न-त्र। १। 'कानगहेन' १; 'अन्-क्रांगा' ह, भ-ता हा '(जीवादबद' था ना 'कांक्तिश' च, श-त । >०। 'मिंड' श-द-ना ; 'वां€' প-র। ১১। 'মধুরা' ইত্যাদি ভণিতার কণিটি

পুথিতে নিম্নিখিত পাঠ দৃষ্ট হয়, যথা---'শুনিয়া কামুর বানা সদয়ে হরি**ষ ধ**নী প্রেমভরে গ্রণর মঞ্চ। বংশাবদনে বোলে বৈদ ধনি ওক্সুলে 'ইবাটো করহ কাত্র-সঙ্গা।'

कश्रण वश्राको ।>

মোছন বিজন্ধ থনে দুরে গেল স্থীগণে একলাও রহিলা ধনা রাই। তুটি আঁখি চল ছলে চংগ-কমল-ডলে কানু আসি পড়ল লোটাই। জন্ম স্ফুর জেল মোরগা তোমা হেন গুণ-নিধি তথে আনি দিলা বিধি আনন্দেব কি কৰিব ওর' ॥ধ্রা। রবির কিরণ পাণছে । চান্দ-মুখ ঘামিয়াছে সুখর মঞ্চার ও ছটি পায় ১ । হিয়ার উপক্ষেধি, জুড়াও সংসেমোর আৰি ১ চন্দন চচিচত কবি সায় ১৪ ৰ এতেক মিনতি করি - রাইয়ের সরেতে ধরি ১৫ বসায়ল নিজ পীতবাদে। নিৰ্জ্জন নিকুঞ্জ বনে মিলল দোঁহার সনে मत्न मत्न शत्म वश्नीतितम ॥>०२॥>००॥

পাঠাগুর

১। ইহা পার-সা পুলির ১৯২০ ও পার পুলির ২৮।১০ সংখ্যক পদ। 'কঙ্গণ বরাড়া' হলে 'ধান 🚉' প-র। २। 'বিজই' প-রসা; 'निकूक' প-র। ७। 'এक नि' প-त्र। ४। '६न ह्वन' भ-त्र। **६।** 'उन' १-त । ७। 'बनम' हे छानि ऋत्न 'वित्नाविनि জনম' ইত্যাদি প-র। ৭। 'মিলারল' প-র-সা। ৮। 'আফুকার হথের নাহি ৬র' প-র-সা। ১। 'কিরণে তোমার' প-র। ১০। 'হুবের মঞ্জরি' প-ता ১১। 'পा' भ-ता ">२। 'क्षांक्' भ-ता ১৩। 'চাক্ষমুথি' প-র। ১৪। 'গা' প-র। 'রবির কিরণ' ইত্যাদি কলিটির হলে প-র-সা পুথির পাঠ, বথা— 'পাতিরা বসনথানি আইস বৈস বিনোদিনি হুথের মঞ্জরি ছটি পা। রবির কিরণে পাছে চাক্ষ-মুখ বামিরাছে চক্ষন-চর্চিত করি গা॥' ১৫। 'এডেক বিনতি' ইত্যাদি ভণিতার কলিটি ক্ষেবল প-র-সা পুথিতেই আছে।

478 I

রাধানাধব নীপ-মূলে।
কেলি-কলা রস-দান ছলে॥
ছুহুঁ ছোই। দরশই নয়ন-বিভল।
পুলকে পুরল ওতু জরজর অল।
ছুরে গেল স্থিগণ সহিতে বড়াই।
নিজ্ত নীপ-মূলে পুঠই রাই॥
দোহেঁ দোহাঁ ধ্রেইতে গুহুঁ ভেল ভোর।
চাল্দ মিলল জন্ম শুবধ চকোর॥
ছুহুঁ জন হৃদয়ে মদন প্রকাশ।
স্থিগণ ছেরি ছুরে বাঢ়ল উল্লাস ।> ০॥১৪০৫॥
পাঠারর

)। 'शृतन' का २। 'पूरत' का ७। 'यूरन' का डा 'जूडेरे' क; 'जूडेरत' च, छ। ४। 'इड्' क, चा ७। 'पूरत' का

बद्राड़ी ।>

বিনোদিনি মুঞি বড় উদার দানী।
সকল ছাড়িয়া বিষয় লৈয়াছি
ডোমার সহিমা শুনি ।
তেমার সহিমা শুনি ।
বেম-বরণ মণি-অভরণ
সদাই নরনে দেখি।
পাসরিতে মারি শার্ষা ভরি
পাস্টিতে শীরি শাঁধি ।

ভূমি সে পরাণ সরবস ধন

এ ছই নয়ানের ভারা।

এভ কলাবতা গোকুলে বসভি
কারো নহে হেন ধারা ॥

কি জানি কি গুণে হিয়ার মাঝারে
পশিয়া করহ বাস।

অপরপ নহে এমতিং সহজে
কহয়েং বংশীদাস ॥১০৪॥১৪০৬॥

পাঠান্তৰ

)। देश भ-त-मा भूषित २०२० मःथाक श्री । २। 'कक्ति'क, थ। ७। 'यम्छ' क, थ। ८। 'कक्त्य थ' थ।

थामणी ।>

এনাং ছান্দে কে না বান্ধে চুল।

চূড়ায় মজালাে) জাতি কুল।

কেবা নাহি পরে বন-মালা।

মালার এতেক কেন জালা।

পোন কান্দে এট রূপ দেখিয়া।

কেবা নাই এতেক জানে কলা।

যাহা দেখি ভূলল ভালা লা

কেবা নাহি কহে কথা খানি।

চাঁদ-মুখে সুখা খনে জানি ।

কেবা নাহি খরে রূপ কালা।

তোমার ২২ রূপে ত্রিভূবন ২০ জালা।

তোমার বনে মনে নাহি লয়।

জ্ঞানদাস কছে ভাল হয় ২৪ ॥১০৫॥১৪০৭॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুৰির ১৯২২ ও প-র পুৰির ১৪৷১৪১ সংব্যক পদ। ২। 'এড' ক, ব। ৩। 'চুড়ার মজিল' প-র; 'ডোমার চুড়ার মজাইংল' ব। তোমার' ইত্যাদি পাঠে ছলঃ-পতন ঘটে। ৪। অতঃ-পর প-র পুথিতে নিম্বলিথিত কলিটি দৃষ্ট হর, যথা— এই ত চল্লনের ফোটা কেবা নাহি পরে। কপাল-শুণে ঝলমল করে ॥'

ে। 'মালার' ইত্যাদি স্থলে 'ডোমার মালার সে

এতেক' ইত্যাদি ক, থ; 'ডোমার মালার এতেক'

ইত্যাদি ম, চ; 'ডোমার মালা এত কৈল আলা'
প-র-লা। ৬। 'কেনে থাক' প-র-লা, প-র।
৭। 'অভেজা' থ। ৮। 'বে' ক। ৯। 'বা'
প-র। ১০। 'ভ্লেরে' প-র। ১১। 'চাঁদ-মুখে'

ইত্যাদি প-র স্থলে 'ডোমার চাল্লমুখে স্থা থলে
আনি' ক; 'ডোমার চাল্লমুখে স্থা আনি' থ;
'ডোমার চাল্লমুখে স্থা হেন আনি' য; 'ডোমার
চাল্লমুখের স্থা আনি' প-র-লা। ১২। 'ভ্রা'
প-র। ১০। 'সে ভ্বন কৈল' ক, থ, ঘ, চ;
'ভ্বন কৈলে' প-র-লা। ১২। 'আনন্দান' ইত্যাদি
স্থলে 'জ্ঞান কহে এই ভাল হয়' প-র।

जूभागो ।>

হাথক ব দরপণ মাথক ফূল।
নয়নক অঞ্চন মুখক তাম্বুল ॥
স্থান্যক মুগ-মদ গীমক হার।
দেহকত সরবস গেহক সার ॥
পাখিক পাখ মীনক পানি।
জীবক জীবন হাম ঐছে জানি ॥
ভুছ কৈছে মাধব কহ তুত্ মোয়।
বিভাগতি কহ তুত্ দোহাঁ হোয় ॥

1108 CII 20 CI

ইত্যাদি গোষ্ঠবিহারাদি-দানলীলা। তৃতীর-শাখায়াং পঞ্চবিংশতি-পল্লবঃ।

পঠিস্থির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯১০ ও প-র পুথির ১৪|১৪২ সংখ্যক পদ। 'ভুগানী' খনে 'ধানঞী'

প-র। ২। 'হাডক' ক, চ, প-র-সা; 'হাথকি' প-র। ০। 'বেহকি' প-র। ৪। প-র পুথিতে 'বিভাপতি কহ' ইডগদি পংক্তিটি নাই; উৎার স্থান ফাক রাথা হইলাছে।

> অথ নোকা-বিলাস। ভচ্চতিত শ্রীমহাপ্রভু।

> > षुष्ठी ।>

না জানিয়ে গোরাচাঁদের কোন ভাব মনে।

হুরধুনী-ভীরে গেলা সহচর সনে ॥

প্রিয় গদাধর আদি সজে ত করিয়া।

নৌকায় চড়িলা গৌর প্রেমানেশ হৈরা॥
আপনেই কান্ডারী হৈয়া বায় নৌকাধানি।,
ভূবিল ভূবিল বলি সিঞ্চে সভে পানি॥
পারিষদগণ সবে হরি হরি বোলে।
পুরব সোঞ্জি কেনো ভাসে প্রেম-জলে॥
গদাধর-মুখ হেরি মৃত্ মৃত্ হাসে।
বাস্থদেব ঘোষে কহে মনের উল্লাসেণ॥

12178091

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুৰির ১৯২৫ সংখ্যক পদ।
 ২। 'আপিনি' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'বছে'
 প-র-সা। ৪। 'ছরিবে' প-র-সা।

वहात ।>

সবহঁ ং স্থীগণ চলু ঘর মাই।
নব নব রঙ্গিণি রস্বজি রাই।
মানস-ফুরধুনি ছ কুল পাথার।
কৈছনে সহচরি হোয়ব পার।
প্রারুট সময়ে গরজে ঘন ঘোর।
ধর্জর প্রন বহুই ভহিঁ জোর।

ছুর্ছিং নেহারত নাগর শ্রাম।

তরণী লেই মিলল সোই ঠাম।

হাসি হাসি কহরে নাবিকবর কান।

চঢ়ং সভে পার উতারব হাম।

শুনি স্বদনি ধনি হর্মিছ ভেলিং।

চঢ়লং তরণি পর সহচরি মেলিং।

নৌহুন নাবিক কছু নাহি জানং।

বৈগতে তরণি ভেরি ভেল তরাস।

সিঞ্যে পানি করেংই জ্ঞানগাস হয়১৪১০ট

১। ইংগ প-র-মা পুথির ১৯২৬ সংখ্যক পদ।
২। 'সকল' ক, খ, প-র-মা । ৩। 'জুকুল' ক;
'দো কুল' পর মা। ১। 'দ্বহি' ক । ৫। 'চড়'
ক, প-র-মা । ৩। 'ভেল' ক, ঘ, চ, প-র-মা।
। 'চড়ল' ক, প-র-মা । ৮ ৷ 'মেল' ক, ঘ, চ ।
১ ৷ 'জানে' থ ৷ ১০ ৷ 'পমানে' থ ৷ ১১ ৷
'টুটিল' ক; 'টুট' খ, চ, প-র-মা ৷ ১২ ৷ 'মিঞ্জে'
ইত্যানি স্থলে 'সিঞ্জে পানি করি' ক; 'সিঞ্জে
পানি করি' ব, চ; 'সিঞ্জে পানি করে' প-র-মা ৷

পাঠায়র

काहिशांति ।) মানস-গগার জল খন কৰে কল কল তু কুলং বাহিয়া যায় চেউ। গগনে উঠিল মেঘ প্রনে বাঢ়িল্ল বেগ তরণি রাখিতে নাহি কেউ। দ্বেখ স্থি নবান কাভারী শ্যামরায়। কখন না জানে কান বাহিবার সন্ধান জানিয়া চঢ়িলুঁ। বেনে নায় ॥ খ।। নায়্যারং নাহিক ভয় হাসিয়া কথাটি কয় कृषिल नशांत्न हांग्र॰ त्यादत । ভয়েত কাঁ পছে দে ্ এ জালা সহিবে কে काछाती यतिया करत ८काटत ।

অকাজে দিবস গেল নোকা নাছি পার ছৈল
পরাণ হইল পরমাদ।
জ্ঞানদাস কহে সধি থির হৈয়া থাক দেখি
এখন না ভাবিহ বিষাদ ॥৩॥১৪১১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯>**৭ সংখ্যক পদ।** ২। 'দোক্স' প-র-সা। ৩। 'পাড়িল' **খ। ৪।** 'উঠিহ' চ। ৫। 'নেয়ার' চ। **৬। 'চাহে'** ক, ২, ণ-র-সা। ৭। 'তুমি' প-র-সা।

এবাগ 15

যৰ লক্ত লক্ত গ্ৰি মরমে মরমেং পশি नार्य छ्हायल ७३०। তৈখনে মঝু মন ভেলহি অন্চনঃ বেকত ধয়ল ফল সোই।। এ স্বি হরি স্ত্রে মানহ কুঞ্জ-বিনোদ। ইহ নাবিক অভি চঞ্চল চপল-মভিদ অা যেন্ত তেন্ত পরবোধ ॥ধ্রণা গুগনহি সঘন বিজুরি খন ঝলকই দিনহি ভেল আন্ধিয়ার। ভরণি ঘন স্বরভঃ• খরভর প্রনে পৈঠত জল অনিবার 1 চুরজন জানি পড়ল জিউ সহটে इर्थ क्रिनिंग्न कत्रह विठात । তুথা ইপ্লিতে অবং২ সব সথি জীবউ^{১৩} (शाविन्त्रताम कर मात्र ॥८॥ ३॥ ३॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৯২৮ ও প-র পৃথির ২৯৮ সংধাক পদ। 'শ্রীরাগ' ছলে 'কামোদ' প-র। ২। 'রহল' ক। ৩। 'এই' চ, প-র-সা; 'ডোঘ' পার। ৪ 'আন ছল' ক, পার; 'আছন' পার-সা। ধা বারে পার। ৬। 'ক্ফরি' পার। ধা মানই' প-র-সা। ৮। 'চপল চরিত মতি' প-র। ১। 'ঝন ২। 'আশ' ঘ, প-র-সা। ৩। 'গৌরব' প-র-সা। यन करु भन्ता ३०। 'घृबरु' क, 5, भ द-मा, भ-व । >> । 'कानि' भ-व-मा। >२ । 'बाक्' भ-व। ১৩। 'बोवड' क ; 'बिडे' भ-त-मा; 'बिवरे' भ-द।

महात्र १३

কহ সখি কি করি উপায়। নাম্বের নাবিক হৈয়া এ যৌবন চায় ৷ भन्नमात देशन महे भन्नमात देशन। নায়ার গলার মালা মোর গলে দিল। ट्रिल क्रभारल महे (य हिल क्रभारल। নাবিক ছইয়া মোবে পরশিল বলে। कला इंडेल महे कला इंडेल। वाल काल नांग्रा (माद्र Cकारल कविर निल ॥ জ্ঞানদাস কৰে ধনি না ভাব বিষান। নন্দের নন্দন নায়া কিসের পরমাদ।৫॥১৪১৩। পাঠান্তর

১। देहा भ-त-मा भूभित ३३२३ मरशाक भन। २। 'क्त्र' क।

सबस्य १३। । ३

ৰায়্যা হে এখন লইয়া চল পার। পুরিল ভোমার আশাং কি আর বিচার॥ অকলত্ব কুলে মোর কলত্ব রাখিলে। এখন কিবা মনে আছে না বোলহ ছলে । नाता। टेरता रूज़ा ढाक मज्दत्त भार्य। देश कि शबव॰ कब कूल-वध् मार्थ । পারে মাও নুতন নায়া না কর বেয়াল। ভাষদাস কৰে নায়। বড় রসরাজ ॥৬॥১৪১৪॥

পাঠাত্তর

ंकः। वेदां नन्यान्यां गुवितः २००० मध्याचः नत्र ।

৪। 'নেও' ক, প-র-সা।

बाननी ।>

শুন বিনোদিনি ধনি আমার কাণারী ভূষি ভোমার কাগুারী কছ কারে। তৃয়া অমুরাগে প্রেম- সমুদ্রে ডুবাছিং আমি আমারে তুলিয়া॰ কর পারে। ষোগী ভোগী নাপিভানী ভোমার লাগিয়া দানী ওঝা হইলাম ভোমার করিবে। ভূয়া অনুরাগে নোরে লৈয়া ফিরে খরে খরে जुग्रा लागि कतिमू दाकात्व ॥ मना किति रस्यू मत्न রাখাল হইয়া বনে ञ्रा नागि वरन वनहात्री। তোমার পিরিভি পাইয়া এ ভালা ভরণী লৈয়া जुग्ना लागि इहेनुं कांधावी । রমণীর শিরোধণি না বোল কুবোল ধনি ভুয়া প্রেমে কি না করি আমি। না ঠেলিহ রাজা পায় माम क्राज्ञात्थ क्य कां कि कीवन धन जूमि ॥१॥१८०॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৯৩১ সংখ্যক পদ। ২। 'ভূৰিরাছি' ক। ৩। 'ভূমি মোরে ভূলি' প-র-সা। ৪। 'বুলি জুলী' ব, চ। ৫। 'বাদিয়া বনিকিনী' প-র-সা। ७। 'बानो' প-র-সা। १। **'क्स्बा'** 어-적-커 |

willaifa 13

না ৰাও নবীন কাণ্ডারি। क्लाक উঠाর कन खार कीना मित्र ॥ স্তুরার তরশী লৈয়া তীরে আইলা স্থাম। 💛 🔻 সকল করিলা বিধি প্রিল সনকাস।

নবনিং মাধন ছেনা যে ছিল পসারে।
সকল দিলেন খ্যাম° নাগরের করে।
অঞ্চলি অঞ্চলি করি করিলা ভোজন।
সভে মেলি চুলিলেন আপন ভবন।
আইলা মন্দিরে রাই স্থাগণ সঙ্গে।
ছরিষে বসিলা ধনা প্রেমের ভরকে। ॥৮॥১৪১৬॥

কীর্ত্তনিয়ামুখাৎ শ্রুছা নানামতে সংগ্রহঃ গাননির্বাহকার্থে। ইত্যাদি মানস-গলায়াং নৌকাবিলাসঃ।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৩২ সংখ্যক পদ।
২। 'নবীন' ক। ৩। 'ধনী' প-র-সা। ৪।
কভংগর প-র-সাপুথিতে নিয়লিথিত ভণিতার কলি
দৃষ্ট হয়, বথা—

'वश्नीवमरन रवारण काहा मित्र मित्र । इरण वरण वसुत्रा मिरण दांसिका कुन्नद्री ॥'

অথ যমুনায়াং নৌকাবিলাসো যথা। শ্রীরাধাকৃষ্ণ-চরণে মনো দহাবধীয়তাং। আনো শ্রীমহাপ্রভুঃ।

याननी ।>

আরে মোর আরে মোর গৌরাল রায়।

শ্বশ্বশ্বী মাঝে বাইয়া নবীন নাবিক হইয়া

সহচর মিলিয়াং-খেলার ।

শ্রের গলাধর সলে পুরব রভস-রজে

নৌকায় বসিরা করে কেলি।

সূব ভূব করে না বহরে বিষম বা

দেখি হাসেণ গোরা বনমালী ।

কেহো করে উভরোল ঘন ঘন হরিবোল

দ্ব কুলে নদীয়ার লোক দেখে।

ভূবন-মোহন নায়া। দেখিয়া বিবশ হৈয়া

যুবতী ভূলিল লাখে লাখে ॥

অগজন-চিড-চোর গোরস্ফার মোর

যে করে ডাহাই পরতেক।

কহে দীন রামানফো এ র্হেন আনক্ষ-ক্ষে

বঞ্জিত রহিলুঁ মুঞ্জি এক ॥১॥১৪১৭॥

পাঠান্তর

>। देहां প-ब-ना श्रुधित ३२०० नश्याक श्रम । २। 'सिनिश' क, ष । ©। 'हांनि' थे। ८। 'छांहे' थे। ৫। 'हहेनू' भ-ब-ना।

TENTE IS

দধি-ম্বভ-পদরা লেই সব রঞ্জিণিং वाक्त कालिन्दि । ষমুনা-তরজ-রস হেরি আকুল পরশ না পায়ই লীরে 🛚 প্রাবিট-সময়ে উঠয়ে ঘন খুৰ্ণন• গরজন তু কুল পাথার। এছন হেরি কহই সব কামিনি কৈছনে হোয়ব পার॥ মুখরা সত্তে ধনি রমণি-শিরোমণি বদন পাণিতলে নাই। হেরি নাগর-বর হর্ষিত অন্তর ভরণি লেই চলু ধাই। কর্ণধার-বর চড়িয়া ভরণি পর আওল রাইক পালে। • উভারব এ ধনি চড় সভে পারে কিছু নাছি ভাব ভরাসে । এড কহি সবছ পাণি ধরি নাবিক্ত তরণি উপর সভে লেল>। कानमात्र ७१ ্লেই রম্পিগণ शब्न भानि मांचा ८गम ॥>०॥>॥>॥

পাঠান্তর

১ । ইহা প-র-সা পুথির ১৯৩৪ সংখ্যক পদ।

২ । 'সন্ধিনী' প-র-সা। ৩ । 'কালিন্দির' ক, খ,

য়, চ । ৪ । 'পাবই' খ, য় ; 'পাই' চ । ৫ ।
'য়ুর্ণত' প-র-সা । ৩ ৷ 'ছফ্ল' ক ় ৭ । 'পান'

ফ । ৮ ৷ 'তরাস' ক । ৯ ৷ 'পানি' ইত্যাদি

আংশ ক পুথিতে লিপিকর-অনে পরিত্যক্ত হইয়াছে ।
১০ ৷ 'পেল' ক ।

আশাবরী ৷১

যমুনার ছ কুল আলা কৈল নায়ার রূপে ।

জগজন-মন ভুলে দেখিয়া স্বরূপে ॥

গলে বনমালা দোলে শিরে শিবি-পাখা।

দেখি মেন আভি কুল নাহি যায় রাখা ॥

মুচকি হাসিয়া নায়া যার পানে চায়।

যাচিয়া যৌ্বন দিতে সেই জন ধায় ॥

ঠেকিলু নায়ার হাতে কি করি উপায়।

বজর পড়িল স্থি কুলের মাধায় ॥

বংশীবদনে কহে থির কর হিয়া।

ভোমরা এমন হৈলা না কাহতে নায়া। ॥

পাঠান্তর

112585115611

)। इहा भ-त-मा পूबित २२०६ मः स्थक भन।

१। 'वनुसात इक्न कतिरन' देखानि क, स, च,

। 'ा 'दिस्स करून की । । 'सित' क।

१। 'रिक्न' भ-त-मा। ७। 'सित' क, छ। १।
'रिक्न' क, छ।

তথা রাগ।১

রাই কাসু বমুনার নাবে^২। ক্লিব্রে ত্রণী পুত্র গোল কুল লাভে ১৮%

কুন্তীর স্করণ

মান উঠড

সন্থনে বদন ভূলি।

হরিবে বমুন। উপলে বিগুণা রাই কান্মু রূপে' ভূলি॥

क्रवरात्र लिला टेश्ता विकास स्थान दला सूचता वृद्धि ।

তোহারি কথায় চড়ি ভা**লা নার** পরাণ সহিতে মরি॥

মুখরা কহরে বে মাগে কাণ্ডারী ভাগাই করহ দান।

এ ভাকা তরণী পাৰ হবে এখনি[©] কেনে বা যাইবে প্ৰাণ॥

এ সৰ বচন শুনিয়া কাণ্ডারা কৃহই ললিতা পাশে।

ভোমার স্থার প্রশ মাগিয়ে । বংশী শুনিয়া হাসে ১২॥১৪২০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-স! পুথির ১৯০৬ সংখ্যক পদ।
২। 'মাঝে মাঝে' ক, খ, খ, চ। ০। 'মগর'
খ। ৪। 'গেল' প-র-সা। ৫। 'নায়া' খ।
৬। 'অমনি' প-র-সা। ৭। 'মাগরে' প-র-সা।
৮। 'বংশীদাস শুনি' প-র-সা।

willaifa 13

শুন লো বড়াই বুড়ি তৃমি সে নাটের শুঁড়িং
আনিয়া করিলি পরমাদ।
মোর মনে যত ছিল সকলি বিফল হৈল
দূরে গেল ঘরু যাবার সাধ।
ছ কুলে বহিছে বায়ু কাঁপিছে রাধার পারুং
নন্দ-মুত নবান কাণ্ডারা।
ভরণী নবান নয়ু ভার দিতে করি ভর
ভালা নার বসিতে না পারিং।

शांजि वर्ण भाविकारि भाव स्टब्म खब्र नार्ट অশ্ব গজ কত করি পার ।। **(सवडा गद्ध**र्व कड भात्र देशहरू) मंड मंड र যুবতীর যৌধন কত ভার>৽॥ **अनिश्वितामिनी बार्ड** নয়ান-ইন্সিতে চাই काळू-मनः कतिरमनः इति। হাসি হাসি ১ ধীরে ধীরে ভাঙ্গা ভরণীর পরে ১৮ **जांहरल धित्रल याहे रुति ।** मधीनन (मिर्च त्रमरः আন ছলে দেই ভক রাই কামু রছে এক পাশেং। কাম-কলহ-বাদ পুরল মনের সাধ **ब**त्रविक (म**रथ**२२ नःभीमारम^{२०} ३)%। ३८)॥ পাঠান্তর

১। रेहा भ-त-मा भूषित ১৯৩१ ७ भ-त भूषित २२। नःश्वक भग। २। 'खड़ि' च, भ-त्र ; 'खबि' **१-इ-मा। ७। 'विको' १-इ। ८। 'वा'** १-इ-मा, প-র। ৫। 'গা' প-র-সা, প-র। ৬। 'ভরণী' ইত্যাদি হলে 'ভঙ্গণ নৰিন নায়' প-র। १। 'ভরা দিতে নারি' প-র। ৮। 'হও' প-র। ৯। 'অবিরত'। ১০। 'পার করি' প-রসা। ১১। 'করি' প-র-সা, প-র। ১২। 'কত শত' প-র-সা। ১৩। 'ভারি' প-র-সা। ১৪। 'ভনো' भ-ब-मा। se । '(कम मन' भ-ब-मा। se । 'করিলেক' প-র-সা, প-র। ১৭। 'পার হও' প-র। ২৮। 'বলিয়া বমুনাতীরে' প-র। ১৯। ্রজাঁচল ধরিতে চাহে' প-র-সাঃ 'আঁচল ধরিলা यांका' श-वा २०। 'व्यक' या २०। 'वारे ब्रास् **কাছ এক পালে' ক**; 'রাই রহল কান্তু পালে' भ-म। २२१ 'क्षि' भ-त्र। २०। 'मधौत्रव' ইভ্যাৰি ভণিভার কলিটি প-র-সা পুথিতে নাই।

धाननी ।>

এ নব নাবিক শ্যামর-চন্দ্র ।

কৈছন তোহারি॰ হাদয়-অমুবজা ॥
তুয়া বোলে গোরস য়মুনহি॰ চারণ।
কারলু কাঁচুলি ডারলু । হার ॥
কর অবসরণ নাহি সিঁচইতে নীর।
অতিখণে তবহু ১০ না পাওল ভীর ॥
হাম নিরস ভুকু হাসি উভরোল।
কেহ জিউ ভেজই কেহ হরি বোলাং ॥
এত দিনে কুলবভি-কুলে পড়ু বাজ।
চড়িং ইহ নায়ে দুরে গেওং লাজ ॥
উভরিং পার যব যো ভুকু মাগ।
কাল্থ সঞ্জে মাগিং ধরব ভুয়া আগা॥
গোবিন্দদাস কহ সময়ক কাজ।
নাবিক বেডন নাওকং মাঝা॥১৪॥১৪২২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্ৰির ১৯৩৮ ও প-র প্ৰির
১৯।৭ সংখ্যক পদ। ২। 'চান্দা' প-র-সা। ৩।
'তোমার' ক; 'তোহার' ধ, খ, চ। ৩। 'নিরবন্ধ'
প-র; 'নিরবান্ধা' প-র-সা। ৫। 'বম্নার'
প-র-সা, প-র। ৬। 'ভার' চ। ৭। 'ভোড়িলু'
প-র-সা। ৮। 'অবসান' ক। ৯। 'নিঞ্চতি'
ক, ধ, খ, চ। ১০। 'এডখনে' প-র-সা। ১১।
'অবহ' ক, ধ, খ, চ। ১২। হাম' ইভ্যাদি
গংক্তিঘরের হলে প-র প্রির পঠি, বধা—

'মঝু মুখ নীরস ভূছ' বন হাস।
কোই জিউ ডেজই কোই হরি হরি ভাষ ।'
১৩। 'চড়ি' প-র। ১৪। 'লেল' প-র। 'বুরে
পেও' হলে 'তিরাগিলু' প-র-না। ১৫। 'উভরি'
ইত্যাদি হলে 'উঠত কুলে পারে' ক, ঝ, ঝ, চ;
'উভরিলে পার অব' প-র-না। ১৬। 'ঝোলি'
প-র-না, প-র। ১৭। 'মাবক' ক, ঝ, প-র-না;
'নাবক' প-র।

शून क पिनारेख ।

মুখরার সঙ্গে রাই স্থীগণ সনে। যমুনা সাঁতার দেখি ভাবে মনে মনে। ভাক দিয়া বলে নায়া না আন ঘাটে। আমরা ছইব পার বেলা সব টুটে॥ দেখিরা নাগর-রাজ জীর্ণ তরি লৈয়া। হাসিয়া কহয়ে কথা কাণ্ডারী হইয়া। কি দিবে আমারে কহ কতেক বেতন। একে একে পার করিব যত জন। রাই কৰে যাহা চাও ভাহা আমরা দিব। কাগুারী কহয়ে হিয়ার রতন লইব॥ मशी मा अ दर्भ दिन विद्यापिनी। তরক বাড়িল তায় কীর্ণ তরিখানি। ভরজের রঙ্গে নৌকা ভুবু ভুবু করে। হৈরি সব সহচরী কাঁপয়ে অন্তরে ॥ তরুক্ত দেখিয়া খরহরি কাঁপে রাই। কোলে করি বায় নৌকা কাগুারী কানাই। রাই কোলে করি নাগর হর্ষিত চিতে। এ পার হইল নৌকা দেখিতে দেখিতে ॥ **হুছ অফ** পরশিতে হুর্ত প্রেমে ভাসে। त्नोका-विलाम कटह উद्धवनातम ।১৫॥১৪২৩[॥]

পাঠান্তর

%। 'त्रूबंत्री-वहरम' कः, 'त्रूबंत्रात्र तरन' थे, हः। २। 'त्ररम' कः, थः। ७। 'वात्र' कः, थः। ६। 'क्ररम' कः, थः।

शमनी ।>

খিরং সর মাখন সহচরি দেল।
মাৰিক সো সব কছু নাহি নেল।
নাইক আঁচর হোড়ি না যায়।
সৰ স্থিস্থ ভবে স্কুয়ে উপায়।

নাবিক কহয়ে দেহ বেওন মোর।
তব সাম ছোড়ব আঁচর° ভোর॥
কহি কহি চুম্বয়ে রাই-বয়ান।
পুরয়ে মনোরপ নাগর কান॥
পুরল মনোরপ আনন্দ ওর।
ব্যভাসু-কুমারি ও নন্দকিশোর॥
নিজ নিজ মন্দিরে সভে চলি গেল।
বংশিবদন চিতে আনন্দ ভেল ॥১৬॥১৪২৪॥
ইতি যমুনায়াং নৌকা-বিলাসঃ।
ইতি তৃতায়শাখায়াং বড়্বিংশাত-প্লবঃ।

১। हेश প-तमा পুषित ১৯০৯ সংখাক পদ। २। 'कित' क, ६। ७ । 'व्यां हम' क, प।

প্রার্ট্-সময়-শেষে শরৎ প্রবেশিল।
কলে কলরুছগণ নিরমল হৈল।
বুন্দাবন-চন্দ্র গোণী সঙ্গে।
করিল রাগাদি-লালা নানা-রস-রঙ্গে।
শরতের অস্তে সে হেমন্ত ঋতু নাম।
ভাছে যে বিলাস রাধা কৃষ্ণ অমুপাম।
কুমারিকাগণ-বন্ধ হরিলা কানাই।
কুমারিকাগণ-বন্ধ হরিলা কানাই।
কুমারিকাগণ-বন্ধ হরিলা কানাই।
কুমারিকাগণ-বন্ধ হরিলা কানাই।
ক্মান্তের অস্তেনার কৌতুক সদাই।
কোন্তের অস্তেনার কৌতুক সদাই।
আভিশ্য শীভে ভন্ম সদাই চক্কল।
শীভে ভাত সুধামুগা প্রবেশে কুঞ্জেভে।
দেখি কৃষ্ণচন্দ্র ভবে মিলিলা ভবাতে।
নানা রস-কৌতুক মদন-যুক্ষ করি।
নিবারিলা শীভ দোঁহে নাগর নাগরী।
**

 ^{&#}x27;প্রার্ট-সময়-শেষে' ইত্যাদি পদার দ প্ৰিতে
ব্যত্ম পদ-ক্রেপ গণিত হর নাই; ইচাকে একটি
পদ বলিয়া প্রণা কারলে সপ্তবিংশ প্রবের নিন্দিট
পদ-সংখ্যা হইতে একটি পদ বেশী হয়; অভয়াং
এই প্রারটি পদ-ক্রেপ গণিত হইল না।

व्यथ तमछ-लोला तमछ-शक्षग्राः।

তত্র শ্রীমহাপ্রভু:।

यमख्यांग ।>

एमच एमच च कू-तोक वमख ममग्र ।

महत्त्र मएम विश्द रागाता वे तांग्र ॥

काश्व त्थल रागाता किम मनोग्रा नगदत ।

यूवजीत विज श्द नग्रत्म मदत्र ॥

महत्त्र त्थल काश्व एमग्र रागाता नगग्र ।

कूकूम भिव्या लाहे एकश्व रकश्व थांग्र ॥

माना यद्ध स्ट्रमिल कतिग्रा श्वीनिवाम ॥

शति विल वाल जूल नाट श्विमाम ॥

वास्तु विल वाल जूल नाट श्विमाम ॥

वास्तु विल वाल जूल नाट श्विमाम ॥

112128541

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৭৮ সংখ্যক পদ।
২। 'গোর' ক, প-র-সা। ৩। 'লেই' ইত্যাদি
ছলে 'লইরা কেত্ কেত্' ব; 'লইরা কেংগ'
প-র-সা।

उस वान ।>

অভিনৰ-কূটালকুঞ্জিত কুন্তল-ভার।
প্রণায়-জনেরিতকূলিত-বর-ঘন-সার॥
জয় জয় স্থন্দর নন্দ-কুমার।
সৌরজ-সঙ্কটবিহিত-বসস্ত-বিহার॥গ্রনা
অধর-বিরাজিতরোচিত্ত-নিজ-পরিবার।
চটুল-দৃগঞ্চলরিত্তি-বংগাচ্চল-

त्राधा-मनन-विकास ॥

ভূবন-বিমোহন- মঞ্ল-নর্ত্তন-গভি-বল্লিড-মণি-হার। নিজ-বল্লবণ-জন- স্থল্থৎণ সনাতন চিক্ত-বিহরদবতার ॥২॥১৪২৬॥

' পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৭৯ ও প-র পুথির ৩০:৯ সংখ্যক পদ। ২। 'বহ্বন' ক, খ, প-র। ৩। 'লোচিত' ক, খ, ঘ, চ, প-র। ৪।, 'রভস' প-র। ৫। 'রসোজ্জন' প-র-সা। ৬। 'ব্লড' থ, ঘ, প-র। ৭। 'হদর' প-র-সা; 'হৃত্ত' প-র। চীকা

১-১৫। "অভিনব-কুটুল" ইত্যাদি পদের রাধামোহন ঠাকুর-ক্বত টাকা, বথা---'ভতত্তৎস্থা স্বলো নিরতিশয়-মহোজ্ঞলরপং এক্সফং অভি-নবেত্যাদিকমাহ। ধে স্থলর! হে নক্ষরার! দং অন্ন কর নিকোৎকর্ষমাবিছুক। এডাগুরুণীঃ পরাজিতা: কুর্মিতি ভাব:। অত বীপারাং বিছং। অভিনবকুট্যলানাং বিকাশোমুধকোরকানাং ঋচ্ছ मयारमोक्दनाः यत्राद दर जानुमः। कृष्णिजः कृष्णन-ভারো ৰস্য তথাভূত। প্রণায়জনৈরীরিতো নিক্ষিথো ৰন্দনেন বসস্তধেলোচিত-চুৰ্ণবিশেষে**ণ সহস্ততা** मिनिक्क निरका बन्नः स्थाति पमनानः कर्नुद्रा विवन् তাদৃশ। দৌরভেন সহটে ব্যাপ্তে বৃন্ধাবনতটে বিহিত: ক্লুতা বদস্তবিহারো বেন ॥ এ ॥ অবর-বিরাক্তিন মন্দভর্বিভেন রোচিত **আনন্দিতো** निक्प विवादा (वेन छोन्न । हरून-पूत्रकान हक्न-क्ठाटकन ब्रहिट्डा ब्रह्माद्धादकन बाधाबार मनमगा त्थात्वा विकारता त्यन । ज्वनवित्याहमरे **यद वस्त्र**-নৰ্ত্তনং তদ্য গভ্যা ভগা বলিতঃ স্থান্ধাৰ্মানঃ ৰণি-হারো বস্য। হে নিজবলবৰনত্ত্ৎ! হে স্নাভন! ट्र **हिट्छ वि**श्वत्रवर्छाद्या गौगाविद्यत्या वना **छाष्ट्र**म । পক্ষে সনাতলগোখামিনশ্ভিতবিহরদৰভার 🛚

3—36 | त्र क्षिककृत् विकास विकास

যুথ কোরকাবলি ভোমার অল-সংলগ্ন হইরা অধিকতর সমুজ্জল এবং প্রিরজনের নিক্লিপ্ত কর্পুর-চূর্বমিশ্রিত ফল্ক-চূর্বে ভোমার দেহ অশোজিত হইরাছে।
হে অক্লর নক্ষ্কমার! ভোমার বলিহারি! সৌরতপরিবাপ্ত বুক্লাবন-পূলিনে তুমি কি অপূর্ব্ব বসত্তবিহারই করিতেছ! ভোমার অধরে মৃহ-মধুর
হাত প্রক্লুরিত হইরা নিজ-পরিজনগণকে আনন্দিত
এবং ভোমার চঞ্চল কটাক্ষ-রাজি রস-বিহ্বলা
ক্রানার প্রেম-বিকার উৎপাদন করিতেছে। ভোমার
ক্রান-মেহন মধুর নর্জনের গতি হারা ক্লম-ছিত
মণি-হার নর্জিত হইতেছে; হে অফুগত-গোপ-জনবান্ধর স্নাতন শ্রীকৃষ্ণ! তুমি আমাদিগের, পক্ষাস্বান্ধন স্নাতন শ্রীকৃষ্ণ! তুমি আমাদিগের, পক্ষাস্বান্ধন ব্যারা ক্রিভেছ।

তথা রাখ ৷১ কেলি-রস-মাধুরী-ততিভিরতিমেলুরী-কুত-নিখিল-বন্ধ-পশুপালং। श्रम विश्वज-हम्मनः क्षुत्रमञ्जूष-वस्मनः र **দেহ-**রুচি-নির্ভিত্তত-তমালং ॥ शुक्ति माध्यमयकलग्रालः। রত্বময়-দোলয়া মিত্র-কর-লোলয়া চলিত-বপুরভিচপল-মালং ॥ধ্র॥ রচিত-গোরোচনা-ব্ৰহ্ম-ছবিগ-লোচনা-ভিলক-ক্লচি- ক্লচিরতর-ভালং। বদন-শশি-শোভয়া ব্দ্বিত-জনিত-লোভয়া বিজ্ঞমিত-নব-যুবতি-জালং ॥ পুষ্পচয়ঃ-মগুতং নর্ম্মনয়ত পথিতং রমণমিত বক্ষসি বিশাসং। প্রিয়মধি সনাতনং প্রণতং-ভর-শাতনং (गार्छ-कन-मानग्रे महानः । ११) ४२१। পাঠান্তর इंदा प-द-मा श्वित >>> ७ प-त श्वित

ওণার সংখ্যক পদ। ২। বৈদ্ধনং' ক, খ, চ, পার-সা। ও। 'নার্মহ' পার-সা। ৪। 'পুষ্ণা-কুল'পার। ৫। 'প্রেণ্য' প্রে।

টীকা

১--> । "কেলি-রদে"ভাদি। ছে স্থারি। প্রীরাধে ! মাধবং শ্রীকৃষ্ণ অলং অভ্যর্থং ধবা স্থাৎ ख्ना खरकतम् खर्टनाकम् । कीमृनः जीकृष्णः १---(किनि-त्रम माधुर्या विकारितः अकि-सिक्षीक्रकाः मकन-ব্দু-গোপালকা যেন তথাভূতং। জ্বি গ্বত-চন্দ্ৰং क्तूत्रन अक्रवर्गा वन्त्रनः वत्रक्तः (अर्जाहि अहर्न-विरन्धः ৰশ্মিন তথা দেহ-কচিনা নিৰ্ভিন্ন গুমালো যেন তথা-ভূতং। মিত্র কর-চঞ্চলয়া রত্বখচিত দোলয়া করপেন চলিতং ৰপু: তথা অভিচপলা মালা বস্যা তথাভূতং। ব্ৰজ-হরিণ-নম্নাভিঃ ব্রচিত্স্য গোরোচনা-ভিল্ক্স্য ক্রচিনা ফুলবভরং ভালং ললাটং ৰ্দ্য তথাভূতং। স্মিতেনেৰ্দ্ধাস্যেন জনিতো গোডো ব্যা তথাভূত্ৰা মুখ-চন্দ্ৰ-কাঞ্চা বিভ্ৰমিতঃ জাত বিভ্ৰমঃ নবীনালনানাং সমূহো যেন তথাভূতং। নশ্মনরপতিতং জীড়া-রীতি-কুশ্যং পুশ্রাজিভূষিতং বক্ষসি বিশাশং গোপালনা-পীল-প্রোদর-পরিসর-মন্দ্রনাচিত-বিশাল-বক্ষকপাট-মিতার্থ: ইচ আত সংসাতে প্রণতজনালাং ভয়-নাশনং অধিবং প্রিঃ গোঠস্থিত জনানাং মানগং চিত্তমেৰ মানসং সরঃ তত্ত্ব মরালং রাজভংগ-শুরুপ স্কাতনং পুরুষং পক্ষে স্নাতন্ত্রামক: পদক্রী অসান্তীতি অর্দিরাৎ অচ্সনাভনগোলামিনঃ প্রভূষিতার্থঃ।

অপুৰাদ

১—১৫। হে ফুলরি শ্রীরাধে! তুমি শ্রীকৃষ্ণকে
উত্তম-রূপে নিরীকণ কর। তিনি কেলি-রসমাধুর্ব্য বিস্তার করিয়া নিজের হুজ্ৎ সমন্ত গোপালগণের চিন্ত প্রেমার্ক্র করিয়াছেন; তাঁহার বক্ষে
খেত চল্লন-চিত্র-রাজির সহিত অকণ-বর্ণ মন্তর্গুণিত পাইডেছে এবং তাঁহার দেহ-কান্তির নিক্ট
তমাল-তক্র পরাজিত হইরাছে। মিত্রগণের করচালিত রহুমর ধোলার, স্মিটিত হওরার তাঁহার দেহ

সঞ্চালিত ও কঠের মান্য দোছগ্যমান হইরাছে।
ব্রজ-হরিণাক্ষীদ্গের রচিত গোরোচনা-ভিলকের
কাস্তি ধারা তাঁহার গলাট অধিকতর স্থন্দর ইইরাছে
এবং তিনি লোভ-জনক ঈর্থ-হাস্য-বৃক্ত মুথ-চল্লের
শোভার নব-বুবতীগণেব ডিভ-বিভ্রম উৎপাদন
করিতেছেন। তিনি কেলি-কৌশলে স্থনিপুন, পুষ্ণারাজি-বিভূষিত ও বিশাল-বফাঃ; তিনি প্রণত জনের
ভর্মাশন, গোপগণের সম্ধিক প্রির, সনাতন-মূর্ত্তি
(পক্ষান্তব্য-পদক্তা সনাতনের আগ্রহুত্ত)।

বসস্ত ৷১

শিশিরক অন্তরে আওয়ে বসন্ত।

ফুরলং কুত্ম সব কানন-অন্তঃ

শীর্ন্দাবনং পুলিনক রজ।
ভোরল মধুকর কুত্মক সজ॥
নব নব পরবে শোভিত ডালা ।
সারী শুক পিক গাওয়ে রসাল ॥
ভহিঁ সব রজিণি মেলি এক সজে।
ভেটল নাগরি নাগর রজে॥
বিহরই কাননে যুগল কিশোর।
নাচত গাওত রজিণি জোর॥
বাজত গাওত কত কত ভান।
গোবিন্দাস অবধি নাহি পান । ৪৯০১২২৮॥

পঠিক্তির

় ১। ইছা প-র-সা পুৰির ১৯৮১ সংখ্যক পদ। ২। 'কুটল' ক, খ। ৩। 'শ্রীর্ন্ধাবনে' ক, খ। ৪। 'ভাল' প-র-সা। ৫। 'নাহি পান' হলে 'নাজান' প-র-সা।

ख्या त्रांग । >

লাওড রে ঋতুরাজ বসস্ত। বেলড হাই কামু গুণবস্ক। ভক্তক্ল মুক্লিভ অলিক্ল ধাব।
মদন-মহোৎসব পিকৃক্ল রাব ॥
দিনে দিনে দিনকর ভেল কিশোর ।
শীত ভীত॰ রহু শীধর,-কোরণ ॥
মলয়জ পবন সহিতে৬ ভেল মীতণ।
নির্থি নিশাকর যুবজন হীতা ॥
সরবর সরসিজ শ্যামর লেহা।
ভ্যানদাস কহে রস নিরবাহাণ ॥৫॥১৪২৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৮২ সংখ্যক পদ।
২। 'কিশোরি' ব। ৩। 'ভিতে' চ, প-র-সা।
৪। 'শিথর' ক, খ, প-র-সা। ৫। 'কোরি' ব।
৬। 'পবন সহিতে' স্থলে 'সহিত পবন' ব। ৭।
'মিড' ক, চ, প-র-সা। ৮। 'হিড' ক, চ, প-র-সা।
১। 'নিধিবাহা' ক, চ।

টাকা

ধিন ভাষি কিলোর করেন অর্থাৎ বালোচিত মৃহতা পরিত্যাগ করিয়া বৌবনের প্রাক্কালোচিত তীব্রতা ধারণ করিলেন; তোলাতে) শীত তীত কইয়া পর্কতেয় শিধরে রহিল অর্থাৎ পরাজয়-ভরে গিরিপুল-য়প ছর্গের আশ্রর গ্রহণ করিল। তুলনা করুন,—

"দিনকর-কিরণ ভেল পৌগও।"

—বিভাপতি ; প-ক-ত, ১৪০১ সং পদ।

৭—৮। "মলরজ" ইত্যাদি। (কল্প-নৃপতির
সহার) নিশাকরকে যুবক-জনের হিড-কারী অর্থাৎ

সহার) নিশাকরকে বৃবক-জনের হিড-কারা অবাৎ
অন্তক্ত্ব দেখিয়া (কল্প-বৃপতির অপর সহার)
বসন্তেরও (সম-কার্য্য-কারিছ হেডু) মলর-প্রনের
সহিত মিত্রতা জলিল অর্থাৎ বসন্ত, কল্পের সহার
চক্র ওমলর প্রনের সহবাগে ধুবক-জনের প্রীতিবিধানে প্রবৃত্ত হইল। তুলনা কর্কন—

"মলর-প্রন সহ ভেল অভুরাগ।" —(১৪৩০) বিভাগতি ; প-ক-ড, ১৪৩১ সং গই।

७वा जात्र ।>

শ্রমণ অশোক নাগ বঙ্গণ মালতী।
পরিমণে ভরল মাধবী রজলতী।
পাটল্ কিংশুক শোভা কাঞ্চন কেশর।
করুণ কমলং কুন্দ করবীর-বরণ।
মুকুলিত রসাল বকুল গন্ধরাজ।
ললিত লবজলতা বন্ধুজীব সাজ॥
লরোবরে সরসিজগণ দিল দেখা।
হংস সারস পড়ে মেলি চুই পাখা।
মান্দেশ মাতি পড়ে ফুলের উপরে॥
কোর-পবন বহু গন্ধ পাছে পাছে॥
নির্মাল বযুনা-জল পুলিনের শোভা।
এ বন্ধুনন্দন-পত্ত ভেল মনলোভা॥

10178001

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৮০ সংখ্যক পদ। ২। 'কোষল' ক, খ, খ, চ। ৩। 'পর' খ, খ। ৪। 'ঋঋ ঋঋ' ক, খ, খ, চ। ৫। 'বধুলোভে' প-র-সা।

্ৰ তথা রাগ।>

আরলং অভ্-পতি নাল বসন্ত।
থারলং অলিকুল মাধবি-পছ।
বিশ্বন-কিশ্বপ ভেল পৌগও।
কেলরকুত্বল্ব ধরল বেমদও।
ক্লিক্র-কুত্বল হত্ত ধরল মাধব।
কাক্র-কুত্বল হত্ত ধরল মাধব।
বিশ্বিক রলাল-স্কুল ভেল ভার।
সমুবাহি কোকিল প্রথম গার।

শিখিকুল নাচত জলিকুল যন্ত্ৰ।
আন বিজকুল পড়ু আশিষ-মন্ত্ৰ।
চন্ত্ৰাতপ উড়ে কুফ্ম-পরাগ।
মলয়-পবন সহ তেল জমুরাগ।
কুম্ম-বল্লিং তরু ধরলং নিশান।
পাটল তৃণ আশোক-দল বাণ।
কিংশুক লবজ-লতাং এক সজ।
হৈরি শিশির রিপুংং আগে দিল ভজ।
হৈরি শিশির বিপুংং আগে দিল ভজ।
হৈরি শিশির বিপুংং আগে দিল ভজ।
হৈরি শিশির বিপুংং আগে দিল ভজ।
বৈদ্যাং সাজল মধুমক্ষিক-কুলংং।
শিশিরক সবহুঁ করল নিরমূল।
উধারল সর্বিজ পাওল প্রোণ।
নিজ নব-দলেংং করু আসন দান।
নব-বৃদ্ধাবন রাজ্যেং বিহার।
বিভাপতি কহু সময়ক সার॥৭।১৪৩১।

পাঠাকর

১। ইছাপ-র-সাপ্ৰির ১৯৮৪ লংখ্যক প্:।

২। 'আঙল' ক, খ, খ, চ। ৩। 'বাওল' ক,

য়, চ। ৪। 'পাতি' প-র-সা। ৫। 'বাখি'
প-র-সা।৬। 'কুন্দবিলী' ক; 'কুন্দবেখি' প-র-সা।
৭। 'ধবল' ধ। ৮। 'তুল' ক। ৯। 'লভাবেখি
য়। ১০। 'বাড়' ক। ১১। 'সৈন' ম। ১২।
'কুল' ক, চ, প-র-সা। ১০। 'জন-বদনে' ধ।
১৪। 'রাজ্য' প-র-সা।

नेग

১—২। "আরল" ইত্যাদি। অতু-পঠি বসভনুপতি আসিলেন; (সেই সংবাদ বোষণা ভ্যার
অন্তই বেন নুপতির পরিচারকত্বানীর) মধুকর-সমূহ
মাধবীর পথে অর্থাৎ মাধবী-সভার দিকে থাবিত
ইইল। (ছচতুর পরিচারকর্পণ বেরপে নুপতির
বিবেশ হইতে গুভাগনন-বার্তা সর্বাত্রে নুপতির
প্রিরতমার নিউট ভাগন ভ্রিয়া তাঁহার স্বোববিধান বারা নুপতির প্রির হইতে চেটা করে, তত্ত্বপ
মধুক্রেরাও বস্তের প্রিরভ্যা বাধবী-সভাকে বস-

ৰের ওভাগমন বিজ্ঞাপিত করার লক্ষই তাহার নিকটে ধাবিত হইল, ইংাই ব্যঞ্জিত হইতেছে)।

১৩-১৪। "কুন্দ-বল্লি" ইত্যাদি। তক্ব (তদা-প্ৰিত) কুন্দ-লভাকে নিশান ধরিল; গাটল অর্থাৎ পাটলি-পুন্স (বসস্ত-নূপভির) তুণ ও অশোক-(পুন্স)সমূহ বাণ হইল। তুলনা কক্ষন,---

"মিলিড-শিলীমুধ-পাটলি-পটল-

इंड-चव-छूब-विनारम ।"---गीलगीविन । ১६-->७। "विश्वक" हेलामि। विश्वक ও नवष-नर्ভारक अरु गृत्य (पश्चित्र) (वगरखत) अर्क শীত-ৰাতু প্ৰথমেই (পরাজয় খীকার করিয়া) ভঙ্গ দিল। (কিংকক পুলা শীতের শেব-ভাগে ফুটিতে আরম্ভ করিয়া বসস্ত ঋতুরও প্রায় মাঝামাঝি পর্যান্ত থাকে; কবি অভিশবোক্তি-অণহারের সাহায্যে ইহাকেই শীভ-ৰাতুর শক্ত বসন্তের সহিত কিংশুকের देसबी विश्वा वर्गन कतिया. 'द्वित' हेजामि वाका-শ্বিত প্রতীরমানা উৎপ্রেক্ষা-অলভারের সাহায্যে ৰুৱাইডেছেন বে, নিষের অনুগত ব্যক্তি, শতার অহপত ব্যক্তির সহিত বোগ দিলে, অরের আশা পরিভাগে করিরা পৃঠভদ দিতে হর, এ স্থলেও শীত-ৰভু সেইরপ নিৰের আশ্রিড প্লাশ-পুপকে ৰসভেৰ আশ্ৰিত শবদ-লতা পুলোর সহিত যোগ बिट्ड स्थिता, जांत करतत जांना नाहे छाविता भनावम कतिन।)

मार्व ।>

নৰ বৃশাবন নবীন তক্লগণং
নব মৰ বিকসিত কুল।
নবিন° বসস্ত নবিন° মলয়ানিল
মাতল নব অলিকুল ॥
বিহরই নওল কিশোর।
কালিনি-পুলিন কুঞ্জ নব শোভনং
নৰ নৰ্গ থেখা। বিজ্ঞার ॥ এছ

নবিন-রসাল- মুকুল-মধু-মাতিরা
নব কোকিলকুল গার।
নব যুবতীগণ চিত উমতারইদ
নব-রসে কাননে ধার ॥
নব যুবরাজ নবিন নব নাপরি
মীলয়ে নব নব ভাতি।
নিতি নিতি ঐছন নব নব ধেলন
বিভাপতি-মতি মাতি ॥৮॥১৪৩২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৮৫ সংখ্যক পদ।
২। 'লতাগণ' খ। ৩-3। 'নবীন' ক। ৫।
'সোহন' প-র-সা। ৬। 'নব' ক, খ। १।
'প্রেমে' খ, প-র-সা। ৮। 'উমাতারই' খ, চ;
'উমতাগুই' খ। ৯। 'মিলরে' ক, খ, প-র-সা।

অথ হোরি।

গ্রীগৌরচন্দ্র।

बगख ।>

দেখ দেখ অপরূপ গোরাজের লীলা।

রীকুং বসন্তে সকল প্রিরগণ মেলিণ
জলনিধি-ভীরে চলিলা। এর।

এক দিকে গদাধর সজে সকল প্রিরগণ দেলিও।

গোরীদাস আদি করি চক্ষর পিছকা ভরি
সদাধরের অজে মের গোলিও।

সক্ষপ নিজগণ সাথে আবির লইরা হাতে
সম্বনে পেরারণ গোরা-গার।

গোরীদাস খেলি প্রেলি ব্যারাক কিছল বলি
করতালি হিরা আবে ধার ।

রুষিরা শরুপ কর হারিলা গৌরান্ত রার জিতল আমার গদাধর। কৃষ্ণালি দের কেন্ত নাচে গায় উর্জ-বান্ত এ দাস মোহন মনোহর ৪৯॥১৪৩৩।

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৯৮৬ সংখ্যক পদ।
২। 'ৰাছু'ক, খ, প-র-সা। 'ৰাভু' পাঠে ছলঃপদ্ধন ৰটে। ৩। 'মেলি' শন্ধটি প-র-সা পুথিতে
নাই। ৪। 'মিলি'ক, খ, খ, চ। ৫। 'ফেলি'
প-র-সা। ৬। 'ফেলার' প-র-সা।

তথা রাগ।>

ঋতুপতি বিহরই নাগর শ্যাম। রাধা রজিণি সজিনি বাম এঞা পরিমল কুকুম চুয়াং চন্দন **কান্ত-রজে॰ সব অরণ ভার।** মাতল ম্নসিঞ্চ মদনমোহন হৈরি যুৰ্তি-যুপ শত গায়ত ঝুম্রি (क्छ्' ज्यत्र ध्रम কেত্ হার হর কেছ">> তমু পরশিয়া রহল বিভোরি^{১২}। क्छ लाहे मून्त्र কেছ লেই মুরলি ছুর্হি দুরে রহি । গাওত হোরি। উপাক পাথাওক ভক্ষ্ণ রবাব কর্ডল-ভাল হ্মেলি করি।

পাঠান্তর

নাচভু গাওত ভাল ধরি ॥১०॥১৪০৪॥

গোবিদ্দদাস-পত্

নটবর-শেশর

১। ইহাপ-র-সাপ্রথির ১৯৮৭ ও প-র প্রথির ৩০।২ সংখ্যক পদ। ২। 'চুরা' ক, খ, খ, প-র-সা, প-র। ৩। 'মুগ্রহা' প-র। ৪। 'অলে' প-র। ৫। 'বিশ্বনি' প-র। ৩। 'হোরি' প-র-সা। ৭। 'হোই' প-র। ৮। 'বৃদ্ধ বিশ্বন' চ, প-র। ১।

'কোই' প-র। ১০। 'ধক' প-র। ১১। 'কোই' প-র। ১২। 'পরশিবা' ইড্যাদি খুলে 'পরশিবা রহণহি ভোরি' ক, চ, প-র-সা; 'পরশি পুলকি রহু ভোরি' প-র। ১০। 'কেই' ক; 'কোই' ধ, প-র-সা। ১৪। 'দফ্'ধ।

बम्ख ।>

বিহরই নিধুবনে যুগল কিশোর।
কাগু-রজে আজি সভে হৈয়াছে বিভোর।
চুয়া চন্দন ভরি পিচকারি।
শ্যাম-নাগর-অজে দেওত ডারি॥
ললিতা বিশাখা আদি স্থাসণ মেলি।
রাইক নিয়ড়ে কামু লেই গেলি॥
সব স্থা ডারত নাগর-অজে।
নাগর খেলই রাইক সজে।
বাণ রবাব মুরজ কপিলাস।
বিবিধ যন্ত্র লেই করয়ে বিলাস॥
কোই কোই গাওত নব নব তান।
ভ্রানদাস হেরি জুড়ায় নয়ান॥১১॥১৪৩৫॥

পাঠান্তর

১। इंश भ-त-ना श्र्वित ১৯৮৮ नर्शक शर्म।
२। 'আজি नष्टि' व्हल 'नव' भ-त-ना। ७। 'कास्टि'
क, ४, ६, ६। ८। 'शिनान' क। ८। 'क्तिर्दि'
च; 'क्तुरु' भ-त-ना। ७। 'क्रिंट' क, ४,
भ-त-ना।

ভৰা বাৰ ।>

থেলত কাপ্ত বৃন্দাবন-চান্দ।
শুকুপতি মনমধ-মনমধ হান্দ।
ক্নারিগণ করং মগুলি মাঝ।
বিদিণি প্রোধ-ভরতিণি সাল ।

व्यक्ति कांक दहरे नांगदि-नग्रदन। অবসরে নাগর চুম্বয়ে বয়নে 🛚 **চকিতে চক্রমুখি সহচরি-গহনে।** ধাই ধরল° গিরিধারিক বসনে⁸ ॥ তরল-নয়ানি ভুরিতে এক থাই। কর সঞ্জে কাঢ়ি° মুরলি লেই ধাই॥ খন করতালি ভালি ভালি বোল। হো হো হোরি তুমুল উতরোল।। অরুণ ভরুণ ভরু অরুণহি ধর্ণী। **শ্বল জলচর ভেল সভে** এক-বরণী ॥ जरूपि नीरत जरूप जरविका। अक्र १- क्षत्र १ (खन मान त्राविक्स ॥

1175178091

পাঠান্তর

)। देवा भ-त-मा भूभित ১৯৮৯ मरश्रक भव। ₹। 'कक्र' श-ब-शा ७। 'श्वल' का ।। 'গিরিধরকি রসলে' প-র-সা। ৫। 'একা' ধ। 'क्'िक, ह। १। 'क्लरब' क, च; 'छनब'

जनवाडी ।>

व्यक्षायु क्यांत्र नम्मक्यात्र। হোরিকং রজে ञरण अक्रनायत मन जानम ज्ञात ॥ নিরখত বর্নণ নয়ন⁸-পিচকারিত^৫ Cधम-खनांव मनकि मन नांग । ত্ত অঅ-পরিমল ह्या हम्मन काश्च-রঙ্গ তাহিঁ নৰ অনুৱাগ # খেলত তমু মন **ভোরি ভোরি ছুহ** কভরে ভঞ্জি॰ রস-ভাতি। তমু তমু সন্মস পরশে মন মাতল ছত পর ছব পড় মাভি।

ব্ৰজ-বনিতা যত बीवि विवास्त রস-গারি মৃত্রু ভাব। অম-জল-কলেবর হেরিয়া চামর চুলায়ত উদ্ধবদাস ॥১৩॥১৪৩৭॥

পাঠান্তর

>। देश श-त-मा श्रुवित ১৯৯० मःश्राक श्रम । २। 'द्रांति' थ। ७। 'नवन' थ। ४। 'ववन' प। ८। 'शिठकांति' क, च, प, प, छ। '७ म' क। १। 'त्रियि' क; 'त्रियिकि' श-त्र-शा। ৮। 'রীঝারত' ব, চ। ৯। 'মৃহ মৃহ' প-র-সা।

8-1 "नित्रथक" देखामि। (श्रीवाशा ख গ্রীক্তঞ্চ) পরম্পারের বদন নিরীক্ষণ করিলে (উভরের) नवन-ऋग शिहकां वी वर्षां वन-वर्षां व व हरेए প্রেম-রূপ শুলাব অর্থাৎ গোলাপ-জল (উভয়ের) मत्न मत्न नथ रहेन; ভারতে অর্থাৎ এই অপুর্ব ভাৰাত্মক হোরি-ক্রীড়ার উভরের অল-সৌরভ চুরা-চন্দন ও নব-অন্থরাগ কাওর রং (হইন)। (অন্থ-রাগকে লোহিডরণে বর্ণন করা 'ক্বি-স্বয়-সিদ্ধ' ৰলিয়া অলভার-শাজে উক্ত হইরাছে। 🤊

देशन कलानी ।>

রীভুরাজং অজ-সমাজ হোরি রজে রজিয়া ৯৫% নাগরি-বর হোরি-রজ- উন্মত-চত স্থাম-সজ ৰাচত কত° ভবিয়া ॥**ধ**। সাওত কভ॰ রস-প্রসঙ্গ বাওত কভ বি৭০ ৰোচল रेथना रेथ॰ युक्तिया ह চঞ্চল পতি অতি স্থান নিয়খি সূলেণ কত অনক निक नक खुन्निया। चत्रमश्ल नत्र ज्ञान मधूत गर्भ केशांकिया ।

(थनि श्रमान १ चन नान

স্থানর বর^{১২} ক্যুতি রসাণ **রজিণিগণ সন্মিরা**। **ব্রজ-বধুগণ^{১৬} ধরত তাল** গাওত পদ নন্দলাল

রাই অজে । অসিয়া॥

হো হো করি করভ ভাষ

করতালি ঘন^{১৫} মন উলাস **কর জ**র বর ঢজিয়া^{১৬}।

গোবিন্দ-গুণ করি প্রকাশ

রচিত গীত^{১৭} উদ্ধব দাস **হোরি^{১৮} রস-**তর**লি**য়া^{১১} ॥১৪॥১৪**৩৮**॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৯১ সংখ্যক পদ।

২। 'ঋতুরাজ' ক, প-র-সা; 'রিত্রাজ' চ। ৩।
'কর' থ। ৪। 'গাওত কত' হলে 'গাওত' ক,
থ। ৫। 'কত বিণ' হলে 'বীণা' ঘ। ৬। 'বৈরা'
প-র-সা। ৭। 'ভূলে' ক, চ, প-র-সা। ৮।
'সদীত সর' ছ। ৯-১০। 'বর' ক। ১১।
'গোলাল' ক, খ, ঘ, চ। ১২। 'বর' শব্দ ক, খ
পুথিতে লাই। ১৩। 'বধুপণ' ক। ১৪। 'সলে'
ছ, খ; 'অলেড' প-র-সা। ১৫। 'ভালি'
প-র-সা। ১৬। 'ভিলিয়া' প-র-সা। ১৭। 'রিচিত
পীড' হলে 'রিচি গাইল' খ। ১৮। 'হেরি' চ।
১৯। 'রসেতে রিলরা' প-র-সা।

বসপ্ত 1>

আৰু রজে হোরি
থেলত শ্রাম গোরী।
স্থিগণ সিলি গাওত বাওত
কিলোর কিলোরি নাচি নাচাওত
আনুক্ষে সন ভোরি।

বিবিধ যন্ত্ৰ ভাল মৃদক্ত
কোই মোচক বাওকে উপাক্ত
তন নন নন ভোরি ।
তথ তথ তথ তথ ইথয়া
দৃগতি দৃগতি দ্রিমি ধৈয়া
চন্ত লঙ লঙ লোরিং।
কুড়ু গুড়ুণ গুড়ুদাং দ্রিমিদাং

कि छ कि छिषार जगभार

শিবরাম গাওয়ে হোরি ॥১৫॥১৪৩১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৯৯২ সংখ্যক পদ।
২। 'বিবিধ বর' ইত্যাদি কলিট ক, ধ পুৰিছে
নাই। ৩; 'তাল নানা নানা তোরি' প-র-সা। ৪।
'ত' ক, ধ; 'তঃ' ঘ; 'তউ' প-র-সা। ৫। 'চঙ
লউ লউ লোরি' ক, ধ; 'চঙ চঙ চঙ নোরি'
প-র-সা। ৬। 'পুড়ু' চ, প-র-সা। १। গাওরে
বাওরে' খ।

তথা রাগ।১

রাধামাধৰ নাচত হোরি-আনন্দে। অক্লণ তাল ধৰে অরুণ ডক্ষ করে বাওত কতহি প্রবন্ধে ।ধা। তথৈ তথৈ তৎ **था जिमि जिमिरग** जा (बा (बा (बान मुनन। वीग-नाम अनि क्म क्म क्म धनि अत्रमश्रम-भारतः मृत्राह जनम । ধঞ্চন-গতি ভলিম क्षित हर्न क्नमन मित्र (वारण⁶। সুমরি° সুমরা কোই° वम वम व्यमित বাওরে ডক্ষ উভরোগে।

অরুণ নেষের কাছে অরুণ চন্দ্র নাচে
নথতর অরুণ আকাশে।
অরুণ কোকিল গায় অরুণ ময়ুর ১০ ধার
ইহ শিবরাম রস ভাবে ১১৬১১৪৪০।

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৯০ সংখ্যক পদ।

২। 'জিমিথো' দ। ০। 'থ্যনি' ক। ৪।
'থ্যরে' ক। ৫। 'বোল' প-র-সা। ৬। 'ঝুমরে'
ক, খ। ৭। 'ঝুমুঝীকোই' খ; 'ঝুমরানাই' প-র-সা।
৮। 'উজরোল' প-র-সা। ৯। 'নখতরু' খ;
'মথজর' দ। ১০। 'মরুর' ক।

भागून 15

त्रक्ष दश दश दश्ति। খেলত নওল কিশোরী।ঞ। বাক্ত ভাল রবাব পাখাওজ স্থিগণ খন করতালি। আবির উড়ত ঘন कुक्रम हन्सन वित्रधन्य अपू शिहकांत्रि ॥ क्टं क्टं (**थलन**° সমর-প্রবন্ধহি ছ্ছ পর ছত্ত পড় ভোরি। किछन् किछन् वन তুত্ত-জন গরজন मिश्रम छन वदरकादि । খেনে খেনে থকিত वमन छ्रह निद्रथन

्र देवहन ठाँन ठएकाति।

ভ্ছি শিবরাম দাস-মন আনক্ষে ছেরি হালে খোরি থোরি ৪১৭৪১৪১৪

পাঠান্তর

३। देश भ-ब-ना श्रुषित >>>६ नेश्याक भव ।
 १ (बिबवन् क । ०) (बिनन् भ-ब-ना। ६।
 (बद स्वावि क ।

कूड़ी बनस्य 15 হোরি হো রকে মাভি। व्यविद्य व्यक्तन श्रामि भामत्र-काँडि॥अ॥ নিপত্তিত বদ্ৰে হুরজিদ কুছুদ চুয়া চন্দন কেশর সাথা⁸। कोिपरग व्यवित्र উড়ায়ত ব্ৰজ-বধু ব্দরুণ তিমির কিয়ে ভেল দিন রাভি ॥ বীণ উপাঞ্চ মুরজ সরমগুল ডক্ষ রবাব বাওয়ে রুড ভাডি। কোই মাউর হুরট কোই সারক্ষি কোই বসস্ত গাওয়ে সর-জাতি । নাচত মোর ঘোরা খন কোকিল রোল বোলে মত মধুকর পাঁতি। মনোহর খেলন ঋতুপতি পরম হেরি শিবরাম হরিখে ভরু ছাতি 🛭 #>**F1388**

পাঠান্তৰ

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৯৫ সংখ্যক পদ।
 ২। 'ভাষ' ক। ০। 'নিপতিত' ক। ।।
 'সাতি' प। ৫। 'ষার্র' ক। ७।, 'সারক' ক,
 थ। १। 'য়র্র' ক। ৮৭ 'ঝোর' প-র-সা।
 ৯। 'ঝোল' খ, प, প-র-সা।

বিহণতা।>
বাজে দিগ দিগ বৈ বৈদ্যা হোরি রজে ৯এছ।
কিশোর কিশোরি স্থিনি মেলি
তপন-ভননা-তীরে কেলি
ক্থমন্ন অভি মধু অভু-পভি
রভিপতি ভবিং সজে ।
মহণ মুহণ চুবক চকান
বন্ধ রজে বরিধে গ্রম

্ৰীণ মুরজ সর উপাক জিমিকি জিমিকি জিমি মুদক চঞ্চল গতি খঞ্চন জিভি নৃত্যতি অতি ভলে॥ गांखरम गमरक रगांशि स्मिल গৌরি গুর্জনি রামকেলি স্বভগা স্থহিনি হুহই সাহানি সঞ্চিত রস-তরজে। ষুপে যৃপে যুবভিরুদ মাঝে শোহত গোকুল-চন্দ গোবৰ্জন হাদি বৰ্জন

कक्र मर्पन व्यनत्त्र ॥১৯॥১८८०॥ পাঠাম্বর

১। हेहा भ-त-मा भूभित ১৯৯७ मरश्यक भव। ২। **'ভাৰ' ধ**। ৩। 'ভক্ৰ' প-র-সা। ৪। 'লোলিভ'চ, প-র-সা। ৫। 'ভূষণ' प; 'স্থন' প-র-সা। ७। 'পণ' क, ४। १। 'সাহান' भ-त्र-ना। ৮। 'नकीठ' क। २। 'हेनल' ^स, भ-म-मा ; 'हनदक' **ह**।

थाननी ।>

খেলত রাধাং

শ্যাম রঙ্গ ভরি

वुन्ना-विभिन ममान ।

চুয়া চন্দ্ৰ

वन्तन कुकूम

রক মুটকি° ভরি সাল ।

বৈঠল ভাগ

ज्य मधुमक्त

ख्यम म्थापिक मार्ष।

বিশাখা আদি• সহচরি রাধা দলিভা

পিচুকারি করি নিক হাতে।

কাতুক পিচকারি

বৰ্ষি" বরিখত

्र अकृष्टि भक्त भूक शादत ।

बार वर जावड সহচরি বেলি

বছবিধ রঞ

অজ সব জীগত

আঁচরে মোহত মৃখ্। किउनू किउनू शिष शित (पर्) क्रकानि करन करन बांहे अंबन्ता আবির উড়ায়ড গাওত বাওত

(कार्ड नांहरत्र मनत्रदत्र ।

সবহু মেলি শ্ৰার ডম্ফ রবাব

> উদ্ধব দাস ভদু সঙ্গে ৷২০॥১৪৪৪॥ পাঠান্তর

১। हेहां भ-त्र-मा श्रुवित ३৯৯५ मःवाक भगा ২। 'রাধামাধ্ব' প-রসা। ৩। 'রঙ্গে ভোরি' প-র-সা। ৪। 'মটুকি' খ। ৫। 'গলিতা আদি' 'भ-ब-मा। ७। 'विभाषा चामि' ऋल 'विभाषा' भ-ब-मा। १। 'यव' कः, 'यव**रु**' भ-ब-मा। ৮। 'इंद' क, ह, श्रद्ध-मा। २। 'विख्न विख्न' क, च। ১०। '(७३' स। ১১। 'ञ्र्च' क, ह, भ-त्र-ता।

বিহরতি সহ রাধিকরা রক্ষা। मधू-मधूटत दुःमावन-द्वार्थाम इतितिह वर्ष-छत्रको ॥धा॥ বিকিন্নতি যদ্ধেরিতম্ববৈরিণি त्राधा कुकूम-शक्म । দরিতাময়মণি সিঞ্চতি মৃগ-মদ-রস-রাশিভিরবিশক্ষ্ ক্ষিপতি মিথো যুবমিপুনমিদং নব-मक्रगंखदः भवेवांमम्। জিতমিতি জিতমিতি মুহুরভি^{*}জরাতি কল্লয়দভমু ।-বিলাসম্। স্বলো রণরতি ঘন-করভালীং জিভবানিভি বন্মালী। ললিভা বছতি সনাতন-বল্লভ मक्रक भण मनानी ।२ >१>৪৪৫। 👍

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৯৮ ও প-র পুথির ৩০।৩ সংখ্যক পদ। ২। 'রাশিভিরভিশঙ্ক্' ব, চ। ৩। 'মুত্রপি' প-র। ৪। 'ক্রর তদ্ফু' ব, প-র-সা, প-র।

টীকা

১->৫। "विष्यकी"ठामि। तनो विनानी 🕮 কৃষ্ণ: রাধিকরা সহ বিহরতি ক্রীড়তি। কুত্র প मधुना वमरस्थन मधुरत मरनाहरत हेह . चळ वृद्धावन-श्रीति । कीषृतः कृषः ? हर्व-छत्रशे चानत्सालान-বান । ভতঃ ক্রীড়ন-প্রকারমাহ 'বিকিরতী'ভ্যাদিভিঃ। রাধা নববৈরিণি এককে ব্যস্তবিতং ব্যর্ভালিতং কুছুম-পৰং কুছুম-দ্ৰবং বিকিন্নতি বৰ্ষতি অপীত-কুৰুম-ক্ৰম জীৱাধাৰ-পাম্যাৎ কৃষ্ণপ্ৰিয়দাৎ ভগ্য ধারকথাচেতি বোধান। অরং শ্রীক্লোহপি অবি-**শব্দং নির্ভ**রং বথা স্যাৎ তথা মৃগমদ-রস-রাশিভি: मुश-मह-क्षव ममुटेहः पत्रिकाः व्यवस्थाः जीवाशाः निकाछ। मृग-महस्रवमा श्रीकृष-वर्ग-मामार श्रीवाधा-প্রির্বাৎ শ্রীরাধারাঃ ত্বপীতাকে শ্লাকে কলছ-তস্যান্তি-শোভাধায়ক ৰাচ্চেতি বোধাম। देशर उक्रनयूत्रमर श्रीत्रांशाक्काविकार्यः नवः अखिनवर তেন হেডুনা অবশ্ভরং অতিলোহিডং পটবাসং হুগদ্ধ-চূৰ্বং ক্ষিপতি অঞ্চোহন্তং প্ৰতি বৰ্ষতি। তথা অভতুবিলাসং কলপ-জনিত-বিভ্ৰমং বলব্দিপ্ৰমং বা क्षत्र त्रहत्र क्षिष्ठर क्षिष्ठर महद्वि (नवः मूह्दीतः-वातर पश्चिमक्राणि। कोषा-मर्नमः स्वनः यनगानी জিতবানিতি খন-করতালীং রণমতি বাদমতি শ্রীকুঞ্-পক্ষপাভিত্তাদিভি ভাব:। छथा. जैत्राधिका-मधी ললিতা মম আলী সধী প্রীয়াধেত্যর্ব: সনাতন বঙ্গভং প্রিরং প্রীকৃষ্ণ প্রদারত পঞ্চাবলোকরেতি বছতি তস্যান্তবৈবাত্বরপদাধিতি ভাবঃ।

व्यक्तांत

১—১০। বিগাসী ও হবেৎসূর **এই**ক এই বস্তান্ত্ৰ কুকাৰন-পুলিনে **এই**গাড়িক সহিত কীড়া করিতেছেন। শ্রীরাধা অব-রিপু শ্রীক্ষের উপরে যত্ত্ব থারা কুকুম-বারি বর্ষণ করিতেছেন; শ্রীক্ষণ মুগ-মন-বারি বারা প্রেরসীকে সেচন করি-তেছেন। তরুণ-বৃগন নব ও অভিশ্র অরুণ স্থান্ধন্দ্র করিন করিজেছেন ও অভস্থ-বিলাস প্রাকাশ করিতেছেন। "বনমানী লিভিরাছেন" বলিরা স্থান বন করিতেছেন। "বনমানী লিভিরাছেন" বলিরা স্থান বন করতানি বাদন করিতেছেন; লালতা বলিতেছেন,—দেখ দেখ; আমার সধীপ্রিরতম (পক্ষান্ধরে—পোষামী সনাতনের ব্যক্ত) শ্রীকৃষ্ণকে পরাজিত করিরাছেন।

তাৎপৰ্ব্য ဳ

শীরাধার বর্ণ-সাম্য হেতু পীত-বর্ণ কুছুম-বারি
শীরুফের প্রির ও তাঁহার স্থামালে মরকতে পর্বসংযোগের স্থার উহা নিতান্ত শোভাবিধারক বলিয়া
শীরুফের দেহে কুছুম-বারি বর্বণ ধারা শীরাধার
অপূর্ব প্রিরায়কুলতা ও বৈদক্ষা ব্যক্তিত হইতেছে।
তক্ষপ শীরুফের বর্ণ-সাম্য হেতু কন্তরী-বারি
শীরাধার প্রির এবং উহা তাঁহার অবে শশান্তর
কলক-চিল্লের স্থান শোভাবর্দ্ধক বলিয়া শীরুফ
শীরাধার অবে কন্তরী-বারি সেচন করার তাঁহার
প্রিরা-নিঠতা ও বৈদক্ষা ব্যক্তিত হইতেছে।

क्षा जान ।>

খেলাতে হারিয়া খ্যান পলাইতে চার।
চৌদিকে অজ-বধু পথ নাহি পার ॥
আবিরে অরুণ আঁথি মেলিতেং না পারে।
হারিলুঁ হারিলুঁ খ্যান বোলে বারে বারে ॥
কর সঞ্জে সুরলী ভূমেতে পড়ে খলি।
করভালি দেইং সব স্থীপণ হালি ॥
শিথি-পুছে আউলাইং পড়ে মহীতলে।
অরুণিভ বসন ভিজিলং এম-মালে ॥
খ্যানেরে বিভার দেখি রসবর্তী গাঁই।
অরুণভ বসন দিয়া ও মুখ মুখাই ॥

11551178861

শিংহাসনে বৈসে রাই কোরে করি খাম।

শৌষ-ভরে ছহঁ অলে পরিপূর্ণ বাম।

শীরভিষঞ্জরী দোঁহেণ চামর চুলায়।

শীরপমঞ্জরী দোঁহেণ ডাম্বুল যোগায়।

শীরপমঞ্জরী দেই স্বাসিত জল।

এ মোহনদাস হেরি নয়ন সফল।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৯৯ সংখ্যক পদ।
২। 'মিলিতে' ঘ, চ। ৩। 'দেম' ক, প-র-সা।
৪। 'এলাইরা' ঘ; 'আল্যারা' চ। ৫। 'ভিগল' প-র-সা। ৬-৭। 'ছহ' প-র-সা।

কাষোদ (১

নাগরি নাগর অরুণ বসন ধরং ख्य-खर्त्र यात्र वात्र चाम । বিন্দু বিন্দু চুয়তত छ्छ। यूथ-हेन्स् অক্লণিভ মুকুভাত-দাম॥ पृष्टं यन जानम-श्रुष्ट । হেলি হুহুঁ হুহুঁ তুমু वह्रविष॰ (षणि • বৈঠল নিরজন কুঞ্চে। ধা। আসন মণিময় রতন-াসংহাসন ফুলচন্ত্ৰ-রচিভ স্থঠান ! করভহিঁ সেবন সকল সৰীগণ সময়োচিত বত জান । तिह श्रीमक्षति বারি কারি ভরি কোন স্থি চাষর চুলার। ভামুল বোগারই অ্রক অধ্যে কোই উद्धव मांग वनि वात्र ।२०।५८८१।

) विशे शन्त-मा श्रीवत २००० मरवाक शन। २। अन्तर के विशेष हैं। या विशेष के

পাঠান্তর

'চোরত' প-র-সা। ৪। 'রুক্তার' ক, ঝ, প-র-সা। ৫। 'হড়' তহু' ক, ঝ। ৩। 'পান' ছ।

विवाग ।>

রুন্দাং-রচিড° কতেক পরকার।
স্থিগণ আনল বহু উপহার ।
রতন-থারি ভরি রাখল তাই।
বারি ঝারি ভরি দেওল যাই ॥
রতন-আসন পর বৈঠল কান।
ভোজন কয়ল আপন মন মান ॥
আচমন সারি তলপে মুখ্যাস।
ভোজন করু ধনি স্থিগণ পাল ॥
বো কছু লেষ ভুজল স্থি সাথ।
আচমন কয়ল মোহল পদ হাত ॥
গ্যাম-বামে ধনি বৈঠল বাই।
প্রির-সহচরি কোই ভাসুল যোগাই ॥
গ্রতল শেক্তে রাই ঘন-শ্যাম।
চামর বিজন করু দাস বলরাম ॥

15 d178 8FB

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুধির ২০০১ সংখ্যক পদ। ২: 'বৃষার' ক। ৩। 'চর্চিড' প-র-সা। ৪। 'ভূলপ' ক, ধ, প-র-সা। ৫। 'গুডল' ক, প-র-সা। ৬। 'বীকন' ক, ধ, প-র-সা।

অথ বাসন্তী দোলা হোরি-বিলাস। 🗢 🧬 ভত্ত 🕮গৌরচক্ষ।

नगय ।)

কো ক**হু আজুক আনন্দ-ওর**। ফুল-বনে দোলত গোর কি**লো**র।

• 'হোরি-বিলাস' খনে 'থোরি বথ্যে' 🔻, ব, 'হোলী' ব, চ। নিত্যানন্দ গণাধর^২ সঙ্গে।

শান্তিপুর-নাথ গাওই রজে।

সহচর কাপ্ত পেলই^২ গোরা-গার।

থারই শুনি সব লোক নদিরার।

খোল-করতাল-ধ্বনি হরি হরি বোল।

নয়নানন্দে আনন্দে বিভোৱ। ২৫॥১৪৪৯॥

পঠিবর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০০২ সংখ্যক পদ।
 ২। 'গলাধর আদি' প-র-সা। ৩। 'লেপই' ক;
 'কেলরে' প-র-সা।

चवा बान 13

নিপভভিং পরিতো বন্দনত-পালী।
তংগ দোলরতি মুদা স্কেদালী।
বিলসভি দোলোপরি বনমালী।
তরল-সরোক্ত-শিরসি বধালীও ॥
অনরতি গোপী-অন-করভালী।
কাপি পুরো নৃত্যভি পশুপালী।
অরমারণ্যকত-মগুন'শালী।
অরমারণ্যকত-মগুন'শালী।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ২০০৩ ৩ প-র পুথির

●০৮ সংখ্যক পর। 'তথা রাগ' ছলে 'আসাবরি'
প-র। ২। 'নিপতিড' প-র। ৩। 'বছন' ক, থ,

অভ। ৪। 'বং' ক, থ, ঘ, চ। ৫। 'সিরসিজ ধালী'

ড়, থ, ঘ, চ। ৬। 'অজরাবর্গ্যক' ক, থ, প-র-সা।
१। 'বঙল' ক, থ, ঘ, চ, প-র-সা।

गिका

১—৮। "নিপততী"ভাবি। বোলারাঃ পদ্ধ-কৃতক্পরি বনবালী শুকুকো বিলস্তি। ভ্রোপ্রা ভরক্যা সরোক্ষ্যা পদ্ধনা নির্দি জ্লীবর্ণা ভূক ইব জে। পরিভঃ স্বরাৎ বক্ষ-পানী ভৃত্ক-ভূকিছিঃ নিগততি। অ্বকালী মিউপ্রেণী চ মুলা ক্রেণি তথ লোগরতি চালরতি দোলা-প্রেরইণরিতি ভাবঃ। গোপী-জনানাং করতালী জনরতি কৌতুক্ষিতি শেবঃ। কালি পশুপালী গোপী প্রিরস্য পুরো নৃত্যতি। অবং শ্রীকৃক্য: আরণ্যক-মঙ্গলালী বন্ত-পূম্প-পত্ত-ভাবান ক্রিক্টি: কৃতত্বণঃ তথা সনাতন-রস্যা ভিরন্থারিক আনক্ষয় পরিপোবকঃ করতি খেনোংকর্বেণ বিশ্বা-ক্তে। পক্ষে সনাতন্য্য রস্যা প্রবর্জকঃ।

व्यक्ष

>—৮। চতুর্দিকে কন্তবুৰ্ণ-রাজি বর্ধিত হুইতেছে; স্থান্বর্গ শ্রীক্রককে আন্দোলিত করিছেছেন। বনমালী (পলাক্ততি) দোলার উপরে বিরাজিত রহিরাছেন,—বেন চঞ্চল পল্লের উপরে ব্রবর্গ
শোভা পাইতেছে। গোপীলনের কর-তালী উাহার
কৌতুক উৎপাদন করিতেছে। কোন গোলী প্রিরভবের সম্প্রিন্তুর্গ করিতেছেন। বন্ধ ভ্ববে বিভূবিত ও
আনত্ত-আনন্দের (পলাক্তরে—পদক্তা সনাভবের
আনন্দের) পরিপোষক এই শ্রীক্রকের বলিহারি।

ख्यां अंश ।)

মধ্বনে মাধব দোলত রলে।
অল-বনিতা ফাগু দেই প্রাম-অলে।
মাধু মাধুল দের প্রদার-অলে।
মুধ মোড়ল ধনি করি কত তলে।
কাগু-রলে গোপী সব চৌদিসে বেড়িরা।
প্রাম-অলে ফাগু দেই অঞ্চলি ভরিরা।
কাগু ধেলাইতেং ফাগু উঠিলং পগনে।
বুন্দাবনং-তক্র-লভা রাতুল বরণে।
রালা মর্ব নাচে কাছেং রালা কোকিল পার।
রালা কলে রালা ভ্রমর রালা মধু খার।
রালা বাবেং রালা হৈল কালিনীর পারী।
গগন ভূবন দিগ বিদির না জানি।
বভি ভার বভি জর বিজকুলে গার।
আন্বারে কিছ নাব্র ভুরার ১২০৪১৪৪১৪

পাঠান্তর

)। देश भ-त्र-ना शृषित २००८ मरश्यक्त भए। १। '(बंगारे' थ। ०। 'केफिन', भ-त्र-ना। ८। 'त्राह्म' 'कुलांबरत्नत्र' पः, 'तृलांबर्टन' ह, भ-त्र-ना। ८। 'त्राह्म' भ-त्र-ना। ७। 'वात' क, थ।

তথা যাগ ৷>

দোলত রাধা মাধব সজে।
দোলায়ত সব সধিগণ বহু রজে॥
ভারত কাণ্ড চুহুঁ-জন-অকে।
হেরইতে চুহুঁ-রূপ মুরুছে অনজে॥
বাণ্ডত কত কত বদ্ধ স্তান।
কত কত রাগ-মালং করু গান॥
চন্দন কুরুম ভরি পিচকারি।
ছুহুঁ অজে কোই কোই দেওত ভারি॥
বিগলিত অরুণ বসন চুহুঁ-গার।
ভাম-জল বিন্দু বিন্দু শোভেণ তার॥
হেম-মরকতে জন্ম জড়িত পঙারণ।
ভাহে বেচুল গলমোতিম-হার॥
দোলোপরিণ ছুহুঁ নিবিড় বিলাস।
ভানমাস হেরি পুরুরে আশ ॥২৮৪১৪৫২॥

পাঠান্তর

১। ইছা প্ৰ-র-না প্ৰির ২০০৫ সংখ্যক পথ। ২,৪ 'রাল বাল' ক, খ, চ, প্ৰ-র-না। ৩। 'বোডা করে' থ। এ। 'বোডার' প্-র-না। ১৫। 'বোল প্রি' থ; 'বোলা পর' প্-র-না।

निका

e-- । "বাওত" ইডাদি। ছন্দর-ভাগবিশিই

ক্ষুক্ত ব্যু বাদন করিডেছে (এবং) কড কড

বাদ-বাদা পান করিডেছে। তুলনা কর্ম-- পাওড

বাদ-বাদিকা ভানবাদ; পাক-ড, ১০০০ সংখ্যক

35-00

चानांवत्री ।>

আঞ্চলি ভরি কাপ্ত লেই স্থিপণে।

রাই-কামু-অলে দেই বনে বনে ॥

বোলোপরিং ছুর্ছ দোলত ভাল।

গাওত কোই স্থি ধরিং তাল ॥

বাওত কত কত বল্ল অরঙ্গ।

বীণ রবাব সর-ম্থলং উপাল ॥

শোভিত ভক্লকল বিক্লিত কৃলং।

ঝহরু মধু-মদে সব অলিকৃলং॥

মলর-পবন বহে বামুন-ভীর।

নাচত শিধিকূল কুঞ্জ-কুটীর॥

বিলসই ভহিং দোলোপরিধ কান।

ইহ নবকান্ত দুর্ছাক গুণ গান ॥২৯॥১৪৫০৪

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০০৬ সংখ্যক পদ।
২। 'লোলা পরি' ক; 'লোল পরি' থ। ৩। 'থবি
করে' ক, প-র-সা। ৪। 'সরবল্প' ক, ব, চ।
৫। 'ক্ল' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'ক্ল' ক, চ,
প-র-সা। ৭। 'ভাহি' ব, চ। ৮। 'বোল পরি'
থ; 'বোল পর' প-র-সা।

ততো হোরি-সম্ভোগক্ত রসোদগারঃ। ভত্ত শ্রীগোরচক্রঃ।

বিভাব (১

(भोत-यत्रग

হিন্ন-ক্রিপ

অক্লণ বদন ভার।

রাভা উভণল

नत्रन-यू**नन**

(क्राम-भाता विश् चात्र । स्मय समयोग-त्रामः ।

ভাবে বিভান

न्यां भव भव

মধুৰ ভকত নাৰ ৷ধা

ক্ষরে আবেশে পুরব-বিদাসে

মধুর রজনী-কথা।

অমিরা-করণ ঐছন বচন

হরল মনের বেথা॥

শুনি হরবিত সকল ভকভ

প্রেবের সাগরে ভালে।

লে° সব সোঙরি কান্দরে গুমরি

দীন পোবর্জন দাসে° ॥৩০॥১৪৫৪॥

পাঠান্তর

)। देशं श-त्र-ना शूचित २००१ त्रश्याक शव। २। 'क्किताक' क, थ, ठ, श-त्र-ना। ७। 'द्रश' ४। १। 'त्ना' क, थ, 'त्न' श-त्र-ना। ८। 'त्नाचिक कार्त्र' श-त्र-ना।

ভণা রাগ ৷১

ঋতু-পতি-রয়নিং বিশাসিনি কামিনি बानरम हुनू हुनू वांथि। কাঞ্চন-ব্রণ-হরণ তমু অরুণিত মধুর-মধুর মৃত্ ভাবি। সৰ সহচরিগণ আওল তৈখন धक कम कत्रत्व शृहाति। कर धनि देकहरन गित्रिवद-धद्र म्हा कंगि (बननि भिष्ठकाति ॥ পদ্ধা সহচরি देक्ड्रान वाँठनि॰ বাঁচলি॰ ভূমুল⁹ সংগ্রাম। গৃহ-পত্তি-সেবদ कारक त्रहमूं ७व যাই বা পেখলু হাম 🕼 ত্তৰি তৰ বসৰভি विक्रिक् खत्रम मिछ বহ লোই কোতুৰ-ভাব। লো ক্লায়তে देव॰ भारक्त बाल १००१० ४८८१

পাঠাকর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ২০০৮ সংখ্যক পছ।
২। 'রক্ষমি' ক, খ, চ, প-রসা। ৩। 'হরণ বরণ'
ক, খ, চ, প-র-সা। ৪। 'গিরিবর দরশ্বে' ক।
৫। 'বাচলি' প-র-সা। ৬। 'বাচলি' ক, 'বাচলি'
প-র-সা। ৭। 'ভস্ল' খ, চ। ৮। 'হরবে'
প-র-সা। ১। 'এও' প-র-সা।

টীকা

৯—>•। "পলা" ইন্ডাদি। (চন্দ্ৰাৰণীর)
স্থী পলাকে কি প্রকারে বঞ্চনা করিরাছিস্,—
(চন্দ্রাবদীর) সহচরীদিগের সহিত তুর্ল কলহ
এড়াইরাছিস্। (পূর্বাকলি-ছিত্ত কহ ধনি কৈছনে'
বাক্যের সহিত অবর। প্রীরাধার সহচরী চন্দ্রাবদীর
স্থীদিগের সহিত তুর্ল কলহ এড়াইরা প্রীকৃষ্ণকে
কিরপে হতপত করিরাছিলেন,—"বিদ্যাধারণ নাটক
অবলম্বনে ১৪৫৭ সংখ্যক প্রের ব্রণিত সেই ঘটনা
পিল্লা সহচরী' ইত্যাদি বাক্যে ইঞ্জিত করা হইরাছে।)

निवान 13

ভন ভন সৰি তোহারে কহিরে
আতৃক রভসং-কেলি।
পিরার সহিছে থেলিতে থেলিতে
তৈ গেলুঁ একই নেলি।
আবির লইরা ফ্রানে কেওল
করে কচালিরে জাঁবি।
থেনই সময়ে ব্যানণ চুম্বরে
ভারে কের্ছ নাহিণ কেনি।
পিচকারি বেন ব্যানণ চুম্বরে
অক্ষণ বর্ণ নীর।
প্রম্ম কি নারী

হেন বেলে পিরা নিরড়ে আসিরা হাসিরা কয়ল কোরণ। এ উদ্ব-সীতিদ পিরতি-আরতি

বন্ধুয়া জানয়ে ভোরু ॥৩২॥১৪৫৬॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ২০০৯ সংখ্যক পদ।
২। 'রহদ' প-র-সা। ৩। 'রেগ' ক, খ, খ, চ।
৪। 'বরানে' প-র-সা। ৫। 'নেহে' প-র-সা।
৬। 'বেন' প-র-সা। ৭। 'কোরে' প-র-সা।
৮। 'চিতে' প-র-সা। ৯। 'ভোরে' প-র-সা।

थाननी ।>

শুন খালুক কোতুক-কাল। মীললং যব হাম নাগর-রাজ। हिल्लाविन निक जरहित स्मिन । ব্যাপ্তল কামু সঞ্জে করইতে কেলি। ভৈখনে ছব গড়ে হেবপু হান। বুৰহি যুধ কয়ল এক ঠাম। **ज्या**षिक जानि मीनन (भात्र । বছভর কাশু উড়ারল সোর। काश्व-त्राप नकन कत्रन्ँ व्यक्तित्रात्र । मात्रि भूक्रव कोई नथई ना भात्र । ঐছনে কামুক সাঝহি খেরি। আনসু । নিধুবনে সো নাহি হেরি। खादी वाहे नवह दाहर अक श्रीम। शिन्ना मरक रथनि शूतात्रन्ँ° काम ॥ সো সৰ কি কহৰ পুছ>॰ সধি-পাল। গোৰ্মান কৰ পূৱল আল 1001/8691

পাঠাত্তর

)। देश क्षेत्रका श्रीवह २०३० मःशास वह। १६३ अझिलाल' क, क्षेत्रका। ७। 'द्रव' क, १९४६ में १५७० व क्षित्रका क्षेत्रका। ८। 'व्यक्तिवादी'

খ। ৬। 'পারি'খ। ৭। 'আনল'ক; 'আরসু প-র-সা। ৮। 'হই' ক। ৯। 'পুরাওল' খ। ১০। 'কহ'ক।

শিশুড়া।>

আবিরে অরুণ

गव वृन्मायन

উড়িয়া গগন ছায়।

বন্ধুৱা আমাৰ

হিয়ার মাঝারে

কেন্ত্ৰ না দেখিতে পায়।

চপল নয়ন পি৷

পিচকারি যেন

নৰ অমুৱাগ-

ফাণ্ডঃ ভরগ

তমু মন করি কোর।

नित्र (४० नत्रन त्यांत्र।

শুধুই শ্রামল

চন্দন চুয়াৰ ভাতি।

অজ-পরিমল

वज्रदन वज्रदन

অফ্লণ অখর

মোর নাসা জমু

खमनी छमण्ड

তত্তি পড়ল মাতি 🛭

नयूरन नयूरन

क्तरत्र कत्रदा भागा।

মুছ্ কলেবৰ

वाँशियां क्यून क्लि।

রসিক নাগর বসের সাগর

কয়ল এছন কাল।

এ উদ্ধৰ ভণ

हरूत छ जन

রসবতী রস-রাজ 1981>8৫৮1

পাঠান্তৰ

)। हेरा श-त-ना श्वित २०३३ नरपाक शव। १। 'दकर' क, श-त-ना। ७। 'वित्रवि' श-त-ना। ८। 'कोधता' थ। ८। 'ववत समर्थ' श-त-ना।

চীকা

८—৮। "5गग" रेखानि। (बेहारकत्र) इक्न नदन दन निक्रकांदी वर्षाद करा इक्न निक्र ভারীর স্থার প্রেমরস বর্ষণ ভরিতেছে, এরপ আনার
নমন সৃষ্টি ভরিল ; (এবং) নবীন অন্থরাপ-রাপ
ভাওতে (উভরের) দেহ ও বনকে একজ করিরা
(সর্বাল) পূর্ণ করিল। তুলনা কর্মন,—
"নিরপত বরন নরন-পিচকারিত
প্রেম-গুলাব মনহি মন লাগ।
ছহঁ অন্ধ-পরিমল চুরা চন্দন কাওরন্ধ ভহিঁ নব অন্থরাগ॥"

-- छेष्वत्रात्र ; श-क-छ, ১৪७१ शह ।

यहिनी ।) কি কহব সো রসং-রজ। কানু খেলই মরু সল। ত্বল স্থা করি বাম। नमूर्य पाँडायनु श्रम । ললিভা ভাহিনে রন্ত্* মোর। হেরি কামু ভেল ভোর[়] 🛊 করহি খসল পিচকারি। এতে পড়ল তমু চারি। সচকিত হোইণ হাম ধাই। কোরে অগোরলু তাই। बन्नात बन्नात वर एक । ইবত খাস ভব ভেল । करत कति मोक्रिय मुच्छ। (देवहें एक विषय्य वृक्ष । ষ্ণকে চেতন বৰ হোই। क्रीकिएन एवज्रेट लारे। कररे बारे कार्ड। (भन। रेर प्रथ विदि कांद्र त्यम । शंग निक পরিচয়-বারী। क्ष्य करमूँ पति भानि । क्षे मूच रहतरे त्यात । शय उर्व दर्गात्व जात्नाव

স্থিপণ সচকিত থারি।
বরনে দেয়ল তব বারি।
বৈঠল কুঞ্চিই বাই।
তহিঁ সব কহলুঁ> বুঝাই।
তথ্য-বিচিত্র-বিলাগ।
কহ পোবর্জন দাস ॥০৫॥১৪৫৯॥

পঠিবর

>। ইহা প-র-সা পুথির ২০১২ সংখ্যক পদ।
২। 'সব' ক, চ, প-রসা। ৩। 'কছ' খ। ৪।
'বিভার' ক, খ, চ, প-র-সা। ৫। 'হই' क।
७। 'করি মালিরে' ছলে 'কর মালই' প-র-সা।
१। 'সুখ' ক, চ, প-র-সা। ৮। 'বুক' ক, চ,
প-র-সা। ৯। 'কহল' ক, খ, চ, প-র-সা।

অথ অভিসারামুরাগ।
দৃত্যক্তি।

ছুটা।
আজু কোই কুলৰতি নাহি বাহিরাব।
বমুনা সিনানে কোই নাহি বাব॥
বিপতি পড়লং আজু যুবতি-সমাজ।
সখাগণ সলে খেলই যুব-রাজং॥
পছহি পছং খেরল চৌ ওরং।
সব ব্রজ-বাবক তাহে আপোর॥
বটু সূবলং ছহঁ ভেল এক ঠান।
বুধহি যুখ করল নিরমান॥
ভারি পিচকারি লেই সভে হাত।
বন বরিধণ জমু পড়ভহিঁং মাধ॥
আবিরে লা বেরিলেং লীগ বিশিক্ষঃ।
রঙ্গে বসন বহি বাওত তীগুং॥
কহ গোবর্জন রহ গুব মাহ।
ক্রোই জনিংই সন্ধির হাড়ি বাবিরাহ।

100121001

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ২০১০ সংখ্যক পদ।
২। 'পছব' খ। ৩। 'রজ-রাজ' ক, খ, চ,
প-র-সা। ৪। 'পছ বিপছ' ক, খ, চ। ৫।
'চছুর' ক। ৬। 'রুবল' ক, খ, চ, প-র-সা। ৭।
'পছু ভহি' প-র-সা। ৮। 'হেরই' প-র-সা।
৯। 'দির বিদির্গ ক, চ, প-র-সা। ১০। 'ভিগ'
ক, চ; 'ভিক' প-র-সা। ১১। 'জানি' ক,
প-র-সাঃ।

काटमान ।>

ষন সুরলী-ধননি ডলফ-শবদ শুনি
উমড়ই হাদয় বিশাল।
হো হো হোরি সবনে তহি গরজন
উনমত যত ব্রজ-বাল॥
মাঝহি মনমথ-রাজ।
নবম্বন জরণ- বরণ তমু হেরইডে
'ডেজই কুলবতি লাজ।গ্রুথ।
চুয়া চন্দন মুগ-মদ কুরুম
পিচকারি ভরি সভে লেই।
সব জন কোণে কোপিত হইণ ত্রু তুরুঁ তুরুঁ

ইছ দিনে কৈছে রহিতে কহ খর মাহাণ সো স্থাপে হোই নৈরাশ। গণ সঞ্জে আজি বাই ডহিঁছেরব সংজ্ঞ গোবাইন দাস ॥৩৭॥১৪৬১॥

नव्रन व्यवप श्रद (परे ।

পাঠান্তর

े हिंदो शन्त-जा श्रुवित २०३८ नरवाक श्रंथ।
२१ 'केयकहें शन्त-जा। ०। 'द्रिति' कः 'द्रिते'
व। ०। 'शतकक' शन्त-जा। ०। 'कित नरक'
व्हान 'किति' कः 'कित किति' शन्त-जी। ०।
'द्रिक्ति' कः। १। 'द्रिक्त' कः। ४। 'ततन नक्तन'
व्यक्तिका १००। 'वाक्त' शन्त-जा।

नगढ ।

ব্রজকে চেঠনাং খেলত হোরি।
সক্ষমি গোকুল-বাল বিজোরি।
বাটমি বাটমি রহই আগোরি।
আবির গোলাব রচই বাককোরিণ।
কেশর-কুত্ম গোলালকিং রজ।
ভারি পিচকারিছাঁ ভীগতং অজ।
ভামত্দার মনমোহন রায়।
সহচর সক্ষমি কাণ্ড খেলায়।
তান্ত্র সক্ষমি কাণ্ড খেলায়।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০১৫ সংখ্যক পদ।
২। 'চিঠোনা' খ; 'চেটোনা' চ। ৩। 'ঋদাল'
ক; 'সোলাপ' প-র-সা। ৪। 'বকা ঝোরি' দ।
৫। 'কুছ্ম গোলালকি' ছলে 'কুছ্ম গোলালকি'
ক, খ; 'কুছ্ম গোলাবিক' প-র-সা; 'কেশর' ৩
'কুছ্ম' একই পদার্থের নামান্তর; হুডরাং 'কেশর
কুছ্ম' ইড্যাদি পাঠই স্মীচীন। ৬। 'ভিগড' ফ,
চ, প-র-সা।

ही का

 ৫। "কেশর" ইত্যাদি। কেশর-কুথ্য অর্থাৎ কুলুর ও গুণাগ-নামক রঞ্জন-য়বোর রং অর্থা কেশর (কুলুম), কুন্ম অর্থাৎ কুলুগ্ত-পূলা ও গুণালের রং।

चथ ट्रांति श्रकातास्त्रः यथा।

नगण 15

নীলাচলে কনকাচলং গোরা।
গোবিন্দ-ফাগু-রক্ষে ভেল ভোরা।
দেব-কুমারি নারিগণ সক্ষেণ।
পুলক-কদম্ব-করম্বিত অঙ্গেণ।
কাগুরা খেলত গোর-তত্ম।
গ্রেমক কুধা-নিম্মু মুরতি কমু ৪ঞা

কাণ্ড-অরুণ তমু অরুণহি চীর।
অরুণ নয়নে বহে অরুণহি নীর ॥
কণ্ঠহি লোলত অরুণিত মাল।
অরুণ ভকত সবং গাওরে রুগাল॥
কভ কভ ভাব বিধারল অকুণ।
নয়ন চুলাওত প্রেম-তর্ক্ত ॥
হেরি গদাধর লক্ত লক্ত হাস।
সো নাহি সমুম্বল গোবিন্দ্রদাস ॥৩৯॥১৪৬৩॥

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০১৬ ও প-র পৃথির ৩০।১ সংখ্যক পদ। ২। 'কলক কাঁচন'থ। ৩। 'সদ'ক, থ, চ। ৪। 'অদ'ক, খ, 'চ। ৫। 'অফুণহি'প-র। ৬। 'স্ণ'প-র। ৭। 'অদ্দে' প-র-সা, প-র। ৮। 'তর্দ্ধে' প-র-সা, প-র।

পাঠান্তর

रगढ ।>

খেলত ফাণ্ড গোরা বিজ্ঞ-রাজ।
গদাধর নরহরি দোঁহার সমাজ।
নিতাই অবৈত সহ খেলইং রসাল।
খেনে গালি খেনে কেলি প্রেমে মাতোরালও।
সার্ব্যতোম সজেও খেলে রায় রামানক।
শ্রীবাস স্বরূপ সহ মুরারি মুকুক্দ।
দোঁহে দোঁহেও খেলে ফাণ্ড করি হরি-ধ্বনি।
গদাধর সহ খেলে গোরা বিজ্ঞমণি।
কৈই নাচে কেই গার করতালি দিয়া।
দীন কৃষ্ণদাসে করে জানক্দে ভাসিরা।

পাঠান্তর

. 18 - 13 8 : 81

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০১৭ সংখ্যক পদ। ২। 'থেলাই' খ। ৩। 'রাভরার' প-র-সা। ৪। 'সহ' খ, প-র-সা। ৫। 'কোহা' খ।

जन्म जान । ३

मध्विभूतछ वमरछ।

খেলঙি গোকুল- যুবভিভিক্লজ্ল-

পুষ্প-স্থান্ধ-দিগন্তে ॥ এ॥

প্রেম-করম্বিত-

রাধা-চুন্দ্বিভ-

मूथ-विधूक्त<**म**श्मानी ६

ধুত-চন্দ্ৰাবলি-

চীক্ল-করান্সুলি-

রিহ নব-চম্পক-মালী।

নব-শশি-রেখা-

লিখিত-বিশাখা-

তমুরধ ললিতা-সন্ধী।

শ্রামলয়াঞ্চিত্-

বাহুক্তমঞ্চিত-

পত্মা-বিভ্রম-রক্ষী ।

ভন্তা-লম্বিত-

শৈব্যোদীরিত-

রক্ত -রজোভরধারী।

পশ্য সনাতন-

मुर्खित्रद्रः चन-

वृत्मावन-क्रिकात्री ॥8>॥>8७৫॥

পাঠান্তর

>। ইং। প-র-সাপুথির ২০১৮ ৩ প-র পুথির ৩০।৪ সংখ্যক পদ। ২। 'খ্যামলয়াপ্রিড'ক, খ। ৩। 'বক্তু' প-র-সা।

ग्रेका

১—১৫। "মধুরিপু"রিত্যাদি। অন্ধ বসজে
মধুরিপু: প্রীকৃষ্ণঃ পোক্ল-ব্রতিভিঃ বেগতি ক্রীড়তি।
ভীচুশে বসজে ?—উজ্জলাঃ নির্মাণঃ পূলারগন্ধিবিগলাঃ কুল্ল-বাসিত-বিগল্পরালাঃ বন্ধিন তথাভূতে।
ভীচুশঃ প্রীকৃষ্ণঃ ?—ব্রেম-ক্রমিতা অনুরাগ-মুক্তা
বা প্রীরাধা তরা চুনিতো মুধচল্লো মুলঃ চল্লাব্রোধা তরা চুনিতো মুধচল্লো মুলঃ চল্লাব্রোধা তরা চুনিতো মুধচল্লো মুলঃ চল্লাব্রোধানাক্ষরালা প্রাধানাক্ষরালাভিশ্যঃ বাল্লাক্ষেত্র
বাল্য-ধারণে প্রীরাধারাক্ষরালাভিশ্যঃ বাল্লাক্ষেত্র
ব্যাক্তিকা প্রিভা বিশাবারাক্সব্যে প্রাকৃত্যঃ।

ভবা লিভারাঃ সলো বিভতে বতেতি তথাভূতঃ। ভাৰসমা ভরারা শ্রীরাথা-স্থ্যা অঞ্চলবাহ্মতিভূলঃ প্রায়াভ্যাম-চক্রাবলি-স্থ্যা উদ্ভিতবিশ্রমরণী উল্লিজ-বিলাসকোত্নী। পুন: কীলুনঃ পূ
ভ্রমরা স্থা। আগবিত্তরা মুক্তরা শৈব্যরা উদীরিত
উচ্চালিভ উৎক্ষিপ্তা বে৷ লোহিত-চূর্ব-সমূহতঃ
বারমিতৃং শীলং বভেতি তথাতুতঃ। অরং বনক্রম্থাবন-ক্রিফারী বলবদ্দাবনাহ্রামী স্নাতন-মূর্বিঃ
স্নাতন-বেহঃ পক্ষে স্নাতনভ্রামকঃ অভা অতি
নিভাঃ বাসক্রপ ইতি স্নাতনা। অশাদিখাৎ অচ্।
ভাতুশী মূর্তিঃ বতেতি তথাতুতঃ প্রভাবলোকর।

অমুবাদ

১—১৫। পূপা-ছারভি নির্মাণ আকাশবিশিষ্ট বসত্তে আৰু মধুরিপু শ্রীকৃষ্ণ গোকুল-মুবতিগণের সহিত ক্রীড়া করিজেছেল ॥ক্রা অহ্বরাগরুকা শ্রীরাধা ইবাঁর চক্র-বন্দল চুখিত করার, ইনি আনক্ষোৎসবমুক্ত হইরাছেল; ইনি চক্রাবলীর হ্মন্দর-করাসুলি ও নবচম্পাকের মাল্য ধারণ করিরাছেল। ইনি
(নথাড-রূপ) নব-চন্দ্র-কলা ঘারা বিশাধার কলেবর
আজিত করিরাছেল ও ললিতার সঙ্গে বিরাজিত রহিরাছেল; ইনি শ্রামলা কর্তৃক ধৃত-বাহ ও পলার,
বিলালোক্রেক দর্শনে ক্রোডুক্যুক্ত। দেও! ইনি
ভক্রা স্থী সহকারে লৈব্যা কর্তৃক উৎক্ষিপ্ত লোহিতক্রু-চুর্ম-ধারী বুক্ষাবনাহ্রালী নিত্য (পক্ষে স্নাতন
ক্রোড্রানীর শর্প) বেহ-ব্রিলিট।

क्यां जान ।>

বিদ্ধানাপিত-তোব-তরকন্। বাবে জন্ম বুলাবন-বলন্থ। বাবে জন্ম বুলাবন-বলন্থ। বাবে নাটাবনিক ক্লোক-থাকা। বিদ্যালয়িক বাবেতি ব্যবস্থ। भावि छ्ल-घोडूछ-**मेना**। सम वः**मे**व मनाजन नोगा ॥३२॥>८७०॥

পাঠান্তব

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০১৯ ও প-ন্ন পুথির ৩০।১০ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ'ন্থলে 'আসাবিনি' প-র। ২। প-র পুথিতে 'রাধে' ইভ্যাদি চরণ বারা পদটি আরম্ভ করা হইরাছে।

টাকা

১----। "ৰতু-রাকার্পিতে"ভ্যাদি। ছে রাধে। वृत्यावनक तकः विनामः एक अनोकृतः व्यवस्थाकः পখ্যেতার্থঃ। কীদুশং বিশাসম্ १--- ঋতু-রাজেন বসজেন व्यर्भिकारकारकाः धारमान-नहर्या। विचन् छवा-ভূতম্। তমেব বিলাস-প্রকারং দর্শরতি মলরামিলে-णाविष्ठिः। यनश्चनित्नम् **अक्नाशान्यम् निक्छिः** লাকা উপদিষ্ট-নৃত্য-কলা উচ্ছনহান্তা খেতপুলজনের হাসকারিণী লভাবলিঃ নটভি নৃত্যভি। ইহাজ ঃসা-বনে পিকতড্রিঃ কোকিলকুলং মুদদং বাদয়তি কল-नरिवर्गवन-ध्वनिमञ्करताठीठि छातः। अञ्चत्रवदः अबुबळ्टान द्यामांकडामहर उक्कार তঃর্ত্তনাদিক্ষিতি শেষঃ। অন্তত:শীলা বিচিত্ত-চরিত্রা ভূক-ঘটা ভ্রমরপঞ্জিঃ গায়তি ভরুমশলৈঃ গীতং করোভি। কেব ? মম বংশীব। সাণ-সনাতনী চিরস্বারিনী দীলা কেলিইডাঃ। शक्त मनाउद्यम शहकवा वर्षिका मौना वकाः।

चार वान

১—৮। তে শ্রীরাধে। বসত নৃপতি কর্তৃক
জনিতানল বুলাবনের বিলাল অবলোকন কয়।
বলরানিল ভয় কর্তৃক নিকিত-নৃত্যালীলা (পুলক্ষেকে)
উজ্জন-হাত্ত-কারিলী লভাবলি মৃত্যু করিভেছে।
কোকিল-কুল (কল-নানক্ষ্যে) মৃথপ বাজাইভেছে
এবং (অন্তর-ক্ষেণ্ড) রোযাঞ্চিত-বেন্থ ভরুত্বল (নৃত্যু)
বর্ণনি করিভেছে। অনুভ-চরিত্র ক্ষম-প্রত্যুক্ত স্বাভ্য-(প্রত্যুক্ত-বর্ণিত)-শীরা-বিশিষ্ট আরার
ক্ষ্মীর করি গাল ক্ষ্মিক্ষেত্র

কাগু-জরুণ ততু অরুণহি চীর।
অরুণ নরনে বহে অরুণহি নীর।
কঠিছি লোলত অরুণিত মাল।
অরুণ ভকত সবং গাওয়ে রুগাল।
কত কত ভাব বিধারল অকুণ।
নয়ন চুলাওত প্রেম-তরক্ষ।
হেরি গদাধর লক্ত লক্ত হাস।
সো নাহি সমুবল গোবিন্দদাস।৩৯॥১৪৬৩॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ২০১৬ ও প-র পৃথির ৩০।১ সংখ্যক পদ। ২। 'কনক কাঁচন' ও। ৩। 'সল' ক, ও, চ। ৪। 'অল' ক, ও, চ। ৫। 'অলণহি' প-র। ৬। 'পণ' প-র। ৭। 'অলে' প-র-সা, প-র। ৮। 'তরকে' প-র-সা, প-র।

बमस्य १३

থেলত ফাগু গোরা বিজ-রাজ।
গদাধর নরহরি দোঁহার সমাজ॥
নিতাই অবৈত সহ থেলইং রসাল।
থেনে গালি খেনে কেলি প্রেমে মাতোয়াল॰॥
সার্ববডৌম সজে৽ খেলে রায় রামানক্ষ।
শ্রীবাস স্বরূপ সহ মুরারি মুকুক্ষ॥
দোঁহে দোঁহেং খেলে ফাগু করি হরি-ধ্বনি।
গদাধর সহ খেলে গোরা বিজমণি॥
কেহ নাচে কেহ গায় করতালি দিয়া।
দীন কুঞ্চদাসে কহে জানক্ষে ভাসিয়া॥

পাঠান্তর

18013848H

১। ইহা প-র-সাপুথির ২০১৭ সংখ্যক পদ। ২। 'থেলাই' থ। ৩। 'মাতরার' প-র-সা। ৪। 'সহ' থ, প-র-সা। ৫। 'দোহা' থ। - তথা রাগ।১

मधुतिश्रुत्रस्य वमरस्य ।

খেলভি গোকুল-

যুবতি ভিক্ল জ্ল-

পুষ্প-স্থান্ধ-দিগত্তে ॥ধ্ৰা

প্রেম-করন্বিত-

রাধা-চুন্মিড-

मूथ-विश्रुक्रप्मवणाली।

ধুত-চন্দ্রাবলি-

চারু-করাঙ্গুলি-

विर नव-हण्लक-भानी ।

নব-শশি-রেখা-

লিখিত-বিশাখা-

তমুরথ ললিতা-সন্ধী।

শ্যামলয়াঞ্চিত্র-

বাছকুদঞ্চিত-

পত্মা-বিভ্রম-রজী ।

ভদ্ৰা-লম্বিত-

শৈব্যাদীরিত-

রক্ত -রজোভরধারী।

পত্য সনাতন-

মূর্ত্তিরয়ং ঘন-

वृन्मावन-क्रिकाती ॥४८॥५८॥

পাঠান্তর

১। ইংা প-র-সা পুথির ২০১৮ ও প-র পুথির ৩০।৪ সংখ্যক পদ। ২। 'শ্রামলরান্ত্রিত' ক, ধু। ৩। বিজ্ঞু' প-র-সা।

विका

১—১৫। "মধুরিপু"রিত্যাদি। অভ বসত্তে
মধুরিপু: শ্রীকৃষ্ণ পোকুল-যুবতিভি: পেলতি ক্রীড়তি।
কীর্ণে বসতে ?—উজ্বলী: নির্ম্বলাঃ পূলারপত্তিদিগলাঃ কুষ্ম-বাসিত-দিগল্পরালাঃ যদিন্ তথাভূতে।
কীর্ণঃ শ্রীকৃষ্ণঃ ?—প্রেম-কর্মিতা অভ্যাস-যুকা
বা শ্রীরাধা তরা চুবিতো মুখচল্লো বত অবাভূতঃ
তেন উৎসবশানী আনন্দোৎসববান্। মুক্ত চল্লাবল্যাশ্চাককরাকুলিঃ বেন তথাভূতঃ। তথা নকচল্লাক্ষাল্যবারী। শ্রীরাধা-বর্ণ-সার্বাহ চল্লাক্ষ
মাল্য-ধারণেন শ্রীরাধারাম্ল্রাসাতিলরঃ বাজাক্ষ।
পুনঃ কীয়ুণঃ ?—নবশ্লিরেণাতিঃ অর্চ্ছাক্ষ্মিন্
ন প্রিইক্লিখিতা অভিতা বিশাধারাজন্ত্বের প্রাকৃষ্ণঃ।

ভবা ললিভারা: সলো বিশ্বতে বভেতি তবাভূতঃ। ভাৰণৰা ভরারা। প্রীরাধা-সব্যা অঞ্চতবার্থ্ণ ভূতঃ প্রারাভ্যাম-চন্দ্রাবলি-স্ব্যা উদ্ধিতবিশ্বররণী উল্লিক্ত-বিলাসকোত্কী। প্ন: বীদৃশ: পূ
—ভদ্রবা স্বাা আল্বিভরা মুক্তরা শৈব্যরা উদীরিত
উল্লালিভ উৎক্রিধাে বাে লোহিভ-চূর্ব-সমূহতং
বার্রিভূং শীলং বভেতি তপাভূতঃ। অরং বনবৃন্ধাবন-ক্রিকারী বলবব্নাবনাম্রাণী সনাতন-মূর্বিঃ
সনাতন-কেইং পকে সনাতন স্কর্মামকঃ অভা অতি
নিভাঃ বাসরপ ইতি সনাতনা। অর্শাদিশাৎ অচ্।
ভাতুশী মূর্বিঃ বভেতি তথাভূতঃ পভাবলোকর।

অফবাদ

১—১৫। পূপা-ভ্রতি নির্দ্ধল আকাশবিশিষ্ঠ
বদক্তে আবা মধ্রিপু শ্রীকৃষ্ণ গোকুল-ব্বতিগণের
সহিত ক্রীড়া করিডেছেন ॥বা অন্তরাগ্রুকা শ্রীরাধা
ইহাঁর চন্দ্র-বদন চুহিত করার, ইনি আনক্ষোৎসববুক্ত হইরাছেন; ইনি চন্দ্রাবদীর স্থান্তন-করাকুলি
ও নবচম্পক্রের মাল্য ধারণ করিয়াছেন। ইনি
(নথাছ-ব্রপ) নব-চন্দ্র-কলা ছারা বিশাধার কলেবর
আন্তিত করিরাছেন ও ললিতার সঙ্গে বিরাজিত
রহিরাছেন; ইনি শ্রামলা কর্ত্ব শ্বত-বাহ ও প্রার
বিলালোক্রেক দর্শনে কৌতুক্যুক্ত। বেধ! ইনি
ভ্রা স্থী সহকারে শৈব্যা কর্ত্ব উৎক্ষিপ্ত গোহিতকৃষ্ণ-চুর্ল-ধারী বুন্ধাবনান্তরালী নিত্য (পক্ষে সনাতন
গোন্থানীর শরণ) বেহ-ব্রিলিট।

wei win to

नकु-श्रेमार्निक-एडाय-उत्रवस् । श्रोत् कुळ उत्तारत-उक्रम् । सत्त्रादिश-कुळ-लिक्क-शाळा । कुरिय अवीदिश-कुळ-राळा । গায়তি ভূক-ঘটাভূত-শীলা। মম বংশীৰ সনাতন লীলা ॥৪২॥১৪৬১॥

পাঠান্তর

- >। ইহা প-র-সা পুথির ২০১৯ ও প-র পুথির ৩০।১০ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' ছলে 'আসাবরি' প-র। ২। প-র পুথিতে 'রাধে' ইত্যাদি চরণ বারা পদটি আরম্ভ করা হইরাছে।

টাক1

১—৮। "ৰাজু-রাজার্পিতে"ত্যাদি। হে রাবে। वुन्नावनच ब्रह्मः विनामः एक जनोक्क व्यवत्नाकः অপিতাভোষতরকা: প্রমোদ-লহর্য্যো বিশ্বন ভ্রথা-ভূতম। তমেব বিলাস-প্রকারং দর্শরভি মলয়ানিলে-ত্যাদিভি:। যলমানিলেন গুরুণাধ্যাপকেন শিক্ষিত-नाजा जनमिष्ट-न्डा-क्ना खेळागराजा (चंड्यूमळ्टान्स् হাতকারিণী লতাবলিঃ নটতি নৃত্যতি। ইহাত বুন্দা-বনে পিকতিতিঃ কোকিলকুলং মুদলং বাদয়তি কল-नरिवर्गवन-ध्वनिययकरताठीि छातः। अङ्ग्रवन অভুরচ্চলেন রোমাঞ্চিদেহং ভক্রুলং পশ্রতি ভঃর্ত্তনাদিক্ষিতি শেষঃ। অন্তত-শীলা বিচিত্র-চরিত্রা ভূক-বটা অমরণভ জি: গারতি ঋঞ্দশকৈ: गीजः करताजि। क्व ? यम वश्मीव। कोषुनी সা ? -- স্নাত্নী চির্ম্বারিনী শীলা কেলিইভা: । পক্ষে স্নাতনেন পদকর্ত্তা বর্ণিতা লীলা যক্তাঃ।

অমুবাদ

১—৮। হে প্রীরাধে। বসন্ত নুপতি কর্তৃক
অনিতানন্দ বুলাবনের বিগাস অবলোকন কর।
নগরানিল শুক কর্তৃক শিকিত-নুত্যলীলা (পুলজ্জেল)
উজ্জল-হাত্ত-কারিনী লভাবলি নুভ্য করিতেছে।
কোকিল-কুল (কল-নাৰজ্জেল) সুদল বাআইভেছে
এবং (অভ্যানজ্জেল) রোমাঞ্চিত-বেহু ভরুতুল (সূত্য)
হর্পন করিভেছে। অভ্যান্তির অবস্থল (সূত্য)
হর্পন করিভেছে। অভ্যান্তির অবস্থল (সূত্য)
হর্পন করিভেছে। অভ্যান্তির অবস্থল (স্থান্তির আরার

তথা হাপ ৷১

নটবর-ভঙ্গী কাঞ্জ-রজী নাগর অভিনব নাগরি সঙ্গ। ঋতুং-পত্তি-গীত• চীত° উমভায়ল **ट्टित वनन त्रमावन-त्रण**ः ফাগুয়া খেলত নওল,-কিশোর। बादा-ब्रमन ब्रमनि-मन-हांब ॥ अग স্থন্দরিব্রন্দ- 🗸 করে কর মণ্ডিভ মণ্ডলি মণ্ডলি মাঝাই মাঝ। নাচত নারিগণ্ ঘন পরিরস্তণ **চুম্বন-লুবধল** নটবর>-রাজ ॥ কামু-পরশ্-রসে অবশ্ > রম্পিগণ অলে অকে>২ মিলি>০ কাঁপি রহু। श्रुतम नवस् मानादश मन ७ वर्भ মোহন > * গোবিন্দদাস-প্রভাগি ॥৪৩॥১৪৬৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০২০ ও প-র পুথির ৩০।৩ সংখ্যক পদ। ২। 'ঝড়ু ঝড়ু' ক। ৩। 'গীডি' ক, খ, घ, চ, প-র-সা। ৪। 'চিড' ক, প-র-সা। ৫। 'হেরি' ইডাাদি স্থলে 'ফিরি রুক্লাবন মদনতরকে' প-র। ৬। 'নলে' প-র। ৭। 'মগুলি মগুলে' খ, 'বগুল মগুলি' প-র। ৮। 'নারবি' প-র। ১। 'গণ' শ-র। ১০। 'নাগব' প-র। ১১। 'জল' প-র। ১০। 'হেলি' প-র। ১৪। 'মনোভব' ক; 'মনম্বণ' ঘ। ১৫। 'গাওড' প-র।

পুনশ্চ मिनाखरत ।

क्यां मात्र ।>

ঋড়-পতি রাধামাধ্য সঙ্গ । বিবিধ বিলাস হোরি-রস-রঙ্গিঞ্চ আরিরে অরুণ হুহুঁ অফ ॥এং॥

অক্লণিড খ্যাম-রাইক প্রভিবিম্ব লাগি। ভরমহি আন त्रमणि मटन मानिहा মানিনি ভেলি বিরাগী। রসিক স্থনাগর রাইক মানং ছেরি মিনতি করত কর কোরি। পীত বসন গলে সাধই পদতলে রাই রহল মুখ মোড়ি । প্রিয়-সহচরি যত কভয়ে বুৰায়ভ স্থ সঞে কাহে বিপরীত। . विक रित्रमाम কহত কাহে ব্লোখলি প্রেমক ঐছে চরীত 1881>৪৬৮॥

পাঠান্তর

ইহা প-র-সা পুথির ২০২১ সংখ্যক পদ।
 বাইক মান' হলে 'বিমুখি' দ; 'রাই মান'
 চ। ৩। 'চরিড' ক, চ, প-র-সা।

তথা রাগ ।>

এ ধনি মানিনি মান নিবারোং।
আবিরে অরুণ শ্রামন স্কুর পর
নিজ প্রতিবিদ্ধ নেহারোণ।
ভূত এক রমণি শিরোমনি রসবঙি
কৌনণ ঐছে জগ বাহ।
ভোহারি সমুখে শ্রাম সঞ্জে বিলম্ব 'কৈছন রস-নিরবাহ।
ঐছন সহচরি- বচন আরুখে মুরি
সরমে ভরমেণ মুখ কেরি।
ইবভ হানি মনে পুন সব জন খেলিং কররে বিনোদ কেলি
পিচকারি করি নিজ হাতে।

বিজ হরিদাসং আবির বোগায়ত
সকল স্থাগণ সাথে ॥৪৫॥১৪৬১॥
পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ২০২২ সংখ্যক পদ।
২। 'নিবার' ক। ৩। 'নেহার' ক। ৪। 'কোন'
ক, খ, প-র-সা। ৫। 'সরমে ধরমে' ক।
৬। 'মিলি' চ। ৭। 'করি নিঅ' হলে 'করি'
ক, 'করি লেরল' ম। ৮। 'চণ্ডীদান' ক।
চণ্ডীদানের রচিত নিঃসন্দিশ্ধ ব্রন্ধ-বোলি পদ পাওরা
মার নাই এবং খ, ম, চ ও প-র-সা পুথিওলিতে
'চণ্ডীদান' হলে 'হরিদান' পাঠ আচে,—এই উতরবিধ কারণে আমরা এই পদটি ছিল হরিদানের রচিত
মলিরাই অম্বান করি।

वमक 13

ফাঞ্ড থেলত বর নাগর-রায়।
রাধা রন্ধিণি বছবিধ গারণ।
হাসি হাসি স্কুলরি মনমথ-রজে।
ফাঞ্চ লেই ভারয়ে নাগর-অলে॰।
রসে ধনধস তমু আধ আধ হেরি॰।
চুরা চন্দন্দ দেই বেরি বেরি॥
চপল নাগর কুচ পরশল ধোরি।
চনকি চনকি মুখ রহলিছাঁ গোরি॥
ফাঞ্চ দেওল হরি লোচন-ওরণ।
মুক্ললাশ্ধনি মুছাঁ লোচন-কোরণ।
ব্যাধিশাহার মুছাঁক গুল গান।৪৬॥১৪৭০॥
গোবিশাহার মুছাঁক গুল গান।৪৬॥১৪৭০॥

विश्व नाव' ऋरण 'कांखवा दथनाव' न-व । 8। 'कांख (गरे' रेकामि क्रम 'काक वावित (मरे शावित-অকে'প-র। ৫। 'রুসে ধসধস' ইভ্যাদি পংক্তি-ৰয় প-র পুথিতে নাই। ৬া^{ল, 'চন্দন} **অলে' ব**। १। 'लाहरन क्यांव' क. थ : 'लाहरन खांव' व. ह । বোধ হয়, লিপিকর-ভ্রমে কোন পুথিতে 'রোর' শক্ষের 'রো' বর্ণটি 'ৰো' লিখিত হওয়ার, উহাই পরে কোন পণ্ডিতম্বত লিপিকর-কর্তৃক 'জো'-রূপে সংশোধিত (?) হইয়া 'লোচনে জোর' এই অমুত পাঠের স্থাট করিয়াছে। ব**ন্ধত: চকুর সন্নিকটে কাও দিলে** স্ভাবতই চকু মুদ্রিত হয় ; স্থতরাং চকু-মুদ্রণের অব-गरत मूच-कृपत्नत উष्क्रांश त्रतिककृषामनि ख्रीकृष কর্ত্তৃক শ্রীরাধার নরন-প্রান্তে কাণ্ড-চূর্ণ নিক্ষিপ্ত হওয়াই স্থানত। 'লোচনে', তাহাতেও আবার 'ৰোৱে' ফাৰ-নিক্ষেপ বৰ্করোচিত কার্য্য; পুক্রোভ্রম ঞীক্ষকে কোনন্ধণেই উহা সম্ভবপর হইতে পারে না। ५। 'मुनन' क, च, च, ठ; '(मानन' भ-व-मा। ১। 'চকোর' क ; 'চকোর' পাঠে ছলোভল ঘটে এবং এ স্থলে 'চকোর' শব্দ প্রয়োগেরও কোন সার্ক-क्छा (मधा यात्र ना। >। 'व्यथत्रहि' हेजाबि গুলে 'অধরহি চুখন করু কত কান' ক, ধ, চ, প-র-সা; 'অধর চুখন তহি করলছি কান' প-র।

७व धार्मानि । अर्थानी ।>

রাধা প্যারি সহ খেলত নন্দত্লাল।
আরুণিত মরকত অরুণ^২ হেমযুত
ঐছন মুরতি রসাল।এ॥
আরুণাথর বর শোহে^{*} ক্লেবর
অরুণ মোডি মণি-মাল।

টপটি পাগ উপরে শিখি-চক্রক' উচ্নি রক্ত গোলাল ।

नांग्राहर

्रे हें के के मान श्रीवर २०२० ७ अना श्रीवर कोट सरवाक श्रीत है। की श्रीवर्ती थे। ०। जिल् পিচকা^e রজে পাখাল। অঙ্গণিত যুবতী-জাল ॥ ব্দরাণিত ভক্নকুল অকণ লতা ফল ব্যুণ ভ্রমরগণ ভাল। অরুণিত শারী শুক শিখি কোকিল উদ্ধব ভণিত রসাল 1891>89১॥ পাঠান্তর

)। देश भ-त-मा श्रुवित २०२८ मध्याक भेगा ২। 'অক্ৰিড' ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'খোডে' দেখ শ্রাম গোরি সখি মেলি। क। ४। 'ठिखक' ४, १-त्र-मा। ४। 'निष्ठ- आविदत्र अक्रम कांबि' क, थ, श-ब-मा।

ভেওট মারুর।১

वृष्णांवरन धूम পড़ल ब्रक्ष रहाति। নওল কিশোর ফাগু-রঙ্গে রঙ্গিমং রলিণি নওল কিশোরি।এ। সবছ সখিগণ মেলি করে লেই ভরি পিচকারি। স্থন্দর-মূখ ছেরি ছেরি সমুধহি ভাম-পুন পুন দেওত ভারি। রোখি॰ খ্যাম পুন श्वम मधा गरम र्वित स्मात⁸ मूथ भाति। অজে ঘন বরিখত পিচকা॰ রক্ত মোছভ° আঁৰি মূৰ মোরি ॥ সহচর সহচরি মটুকি ভরি विविध शक्त क्रम (चांत्रिक । দেয়ত বোগাই রাই শুনি খেলত **उद्या**न मन कात्रि ।शन् 188

গঠিবের

>। ইহা প-র-সা পুশির ২০২৫ সংখ্যক পদ। অরুণিত যমুনা- পুলিন কুঞ্জবন ় । 'নওল' ইত্যাদি পংক্তি ছুইটির ছলে ক পুথির পঠি, वर्षा- 'कांश्व त्राक्त त्रक्ति त्राक्ती नश्चन किर्माती' क्। ७। 'दबारब' क, छ। ८। 'श्रूसबी' প-র-সা। ৫। 'পিচক' ক। ৬। 'রছে' চ। ৮। 'मछेकि मडेकि' थः 'भूषेकि भूषेकि' क, ह, श-त्र-मा। । '(बानि' ५, ६, भ-त्र-मा।

> ७वा मात्र ।> পিচকারি খন হোয়ল ভুমুলং খেলি ॥ঞা मधा ञ्वल क्रिया मण[®]। अप्र अप्र विश দেই করতালি হাসি হাসি রস-রক্ত 🛚 সধী ললিতা বিশাধা সাথে। হাসি খল খল কিত্ৰু কিত্ৰু বলে পিচকারি হাতে ॥ রস-শেখর রসিকা নারি। শ্রম-জল তুত্ বয়ন ভরণ এ উদ্ধৰ বলিহারি ॥৪৯॥১৪৭৩॥ পাঠান্তর

> > Ania ID

)। हेर्रा श-त-ना श्रुवित २०१७ नश्यांक श्रम्।

२। 'कृत्न' ह। ७। 'नरक' भ-त्र-ना । हो 'त्ररक'

প-ब्र-मा ।

व्यम-करन हत्र हत वृद्ध के करणक की भगर जुल्लीय वाग्।

जानक करहे ना वात्र। চামৰ কৰে কোই वीवन वीवर কোই বারি লেই ধায় ১৫॥ তামুল বোগায়ই চরণ পাধালই (कार्ड माहायर याम। ঐছন চুহুঁ তমু শিভল• করল জমু क्रवनत हल्लाक-माम । আর সহচরিগণে वस्विध (मवरन ध्यम-कन कर्यनिहं पृत । ছভ' মুখ হেরই আনন্দ-সারুরে গোবৰ্জন হিয়া পুর ॥१०॥>৪৭৪॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুৰির ২০২৭ সংখ্যক পর। ২। 'ভিগল' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'শীডন' ক।

ভত্তাসুরাগাভিসারোৎকণ্ঠা।

ভণা রাগ।>

কি করব এ গণি মন্দির মাহ।

ইং মধু-যামিনি সব অজ-কামিনি

বুন্দা-বিপিনহি যাহ।

মোরীথ-রজ- তরঙ্গিত শুগামর

বিহরই কালিন্দি-তার।

সোভরি সোভরি মন করভ উচাটন

বজনে না হোরত গীরণ।

বিহরম শুরুজন পরিজন চুরজন

ইং সব বুড়ই ডেহার।

युश-मा हन्त्रन

কুমুমণ হারগণ

যতনে ঝাঁপি লেছ হাত। তামুল কপুরযুত লেই চলহ ক্রত গোবৰ্জন চলু সাধ ॥৫১॥১৪৭৫॥

পঠিক্তির

১। ইহা প-র-সা পৃথির ২০২৮ সংখ্যক পদ। ২। 'হোরি' ক, খ, চ; 'হেরি হেরি' প-র-সা। ৩। 'থির' ক, প-র-সা। ৪। 'কুছ্ব' ক। ৫। 'কপুরবুধ' প-র-সা।

कारमान ।>

অভূ-পতি-যামিনি কালিন্দি-গ্তার।
বিকসিত ফুলচর কুঞ্জ-কুটার ॥
কোকিল-কুলণ পঞ্চম করু গান।
শুঞ্জরি চঞ্চরি করু মধু-পান ॥
চান্দনি রক্তনি উলোরল তারুগ।
স্থানলয় পবন বছই মৃতু বার ॥
ঐছন সময়ে বিহরে মবু নাহ।
কি করব অব হাম মন্দির মাহ ॥
সো স্থাণ যবণ মবু উপজরে চীতা।
শুভি উতক্তিত না মানরে ভীত ॥
কতরে মনোরথ মন মাহা হোর।
বৈহন রক্তসে মিলব পিরা মোর ॥
শুরিতে চলহ স্থি পূরব আশ।
সম্বেহিণ চলবণ গোবর্জন মান ॥৫২॥১৪৭৬॥

পাঠান্তর

)। देश भ-त-ना भूषित २०२० नरवाक भवा २। 'कानिनी' ह, भ-त-ना। ०। 'शर्भ' भ-त-ना। ३। 'कात' भ-त-ना। ०। 'त्य' क, व, ह, भ-त-ना। ७। 'त्रय' व। १। 'हिक' क, भ-त-ना। ৮। 'तरक' क, व, व, ह। ०। 'हम् क्य' व; 'हमक्यि' भ-त-ना। कांटमांव बन्छ ।>

পল্লা স্থি সহ আওল শূনলুঁং ধেলব নাহক সাধ।

বংশীবট-ভট মীলন° ভেল বৃবি

ফাগু-যন্ত্র করি হাত।

जकनि हैंक तांत्रन भवमात।

ঐছন ভাতি রচন³ করি চল স্থি যাই করিয়ে স্ব বাদ ॥ধ্রঃ

ভন্তা খ্যামল- য়া সহং মীলব

যুথে যুথে এক হোই।

সভে মিলি ফাণ্ড- তিমির করি বেঢ়ব লখই না পারই কোই ॥

ঐছনে কামু কেই সভে আওব ভুৱিভহি নিধুবন পাশ।

গোবৰ্দ্ধন কছ আনন্দে খেলছ' পদ্মা পাউ' নৈরাশ ॥৫৩॥১৪৭৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০০০ সংখ্যক পদ।
২। 'শুনলু' ক, চ; 'শুনল' প-র-সা। ৩। 'মিলন'
ক, ধ, প-র-সা। ৪। 'বচন' ক। ৫। 'সহজই'
প-র-সা। ৬। 'মিলব' ক, ধ, প-র-সা। १। 'থেলই'
क। ৮। 'লাউ' চ, প র-সা।

টীকা

>— । "পদ্মা" ইত্যাদি। শ্রীরাধার স্থী দলিতা
বলিতেছেন,—শুনিতে পাইলার, পদ্মা (তাঁহার)
স্থার (চন্তাবলীর) সহিত কাশু-বন্ধ অর্থাৎ পিচন্
কারী হাতে লইরা আদিরাছে; (মনের বাছা এই
বে) লাথ শ্রীক্ষের সহিত (কন্ধ)-শ্রীড়া করিবে;
নোধ হর, (এত ক্ষরে) বংশীবটের নিকটছ (বমুনা)প্রলিনে (শ্রীকৃষ্ণের সহিত তাঁহারিপের) বিদন হইল।
বেনা বিপর্। চল, ব্রৈরপ বোটনা ক্রিরা বাই,
(বাহাতে) সকল পশ্ক শ্বিতে পারি।

৮—১১। "ভজা" ইভ্যাবি। (নামরা আ আ বুধ সহ বাইরা) ভজা ও ভাষণা (বুণেধরীবরের) সহিত সন্মিলিত হইব (এবং) বুণে বুণে (মিলিরা) এক হইরা, সকলে মিলিরা ফাঙ্কর আন্ধনার করিবা (গ্রীকৃষ্ণকে) বেষ্টিত করিব—(বেন) কেইই (ভাঁহাকে) কল্য করিতে না পারে।

১২—১৫। "এছনে" ইত্যাদি। ঐ প্রকারে
প্রীকৃষ্ণকে লইরা সকলে নিধুবনের নিকট লইরা
আসিব; (প্রীরাধার অন্তত্ম সধী-স্থানীর) পৌবর্জন
লাস কহিতেছেন—ভোমরা (প্রভাবিত প্রশানীতে)
আনন্দে (ফল্ক)-ক্রীড়া কর,—(চন্ত্রাবনীর সধী)
পদ্মা নৈরাক্ত প্রাপ্ত হউক।

विवात ।>

মধুর শ্রীর্ন্দাবনে ঋতু-পতি বিহরণে
তরু লভা প্রফুলিভ সব।
ফল ফুলে নম্র ভাল পুম্পোভান-শোভাই ভাল
কোকিল-শুমর-শিধি-রব॥

হোরি-রজে উনমত নানা বল্ল° চমৎকৃত -গার বার বিলসরে শ্রাম।

রাই নিজ গৃহে থাকি জমুরাগে জগমগি গমনঃ-ইচ্ছুক সোই ঠাম ॥ সধী সজে বিনোদিনী কান্তি জিনি সোদামিনী

ভাহে চিত্র অরুণ বসন।
বৈহে চলে পূর্ণচন্দ্র সত্তে লৈয়া ভারাকুল
তৈহে ধনী বার কুঞ্জবন ॥

বহুবিধ বন্ধ সঞ্জে কুছুম আবির রজেও নৃত্য গীতে সভার উল্লাসণ।

भिनम नागत गरम जातिका (यमा तरम मित्रपर तमार्थन गाँग तरहोऽ हर्यानः

The second of th

প্র-র-সা। ৪। 'ৰাইডে' ব । ৫। 'আবে' ক। ৬। 'নৃভাঙ্গীডে' ইভাারি পংক্তিবর ক পুৰি ও ভরষু-বারী ৰটভদার মুক্তিত পুস্ততে পরিত্যক্ত কইয়াছে।

বিহুগড়া ৷>

বিহুরে শ্রাম নবিনং কাম
নবিনং বৃদ্দা-বিপিন ধাম
সক্তে নাবন নাগরিগণ
নব ঋতৃ-পতি-রাভিয়া।
নবিনং গান নবিনং ভান
নবিনং নবিন ধরই মান
নোতৃন গভি নৃভ্যভি অভি

নবিন শবিন ও ভাতিয়া ।
ইবত সরস মধুর ভাব
সরসে পরশে করু বিদাস
রসবতি ধনি রস-শিরোমণি

সরস রস্তসে মাডিয়া। সরস কুত্ম সরস ত্বম সরস কাননে ভেলি ভূষণ^{১১} রসে উনমত কাম্বডি^{১২} কত

সরস জ্ঞার-পাঁডিয়া ।

মধুর কেলি মধুর মেলি

মধুর মধুর কররে খেলি

মধুর
শুলির
শুলির
ক্রিলা সে জ্ফু ক্রিণ ব্যার
স্বাদিন
স্বাদিনস্বাদি

किया एन इस्कें करे व्यय-देख्यू फार्ट्स स्थाप-स्था विष्यू विष्यू स्थायतम्बर्गम रागवर्षमञ्

(द्विता खत्रना इंजिता १८८३) 8१३।

: ीशां<mark>जीख</mark>त

१ हेश क्षाना गुवित १००६ मध्यास ग्रह। १ काम विकास स्टार्ट निवित्त सार्व सम्मानम

ष्टि। ১১। 'कृष्ण' क। ১২। 'बङ्ग्छ' ह, প-র-সা। ১৩। 'बधुवा' च। ১৪। 'बृब्छ' প-র-সা। ১৫। 'গ্রাম' क। ১৬। 'বোহক' च। ১৭। 'নাস গোবর্জন' ক, এ, চ, প-র-সা। ১৮। 'ভরব' ক, খ।

नगण।>

যুথহি যুথ রমণিগণ মাঝ।
বিহরইং নাগরি নাগর-রাজ ॥
বরিখত চন্দন-কুরুম-পঙ্ক ।
নাচত গাওত পরমণ নিশক ॥
ঋতু-পতি রয়নি উজোরল চন্দ।
পরিমল ভরি বহ মারুত মন্দ ।
বাওত কত কত বল্ল রসাল।
কত কত্ত ভাতি ধরইণ করেণ তাল ॥
সারি শুক শিখি-কুলণ কোকিল-রাব।
সোরতে মধুকর মধুকরি ধাব ॥
অপরূপ তুর্তু জন অত্তমু-বিলাস।
গোবর্জন হৈরি বাচুয়ে উলাস ॥৫৬॥১৪৮০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০৩০ সংখ্যক পদ। ২। 'বিছররে' থ, প-র-সা। ৩। 'পর্ক' ক। ৩। 'ধর্রে' ক। ৫। 'কর' থ। '৬। 'শিথি' প-র-সা।

> অথ বসস্ত-বিহার প্রকারান্তর। ভত্ত শ্রিমদেগারচন্দ্র।

> > नगढ 15

নধু-শুভূ বিহরই পৌর কিশোর। স্থাধন-মুখ হেরি আনক্ষে নরহরি পুরুরভূত্তাবে ভেল ভোর।

मविनश् मछ। नव পল্লৰ ভক্তকুল मल्म नवदोश शंग । বন্ধত মধুকর ফুল কুত্ৰমচন্ন সুখদ এ॰ ৰাজু-পতি নাম । গহন অতি স্থললিত মুকুলিত চূত-কোকিল-কাকলি-বাব। স্থাপুনি-ভীরঃ সমীর গন্ধিত चरत चरत मक्ल गांव । मनमथ ताक माज (मरे कोत्र**(**यु॰ বন,-ফুল ফল অতি শোভা। সময় বসস্থ नित्रा-भूत स्मातः **উक्षरणाम-मन-लाखा** १८९।১८৮১।

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০০৪ সংখ্যক পদ।
২। 'নবীন'ক। ৩। 'স্থদর' বা 'স্থদর' ক, ব, চ, পার-সা। 'স্থদর' বা 'স্থদরে' কোন
পাঠেই ভাল অর্থ হর না; 'স্থদ এ' শব্দ ছুইটিই
কোন লিপিকর কর্তৃক 'প্রথম রে' নিথিত হওয়ার
এবং উভর শব্দের মধ্যের ফাঁকটি কোন লিপিকর
কর্ত্ব পরিত্যক্ত হওয়ার এই পাঠ-বিত্রাটের স্থাটি
করিবাছে, অস্থান হর। ৪। 'তীরে' ক, ব,
প-র-সা। ৫। 'নেই ফাররে' ছলে 'লেই ফিররে'
ক, চ, 'কররে বন' পার-সা। ৬। 'নব' ক।
৭। 'প্র ক্ষরে' ছলে 'প্রন্দর' ক।

পাঠান্তর

অভিগার।

थानने ।>

সালল রসবভি সহচরি সল।
মনস্থ-সমর মন্থি মন রজ।
কালিজি-কুলে নিকুঞ্জ মাধা।
বল-কৃষি অভি অ্ললিক সাল্য

শকু-পতি চমু-পতিং নৰ পরবেশ।
আওল বিপিনে রচন করি বেশ ।
মদন-কুঞ্জ মাহা শ্রাম রণ-বীর।
সাজলি তহিঁ ধনি সমরে স্থীর ।
তাহনে হেরইতে কামুক্ত পাল।
কহইতে আওল বলরাম দাস ।৫৮॥১৪৮২॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ২০০৫ সংখ্যক পদ। ২। 'মৃণতি' (१) प; 'চুম্পতি' প-র-সা।

দুভাক্তিঃ বৈপরীত্যরসোচিতা যথা।

शंकात 15

যাকর মাক হেরি মুগ-রাজং। **करत्र रेश्वेम**॰ शिद्धि-कव्यत्र मात्र ॥ं শুনইভে চমকিত' সবহু মহল। **চরণ** हि स्मांभन निष्य श्रि-खन ॥ व्यानि (परे निष लाइन-प्रजी। वन भवरवन्त नवह क्वत्री। मजन-कनम भट्यांश्व (कांत्र। তঁহি নব পল্লব অধর উজোর । टोनिटम॰ मधुकत मळ छठात । ঋতু-পতি যোধে ভেল° **আঞ্চ**নার ॥ **এकिन इक्रांग मरनात्रक मार ।** पुरु कति क्कूक क्यूग ग्रांट । च्य कि कत्रव रति कत्रक्ष विष्ठाति । ভূরা পর স্করি সাজল ধারিণ । এই। **ट्यां**ठन-वाटन क्यून महकान । मिन निम जनके (क्ल क्लिकान 🛊 वर क्टब भवना कुष्ट्रक हार्ग्यः। . चन अति सञ्चा विशा शहर कि स्वास কুন্ম-বিশিধ যব লেওব হাত।
পড়ব কুন্ম-শর বন্ধর-বিঘাচ্য ।
বিধুমুখি নিধুবন্য -সমরে স্থার।
যতনে পঠারলা শুভু-পতি বীর॥
সোই শুভ করব তহিঁ বীরক দাপ্য ।
তাকর কোন সহব পরতাপ॥
সো যব আওব রক্ষক ঠাম।
কহ বলরাম কি হয়ে পরিণাম দাও ১৮১৪৮৩।

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ২০০৬ ও প-র পুথির
১৬।১৫ সংখ্যক পদ। ২। 'মৃগক্লরাজ' ক, খ,
প-র-সা। ৩। 'শৈঠলি' ক, প-র। ৪। 'সচকিড' ক; 'চমকত' প-র-সা; 'চমকই' প-র।
৫। 'চৌদিগে' ক। ৬। 'ফোরে' খ।
৭। 'পছিল' প-র। ৮। 'চচল মনোরথ'
ছলে 'চচল বনে মনোমথ' প-র। ৯। 'করি'
ইড্যাদি ছলে 'কঞ্ক তহি করিল' ইত্যাদি প-র।
১০। 'বিচার' প-র-সা। ১১। 'ধাড়ি' খ; 'ধার'
প-র-সা। ১২। 'কুছম' ক, খ। ১০। 'নিঘাত'
প-র। ১৪। 'নিধ্বনে' য়, চ। ১৫। 'পাওল'
ক, খ। ১৬। 'নো সব' য়। ১৭। 'নোই'
ইড্যাদি পংক্তিমর প-র পুথিতে নাই। ১৮। 'কি
ছল্লে পরিণাম' ছলে কহিও পরণাম' প-র-সা।

টাকা

১—২৬। (প্রিরাধার দৃতী প্রক্রকের নিকট বাইরা প্রিরাধার বিপরীত-সজোগেছা ইলিতে ব্যক্ত করিছেছেন। "অব" ইত্যাবি। হে হরি! এখন কি করিবে,—বিচার করিরা হির কর। স্বন্ধরী রাধা অব-বার্র্য করিরা ভোরার উপর অর্থাৎ উল্লেপ্ত (বুছে) সান্ধিরাছেন। এ। (প্রিরাধার পরাক্রম করিব, তাহাই ব্লিডেছেন) বাকর ইড্যাবি। বানার মধ্যবেশ করিরা, স্থাপনাল করে বিরিক্সার-মধ্যে প্রবেশ করিরা, বুগ-মাল করে বিরিক্সার-মধ্যে প্রবেশ

नकन चाननामित्रव शिल-क्यी छीतात हवेले नव-र्णं कवित चर्वार शिल-क्रमी श्रीवाशीय हवरन चर्णन कतिया, डाहात भरन गहेन : आन्नाहित्वत अवन-छन्ते আনিয়া দিয়া অৰ্থাৎ বাঁচার নহনে সম্পূৰ্ণ করিয়া হরিণী সকল (বৈরাগ্য হেডু) বনে প্রাৰেশ করিল: (বাঁহার) কুচ-মুগল (মদন-নুণভির) মঞ্ল-ক্লস (এবং) ভাহাতে উজ্জ্বল অর্থাৎ আর্বক্তিম অধ্য নৰ-পর্ব-শ্বরণ; মধুকরগণ (বাঁহার) চড়জিগে (র্ণ-অংমর) মত্র উচ্চারণ করিতেছে (এবং) ঋতু-রাজ-রূপ বোদা (যাঁহার) আগে আগে অগ্রসর হুইভেছে ; (সেই শ্রীরাধা) মুদ্দ করিয়া কঞ্ক (এক আর্থে---কাঁচুলি, অন্ত অর্থে—বর্ম) বন্ধন করিয়া (বীরমূর্পে चाउड माहाया-निवालक हहेबा) এकांकिनी अन-क्रम "রবে আরোহণ করিয়াছেন। (শ্রীরাধার যুদ্ধ-প্রাণানী বর্ণন করিতেছেন) শ্রীরাধাননরন-বাবে (আকাশ) **শর-कानপূর্ণ করিলেন—দশ দিক্ সমস্তই অধ্কার इरेन।** (छिनि) दथन भूष्ण-ध्यू कत्रदाता व्यार्ग করিলেন, তথন হইতে আমার হাদর ধর ধর করিয়া কাঁপিতেছে। (ভিনি) বধন পূলা-শর হাতে লই-বেন, (তথন) পুশা-শর বস্ত্র-নির্ঘাত অরপ পতিত विधुम्बी (निक्टे) त्रि-यूष व्यवि-চলিত,—(ভাহাতে আবার সহায়বন্ধণ) গড়-রাজ वीव्रक (चार्था) शार्व हेवारहन। वींब-मर्भ कविदव । त्क छोरांब ध्यकांव मस् कविदव १ তিনি অর্থাৎ সেই জীরাধা বধন (রতি-রণের) রখ-कृषिण चानिरवन-वनताम कहिरलह्मन, ज्यन कि পরিণাম হইবে ?

অন্ফোত্তরং যথা।
ধানশা:>
শুনইতে উপসিত সব অঙ্গ মোর।
ভেটৰ সমরে ধীর সুধি ভোর।

সঙ্গর_{ংশ}রত জগয়ে মৃত্ আছে"। আনে ভূত সর্বি সর্ব যাম পাইং ॥:

এ স্থি এ স্থিত তুহুঁ নাহি ডরবি। ভাষারি বীরপণ দেখি কিয়ে মরবি ॥**এ**শঃ निःह मङ्ग कृतक नह (कारे। ত্ৰিসুবন-শোষন-মোষন হোই। ় ঋতুপত্তি-কোটি ছোটি কবি জান। মনমথ-কোটি-মথন ভাম কান। कि করব মধুকর• মল্ল উচার। শ্যাম-ভ্রমর হাই। কমলং বিহার 🛚 व्यवना कि कत्रव द्रग वल-थीगा। সহচরিগণ রণ-মুগতি-বিহীনা। किरत हिरत क्ल-थ्यू कुल्मक वान। बिर्य मिन-किन्नगरिंग कत्रव रेमलान ॥ ভাত চাপ মঝু বিশিখ কটাথ। ৰবিখনে জনজন করবহি তাক n ভুক্তবুগ-বল্ল-পাশে করি বন্ধ। পিরব গিরায়ব । কড । করি ছন্দ ॥ (मा धनि कर्**न** :या) र कथ्क मना १०। মখর-কুপাৰে ছাম করব বিভিন্না ১ निवारय सारय-कशांद्रक हाट्य । লাভাৰ> কু5-গিরি আগন প্রতাপে ॥ ब्रन-ब्रथं के सम्बन कर्तर कारलय। যুঝৰ যুঝায়ৰ করি কভ দস্ত॥ ় নৰপল্লৰ জিনি অধর হুরাতে ১৭। कत्रव विश्वक त्रमन>४-विद्याटि >> । **७व विम टेमटेव कत्रद्वर॰ विभव्नोट** । केबन यूगांड कत्रव अंग होएउ॥ **अववम (प्रष्टे (अववर्ष्ण एक भवत्।** थान-भराष्ट्रिक (में भिष हत्तात I ছুত পদ সেবন ছিথে খ অভিলাস । ৰল্মান দান হিয়ে এ বড়ি উলান ।

10.138#81

পাঠানত

>। ইছা প-র-সা পুৰির ২০৩৭ ও প-র পুৰির 'ধানদী' স্থল 'ডড়ী' 'नकर' च. ह. भ-ब-ना : 'नकक' ा 'बाह् क, थ। ইত্যাদি স্থলে 'আগে ভৃত্ত' শব রিশবর' (🕈) ক 🕫 'আগে তুত সব বিসরব হাম পাছে' ব, প-র ; 'আগে তুত সৰ বিসরৰ মঝু পাশ' খ; 'আগে তুই' সরৰ সরব হাম পাছ' প-র-সা। 'ব'-কার ও 'র'-কারের গোলবোগ ও ছেদের অভাব হেড এই পাঠ-বিভ্রাটের উৎপত্তি ছইরাছে। প-র-সা পৃথির পাঠ না পাইলে প্রক্রত পাঠ নির্দাবণ করা অসাধ্য হইত। ৫। 'এ স্থি' হলে 'রঙ্গিণ' প-র। ৬। 'অলিভুল' প-র। ৮। 'किउनिक' क. थ। 'ভুজ' ইত্যাদি স্থলে 'ভুজ-বুগ পালে করব ভিরা रक्त' श-त्र । ১० । 'त्रिशंत्रख' च । ১১ । 'कण्डक्' o 'कुक्षक' थ। se 'हाब' हेरामि >৮। 'वहन' थ। >>। 'वहन विश्वादक' ইত্যাদি কলির হুলে প-র পুথির পাঠ ব্ধা,—

> "কনৰে জনৰে পছ সেবন আশ। গোবিক দাস চিতে বড়ই উলাস ॥" টীকা

১—২। তনইতে" ইত্যাদি। (এক),
বীরাধার স্থীর উক্তির প্রত্যুক্তরে ক্ষতিভেছেন)—
ভোনার স্থীর পরাক্তম তনিবামাক আমার স্কল্
আল হর্ষোৎকুল হইরাছে; (লাবি) স্মূরে বীরা
ভোমার স্থীর সলে স্থিতিত হইরঃ

०-- । "नवत्र" रेखारि । क्यूर्शक्स जानाव व्यवस्थ जाहत् । कृति जाहत् आस्त्र (स्थातात्र স্থীর অবস্থিতি-স্থলের পথবেধাইরা) বাইবে—আমি পার্ছে পাছে বাইব।

৫—১। "এ স্থি" ইত্যাদি। হে স্থি। তুনি (আমার পরিণাম ভাবিরা) তর পাইও না , আমার বীর-পণ (এই বে)—দেখিব কিংবা মরিব অর্থাৎ তোমার, স্থীর বীরত্ব একবার পরীক্ষা করিব ; যদি মরি, ভাহাতেও ক্ষতি নাই।

৭—৮। "নিংহ" ইত্যাদি। (পূর্ব-পদে সধীর বণিত জীরাধা কর্ত্বক সিংহ, মাতদ প্রভৃতির পরাজারের উদ্ভবে বলিতেছেন)—আমি (তোমার বর্ণিত)
সিংহ, মাতদ কিংবা কুরদ—(ইহাদিগের) কোনটি
নহি, আমি ভিতৃবনের শোভা ও মোহের জনক
(জীক্ষ)।

২৯—৩২। "তব" ইত্যাদি। তবে যদি অর্থাৎ
পূর্ব্বোক্ত বীর্ত্ব করিলেও বদি দৈবে বিপরীত
(এক অর্থে—পরাক্তর; অন্ত অর্থে—বিগরীত
সংস্থাস) বটে,—(তাহা হটলে) আদি মনে এইক্রপ যুক্তি করিব—সর্বাত্ব দিরা তাহার শরণ লইব
এবং আমার পরাক্তিত (এক অর্থে—বিক্রমধারা
প্রাভৃত; অন্ত অর্থে—বেক্রমধারা বশীভৃত) প্রাণ
তাহার চরবে সমর্পন করিব।

कारमाम ।>

সাজল শ্রাম ত্রত-রণ-পণ্ডিত
করে করি কুস্ম-কামান।
সৌরভে জমরে কতরু কড মধুকর
জীতলং মনমধ-বাণ॥
ধনি ধনি অপক্রপ ছাল্ফে।
বৈশ বিলাস ল- রসময় মাধুরি
কামিনি-লোচন-কাল্ফে।এল।
তুরী চক্ষম সংবোগ বিবিধ বিচিত্রেও।

কঙ্কণ-কিছিণি হ্মনহন বাজে।

রভি-রণ-বাজন বাজে।

ভানদাস কর হসিক-শিরোন্দি

জ্ঞানদাস কহ স্থানদাস কহ সাজল রমণি-স্মাজে ১৬১১১৪৮৫৪

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০০৮ সংখ্যক পহ। ২। 'বিত্ক' ক, প-র-সা। ৩। 'বিচ্কি' প-র-সা। ৪। 'চরিঅ' প-র-সা। ৫। 'ব্যক্ বন'ক। ৬। 'বনব্দি' প-র-সা।

विद्युष्ठी ।>

कुरुँ कुरुँ नश्राम नश्राम (अनं सिनि। লথই না পারি কলহ কিয়ে কেলি । গদগদ বচন কছই নাহি পারি । रेयइन ८२/८४॰ व्यवन त्रक्ष शांति । ভাত্ত-ধনুয়া পর করই সন্ধান। মরমাহ হানল মনমপ্-বাণ # খা চপতি সমতি সৈনপতি'-রাজ। আগহি ভেজল সময়ক^{*} সাজ । মুকুলিত চূত **অশোক বক্**দৃণ । ভৈ গেল সবহ বিশিষ সমতৃল । তাহে মলয়ানিল ভেল অমুকুল। বাওই রণ-বাজন বিজকুল ॥ व्यनक्रभ उक्कृषि वन मावं ।। रेश्वेल दृष्टं जन नमत-नमांज । व्याप-वाव >>- नयूम- भव्यादन । **जानन जरहित क्रुवेह दिस्तात्वार ।** खुर्स कृत्य हुई कम क्य-इन्न । बनकाम शाम करक मागन समार्ग

ingly shall

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা প্রবির ২০০৯ সংখ্যক পদ।

२। 'পারই' ক; 'পাবই' খ; 'পারে' ব।

৩। 'ক্ষল' প-র-সা। ৪। 'রোবে' ক, ঝ, ব, চ।

৫। 'শৈলপতি' ঝ, ব; 'সেনপতি' ক; 'সৈল পরি'

চ। ৩। 'মরমক' ক, ঝ। ৭। 'বকফ্ল' ক,

চ; প-র-সা। ৮। 'সমত্ল' ক, চ, প-র-সা।

৯। 'বিষক্ল' ক, চ, প-র-সা। ১০। 'রাজ' ঝ।

১৯। 'বীরক' ক; 'বিরক' চ। ১২। 'নেহারে'

ক, চ। ১০। 'বল্ব' ক; 'ব্ল্ফ' চ।

विक

১—২। "ছব্" ইত্যাদি। (পদক্রা ব্রদ্বংশ সংভাগ-লীলা বর্ণন করিতেছেন) উভরের
দরনে নরনে সাক্ষাৎ হইল; (ইহা) বিবাদ, কি
ক্রীড়া, গক্য করিতে পারি না।

৩—৪। "গদগৰ" ইত্যাদি। প্রেমিক-বৃগল পদ্পদ ৰাক্য ৰণিতে পারিতেছে না; খেন ক্লোধে অধীর হইরা রহিরাছে। (সাধিক-ভাবের ক্লার ক্লোধেও গণ্পদ বাক্য বহির্গত ও বাক্যক্ত হর)।

e—৬। "ভাঙ" ইত্যাদি। উভরে জ্র-রূপ ধছর উপর স্থান করিয়া (উভরের) মর্বে সর্থ-প্রায়ন্ত বাব অর্থাৎ কটাক বিভ করিল।

৭—৮। "ৰভুপতি" ইভ্যাদি। নৈত্ত-পতি-বাল অৰ্থাৎ সেনাপতি-শিবোৰণি কমৰ্প (নিজের অস্তুচর) ৰভুপতি বসভের সহিত যুদ্ধের সক্ষা আগেই পাঠাইল।

৯—১২। "ৰুক্লিড" ইডাাদি। (বুদ্ধের সক্ষা
দি দি, ভাষাই বলিডেছেন) বুক্লিড চুড অর্থাৎ
চুড-বুক্ল, অনোক-পুলা, বক্ষুণ—সমন্তই বাণের
দুলা হইল; ভাষাতে বলম-পবন অন্তুল অর্থাৎ
বুদ্ধের ভঙ-প্তক হইল; বিহুক্তল (মধুর নিনাধ
বাহা) রথ-বাভ বালাইডে লাগিল।

১০—১৩। "রভি-রণ" ইভার্টি। বভি-রণ-বীর প্রেমিক-ব্রাগের সর্ব-শর-সমূহ রায়া (ভীভ হিটা) সহচ্চীনণ প্রায়ন ক্রিন, (কিন্তু জাপুর্বা

বুছবর্শনের কোতৃহল বেজু) দূর হইতে দেখিতে লাগিল।

टक्लांत 15

রাধামাধৰ কুঞ্জাহিং পৈঠল
রতি-রণ-রক্ষ রসালাও।
রণ-বাজ্ম ঘন
ক্ষুক্র-মালাও॥
সজনী হেরি ছহুঁও দিঠিও ঝাঁপ।
মনমধ্-সম্বে কুস্ম-শ্ব কো কছ্ও

সোঙরি সোঙরি কিউ কাঁপ ॥এ। পহিলহি রাই নয়ন শরেশ হানল আকুল কুঞ্জক রাজ।

ভুজযুগ-বরুণ-নিকরুণ হৃদয়ক মাঝ ॥

রোধলি রাই তাহিঁ ১০ পুন হরি-**উরে** কুচ-কাঞ্চন-গিরি হান।

লো গিরিধর বর^{১১} নখরে বিদারল বিচলিত মানিনি-মান ।

প্রম-ভরে ছত্ত অধর-মধু পিবই ১৭ ছত্ত প্রশংস ১৪। ছত্ত ছত্ ১৭ সপ্ত- মুকুরে ১৬ নিজ ছাত তেরি ১৭ ভরমহি ছত্ত করু দংশ ১৮ ।

সিন্দুর-মহন- বাণ হেরি মাধ্ব মুগমদ-জলদে নিকাউ>>।

শিশ্ব-মুকুট ভরেং
বিলুঠইং মহি গড়ি বাউংং ম

নাতন মধনঅন্তৰ্ক নাহি মান।
ভোড়ক নিবি-বছং
নিজ কৈ স্থানিক আছিল
নিজ কৈ স্থানিক আছিল

মনমধ-কেন্তু

পুলককুল-সঙ্গ রভি-রণ ভুমুলং चन चन मक्षित्र (वान । পরাভব পাওলংগ निक मटल मलन কুওল গণ্ডহি লোল। কিছিণি বছকু चयूपन कंडन রভি-জন্ম-মজল-ভূর। মকর গড়িখ্য যাওত

পাঠান্তর

গোবিন্দদাস কছ ফুরং ॥৬৩॥১৪৮৭॥

১। ইছাপ-র-সাপুৰির ২০৪০ ও প-র পুৰির २। 'निकृत्भ' भ-त्र। (तक त्रमाना' करन 'तक त्रमान' भ-त-मा; 8। 'बागा' भ-त-मा। e। '(मारु' श-त-मा। ७। 'मिर्क' व। १। 'कह' का छ। भिन्ने या ३। धिनि क. ४, १५ त्र। ol 'कहि' कृष, चुहा ১১। 'बब' श-दा ১২। 'शैवहे' थ, थ; 'लिबि लिबि' न-त्र। **১8। 'পরশংসে' পর।** be! 'हर्ड कन' श-त्र। >७। 'बुक्त' भ-ता ১৭। 'निस ছাত হেরি' খলে 'বেরি ভরমহি' ष, भ-त ; 'निक छारे (द्वि' भ-त-मा। ১৮। 'कत-वृद्धि हेकाहि करन 'निक हार (रुनि इर रुर्ट्म' प्र श-ब । ১৯ । 'निकास' भ-ब-मा; 'निवाड' भ-ब। २०। 'करब' भ-ब-मा। २১। 'विभविष्ठ' भ-ब। ६२। 'बाड' न-ब-मा; 'बाड' न-ब । २०। 'निन्न' र्भ-मा २८। 'त्रीयकत्र' क, ब, ठः 'त्रीम' श-म। २८। 'दृष्ट्' नाहि' च्राम 'किहूरे ना' म-त्र। २७। 'त्रम क्रमुल' स्टल 'ब्रटन क्रूबल' श-व । भन्ता है। 'बिक' वा २०। 'सूब' क, 5,

न्दी चड नदीरक दनिरहरहम) श्रीत्रांशक्क ग्रंहि-त्रत्व त्रक्ष-कृषियक्षण त्रमान वर्षाद महानद्व निकृत्व खादन कविन : क्लिक्टनव चन चन कन-ध्रमि त्रकू বান্ত (হইল); মধুকর-শ্রেণী (বংশীর ভার) বাড়ার দিতেতে।

e-- १। "সভনী" ইত্যাদি। হে স্থি ! (এরাধা-কুষ্ণের রতি-যুদ্ধ) দেখিবা দেখিবা (আমার) ছই চকু (ভবে আগনা-আগনি) সুদ্রিত হইতেছে ৷ কে বলে কলপ-বুদ্ধে (মুকোমল) পুপামর বাব ? (দেই ভীবণ যুদ্ধ) শারণ করিরা করিরা আমার প্রাণ কাঁপিতেছে।

৮-->>। "পহিলহি" ইত্যাদি। (স্থী বুদ-व्यनानी वर्गन कतिया कहिरलह्न) व्यन्तरहे श्रीतांश (अक्रकटक) नवन-भव बावा विष कविन ; (छहिएछ) कुश-विहाती औक्ष अधित हहेता (मिस्पत) जूब-বুগলব্লপ বন্ধবের পাশ-অন্ত বারা (ত্রীরাধাকে) ধ্বিয়া (নিজের) কঠিন বঞ্চের মধ্যে বান্ধিয়া রাখিল।

"অমুখণ" ইত্যাদি। (यमि 130-50 शृद्यांक व्यवश्र बातां व काहात कर, काहांत भताकत बहिन, ভাহাতে কোন সম্পেহ बाटक, स्मेरे बड़) দ্বী-ছানীয় গোবিন্দান স্পষ্ট কৰিয়া বলিতেছেন বে, (রতি-রণিণী জীরাধার) কমণ ও কিলি (ভাহার) বৃত্ধ-করত্তক মাঞ্চলিক ভূবী-বাভের ভার অবিরত ঝ্যার দিতেছে; (কম্প-রূপী এইকের পরাজর হটিত করিরা) মকর-বাহন মুম্মধের ধ্বলা-শ্রপ (এক্রের কর্ণ হিত মকর-কুওবের) সক্র (कुछरन) श्रृषाश्रि बाहरखरह ।

क्या तान ।

त्रांश मांधव कुक्क-गृद्ध । (दन्देरक क्रथ यहन-मन स्मार्ट । ু ভূছ জন বৈঠি কহছে রস-ভার। অস-বলে তত্ত্ব বিপল চয় বাসং ।

পাঠান্তৰ

>। 'बनवान' क, ब, छ। अहे शामन वाकि শংশ কোন প্রথিতেই পাওয়া যায় নাই।

व्यथ भूनण्ड मिनाखरत यथा।

ভক্ত ভক্ত নব কিশলয় বন লাগি। কুম্ম-ভারে কত অগনত শাখি 🛭 ভহি শুক শারিণি কোকিল বোল। কুঞ্চ নিকুঞ্চ ভ্রমর করু রোল। অপরুপ শ্রীরুদ্দাবন মার। यक अरू मटल रमख अरू-ब्रांक । বিক্সিড কুবলম্ব কমল কদম। মাধ্বি মালভি মিলিভ কুলত্বং ॥ कार्ड। कार्ड। भावम-३१म-विमान। কাহাঁ কাহাঁ দাত্ররি উন্মত গান। কাহাঁ কাহাঁ চাতক পিউ পিউ ফুর। कार्ट। कार्ट। উनम्ड नाहरत्र महेत्र ॥ গোবিন্দদাস কছ অপরুপ ভাতি। চৌদিকে বেড়ল কুমুমক পাঁতি ১৬৫॥১৪৮৯॥

পাঠান্তর

)। देवां भ-त-मा পूबित २०४० मरवाक भवा। २। 'विनिष्ठ क्रनव' ह दरन 'मिनि छक्न नव' क, व; 'ভক্ষ সভা সৰ' ব। ়চ পুৰির পাঠ ব্যতীত অভাৱ শাঠে কোন অৰ্থ হয় না; অসভৰ্ক বিণিকয় কৰ্ম্বক অবধা প্ৰচেত্ৰ হওৱাৰ 'মিলিড ক্লম্ৰ' পাঠই 'মিলি ভদ শৰ' এই অভুভ পাঠে পরিণত হইয়াছে। 'রোলব' শব্দের 'রো' অক্ষরটি লযু-বর্ণ-রূপে এ ছলে ব্যবহৃত হওরার, সকল পুথিতেই 'রো' হলে 'রু' লিখিত ব্ইরাছে; স্তরাং প্রকৃত সংস্কুত শব্টি '(वाणव' वहेरमक जनजरम 'क्रमव' मक्दे मृत्म मही-हीन बनिया श्रीक रहेन।

>---१। "उन उन" रेकामि। बदन उन उन चर्थार अधि-छक्टछरे नवीन शहर नव चर्यार **छर्गछ** এবং কত বুক পূপান্তরে অবনত হইরাছে।

৭—৮। "বিক্সিত" ইত্যাদি। (বসজের সহিত বড় প্ৰচুৱ একল আবিভাৰ-স্চক) প্ৰৰৱ-ৰুক্ত नीरनारभन, भन्न, कनक, बाबवी क बानकी विकतिक रहेग ।

পঠমঞ্চরী 15

কুম্ম-ভরে নৰ পল্লব দোল। मध् शिवि मधुकति मधुकत दानि ॥ **डाटर नव दर्का किल शक्कम शांत्र।** প্রন্থ জন আরতি চন্দন-বায়॥ পুনমিক রাতি মোহন ঋতু-রাজ। देवनगर्ध विनगर्ध मिनन जमान ॥ नांश् मोलमिन वद्रन श्रुठीम। वारे मुक्त काकन मनवान । দোঁতে দোঁহা হেরইতে তুত্' ভেল ভোরি। রাই ভেল ভাষ ভাষ[®] ভেল গোরি । वाशिकन कब्रहेर्ड डेनकन राम। ७ क्रभ विनहाति वनताम साम ॥५७॥১८৯०॥

পাঠাতত

 ३। देश भ-त-मा भूवित २०३२ मर्थाक भव । २। 'वान' क, इ, न-इ-ना। ७। 'वार' व; 'लांटर' थ-ब-मा। ३। 'क्रामन' थ।

 "इहं बन" हेजारि। इन्यन-वीवृद्ध वावीद्व हन्यनवृत्कानगक्तिक मनशहरनव वाबुवाता **श**्चिताना-ক্ষের আর্ডি অর্থাৎ নদল আর্ডির প্রন-ব্যক্তর (व्हेटक्ट्स्)।

१-->०। "नार" रेकाति। নীনকাত সৰিষ বৰ্ণের ভার ছব্দের ও ইয়াবা হশবাদ অৰ্ণের দর্শণ-অরপ; উভয়ে উভয়কে দেখিবা-মান উভয়েই রাভ হইল; (কেন না, প্রীরাধার পীত অকে প্রীক্তকের নীল অল-কাভি প্রতিবিধিত হইরা নীল ও পীত বর্ণের মিশ্রণে) প্রীরাধা (নব-দূর্কালনের ভার) ভার ও (প্রীকৃত্বের দেহকাভি প্রীরাধার বর্ণ-কাভির প্রাচুর্ব্যে আজ্বাদিত হওরার) ভার অর্থাৎ শ্রীকৃত্ব গৌরালী প্রীরাধা-অরপ হইলেন।

छवा जान ।

অপরপ নব মধুমাস।

চৌদিশে কুন্থম বিকাশ ।

নিধুবনে মধুকর রোল।

পিককুল পঞ্চম বোল॥

নাহ রসিকবর রার।

রসবতি মীললিং ভার॥

উপজল রস-পরস্প।

বেমাহন দেখত রজ॥৬৭॥১৪৯১॥

দিনান্তরে।

पगण ।

মলরজ প্রনভান উলসিও অজ-নারী।
উলসিও পুলকিত স্বর্হ লতা তরু
মদন ভেল অধিকারী ঃ
মুকুলিত চূত দুত ভেল বটপদ
শ্বদহি দেল> বাধাই।
সন্ত বসন্ত পুলারলং বরে বরেণ
জপ-জবে আনন্দ বাঢ়াই ঃ
চাতক পাত্রং জন লিখন বুবাই।
বিজ্ঞান সন্ত বিহল শ্ব-মুখেণ

কুঞ্জ লভা পর সাজস ঋতু-পড়ি वहविथ हिज्र विशास । কুত্ৰ বিকাশল বাস-খল বল্মন কামু শুনল নিজ কাণে। মাধবি মধুমজি বিমল চন্ত্ৰ-মুখি मञाकादा कहित वृकारे। नाति याहै। देवक्रद्रम রস-পরধান স্ক্ৰি রসবতি রাই। ভ্ৰিয়া রসলায়িনি ইৰ মৃত্ৰু বচন पृशे वनान छनारम । গুরুয়া গমনে ভঃ• **हिलाफ ना (मार्थ भव** जवह करन धनि शारण **॥** কামু পাঠাওল . শুনহ বচন মোর (मार् कहलि निज कार्ज। শ্রাম গ্রহড় मागत वम-(ज्य वान कवर रन माटन ॥ দুভিক বোলে (मार्ग चन कश्वन व्यानत्म यदा पृष्ट वाथि। রাধা হৃমূখি সফল তমু মানই भून भून कर हम (म्ब ॥ यडनह जानत व्यान नाभ्य दवांगद्य স্বপনে নাহি আন ভান। ব্লাভি দিবস ধনি আন না ভাবই নয়নে না হেরই আন ॥ কুকুম কস্তরি **ठम्मन (क्थ्रंब क्रि** কুচযুগ শোভিভ হারে। বো বাহা সাজল বেশ বনাওল जेहनः ठमन विदारत ॥ চললি ধনি স্বন্ধরি त्रिकिनि मध्य मिक मकंक्र गाँदे। নৰ অসুৱাগে ___ জাগি রুপ্ শ অস্তবে नाष्ट्र मिनि भागत् गारे ।

বর-রসে আগরি লব নব নাগরি রস-ভবে চলই না পারি। व्यक्र करत्र देशभग শুরুয়া নিডম্ম ভরে হেরইতে কত মনহারী ! ছুত্ৰ ছুলহ ছুত্ मत्रभद्भ शश्निश् व्याथ नयून-व्यविक्त । মুহু ভমু পুলকিড ইষদবলোকিত বাচল কভই ২ আনন্দ। সন্তাষ মধুর দিঠে পহিলহি হাস পরশিতে প্রেম-তরজ। ছ্ছ রসে উনমত কেলি-কলা কভ ভাবে ভরল তুওঁ অস। চুলাচুলি উরে উরে • নয়নে নয়ান व्यथ्दत्र व्यभिशं-त्रम (नम्। য়াস-বিলাস খাস বহ ঘন ঘন খামে ভিলক বহি গেল ! বিগলিত কেশ-কুম্বম শিথি-চন্দ্রক> বেশ ভূষণ ভেল আন। ছুছু ক মনোরপ পরিপুরিত ভেল ছুত্ ভেল অভেদ পরাণ ॥ धनि वृन्मावन ধনি রঞ্জিণিগণ ধনি রাস-রসময় কান। কলারস ঋতু-পতি ধনি ধনি সরস कानपात्र श्रुनशान ॥५৮॥>८३२॥

পাঠান্তর

১। 'দেৱল' ক। ২। 'পুজারল' ক।

৩। 'বর বর' ক; 'বলৈ বর' চ। ৪। হত্তলিখিত পুথির 'পাঅ' শক্ষটি 'পাঅ' কিংবা 'পাঅ' ছই
রক্ষই পড়া বাইতে পারে। কোন কোন মুজিত
সংক্রণে 'পারে' শঠি আছে; 'পাঅ' শক্ষে কোন
কোন লিপিকর 'পাঅ' করনা করার, উহাই পরে
'পারে' পাঠে পরিশৃত ই্ট্রাছে। বাহা হউক, 'পাঅ'

किश्वा 'शांत' शांठि अ चरण स्था अर्थ इत्र मा। পূर्क इरोडे के लिएक 'प्रथम' बगरखन व्यक्षिकांनी व्यवीद কাৰ্য্যাধ্যক ও 'বটুপদ' (বহু পদৰ হেডু শীল্পামী) দুভ रहेन-- এরণ বর্ণিত रहेबाह् ; পরেও বিশ্বর সর্ত্ত विश्व भूक-मूर्व शक्षम (वह शहाहे' वांत्का सक-প্রসুথ বিহলদিগকে 'বিজ্ঞবন্ধ' কলনা করা হইয়াছে; হুতরাং 'চাভক পাত্র' ইত্যাদি মধ্যবন্তী চন্নপ্রে---'চাভক, কণোত ও বয়ুর বসন্তের পাত্র অর্ধাৎ কার্ব্যা-कांवक रहेवा (श्रीमक-बूशनटक (महत्वत्र जात्वध-স্চক) শিপি বুঝাইলা দিভেছে' এইরূপ অর্থই সমী-होन त्वांथ हव । <। 'मूच' च, ह। ७। 'भफ़ाहे' क, हा वा 'विविध' क, थ, हा छा 'देवमद्म' षा २। 'सधू' क, था >०। 'शमन मङ्'ष्र 'প্ৰন্ত'চ। ১১। 'আন'ৰ'। ১২। 'নাহি' का ७०। 'बेह्रस' ४, हा ७३। 'क्रन' का sel 'क्छस्य' म, ह। sel 'खेब^{के} क, सा ১१। 'हिक्किक' थ।

होका

৪১—৪৪। "রজিণি" ইত্যাদি। স্থন্দরী নারিকা (প্রীরাধা) রজিণী স্থীনিগের সঙ্গে চলি-লেন এবং (তাঁহানিগকে) লইরা সন্ধীতের সঞ্চার করিলেন; (প্রীকৃষ্ণের প্রতি) নব অন্তরাস ক্তেড়ু (প্রীকৃষ্ণের) রূপ (তাঁহাদিপের) ক্লরে আসিল; (অতএব) সকলে মিশিরা ভামস্থ্রের (৩৭) গান করিতে লাগিলেন।

पूर्वांनी ।>

বিদগধ নাগরি নাগর রসিরা।
মধুকর মধু পিরে কমলিনি পশিরা।
বাঢ়ল রস-সিকু তুহে এক হিরা।
কালা মেবে কাপল কুমুদ বক্ষা।
রাই কামু নিধুবনে মধুর বিলাস।
হহু তুহু মুধ হৈছি মাটুকে ক্লীস।

পুনিম₂-চান্দ-মুখে সেন বিন্দু বিন্দু।
আনক লাবণ্য-ফুলে পুজল ইন্দু ।
বিগলিত কেশ বেশ বিগলিত বাস।
রতি-রস-শ্রেমে[®] বহে দীঘ'নিশাস॥
আলসে মুদিত আঁখি বয়ানে বয়ান।
আন কৰে চান্দে কিয়ে চান্দের[®] মিলান॥
॥৬৯॥১৪৯৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০৪০ সংখ্যক পদ।
 ২। 'পুনিম' ক, প-র-সা; 'পুনমিক' খ।
 ৩। 'ছরমে' ক, খ, ড়, চ; 'ছরমে' পাঠে ছলোভক
 হর, স্বতরাং প-র-সা পুথির 'প্রমে' পাঠই সমীচীন।
 ৪। 'চাক্র' ক, খ।

অথ বাসন্তী রাসলালা। ভত্তচিও শ্রীগোরচক্র। शांनी वा वम्छ।> नवदीर्भ डेएग्र कतिमा विष-त्रांक। কলি-ভিমির ঘোর (गात्राहारमः উव्याद পারিষদ-ভারাগণ মাঝ ১৫৪ व्यक्ष भूगि-भूगत कीर्फाटन एवं एत হালত ভাব-ভরতে। বোলত হরি হরি ক্রে করতাল ধরি ক্ষেণে কেণে রহই ত্রিভবে। কান্ধের উপরে তার বামে প্রিয় গদাধর ञ्यनिष्ठ वांक् जाकारन⁸। আকুল অমুখণ সোভরি বৃন্দাবন थात्रा वर्ष चक्रण-महारम ॥ (यन नव जनभन আঁথিযুগ বার বার मणन विष्कृती किनिः हो। বাহুদেৰ ঘোৰ গীতে কলি-জীব উত্থানিতে ্ৰবিগ্ৰহণ ছবি-নাৰ-ঘটা ৷৭০৷১৪৯৪৷

পাঠান্তর .

>। ইহা প-র-সা পুথির ২০৪৪ সংখ্যক পদ।
২। 'গোরাটাদের' ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'হেলড' ः
थ। ৪। 'আকানে।' খ, 'অকানে' প-র-সা।
৫। 'বেন্' প-র-সা। ৩। 'বরিখড' ঘঃ

च्हरे ।

মধু-ঋতু-বামিনি স্থরধূনি-জীর।
উল্লোর স্থাকর মলয়-সমীর।
স্বচর সঙ্গে গোর নট-রাজ।
বিহররে নিরুপম কার্ত্তন মাঝা।
থোল করতাল-ধ্বনি নটন-হিলোল।
ভুজ তুলি ঘন ঘন হরি হরি বোল।
নরহরি গদাধর বিহরই সজা।
নাচত গাওত কড্ড বিভজা।
কোকিল মধুকর পুঞ্ম ভাষ।
নর্মানন্দ-প্রু করয়ে বিলাস।৭১॥১৪৯৫॥
পাঠাত্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০৪৫ সংখ্যক পদ।

অভিসারিকা।

ছুগানী।>
চান্দ-বদনি ধনি করুং অভিসার।
নব নব রজিণি রসের পাসার ।
মধু-ঋতু রজনি উজোরল চন্দাণ ।
কুমলর-পবন বহুরে মৃত্ মন্দা ।
কুপুর চন্দান অলে বিরাজ ।
অবিরত কঙ্কণ কিজিণি বাজ ।
মুপুর চরণে বাজরে রুপুরুত্ম ।
মদন বিরাইণ বাবং হাতে কুল-ধন্ম ।

বৃন্ধা-বিপিনে ভেটল • শুাম রায়।
কোকিল মধ্কর পঞ্চম গায়॥
ধনি-মুখ হৈরি মুগধ ভেল কান।
বৈঠল তক্তলে তুর্ট এক ঠাম ॥
পূরল তুর্ট ক মরম › - অভিলাষ।
আনন্দে হেরভ বলরামদাস › ॥৭২॥১৪৯৬॥

পাঠাশ্বর

১। ইহা প-র-সাঁ পুথির < ০৪৬ ও প-র পুথির
১৫।১৫ সংখ্যক পদ। হ। 'ধনি করু' হলে 'ধনি হরি'
প-র-সা, 'চললি' প-র। ৩। 'মধু-ঝড়ু' ইডাালি
কলিটি প-র পুথিতে নাই। ৪। 'বিজরি' ক, প-রসা। ৫। 'বাণ' ক, খ, ড়, চ, প-র। ৬। 'ভেটিল'
ক। ৭। 'কোকিল মধুক্র' হলে 'নব নব কোকিল'
প-র। ৮। 'বডনে' থ। ১। 'বৈঠল' ইডাালি
হলে 'করে ধরি কুঞ্জি করল প্রান' প-র। ১০।
'ক্রেক মর্ম-' হলে 'বডরু ক্র্ম-' প-র। ১১।
'আনন্দে' ইডাালি ছলে 'দ্রহি দ্বে রছ গোবিন্দলাস'
প-র।

कारनाम ।>

সরস বসস্ত সমর বন শোহন
মোহন মোহিনি সক্ষ।
অপারুপং রাস- বিলাসহিও নিমগন
হুহুঁ ছুহুঁ অসহি অস ॥
দেখ সুধি রাস-বিলাস।
কত কত বল্ধ তল্প সংগ্রেড
কভরুঁ রাস প্রকাশ ॥ গ্রু॥
যুধহি যুধ মেলিও সব কামিনি
বামিনি বিলসই ভালেও।
নাচত রঞ্জিণি প্রেম-তর্জিণি
সাভেত্ব স্থানার ব্যাপাল ॥

বাধরে উপাক ডন্ফ সর-মধ্যল
কল্প-কিছিনি-রোল।
বছবিধ ডাল মান ধরু করতলে
অনস্ত আনন্দ হিলোল ॥৭০॥১৪১৭॥
পাঠাকর

>। ইহা প-র-সাপুথির ২০৪৭ সংখ্যক পদ।
২। 'অপক্রপ'ক। ৩। 'বিলাসই'ক, খ, চ;
'বিলসই'প-র-সা। ৪। 'মিলি'ক, চ, প-র-সা।
৫। 'মামিনি' ইত্যাদি স্থলে 'বিলসই ভালহিঁ ভাল'
খ। ৬। 'অনক্ত দাস'খ, চ, প-র-সা।

CTTT 1>

ফুটল কুসুম অলিক মেলি। कुरुत क्विंकिन वित्रहर्भ (किन ॥ কপোত নাচত আপন রজে। রাই নাচত শ্রাম সঞ্চে। (तथ वि निथ कुक्ष मांव। শ্যাম নায়র নায়রি পাক 🛚 বিবিধ যন্ত একই ভান⁹। গাওত বাওত অথগুণ মান্ত । ভাতা জিমিকি জিমি মুদল। जात्रभ भारम व्यक्षा विकास **महरक भामः निन्-जन।** তাহে कडह १२ महेम> - फल ! नग्रान नग्रानः मधुत्र मीठे १ । অমিয়া-অধিক বোলয়ে মীঠ১৬ 🛊 হিয়ে হির-হার আলস লোল। **চরণে मक्षित्र चुलत বোল**। ज्यस्त् मध्य मुद्दन होत कानगान-विक-निमानः । १४८। ५८ ३৮।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ২০৪৮ ও প-র পৃথির ২০,১৬ সংখ্যক পদ। 'কেনার' বলে 'কারড়' প-র।
২। 'বরিহা' ক, এ, ছ, চ। । 'চাতক' প-র।
৪। 'রক্ষ' প-র। ৫। 'সক্ষ' প-র ৬। 'নাগর
নাগরি',প-র। ৭। 'তাল' প-র-সা। ৮। 'থগু'
ছ। ৯। 'মাল' প-র-সা। ১০। 'অক্হি' প-র।
১১। 'ক্রাম্য' প-র। ১২। 'ক্তেক' প-র-সা।
১৩। 'নরন' ক। ১৪। 'নরন নরন' প-র। ১৫। 'নিঠ' ক, প-র-সা।
১৭। 'উলাস' খ।

ভাটিয়াৰি ৷>

कुम्मा-विभिद्रन विष्ठत्रहे मार्थवि माथव अक्रिया । তুত্ঁ-গুণ ছত্ জনং গাওত স্থললিত চলত নৰ্ত্তন^৩-গতি-ভাতিয়া ।ধ্ৰা কুণ্ডল শোহই ভাবণ-যুগলে নবং কিশলয় ভোড়িয়া। ভুজ শোহই তুহু কান্ধে তুহু **চুস্বই মুখ শশি মোড়িয়া** । মুরলি তাহে বায়ে वंख कोविन নাচত শিখিগণ মাতিয়া। धारे (वज़न टिक मक्त्रम মুখর মধুকর-পাঁতিয়া। কুন্তম বরিষণ সকল স্থিপণ আনন্দে ও রসে ভাসিরা ।

গঠিতির

ও রস-সায়রে গাহিয়া । ৭৫॥১৪৯৯॥

मान भाविका

কবহি হেরব

' ১। ইহা প^{ূৰ্}ৰ-সা পুথির ২০৪৯ ও প^{ূৰ} পুথির ওলাৰ সংবাদ পূর । 'আটবারি' বুলে 'বেলোবার' পুনু । 'হ'া 'কুছু' ইভাানি বুলে মুহ'দ 'ভণ মুহ' প্র। ৩। 'মর্জক' প্র। ৩। 'ম্বিন্স' প্র। ৫। 'ব্যের্ছর প্র, প্র। ৩। 'ব্যের্ছর' খ, চ, প্র-র-সা। ৭। 'বাওড' ক, খ, খ, ছ, প্র-র-সা। ৮। 'ও রবে ভাসিরা' হলে 'র্লে স্ব মাতিরা' প্র। ১। 'অবগাইরা' খ।

'বিহপড়া।১

মধ্-শঞ্ মধ্কর-পাতি।

মধ্র-কুস্থন-মধ্-মাতি।

মধ্র বৃদ্ধাবন মাঝ।

মধ্র মধ্র রস-রাজ।

মধ্র মধ্র রস-রাজ।

মধ্র মধ্র রসাল।

মধ্র মধ্র করতাল।

মধ্র নটন গতি-ভজ।

মধ্র নটিনিং নট-রক্ষ।

মধ্র মধ্র রস-গান।

মধ্র বিভাপতি ভাগ। ৭৬॥১৫০০।

পাঠান্তর

)। देश श-त-जा श्रीचा २०६० जरवाक शवा । २। 'शंग जल' करन 'देज देल' चा. ७। 'देज-देल' करन 'शंग देल' च। १। 'नवेनि' क, च, श-त-जा।

क्नांव ।>

ঋতু-পতি-রাতি রসিক্বর-রাজং।
রসময় রাস-রভর্স রস মাঝ ॥
রসবতি রমণি-রতন ধনি রাই।
রাস-রসিক সহ রস অবগাই॥
রঞ্জিণিশণ রসং-রজহি নটই।
রণরণিং কল্প কিছিপি রটইং॥

রহি রহি রাগ রচরে রসবস্ত।
রতি-রতণ -রাগিনি-রমণ বসস্ত॥
রটতি রবাব মহতি কপিলাসণ।
রাধারমণ করু মুবলি-বিলাস॥
রসমর বিছাপতি কবি ভাগ।
রূপনারারণ ভূপতি জান॥৭৭॥১৫০১॥

পাঠান্তর

ইহা প-র-সা পুধির ২০৫১ সংখ্যক প্র।
 १। 'বর-রাঝ' ছলে 'রস-রাঝ' ছ। ৩। 'সব'
 ড়, ড়, চ, প-র-সা। ৪। 'রস্বু রুঝু' প-র-সা।
 ৫। 'রচই' ক। ৩। 'রস্বতী' প-র-সা। १। 'বছজি', ড়, প-র-সা; 'সহতি' চ। ৮। 'ক্পি-নাস' ড়, ড়; 'কোপিনাহ' প-র-সা।

(वदनांबांब 1)

বাৰত জিগি জিগিং ধোজিমি জিমিয়া। নটভি কলাবভি খাম সঞ্চে মাতি করে করু ভাল প্রবন্ধক ধনিয়া^৩॥ ভগমগ ডক্ষ जिमिक जिमि मानन क्रन यूप् मक्षित दर्गन। किश्वित त्रनत्रनि বলয়া কন্যা মণি निष्वत्न जान जुमून छिउदतान । बीन त्रवाव मूत्रक मत-मधन সারি গম প ধ নি সাবছবিধ ভাব। ৰেটিভা ৰেটিভা ৰেনিং युक्त गत्रक्रि **हक्न जर-मधन, धकू** ताव । শ্রম-ভরে গলিভ नानिष क्वतीयुष्ठ मानिक-मान विश्वाबन द्यांकि। नमम यम् রাস-রস-বর্ণন বি**ভাগতি-মতি ক্লোভিত হোতি**

পাঠান্তব

১। ইহাপ-র-সাৃপুথির ২০৫২ সংখ্যক পদ। হ। জেসি জসি'খ। ০। 'থবনিরা'ক, খ, প-র-সা। ৪। 'রজ্বজু'প-র-সা। ৫। 'লুখি' প-র-সা। ৬। 'জভি'প-র-সা।

ভূপানী।১

त्राम-विलात्मर भूगध नहे-त्राक । যুপহি যুপ রমণিগণ মাঝ 🛮 চুম্বয়ে রময়ে সবছ সম-ভাব। হেরইতে সুবদনি ভেল বিভাব ॥ कार्य क्यन-मूचि कंद्रल शहान। বৈঠলি ভিমির-কুঞ্জে করি মান । मधल ছোড় बारे यव शिल। হেরি নাগরবর চমকিত ভেল । षाकृष (शाकृष-वद्म छ कान । ছাড়ি° সব রঞিণি করল পরান ॥ विलगरे मनमय-वाटन छह भीन। ঢ় ড়ই পবছ কুঞ্চে মভিহীন ॥ बारे ना পारे यारे এक कूछ। রোয়ত বৈছন মধুকর গুলা। কাহাঁ গেও বিধু-মুখি কহি পুন রোর। পুন किरम ला धनि मीलव शाम ॥ विनर्भ दायर ता वन-विद्या। আকুল উদ্ধৰ দাসক সন্মিয়া 1921/৫০৩1

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০৫০ সংখ্যক পদ।
২। 'বিলাস' ম। ৩। 'ছোড়ি' প-র-সা। ৪।
'বিলপিড' ম। ৫। 'চুড়াই' ম। ৬। 'বরুমুখি' ম। ৭। 'বিলখ' ক, প-র-সা। "

তত্ত্ব শ্ৰীগীতগোৰিন্দে যথা।

मामिक्रः हिन्छ। विरमाका बुछः वधुनिहरवन । সাপরাধভরা ময়াপি ন বারিভাতিভয়েন ॥ হরিহরি হতাদরতরা গতা সা কুপিতের ॥ এ কিং করিয়াতি কিং বদিয়াতি সা চিরং বিরছে।। किः थरनन करनन किः मम कीविर्छन शुर्द्दश्यां **विख्यामि उपानमः कृष्टिन-क्य (कार्य-ख्रुद्रश)** শোণ-পল্পমিবোপরি ভ্রমতাকুলং ভ্রমরেণ। ভামহং হাদি সক্ষতামনিশং ভূশং রময়ামি। কিং বনেহসুসরামি তামিহ কিং রুথা বিলপামি n তবি বিলমসূর্যা হৃদয়ং ত্বাক্লয়ামি। তন্ন বেদ্মি কুতো গতাসি ন তেন তেহসুনয়ামি। দৃশ্যসে পুরভো গভাগতমেব মে বিদ্যাসি। किः भूटतव अमञ्जयः भत्रित्रञ्जनः न प्रपानि ॥ क्मग्राञामभन्नः कताभि उत्तनुनः न करतामि। **८१६ि जुला**ति पूर्णनः मम मन्नार्थन करनामि ॥ वर्गिङः क्याप्तवत्कन स्टब्रिविषः श्रवत्न । (कम्कृतिचे-मग्रज-मञ्जर द्राहिगीत्रमत्न ।

পাঠান্তর

0 1 3 C 0 8 1

১। ইহা প-র পুথির ২১।৯৪ সংখ্যক পদ।
'গুর্জনী' হলে 'বরাড়ী' প-র। ২। বদিও সকলগুলি পুথিতে এবং সুত্রিত বলীর সংহ্যবে 'কিং ধনেন'
ইত্যাদি হলে 'কিং ধনেন কিং লনেন কিং নৰ স্থাবন
গৃহেণ' পাঠ আছে, কিন্ত উহা বে হন্দোতল হই, ভাহা
বংসম্পাদিত প্রীক্রীতগোবিন্দের ৭৯ পৃঠার পাদটালার সবিভারে আলোচিত হইরাছে; আনরা ঐ
পান-টালা হইতে ক্রেক হল্ল নিয়ে উছ্ ত করিলান;
—"বানিরং চলিতা বিলোক্য স্বজং বধুনিচরেন'
ইত্যাদি প্রিটের পুরা বাতীত অভাত সকল চরবেই
সগুরাটি অক্সর ও ভিন্নবো ১৯, ৩র, ৩ঠ, ৮ন, ১১শ,

১০৭ ও ১৬শ অকর ওক ও অবশিষ্ট অকর গণু ছৃষ্ট হর; বোঘাই নির্ণর-সাগর বছের মুজিত প্রজ্ঞাক এবং রনিক-প্রিরা ও রন-মন্তরী টীকার বে পাঠ পূর্বীত ও ব্যাধ্যাত হইরাতে, তাহাতে পূর্বোক্তরণ অকর-বিক্তাস রক্ষিত হইরাতে। এ কর আমরা অগত্যা ঐ পাঠই গ্রহণ করিতে বাধ্য হইরাতি। • • • মহাকবি করদেবের রচনার হলোভক অসভব, ইহা বলাই বাহণ্য।" জরদেবের টীকা ও অনুবাদ সর্বাত্র স্থাত বলিরা এ স্থলে দেওরা হইল না।

তথা রাগ ৷১

কহেই হেন হবে কি আমারে।

এ নয়নে দেখিব রাইয়েরে।
ললিতা-অঙ্গুলি করে ধরি।
অভিসার করব সুন্দরী॥
দে বদন-চান্দের মাধুরী।
দে হাস্ত সে বিনোদ-চাজুরী॥
দে নয়ন-কোণের চাহনি।
মুত্ হাস্ত মুখ-মোড়ায়নি॥
বলয়া-কিঙ্কিণী-ধ্বনি শুনি।
মদনকে জাগায় মোহিনী॥
তাহা জামি শুনিব কিন্ন কাণে।
চমক পাইবেই মোর মনে॥
এ বজুনন্দন দাস ভণে।
রাই বিমু না রহে জীবনে॥৮১॥১৫০৫॥

পাঠান্তর

১। ইংগ প-র-সাপুথির ২০০৪ সংখ্যক পদ।
'তথা লাগ' বলে 'বিহাগড়া' প-র-সা। ২। 'কব'
क; 'কবে' চ, প-র-সা। ৩। 'সে' ক, খ।
৪। 'পাইবে' ক।

छथा जोग ।>

(इनरे नमरत्र এक नथी। निक्श-मन्दित हारे पिथि । कट्ट यात्रि विटनान नागटन । দেখ রাই কুঞ্চের ভিতরে। अतिशा व्यक्ति उठि कान। সধী সত্রে করল পয়ান। बाहै। वभिर त्राधिका कुम्मती। मगूर्थ कहर्य कद रयां फ़ि॰ ॥ (क्य धनि मञ्ज व्यवसाध। হেন প্রেমে না করহ বাদ # হাম ভুয়া অনুগত কান। কাহে করসি মোহে। মান ॥ এত কহি চরণে ধরিয়া। गांधरत्र व्यवनी लागिहित्रा ॥ ্ কাতর দেখিয়া ধনী রাই। করে কর ধরে মুখ চাই॥ षुद्र (११७ मानिनी-मान। प्रवृत्त्वन खन गान ॥৮२॥১৫०७ ॥ পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ২০৫৫ সংখ্যক পদ। ২। 'বৈসে' প-র-সা। ত। 'যুদ্ধি' দ। ৪। 'রুকো' প-র-সা। ৫। 'ধরি' ক, প-র-সা।

यांग्यी ।

রাই হেরল যব সো মুখ-ইন্দু।
উহলল সন মাহা আনন্দ-সিকু।
দান-জনিত তুখ সব ছুরে গেল।
তুহুঁ মুখ দরশনে আনন্দ ভেল।
লালিভা বিশাখা আদি যত স্থিগণ।
আনন্দে মগন ভেল দেখি ছুই জন।

নিকুঞ্জের মাবে দোইার কেলি-বিশাস। ত্রহি দূরে রহু নরোন্তম দাস।৮০॥১৫০৭॥

় পাঠান্তর

)। 'উছम' थ। २। 'मृद्य' क, थ।

বিহণড়া ৷>

সরস বসপ্ত স্থাকর নিরমল

ু পরিমল বকুল রসাল।

গাহক মদনগোপাল ।

রদের পদার পদারল রদরভি

वृक्षांत्रत्व (क्लि-क्ला-निधि कांत्र)

হাস-বিলাস- মগন দিঠি মন্থর

হেরি মুরছয়ে পাঁচবাণ 🏙 🕟

নব যুৰগাজ প্ৰশি ভয়ল মণি পুছই মূলকি বাভ।

ভরল-নয়ানি হাসি মুখ মোড়ই

ঠেলই হাডহিঁহাত॥ ওহঁরসে ভোর ওর নাহি পায়ই

तम हांचेहे महन हांनान ।

দাস অনম্ভ কহ ইহ রস-কৌতুক বিজকুল কৰে ভালি ভাল ৮৮৪॥১৫০৮॥

পাঠান্তর

১। এই প্ৰটি ২র শাধার ৪ব প্রবে ২০৯ পূঠার একবার উদ্ভ ক্টরাছে ; প্রভরাং পাঠান্তর ও টাকা সেই ক্লে এইব্য।

(क्षांच १५

রজনি উজাগরি নাগর নাগরিং আখি মেলিডে নারে খুমে। অভিশয় রসভবে^ক ,শু।ম নাগরের[®] কোরে অজ ভেলি রহুল নিসুমে। দেশ স্থি অপর্প ছান্দে।

ভাম নাগর-কোরে শুভিরা রহল ধনিও
কামু নেহারে মুখ-চান্দে ॥ধ্রা॥
কুটিল কুন্তল সবং শ্রীমুখ বেড়িল গোদ
সিন্দুর ভিলক মোছেও হামে।
কুয়লাও কবরি আধ বেননও পাটের জাদ
বীড়াও খসল কর বামে ॥
নীল বসন ভিগি অলে লাগিয়াছে গোওও
শ্রীজ্ঞান দেখিতে উদাস।
বৈছেও চান্দের কলাও মেহে ঝাপিয়াতে গোওও
নির্ধইওং গোবিন্দদার্গ ৮৫।১৫ ০৯॥

পাঠান্তর

)। हेहां भ-ब-मां भूषित्र ১৫৩२। २०६१ ख প-র পুৰির ৩৯।৭ সংখ্যক পদ। 'কেদার' ছলে 'ধানশী' প-র-সা। ২। 'নাগর নাগরি' হতে 'রাই অনাগরি' প-র। '০। 'অতিশয় রসভরে' স্থলে 'অধিক অলসভরে' প-র। ৪। 'নাগর'- খ, य। ৫। 'খাম' ইত্যাদি খলে 'রভির ছরমে রাই' প্-র। ৬। 'রহণ ধনি' হলে 'রবাছে গো' প্-র। १। 'कृष्टिन कुखन नव' श्रान 'कृषित कृषन' क, ब, ब, ठ, भ-त-ना। ৮। 'श्रेत्र्य (विक्न भा' इरन 'डारन मानिवारह' क, थ, व, ठ, भ-व-मा। »। 'जिनक स्थारक' श्राम 'कांबन मुक्' क, ब, ठ, প-ब-मा। > । 'कूक्म' প-ब। >>। 'विनन' कः, '(वनम' ह, भ-द। १२। 'मिविक्' भ-द। ১০। '(बा' क, ब, ब, ह ७ भ-द्र-मा প्रविष्ठ नारे। >8। '(वसन' श-जू। >€। 'हारम' का > । '(बरव' देकानि ऋल 'कनान वानिवारक ला' প-स। ১१। "(इस्रज' श-स।

विश्विष

দেখি সখি গোরি শুতল শ্রাম-কোরং। নাগলত নীল বতন কিয়ে কাঞ্চন কুবল চম্পক **জোর**। গোরি স্থনাগরি অধরে অধন ধরি ঘুমায়লণ বিদেশধ চোর। কনয়-কমলে অলি মাতি রহল অমুণ হিমকর শ্রামণ চকোর # তুক্ত মনোহর পীন পধ্যোধর রাতৃল করযুগ> সাঞ্চ>। বিকচ কিয়ে ঝাঁপল উল্টি>২ কমল কনয়ত ধরাধর-রাজতঃ ॥ নাগরি গুরু উরু> নাগর বেচ্ল নাগরি-ভুজ • বেঢ়ি অ**জ**১৭। জলদে বিজুরি অমু>> বেচ্ল ছন্ত ডমু (गाविक्सपान कर तक ॥৮५॥३७३०॥ পাঠান্তর

১। हेहा भ-त्र-मा প्षित्र २०८৮ ७ भ-त्र প्रिक ৩৯৮ ও ৪২।৪৯ সংখ্যক পদ। ২। 'কোরে' প-র-সা। ৩। 'লাগল' প-র-সা। ৪। 'রভবে' প-द। १। 'Cकारत' প-त-मा। ७। 'च्यन' প-র। १। 'কিরে' প-র। ৮। 'श्यिकदत्र ट्वरहर भ-ता अ। व्यक् अ-त कानावा 'করতল' প-র। >>1 'সাকে' >२। 'खेलके' श-त। >०। 'कवलत' (१) थ। ১৪। 'दारक' भ-त्र। ১৫। 'छेरद्र' क, ह, भ-ता। ১৬। 'नाशत पूरव' श-त हराहरू। ১१। 'स्व' भ-त ४२।४३। अमा 'रियह' क, थ, य, ह, श-त-मा। >>। 'तह धना' -वृत्व 'कह तृष्' भ-व उर्भाप्त ।

রামকেলি।১ নলিনগণ হাসভ হিমকর মলিনং অরুণ-কিরণ হেরি থোর[®]। (कांकिल (वाटल° ভ্ৰমরকুল আকুল ভেজত কুমুদিনি-কোর॥ रेकरह चुमायुष्ठ यूगम किरमात । চঙ্জি কহত শুক সারিক জোর ॥ধ্রা নিচল-তমু খ্যামর কিশলয়-শয়নে মরকত কাঞ্চন গোরি⁹। কীয়ে কুত্বম-শর-তৃণ শুন ভৈল কিয়ে মুহুঁ রতি-রসে ভোরি 🔏 সহচরি ছোড়ি> মন্দির জনু>• যাওত জাগত্>> সুন্দরি রাধে। গোবিন্দদাস-পত্ত শুনইতে কাতরুংং (कान क्यल वन-वाटल ॥৮१।>१>।। পাঠান্তর .

১। ইহা প-র-সা প্রির ২০৫৯ ও প-র প্রির ০৯/১৪ সংখ্যক পদ। ২। 'কির্পে' প-র। ৩। 'হাসউ' ক, খ, ঘ, চ। ৪। 'বোর' প-র-সা। ৫। 'গানে' প-র। ৬। 'ঝামরু' প-র। ৭। 'আের' প-র। ৮। 'ভোর' প-র। ৯। 'ছাড়ি' খ। ১০। 'চিলি' প-র। ১১। 'আাগ্রি' প-র। ১২। 'আাকুল' প-র।

গলিত।

পদউধং কাক কোণিলা বামিনী শেবং।
ভূরিতে নাগরীং গেলা নিজ বর
বান্ধিতে বান্ধিতে কেখা
অবশ আলিসে ঠেসান বালিসেং
ভূমে চূলু জুলু আঁথি।
বসন ভূষণ হথনি উঠিয়া দেখি এ

মহা ভোলে পরিবাদ।

মহা ভোলে পরিবাদ।

জানিলে এখন

বড় দেখি পরমাদ॥

চণ্ডীদাসে কহে

তুমি সে বড়ুয়ার বহু।

শ্যামের মোহিনী - গুণের করশীণ

লখিতে নারিবে ক্ছে ॥৮৮॥১৫১২॥
ইত্যাদি বাসন্তী-রাস-লীলা।

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০৬০ সংখ্যক পদ।
২। 'পধ্উধ' খ। ৩। 'কোকিলার' প-র-সা।
৪। 'শেষে' প-র-সা। ৫। 'নাগর' ক। ৬।
'কেশে' প-র-সা। ৭। 'ঠেসানা' ক; 'ঠেসাল'
প-র-সা। ৮। 'বোদল' খ, চ। ৯। 'ঘোহন'
ক, খ, খ, চ। ১০। 'কারণ' ক, খ, খ, চ।'
টীকা

পাঠান্তর

১০—১৬। "চণ্ডীদাসে" ইত্যাদি। চণ্ডীদাস কহিতেছেন, হে স্থলরি! তুমি শ্রণ কর; তুমি কিনা বড়ুরার বধু (তাই তুমি তোষার নির্দাণ কুলে কলম্ব হুইবে বলিয়া কত আশহা করিতেছ!) কিন্ত শ্রামের মোহিনী বিভার কার্যা (এইরপ বে), কেহই তোষাকে দক্ষা করিতে পারিবে না।

শ্রীকৃষ্ণ চৈতত্ত্য-শ্রীনিত্যানন্দ-শ্রীঅবৈতচন্দ্র।
বসস্ত-সময়োচিত-গীতং।
বাসন্তী-রাসলীলা প্রকারান্তরং যথা।
তচ্চতি শ্রীশ্রীমহাপ্রভূ।
তৃষী।>
নাচেরে নাচেরে নিভাইং গৌর বিক্রমণিরা।
বামে প্রির গদাধর শ্রীবাস কবৈত বর
গারিবদ ভারাগুণ দিনিরা। এখা

বাজে খোল করভাল মধুর-সংগীত ভাল হেন অবভারে গগন ভরিল ছরি-ধ্বনিয়া। **ठन्मन-**ठिक्ठ शाय काछ विन्यू विन्यू छात्र वन-भाना (मार्ल ভार्तः वनिया। গলে শুপ্র উপবীত ক্লপ কোটি কাম ক্লিড চরণে নৃপুর রণরণিয়া। हुरे छारे नाहिया यात्र সহচরগণ গায় গদাধর-অজে পড়ে চুলিয়া ॥ পুরুব রন্তস-লীলা এবে পত্ত প্ৰকাশিলা সেই বৃশ্বাবন এই নদিয়া। ৰিহুৱে গঞার তারে (महे श्रीत मभीदत ব্ৰন্দাবনদাস কৰে জানিয়া ৮৮৯।১৫১৩ঃ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০৬১ সংখ্যক পদ। ২। 'নাচে নাচে' ক, খ, খ, চ। ৩। 'মধুবস গীত' প-র-সা। ৩। 'ভাল' ক, খ, প-র-সা। ৫। 'কাজে' খ। ৬। 'হ্রে' চ; 'লোভে' প-র-সা। ৭। 'ইবে' ক, খ, চ।

क्नानि।)

গৌরাক কুন্দর নাচে। শিব বিরিণিয় অগোচর প্রেমং विट्डाव रहेवा बाट ॥ अ ॥ ब्राटमवर्ग कारवरम व्यक्त हुत हुत्र **हिन्द ब**ानाग्रा भट्छ। সোণার বরণ यूनोत्र शुक्तो कृत्य गड़ागड़ि बूल् । শুনিয়া পুরুষণ व्याशन देव छव वुक्तावन-व्रमः नीना । कोर्स् न-बाटस्टमः প্রেম-সিন্ধু মাবে **पूर्विना नहीत्र बाना ॥**

ংন অবভারে বে জন্স বঞ্জিত
ভারে করু কুপা-লেশেং।
শ্রীকৃষ্ণতৈভয় ঠাকুর শ্রীনিভ্যানন্দ
শুণ গায়ু বুন্দাবনদাসে ॥১০॥১৫১৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্থির ২০৬২ ও প-র পুথির ১০০০ সংখ্যক পদ। 'কল্যান্ট' হলে 'বিভাৰ' প-র। ২। 'প্রেমধন' ক, ঝ, য়, চ। ৩। 'ভাবে বিভার' ক, ঝ, য়, চ। ৩। 'ভাবের' প-র। ৫। 'গ্রহপান' প-র। ৬। 'আল্যাঞা' ক; 'আউলারা' প-র-সা; 'আল্যান' প-র। ৭। 'ননীর' ক; 'নোনির' য়; 'স্নির' চ। ৮। 'ভনিরা প্রুব' খণে 'পুরুবে বে কিছু' প-র। ৯। 'নির্ল' ক; 'নির্লাণ' প-র-সা। ১০। 'আন্যেশ' প-র। ১০। 'বো' প-র। ১২। 'করু' ইভ্যাদি স্কলে 'কুলা কর নাথ' প-র। ১০। 'ঝণ পার', স্বলে 'গ্রহ' প-র-সা।

- অভিসারিকা।

कृषांनी ।>

নব মধুমাস কুন্থুময় গন্ধ।
রক্ষনি উলোরল গগনছি চন্দ ॥
মলর-পবন বহে সৌরভ মেলি ।
কোকিল রাবং শুময় করু কেলি ॥
ঐছে ফলনি হোর রসবাভি রাই।
সহচার সহ নিজ বেশ বনাই॥
ব্যবহাল ধান কালিক্ষি-ভীর।
ব্যবহাল সহ ভাই মাললং কান।
সুহুঁ জন হেরই ছুহুঁ কু বয়ান॥
সুহুঁ মুখ হেরইভে মুছু মুছু হান।
ভ্যামদাস করু সুহুঁ কিবাল ॥১১৯১৫১৫॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ২০৩০ সংখ্যক পদ। ২। 'রাও' প-র-সা। ৩। 'অপরূপ'ক। ৪। 'ফিলন'ক, প-র-সা।

धाननी ।>

মধুর যামিনি কাম কামিনি
বিহরে কালিন্দি-তীর।
কোকিল কুহরত জমর বৃদ্ধত
বদত কীর° সুধীর ॥
রাধা মাধ্ব সজ্ঞ।
সক্ষে স্হচরি নাচয়েং ফিরি ফিরি

গাওয়ে রস-পরসক্ত ৪ ছা করছি বন্ধন কলে

চরণে মঞ্জির রোলণ।
কটিতে কিছিনি বাজয়ে কিনি কিনি
গণ্ডে কুগুল দোলদ ॥
রাই নাচড কড্ড রসভূত

ৰামু কড কড গাওই''। সৰ্বহুঁ সুধি মেলি বচয়ে মণ্ডলি জ্ঞানদাস মুডি ভাওই'' ॥৯২॥১৫১৬॥

পঠিবির

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০৩৫ সংখ্যক পদ।
২। 'কুহকড' ব। ৩। 'বহত কীর' হলে
'বহন কিরণ' প-র-সা। ৪। 'সলে' প-র-সা।
৫। 'নাচড' প-র-সা। ৬। 'পরসলে' প-র-সা।
৭। 'বোল' ক, ব, চ; 'বোলে' প-র-সা। ৮।
'বোলে' প-র-সা। ৯। 'কডক্র রসভ্ত' হলে
'কডক্রসভ্ত' চ; 'কবক্রসভ্ত' প-র-সা। ১০।
'গারই' ক। ১১। 'ভারই' ক।

(क्षांत्र 1>

রাধা মাধব সক।
বিহরত্বে প্রেম-ভরক্ত ॥
চৌদিশে সইচরি মেলি।
মণ্ডলি করি করু কেলি ॥
করিং করিং বন্ধান।
মাকহি রাধা কান ॥
বছবিধ রাগিণি ছন্দ।
গাওত কভত্ত পরবন্ধ ॥
কত কত যন্ত্র রসাল।
ভেদ পরনং ধরু তাল ॥
অপরূপ রাস-বিলাস।
কহ জগুমাহন দাস ॥১০॥১৫১৭॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০৬৫ সংখ্যক পদ। ২। 'করহি করহি' দ; 'করহি কর'প-র-সা। ৩। 'কডহি'প-র-সা। ৪। 'পরণ'প-র-সা।

***1461** 1

জিনি কাদখিনি আড়খিনিই পটা।
সম্পায়ন কম্পা কম্পিত চম্পা
কম্পিত বিখাধর কিখা অওজ
ডিআলর-স্থিতই ছটা। প্রঃ
ইন্দুবদনি সিন্ধু অমিময়
বিন্দুই বিমলই সিন্দুর ক্লচিচয়
চন্দন বন্দন কেশর বেশরবর-মোডি-ঠটাই।
খঞ্জন-সভি-গঞ্জন লোচন
জচলয়-জঞ্জন রঞ্জন
ডম্পু-ভাপ-বিভক্ষন পদা
বিশ্বিশ্ব শ্রুপন মটা।

শিবরাম শুণিয় তাগরধ্ব নাগরধুগ তদ্ধি লীজ লীজ লীজ মুদল রজির ত্তিয়-শুলিয় ঘটা ॥১৫॥১৫১৮॥

পাঠান্তর

১। 'ৰাড় নিতৰিনী' ক। ২। 'ছবিত' ব।
৩। 'বিষ্' ক, ব,চ। ৪। 'মিনব' ক,ব।
৫। 'ছটা' ক,ব। ৬। 'ডনিতরা' ক,ব,ব।
৭। 'নাগরধুণ্' ক,ব পুথিতে নাই। ৮। 'ডনির'

টীকা

১—৪। "বিনি" ইত্যাদি। (রাস-নৃত্যকারিশী অঞ্চলনাদিগের) পট অর্থাৎ পরিধের-বসন
আড়বরমর কাদবিনী-চয়কে জর করিরাছে। (উাহাদিপের দেহ-কান্তি) চল্পকপুল্সমূহের কল্প-সল্পাদন
ও (কান্তির) আজ্ঞানন করিরাছে। (তাহাদিগের)
বিবাধর কল্পিত হইডেছে; (তাহাতে নাসার নিরে
দলন-পঞ্জি কিন্দিৎ দৃশ্য হওরার) বেন ভিশ্-মুক্ত
নীড়োপবিষ্ট (শুক) পক্ষীর ভার শোতা হইরাছে।
(বোধ হয়, এ বলে শুকপক্ষীর চঞ্ নাসিকা-রূপে ও
দত্ত-রাজি অন্ত-পংক্তিরণে করিত হইরাছে; শুক্ত
চঞ্র সহিত নাসা উপবিত হয় বলিরা, এ বলে
'অন্তল্প শল্প শুক্ত-পক্ষীই বুবিতে হইবে)।

১—৮। 'ইন্দ্ৰদান' ইড্যাদি। ইন্দ্ৰদনী (অভাজনার।) অমৃত্যর সমুজ-অরপ; (তাঁহাানগের) বিন্দ্-রূপে শোভযান নির্মণ সিন্দুর, চন্দন, বন্দন (ক্ত-চূর্ণ), কেশর-(কুছুম) ও বেশর-নামক নাসা-লভাবের মুক্তার ঠাটু কি দীর্ভিবর!

৯—১২। "ধর্মন" ইত্যাদি। (তাঁহানিপের)
লোচন ধর্মনের গতিকে গরুবা করে ও অচলিত
অর্থাৎ অচ্যুত কজ্জল ধারা রঞ্জিত। (তাঁহানিপের)
চরণ-মৃপুরের বঞ্জন-রটিত শক্ষ শ্রীক্তকের (কল্মণক্রিত) বেহ-তাপের শান্তিকারী।

>७-->७। (नष-कडी) विषयांव 'कानव्रयुन्

নাগন্ত্ৰপূৰ্ণ ইত্যাদিরপ বৃহদ-নদিশী অর্থাৎ মুদদশাকন-রতা (এক)শ্রীদিপের ভদীসমূহ বর্ণনাকরিভেছেন।

(क्शंब 1)

বিনোদিনি বিনোদ নাগর।
প্রেমে নাচে জানন্দে বিভার।
বাজত কত কত তান।
কতং রস করতহি গান॥
গগনে মগন তেল চন্দ।
ফিরয়ে দীপ ধর° ছন্দ॥
অপরূপ তুহুঁক বিলাস।
কহ বাধামোহন দাস॥৯৫॥১৫১৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৫১৪ সংখ্যক পছ। ২। 'কত কত' ক, খ, খ, চ। ৩। 'থরি' প্-র-সা। - ৮

ी का

৫ -৬। "গগনে" ইত্যাদি। আকাশে চন্দ্র (শ্রীক্ষকের সহিত) ব্রজালনা নগের রাগ-লীলা নর্গনে বোহিত হইলেন এবং প্রদীপ-ধারীর ভার (রাগ-ছলী আলোকিত করিরা) পরিশ্রমণ করিতে লাগিলের। ভূগনা করুন,—

"ভূগণ পগনে সগণে রজনীকর চৌদশে কিরত শীপরর ছক।" —পোনিকাল; গ-ক-ত, ১২০৮ সংখ্যক পর্ব।

विश्वाच ।>

বৃন্দাবন রম্য স্থান কোটি-চিন্তামণি-বাম রঙন-মন্দির মনোহর। আনন্দে কালিন্দা-জলে রাজহংস কেলি করে ক্ষাক-ক্ষাল উত্তপল ॥ ভার মধ্যে হেম-পৃষ্ঠং অন্টনলে বেপ্তিভ
অই সধী প্রধানা নায়িকা।
ভার মধ্যে রত্মাসন বিসলেন তুই জনং
শ্রাম গোরী স্থানর রাধিকা॥
তং রূপ লাবণ্য-রাশি অমিয়া পড়িছে ধসি
হাস পরিহাস সন্তাধণে।
নরোত্তম দাস কর নিত্যানন্দ স্থময়
স্বাই সোত্তক্ষক গানার মনে গা॥
॥৯৬॥১৫২০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ২০৬৬ ও প-র পৃথির
৪০:৪৮ সংখ্যক পদ। 'প্রীরাগ' হলে 'কান্ডা'
পার-সা। ২। 'হেমপীঠ' ক; 'অই প্রেষ্ঠ' প-র।
৩। 'রমাছানে' প-র। ৪। 'বিসিয়াছে' ক, খ,
পা-র-সা, প-র। ৫। 'জনে' প-র। ৬। 'মিণি'
পা-র। ৭। 'নে' পা-র। ৮। 'হাস পরিহাস'
ছলে 'সহাস মধুর' পা-র: ৯। 'রসমর' ক।
১০। 'ল্লক্ক' পা-র-সা।

পঠমঞ্জরী।১

ভাগি মনোহর স্থানির সাল ।
ভূহেঁ তুহাঁং হেরি হেরি করু কত রজ ।
নব মধু মাসে নিধুবন গাজ ।
ভূহাঁ তুখ মঞ্ল কুঞ্চ বিরাজ ॥
রাধামাধব রভি॰ -রস-কেলি ।
বিদাগধ নাগর বৈদগধি মেলি॰ ॥
দুঢ় পরিরম্ভণ পুলক ভূজ দও ।
ভূমনে লুবধল চুছাঁজন-গও ॥
ভূছাঁ-ভাধরাম্বত ভূছা জন শীব ।
ভূহানে পুলভ হেমক শীবণ ॥
ভাষ্ত নাম্বি ভাষ্ত কান ।

তুহঁ গুণ-রূপ-কলা-রূস-সামা। জ্ঞানদাস কর তুহুঁক মহাম । ১৭॥১৫২১॥ পাঠাবর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ২০৬৭ সংখ্যক পদ।
২। 'বোহেঁ ছহ্ঁ' ক; 'ছছ্ ছহে' প-র-সা। ৩।
'নিধ্বনে' ক, খ, খ, চ। ৪। 'ছহ্ন' প-র-সা।
৫। 'বিদগধ' প-র-সা। ৬। 'দিব' ক, খ,
প-র-সা; 'সীব' খ। ৭: জানদাসের পদাবলির
বুলিত সংস্করণে 'অধুত নারবি অধু ও কান' পাঠ আছে,
কিন্তু আলোচা কোন প্থিতেই এরপ পাঠ ছুই ১ইল
না। ৮। 'সীমা' প-র-সা। ১। 'মহিম' ক, চ;
'মহিমা' প-র-সা।

টাকা

৯—> । "হছ" ইত্যাদি। উভরে উভরের অধরামৃত পান করিতেতেন, (অধিকন্ধ) **উরুক্ত** উৎপল (করাস্থালি) বারা অর্ণের শিবলিদকে (শীরাধার পরেধির) পূজা করিতেছেম।

১১—১২। "আরত" ইত্যাদি। (গাছ আলিলন হেতু) নাগরী শ্রীরাধা (শ্রীক্ষের অল্পারা)
আচ্ছাদিত এবং শ্রীকৃষ্ণ (শ্রীরাধার অল্পারা)
আচ্ছাদিত, পঞ্চবাপ কলপ রসাধিক্য হেতু অবশ
হইল অর্থাৎ তাহার আর বিক্রম প্রকাশের শক্তি
রহিল না। ('অধুত নারবি' ইত্যাদি পাঠের 'অধুত'
শক্ষটির এ হলে কোন সম্ভত অর্থ হর না; 'র্থবীর'
অর্থে 'অধুত' শক্ষের প্ররোগ দেখা বার না; 'র্থবীর'
অর্থ 'অধুত' শক্ষের প্ররোগ দেখা বার না; 'র্থবীর'
অর্থ কারলে 'অতিরসে ভেল অবশ পাঁচবাণ' পরবর্তী
পংক্রিটির সার্থক্তা থাকে না; স্কুতরাং 'এবুত'
ইত্যাদি পাঠ কোন প্রবিতে পাওরা গেলেও উহা
লিপিক্র-প্রমাদ কনিত বলিরাই বিবেচনা করিতে
হইবে।)

ক্ষোর।> রতি-রংস মাতল অতিশন্ধ নাহ। অনিরা-সংযাধনে ছুর্ছ অবগাহ। সহজে নিরশ্বশ নাগর-রাজ ।
ভাতে মনমগ-নৃপ-কৌতুক কাল ।
দৃঢ় পরিরস্তবে ঘন সিতকার ।
অমুধণ কিছিলি করয়ে ফুকার ॥
কর গহি রাখিও যুগ চকেবা ।
দংশইতে সরসিক বারব কেবা ॥
কর ছবিবল্লভ সহচরি-কুলে ।
দেখই নিজুতে উলাসহিঁ ফুলে ॥

11arm > 0 2 2 1

Josephy Carell

পাঠান্তর

১। এই গদটি ২য় শাধার ৩য় গলবে ৩০১ সংখ্যক পদরশে উভ্ত হইয়ছে; স্তরাং পাঠাত্তর ও টাকা ঐ পদে মাইবা।

বিহপড়া ৷১

স্থান্ত সমাপি শুভল বর নাগর পাণি রহল কুচং আপি। কনক-শস্ত্ৰ বৈছে পুরুকে পুরুষ্ওল नीम मदबाक्य वांशि॥ नाथ एवं एक भव-८क नि-विकारम[®]। भागि जिल-३भि নাহ আগোরল পুন রতি-রক্তক আশে 🛚 🗗 🖁 বদৰ মিলাই ब्रह्म मूथ-मध्न° कमत्म मिलके रेग्रह हन्ना। শ্ৰমৰ চকোৰ গ্ৰহ রভদে মিলারই **পিবই अभिश्ना-मक्त्रम ॥** ় জাগি সৰ স্থিপণ बिणि-जब्दणद्य विष्ट्रम-छात्र कक्न (धम । ভণয়ে বিভাপতি माज्ञण विकि देवन एकम #

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুরির ২০৬৯ ও প-র পুরির ৩৯/১০ ও ৪২/৪৭ সংখ্যক পদ। 'বিহপড়া' এবল 'বিভাগ' প-র ৩৯/১০ । 'বরাড়ী' প-র ৪২/৪৭। এই পদটি ২৭৪৪ সংখ্যক পদরতে পুনক্ষতুত হইরাছে। ২। 'রহল কুচ' কলে 'প্রোধরে' পর। ৩। 'কুড' প-র-সা। ৪। 'পুরুকে' ক। ৫। 'পুরুবরাল 'ফ। ৬। 'সবি হে' ইত্যাদি কলে ১৫২০ সংখ্যক পদের ক, ব, ব, চ ও প-র-সা পুরির পাঠ, ববা—

'রাধা মাধ্য কেলি-বিলাদে।
্আবেশে কোরে আপোরল পুন পুন অতিশর হুরত তিরাদে॥'
২৭৪৪ সং পদের ও প-র পুথির পাঠ, বুধা—
"সুধি হে মাধ্য কেলিবিলাদে।

আরডি রভিরদে

यथा-

পুন পুন স্থাতিক আশে এক।"

নগেকবাৰু মিধিলার ভালপত্তের পুথি হইতে এই
পাঠের পরিবর্জে নিয়লিধিত পাঠ উদ্ভ করিবাছেন,

কোতে খুমারল

"সধি হে মাধব কেলি বিলাসে। মালতি রমি অলি নাই অপোরদি পুস্থ রতিরঞ্জ আগে ॥"

সার গ্রিমারসন সাহেবের সংস্করণে কিন্তু 'নাই' অগোরাস' পাঠের পরিবর্তে 'নাই অগোরাম' পাঠের পরিবর্তে 'নাই অগোরাম' পাঠ দুই হর। নগেন্দ্র বারু 'নাই' শব্দের অর্থ—'ভার' ও 'অগোরসি' শব্দের অর্বানা ব্রিদান । 'ভার' অর্থে 'নাই' শব্দের প্ররোগ ব্রিদান বিল-সাহিত্যে দুই হর না ; 'নাওসাইতেছে' অর্থে মধ্যম-প্রক্রের স্কৃত্যু 'নি'-বিভক্তিবুক্ত 'অগোর্নি' পার হইতে পারে না ; স্ক্রেরাং নরেন্দ্র বারুর প্রতিপাধিত অর্থ সমর্থনিবার্গ্য নহে। সার প্রিমানসন এই পানের ইংনেন্দ্র অন্থনারে 'নাই' শব্দের অর্থ 'bendeth' ও 'অগোর্নি' শব্দের অর্থ 'watcheth' পিনিরাছেন। ব্যক্তঃ এ বৃধ্যে 'নাই'

প্রকৃত পাঠ হইলে, উহার অর্থ 'নোয়াইরা' অর্থাৎ 'bending' হইবে; কিন্তু আমাদিগের বিবেচনা হয় কুবে, নগেক্ত বাবু কিংবা স্যন্ত গ্রিপ্তান্ত বাবু কিংবা স্যন্ত গ্রিপ্তান্ত বাবু কিংবা স্যন্ত গ্রিপ্তান্ত বাবু কিংবা স্থান্ত নহে। মৈথিল প্রথির প্রায় অফ্রপ বিশুদ্ধ পাঠ "হরিবল্লত" নামে প্রসিদ্ধ বৈক্ষবাচার্য্য বিশ্বনাপ চক্রবর্ত্তা মহোলগের সক্ষ্যিত 'ক্ষণদা-গীত-চিন্তামণি' গ্রন্থেই ষ্ট হয়, ব্যা—

'সথি হে কেশব-কেলি-বিলাদে। মালতি অলি-সমি নাহ আগোরল

পুন রতি-রক্তক আশে॥'
অর্থাৎ 'স্থরত সমাণি' ইত্যাদি প্রথম কলিতে
নামকের রক্তি-প্রান্তি বর্ণন করিয়া, দিতীর কলিতে
পদকর্তা প্রীরাধার শরন-পদ্ধতি বর্ণন করিয়া বলিতেছেন বে, অলিঘারা রমিত মালতী (ধ্বনি-সমা
অর্থে নারিকা) পুনর্কার রতি-বিলাদের আশার
নাথকে (ধ্বনি-সমা অর্থে নারককে) জড়াইয়া
ধরিয়া রাখিল। গীতিচিন্তামনির পাঠই সমীচীন
বোধে সুলে গুরীত হইল।

' অভঃপর ১৫২৩ সংখ্যক পদে ক, ধ, ব, চ ও প-র-সা পুথিতে নির্নিধিত প্রক্রিপ্ত কলিট দৃষ্ট হর, বধা,—

'হছঁ হছঁ নিবিড় আলিলনে চুম্বই

হছঁ-রলে হছঁ মন ডোর।

অধর-অধারদ পীবই হছঁ হছঁ

কো কছ আরতি-ওর॥

প্ৰক্ষতক্ষ হৰ্ব শাৰার ২৭৪৪ সংখ্যক পদে, কিংবা 'পদাযুত-সমূত্ৰ', 'গীতচিভাষণি ও 'পদ-রন্ধাকর' প্রছে এই কলিট না ৰাকার এবং 'পদাযুত-সমূত্ৰ' প্রছে রাধানোহন ঠাকুর কর্তৃক ইহার প্রায়

সম্বাদ্য বাৰ্থাক 'বৰন নিলাই' ইত্যাদি কলিটি উদ্ধুত ও ব্যাখ্যাত হওৱাৰ, 'ছহ' হহ'' ইত্যাদি কলিটি আব্দিশ্য বলিয়াই প্ৰতীতি হইতেছে।

৭। 'বছৰ' ইভ্যাদি কলিটি ১৫২৩ সংখ্যক পৰে নাই, কিছ ০ৰ্থ লাখার ২৭১০ সংখ্যক পদে ও 'পৰামৃত-সমূত্ৰ' প্ৰভৃতি সকল প্ৰছেই আছে; স্থাভৱাং উহা অপৰিহাৰ্য্য বোৰে মূলে গৃহীত হইল। ৮। 'নিশি অবশেষে' ইত্যাদি তণিতার কলিট কেবল 'পদ-বভাকর' পুথিতে আছে; ইহার পৰিবর্জে নগেক্ত বাবু তালপত্রের পুথি হইতে নিম্নলিখিত পাঠ উদ্ভুত কৰিয়াছেন, বথা—

'ভণই অমিকর প্রনহ বধুরপতি রাধাচরিত অপারে।

রাজা সিবসিংহ স্পপনরাখন স্থকবি ভন্জি কণ্ঠহারে ॥'

নগেল বাবুর ক্বত ইহার অর্থ—'অমিকর—অমৃত-কর, শিবসিংহের মন্ত্রী।' অমৃতকর নামের সহিত বুক্ত ভণিতা নগেল বাবুর সংগ্রহেও আর নাই!, বিশেষতঃ স্যর গ্রিমারসন ইহার পরিবর্তে নির-নিথিত পাঠ উদ্ধৃত করিয়াছেন, বর্ণা—

'গুণহি' বিভাগতি শুনহ নধুর পঞ্জি রাধা চরিত অপারে।

রাজা শিবসিঁহ স্কণ নারায়ণ প্রাণবতী কর্মভাবে ৪°

এ স্থলেও তাণ-পত্তের পুথির পাঠ জান্ত বলিরাই অন্ত্যান হর।

ग्रेका

৮—>>। "বদন" ইত্যাদি। (শ্রীরাধার)
বদনে (নিজের) মুখবওল, বিলাইরা (শ্রীরুক্ষ)
রহিলেন—বেন চক্র (নীল) কমলের সহিত বিলিত
হইল। (চক্রের সহিত কমলের স্বাতাবিক বৈরিতা
থাকার এই অসম্ভব-মিলন হারা 'অভ্যুতোপনা'
অগ্যার ঘটিরাছে।) শ্রীরুক্ষের চঞ্চল-মর্নন-রূপ
শ্রমর ও শ্রীরাধার নিঃশাল-নরন-রূপ চক্রের পরশার
রসোজ্বাস বিশ্রিত করিরা (পরশারের) রুণায়ত্তরুণ মধু পান করিতেছে।

তথা নান।
নওল কিশোর নওল নাগরিয়া।
আপন ভূজে তাম-মূখ-মণ্ডল আম-মূখ-মণ্ডল
আম-উরে নিজ উর ধরিয়া ॥
করত বিনোদ তরণি তনয়া-তট
উপারে অমির-রস ভরিয়া ॥১০০॥১৫২৪॥
ইত্যাদি বাসন্তী-রাস-লীলা।

অথ ফুল-দোল। তত্র শ্রীমহাপ্রভূ। ভূজী।>

ফুলবন গোরাচাঁদ দেখিয়া নয়নে।
ফুলের সমর গোরার পড়ি গেল মনে।
ঘন জয় জয় দিয়া পারিষদগণে।
গোরা-গায়ে ফুল পেলিও মারে জনে জনে।
প্রিয় গদাধর সজে আর নিভাানন্দ।
ফুলের সমরে গোরার হইলও আনন্দ।
গাদাধর সজে পছ করয়ে বিলাস।
বাস্থদেব খোষ এই করলও প্রকাশ।

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ২০৭০ সংখ্যক পদ। ২। 'লোরা' ক, প-র-সা। ৩। 'ফেলি' ক। ৪। 'সমরে' ইভ্যাদি ছলে 'সমরে পৌর বিহরে' প-র-সা। ৫। 'রস' খ।

বরাড়ী।১

বন মাহা কুন্থম ভোড়িং সব স্থিগণ
সরস সমর করু ভাহিঁ।
মারত বদন নেহারি কুসুম-শর
শোহত সমরক মাহিণ ম

কো কছঁ মরমক । কেলি ।

নওল কিশোর নওল বর শাগরি

ললিভা বিশাখা সখি মেলি ॥ এ ॥

মণিময় ভূষণ ভুমু ভুমু শোহন

রুপু বৃশুণ নৃপুর বাজে ।

গোবিন্দান কহ রমণি-শিরোমণি

লীভল বিদ্যধ-রাজে ॥১০২॥১৫২৬॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুৰির ২০৭১ সংখ্যক পদ। ২। 'ভৌরি' ব , 'ভেজি' চ । ও । 'সাহি' প-র-সা । ৪ ৷ 'সমরড' প-র-সা । ৫ ৷ 'ল্ব' ক । ৬ ৷ 'ললিভাদিক' প্র: পুৰি । ৭ ৷ 'ঝুরু ঝুহু'ব, প-র-সা । ৮ ৷ 'জ্ভিল' ক , চ, প-র-সা ।

कमानि ।>

 লেই সব স্থিগণ ফুলক গেন্দু ভারয়ে শাসক অলে। আন্তত শ্রামণ . সুবড় রণ-পণ্ডিড वर्षे भूवण कवि भएण ॥ অপরুপ রাইক কেলি। দূরহি তাকি গেন্দু পেলি মারুরে শ্যাম-অকে স্থি মেলিং ॥ এই ॥ রোখলি তহিঁরণ- রসিক-শিরোমণি ফূল-ধ্যুক পেই হাত। এক বেজি ডাৰয়েণ শত শত গেন্দু সবছ সখীগণ মাণ্ড 🛚 রমণি ভেল একষুণ युथि युथ শ্যাসক অংক পড়াের ফুলরাশি। ফুল-ধমু ছোড়ি করছি কর্ণ বার্তী भीत्रवाम दे**ष तम शतका**णि ॥

117901100011

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুৰির ১০৭২ সংখ্যক পদ।
২। 'আঙল' ক। ৩। 'ত্বৰল' ক, খ, চ প-র-সা।
৪। 'কেলি' ছা ৫। 'ত্ৰাম-' ইত্যাদি ত্বলে
'কোডুকে ভাষ সধী মেলি' খ। ৬। 'ফুল' ক,
খ, প-র-সা। ৭। 'ডারত' প-র-সা। ৮। 'সাধ' প-র-সা। ৯। 'এক্যুখ' ক, প-র-সা। ১০। 'ক্ত' ক, খ, চ। ১১। 'বারঙ' ক।

ভূপানী।১

নিধুবনে হাধামোচন-কেলি।
কুত্ম-সমর করু সহচরি মেলি॥
বুজা দেবী বোণাওত ফুলং।
বছনিধ গোডক হচিত বকু তা।
সহচরি কু ম বিখেণ শুনম অল।
গোড়ল পিঞ্মুকুট বছ রল॥
লাখে লাখে গোন্দু পড়য়ে শুনম-গায়।
মধুমলল সহ তুল পলায়॥
স্বিগণ মেলি দেই করভালী।
কুল-ধতু লেই কিরমে বনমালী॥
রাইক সজে করমে ফুল-রণ।
কোই না জীতরে সমণ তুই জন॥
আদভুত তুরুঁ জন কুত্ম-বিলাসণ।
হেরি বহুনন্দন জানন্দে ভাসং॥

#708#2\:P#

পাঠান্তর

ইবাপ-র-সাপুথির ২০৭০ সংখ্যক পদ।
 ব্লুল'ক, চ. প-র-সা। ৩। 'বকুল'ক, চ,
 প-র-সা। ৪। 'বের' পর-সা। ৫। 'সহান'
 ব। ৬। 'কুসল'দ। ৭। 'উল্লেশ' প-র-সা।

छवा मान ।>

সমৰ সমাধিখা যুগল কিলোর। আওল তুত্ঁ যাহাঁ কুত্ম-কিটোরং # वृन्ता (प्रति-ब्रहिष्ठ कूल-(प्रामा। কুলয়ে তুহু জন আনন্দে বিভোগ। ॥ কুন্থম বরিখে সব সহচরি মেলি। গাওত বহুবিধ মনসিজ-কেলি ॥ কত কভ বন্ধ সুমেলি করি। নাচত গাওত ভাল ধরি॥ দোলত হুছ তন কুত্ম-হিপোরে। कु किर्ण कु मिश्व (पहे बारकारत II তডিতে জড়িত জমু । কলধর-কাভি। পা মলে ধাওলা মধুকর-পাঁতি॥ অপরূপ দোলত কেলি-নিকুঞে। হছ পর কুড়ম পড় 🏲 পুঞে পুঞে ॥ ছত মুখ হোর ছত মৃত্ মৃত্ হাস। বেরি মুগধ বহুনক্ষণ দাস ৪০০৫১৫২৯

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পু. ধর ২০৭৪ সংখ্যক পদ।

২। 'কুথ্মক ভোল'ক; 'কুথ্ম হিংগ্রাণ' ব, চ;
'কুথ্ম হিংগ্রাগ' ব, চ;
৪। 'ঝঁকোরে' ব, চ; 'ঝোকারে' প-র-সা।
৪। 'ঝাড়ডে'ক, ব, চ। ৬। 'ডথ' প-র-সা।
৭। 'ধাওড' প-র-সা। ৮। 'গড়রে' ক; চ,
পর-সা।

गठेमक्षत्रो ।ऽ

स्न-वरन रागिर्वः स्नामत ७२ । स्नामत नावत करत स्नामय ॥ स्नामत विजित्तः स्नामत स्मा। स्नामत नीत विज्ञातः स्नान्य ॥ ফুল-ভতু হেরি মুগধ ফুল-বাণ।
ফুল-শরেং হানল ফুলমর কান ॥
ফুলেণ উরল বনং ফুল-বায় মন্দ।
ফুল-রসে গুঞ্জরেদ মধুকর-বৃন্দ।
ফুল-রসে ফুল-দোল ফুল-বিলাস।
ফুল করে রহ যত্নন্দনদাস ॥

ইভ্যাদি বাসন্তী ফুল-দোল-লীলা।

>00# >600#

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপ্থির ২০৭৫ সংখ্যক পদ।
২। 'দেখিরা' ক, খ। ৩। 'ফিভিডল' ক। ৪।
'বরিখে' ক, খ। ৫। 'ফুল সরে' প-র-সা। ७।
'ফুলে' ক, চ, প-র-সা। ৭। 'ডফু' প-র-সা।
৮। 'ঋরে' ক, খ, প-র-সা। ৯। 'পুল' দ।
১০। 'ফুল' ক, চ, প-র-সা।

অথ মাধবী-বিলাস। ভতুচিত শ্রীগোরচন্দ্র।

वैद्यात ।>

চৌদিকে ভকতগণ হরি হরি বলে।
রক্ষন-মালতী-মালা দেই গোরা-গলে ॥
কৃত্ম কস্তরী আর সুগদ চন্দন।
গোরাচাঁদের অকে সব কররে লেপন ॥
রাজা-প্রোক্ত পট্রাস কোঁচার বলনি।
কলমল করে কিরেই অকের লাবনি ॥
চাঁচর চিকুরে চাঁপা মনোহর বুটা।
উন্নত নাসিকা উদ্ধ চন্দনের কোঁটা ॥
আলামুলবিত সুল সরু পৈতা কাছে।
মন্ত্র বিশ্বন পাঁঞা বুলি কুলি কান্দে ॥

দেবকীনন্দন বলে সহচর সলে।
দেখ সভে গোরাচাঁদ শ্রীবাস-ভবনে ॥
॥> ০ ৭॥১৫৩%

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ২০৭৬ সংখ্যক পদ। ২। 'ঝগমল ঝলমল করে' ক, খ, চ।

क्री।

विरनाम कुरलबर বিনোদ মালা विताम गतन तमातन। গাঁখিলে মালা कान विस्निमिनी वित्नाम वित्नाम कृत्न ॥ अ ॥ विद्रमान दक्ष বিনোদ বেশ विट्नाम वद्रग-शनि। গলায়• জালা विरनात्र माना विरनाम विरनामं १ रमामनि ॥ বিদোপ চিকুৰ विरमाप वक्रम বিনোদ মালা বেড়া। বিনোগ চাহনি विद्याप नग्नादन विट्नांप आधित छात्र।।। विर्भाग मुप विद्नाम युक विताम (भाषा करता। विट्नांग नागव विटनाम नगरत विरुद्ध ॥ विद्याप विद्याप विरमाप हनम विताम वननः वित्मान निषया नत्य। विटमानिमी मुश्यू লোচন ৰোলে विटन्ष (भोत्राटक १००४) १००४।

)। देहा शन्त्रना श्रीवेत २०११ गरवाण श्रेषः। अहे श्रोति वर्ष भन्निति २००२ गरवाण श्रेरकार

প্নক্ষ ত हरेबार । २। 'क्रन' क। ०। 'वाबिन' ष, ह (১৫৩२ त्रश्याक अन)। । । '(त्रोद्र' क, ब, ষ্, চ (১৫৩২ সংখ্যক পদ)। ৫। 'শরীর' ক, খ, ष, ५ (১৩१२ मरबाक भए)। २১७२ मरबाक भएए ও প-র-সা প্ৰিতে 'গোর' ও 'শরীর' স্থলে বধাক্রমে '(कम' ७ '(दम' भार्ठ चाह्न, डेहारे ममीहीन वारध मूरन शृशेष्ठ इहेन। ७। 'शना' क, ५, ६; 'গলাতে' খ। १। 'বিনোদ' ইত্যাদি ছলে 'বিনদ लाननि' भ ; (भ, म, ७ ह श्थिष्ठ 'विरनान' স্থলে সর্বাত্ত 'বিনদ' পাঠ আছে)। ৮। 'বান্ধা' क, ब, ब, ह (১৫: २२ मरबाक श्रम); 'वस्त' भ-द्र-ना। २। '(कभ' क, ब, ब, ह (১৫৩২ সংখ্যক भए)। ১०। 'विनम' क, च, **५** (२५७२ **मः** बाक **शह)। ১**১। 'वमन' थ (১৫৩२ मःश्वाक भन)। >२। 'विद्नोमिनिव मदन' थ (२००२ मः बाक भन)। o। 'त्रावित्ति' थ।

बत्रांड़ी ।> মাধৰ মাধবি মাধ্বি-কুঞ্জহিং वित्रहरे मांधवि-८वणः। মাধবি-ছার वनम् कत्र-कश्रग মাধবি-স্থুরচিত কেশ। (मथ निव भाषवि-त्रव । যাকর কুত্মহি স্বমহি॰ ভূলন॰ মাধৰ মাধৰি সল ॥ঞ॥ त्वा मथू-मरम छन-মত মধুকর বর অবিরত করত ঝঞ্চার। विज्ञान चन चन ভরুগণ কল-ফুল>-ভার॥ कूडूम छलान युग-माम त्लाभन

कक्र द्रविशिश अव।

শাৰৰ হেরত রক্ষ ।১০৯।১৫৩৪। 🗀

ত্তমু তমু ১ উত্তপ্র

তমু তমু ৰতমু মু-

্ পাঠান্তৰ

১। ইहा भ-त-मा পुषित २०१৮ मध्याक भए। २। 'नाधर जुकरि' ए। ७। 'स्मर्' ए, ५, প-র-সা। ৪। 'বেশ' क, **খ, প-র-সা। ৫।** 'কুফ্ৰছি' व। ৬। 'ভুলন' ক, ব, চ, প-র-সা। १। 'विव्यवत्र' क। ४। 'ख्यावत्र' क, ४, ४, ४, ৯। 'ফুলে' ধ। ১০। 'হুতহু তই' দ পুথিতে नार्हे ।

माबूब । >

वस्तन॰ शास्त्राहन চুয়াং চন্দন (लशहे कृह अन अव ।

কুস্ম-স্কুমারিক কুম্বন-শিক্ষার

করু সখি মাধ্ব সঙ্গ ॥ (एथ एएथ विट्याम विकास ।

<u>শ্ৰী</u>বৃন্দাৰন নিক্লপম-শোভন

व्यानत्म कृत इता हात ॥ अ ॥ পজির• গদগদ রব• **टकांकिल** भवरम কপোত-শবদে সিউকার।

यूक्न भूनकक्न व्यागवर बंद बंद जम् लाहत्न जन-शब्र ॥

হেরি ছুছ স্থি সঞ্ निमग्रन की क्रान् কত কভ অতমু-বিলাস।

মাধব ছেব্লি মন वानत्म क्वनः আপন সহচরি পাশ ॥১১০॥১৫৩৪॥

পাঠান্তর

)। देश **१-त-मा श्**षित्र २०१३ मध्याय भग। २। 'ह्वा' क, ह, श-त्र-ना। ७। 'वानव' ५; 'অগোর বহুল' क ; 'বহুল' চ, প্র-র-সা। ।। 'बारक' श-त-शा। १। 'कूक्व' देखानि शर्किनत परन व श्रवित्र शांठ ववा;-

'क्ष्य चल्यादिक कूष्य निर्मात क्ष मायन सारा और

৬। 'পভীর' ড়। १। 'বর' ধ। ৮। 'আই'ব' থ; 'আসর' ব, চ। ৯। 'স্বে' প-র-সা। ১০। 'অভ্রেমে' প-র-সা। ১১। 'ভ্রস' ক, প-র-সা। টাকা

e-- १। "দেখ" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা ও শ্রীক্তকের) মনোহর বিদাস-দীলা দর্শন কর। অভ্ননীর শোভা-মুক্ত শ্রীর্ন্দাবন (ঐ দীলা দর্শন করিরা) পূলা-ছেলে হাক্ত করিতেছে।

৮—১১। "কোকিল" ইত্যাদি। (নীণাদর্শন করিয়া প্রীর্ন্ধাবনের কিরপ গদগদ প্রভৃতি
নাদ্দিক ভাবের উদর হইরাছে, তাহা দেখাইতেছেন)
কোকিলের শব্দে (প্রীর্ন্ধাবন) গভীর গদগদ-ধ্বনি
ও কপোতের শব্দে হছার প্রভৃতি শীৎকার-ধ্বনি
(প্রকাশ করিতেছে); (প্রীর্ন্ধাবনের তক্সমূহের)
মুকুল (ভাহার) রোমাঞ্চ ও আসব অর্থাৎ মধু বেন
ভোহার) নরনে অঞ্জ-ধারা অক্স বিগণিত হইতেছে।

थानने ।>

চন্দন-চরচিত বিরচিত বেশ।
কুসুম-বকুল-মালে বাহল কেশ।
মাধবি-কুঞ্জে রাই সখি সল।
বিনহ²-বিলাসে মগন শ্রাম-অঙ্গ ।
কাঞ্চন-কেতকি চম্পক-দাম।
ধনি-অঙ্গে বিরচল নাগর শ্রাম।
নাগরি কুবলয়ে বিবিধ শিকার।
নাগর-অজে রচত কত আর ॥
কুঙ্গুম চন্দন রাই অজে দেল।
শ্রামতকু স্বগমদে লেপন কেল।
শ্রম্ম তুলু তৈছন মলাওল বেশ।
কি ক্হব মাধব তাকর শেব ॥
॥১১১॥১৫৩৫॥

ইভ্যাদি সাধবী-বিদাস। স্থাকে এতদগীতং গেরন্। ইভি ভূতীর-নাথায়াং স্থাবিংশভিপানবঃ।

পাঠান্তর

১। ইহা প্ৰ-র-সা পুথির ২০৮০ সংখ্যক পদ। ২। 'বিনোদ' ক, প্ৰ-র-সা; 'বিনোদ' পাঠে ছলোভক ঘটে। ৩। 'বৈছ্ন' ক।

অথ জ্যৈষ্ঠী-পূর্ণিমায়াং স্নান-যাত্রা।.
তহুচিত-গৌরচন্দ্রঃ।

ज्भागो ।>

শাৰ সুন্দুভি-নাদং বাজয়ে সুস্বরে।

গোৱাটাদের অভিষেক করে সহচরে।
গান্ধ চন্দন শিলা ধূপ বীপ জালি।
নগান্ধের নাগরিগণ আনে অর্থ্য-থালীং।
নদীয়ার লোক যত দেখি আনন্দিত।
ঘন জয় জয় দিয়া সভে গায় গীত।

গোরাটাদের মুখ সভে করে নিরক্ষণে।
গোরা-অভিষেক-রস্বাস্থ ঘোৰ গানে।

17176001

পাঠান্তর

১। ইহাপ-য়-সাপ্থির ২০৮১ সংখ্যক পদ।
 -২। 'নাদ' ক, ৰ প্থিতে নাই। ৩। 'বাজই' প-য়-সা; 'বাজায়' ব। ৪। 'নায়ীগণ' ক, ৰ।
 ৫। 'আর্ঘ্য' (আজাঃ) প-য়-সা। ৬। 'বেবেণ' ক; 'ভনি' ব। १। 'সব' ক।

ধরাড়ী দেশাক।>

তৈল হরিনা আর কুরুস কন্তরী।
গোরা-অঙ্গে লেপন করে নব নব নারী।
স্থাসিত জল আনিং কলসেও পুরিয়াও।
স্থান্ধি চন্দন আদি তাহেও সিপাইরা এ
জয় জয় দিয়া জল চালে পোরা-গার।
ব্রিজ্য বোছায়াও কেহ বসন পরার ।

সিনান-মণ্ডপে দেখ গোৱা নটরায়। মনের হরিবে বাহুদেব যোব গায়॥২१১৫৩৭॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০৮২ সংখ্যক পদ।
২। 'পুরি' প-র-সা। ৩। 'কলসী' ক। ৪।
'আনিরা' প-র-সা। ৫। 'আনি' ক, দ, চ,
প-র-সা। ৬। 'মোছাঞা' ক, ধ; 'মুছার'
প-র-সা।

च्या यात्र । ३

বসিলা গৌরাকচন্দ্র রত্ত-সিংহাসনে। শ্ৰীবাস পণ্ডিত অফে দেপয়ে চন্দনে। গদাধর দিল গলে মালভীর মালা। ऋटभन इहाम प्रभ पिश देशन जाला । বছ উপহার যত মিফার প্রার। বিভ্যানন্দ সহ বসি করিল ভোজন ॥ ভাষুণ ভব্দণ করি বসিলা সিংহাসনে। भंठी पाने वार्रेलन मानिनीय जत्म । পঞ্চরীপ স্থালি তেহ[†] স্থারাত্রি° করিল। निर्पाक्षन कति भिटत थाक पूर्वा क्रिन । **फल्फश्य करत मर्छ भूभा** विश्ववत । অধৈত আচাৰ্য্য দেই তুলসী চন্দন । प्रिचिट्ड बांहेरन प्रव महत्र এक महत्त्व। निजानम जिल्ला वित्र दिन वित्र । (भारा-चिंदिक এই चनत्रन नीना। পোবিক মাধ্ৰ বাহু প্ৰেমেড° ভাসিলা। 1013000

रेणानि जीरगोनठक्रक ।

111144

)। देशों शन्त-महिष्णित २०४० मध्याक शहा १। 'किरश' क, व, व, छ। ०। 'बात्रक्षि' क। १। 'दबरवाक' क, जन्म-मा। वर शिकृष्ण वर्ग।

शंनने ।> शिविषर-नमग्र गृह मार । যশোমতি হরিষ বাড়াহ° ॥ कृष्टि जव शांकुल-लांदिक । নিজ হুতে কল্প অভিযেকে। গিরিয-তপন ভর লাগি। বাসই ক্সম-পরাগি। স্থশিতল° বারি মধুর। ৰলস কলস ভরি পুর । মলয়ল কপুর বিশাই। হিমকর-শীকর লাই। রভন বেদি নিরমাণ। ভাহিঁ আনাওল কান ॥ বাসিত তৈল লাগাই। मान मानिशर्य आहे । শির পর ঢালত বারি। মাধব ছোব বলিহারি #৪॥১৫৩৯॥

পাঠাব্দর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ২০৮৪ সংখ্যক পদ।
২। 'গিরিপ' ব; 'গিরিপ' চ। ৩। 'বাচাই' ক।
৪। 'বাস্ত' ক; 'বাস্ত' ধ, ব, চ। ৫। 'র্মীত্রপ'
ক। ৬। 'সীকর' ক; 'সিকর' প-র-সা। ৭।
'ডইি' ক। ৮। 'ঢাস্ড' ক; 'ঢাস্ট' ধ, ব, চ।

ভাটনারি।।

টোটিকে অজ-বধু থেই জরকার ।

ঘট ভরি নির পর থেই জল-বার
লগত্রপ কামুক ইব অভিবেক।

টোটিলে অজ-রর শীব্র নেব ।

ক্ষম পোলাব কপ্রবৃত্ত প্রার ।

ঘট ভবি সেবল নিয় বার্ত্তির ।

সিনান স্থাগি পরই পিতবাস।
সহচরগণ বেচুল চারি॰ পাশ ।
বৈঠল° মন্দিরে সহচর মেলি।
বেশ বনাওত আনন্দ কেলি ॥
মলরজ কুজুম স্থাওলণ গদ্ধ।
বহুবিধ ঘূসণ লেপরে বহু ছন্দ ॥
মলরজ-কপুরণ-বাসিত ফুলহার।
পরায়ল কতহুঁ রতন-অলভার ॥
হেরি বশোমতি তব আনন্দে ভাসণ।
মাধব দেখরে রাইক পাল্পণ। ৪৫।১৫৪০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুধির ২০২৫ সংখ্যক পদ।

१। 'বধু' ক। ৩। 'জফোকার' প-র-সা। ৪।
'শির' ইভ্যাদি ছলে 'বেরল শির পর ডার' প-র-সা।

१। 'চৌদিকে' ক; 'চৌদিগে' চ। ৬। 'ফ্লীডল'
ক, খ, ঘ, চ। ৭। 'বেল্ল' ঘ। ৮। 'ফ্লীডল'
ক। ৯। 'কপুর' চ। ১০। 'ভানে' প-র-সা।
১১। 'পাবেশ প-র-সা।

शंवचे ।>

পহিলহি হুবদনি পাক রচন করি
ভোজন বহু উপহার।
সহচরি সজে গোপতে হেরি পিরামুখ
আনন্দ রক অপার ॥
বুশোষতি-বচনহি গোরি।
রৌহিণি-কর পর নেই বহু উপহার
ভোজন কররে নন্দন্ট থোরি ॥এল
কর্মন্থ করত পরকাশ।
ভোজন করাবি

क्षांच्या प्रमुख्या ।

বছবিধ লগতি বচন কহি বশোমতি ভোজন করাখন রাইরে। ও রস-সারর ঐহন নিভি নিভি মাধব অবধি না পাইরে" এ৬১১৫৪১৪ ইভ্যাদি গ্রীম্ব-কালোচিত অভিবেক।

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পৃথির ২০৮৬ সংখ্যক পদ। ২। 'প্রিরায়ুখ' ক। ৩। 'সক্ষ-নক্ষ্ম' ক। ৪। 'পরকাশ' প-র-সা। ৫। 'ক্ষম' প-র-সা। ৬। 'স্থীপণ' ক। ৭। 'পারে' প-র-সা।

वर्ष नीमां हमहस्त्र अनः यथा।

michinifa is Bigni canti i

বের হো নিলাসিরি*-রাজহি ।

হত্ত বা বনরাম সত্তে জন্মুপার

সিনান-মণ্ডপ মাকহি । এল।

শথ্য ঘন্টা কানী বেপু বিপাং বাঁশি

মধুর হৃন্দৃতি বাজন্তি ।

সেবাভি পড়্যারি ঘট ভরি বারি

ঢারউ ভাকন্ম মাধন্তিং ॥

জর জর ধনি হুর নর মুবি

স্তুতি নতি প্রণিপাত হি।

শীসুধচন্তকু সোরতা লাউছা
গলেন্দ্র বেশউ' লাগহি।
কর বহুপতি তিন-লোক-গতি

বহু উপহার ভোজন্তি?।

ন্পিকোঠাচনো^{১১} নালবেন্স^১২ বলে বেন্দ্-নারিমণ নাচন্টি ঃ৭১১৫৪২৪

विकामि सामगाया । - পাঠান্তর

)। रेहा १-त-ना भूबित २०৮१ मरश्य भग। शः 'श्रीमनिति' कं। ७। 'त्राविदे' ह। का 'बीबा' क्। ८। 'अफ्बाबि' अ-ब-जा। ७। 'ढांबके' ইভাদি হলে 'ঢার উভাকরু মাধব্বি' ক, ধ। উড়িরা-ভাষার ছপণ্ডিত অধ্যাপক প্রীযুক্ত বোগেশ-চক্র রায় বাহাত্র আমাদিপের বিজ্ঞানার উত্তরে শিবিষাছেল বে, 'ঢারউ তাকলু মাধবি' বাকাটি वक्षि-भून ; 'छात्रखे' क्रान 'छात्रहे', 'छावकू' क्रान 'ভাহাছু' .ও 'মাণডি' খলে 'মাণায়ে' শুদ্ধ পাঠ रहेरव। भवावनि-नाहिरछा चरनक चरन वर्तनान काल कृष्टीय श्रुकरमय अक्बहरन वा बह्बहरन 'हे' विकक्तित परम 'छे' विकक्तित आताम पृष्टे दत्र। স্তরাং প্রাচীন কালে উড়িয়া ভাষারও সেত্রপ व्यद्मान त्य हिन मा, देश निन्छि वना यात्र कि ? 'ভাৰাৰু' কোন পুৰিভেই দুষ্ট হইল না—ত্মভন্নাং আৰমা মূলে 'ভাকৰু' পঠিই গ্ৰহণ করিতে বাধা হইলাব। 'বাৰভি' শক্টি 'রাকভি' শক্ষে নিজাকর बुर्छ , 'माबाद्य' मरम मिन बारक ना : कुछदार नवक्डां व शल 'मांबंखि' मक थातान ना कतिता 'ৰাধাৰে' কিংৰা ডজপ অভ কোন শব্দ প্ৰবোগ করিয়াছেন বলিয়া সম্ভব বোধ হয় না, ভুতরাং ইয়া আচীৰ অয়োগ বলিয়া সমৰ্থন করাই বোধ হয় नवंछ। १। 'लोबरक' ४। প, চ, প-র-সা; 'লাউহ' प। ঐবুক্ত বোদেল बाबू मिथिबारहन, 'बाउँहि' एक शांउ व्हेरव। अ। 'বেশহঁ' क। ১٠।: 'সোভন্তি' प। ১১। তীবুক বোগেশ বাৰু লিখিয়াছেন—'মণিকোঠা চলে' বোধ दत्र 'मनिरकाठी खरन' हरेरव। 'खरन' नार्ठ रकान পুৰিতে নাই ; আনরা 'নণিকোঠাচলে' পাঠ ধরিবাই বর্ষ করিতে চেটা করিয়াছি। ১২। 'লালবেল' ক।

"रावाणि" रेजावि । अनुक स्वार्थन बार् निविधीरहर (व, 'त्नवाकि' ७ 'नक्प्रांति' नरसंद वर्-'त्वर्रावर'। वर्गकरत्ने त्वर् 'त्वर्वाकि' २। 'क्वाकि

क्तिबाट्या "'नक्रावि' नक्षियात्री, नश्कृष्ट अस्ति বারী। বারণাল। ছতরাং প্রেবাভিং ইভ্যাতি नारकात वर्ष--त्रनात्रर ७ श्राक्तिहातीता वष्ठ भून क्षित्रा डांशित्रत व्यवीर नीनाहननायु, प्रकला छ বলরামের মাধার চালিতেকেন।

>•->>। "बीम्बह्म देखामि। , बीम्क **बारमन बाबुब धाकिशांविक कर्य---"गासक-८वन** रहेए जानि श्रीप्रकृत्य त्रोत्रक जानिरकृत्य। 'নৌরড' এধানে সৌন্দর্যা অর্থ করিছে হইভেছে। সংস্কৃত 'সৌরভ্য' শব্দের 'সৌন্দর্য্য' অর্থ আছে।"

১২-->৫। "জর" ইত্যাদি। বছণভির বলি-राति ! जिनि बिरगारकत्र चार्थत-एगः जिनि तप्त-रवशैक्षण कारत वर्षां नीत-शर्वां कि क्रारवशीरक (থাকিরা) ভক্তপণের প্রাণত বহু উপহার ভোলন করিতেছেন। প্রকর্তা সালবেগ বলে (প্রাকৃত্র नमू(४) (१व-नात्री वर्षाए (१व-मानीनन नुका করিতেছেন।

क्रुहो ।>

এই বারং করুণা কর হৈডয় নিভাই। মো সম পাতকী আর ত্রিভুবনে নাই। মুঞি॰ অভি মৃঢ়-মভি মায়ার নকর। এই সব পাপে মোর তমু জর জর ॥ সেচ্ছ অধন বত ছিল অনাচারী। তা সভা হইতে বুকি মোর পাপ ভারী 🛊 व्यापय भारभित्र भागी क्यारि माश्रीरे । অনায়াসে উদ্ধারিলা ভোমরা ছুই ভাই 🛭 লোচন বোলে মো অধমে লয়া নৈল ক্ষেত্ৰ। क्रिम ना क्षिण पत्र। त्क क्षिट्य जात्न ॥

ইভি তৃতীয়-শাখারাং অন্টাবিংশক্তি পল্লবঃ।

विष्टे के, हो। हो। '(बारम' के श्रीवरक नाहे। हो। 'वृद्धिः व्यवस्तरक' कः, 'वृद्धिः व्यवस्त' थ, भन्तु-ना।

> व्यथं व्यक्तित्वः त्रथ-याक्वाग्नार विरमोत्रवक्कण त्रथात्वः नर्धनः वथा। यहरे।

नीनांहरन कंगनांवं नात्र। **७७**ठा-मन्मिटत हिन यात्र । অপরূপ রুধের সাজনি। ভাহে চড়ি বার বহুমণি ! (मिथ्रा कामांत्र भीत्रहति। निक्र १ लाग्ना अक कति ॥ भागा उत्पन मटक विद्या। व्यवाय निकटि यादेगा । त्रव (विष्: मांड मन्ध्रांस । कीर्खन कत्रदय (गात्रा तात्र । আজামুদাখিত বাছ ভুলি। यंग छैंद्रे रुति रुति विन । भगन एक पिन (मह श्वनि। পশ্য আর কিছুই না শুনি। निजारे क्रीयक स्त्रिमान। नाट बटक्यन जैनिवान । यूक्त चन्न नाम बात । ्मन वृति উচ্চবরে গায়। (शांविन्य माथव बाद्य द्यांव। যার গানে অধিক সজোব। क्ष्य बोगानक मन्द्रि । গৰাৰৰ পাতিভাষি করি। ा**ंक्ष प्रशा**न विकास । CHANT MICHE

এই মত কীর্ত্তন নতনে।

কথোণ দূর করিল লকনে।

এ সভার পদ-বেপু আশ।

করি কবে বৈকবেরণ দাস ॥১॥১৫৪৪॥

পাঠাক্তর

)। देश भ-त-ना श्रीत २०४० नश्याक शरा २। 'व्यानिता' प। ०। 'त्योत' क, का ाकः 'क्फ' क। ९। 'देवक्क' था.

শ্রীচৈতশুচরিতামতে যথা।

আপনে নাচিতে যবে প্রভুর মন হৈল।
সাভ সম্প্রণার তবে একত্র করিল।
উদ্দণ্ড নৃত্যে প্রভু ছাড়িয়া হছারং।
চক্র-শুমি গুমে কেন আলাভ-আকার।
নৃত্যে যাই। বাই। প্রভুর পড়ে পদতল।
সমাগর শৈল মহী করে টলমল।
তত্তে স্বেদ পুলকাশ্রু কম্প বৈবর্ণ।
নানা ভাবে বিবল গর্বব হর্ষ দৈল্ল।
১৯১৪ ৪৪।

ণাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ২০১০ সংখ্যক পদ। ২ । 'হাড়িয়া হকার' হলে 'হাড়ি কুছ্ড্যুরু' প-র-সা।

हेमन 13

ज्ञान ज्ञान-कारम।

बाट्ड दर्शना नाव

गटक देशकि श्रीक

वक वक बर्गकारण । अप

ভাবেত্তেৎ অবশ্ব

बारवरन किंदू मा कारन

and to be seen a

খোল করতাল কীৰ্দ্ৰন রুগাল चन चन इत्रिरंगन। क्ष कर श्रमि ञ्च नत्र भूनि গগৰে উঠয়ে রোল ॥ बीलांडल-वांजी আর নানা দেবী लाटकत खेबरन विहा। সভাই সাঁতারে তোষের পাধারে তুৰী বহু অভাগিয়া ৩০১৫৪৬॥ পাঠান্তর

३ । हेर्स भ-त्र-मा भूषित २०৯১ मःश्वाक भव । 'देयन' चरन 'देयन कन्गान' श-व-ना। २। 'कारव' ष्, भ-ष-मा।

मनन। क्लर्गठान।>

कोषिटक महाख॰ (मनि कत्रद्य कीर्खन किन নাত সম্প্রদার গার গীত। ৰাজে চতুৰ্দ্দশ খোল গগন ভেদিল হোল ৰেখি জগন্ধাৰ আনন্দিত I উন্মত নিত্যান্দ **লাচার্য্য লবৈভচন্দ্র** পণ্ডিত 🖲বাস হরিদাস। এ সভাবে সজে করি মাকে নাচে গৌর হরি **७०७-मधन** চারি পাশ । रित रित दोन दोएँन श्राप्त-करत मही स्रोटन नम्राटन वरुट्य जल-शांत्र। सूरमक्र किनिया जन থেমের তরজ-রজ তাৰে অই সাধিক-বিকার # ভাৰাবেশে পোৱা ব্যায় . নাচিতে নাচিতে বায় নাচে পচীনন্দ্ৰ কৰি কলি সনাত্ৰ शिदन शिदन हरन क्षत्रमंथ ।

দূরে গেল ছঃখ শোক প্রেমার ভাসিলং লোক ত্বাবর জন্ম পশু পাথী। বে প্রেম-বিলাস-ধাম বচ কৰে অসুপীয বে দেখিল সেই তার সাধী ৷ 18136891

পাঠান্তর

>। देश भ-ब-मा श्रीवद २०३२ मरवास भव। ২। 'মোহস্ত' প-র-সা। ৩। 'চডুর্ছিশে' ব। ৪। 'পরিপণ তাহে' প-ম-সা। ৫। 'ভাসবে' মু চঃ 'ভাবার' প-র-সা।

बांगरकणि। छान-जन्नः।>

हिड्या निडाई बादा दमान कार्ड नात्हदार । খোল করভাল পঞ্চম রসাল তारेबज्ञा जारेबज्ञा॰ बाटक दत्र ॥ সোণার কমল कदब छेलमल প্রেম-সুধা-সিন্ধু মাঝে রে। **উछम मधाम** मीन शैन जन এ ডেউ সভারে বাজে রে. # 6#268F#

পাঠান্তর

३ । देश शं-त्र-मा श्रुचित्र २०३० मरथाक शह । 'তাनखबर' क, ब, ह ७ भ-त्र-मा श्विष्ठ नारे। १। 'চৈডভ' ইভ্যাৰি পংক্তির ছলে প-র-সা প্রবির পাঠ वथा-'टेज्ड निडारे रिव लांन डारे नरम शविवर मारह रहा" ७। 'छारेच छारेच' भ-ब-मा। ।। 'क्यम' क, ब, ह, श-त-ना । e । 'बारब' श-त-ना ।

विश्वाचात्र ।>

ান করে সমুগ বাবোদর। पानम विभावनम् दर्भ द्वान-तरकी हैत । शाह बाह बीमानन् व्यवस्थानिक

निय अधिकत्वप्रधान मार्थ ह

नव्रन-क्यम

` মুখ নিরম্ল

প্রভুর দুকিন পালে নাচে নরহরি দাসে বামে নাচে প্রিয় গদাধর। নাচিতে নাচিতে প্ৰভু আউলাইয়া॰ পড়ে৽ কভু कांबांटवरम भटत क्षांबाद कद्र ॥ নিত্যানন্দ-মুধ হেঁরি বলে পত হরি হরি কৃষ্ণ কৃষ্ণ ডাকে উচ্চশ্বরে। সোঙরি ঐরন্দাবন প্রাণ করে উচাটন পরশ কররে রায়ের করে॥ 🗐 নিবাস হরিদাস নাচে গায় প্রেমোরাস প্রভুর সাধিক ভাবাবেশ। ইই রস প্রেম-ধন পাওল জগ-জন रगाविन्त मांगरम এक लिम ॥७॥३४१०॥ ইতি ভূতীয়-শাখায়াং উনত্রিংশ-পল্লবঃ। পঠিস্তির)। हेहा भ-त-मा भूभित २०२८ मःश्रोक भन्। 'এবাদার' ছলে 'গাদার' ক। ২। 'মুক্ল' ইত্যাদি ছলে 'মাধৰ মুকুলানক্ষ' প-র-সা। ৩। 'बाडेगांका' कः, 'এबाहेबा' ४ ; 'এन्दाहेबा' ह। श्वाप्तःश्वापतःश्

অব আবৰ-শুক্লগকে আন্দোলন-ক্রীড়া যথা। বুলন।

ভত্র শ্রীগোরচন্দ্র:।

দেশত ব্লত গোরচন্দ্র প্রপার বিধির অবধি রূপ নিরুপম

ক্ষিল কাঞ্চন জিনিরা। বুলারত কডং ভক্তবুন্দ গৌরহন্দ্র বেঢ়িরা।

जानत्त्र गरन जन जन नर

क्षेत्रहरू समाव महिला ।

শ্বদ-চাঁদ জিনিয়া।
নগবের লোক ধায় এক-মুর্থ
হরি হরি ধ্বনি শুনিয়া।
ধ্যা কলিযুগ গোৱা অবভার
স্বরধুনী ধনি ধনিয়া।

ক্ষৰণ বান বানরা।
গোরাচান্দ হৈন আন নাহি মনে
বাসুঘোৰে কহে জানিয়া #১॥১৫৫০॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ২০১৫ সংখ্যক পদ। ।

২। 'ঝুলারত কত' ফলে 'ঝুলাওড' ক। । ।

'করি' প-র-সা। ৪। 'গোরাপদ' প-র-সা।

कारबाव 15

त्मभ मिथ शोतहत्त्व वह द्रजीर। ঝুণত মুগল - , কিলোর বৈছমণ চলত সোই করি ভলী । এ। রচহ শিক্ষার अ्तन - यूथ (कांबर মনহি ভেল উপনীত। তৈছন সহচর গাওত আনন্দ গোর পহঁক মননীত 🛚 হেরি গদাধর নহ নহ বোনত मन मारा किएम एक तक। चांकू शंभ जूबा गतन व्याम विमान **अरु**हत्रगण कतिः अवा এছে বিলাস গৌর পহ বিলসম্মে পুরব প্রেম+রসে ভোর। কহ শিবরাম মনহি অুখ এছন

)। देश भन्तना पृथित २००७ तरशास भागाः २। 'तिमत्र' शन्तना । कार्यक्षात्र' भन्तनाः।

পাঠান্তর

(कार कतर्व भव क्षत्र ।२।)००)।

和四 百

নব ঘন কানন শোহন কুঞ্ছ ।
বিক্সিত কুসুমেও মধুকর গুঞ্জ ॥
নব-নব প্রবে শোভিত ডাল।
সারী শুক পিক গাওয়েও রসাস ॥
তহিঁ বনি অপরুপ রু রুন হিঁডোর ।
ত্যু/পুর বৈঠলি কিলোরি কিলোর ॥
বেজ-রমণীগণ দেওত ঝকোর।
গিরও জানি ধনিং করতহি ২০ কোর ॥
কত কত উপজল রস-পরস্ক।
গোবিক্দদাস তহিঁ দেখত রক্ষ ১০ ১০ ৫২।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুণির ২০৯৭ ও প-র পুণির ৩০।১১ সংখাক পদ। ২। 'শোভন পূল' ক, খ, ঋ, চ। ৩। 'কুম্ম' ক, খ, ঘ, চ। ৪। 'মধু-কর অল' হলে 'শোভিত অনিপূল' প-র। ৫। 'ল্লান-নৰ' হলে 'নৃতন' প-র। ৬। 'বোলত' প-র। ৭। 'বনি অপক্রপ' হলে 'অপক্রপ নব' প-র। ৮। 'হিন্দোল' ক্র', 'হিন্ডোর' খ, প-র। ১। 'ক্লানি ধনি' হলে 'বনি কার্য', প-র। ১০। 'ক্র-ল্ছি' প-র।

निका

৭—৮। "ত্ৰক" ইত্যাদি। ব্ৰধাননাগণ (সেই হিন্দোলাকে) বকোন অৰ্থাৎ ধাৰা দিতেছে; ছন্দনী জীৱাধা পড়িবে নানিয়া (জীৱক) ভাঁহাকে ক্লোড়ে ধানণ করিতেছেন।

মাৰুগ।১ বিপিন্-বিহার করত নক্ষ-নক্ষম ত্ববদনি ধনি করি সঞ্চ। সকল কলাবতি তুহঁ প্রেম-আর্ছি मन मारा उपलल उल ह ্বৈঠল ছুহু জন রতন-হিণ্ডোর° পর স্থিগণ দেওত ঝকোরি। গগনহি মগন সগনং রজনীকর আনন্দে করত নিহাি 🖰 🗈 (पर्भ (पर्भ व्यश्यक्रभ ছारमा। মদন-মোহন হেরি মাতল মনসিজ ' ় কামু নিহারে মুখ-চাঁদে। এ। গরজি স্ব খেরল বারিদ গরজি वूम वूम कक़ भाछ। মলয় চল হ্ছ পর কহ শিবরাম মূহ মৃত্র করতহিঁ । বাত ॥৪॥১৫৫৩।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ২০১৮ সংখ্যক পদ।
২। 'বিপিনে' খ, প-র-সা। ৩। হিন্দোল' ক।
৪। 'ঝোকারি' ক; 'ঝোকারি' খ, চ । ৫। 'সমন'
ক, ৬, চ, প-র-সা। ৩। 'নেহারি' ক, ৬, চ,
প-র-সা। ৭। 'কাম্ম' ইত্যাদি হলে 'কানন হেরি'
ক; 'কানন হের' খ; 'কানন হেক' চ, প-র-সা।
ম পুথির পাঠ ব্যতীত মন্তাক পাঠ মর্থন্ত ও লিশিকর-প্রমাদ-ক্ষনিত বলিয়া ব পুথির 'কাম্ম নিহারে'
মূলে গৃহীত হইল। ৮। 'মলম' ইত্যাদি হলে
'সমরে চল হহু' প-র-সা। ১। 'কহুতহি' প-র-সা।

ननांत्र ।>

লেখ সখি কুলত বুগলং কিশোর।
নীলমণি জড়ায়ল কাঞ্চন কোর।
লালড়া বিশাখা সখা কুলায়ত স্থাৰত।
আনলে বগন হৈছি হোটো হোঁছা-মুখে।

গরজত গগনে সন্ত্রে বন বোর।
রিলিণি সজিনি বেরত চৌওর ॥
বিবিধ কুস্থমে সভে° রচিয়া হিন্দোলা॰।
দোলার যুগল সখী আনন্দে বিভোলা॥
নুলাওত সখীগণ করতালী দিয়া।
স্বদনী কহে পাছে গিরুরে বন্ধুয়া॥
বিগলিত চুকুল উদিত স্বেদ-বিন্দু।
অমিরা বারয়ে যেন ছত্ নুখ-ইন্দু॥
হেরি সব সখীগণ দোহাকার শ্রম।
চামর বীজন লেই করয়ে সেবন ॥
ভামর কোকিল সব বসি তর্জ-ভালে।
রতি জয় রাধাক্ষ্য রাধাক্ষ্য বোলে॥
কহে জগলাথ কনে হবে শুভ দিনে।
সখী সহ দোহাকারে হেরিব বিপিনে॥
॥৫॥১৫৫৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা গ-র-সা পুথির ২০১৯ সংখ্যক পদ। ২। 'পোরি' প-র-সা। ৩। 'কুস্থমে সভে' স্থা 'কুস্থম সোভে' প-র-সা। ৪। 'হিখোলা' চ। ৫। 'ঝুৰ্বে' প-র-সা।

वित्रात ।>

দেশ সখি বুলভ বিনোদ বিনোদিনা।
বুলন উপরে শোভে হেন নাল-মণি॥
বুলি বুলাওরে সকল সখীগণ
হেরি আনন্দে মাতিয়া।
হুছ ব গুণ সভে গাণ্ডত বাওতং
হেম-পুতলী-পাঁতিয়া।
কুপোড কীর শুক সারী কোকিল
মর্র নাচড মাতিয়া।
হুছ ব মন নাহা উরল মনসিকং

বরনে মৃত্ মৃত্ হাস উপক্ষত
হিলন ত্ত দোহাঁ-গাতিয়া।
রভি-রভস-রসে হাদয় গর গর
বিছুরল প্রেম-সাঙ্গাতিয়া ॥৬৪১৫৫৫৪

১। ইহা প-র-সা পুথির ২১০০ সংখ্যক পদ।
২। 'বাজারত' প-র-সা। ৩। 'ছহঁক' ইভ্যাদি
শংকি চারিটি ঘ পথি ছাড়া অভাত পুথিতে নাই,
মুজাকর-প্রমাদে পরিত্যক হইয়াছে।

कश्यक्तो । ३ মাহ শাঙ্কন वित्रिध धन धन -তুহু বুলে কুঞ্চক মাঝা। বনি ফুল-মালা রচিত• দোলা তুত্বিচ নটবর রাজঃ। গগনে গরজনি नमटक नामिनि ছুহু গাওয়ে বছবিধ ভান। কছেপীনা হুছ द्रवाव दौना করহিঁ কর ধরু মান । मदम मिषिनि সবহু বজিণি দ্ৰু গান-পণ্ডিত শুর। কৌ কানড়া কেদার কোড়া ছত্ রজ-সায়রে বুরু । षयु भिष्य मंभिनि রূপণ লাবনি ঝুলত ১ হাধা কান। শুক সারা মোর চকোর বোলস্ক শিবরাম ছর্ছ গুণ গান **॥**৭॥১৫৫७॥ শাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা প্রবির ২১০১ সংখ্যক পদ।
২। 'নাবো' প-র-সা। ৩। 'বিরচিত' ক, ব,
চ, প-র-সা। ৪। 'রাবো' প-র-সা। ৫। 'ডাল' প-র-সা। ৬। 'নাল' প-র-সা। ৫। 'ডৌল' ইডাদি হলে 'কোকিল ডাকে বাব কোড়া ডাইক' প-র-সা। ৮। বুর ক, চ, প-র-সা। ৯। রেপরস ব, রেপ্ত প-র-সা। ১১। বির্ব ক, বৌর ব।

অভোচিত নর্ত্ত মারুর।

नक्षण नक्षण में अक्षरम । यु र भारानि ज्य जल्म ॥ त्रम-माधुति धक्र भ व्यवस्य । **দউ** নৃত্যুত প্রেম-তরক্ষমে । উহ সঙ্গে ভামিনি॰ मगरक मामिनि মধুর যামিনি অতি বনি। সূভগ শাৰন বরিখে ভাতন वुन्नं स्नात निह्न निह्न ॥ বদত মোর চকোর চাতক कीत (कांत्रिम व्यनगणि। রটভ দরদর তোয়ে॰ দাত্তর व्यवसायदा गतकनि । গাওয়ে সখি রি জোরি জোরি i त्रम (कति कामरे° (बाति (बाति ॥ द्यांति द्यांति हक्ष উপাক্ত আওজ বাজে পাখায়জ বিবি বিনাং। ৰাগর্না ৰাগ্র্ নন वानन वान मन् खागत्य नागत्य पिमिश पिनाः উহ দৃষ্টি ১২ ঠেরণ পহির ভূখণ यनटक वाहे ति ३० वाममनः। উষ্ট ষ্ট ষ্ট (बा मिग् मिग् Cचा निश्ः विश् विश्³ शूष शूषं नि वि वि वि नर्वे । वारण भू भू भीमा। यत-मधन रामवि रीवा ।

বর বীণ তাল প্রবীণ পূরল

প্রেম-ভরে হিরা হরখনি।

মণি-বিন্দু শরদ-ইন্দু

করত অমৃত বরখনি।
হংস সারস বদত পাবস

চারু চাতক রস-ঘনি।
বিহরে যে জন>৬ শিরোমণি।৮৯১৫৫৭॥

পাঠাতর

>। 'धूबी' ह; 'सक' च श्रीबट्ड नाहे। २।
'(मी' क, च; '(मोडं' ह। ०। 'डाविनी' क। ८।
'स्वमा' क; 'मत्रमा' थ, च। ८। 'डाविनी' क। ८।
'स्वमा' क; 'मत्रमा' थ, च। ८। 'डाविनी' हित्री क।
७। 'शांत्र' क; 'हांगडे' च; 'शांत्र' च। १।
'(शांत्रि (धांति' ख्रांन 'डें(खांति डें(खांति' क।
७। 'एम' क, च। >। 'जांवित्राच्च' क। >०।
'वांनित्र २ नत' क, च, ह। >>। 'जिति डिति' क,
च, च। >२। 'मृद्धि' क; 'मृह्दे' च, च। >०।
'वांदिति' च, ह। >८। '(खां मिश्र' हें डांकि ख्रांनि
'(खां मिश्र् मिश्र मिश्र' क, च। >८। 'निवि
निवि नर' क। >७। 'विह्रात वहत्र (स कन' ख्रांनि

পুনশ্চ দিনাস্তরে খুলন। তছচিত-জ্রীগোরচন্দ্র।

কানোৰ।

কোপ দেশ বৃগত গোর কিশোর।

স্বাধুনি-তীর গলাধর সজহি

চান্দনিং-রজনি উজোর ৪

শাতন মাস গগন বন গরজন

লালণিত লামিনি-নালাণ।
বরিশত বারি পাবন মুন্ধু সক্ষাহি

সঞ্চা-ভারা বিলাল ৪

্ব বিবিধ স্থান রচিত ভবিঁ দোলা थिक कुरुवहत्र - नाम। বট-ডক্ল-ভালে ডোর ক্রি বন্ধন মালভি-গুচ্ছ সুঠাম। े देवकेन दर्भाव বামে প্রিয় গদাধর ঝুলন রঙ্গ-রসে ভাস। সহচর মেলি ঝুলায়ত মৃত্ মৃত্ लामा यति ली भाभ । বাজত মুদক পুরব-রস গায়ত मःकीर्खन-सूध-त्रव । শান্তিপুর-নায়ক নিজাৰন্দ' द्विमान श्रीनियान नक ॥ পুরুষোত্তম সঞ্জয় আদি ব্যৱগ্ৰ क्कूम इन्दम् मूल। উ**দ্ৰ**ব বাস নয়নে কব ছেরব গৌর হোরর অমুকুল ১৯৪১৫৫৮॥ পাঠান্তর

ইহা প-র-সা পুথির ২১০২ সংখ্যক পদ।
 হা চালা ক, খ, চ। ৩। ভোলা প-র-সা।
 া ভিহি দোলা হলে 'হি দোলা ক। ৫। কুলুম্বর প-র-সা। ৬। 'লো' প-র-সা। १। 'নুজানক্ষ্' প-র-সা।

देशन (यटणांशांत्र ।>

আজু রচিত নব রতন-হিঁডোর ।

অরধুনি-তার তুক্ত-তরত তহিঁ

রসমর গৌর কিশোর ।এ॥

পরিকর প্রবড় ঝুলারত সহ সহ

সাওত তান সরস রস মাতি।

ইমটত গোল গোল তক থৈ থৈ

নাচত মধুর মাওত বহু ভাতি ।

নদীয়া নগর না রহণ কোই হর
তেজি চলত চৌদিশে নরনারী।
অধিক উহাহ হোরত হিয়েশ পছঁকর
হাস-মিলিত মুখ-চাঁদ নেহারি ।
অ্বনণ গগনে নগন গণ সহ মুখে
বরিধত কুম্ম করত জর্কার।
নরহরি ভণত ভুবন উমতায়ল
কো কহঁ অদভূত রক্ষ অপার ॥১০॥১৫৫৯॥
০পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২১০৩ সংখ্যক পদ।
২। 'রতন হিডোর' বলে 'গণিত হিডোর' খ,
প-র-সা। ৩। 'তর্জ' প-র-সা। ৪। 'উষ্টড
হথে' প-র-সা। ৫। 'ক্ত' ক, খ। ৬। 'বাজারত' প-র-সা। ৭। 'রহে' ক, খ। ৮। 'হিরে'
প-র-সাপুথিতে নাই।

बूलएव स्माव রসমর গোরা না কানি কি রঙ্গে মাভিয়া গো। **হেরি হেরি** গদা-धत्र मूथ कांचि- े ভঙ্গী করে কত ভাতিয়াং গো 🛊 নরহরি মুকু-न्मानि निम्नादन মৃত্ মৃত্ হাসি হাসিয়া গো। স্থরচিত নব হি ডোলা বতৰে বুলারত স্থাধ ভাসিরা সো। मधुत ज्याद गांग्र (करहा क्लरहा · एक भटन देशनक किन्ना दर्गा। मि लोका सिध जाबि (क कितादब ्रिम् गरन गरन श्विगंश। रगा ॥ अष्ठ मिरन कून-ালাজ বাবে সৰ विनिद्ध भागभा बाह्यां द्या। मबर्बि-भार्ष टनदात्र वाटतक

क्ष्रवृती-जीत्त्र वारेज्ञा त्या ॥>>॥>०॥

পাঠাবৰ

>। हेहा भ-द्र-ना श्रुषंद्र २००८ नश्याक शेषः।
२। 'छोछिन्ना' छ। '७। 'मुक्क प्राणि' च,
भ-द्र-ना। ८। 'हिस्प्राना' च। ६। 'स्क् कितादा'
चरन 'कितावादा' कः, 'स्क किताख' भ-द्र-ना। ७।
'शिन्ना' च। १। 'नेभथ' चरन 'मद स्म भथ' चः; 'मच नभथ' चः, 'नभथ' च, छः, भ-द्र-ना। ৮।
'सोहर्द्दा' कः, चः, भ-द्र-ना।

মলার I> •

দেখ স্থি ঝুলত রাধা শ্রাম। विविध यद्य चु-মেলিং স্থস্থর তান° মান হঠাম 🖟 আবাড়ঃ গভ পুন মাহ শান্তন স্থদ যমুনা-ভার। ठाक्मिनि° तकनो ञ्चमग्र ञ्चनग्र• মনদ মলয় সমীর। পরিপূর্ণ সরোবর প্রফুল্লিত ভরুবর া গগনে গরকে গভার। খোরু ঘটা ঘন দামিনি দমকত বিন্দু বরিখত নীর॥ (তহি) কলপদ্ৰুম-তন্ত ছাহ শীতল>• রচিত-রতন-হি ডোর। ৰুলয়ে ভছু পর>> গোরি শ্যামর यूनारय मधि छूटे अता ভড়িভ খন^{১২} জনু 👉 দোলয়ে হুভ্ ভনু ব্দধরে মৃত্ মৃত্ হাগ। বদন হেম নিল> কমল বিকশিত স্বেদ-বিন্দু পরকাশ। इतम द्वति दगारे विजन १० वीजरे

কপুর ভাসুল বোগার।

(बारन इक्ष्य वाकाय ! -

एवট मिष म-

কুমুমচন্ন বর হার লটকড ভ্ৰমর গুণ গুণ রোল । দাতুরি ঘন ঘন বোল্স্ (হুহু) ভালে চন্দন-চাঁদ চমকিড তিলক রচিত কপোল। চঞ্চল মুকুট স্থাক চন্দ্ৰিক शीर्र भन्न दर्ग (मान । (হুহুঁ) প্ৰবণে কুগুল চপল বল মল হৃদয়ে শশি-মণি-ছার। ঝলকে অভরণ वङ्गुष्ठ वन वन् ঝুকিড ঝুলন-বিহার ঃ (কোই)মস্প ঘুস্ণ স্থগন্ধি ছিবকত শ্যাম-গোরি-অক হেরি। স্থি-ভাষ্ণ ইলিভ্ৰ मांग छवन করত কুস্থমক ঢেরি ১১২॥১৫৬১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুষির ২১০৫ সংখ্যক পদ।

২। 'কুমেল' প-র-সা। ৩। 'তাল' প-র-সা।

৪। 'আবাঢ়' ক। ৫। 'চাল' প-র-সা। ७।
'কুষোলর' প-র-সা। १। 'বল্দ মন্দ' ক, খা

৮। 'বেখে প-র-সা। ১। 'ক্লভক' প-র-সা।

১০। 'কুমীতল' ক, খ, খ, চ। ১১। 'গরি'
প-র-সা। ১২। 'হামিনী' প-র-সা। ১৩।
'নীল' ক। ১৪। 'বীজন' ক, খা ১৫। 'বোল'
ক, খ, চ, প-র-সা। ১৬। 'নিখি' খা ১৭।
'কুসর শ্বন্ধিত' কলে 'কুসৰ সর্বিভ' কঃ 'কুসর সর্বিভ' খা ১৮। 'রোল'
খ, খা ১৯। 'বুল্মল' প-র-সা। ২০। 'ভাল'
খ, ডা

् क्लानि ।>

বুলত শাম

আনন্দ-রক্ষে মাতিয়া।

ইবড হসিত রজস-কেলি

বুলায়ত সব স্থিনি মেলিং

গারত কত ভাতিয়া ॥ গ্রু ॥

হেম মণিযুত বর হিঁডোর

রচিত কুসুম-সকে ভোর

পড়ল॰ ভ্রমর-পাতিয়া।

নবিন লভায় জড়িত ডাল

বুন্দা-বিপিন শোভিত ভাল

চাঁদ-উজার বাতিয়া॥

নবখন-ভমু দোলয়ে শ্রাম রাই সলে ঝুলভ বাম ভড়িত জড়িত-কাঁতিয়া। ভারামণি চন্দ্রহার ঝুলিতে দোলিত গলে দোঁহার হিলন ফুক্^{*}ক গাতিয়া॥

বিধিকট ধিয়া তাথিয়াণ বোল
বাজে মৃদক্ষ মোহন রোল
ভিনিনা ভিনিয়া তা ভিয়াণ।
ভেদ পরণ গ্রাম-পূর
বোর শবদদ জীলণ সূর
বরণ নাহিক বাভিয়া।
মণি-অভরণ কিছিণি বছ
বুলনে বাজয়ে কুমুর বছ

ৰন বন বাঞাতিয়া। রাধানোহন-চরণে লাশ কেবল ভরসা উদ্ধবদাস

अहित भूबित होलियों । 1901/६०२।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২১০৬ সংখ্যক পদ।
২। 'নাগরী' প-র-সা। ৩। 'পড়ত' ক। ৪।
'মাতিরা' প-র-সা। ৫। 'ডা থৈরা' ক, খ,চ,
প-র-সা। ৬। 'ডাডিরা' ক। १। 'প্রক' ক,
খ; 'পরল' চ। ৮। 'মরদ' ক, ঘ; 'মুরদ' প-রসা। ৯। 'ঝীতল' চ। ১০। 'পরিত' খা

বেলোহার ১১

কুলত সুধ্ময় শ্যামরং গোরি। वृन्ता - विश्व .. विकूछ मात्र मिल প্রিয় ল'লভাদি ঝুলায়ত থোরি । স্থললিত তথল হি ডোর মাঝ অভি ঝলকত যুগল-রূপ রুচি ধাম। यूगमार-व्यक्षन-পুঞ্জ-জন্ম-ভমু (क नत-तिन निष्ठ-नामिनि-नाम ॥ ি বিজয় নহ সম্ভূল শোভা ভুবন प्रह गुथ-हन्म विभल शतकामण। হেরি ছুরু ক গুণ গাওত চৌদিশে শুক পিককুল হিয়া আধক উলাস। वंदक्र खमत ষল্প কমু বাজত নৃত্যতি শিখিকুল উমগ অভন্ন। नत्रहित कर किय त्का वज्ञगव हेर वृन्तावन मधि विविध जत्र ॥১॥।১৫७०॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপ্থির ২১০৭ সংখ্যক প্র।
২। 'স্তাম' ক, চ। ৩। 'র্লাবন' ক, ব,
প-র-সা। ৪। 'ঘোরি' প-র-সা। ৫। 'ভরু'
প-র-সা। ৬। 'হর্ছ মুখ-চন্দু' ইভ্যাদি ভিন্তি
পংক্তি থ প্থিতে লিপিকর-প্রধানে পরিভ্যক্ত হইঃ
রাছে।৭। 'হর্ছ ক খণ' হংল 'হ্র্ছ কুখন' প-র-সা।
৮। 'করি' ক, খ, খ, প-র-মা।

(क्षांत्र ।)

আজু দলিত হিঁডোর মাঝে। রজে ঝুলত নাগর-রাজে 🛭 दाई ञ्चवमनि वाम भाग। কভন্ত আনন্দ-সায়রে ভাস। কিবা অদস্ভ তুরুকৈং শোভা। নাহিক উপমা ভূবন-লোভা। पृष् पृष् पृष् पृष् (भ ८ १ व । হাসিয়াণ চুম্ব দেই বেরি বেরি৽ 🛊 আঁখি-ভন্নী করে॰ কতেক ভাতি। কৰে গদ গদ রভসে মাতি ॥ ললিভাদি সধী সে স্থথে ভাসি। নেহারে দোহার বদন-ब्राच्य क्लायुङ मन्य मन्य। মিলিয়া গাওত গীত সুছন্দ ॥ वाक्क उवन वीन डेभान। मध्त मुलक मूत्रक ठक ॥ কেহ নাচে রুত ভঙ্গী করি। অতি মোহিত' তা দোঁহে হেরি। ञ्ब-नाबी निकागणह मर्व । পুষ্প-বৃষ্টি করত রক্ষে 👢 कंत्र क्या भक् वृत्सावन खति। শুনিয়া রজে মাতে নরহরি॥১৫॥১৫৬৪॥ পাঠান্তর

১.। ইহা প-র-সাঁ পৃথির ২১০৮ সংখ্যক পছ।
২। 'লোহক' খ, প-র-সা। ৩। 'হাসি' ফ, খ,
খ, চ। ৪। 'বেরি বেরি' হলে 'বেরি বেরি বেরি'
ক। '৫। 'করি' ক, খ, চ, প-র-সা। ৬।
'তান' খ; 'হ্নবীনা' খ। ৭। 'নোভিড' খ;
'মহিড' প-র-সা। ৮। 'নিজ্ঞপণ' ফ, খ, চ। ১। 'বার বার শক্ষ' ছলে 'জর শ্বন' ক, খ; 'বার শক্ষ' খ, চ।

THE IS

कांनिकीत्र क्न विकतिष्ठ सून मश्च विनकून পড়বহি পাঁডিয়া। নাচত মোর করতহিঁ সোর অনক অগোরণ ফিরতহি মাতিয়া। কানন-ওর হেরইভে ভোর কিশোরি কিশোর প্রেম-রসে ভাসিয়া। क्लन (किन पृष्टं कन (भिन व्यक्त व्यक्त (किन হৃদয় উল্লাসিয়া » কভয়ে স্থভান করভহি গান রাখত মান বন্ধ হুরঙ্গিয়া। দেই করতাল অতি সুরসাল করে ভালি ভাল वाश्वरय मुक्षिया। কত রস-ভাষ কমল বিকাশ মৃত্র মৃত্র হাস হ্হ-চন্ত্ৰাননে। উদ্ধবদাস-চিত-মন-আশ তুত্ক বিলাস मद्रभन कानटन ॥১७॥১৫७৫॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ২১০৯ সংখ্যক পদ। ২। 'কালিন্দী' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'আসোর' ক, খ, খ, প-র-সা। ৪। 'কড খে' ক।

क्षा बाब 15

আজু রাধা শ্রাম সলেতে বুলে।

মণিমর নব হিন্তোলাং সালাইরা

বংশীবট-ডট কালিন্দি কুলে।

ললিডাদি রঞে ভলী করি বেগে

বুলারই সূত্র বদন চাঞাণ।

রসবভি ভূজ পসারি নামরে

মরে ক্রে ক্রি ক্রি ব্রা

ভান রজেও চারু

চ্ব দেই বন মনের সুখে।

ভাষা দেখি সধী

বসন-অঞ্চল কঁ পিরা মুখে।

কৌতুক-বচন

কৃষি বুন্দা দেখী

ব্লায়ই পুন যভনে ধীরে।

কি আনন্দ বুন্দা
অয় জন্ম দিয়া রজেড কিরে।

৪১৭৪১৬৬।

পাঠান্তর

)। देश श-त्र-ना श्रीत्र २००० नःशाक शह। २। 'हित्लाना' क। ७। 'हाहिता' च, श-त-ना; 'हाहेता' ह। ८। 'हहेता' च, ह। ८। 'जरन' क। ७। 'हानि' क। १। 'तरनरख' क, च।

> বিহগড়া কেছারিকা।১ **উथल** इंग्लिन्सि-नीत्र। ভা**ट्र व्यक्ति स्था**त्र भीत्र ममीत्र ॥ শ্ৰীবৃন্দাবন মাঝ। কলপ-ভক্লণ-ভক্ল সাক্ত॥ ভাহে বনি রতন-হিঁডোর। পরিমলে জমর জমরিগণ ভোর 🛭 বিবিধ কুত্ম শোহে তায়। স্থৃত্ব মুদ্র প্রথম করু বার ॥ बुर्ल विनमिनि विनमित्रा । 'স্থিলায়ত সধি ছন্ত'-বদন চাহিয়া। চান্দনি বজনি উজোর। পিৰত অমিয়া-রস ভূখিল চকোর। क्षि नाहरे मन-त्रकः। वीशा त्रवाय बाकाटक मुक्टक ॥ কৃত্ত প্ৰবন্ধ কুতান। क्छ क्छ बाँग क्लि क्ले बान ॥

আনন্দ কো করু ওর। হেরি শিবরাম দাস রছ° ভোর॥ ॥১৮॥১১৫৬৭॥

পাঠান্তর

)। देश भ-त-ना भूषित २>>> नश्याक शव।
२। 'ठादि' प। ०। 'विस्नाविनी' क, ह। ०।
'विस्नाविना' क, ह। ०। 'नीवर्ष' प, ह। ०।
'वाक्यत' भ-त-ना। १। 'त्रह' प भूषिक नारे।

शननी ।>

নামিলা ভুরিতে বুলনা হইতে রসবভী রস-রাজ। বসিলা বছনে রভন-আসনে রতন-মন্দির মাঝ ॥ স্থচামর লেই वीजन वीजह (मवा-भन्नांत्रभ मधी। স্থাসিত জলে वहन शांधारम বসনে মোছাঞা দেখি। विविध बिठारे थाति छति दगहे थति छ्लं-नम्द्रि । कण्हं कोजूरक স্থীগণ সহে ভোলন করিল অ্থে। ভামুল সালাঞা **ट्यांन गयी रेगम्रा** लारांत्र वम्रत्न मिन । এ কেশং-কুমুমে निहिन्ना निहिन्ना निन । কুন্থম-তলপে विजना वाषिका छात्र। जानामः नेगडः नम्भ मृतिष ट्यिया त्यादिक काम ह

দেখি স্থাগণে কডছ বডনে

শুভারল ছুই ভার।

স্থার ইলিভে চন্দ্র সেবিভে

এ দাস বৈক্ষর বার ॥১৯॥১৫৬৮॥
ইভি ছুভায়-শাখায়াং ত্রিংশংপল্লবঃ।

পাঠান্তর
১। ইহা প-র-সা পুথির ২১১২ সংখ্যক পদ।
২। 'একেক' প-র-সা। ৩। 'অস্সেব' ক।

থাভিষেক-বিলাসঃ। আনে) শ্রীগোরচন্দ্রতা

रेक्ट्रवी।>

আজু শচিনন্দন-নব-অভিবেক।
আনন্দ-কন্দ নরন ভরি দেখ।
নিভানন্দ অবৈভ মিলিং রঙ্গে।
গাওত উনমত ভকভহিঁ সজে।
হেরইডে নিরূপম কাঞ্চন-দেহা।
বরিখরে সবহুঁ নয়ন°-খন-মেহা।
পুন পুন নিরখিতে গোরা-মুখ-ইন্দু।
উহলন প্রেম্-স্থারন-দিকু॥
ভগ ভরি পুরল প্রেম-ভংকে।
বঞ্চিত গোবিন্দান্য প্রসঙ্গে।১৯১১॥

পাঠাবর

३। ইহাপ-র-নাপ্রির ২১০> সংখ্যক পদ।
 १। 'বিলি বছ' প-র-না।
 ৩। 'সবহ' নরন'
 বলে 'বরনে সবছ' প-র-না।

बर्दे ।

আনন্দে ভকতগণ বেই জন্ত-রব।
বীবাস পণ্ডিত-বরে মহামহোৎসব॥
পঞ্চপব্য পঞ্চান্ত শত বট জনে।
সৌরাজের শতিবেক করে কুজুহান॥

রতন-বেদীর পর বলি গোরাচাক।

অপরপ রূপ সে রমন্ত্রী-মন-কাঁদ ।

শান্তিপুর-নাথ আর নিজ্যানক রায়।

হেরিয়াং গৌরাক মুখণ প্রেমে জানি বার।

মুকুক মুরারি আদি অ্মধুর গার।

হরি বলি হরিদাস নাচিয়া বেড়ার।

কটে কৃষ্ণাস গোরাচাঁদের অভিযেক।

নদীয়ার নরনারী দেখে পারতেক ঃ২৯১৫৭০৪

পাঠান্তর

১। ইহাপ-দ-সাপুথির ২১১৪ সংখ্যক পদ। ২। 'হেরি' ক, খ, প-র-সা। ৩। 'রুপ' প-র-সা।

जुनानी ।>

শব্দ হৃদ্ভি-নাদ বাজরে ত্বরে।
গোরাটাদের অভিবেক করে সহচরে॥
গদ্ধ চন্দন শিলা ধূপ দীপ খালি।
নগরের নারীসংশ করে অর্থ্যালী ।
নদীয়ার লোক সবং দেখি আনন্দিত।
যন জর জর দিরা সভে গার গীত॥
গোরাটাদের মুখ সভে করে নিরক্ষণে।
গোরা-অভিবেক-রস বাস্থ্যের গানে॥
॥৩॥১৫৭ ।

পাঠাক্তৰ

১। ইহা প-র-না পুথির ২১৪১ সংখ্যক পদ।
 ২। 'নাগরিগণ' प; 'নাগরী লোক' প-র-না।
 । 'আর্বাহৃলি' প-র-না। ।। 'বড়' प।

थानी ।>

जानक-कक्ष निजानक (श्रीतक्ष नक्षः)। (श्राम जानि सनि सनि (तान-सर्व जक्षः)॥ नीजानाथ (नदेः) नाथ निक्ष क्षितान। अवाधद वाद्यादद सविद्यात नाजः॥ হরিবেল উচ্চরোল বীর্তনের সাধ।
গোর-শিরণ চালে নীরণ শান্তিপুরনাথ।
অভিবেক সভে দেখা পরতেক পত্ত।
মৃত্য-গীত-আনন্দিত প্রেম-হাক্ত লত্ত।
ঘট ভরি চালে বারি গোরচন্দ্র-মাথ।
শুদ্ধবর্তারণ কেশ-ভার চামরের হান্দ।
মুখ-চন্দ্রণ-ভরে জন্ধনার বৈছে কান্দ।
মুখ-চন্দ্রণ-ভরে জন্ধনার বৈছে কান্দ।
সঙ্গ-চন্দ্রণ-ভরে জন্ধনার বৈছে কান্দ॥
অন্ন মোছি বন্ত্র কোঁচিণ্ণ পরাইলা রামাই।
সিংহাসনে দিব্যাসনেণ্য বসিলেন বাই।
অবৈশ্বচন্দ্র প্রেম-কন্দ পুলা কৈলা বভ।
করি নিভান্ত রামকান্ত ভাহাণ্যকৈবে কভ॥
৪৪/১৭৭২৮

পাঠান্তর

১। इहा श-त-ना शृषित्र २००२ नःश्वक शह।

१। 'नरक' क। ७। 'करक' क। ०। 'नरत' क,

५, श-त-ना। १। 'नेरत' क, थ, श-त-ना। ४।
'दर्रव' क। ३। 'क्र्रिकत' क। ১०। 'त्र्य-इक्ष' क, थ, श त ना। ১১। 'र्क्कािक, श-त-ना।

১২। 'र्श्वाहाक' थ। ১०। 'क्राहा रू, थ,

५, इ।

वज्य ()

সৌর স্থাদর পরম মনোহর পরম মনোহর পরম মনোহর পরম ।
সোণ-চম্পাদ- কনক-দরপণনিন্দি স্থাদর সেই ।
রাসিয়া গোলা পাছ হাসিয়া লাভ লাভ
ক্তমে পণ্ডিড ঠাম ।
ক্ষোভারি তথ্যম-রলে এ মোর প্রকাশে
স্থাহ সোণ পাছ হাম ৪

শুনিয়া পণ্ডিভ পতিহ' হয়বিভ **Бत्र-एटा ग**फ़ियांत्र। করয়ে স্ত্রতি নতি প্রেম-ললে তাসি भूलादक भूवन शांत ॥ ভাগবভগণে व्यानिग्रा देखश्रम পত্ৰ কৰে অভিৰেক। বারি ঘট ভরি রাখল সারি সারি গন্ধ আদি পরতেক 🛚 मुक्त्म गनाधन পণ্ডিত দামোদর মুবারি হরিদাস গার। উঠिन अन्नभ्यनि मणग-त्रव छनि नहीयां-नवनांद्री श्राप्त ॥ পণ্ডিত শ্রীবাস্য পছক শিৰে চালি বাবি। कोमिट्ग स्तित्वान বড়ই উত্যোল मक्न-त्रवंभ भव होती # নিভাই অবৈভ • अधिष्टं दर्शविष्ठ (रबरे डाहिन वाम। সিনান সমাপল ১৭ বসন পরায়ল>৩ भूतन जव³⁸ मम-कांब ॥ কভছ উপচারি भूवन[>] (नोत्रहति ভোজন আসন বাস। দণ্ডৰত মতি कत्रन वह खरि कर शिवर्षम गांग ॥०॥১৫१७॥

পাঠান্তর

)। देश निजनां श्रीचेत्र २००० मरवाक नेकृ।
२। 'त्रक्षत्र' य । ०। 'त्यास्त्र' ने च-त्रो । ०। 'त्यास्त्र' ने च-त्रो । ०। 'त्यास्त्र' चरन 'त्य त्यास्त्र' न-ज-ता । ०। 'त्यवस्त्र त्यां भ्रत्य 'त्यवे त्यां देश' न-ज-ता । ०। 'व्यक्ति' क, वं, न-ज-ता । ७। 'व्यक्ति' क, वं, न-ज-ता । ७। 'व्यक्ति' के । 'व्यक्ति' के , वं, न-ज-ता । ७। 'व्यक्ति व्यक्ति' व्यक्ति के । 'व्यक्ति व्यक्ति व्यक्त

১২। 'স্বাপন' ক, ধ। ১৩। 'পরশ প্রারন' ক, ধ। ১৪। 'পুরল' ক। ১৫। 'পুৰল' ক।

ज्या जान ।>

পূর্ণ কুখময় ধাম অম্বিকা নগর নাম ষাতে গৌর নিভাইর বিলাস। অতে প্রির নর্ম্ম-সখা স্বল বলিয়া লেখা त्रीबीनाम ऋत्भ भवकाम ॥ এক দিন রাত্রি-শেষে দেখিলেন স্বপ্নাবেশে महाक्ष्यक्र निजानम् जत्न। কৰে ওছেং গৌরীদাস পুরিবেণ ভোমার আশ আমরা আসিব ছুই জনে # নিশ্চর করিয়া কহি ভোরে। ভোষারে হাড়িয়া খেনে সোয়াথ না হয় মনে (माँटि देव ट्यामात मन्मिर्त ॥ क्ष ॥ উঠিয়া বসিলা জাগি শ্বপ্ৰ-ভল-অমুবাগী मत्न देश्य जानम द्रमप्र । **অভিবে**ক বত কাজ ভুরিতে করহ সাজ वक्रभ हत्रग स्ति क्य ॥७॥১৫१८॥ পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ২১৪৪ সংখ্যক পদ। ২। 'শহে' ক। ৩। 'পুরিডে' প-র-সা। ৪। 'আমারে' ক, খ, খ, চ। ৫१ 'সোরাহ' খ, 'সোহাব' খ, চ।

ভণা বাগ।>
আনন্দে ঠাকুর গোরীদাস।
ভাকিরা আপনগণে কহিলেন জনে জনে
বে হর চিতের পরকাশ ॥ গ্রু ।
আনহ সজল-জব্য চুগ্ধ পুলা পঞ্চগব্য
ধূপ রীগ বড উপহার।
আত্রশাধা ঘটে বারি কলা রোপ্ সারি সারি

শত ঘট পূর্ণ জল থড়া° গুরা নারিকল
মধ্যে পাতি দিব্য সিংহাসন।
ভক্তবৃদ্দ-বত জন আর কীর্তনীয়াগণ
আনহ করিয়া নিমন্ত্রণ ॥
হেনকালে আচস্থিতে নিত্যানন্দ করি সাথে
কর-ধরাধরি তুই ভাই।
সেই স্থানে উপনীত পণ্ডিত আনন্দ-চিড
সর্ক্রপাণ কহরে বলি যাই ৪৭॥১৫৭৫॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২১৪৫ সংখ্যক পদ। ২। 'রোপণ' ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'জোড়া' পর-সা। ৪। 'অরপ' প-র-সা।

वत्राणी।>

দেখ সুই ভাই গোর নিভাই
বসিণা বেদার পরে।

গগন ভেজিয়া আসিলা নামিরাই
বেন শশি* -দিবাকরে ॥

হৈরি হর্ষিত ঠাকুর পশুড
নিজগণ লৈয়া সাথে।

জল স্বাসিত ঘট ভরি কভ চালয়ে দোঁহার মাথে ॥ শব্দ ঘণ্টা কাঁশী বেণু বীণা বাঁশী খোল করভাল বারং।

জর জর বোল হরি হরি রোল চৌদিগে ভক্ত গার[ে] ।

সিনান করারা। বসন পরারা বসাইলা সিংহাসনে।

यून तीन चानि टेनजा चर्चापानी न्यूका टेकना क्ष्य केंद्र ॥

উপহারগণ করায়া ভৌজন -ভাষুণ চন্দন শেহৈ।

क्न-भाग निया जानाजि क्रिया काननिम क्रुक्ताल क्रिकेट १५०

পাঠাছর

>। ইহা প-র-সা পুথির ২১৪৬ সংখ্যক পদ।

२। 'নাবিলা আসিরা' ক, খ, খ, চ। এল 'নিশা'

ক, খ। ৪। 'বাবে' প-র-সা। ৫। 'গাবে'
প-র-সা। ৬। 'আধ্যধানী' প-র-সা।

ष्य निजानमहत्त्रशां भिरंदकः।

वक्त 15

ব্দপর্মপ নিতাইটাদের অভিষেকে। ৰামে গদাধর দাস মনে বড় হুখোলাস थित्र भात्रियमग्रन (मर्थ^{*} ॥ भक्ष वर्षे कल खित शक्षमया आपि कति निजारेकारमञ्जानित जारम । ट्रोपिट्श ब्रम्गीत्रन জজকারণ খন খন আর সভে হরি হরি বোলে। বাৰ পাদে গোৱীলাস হেরই দক্ষিণ পাশ चारवरण नाहरत्र छेवात्र। বাহু আদি তিন ভাই वानमा मजन गारे स्तक्षत्र गुण्य वात्रन धन रुद्रि रुद्रि द्वांग গগৰে উঠিছে রোল প্রেমার সকল লোক ভাসে। সঙরি° পরমানক ঠাকুর জীনিজানন্দ ७१ भाष्र बुम्लावन लाटम ॥३॥১৫११॥

পাঠান্তর

)। ইহা প-র-সা গুবির ২১৪৭ সংখ্যক পদ।
২। 'অভিবেক' ব, চ। ৩। 'বেশ' ব, ব। ৪।
'অয়কার' ক; 'অবোকার' প-র-সা। ৫। 'বাবে বেরি' প-র-সা। ৩। 'আনকে' ক, ব, প-র-সা। ৭ এঃগোড়ারি' ক। ৮। 'নিত্যানক' ক, ব। and win is

জর রে জয় রে জয় নিজানন্দ রার।
গণ্ডিত রাঘব-ঘরে বিহরে সদার য়
গারিবদ সকল দেখরে পরভেক।
ঠাকুর পণ্ডিত সে করেন অভিবেক য়
নিজ্যানন্দ-রূপ বেন মদন সমান।
দীঘল নরান ভাঙ প্রাস্ত্র বরান য়
নান। অভরণ অলে ঝলমল করে।
আকামুসন্থিত মালা অভি লোভা করে য়
অরুণ-কিরণ জিনি ভূখানি চরণ।
হৃদরে ধরিয়া করে দাস বুন্দাবন য়
য়৴০য়৴রণ১৮য়

পাঠান্তর

)। देश भ-द-ना भूषित २५०৮ मरबाक भव।

় তত্ত্ৰ পূৰ্বাভিষেক:।

बानके 15

ञ्ज्रश्रुनि-वात्रि वानि कनि हारहे পুন ভরি পুন ভরিং চারি। কো জানে কাৰে - লাগি অভিনিক্ইণ नीना वृत्रहें ना भावि ॥ (रवरेट्ड मकु॰ महन नानि वस take সীভাগতি প্রবহত পর । এ। नव नव कुनजी॰ यक्त मक्त्री তাহি দেই হাসি হাসি। কৰছ" গৌৰ পিড খামর লোহিড क्वर • बूबि शबकाणि । তাহিনে বহু পুরু-ৰোভৰ পণ্ডিত कामांचय बर्च बाम । অপস্তপ চরিত্ত द्दित गर हम्बिक् (शंक्षिणांन क्रानाम) ३३०॥>६१३॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ২১৪৯ ও প-র পৃথির ১।৭ সংখ্যক পদ। 'ধাননী' হলে 'কামোদ' প-র। ২। 'পূন' ইত্যাদি হলে 'পুনহ ভরি ভরি' প-র-সা। ৩। 'কাহে' ইত্যাদি হলে 'কি লাগি কাহে পুন সিঞ্চই' প-র। ৪। 'হেরই' ক। ৫। 'অহৈত' ক, খ, ছ, চ। ৬। 'জুসসী ক' প-র। ৭। 'তাহি' ইত্যাদি হলে 'তহি পুন' ইত্যাদি প-র। ৮। 'সিত' ক, খ, ছ, চ, প-র-সা। ৯। 'কো আনে কতহু' ক, খ, ছ, চ, প-র-সা। ১০। 'স্ব চ্মক্তি' হলে 'চ্মক্তিত ভেল' প-র। ১১। 'সান' ক, খ।

व्यथ बीकुक्षण (मर्गाज्यकः।

क्नानि ।>

ভর পাই অতি দেব স্থরপতি আসিয়া গোকুলপুরী। হর্ষিত হৈয়া নিভূতে পাইয়া भट्ड कुक-भम भति ॥ স্তুতি ৰতি করি পুন পুন পড়ি जनवाय क्यारेल। দেবগণ লৈয়া একত্ত হইরা कुक-वर्षिषक देवन । আলিয়া গ্ৰন্থতি কৃষ্ণ-শিরোপরি हानेष्त्र खत्नत्र कोत्र। শির পর চালি॰ দেবস্থ (মলি वाकान-शवात नीत ह विष्ठायती मोट পুশুভি বাঁৰে गक्रति वश्व भाव । का का स्वी পড়ে স্বভি-খাণী 🐬

(प्रव-क्लब्र **নহাসহৈ। ২**সৰ নানা মতে পুলা কৈল। হৈয়া দণ্ডৰতে পড়িলা ভূমিতে **ठब्रटन भवन टेनन ॥** ुके देशा हित ७ ७ वृष्टि॰ कवि जब दमवंशन शादन । शम-त्रक देशका অভয় পাইয়া (गला नव (प्रवग्रत् । वाहेना खरन निम्मन नम्मन লোকে কেহ না কানিল। গাইল মাধ্ব কৃষ্ণ-অভিবেক (प्रवर्गात (यवा देकन ॥)२॥)१४०॥

১। ইহা প-র-সা প্রথির ২১৫০ সংখ্যক পছ। ২। 'হরবিত হৈরা' হলে 'হরিব হইরা' য। ৩। 'ছালে' য। ৪। 'ছুই' প-র-সা।

পাঠান্তর

অধ প্রীরাধিকায় অভিবেকো বথা।

"প্রীত্যা মকল-গীত-নৃত্য-বিশসবীণাদিবাজ্যোৎসবৈ"রিত্যাদি বিলাপ-কুসুমাঞ্চলো।

• তদ্বধা।

करियांच ।>

এক দিন সুন্দৰি নাই সুনাগৰি
সব সহচরিগণ সল।

শ্রীহৃলাবনে কুঞ্জ-নিকেজনে
বৈঠল কৌজুক-রজ ঃ
ভহিঁ পুন ভগবভি পৌৰ্নাসি বোক্ষা
ব্রজ-বনদেবিকি সাধ।
রাইক শুভ অভি- বেক কয়ণ লাবি

वाका कानिक गाँव ।

কড পতং ঘট ভরি বারি স্থ্বাগিত ভাহি করল উপনীভ দ্ধি ছুত গোরস कुक्ष हन्दन কুসুম-হার সুগলীত ॥ বাস ভূষণঃ উপ-হার রসায়ণ আনল ক্ত পরকার। देवर्रंत भाषा-मुख রতন-বেদি পর नियग्न (पर **क्यूकां**त्र ॥ **बिवुम्बा**वन ভূমীশ্বরি করি क्राविक कक्र व्यक्तित्व । (ठोपिट्श कर कर মঞ্জ-কলরব चानरम (मारन (एथ १)०॥)०৮)॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্রথির ২১৫১ সংখ্যক পদ। ২। কৈড' প-র-সা। ৩: কুস্লিড' ক, ধ; 'কুষ্লিড'প-র-সা। ৪। 'ভূষণ'ক।

CHEMINIS IS बीवा उनाव ভক্ষ কত বাছত मधुत भूवण मदण कतलांग। टोमिटन जरुहित कर अप त्रव कित নাচত গাওত পরম ংসাল । দেখ দেখ রাইক শুভ অভিষেক। यमन हैं। म क्यू क्वक मुकूद उपू निश्मन नीरत सनरकर भररङक । বতন করি রাইক ভগৰতি কঙহ শির পরি॰ চালই বাসিত বারি। শত-মুখি স্বংধুনি সুমেক্ল-শিখনে কমু **Cबटन नितरम यहि औरছ निश्चति #** ৰুঞ্চিত কুন্তন বাহি পড়রে জল চামরে মোতিম চরকে ঋশু। হেরইতে অধিল नत्रन भन ज्लादाः

जानत्य द्वारन जन्म-७५ १) ८१> ८৮२३

পাঠাভৰ

)। ইবাপ-র-সাপ্থির ২০০২ সংখ্যক পদ।
 । 'নীবে নিরমণ' ক, খ। ৩। 'পর' প-র-সা।
 ৪। 'কুণবে' ক, খ, প-র-সা।

द्या प्राप्त ।>

সিনান সমাধান মুচল অল। প্ৰিরণ নালিম বসন সুরস । শাপময় অভরণ ভগবভি দেশ। याहाँ (यह (भाष्ट्रम भिष्य (सम ॥ मिन-मिन्द्र माहा जात्रणि बाहे। রতন-সিংহাসনে বৈঠল বাই 🛔 वनक्त-भाग (प्रमा वन एवि। क्षेत्र व्याप्त वह या त्रवि ॥ दुम्मावद्यमित्र कि (छन नाम। **छाहित्न मिल्का विभाशा टेक्टम बाटम ॥** মধুমতি ছত্ৰ° ধরল ধনি মাধ। চিত্রাণ বিচিত্র দণ্ড ধরণ হাত 🛭 চম্পকলভিকা চামর করু গায়। भाग-कला भाग मध्य बोकन बाह्र । **७गर्वा अक्षांभ क्रत (स्म।** আর্থত করি নিরম্ভন কেল # আর সব সহচরি মঞ্ল গার। त्याश्न छुत्रशि त्नशंत्र कात्र ॥.

1) elseves

পাঠান্তর

১। বহা পার-সাপ্রবিব ২১৫০ সংখ্যক প্রা ২। 'শোভগ' ক, খা ৩। 'আরণ' খ, চা ৪। 'মধুবভি' ক, খ, প-র-সা। ৫। 'ধরিল' ক; 'ধরল' খা ৩। 'বেঅ' প-র-সা। १। 'ক্স' ক, খ, চ, প-র-সা। ৮। 'ধুবহি' ক। **श्नम्ह व्यक्तिका विश्वा**

ভৈষ্ঠ। ১

আৰাশ ভরিরা উঠে জর জর ধবনি।
নাচে শিব জ্বনা ইক্স চক্র দিনমণি ॥

জন্মতিথি-পূখা কৃষ্ণচক্র-অভিবেক।

ক্ষর-নর-মূনিগণ দেখেং পরতেক ॥

পঞ্চগন্য পঞ্চারত শত ঘট জলো।

জর জর দিয়া কৃষ্ণচক্র-শিরে ঢালে ॥

দানা বন্ধ-বাজ গীত ছুন্সুজির বোল।

এ ভিন ভূবনের লোক বলে ছরিবোল।

কলরব মহোৎসব জগত বেঢ়িরাণ।

কান্দে হাসে প্রেমে ভাসে ভূমিতে পড়িরা।

জাখিল-জ্বন্ধাণ্ড-নাথ নন্দের নন্দন।

নরসিংছ দেব মামেণ চরণে লাবণ ॥

১১৬৪১৫৮৪॥

পাঠান্তর

३। देश श-त्र-ता श्रीवेत २०१८ त्रःवाच शवः।
 १ (एवर पः) १०। (क्षित्रां पः) १। (एव
 १०० वित्रां पः) १०० वित्राः।

CASIS 15

আছু বনি নব অভিবেক গোবিক্ষকি।
পর্মানক প্রোম-অ্থ-কদ্মকি ॥
বালকন্ত নীল-ক্লিনি মুখ-শোহাং।
বেরইতে অখিল-ভূবন-মন-মোহাং॥
গোরস কবি কৃত বলদিক নীরে।
গাগরি ভবি ভবি ছারইং শিবে॥

বাজত ঘণ্টা॰ ভাল মুদজ।
জন্ম॰ দেই প্রবাননীনণ নজ।
বলি বলি বাডাই চরণারবিক্ষা।
পরমাননককে পত্ত শ্রীগোবিক্ষা। ২০১৫৮৫॥

रेणापि जिल्लक ।

পাঠাত্তর

- ১। ইহা প-র-সা পুথির ২১৫৫ সংখ্যক পদ। । 'শোভা' প-র-সা। ৩। 'লোভা' প্-র-সা।
- া চিরিউ' যা ে 'ঘণ্টা কভ' প্র-সা।
- 61 '## ##' T

জর জর গোরচন্দ্র জর নিত্যানন্দ?।
জরাবৈতচন্দ্র জর গোর-ডক্তবৃদ্দ ।
জর রূপ সনাতন তট্ট রগুনাথ।
শ্রীজীব গোপাল ডট্ট দাস রগুনাথ।
শ্রীজীব গোপাল ডট্ট দাস রগুনাথ।
শ্রীজীব গোপাল ডট্ট দাস রগুনাথ।
ব্রুণা করি দেহে নিজ প্রেম-ডক্তি বর ।
ঠাকুর বৈক্ষব গোসাঞি দল্লা কর বোরে।
দত্তে তৃণ ধরি ভাকে এ দীন পাবরে।

ইভি একবিংশৎ পর্বঃ।

)। हेंदो श-त-मा श्रुवित २०१० मरवाक श्रुव। बहे नहींहें चण्डा नश्वारंग भगना कविरम, बहे गजरवत निर्माहे नह-मरवा। बकाँहें दिनो हत बहिना हेंदा गणिक हरेन मा। १। '(मात' क्रुवं। ०। '(सहि' क्रुवं। ०। 'क्रांकि' ग-प्र-मा।

ইভি পদক্ষতক্ষ-প্ৰহে ভৃতীয়-শাখা সম্পূৰ্ণ।